Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079524

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क १] मास, आषाढ़ [पूर्ण संख्या २५

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

RT-087

079524

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

079524

* तू मेरा मैं तेरा *

(श्री पं० श्रीहरि)

नटनागर हठ बहुत हो चुका, अब तो हठ को छोड़ो।
निपट हठीले निठुर हुए क्यों, नाता अपना जोड़ो॥
भटक रहा हूँ बड़ी देर से, प्रियतम! तव गलियों में।
तुम्हें न पाया अटक रहा पर जग के इन छलियों में॥१॥

* * *

कैसी है प्रभु प्रकृति तुम्हारी, जो जन तुम्हरा होता।
दीनबन्धु! हा, वही दीन हो, गलियों गलियों रोता॥
मैं भी हठी न हटने का हूँ, डाल द्वार पर डेरा।
एक बार हँस कर कह दो बस, तू मेरा मैं तेरा॥२॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईक्षण

वैदिक-आस्तिकवाद

(प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी तर्कशिरोमणि)

'ईक्षण' शब्द उपनिषदों में पारिभाषिक है। सारे वैदिक आस्तिकवाद की बुनियाद 'ईक्षण' पर है। आज हम यह दिखाने का यत्न करेंगे कि उपनिषदों में ईक्षण का क्या अर्थ है?

यह सृष्टि कैसे बनी? इसे किसी चेतन मन ने इच्छा पूर्वक बनाया या नहीं? इसी प्रश्न पर आस्तिक और नास्तिकवाद के दो तर्क खड़े हुये हैं। एक ओर आस्तिकों ने 'ईश्वर' का आश्रय लिया है दूसरी ओर नास्तिक दल कहता है कि:—

१-सृष्टि स्वभाव से ही ऐसी बन गई। इसके लिये किसी कर्त्ता की आवश्यकता नहीं।

२-सृष्टि 'काल' या समय से ही ऐसी बन गयी है।

३-सृष्टि अकस्मात् ऐसी बन गयी। किसी ने इसे इस प्रकार का सोच कर नहीं बनाया है।

४-एक सम्प्रदाय यह भी कहता है कि सृष्टि यों ही बनी चली आरही है। यह अनादि है।

इन में से चौथा पक्ष विज्ञानविरुद्ध होने से सर्वथा उपेक्षा के योग्य है। क्योंकि हम प्रत्येक क्षण में इस जगत् में परिवर्तन देख रहे हैं। इतना तो अवश्य मानना पड़ेगा कि सृष्टि 'परिवर्तन' के चक्कर में पड़ी हुई ही इस अवस्था तक पहुंची है। इस लिये पहिले नास्तिकों के जो तीन सिद्धान्त है उनके आधार पर सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी वैज्ञानिक नास्तिक सिद्धान्त निम्न प्रकार बन गया है जिस के अन्दर वे तीनों वाद समा जाते हैं:—

"अनादि काल से प्रकृति में परिवर्त्तन होता रहा। परिवर्त्तन होते २ अकस्मात् परिवर्तन इस ढङ्ग पर नियमित हो गया कि कुछ समय में (जो कि करोड़ों और अरबों वर्ष से कम नहीं हो सकता) यह सृष्टि इस रूप में बन गयी जैसी हम इसे देखते हैं। और यह परिवर्त्तन इसी प्रकार होता चला जायगा। इस के लिये किसी चेतन आत्मा की आवश्यकता नहीं है। अब इस में तीन प्रश्न उपस्थित होते हैं:-

१-क्या यह सम्भव हो सकता है कि परिवर्त्तन अनादि काल से हो रहा हो? या किसी विशेष समय में परिवर्त्तन प्रारम्भ हुआ?

२-क्या परिवर्त्तन में कोई नियम या क्रम नहीं हैं? और उस के लिये चेतन मन की आवश्यकता न होगी?

३-क्या यह परिवर्त्तन कभी बन्द न होगा?

(क) इन तीनों प्रश्नों का उत्तर उपनिषद् यों देती है:-

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्ब्रह्म.....।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१-जिससे यह जगत् (सृष्ट्युत्पत्ति के लिये परिवर्तन) पैदा होता है।

२-जिस से यह जगत् (सृष्टि का परिवर्तन) जीवित है अर्थात् कायम है या नियमित है।

३-जिस में यह जगत् समा जाता है अर्थात् जो इस परिवर्तन को बन्द कर देता है—वह ब्रह्म है।

(ख) वेदान्त प्रणेता व्यास मुनि ने "जन्माद्यस्य यतः" इस सूत्र से यहां बतलाया है कि ब्रह्म वह है जिस से सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है। इन तीन कार्यों के लिए चेतन ब्रह्म की आवश्यकता है।

(ग) पौराणिकों ने ब्रह्म की तीन प्रसिद्ध शक्तियों से तीन देवताओं की कल्पना की है वह भी इसी सिद्धान्त पर है अर्थात्-

१-ब्रह्मा जगत् को बनाता है। परिवर्तन को प्रारम्भ करना है।

२-विष्णु जगत् का पालन करता है। अर्थात् परिवर्तन को नियमित (Regulate) करता है।

३-महादेव जगत् का प्रलय करता है। अर्थात् परिवर्त्तन को बन्द करता है।

(घ) हमने देखा है कि लगातार परिवर्तन के आधार पर नास्तिकवाद सृष्टि का समाधान करता है उस पर तीन प्रश्न उठे थे। इन तीनों के समाधान करने में आस्तिकवाद ईश्वर की स्थापना करता है परन्तु हमें देखना चाहिये कि नास्तिकवाद के अपने कैम्प में इन प्रश्नों का क्या उत्तर दिया गया? बहुत दिनों तक नास्तिक लोग वैज्ञानिक रीति पर यह विश्वास रखते आये कि परिवर्तन सदा से चला आया है, सदा होता रहेगा और स्वयं हो रहा है। यह विश्वास कहाँ तक युक्तियुक्त है इस पर कुछ शब्द हम पीछे लिखेंगे, यहां हम यह बतलाना चाहते हैं कि एक साथ वैज्ञानिक सम्प्रदाय में यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि क्या जगत् में परिवर्तन से जो विकास हो रहा है उस में किसी चेतन शक्ति की आवश्यकता नहीं? आल्फ्रेड रसेल वैलेस (Alfred Russel Wallace) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक World of Life में कहा है कि विकास के लिये-

१-एक ऐसी शक्ति की अपेक्षा है जिस ने विकाश का प्रारम्भ किया हो अर्थात् विकास में पहिला प्रयत्न (Impulse) किया हो।

२-जो विकास को उस के प्रत्येक पग पर नियमित रक्खे।

३-जो विकास को उसके अन्तिम उद्देश्य पर पहुंचाये *।

यह स्पष्ट पता चलता है कि ये तीनों वे ही बातें हैं जिन के लिये ब्रह्म की सत्ता को हमारे ऋषियों ने माना था। इस प्रकार ब्रह्म की सत्ता में में तीन युक्तियें है—

* विकास के अन्तिम उद्देश्यतक पहुंचने का मतलबयह हो सकता है कि जहां जाकर विकास समाप्त हो जावे अर्थात्परिवर्त्तन बन्द हो जावे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत् को बनाने वाले की आवश्यकता है।

२-जगत् को संभालने वाले की आवश्यकता है

३-जगत् को बिगाड़ने वाले की आवश्यकता है।

नोट—बिगाड़ने का अर्थ समाप्त करने वाला।

'ईक्षण' के विवेचन में हमें केवल इन में से पहिली युक्ति पर विचार करना है। हम यह दिखायेंगे कि 'परिवर्तन' अनादि नहीं हो सकता, और परिवर्त्तन के प्रारम्भ करने वाला आवश्यक है।

हम ने देखा है कि इस विश्व के सम्बन्ध में तीन प्रश्न उठते हैं और तीनों के उत्तर में हम उस अदृश्य शक्ति (ईश्वर) तक पहुंचते हैं। उनमें से पहिले प्रश्न का विवेचन हमें करना है।

पहिला प्रश्न यह था कि क्या प्रकृति में सदा से परिवर्त्तन होता चला आया है और उस परिवर्त्तन के कारण बिना किसी चेतन शक्ति के यह जगत् बन गया। इसका उत्तर आस्तिकवाद ने यह दिया है कि परिवर्त्तन अनादि नहीं हो सकता किन्तु एक समय प्रकृति शान्त अर्थात् गति-रहित थी और समय विशेष में परिवर्त्तन या गति का प्रारम्भ हुआ, उस गति को प्रारम्भ करने वाली किसी शक्ति की आवश्यकता है।

सब से बड़ी समस्या यह है कि क्या प्रकृति में जाति अनादि हो सकती है या नहीं? यदि इसका सन्तोष-जनक उत्तर मिल जाय तो आगे बहुत बड़ा विवाद नहीं रहता—

(१) विज्ञान की दृष्टि से यह बात असम्भव है कि प्रकृति के परमाणु सदा से सदा तक अर्थात् अनादि और अनंत गति युक्त बने रहें। धातुओं के अणु भी कुछ देर काम कर के थक जाते हैं- मैशीनरी के इञ्जनों को भी गति के पश्चात् विश्राम करना पड़ता है। प्रो० जे. सी. बोस ने सिद्ध किया है कि लोहे की बनी चीजें चाकू आदि काम करते २ थक जाते हैं और उन्होंने अपने यन्त्र से यह दिखलाया है कि थकने पर फिर वे काम करना नहीं चाहते। इन चीजों में जीवन हो या न हो प्रो० बोस के परीक्षणों से स्पष्ट है कि काम करते २ थकावट जड़ पदार्थों में भी आती है। विश्राम की आवश्यकता चेतन को नहीं किन्तु जड़ को भी होती है †। इस प्रकार यह नहीं माना जा सकता कि प्रकृति में अनादि काल से गति चली आई है अर्थात् एक समय में गति का प्रारम्भ हुआ होगा।

(२) अब यदि इसी को तार्किक दृष्टि से देखें तो प्रश्न अत्यन्त गंभीर हो जाता है। यदि यह कहा जाय कि आज से अरब वर्ष पहिले प्रकृति की अनादि गति इस प्रकार नियमित हो गयी कि यह सृष्टि आज इस रूप में बन गयी, तब प्रश्न यह होगा कि दो अरब वर्ष पूर्व ही अनादि गति क्यों सृष्टि रचना

† इस बात को सामने रख कर यह वैदिक सिद्धान्त कितना महत्वपूर्ण प्रतीत होता है कि प्रकृति जितने समय तक सृष्टि अर्थात् गति में रहती है उतने ही समय तक प्रलय अर्थात् गति रहित अवस्था में विश्राम करती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के योग्य नियमित रूप में हुई ? उससे पहिले हो वह नियमित क्यों न हो और गयी थी जो सृष्टि आज तक बन पायी है वह आज से दो अरब वर्ष पूर्व ही क्यों न बन गयी क्योंकि अनादि गति के विषय में यह तो कहा ही नहीं जा सकता है कि वह आज तक ही इस अवस्था को पहुंची इस से पहिले नहीं पहुंच सकती थी क्योंकि आज भी कहा जा सकता है कि प्रकृति की गति अनादि है और दो अरब वर्ष पूर्व भी कहा जा सकता था कि प्रकृति की गति अनादि है, अनादि और अनादि बराबर ही हो सकते हैं। ऐसी दशा में सृष्टि का जो विकाश आज पर्यन्त हुआ है वह आज से दो अरब वर्ष पूर्व ही क्यों न हो गया ? इस प्रकार एक बड़ा चक्कर हमारे सामने आ जाता है और तार्किक दृष्टि से मानना पड़ेगा कि गति अनादि नहीं हो सकती है।

अब हमारा रास्ता साफ़ है और हमें राज-पथ पर चलना है। प्रकृति में अनादि गति नहीं हो सकती वह एक समय में प्रारम्भ हुई उसका प्रारम्भ कैसे हुआ ? इसका इतना उत्तर पर्याप्त नहीं है कि चेतन ईश्वर ने परमाणुओं में गति उत्पन्न कर दी। ईश्वर ने गति कैसे उत्पन्न की ? क्योंकि गति शून्य पदार्थ को गति में लाना गतिमान् पदार्थ का ही काम है, जैसे दवात को गति युक्त करने के लिये गति युक्त मेरे हाथ की आवश्यकता है, बस इसी प्रश्न के उत्तर में कि शान्त प्रकृति में गति कैसे उत्पन्न हुई उपनिषद् कहती कि परमात्मा ने ईक्षण किया (स ईक्षांचक्रे) परमात्मा के ईक्षण करने की बात उपनिषदों में कई स्थानों पर आयी है। दूसरी जगह आया है (स तपोऽतप्यत) अर्थात् परमात्मा ने सृष्टि बनाने के लिये तप किया। परन्तु फिर बतलाया है कि परमात्मा का तप ज्ञान ही है 'यस्य ज्ञान मयं तपः' और वह ज्ञान ही ईक्षण है क्योंकि 'ईक्ष दर्शने' से ईक्षण का अर्थ भी ज्ञान या आलोचन है। इसी को ईश्वर का संकल्प कहते हैं।

प्रारम्भ में प्रकृति के परमाणुओं को गति देने के लिये जो क्रिया हुई उसका नाम—

ईश्वर का—

ईक्षण
तप
ज्ञान
या संकल्प

है। अब ईक्षण का अर्थ ईश्वर-संकल्प हुआ इस ईश्वर संकल्प से गति कैसे पैदा होती है ? इस के लिये एक उदाहरण हम मैसमैरिज्म का देंगे।

मैसमैरिज्म में बिना बाह्य गति के सङ्कल्प-शक्ति या (Will Power) से एक बाहरी चीज़ में गति पैदा हो जाती है। दूर रक्खी हुई पुस्तक बिना बाह्य चेष्टा के केवल संकल्प-शक्ति के प्रभाव से हिलने लगती है, वहाँ पुस्तक को हिलाने के लिये बाह्य गतिमान् साधन की जरूरत नहीं होती ठीक इसी प्रकार प्रकृति परमाणुओं में गति, बिना किसी बाह्य गति-चेतन परमात्मा के ईक्षण या संकल्प (Divine Will Power) के, उत्पन्न हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है। बस, परमाणुओं में एक बार गति हुई और सृष्टि को खेल बनना प्रारम्भ हो गया। प्रारम्भिक गति के लिये एक चेतन शक्ति की आवश्यकता है। गति प्रारम्भ होने पर और सृष्टि बनने पर परमात्मा उस का द्रष्टा होता है परन्तु एक बार उत्पन्न हुई गति स्वयं बन्द नहीं हो सकती यह एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है। एक ढेला आसमान में फेंका गया है। विज्ञानशास्त्र कहता है कि यदि वायु उस गति का प्रतिरोध न करे और पृथ्वी का आकर्षण उसे अपनी ओर न खींचे तो उस ढेले में अनन्त काल तक गति बनी रहे उस सीध में जिस में कि वह फेंका गया है लगातर आगे ही बढ़ता जायगा। इसी प्रकार प्रकृति के परमाणुओं की गति स्वयं बन्द नहीं हो सकती उस के लिये भी गति रोकने वाले किसी चेतन की आवश्यकता है और वह चेतन अदृश्य शक्ति परमात्मा है जो कि गतियुक्त प्रकृति के परमाणुओं को गतिरहित कर देता है और यह भी उसी प्रकार प्रभु के ईक्षण या संकल्प से होता है इस प्रकार सृष्टि और प्रलय दोनों परमात्मा की स्वाभाविक संकल्प-शक्ति या ईक्षण होते हैं।

—:०:—

जातियों का पुनर्जन्म

(सामूहिक आत्मा की नित्यता या निरन्तरता)

(ले० पं० भीमसेन जी, विद्यालंकार, सत्यवादी-सम्पादक)

वैदिक सिद्धान्तों की विशेषता यह है कि वह पिण्ड, ब्रह्माण्ड, व्यक्ति और समाज सब रूपों में समानरूप से त्रिकाल में लागू होते हैं। पुनर्जन्म के सिद्धान्तों पर भी इसी दृष्टि से विचार करना चाहिए। भारतीय दर्शन शास्त्रों में तथा प्राचीन संस्कृत साहित्य में स्थान २ पर आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त की सचाई को सिद्ध करने के लिये बड़े २ विद्वानों ने अपनी विद्वत्ता को चरम सीमा तक पहुंचा दिया है। परन्तु उन्होंने समाज की सामूहिक आत्मा के उत्थान तथा पतन, उसके तिरोभाव तथा आविर्भाव पर विशेष रूप से विचार नहीं किया। जिस प्रकार मनुष्य आत्मा को अमर समझ कर, निर्भय होकर, आशामय जीवन बिताकर, निरन्तर आपत्तियों के आने पर भी आत्मिक उन्नति से विमुख नहीं होते उसी प्रकार जो जातियाँ व समाज सामूहिक आत्मा की नित्यता तथा उसके पुनर्जन्म के सिद्धान्त को समझ लेते हैं वह निराश नहीं होते। आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त की सत्यता दो प्रकार से सिद्ध की जाती है, या तो विद्वान् योगी लोग अनुभव शक्ति द्वारा अमरता अनुभव करते हैं अथवा विद्वान् दार्शनिक बुद्धि तथा तर्क-शक्ति द्वारा उहापोह कर के आत्मा की अमरता को सिद्ध करते है। इसी प्रकार जातियां भी दो प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सामूहिक आत्मा की अमरता का अनुभव कर सकती हैं। हम देखते हैं कि आयरिश जैसी छोटी २ जातियां अनुभव द्वारा आत्मा की अमरता को अनुभव करके ७०० साल तक निरन्तर स्वाधीनता के लिए आशामयी भावनाओं से प्रेरित होकर लड़ाई लड़ती रही हैं। परिणाम यह है कि आज उन की आत्मा स्वाधीन हो गई है। इसी प्रकार यदि हम १९१४ के युरोपियन महासमर के विवरण का अनुशीलन करें तो हम देखते हैं कि जैकोस्लोविक तथा ग्रीक जैसी छोटी २ जातियाँ सामूहिक आत्मा की अमरता पर विश्वास लाकर किस निर्भयता से युद्ध में लड़ती रहीं, उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि आज हम तुच्छ है, आज हमारी पूछ नहीं है। उनके दिल में, जाति के नेताओं के हृदयों में, राष्ट्रीय आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म का भाव संचारित था। वह समझते थे और समझते हैं कि जातियों को सर्वकाल के लिये कोई नाश नहीं कर सकता। गोरी जातियों ने आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और अमरीका की नीग्रो आदि जातियों का सर्वनाश करने के लिये क्या कुछ नहीं किया, परन्तु आज हम उनमें भी दीर्घकाल की मृत्युरूप निद्रा के बाद जागृति के चिह्न देख रहे हैं। वे लोग भी अनुभव कर रहे हैं कि उन की अपनी सामूहिक आत्मा का इस संसार में विशेष महत्व है। यहूदी लोगों को युरोप की जातियों ने सदियों से कुचलने का, उनका नाम मिटाने का यत्न किया परन्तु आज हम देखते है कि यहूदी लोग अपनी सामूहिक आत्मा को फिर से आमन्त्रित कर के जाग रहे हैं। जेरूसेलम में हिब्रू विश्वविद्यालय स्थापित कर, सोई हुई आत्मा को जगा रहे है।

जिस सामूहिक आत्मा का हम ज़िकर कर रहे है, इस का वर्तमान युग के नैशनलिस्म कौमियत या राष्ट्रीयता का पर्याय वाची समझना ठीक नहीं है; दोनों में सम्बन्ध या किन्हीं अंशों में समानता ज़रूर है परन्तु समय भेद तथा अवस्था भेद के कारण कई अंशों में भिन्नता भी है जिस सामूहिक आत्मा के पुनर्जन्म का हमने वर्णन किया है वह आत्मा आजकल कई बंधनों में जकड़ी हुई है। अंगरेजी कौमियत का मुख्य आधार इंगलैण्ड देश है। फ्रैञ्च नैशनलिस्म का मुख्य आधार फ्रांस देश है। फ्रांस देश तथा इंगलैण्ड देश की भौगोलिक सीमाओं के नष्ट होने पर फ्रैञ्च नैशनलिस्म की सामूहिक आत्मा हमारी आँखों से ओझल हो जायगी। उसका दुनियाँ से नाम मिट जायगा। परन्तु यहूदियों की सामूहिक आत्मा भौगोलिक सीमाओं के बिना भी आज तक जीवित रही हैं। कारण यह है कि यहूदी सामूहिक आत्मा का जीवन-स्रोत उसके ऐसे सिद्धान्तों में था, जो स्थान देश तथा काल की सीमा में संकुचित नहीं थे।

आज कल की परिभाषा में भारतवर्ष में कौमियत या राष्ट्रीयता नहीं थी। भारत की सामूहिक आत्मा कुछ एक विशेष सिद्धान्तों द्वारा प्रकट होती थी, वही सिद्धान्त आज भी विद्यमान हैं। उस कारण आज भी हम लोग अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप को प्राचीन-काल से राष्ट्रवादी समझते हैं।

परन्तु इस समय दुनियाँ की घुड़-दौड़ में हमारा जिन से मुकाबला है उन्होंने सामूहिक आत्मा को भौगोलिक शरीर और पुराने शरीर धारण कराकर, एक अवरोधक तथा बलशाली शक्ति बना लिया है। युरोप का शरीर और पुराने सिद्धान्त सामूहिक आत्मा को लक्ष्य में रख कर उन्नति-पथ पर आगे बढ़ रहे है। वे जातियाँ युद्धों में जूझती हैं, शान्ति प्राप्त करने के लिये सामाजिक-आत्मा, निरन्तरता तथा नित्यता में विश्वास करती हुई इस बात से नहीं घबरावती कि उन की कितनी सेनाएं तथा कितना धन नाश हुआ है। युरोपियन महासमर में युरोपियन जातियों ने अपने सिपाहियों के खून तथा राजकोष को पानी की तरह बहाया, यह नहीं समझा कि इतनों के मर जाने से राष्ट्र नष्ट हो जायगा क्योंकि वे अनुभव द्वारा जान चुके हैं कि यह सिपाही तथा राजकोष रूपी शरीर अस्थिर है, सामूहिक आत्मा इन शरीरों को बदलती रहती है और समय के अनुसार नए शरीर धारण करती है, पुरानी जनरेशन को दूर कर नयी जनरेशन आगे बढ़ती है।

परन्तु हमारे भारत में, जहाँ का बच्चा भी आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म को मानता है, लोग इस सामूहिक आत्मा का समाज के जनबल तथा धनबल के साथ जो सम्बन्ध है उसको नहीं समझते। वे समझते हैं कि चौराचौरी की खूनखराबी से जो जन नाश और धननाश होगा वह फिर पूरा नहीं होगा। लोग भारत की सामूहिक आत्मा या भावना की अपेक्षा जनबल तथा धनबल रूपी शरीर को अधिक चिरस्थायी तथा उपयोगी समझते हैं। इसी लिये हम लोग आन्दोलन के एकवार मन्द पड़ने पर निराश हो जाते हैं। एकवार राष्ट्रीय आन्दोलन के भंग होने पर हम समझते है कि बस अब सदा के लिये निराशा ही निराशा है। ऐसी निराश ही इस समय हमारे देश में छाई हुई है। इस समय इस बात की आवश्यकता है कि हम जनता के अन्दर यह भाव जागृत करें कि जिस प्रकार हमारी आत्मा भिन्न २ शरीर बदलती है और मरती नहीं है उसी प्रकार समाज की सामूहिक आत्मा भी समय २ पर जननाश, जन वृद्धि, धननाश तथा धनागम के रूप में शरीर बदलती है। पुनर्जन्म लेती है और दिन दिन सालों नए अनुभवों के साथ आगे कदम रख रही है। ऐसा समझने पर हमें कभी निराशा नहीं होगी, हरेक आन्दोलन में हम उत्साह तथा आशा के साथ आगे बढ़ेंगे। देश के या जाति के किसी एक नेता के उठ जाने पर यह नहीं समझेंगे कि बस अब सब समाप्त है। अपितु आत्मा की नित्यता तथा निरन्तरता में विश्वास रखते हुए हमें अपनी जाति के पुनर्जन्म के लिये नए जीवन के लिये अग्रेसर होना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ भी नहीं"

(कविराज धर्मदत्त जी विद्यालंकार)

यह तमाशा एक धोखे के सिवा कुछ भी नहीं ।
इन सुनहरे बादलों के बीच में कुछ भी नहीं ॥

* * *

बुलबुलों से जिस चमन के गीत सुनता था सदा ।
जब उसे देखा वो कांटों के सिवा कुछ भी नहीं ॥

* * *

मैं तो समझा था यहां संगीत होंगे रात दिन ।
पर यहां देखा कि रोने के सिवा कुछ भी नहीं ॥

* * *

जिस की सुर पर ताल दे कर गा रहे हैं आप सब ।
खोल कर देखो ज़रा उस ढोल में कुछ भी नहीं ॥

* * *

क्या अजब जादू है दिन भर तो कमाया था बहुत ।
शाम को देखा तो मेरे हाथ में कुछ भी नहीं ॥

* * *

राज महलों में अभी मैं घूमता था शौक से ।
पर सबेरे जो उठा देखा वहां कुछ भी नहीं ॥

* * *

पूछा लुकमां से किसी ने तूने क्या देखा यहां ।
दस्ते-हसरत मल के बोले है यहां कुछ भी नहीं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निहोत्र और उसका वैज्ञानिक स्वरूप

संख्या (२)

(ले० श्रीयुत प्रो० मीरीलाल जी गोयल एम. एस. सी, एफ. सी. एस., एफ. आर. एस. ए)

गत वर्ष श्री दयानन्द-जन्मशताब्दी के अवसर पर गुरुकुल के मुखपत्र अलंकार में हम ने अपने परीक्षणों के आधार पर इस विषय पर एक लेख प्रकाशित किया था। उस के बाद अब एक छोटा सा लेख पाठकों के सामने उपस्थित करने लगे हैं, आशा है इस का भी पूर्ववत् स्वागत किया जावेगा जिस से हमारा उत्साह बढ़ेगा।

अग्निहोत्र से कर्बनिकाम्ल (CO_2) गैस उत्पन्न होने के विषय में उस समय लिखा गया था, कि प्रथम तो (CO_2) गैस इतनी अधिक मात्रा में उत्पन्न नहीं होती जो कि स्वास्थ्य के लिये हानिकारक सिद्ध हो, दूसरे उत्पन्न होने पर भी कमरे की वायु में गैस की मात्रा इतनी अधिक नहीं बढ़ सकती, क्योंकि कमरे के खुले रहने से वायु आकाश मंडल में फैलती रहती है। हवन सम्बन्धी कुछ परीक्षण जो पलाश की लकड़ी तथा अन्य पदार्थों के साथ किये गये थे; उन का सार यहां दिया जाता है। परन्तु उस के पूर्व यह बता देना आवश्यक है, कि यह परीक्षण एक बन्द कमरे में किये गये थे जिससे बाहर का वायु अन्दर तथा अन्दर का बाहर न आ जा सके। प्रथम परीक्षण में केवल पलाश की लकड़ियाँ भिन्न २ मात्रा में कई बार जलाई गईं। और प्रत्येक बार प्राप्त कर्बनिकाम्ल (CO_2) गैस की मात्रा की जांच की गई। फिर दूसरी series में पूर्ववत् लकड़ी की भिन्न २ मात्राओं के साथ घी की आहुतियों से हवन किया गया और उत्पन्न कर्बनिकाम्ल की मात्रा देखी गई। पुनः तृतीय series में लकड़ी और घी की मात्रा द्वितीय series के परीक्षणों से देख कर इन के अतिरिक्त केवल खांड, निशास्ता, (Starch) शहद, चावल, गेहूं तथा अन्य इसी प्रकार के अन्य पदार्थों को साथ लेकर घी और पलाश की लकड़ियों से परीक्षण किये गये। तत्पश्चात् सुगन्धित पदार्थ तथा तृतीय series (खांड, नशास्ता इत्यादि) के पदार्थों को मिलाकर परीक्षण किये गये। इस के अतिरिक्त घी के बिना केवल खांड तथा सुगन्धित पदार्थों से भी परीक्षण किये गये थे।

इन परीक्षणों के परिणाम निम्न हैं- घी की आहुति देने से उस का बहुत बड़ा भाग वाष्प बन कर उड़ जाता है, और शेष भाग लकड़ी के साथ मिल कर जलता है, यही जला घी वायु-मंडल में कर्बनिकाम्ल गैस की वृद्धि का कारण होता है। यदि घी निश्चित मात्रा में थोड़ी २ देर के पश्चात् डाला जावे तो सारा घी जलाया जा सकता है। घी जितनी अधिक मात्रा में वाष्प रूप बन कर उड़ता है, उतना ही हवन उपयोगिता की दृष्टि से लाभदायक है। घी का जला भाग अग्नि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को प्रचंड रखने में सहायक होता है। इसी प्रकार खांड निशास्ता आदि पदार्थ भी ज्वाला को प्रज्वलित रखने में सहायक सिद्ध हुये हैं, तथापि उन के साथ हवन करने से कर्बनिकाम्ल गैस की मात्रा घी के जलने की अपेक्षा बहुत कम पैदा होती थी-अर्थात् खांड आदि का जलना जहाँ गैस की मात्रा को कम करता था वहाँ साथ ही अग्नि को भी प्रचंड करता था। सुगन्धित पदार्थों को खांड आदि के स्थान पर प्रयुक्त करने पर गैस की मात्रा खांड आदि की अपेक्षा कुछ अधिक पैदा होती थी, तथापि केवल घी तथा लकड़ी की अपेक्षा कम ही थी जिस का मुख्य कारण पदार्थ का Carbon भाग समझा गया है। इस प्रकार अग्निहोत्र में भिन्न २ पदार्थों का कर्बन द्विओषित् (CO_2) द्रव्य से ज्ञान होता है। सुगन्धित पदार्थों से हवन में सुगन्धित तैलों (Oils) के वाष्प उठने के विषय में हम ने अपने प्रथम लेख में लिखा है। उस के आधार पर ही परीक्षण करने पर बहुत सी नई नई बातों का पता लगा है, उन वैज्ञानिक सिद्धान्तों को साधारण भाषा में यहां पर लिखना आवश्यक है।

यह तो पूर्व ही कहा जा चुका है कि यह सुगन्धित वाष्प उन कीटाणुओं को मार देते हैं जो कीटाणु भिन्न २ रोगों के कारण माने जाते हैं। इन कीटाणुनाशक (Germicide) पदार्थों के सम्बन्ध में यह जानना उचित है कि ये पदार्थ कीटाणुओं को किस तरह मारते हैं।

१—कीटाणु इन्हें खा लेवें। (Stomach Poisons)

२—कीटाणु के शरीर से यह छू जावें। (Contact Poisons)

३—कीटाणु सांस द्वारा इन्हें अन्दर ले जावे। (Fumigation)

इन में से प्रथम श्रेणी के पदार्थों का उपयोग चूहे और मक्खी आदि के मारने में प्रतिदिन देखा जाता है। इन पदार्थों में संखिया, पारा, सीसा आदि के समास सम्मिलित होते हैं।

दूसरी श्रेणी के विष कीटाणुओं के शरीर से छूकर वहां चिपट जाते हैं, और फिर छूटते नहीं; और शरीर के रोम छिद्रों द्वारा अन्दर प्रविष्ट हो जाते हैं और कीटाणुओं को मार डालते हैं। इस श्रेणी में फिनाइल सदृश पदार्थ गृहीत होते हैं, जो कमरों को शुद्ध करने के काम आते हैं।

तृतीय श्रेणी में (Fimigation) द्वारा प्राप्त गन्धक का धूवाँ, हरिण गैस तथा फोर्मैल डिहाइड आदि सम्मिलित हैं।

आज कल के वैज्ञानिक सुगन्धित तैलों का बहुत कम प्रयोग करते हैं। और वह भी दूसरी श्रेणी के सदृश घोल बन कर ही प्रयोग में आते हैं। हम ने अपने पिछले लेख में (दो चार को छोड़ कर) इन की उपयोगता और प्रयोग करने में बड़ी सुगमता पर बहुत कुछ लिखा था। अब यह दिखा कर कि यह विष किस प्रकार कीटाणुओं को मारते हैं, तत् पश्चात् उक्त पदार्थों की उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार करेंगे।

इस के समझाने के लिये यदि यह मानलें कि पाठकों नें बहुत से Emulsion (घोल) देखे होंगे और उन का व्यवहार भी किया होगा-कम से कम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरों की सफाई में Phenyl (फिनाइल) को पानी में मिला कर सफेद दूध सा बना कर तो अवश्य देखा होगा—तो विषय बड़ी सुगमता से स्पष्ट हो जायगा। घोल में तेल को पानी में मिलाने से जल सफेद सा हो जाता है, परन्तु कुछ देर रख देने पर दोनों अलग २ हो जाते हैं और यदि दूसरी बार पानी में गोंद या साबुन मिला कर फिर तेल डाल कर हिलावें तो यह सफेद रंग बहुत देर तक रहता है और थोड़ा सा तेल तथा पानी के अलग होने में कुछ देर लगती है। कुछ वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार बनाया हुआ यह घोल फिर नहीं फटता। उस घोल (क) में तेल छोटे २ कणों के रूप में जल में विभिक्त हो जाता है, परन्तु कभी २ घोल (ख) जल कणों के रूप में तेल में फैल जाता है।

गोंद, साबुन आदि घोल बनाने में सहायक होते हैं, और इन की प्रत्येक कण पर अपनी परत चढ़ी रहती है। इन पदार्थों की प्रकृति पर ही घोल क या ख रूप का होता है। इन घोलों में लवण डालने पर भी कुछ भिन्नता आ जाती है। जैसे घोल क में चूने का पानी डालने से वह घोल ख के रूप में परिवर्तित हो जाता है। और ख रूप वाले घोल में साधारण नमक क रूप में बदल जाता है। इन गोंद और साबुन आदि की परत इस प्रकार की नहीं होती कि कोई चीज़ अन्दर न जा सके; अर्थात् एक प्रकार की छिद्र वाली तह सी होती है जिस पर किसी बाहर के पदार्थ का अन्दर जाना निर्भर होता है। इस में से वह पदार्थ ही अन्दर जा सकते हैं जो घुल कर इन छिद्रों से छोटे कणों वाले हो जावें। या जो इस परत में घुल सकें अथवा उस से मिल कर उस के छिद्र को बड़ा (Congulate) कर सकें। अन्य अवस्थाओं में कोई पदार्थ अन्दर नहीं जा सकते। अन्दर जाकर यह पदार्थ घोल की बून्दों के द्रव्य पर अपना प्रभाव करते हैं। इस परत पर वैद्युतिक प्रभाव भी हो जाता है; जो बदला जा सकता है, और तभी क और ख घोल ख तथा क में बदल जाते हैं। मनुष्य जाति के रक्त में बहुत से कोष्ठ (Cell) होते हैं: जो इस परत वाले बिन्दु के रूप में रक्त में पले होते हैं; अथवा यहाँ भी एक प्रकार का घोल ही होता है। कीटाणु भी एक कोष्ठ वाले अथवा एक से अधिक कोष्ठ वाले होते हैं। और कोष्ठ की ऊपरी परत भी झिल्ली जैसी होती हैं। क्रिमियों के शरीर से की त्वचा में भी छिद्र होते हैं। दूसरी श्रेणी के विष क्रिमी के शरीर से छू कर, अर्थात् झिल्ली से मिल कर उस में चिपटे रहते हैं, जिन का कुछ भाग अन्दर प्रविष्ट हो जाता है, जिस से कीटाणु मर जाते हैं।

उल्लिखित सिद्धान्त से हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि ऐसे कोष्ठ की झिल्ली जज़्ब हो जाने या इस में प्रविष्ट हो जाने पर ही पदार्थ अपना कार्य पूरा कर पाते हैं। यह कार्य हानिकारक या लाभदायक किसी प्रकार का हो सकता है, परन्तु एक प्रकार का वैद्युतिक परिवर्तन धन या ऋण विद्युत के रूप में होता है। यह कोष्ठ का परत इस प्रकार के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थों की बनी होती है, जिन में तैल आदि अत्यन्त शीघ्र ही घुल जाते हैं, अर्थात् उस में (Lipoid) विलेय पदार्थ होते हैं, इस कारण तैल इस में सरलता से प्रविष्ट हो जाता है। इसी प्रकार तैल में विलेय पदार्थ भी सुगमता से प्रविष्ट हो जाते हैं। द्रव रूप में यह पदार्थ कीटाणुओं के शरीर से छू जाने से ही अन्दर प्रविष्ट हो जाते हैं, और गैस रूप में श्वास द्वारा अन्दर जाकर कोष्ठ झिल्ली को पार करते हैं। इस प्रकार प्रथम श्रेणी के पदार्थों का कुछ भाग आमाशय से रस द्वारा प्रविष्ट हो कर उन के लिये हानिकारक होता है। तात्पर्य यह है कि तीनों अवस्थाओं में विष की क्रिया वास्तव में एक ही रूप में होती है, अर्थात् कोष्ठ झिल्ली द्वारा कोष्ठ के अन्दर प्रविष्ट होना, ठोस या द्रव पदार्थों के खाने या छूने से अथवा वाष्प के सूंघने से विष की क्रिया होती है।

पिछले लेख में लिखा जा चुका है कि बहुत से सुगन्धित पदार्थों के वाष्प परीक्षण द्वारा देखने पर कृमिहर सिद्ध हुए हैं, और यह कार्य हवन की उड्डन शील गैस के गुण पर निर्भर है। अर्थात् उड्डन शील पदार्थ ही यह कार्य करते हैं। उपरिलिखित सिद्धान्त से हम यह सुगमता से समझ सकते हैं कि उड्डन शील सुगन्धित पदार्थ तैल या तैल में घुल जाने वाले Lipiods विलेय होने के कारण झिल्ली से मिल कर Cell में प्रवेश करते हैं। अग्निहोत्र से उत्पन्न गैस का जो भाग मनुष्य के श्वास से अन्दर प्रविष्ट होता है वह अन्दर रक्त के कोष्ठों से मिल जाता है और अपना कार्य करता है; शेष भाग कमरे आदि में गैस रूप को छोड़ कर तैल बिन्दु के या ठोस कण पर परत के रूप में कमरे की दीवारों तथा अन्य वस्तुओं पर बैठ जाता है, और यदि वहां कीटाणु हों तो उनका नाश कर देता है। इस प्रकार कमरे की वायु शुद्ध होकर रोग के कीटाणुओं को मार देती है। चूहे इत्यादि से छोड़े हुए प्लेग के कीटाणु और मक्खी आदि द्वारा लाये हुये विसूचिका और प्रवाहिका आदि के कृमि इस प्रकार नष्ट किये जा सकते हैं, और चूहे तथा मक्खी की मृत्यु भी नहीं होती।

रोग के बहुत से कीटाणुओं पर सुगन्धित पदार्थों का प्रभाव देखने से ज्ञात हुआ है कि जहां बहुत से तैल के वाष्प कीटाणुओं को सीधा मारते हैं वहां खास उड्डन शील तैलों में कुछ ऐसा भी भाग होता है जो ऐसे कीटाणुओं को अपनी सुगन्ध द्वारा अपनी ओर आकर्षित करता है, और जब वह आकर्षित हो जाता है तो फिर दूसरे पदार्थ अपना कार्य कर डालते हैं। जैसे लैम्प की चमक पतंगों को अपनी ओर आकर्षित करती है परन्तु उसी लैम्प की आग उन को जला सकती है।

इस के अतिरिक्त कोष्ठ झिल्ली पर वैद्युतिक प्रभाव भी होता है। हवन आदि से उत्पन्न वाष्प कुछ देर बाद गैस, तैल और ठोस भाग में विभक्त हो जाते हैं, और जैसा पहिले लिखा गया है, कि इन पर भी वैद्युतिक प्रभाव देखा गया है, इस लिये झिल्ली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर वैद्युतिक प्रभाव के कारण भी ऐसे वाष्प अपना काम प्रविष्ट होकर कर जाते हैं। इस के अतिरिक्त वाष्प के कणों के परिमाण का भी प्रभाव होता है। इस सम्बन्ध में भी यह पहिले लिखा जा चुका है कि वाष्प जितने छोटे कण वाला होगा उसकी उतनी ही प्रतिक्रिया होगी, परन्तु यह प्रतिक्रिया कई कारणों से कम प्रतीत होती है।

वायु की नमी की परत जम जाती है, और फिर यह काम नहीं करने देती है। हवन की गर्मी इस परत को जमने नहीं देती। इसलिये ही इन तैलों के वाष्प अपना पूरा काम नहीं कर पाते, जब तक कि कमरे की वायु गर्म न हो, साथ ही गर्मी से वाष्परूप में अधिक भाग बदल जाता है।

उल्लिखित गुणों पर नमी की परत जमने से बादल बनने के विषय में अन्यत्र बहुत कुछ लिख चुके हैं; अब इतना और लिखना उचित प्रतीत होता है कि ये सुगन्धित तैल ऐसे बादलों से वर्षा में भी आते है, और ऐसी वर्षा से Partial Ferlization द्वारा पृथिवी की उपजाऊ शक्ति बढ़ जाती है और अन्नादि अधिक मात्रा में उत्पन्न होते हैं। पिछले लेख में यह भी दिखलाया था कि हवन से उत्पन्न वाष्प में कुछ भाग कार्बन के कणों का होता है जिस पर तैल की परत होती है, जो ऊपर पहुंच कर बादल बनाने में लाभदायक होते हैं। जब ये कण भारी होते हैं, और ऊपर नहीं जा सकते तो नीचे कमरे में रक्खे हुए पदार्थों पर बैठ जाते हैं, परन्तु प्रायः ये कम बैठते हैं, क्योंकि गर्म वायु द्वारा कमरे से बाहर ही धकेल दिये जाते हैं; या कोहरे के साथ घास खेती आदि पर जम जाते हैं। वर्तमान समय में कृषि नाशक कीटाणु बहुत होने लगे हैं, जो खेती के लिये बहुत हानिकारक हैं, जैसे गेहूं, आलू आदि का कीड़ा। ऐसी अवस्था में इन कणों के उन पर बैठने से ये इन कीटाणुओं का भी नाश करते हैं, और इस प्रकार कृषि को हानि से बचाते हैं। इस हानि से बचाने के लिये आज कल Spray से काम लेते हैं। इस Spray में संखिया आदि होता है, जिस से बहुत हानि होने की सम्भावना रहती है। यही काम हवन से वैसे ही होता है। रोग उत्पन्न करने वाले कृमि भी इसी प्रकार भविष्य में उत्पन्न होने बन्द हो सकते हैं। इस प्रकार से हवन एक रूप में होने से भी भिन्न २ रूपों में अपने लाभ मनुष्य-जाति को पहुंचाता है।

—:०:—

आफ्रीका के ग्राहकों से निवेदन

"अलंकार" के आफ्रीका के कृपालु ग्राहकों से कई बार निवेदन किया गया है कि उनका चन्दा समाप्त हुए बहुत देर हो गई है परन्तु अभी तक कई भाइयों ने हमारे निवेदन पर ध्यान तक नहीं दिया। जिन ने चन्दा भेज दिया है हम उन का धन्यवाद करते हैं परन्तु जिन ने नहीं भेजा उन से निवेदन करते हैं कि अब वापिसी डाक ही ६ शिलिङ्ग वार्षिक चन्दा भेज दें—प्रबन्धकर्ता अलंकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराले आदमी

(ले० पं० देवशर्मा जी विद्यालंकार)

यह कौन है जो कि दिन दोपहरे सोया पड़ा है ? अब जब कि 'सभ्यता' का दोपहर चढ़ा हुवा है, सब अपने २ कार्य में ज़ोर शोर से लगे हुवे हैं, तब यह कौन एक तरफ चुपचाप पड़ा है ? संसार में तो सब तरफ चहल पहल है, बाज़ार भरे हुवे हैं, लोग अपने २ दफ़्तरों और कारखानों में कार्यव्यग्र हैं, ऐंजिन शोर कर रहे हैं, मोटर दौड़ रहे हैं, तार खटक रहे हैं, टेलीफ़ोन बोल रहे हैं एवं अन्य सैकड़ों प्रकार की अचेतन मैशीनें भी चल रही हैं (बल्कि लोगों को चला रही हैं), तब यह कौन है जो कि एक तरफ़ निश्चेष्ट हो आँख मींच कर बैठा है ?

कोई कहता है कि ये 'योगी' हैं और इनके पास इनके जागने की प्रतीक्षा में श्रद्धा से बैठ जाता है।

कोई कहता है कि ये 'महात्मा' हैं और इनके चरणों में श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर चला जाता है।

कोई कह जाता है कि इन अकर्मण्य लोगों ने ही भारतवर्ष का नाश किया है।

कोई कहता है कि यह दुनियाँ में व्यर्थ ही जीता है।

और कोई कहता है—'ये निराले आदमी हुवा करते हैं। चलो, आगे चलें।'

कोई इसे पागल समझ कर छोड़ जाता है।

इस प्रकार भिन्न २ लोग अपनी दृष्टि के अनुसार ऐसे लोगों को भिन्न भिन्न भाव से देखते हैं और इनके भिन्न २ नाम रखते हैं। पर आओ आज हम भगवद्गीता के शब्दों में सुनें कि ये लोग 'संयमी' और 'पश्यन् मुनि' हैं। ये लोग संयमी होकर वहां जागते हैं जहां कि अन्य सब लोग पड़े सो रहे हैं और पश्यन्मुनि (अर्थात् देखते हुवे चुप, चेतन होते हुवे-पूर्ण चेतन होते हुवे भी-जड़वत् बने हुवे) हो कर ये लोग वहां सोते हैं जहां कि सब दुनियाँ जागती है।

(१) या निशा सर्वभूतानां,
तस्यां जागर्त्ति संयमी।
(२) यस्यां जाग्रति भूतानि,
सा निशा पश्यतो मुनेः।

परन्तु आश्चर्य यह है कि हम लोगों को यह दूसरी (पिछली) बात ही दिखायी देती है कि ये सो रहे हैं जब कि हम जाग रहे हैं, किन्तु पहिली (मुख्य) बात नहीं दिखलायी देती कि जहां ये जाग रहे हैं, वहां हम प्रगाढ़ सोये पड़े हैं। इस लिये व्यर्थ ही हम इनके सोने पर विस्मित या दुःखी होते हैं और उस लोक को जानने का सौभाग्य नहीं पा सकते कि जिस उच्च लोक में जागने के लिये ये लोग इस लोक से आंखें मीचे हुवे हैं। हे संसारी पुरुषो ! उस दिव्य को जानने की इच्छा यदि तुम्हें कभी पैदा होगी तो याद रखो कि उसे पाने के लिये तुम्हें भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक तरह सोना सीखना होगा और इन्हीं की तरह सोना होगा।

* * * *

यह तो हुई पहिले दर्जे के निराले आदमियों की बात। इन की लीला गहन है। हमारे लिये तो दूसरे, तीसरे दर्जे के मामूली 'निराले आदमी' ही निरालेपन में काफी हैं। लक्षण सदा यही है कि जब सब सोते हैं तो ये जागते हैं और जब सब जागते हैं तब ये सोते हैं। देखिये, जब संसारी लोग रात के बारह बजे और दो, तीन बजे तक नाटक खेल तमाशे में जागते रहते हैं, तब ये लोग 'पूर्वरात्र'में अधिक से अधिक नींद ले लेने के लिये सोये पड़े होते हैं और जब संयमी लोग ब्राह्ममुहूर्त्त में ईश्वराराधन के लिये जागे होते हैं तब ये विषयी लोग सूर्योदय के पश्चात् तक भी पड़े सो रहे हैं। यह निद्रा जागण का एक अति स्थूल रूप हुवा। इसी तरह संसारी लोग बालकपन और जवानी के समय खेल और विषयभोग में मस्त सोये रहते हैं, जब कि संयमी पुरुष ज्ञानोपलब्धि और शक्ति-संचय करता हुवा इस समय संयमपूर्वक जागता है। इस प्रकार से ज़रा सूक्ष्मता में भी हर कोई देख सकता है कि क्षेत्र में ही विषयी और संयमी का निद्राजागरण उलटा है। किन्तु सब जगह ही ढूंढने से इस उलटे निद्राजागण का रहस्य यही मिलेगा कि संसारी पुरुष विश्राम के समय में (असली रात्रि में) विषयों द्वारा सताया हुवा होने के कारण अपने इन्द्रियों के घोड़ों को मार पीट कर चलाता जाता है, (इसके बिना उसे चैन नहीं आती) जिससे कि ये घोड़े कार्य का समय आने पर (असली दिन में) इतने निर्जीव और बेदम हो चुके होते हैं कि बेबस सो जाते हैं और कार्य नहीं दे सकते। एवं सदैव ही ये संसारी लोग विश्राम के समय में तो अपने आप को थकाते हैं और आगे बढ़ने के समय पड़ कर सोते हैं, जब कि इसके विपरीत संयमी लोग विश्राम के समय (रात्रि) विश्राम कर पुष्टि और शक्ति प्राप्त करते हैं और दिन आने पर उस शक्ति द्वारा कार्य करते हुवे आगे बढ़ते जाते हैं। इसी क्रम से संयमी तो दिनों दिन ऊंचे चढ़ते जाते हैं, और विषयी लोग इन्द्रियादिकों को सता कर भी उसी जगह चक्कर लगाते हुवे वहीं के वहीं रहते हैं। इस प्रकार दोनों का लोक दिनों दिन बदलता जाता है, यहाँ तक कि उसी धरती पर फिरता हुवा संयमी धीरे २ जिस उन्नत दुनियाँ में रहने लगता है, उस दुनियाँ का विषयी पुरुष स्वप्न भी नहीं ले सकता। अतः इस लोक में जागने वाला विषयी तो उस लोक के लिये सुषुप्त सो रहा होता है और बिलकुल न जानता हुवा सो रहा होता है। किन्तु उस लोक में जागने वाला संयमी जो इस लोक के लिये सो रहा होता है वह देखता हुवा-जागता हुवा (पश्यन्)-सो रहा होता है, क्योंकि वह लोक को भी जानता है। यह संयमी और विषयी के सोने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अन्तर है। इसी लिये उस उच्च दुनियाँ के लिये अज्ञानपूर्वक सोने वाले विषयी का वह दुनियाँ नाश कर देती है, पर इस दुनियाँ के लिये ज्ञान पूर्वक सोने वाले संयमी का यह दुनियाँ कुछ नहीं बिगाड़ सकती। तो फिर 'पश्यन्' हो कर विश्राम के समय सोना और कार्य के समय संयमपूर्वक जागना यही निराले आदमी का सूक्ष्म लक्षण है। जो कि इतना संयम कर सकता है कि कार्यकाल में चाहे कितने ज़ोर का मस्त और मूर्छित कर सुला देने वाला निद्रा वेग आवे पर वह सोवे नहीं (उस वेग को रोक सके) और जो विश्राम काल में ऐसा देखता हुआ सो सके कि निद्रा में भी अपने आपको न भूल जाय (अपने से नीचे उतर कर सोवे, निद्रा का राज्य 'आत्मा' पर न होने देवे) वही निराला आदमी कहाने योग्य है। वही 'संयमी' और 'पश्यन्मुनि' है। अन्य लोग तो जो कि विषयी हो कर जागते हैं और जड़मुनि या मुग्धमुनि होकर बे-होश सोते हैं वे मामूली आदमी हैं। इन विषयी और जड़मुनि लोगों से दुनियाँ भरी पड़ी है। क्या तुम इन से निराला आदमी नहीं बनना चाहते ?

* * * *

तुम कहते हो कि आँखें खोलो और देखो, वे कहते हैं कि आँखे बन्द करो और देखो। तुम कहते हो 'आगे बढ़ो, आगे बढ़ो' वे कहते हैं 'पीछे हटो और अपने असली केन्द्र पर पहुँचो'। तुम कहते हो 'अधिकार चाहिये, अधिकार।' वे कहते हैं कि 'अवसिताधिकार होवो।' तुम कहते हो 'गुणी बनो, गुणों का संग्रह करो।' वे गुणों के बन्धनों को छोड़ कर गुणातीत होते हैं। तुम कहते हो 'मिलो, मिलो, जितने अधिक आदमी मिलें उतना ही अच्छा है'-वे कहते हैं 'अकेले-बिलकुल अकेले-होवो, केवलता (कैवल्य) पाना ही मनुष्य का परमोद्देश्य है।'

तुम वीर्य की अधोगति (नीचे गिराने) में आनन्द समझते हो, वे वीर्य की ऊर्ध्वगति कर ऊर्ध्वरेता हो कर ब्रह्मानन्द को प्राप्त करते हैं। तुम सदा अपना ही स्वार्थ देखते हो, वे सदा दूसरों का हित देखते हैं, अथवा वे सदा आत्मा (अपने आप) को ही देखते हैं, और तुम अपने को भूल सदा दूसरों को ही देखते हो। तुम अनगिनत इच्छायें रखते हो, वे अपनी सब इच्छायें त्यागना चाहते हैं। तुम्हारी आवश्यकतायें पूरी नहीं होने में आतीं पर उनकी सब आवश्यकतायें ईश्वर पूर्ण करता है।

तुम जिधर जा रहे हो वे उधर से लौटे आ रहे हैं। तुम भोग को मीठा समझ कर उसके पीछे पड़े हो, वे इसे फीका समझ कर छोड़े बैठे हैं। तुम सुख की तरफ दौड़ते हो पर तुम्हें सुख मिलता नहीं है, वे सुख को दुतकारते हैं और सुख उन के पीछे पूंछ हिलाता हुवा दौड़ा आता है। यही हाल लक्ष्मी, यश तथा सब ऐश्वर्य का है कि ये वस्तुएं उन के पास तो बिना बुलाये आती हैं, परन्तु तुम्हारी जिघृक्षा (पकड़ने की इच्छा) से डर कर दौड़ती हैं।

तुम पश्चिम की तरफ जाते हो, वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व की तरफ जाते हैं। तुम कहते हो कि 'संसार का विकास हुवा है, वे कहते हैं कि संसार का बड़ा ह्रास हुवा है। तुम कहते हो कि ये जो कुछ दिखायी देता है यही सब कुछ है, पर वे कहते है जो नहीं दिखायी देता वही सब कुछ है। तुम कहते हो कि संसार में बिना झूठ के काम नहीं चलता, वे कहते हैं कि संसार की एक २ वस्तु सत्य पर ही आश्रित है। तुम कहते हो कि खाने से आयु बढ़ती है इस लिये खूब खाओ, वे कहते हैं अति भोजन से आयु घटती है।

इस प्रकार यह निरालेपन की कहानी बड़ी लंबी है। जितना कहता जाता हूँ उतनी बढ़ती जाती है। इसे और कहां तक कहूं? बस, इतना कह देना ही काफी है कि उन की और तुम्हारी दुनियाँ ही बिलकुल भिन्न है। इस लिये स्वभावतः उनकी एक एक बात तुम से निराली है।

* * * *

ये निराले आदमी प्रायः सभी कालों में और सभी देशों में पाये जाते हैं। पर ये विशेषतया तब प्रकट होते हैं जब कि कोई क्रान्ति आने वाली होती है। क्योंकि आने वाली क्रान्ति के सत्य को ये लोग सब से पहिले अपने जीवन में लाते हैं और अतएव अन्य लोगों की दृष्टि में निराले आदमी नज़र आते हैं। अपने देश में देखें तो राम के अति प्राचीन काल में शायद ये निराले लोग 'वानर' बन कर पैदा हुवे थे और कृष्ण के काल में 'गोप' बने थे। बुद्ध के ज़माने में ये 'भिक्षुक' बन कर जन्मे थे और शंकर के साथ 'परिव्राजकाचार्य' बने थे। अभी दयानन्द के साथ ये 'आर्य' बनकर हुवे और आज गाँधी के साथ खद्दर पहिनने वाले 'सत्याग्रही' बन कर पैदा हुवे हैं।

पहिले दर्जे के निराले आदमी वे होते हैं जो कि अपनी अतुल मनःशक्ति से सूक्ष्म संसार में क्रान्ति पैदा कर देते हैं। दूसरे दर्जे के निराले आदमी इस क्रान्ति के पकड़ने वाले (ग्रहण करने वाले) होते हैं और इसे चलाते हैं तथा तीसरे दर्जे के लोग इस में नाना प्रकार से सहायता देते हैं।

निराले आदमी की पहिचान क्रान्ति के प्रारंभ में होती है। क्रान्ति जब हो-चुकती है तब तो कुछ भी निरालापन नहीं रहता—नये प्रवाह में सभी बहने लगते हैं। तब तो सभी अपने को बौद्ध कहलाने में अभिमान मानते हैं या 'अहं ब्रह्मास्मि' कहने लगते हैं। अब तो सब कहीं 'नमस्ते' सुनायी देती है और कुछ देर में सभी दुनियाँ गाँधी के अनुयायिओं से भर जायगी। परन्तु संसार जिन्हें 'निराला आदमी' देखता है और यह उपाधि देता है वे तो धन्य पुरुष होते हैं, वे शक्तिशाली ज़िन्दा पुरुष होते हैं जो कि क्रान्ति के प्रारंभ के कठिन कार्य को करते हैं॥

हे नारायण! मुझे पैदा करना तो निराला आदमी बनाकर पैदा करना। यदि मैं पहिले दर्जे या दूसरे दर्जे का भी निराला आदमी बनने को योग्य न ठहरूँ, तो मुझे तीसरे दर्जे का ही निराला बनाना; परन्तु मुझ द्वारा 'लकीर पीटने वालों' की संख्या न बढ़ाना। नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो न पैदा करना, मेरी तो यही इच्छा है। हे निराले ! मुझे तो निरालापन प्यारा है। दुनियाँ मुझे निराला कह कर चिढ़ावे यही प्यारा है। तेरी अखण्ड एक-रसता में जो अखण्ड निरालापन है, मैं उसका उपासक हूं। मुझे अपनी इस निरालेपन की लीला में ही ख़र्च करना. —०—

मैं कौन हूँ ?

(कविवर श्रीमाल)

मैं कैसे जानूं, यहाँ कहाँ से, क्यूं कर आया।
मैं कौन, किस लिये, उतर यहाँ पर कैसे आया।

ये उषा-काल की किरणें हैं जो आतीं-
हिल मिल कर नभ में नाच नाच कर गातीं-
फिर धरणी तल पर मिल कर साथ उतरतीं-
फैला कर अपने पंख निविड़ तम हरतीं-
मैं पकड़ इन्हीं का हाथ वहीं से उतरा आया
मैं कैसे जानूं, यहाँ कहाँ से, क्यूं कर आया ॥

[२]

यह जहाँ चाँदनी लोट पोट हो कर के-
हँसती फिरती है नव उमंग में भरके;
यह लहर लहर पर नाच नाच कर गाती
जग भर में अनुपम धवल सुधा बरसाती-
मैं इसी के आँचल में छिप कर हूं आया-
मैं कैसे जानूं यहाँ कहाँ से क्यूं कर आया ॥

[३]

ये फूल फबीले जहाँ फूल कर गाते-
काटों से भरी डाल पर नृत्य दिखाते-
पर भर उमंग में भूल सभी दुख जाते-
गाते गाते उपदेश सुना इक जाते।
मैं भर कर इन की इस उमंग में उमड़ा आया
मैं कैसे जानूं यहाँ कहाँ से क्यूं कर आया ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४]

यह साँझ जहाँ पर ओढ़ सुनहरी आँचल-
है जाती लेने विदा सूर्य से अन्तिम--
यह विरह व्यथा से अश्रुधार बरसाती-
जो बन कर ओस धरातल को सरसाती ।
मैं बन कर इक बूंद इसी में मिल कर आया
मैं कैसे जानूं यहां कहां से क्यूं कर आया ॥

[५]

ये जहां गरजते मेघ उमड़ कर आते-
चँचल बिजली की क्रीड़ायें सिखलाते-
धाराओं में भर धरणी-तल पर आते
ये इन्द्र धनुष की शोभा हैं दिखलाते-
मैं बिजली में से चमक निकल कर ही हूं आया ॥
या इन्द्र-धनुष पर बैठ यहाँ पर उतरा आया ।

[६]

यह उमड़ उमड़ कर नदी जहाँ से आती
लहरों पर आकर नाच नाच है गाती-
अपनी अद्भुत क्रीड़ायें है दिखलाती--
जीवन भर हँसते रहना है सिखलाती।
मैं इसकी इसी हँसी में भरा उछलता आया ।
मैं कैसे जानूं यहां कहां से क्यूं कर आया ॥

[७]

यह जहाँ निशा का काला परदा है गिरता-
उसके पीछे ही चाँद उछलता फिरता,--
"है मृत्यु निशा के पीछे जीवन", यह बतलाता
यह दृश्य दिखा कर थके दिलों को है सरसाता॥
यह जीवन मृत्यु विभेद समझ में मेरे आया
मैं कैसे जानूं यहां कहां से क्यूं कर आया ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय 079524

बौद्ध धर्म का विदेशों में विस्तार

[४]

६. मोद्गलिपुत्र तिष्य के प्रचारक मण्डलों की सफलता

(प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालंकार)

बौद्ध धर्म की तृतीय महासभा की समाप्ति पर आचार्य मोद्गलिपुत्र तिष्य ने जो विविध प्रचारक-मण्डल विदेशों में बौद्ध धर्म का विस्तार करने के लिये भेजे, उन में से कुमार महेन्द्र ने लंका में किस प्रकार बौद्ध धर्म का प्रचार किया, यह हम पहले देख चुके हैं। अन्य मण्डलों के सम्बन्ध में विशेष रूप से कुछ भी विवरण बौद्ध साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। केवल महावंश में संक्षेप के साथ इन के कार्य की तरफ निर्देश किया गया है। यह वर्णन अस्पष्ट और विचित्र बातों से भरा हुवा है। ऐसा मालूम पड़ता है कि जिस समय महावंश लिखा गया, उस समय इन मण्डलों के कार्य का कोई सम्बद्ध विवरण विद्यमान न था, केवल उनकी अपूर्व व गौरव मय सफलता की अतीत स्मृति ही अवशिष्ट थी। यह होते हुवे भी महावंश का विवरण मनोरंजक और पढ़ने योग्य है।[1]

काश्मीर और गान्धार में प्रचार करने के लिये थेर मज्झन्तिक गये। उस समय इन देशों पर 'आरवाल' नामक एक नाग राजा राज्य कर रहा था। इस को अलौकिक शक्तियां प्राप्त थीं। अपने प्रभाव से यह एक महान् जल प्रवाह द्वारा सम्पूर्ण काश्मीर और गान्धार की फसलों को नष्ट कर रहा था। "थेर मज्झन्तिक आकाश मार्ग से उड़ कर आरवाल के प्रभाव से जलाप्लावित हुवे स्थान पर जा पहुंचा। वहां पहुंच कर वह जल के ऊपर बड़े गम्भीर ध्यान में मग्न हो कर इधर उधर फिरने लगा। जब नागों ने उसे देखा, तब उन्हें बड़ा क्रोध आया। उन्होंने सब समाचार नाग राजा तक पहुंचा दिया। क्रोध से अभिभूत नाग राजा ने विविध उपायों से थेर मज्झन्तिक को भयभीत करने का प्रयत्न किया। बड़ी जोर से हवा चलने लगी, बादल मूसलाधार वर्षा करने लगे।

---

१. यह विवरण महावंश के द्वितीय परिच्छेद में विद्यमान है। महावंश के अंग्रेजी अनुवाद के लिये George Turnour और L. C. Wijesinha Mudaliyar द्वारा अनूदित महावंश देखिए। यह अनुवाद—विशेषतः Geerge Turnour द्वारा अनूदित पूर्वार्ध, मूल महावंश का भावानुवाद प्रतीत होता है। अतः असली अभिप्राय के लिये मूल का अवलोकन करना आवश्यक है। हमने मूल पाली महावंश को सम्मुख रख कर यह हिन्दी अनुवाद किया है। यद्यपि यह भी मूल का अक्षरानुवादन न हो कर भाषानुवाद है, तथापि अंग्रेजी अनुवाद से इस में अनेक भिन्नतायें हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली कड़कने लगी। मेघ गरजने लगे। वृक्ष और पर्वत टुकड़े टुकड़े होकर गिरने लगे।

"नागों ने विविध भयङ्कर रूपों को धारण कर थेर मज्झन्तिक को घेर लिया। उन्होंने उसे डिगाने का अनेक भांति प्रयत्न किया। स्वयं नाग राजा ने विविध प्रकार से उसे कष्ट दिये। परन्तु थेर ने अपनी अलौकिक शक्तियों से इन सब का मुकाबला किया और नागों के सब प्रयत्न को व्यर्थ कर दिया। अन्त में थेर मज्झन्तिक ने अपने उत्कृष्ट सामर्थ्य का प्रदर्शन कर नाग राजा को सम्बोधन कर इस प्रकार कहा 'हे नाग राज! यदि सम्पूर्ण (मनुष्य) लोक देवों को भी अपने साथ लेकर मुझे नष्ट करना चाहे, तब भी वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हे महानाग! यदि तू ससमुद्र और सपर्वत इस सारी पृथिवी को मेरे ऊपर फेंक दे, तब भी तू मुझ में किसी प्रकार के भय का सञ्चार नहीं कर सकता। हे उरगाधिप! अपनी इस विनाश की प्रक्रिया को बन्द कर दो।'[२]

"यह सुन कर नागों का राजा बहुत प्रभावित हुआ। उस में थेर मज्झन्तिक के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा उत्पन्न हुई। तब थेर ने उसे धर्मोपदेश किया। धर्म का उपदेश सुन कर नाग-राजा ने बौद्ध धर्म को स्वीकृत कर लिया। इसी प्रकार अन्य ८४ हज़ार नागों ने थेर मज्झन्तिक के धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

"हिमवन्त देश में भी बहुत से गन्धर्व, यक्ष और कुम्भण्डकों ने बौद्ध धर्म को स्वीकृत किया। एक यक्ष ने जिस का नाम पञ्चक था, अपनी पत्नी हारीत के साथ धर्म के प्रथम फल की प्राप्ति की और अपने ५८० पुत्रों को इस प्रकार उपदेश किया 'जैसे अब तक तुम क्रोध करते आये हो, वैसे अब भविष्य में क्रोध मत करो। क्यों कि सब प्राणी सुख की कामना करने वाले हैं, अतः अब कभी किसी का घात न करो। जीव मात्र का कल्याण करो। सब मनुष्य सुख के साथ रहें।'[३]

---

२. "सदेव कोपि चे लोको आगन्त्वा नासयेय्य मं
न मे परिबलो अस्स जनेतुं भयभेरवं।
सचे पित्वं महिं सब्बं ससमुद्दं सपब्बतं
उक्खिपित्वा महानाग! खिपेय्यासि ममोपरि॥
नेव मे सक्कुणेय्यासि जनेतुं भयभेरवं
अज्जदग्गे तवेवस्स विघातो उरगाधिप!"

महावंश १२, १६-१८

३. "मा' दानि कोधं जनयि इतो उद्धं यथा पुरे
सस्स घातञ्च मा कत्थ सुख कामानि पाणिनो।
कयेथ मेत्तं सत्तेसु वसन्तु मनुजा सुखं।" महावंश १२, २२-२३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चक से यह उपदेश पाकर उन्होंने इसी के अनुसार आचरण किया।

"तदनन्तर, नाग-राजा ने थेर मज्झन्तिक को रत्न जड़ित आसन पर बिठलाया और स्वयं समीप खड़ा हो कर उस पर पंखा झलने लगा। उस दिन काश्मीर और गन्धार के निवासी नाग-राजा को नानाविध उपहार भेंट करने के लिये आये हुवे थे। जब उन्होंने थेर की अलौकिक शक्ति और महान् प्रभाव को सुना, तब वे उसके समीप आये और अभिवादन करके खड़े हो गये।

"थेर ने उन्हें 'आसिविसोपम धर्म' का उपदेश किया। इस पर ८० हज़ार मनुष्यों ने बौद्धधर्म को स्वीकार किया। और एक लाख मनुष्यों ने थेर द्वारा 'प्रव्रज्या' ग्रहण की। उस दिन से लेकर आज तक काश्मीर और गान्धार के मनुष्य बौद्धधर्म की तीनों वस्तुओं (बुद्ध, संघ और धम्म) में परिपूर्ण भक्ति रखते हैं और (भिक्षुओं के) पीतवस्त्रों का धारण करते हैं।[४]

थेर महादेव बौद्धधर्म का प्रचार करने के लिये 'महिस मण्डल' प्रदेश में गया। ऐतिहासिक स्मिथ के अनुसार महिसमण्डल माइसूर प्रदेश का नामहै।[५] माइसूर में जा कर महादेव ने जनता के बीच में 'देवदूत सुत्तन्त' का उपदेश किया। इस का परिणाम यह हुवा कि ४० हज़ार मनुष्यों ने बौद्ध धर्म को स्वीकृत किया और ४० हजार मनुष्यों ने 'प्रव्रज्या' लेकर भिक्षुओं के पीतवस्त्र धारण किये।

"इसी प्रकार आचार्य रक्खित वनवासी[६] देश को आकाशमार्ग से उड़ कर गया। वहां उसने जनता के मध्य में 'अनमतग्ग' का प्रचार किया। ६० हजार मनुष्य बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये। ३७ हजार मनुष्यों ने भिक्षु बनना भी स्वीकृत किया। इस आचार्य ने बनवासी देश में ५०० विहारों का भी निर्माण किया और उस प्रदेश में बौद्धधर्म की अच्छी प्रकार से स्थापना कर दी।

"थेर योनक धम्म रक्खित अपरन्तक[७] देश में गया। वहां जाकर उस ने 'अग्गिक्खन्धोपम सुत्त' का उपदेश किया। यह आचार्य धर्म और अधर्म को खूब अच्छी तरह समझता था। इसका उपदेश सुनने के लिये २७ सहस्र मनुष्य एकत्रित हुवे। इन में से एक

---

४. असीतिया सहस्सानं धम्माभिसमयो अहू
सतसहस्सपुरिसा पब्बजुं थेरसन्तिके।
ततोप्यनुतिकस्मीरगन्धारा ते इदानिपि
आसुं कासावपज्जोता वत्थुत्तय परायणा ॥ महावंश १२, २७-२८ ॥

5. V. A. Smith–Asoka P. 44

६. वनवासी देश = उत्तरीय कनारा

७. अपरन्तक देश = बोम्बे का उत्तरीय तट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार पुरुष और इस से भी अधिक स्त्रियां, जो कि विशुद्ध क्षत्रिय जाति की थीं, भिक्षुसंघ में प्रविष्ट होने के लिये तैयार हो गईं।

"थेर महाधम्मरक्खित महाराष्ट्र देश में प्रचार के लिये गया। वहां उस ने 'महानारदकस्सपह्व जातक' का उपदेश किया। ८४ हजार मनुष्यों ने सत्य बौद्ध मार्ग का अनुसरण किया और १३ हजार मनुष्य प्रव्रजित हुवे।

"आचार्य महारक्खित 'योन'[८] देश में गया। वहां उसने 'कालकाराम सुत्त' का उपदेश किया। एक लाख सत्तर हजार प्राणियों ने बुद्ध मार्ग के फल को प्राप्त किया और दस हजार मनुष्य भिक्षु बने।

"आचार्य मज्झिम अन्य चार थेरों के साथ[९] हिमवन्त देश में गया। वहां जाकर इन प्रचारकों ने धर्मचक्र का प्रवर्तन किया। इस प्रदेश में ८० करोड़ प्राणियों ने बौद्ध मार्ग के फल को प्राप्त किया। इन पाँच थेरों ने पृथक् २ हिमवन्त देश के पांच राष्ट्रों में प्रचार किया। परिणाम यह हुवा कि प्रत्येक राष्ट्र में एक २ लाख मनुष्यों ने भिक्षु बन कर बौद्धसंघ में प्रविष्ट होना स्वीकृत किया।

"आचार्य उत्तर के साथ थेर सोण सुवर्णभूमि[१०] में गया। उस समय सुवर्णभूमि के राजगृह में यह अवस्था थी कि ज्यों ही कोई कुमार उत्पन्न होता था, उसी क्षण एक राक्षसी आ कर उसे खा जाती थी। जिस समय ये थेर सुवर्णभूमि में पहुंचे, उसी समय राजगृह में एक बालक उत्पन्न हुवा। लोगों ने समझा कि ये थेर राक्षसी के सहायक हैं, अतः वे उन्हें घेर कर मारने के लिये तैयार हो गये। थेरों ने उन के अभिप्राय को समझ लिया और इस प्रकार से कहा—'हम तो शील से युक्त श्रवण हैं, राक्षसी के सहायक नहीं हैं।'[११] उसी समय राक्षसी अपने सम्पूर्ण साथियों के साथ समुद्र से निकली। इस पर सब आदमी भयभीत होकर हाहाकार करने लगे। परन्तु थेरों ने अपने अलौकिक प्रभाव द्वारा बहुत से राक्षसों को प्रकट कर राजकुमार का भक्षण करने वाले राक्षसों को घेर लिया। नये अगणित राक्षसों को देख कर ये राक्षस भाग खड़े हुवे। इस

८. योनदेश—भारत की पश्चिमोत्तर सीमा के अनन्तर के देशों को योनदेश समझा जाता था, परन्तु ध्यान रखना चाहिये कि सम्राट् अशोक के समय भारत की पश्चिमोत्तर सीमा वर्तमान ब्रिटिश भारत की पश्चिमोत्तर सीमा से बहुत अधिक परवर्त्ती थी।

९. हिमवन्त में प्रचार करने वाले आचार्य मज्झिम के इन साथियों का नाम महावंश में नहीं लिखा। परन्तु दीपवंश में इन का नाम इस श्लोक में लिखा है—

कस्सपगोत्तो च यो थेरो मज्झिमो दुरभिसदो
सहदेवो मूलकदेवो हिमवन्ते यक्खगणं पसादयुं।

दीपवंश ८, १०

१०. सुवर्णभूमि = पेगू और मौलमीन

११. 'किमेतन्ति' च पुच्छित्वा थेरा ते एवमाहु ते
"समणा मयं सीलवन्ता न रक्खसी सहायका।" महावंश १२, ४७-४८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार सर्वत्र अभय की स्थापना कर इन थेरों ने एकत्रित लोगों को 'ब्रह्म-जाल सूत्त' का उपदेश किया। बहुत से लोगों ने बौद्धधर्म को स्वीकृत कर लिया। विशेषतः ६० सहस्र मनुष्य तो धर्म से अच्छी प्रकार परिचित व आविष्ट हो गये। १ हजार ५ सौ पुरुषों और इतनी ही स्त्रियों ने भिक्षु बन कर सङ्घ में प्रवेश किया।

"इस समय के बाद सुवर्ण भूमि के राजवंश में जो भी कुमार उत्पन्न हुवे, वे (थेर सोण और उत्तर के नाम से) सोणुत्तर कहलाये।"

इस तरह विविध प्रचारक मण्डलों के विदेशों में बौद्ध धर्म के विस्तार का उल्लेख कर महावंश लिखता है कि-

महादयस्सापि जिनस्स कड्ढनं
विहायपत्तं अमतं सुखम्पि ते
करिंसु लोकस्स हितं तहिं तहिं
भवेय्य को लोकहिते पमादवा॥१२

निस्सन्देह, इन सिद्ध थेरों ने अपने अमृत से भी बढ़ कर आनन्द सुख का परित्याग कर सुदूरवर्त्ती देशों में भटक कर, सब कष्टों को सह कर संसार का हित साधन किया था। निस्सन्देह ये धन्य हैं।

महावंश का यह विवरण कहां तक मान्य है, यह निश्चय कर सकना बहुत कठिन है। आकाश मार्ग से उड़ कर सुदूरवर्त्ती प्रदेशों में जाना, अपने प्रभाव से जलाशयों को सुका देना आदि चामत्कारिक बातें पूर्णांश में तथ्य नहीं समझी जा सकतीं। एक एक प्रदेश में थोड़े से प्रयत्न से लाखों व्यक्तियों का बौद्ध हो जाना भी सरल नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि जिस समय महावंश और दीपवंश लिखे गये, उस समय बौद्धधर्म के विस्तार का निश्चत इतिहास विद्यमान न था, केवल अतीत स्मृति के रूप में कुछ बातें लोगों को मालूम थीं। उन्हीं को इन लंका के इतिहासों में उल्लिखित कर दिया गया है। यदि ये पूर्णतः सत्य न भी हों, तब भी ये उस लहर को अच्छी प्रकार प्रदर्शित कर देते हैं, जो कि सम्राट् अशोक के शासन काल में देश विदेश को बौद्ध धर्म से आप्लावित कर रही थी।

महावंश और दीपवंश के सिवाय अन्यत्र बौद्ध साहित्य में इन प्रचारक मण्डलों के निर्माण और उन के कार्यों का उल्लेख उपलब्ध नहीं होता। परन्तु काश्मीर में आचार्य माज्झन्तिक के प्रचार का वृत्तान्त तिब्बती तथा चीनी बौद्ध ग्रन्थों में भी विद्यमान है। तिब्बती और चीनी साहित्य में उत्तरीय बौद्धधर्म के ही इतिवृत उल्लिखित हैं। अतः मोद्गलिपुत्र तिष्य के प्रचारक मण्डलों में से काश्मीर के प्रचारकों का वर्णन करना उन के लिये स्वाभाविक और उचित है। तिब्बती ग्रन्थ दुल्व के अनुसार महात्मा बुद्ध के

१२. महावंश १२, ५५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाण के १०० वर्ष पश्चात्[13] आचार्य मध्यान्तिक (मज्झन्तिक) काश्मीर में बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिये गया। वहां पर नागों का अधिकार था .... आगे लगभग वही कथा है, जो महावंश में उल्लिखित है। [14]

इसी प्रकार प्रसिद्ध चीनी पर्य्यटक ह्यूनसांग ने अपने यात्रा—वृत्तान्त में काश्मीर का वर्णन करते हुए वहां पर बौद्ध धर्म के विस्तार का भी इतिहास लिखा है। वह लिखता है—"एक बार पुराणे समय में जब महात्मा बुद्ध उद्यान देश में एक दानव को पराभूत कर वापिस आ रहे थे, तब आकाश मार्ग में आते हुए जब वे ठीक काश्मीर के ऊपर पहुंचे तब उन्हों ने आनन्द को सम्बोधन कर के कहा—'मेरे निर्वाण के बाद अर्हत मध्यान्तिक इस देश में एक राज्य स्थापित करेगा, यहां के लोगों को सभ्य बनायगा और अपने प्रयत्न से बुद्ध के शासन का विस्तार करेगा।' [15] इस के आगे ह्यून सांग ने अर्हत मध्यान्तिक द्वारा काश्मीर में बौद्ध धर्म के विस्तार का वृत्तान्त लिखा है। यह वृत्तान्त भी महावंश के वर्णन से बहुत कुछ मिलता है।

इस तरह काश्मीर में बौद्ध धर्म के विस्तार के सम्बन्ध में सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य एक मत है। लङ्का, तिब्बत और चीन में एक ही इतिवृत्त का उपलब्ध होना इसकी सत्यता को सूचित करता है। हम इस से यह भी सुगमता के साथ समझ सकते हैं, कि महावंश के अन्य प्रचारक मण्डलों के सम्बन्ध में प्राप्त विवरण भी सत्य घटनाओं पर आश्रित हैं। [15]

---

१३. उत्तरीय बौद्ध साहित्य में प्रायः अशोक के समय को भी बुद्ध के निर्वाण से १०० साल बाद लिखा जाता है। यद्यपि ऐसा लिखना उन की भूल है, तथापि मज्झन्तिक को भी निर्वाण के १०० साल बाद लिखना यह सूचित करता है कि उन के अनुसार मज्झान्तिक अशोक के समकालीन है।

14. Rockhill–Life of the Buddha 167–170

15. Beal–Buddhist Records of the Western world. I, 144–150

सम्पादकीय

हिन्दू–मुस्लिम समस्या

हिन्दू मुस्लिम फसादों की नाशकारी ज्वालाएं, जो अब तक उत्तर भारत में ही सियमित समझी जाती थीं, आज सम्पूर्ण देश में व्याप्त हो चुकी हैं। इतना ही नहीं, अब तक यह समझा जाता था कि इन सम्प्रदायिक झगड़ों का वास्तविक कारण दोनों सम्प्रदायों के शरारतपसन्द गुन्डों के कालिमा पूर्ण कारनामे ही हैं; परन्तु आज यह सिद्ध हो गया है ये सम्प्रदायिक प्रतिस्पर्धा तथा घृणा के भाव दोनों जातियों के अगणय विचार–

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शील नेताओं के मस्तिष्कों में भी बड़ी गहरी जड़ पकड़े हुए हैं। हिन्दू मुस्लिम समस्या आज इस अभागे देश की सब से बड़ी समस्या है; इस गुलाम देश की आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक उन्नति की समस्याएं इस भयंकर समस्या की ओट में और भी अधिक उलझती जाती हैं।

मुसलमान लोग विजेता बन कर भारत में आए थे। उनकी छत्र छाया में सम्पूर्ण भारतवर्ष लगातार कई सदियों तक शासित रह चुका है। परन्तु क्या यह मुसलमानी हुकूमत भारतवर्ष पर एक दूसरे देश की हकूमत थी? हमारा दृढ़ विश्वास है कि मुगल शासकों के पूर्वजों के विदेशी होते हुए भी उन का शासन भारतवर्ष में विदेशी शासन नहीं था। यह एकात्मक मुगल राज सत्ता अवश्य थी, परन्तु यह टर्की या अफगानिस्तान का शासन नहीं था। इस एकात्मक मुगल राज सत्ता ने भी कभी २ हिन्दुओं पर अत्याचार किए अवश्य, परन्तु ये अत्याचार राजनीतिक न होकर धार्मिक ही थे। इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि जो हिन्दू स्वधर्म छोड़ कर मुसलमान बन गए, उन्हें शासकों के समान ही अधिकार प्राप्त हो गए। ये धार्मिक अत्याचार भी क्रमशः उस समय जाकर असम्भव बन गए जब कि दक्षिण के वीर मराठे मुसलमान शासकों की प्रतिस्पर्धा में आकर क्रमशः उन से भी अधिक प्रबल बन गए। इस प्रकार क्रमशः अंग्रेज़ी राज्य के पूर्व तक स्वयं ही स्वभाविक रीति से यह हिन्दू मुस्लिम समस्या हल हो गई थी। पूर्वजों के विदेशी होते हुए भी भारत में रहने वाले मुसलमानों का विदेशों से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। हिन्दू मुसलमान दोनों ही भिन्न भिन्न प्रान्तों में शासक थे इस लिये उन दिनों धार्मिक अत्याचार भी स्वयं ही बन्द होगए।

हिन्दू मुस्लिम समस्या की इस संक्षिप्त ऐतिहासिक विवेचना द्वारा हम इतना ही सिद्ध करना चाहते हैं कि वर्त्तमान हिन्दू मुस्लिम समस्या का मुगल काल के इतिहास से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। इस समस्या का जन्म हाल ही में, इन नयी परिस्थितियों में, हुआ है।

मुसलमानों के आगमन से पूर्व भी भारतवर्ष में अनेकों अन्य जातियों के लोग बलपूर्वक आकर भारत में बस गए, परन्तु उन के द्वारा इस देश में कोई विकट समस्या नहीं उठ खड़ी हुई। वे जातियाँ शीघ्र ही भारतीय सभ्यता से इतनी प्रभावित होगईं कि वे अपना प्राचीन अस्तित्व मिटाने के लिये स्वयं तैयार होगईं, उदार हिन्दू धर्म में वे सब एक अलग श्रेणी के रूप में घुल मिल गईं।

परन्तु मुसलमान लोग, जिन्हें कि सभ्य बने हुए बहुत समय नहीं हुवा था, एक नई बिजली के वेग से कांपती हुई सभ्यता लेकर भारत में प्रविष्ट हुए। उन्होंने भारत के प्रचलित रीति रिवाज़ों के प्रति उग्र घृणा प्रदर्शित कर के यहां नये धर्म की स्थापना करनी चाही। केवल राज्य शक्ति के आधार पर ही इस प्राचीन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तम सभ्य देश में वे अपनी प्रारम्भिक (primitive) सभ्यता फैलाने में कुछ अंश तक सफल भी हो गये। परन्तु पीछे से हिन्दुओं में राजनीतिक जीवन उत्पन्न हो जाने पर मुस्लिम सभ्यता का यह प्रचार सहसा रुक गया। दोनों सम्प्रदाय एक दूसरे से कन्धा मिला कर खड़े होने के लिए यत्न करने लगे।

यह प्रक्रिया अभी सम्पूर्ण नहीं हुई थी कि साढ़े तीन हज़ार मील की दूरी से आकर एक अन्य जाति ने हिन्दू मुसल्मान दोनों को अपने आधीन कर लिया। दोनों सम्प्रदाय एक समता पर आकर एक तीसरी जाति के नीचे शासित होने लगे।

आज इस नवीन युग में भारतवर्ष में भी जातीय जागृति तथा आत्मज्ञान के शुभ लक्षण दिखाई देने लगे हैं। इस का सब से पहला प्रभाव यह हुवा है कि देश में रहने वाले छोटे से छोटे अल्पमत भी आज संगठित होकर अपनी एकान्त उन्नति के लिए यत्न कर रहे हैं। परिणाम यह हुवा है कि हिन्दू मुस्लिम समस्या की वह प्रक्रिया जो कि अंग्रेजी राज्य के प्रारम्भ होने पर बीच में ही रुक गई थी आज नई परिस्थितियों में पुनः प्रारम्भ हो गई है। आज दोनों जातियाँ पराधीन होने के कारण एक समता पर हैं, परन्तु स्वतन्त्र होने पर बहुसंख्याक जाति अधिक प्रबल हो उठेगी इस आशंका से अल्प मत इस विदेशी शासन का साथ देने में ही अपनी भलाई समझ रहा है।

परन्तु यह समस्या इतनी व्यापक और भयंकर होते हुए भी बहुत गहरी नहीं है। मुसलमानों में भी ७० प्रतिशत के लगभग लोग ऐसे हैं जिन के पूर्वज टर्की या अफगानिस्तान से नहीं आए, ये लोग पिछली तीन सदियों में ही मुसल्मान बने हैं। और जिन थोड़े से मुसल्मानों के पूर्वज विदेशों से भारत में आए थे, उन के लिए भी अब अपने प्राचीन पितृ-देशों में कोई गुञ्जाइश नहीं रही है, वे लोग इच्छा करने से भी अब अरब या टर्की से किसी प्रकार की जातीय सहायता प्राप्त नहीं कर सकते। वे चाहे समझें या न समझें, मानें चाहे न मानें, परन्तु अब यही पुण्य भूमि भारत देश ही उनकी मातृभूमि है। इन अल्प संख्याक मुसमानों के लिए भारत और भारतीय सभ्यता को अपनाने के सिवाय और कोई चारा ही नहीं है। इसी प्रकार हिन्दू लोगों के पास भी अब मुसल्मानों से असहयोग और घृणा करने का कोई कारण नहीं बचा है, मुसल्मान अब उन से अधिक शक्तिशाली नहीं रहे, रात दिन के सुख दुख में वे उनके हिस्सेदार बन चुके हैं।

एक बात और भी है जिस विशाल हिन्दु धर्म ने संसार की अनेक अन्य विदेशी सभ्यताओं को अपना लिया है; जिस धर्म में जैन और वेदान्त सम्प्रदायों के एक दूसरे से सर्वथा प्रतिकूल मतानुयायी भी समान भाव से रह सकते हैं;-उस में क्या भारतीय मुसल्मानों तथा उन के धर्म के लिये स्थान नहीं है?

हम चाहते हैं कि धर्म के वास्तविक विशाल अभिप्राय को समझ कर विचार-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शील हिन्दू और मुसलमान दोनों शीघ्र ही संकुचित साम्प्रदायिक असहिष्णुता के विरोध में जिहाद शुरु कर दें। ये तुच्छ साम्प्रदायिक फिसाद हमारी निर्बलता तथा अविवेक शीलता के सब से बड़े उदाहरण हैं।

अब्दुल करीम का आत्म-समर्पण

बरसों तक संसार की दो बड़ी बड़ी शक्तियों को, बिना किसी प्रकार के सैन्य बल की सहायता के, सिर्फ़ अपने प्रबल स्वातन्त्र्य प्रेम के आधार पर ही खूब हैरान कर के अन्त में वीरवर अब्दुल करीम ने शत्रुओं के हाथ में आत्म समर्पण कर दिया है। संसार के इतिहास में पशुबल के मुकाबले में सत्य के पराजय का यह दृष्टान्त प्रथम नहीं है। परन्तु यह सत्य की पराजय क्षणिक है, स्थायी नहीं। केवल मात्र निस्सहाय रिफ़ लोगों की सहायता से ही वीर शिरोमणि अब्दुल करीम ने जो असाधारण कार्य कर दिखलाया है वह आगामी रिफ़ सन्तति के स्वतन्त्रता आन्दोलन में एक बड़े प्रकाश-स्तम्भ का काम देगा। रिफ़ लोग अपने देश के अदम्य साहसी राणा प्रताप-अब्दुल करीम-की वीरता के गीत गा २ कर स्वतन्त्रता के लिये पागल हो उठेंगे, तब पशु बल नम्रता पूर्वक सत्य के चरणों की शरण लेगा। अब्दुल करीम के आत्म समर्पण का समाचार जान कर हमारे सन्मुख सहसा राणा प्रताप की उस दिन की वह शोकावनत मूर्ति घूम गई जिस दिन कि उन्हों ने अकबर को आत्म समर्पण कर देने का अशुभ निश्चय किया था। वीर अब्दुल करीम! तुम असफल रहे हो; परन्तु निश्चय रक्खो कि तुम्हारी असफलता से ही एक दिन सफलता का जन्म होगा।

अलंकार का नवीन वर्ष

इस मास अलंकार अपने जीवन के तृतीय वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इन दो वर्षों में अलंकार जिस प्रकार मातृभाषा हिन्दी की साहित्यिक सेवा करता रहा है वह पाठकों से अविदित नहीं है। अलंकार के ३२ पृष्ठों में जितना विचार पूर्ण, मौलिक और पाठ्य मसाला भरा रहता है उस की सभी प्रतिष्ठित पत्रों तथा विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

आज नए वर्ष में प्रवेश करते हुए हमें अपने उन सहृदय पाठकों तथा सहायकों का धन्यवाद करना है जिन का सहयोग पाकर ही हम अलंकार को इस प्रकार सफल बना सके हैं। अलंकार एक अनुपम जातीय विश्वविद्यालय से निकलने वाला पत्र है, हम चाहते हैं, कि इस के द्वारा हम और भी अधिक वेग से ठोस साहित्यिक सेवा में भाग ले सकें। इस वर्ष हम अलंकार में कुछ नए सुधार कर के इस की कलेवर वृद्धि भी करना चाहते हैं। परन्तु हमारी यह सब आकांक्षायें अपने सुहृदय पाठकों के सहयोग पर ही निर्भर हैं। इस प्रसंग में हमें यह बताते हुए हर्ष है होता है कि इस वर्ष पं० सुधन्वा जी विद्यालंकार, राजवैद्य अलवर, ने अलंकार को एक बड़ी राशि सहायता स्वरूप भेंट की है। इस के लिये हम उन के आभारी हैं। क्या हम अपने अन्य कृपालुओं से भी और अधिक सहयोग की आशा रक्खें?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-समाचार

ऋतु—ग्रीष्म ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर है। दोपहर को दिन काटना मुश्किल हो जाता है। उस पर गर्म २ लू क्रुद्ध नागिन के फुंकारों की तरह सांय २ करती हुई चलती है। १ बजे के बाद कोई बाहर निकलने का नाम नहीं लेता। सफ़ेद २ फ़र्श पर दो घड़े पानी उंडेल कर कपड़े उतार कर लोट-पोट होने में बड़ा मज़ा आता है। ऐसी गर्मी में भी रात्री के पिछले पहर में कुछ २ सर्दी पड़ती है और कभी २ तो कम्बल या रज़ाई तक लेनी पड़ती है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य सर्वथा उत्तम है। रोगी गृह खाली पड़ा है।

गंगा—कनखल से गुरुकुल आने के रास्ते में गंगा की दो बड़ी २ धाराएँ पड़ती हैं। पहला पुल तो अभी बचा हुआ है परन्तु दूसरा टूट चुका है, उस की जगह किश्ती चलती है। गंगा दिनों दिन बढ़ रही है। जिस दिन गर्मी अधिक पड़ती है उस से अगले दिन बर्फ़ का ढला हुआ पानी अच्छी मात्रा में आता है। सायंकाल ब्रह्मचारी तैरते हैं। अभी गंगा इतनी नहीं बढ़ी कि तमेड़ों को चलाना पड़े।

रजत-जयन्ती—रजत-जयन्ती पर विचार करने के लिए कालिज-कौन्सिल की एक बैठक हुई, जिस में इस कार्य को करने के लिए 'गुरुकुल-रजत-जयन्ती-समिति' का निर्माण किया गया। इस समिति के प्रधान गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पं० विश्वम्भरनाथ जी और जेनरल सेक्रेटरी प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार निश्चित हुए। इस समिति के अधीन अन्य पाँच उपसमितियें बनाई गईं—१. प्रकाशन विभाग समिति, २. धन संग्रह समिति, ३. प्रबन्ध समिति, ४. स्वास्थ्य-विभाग समिति, ५. उत्सव समिति। प्रकाशन विभाग समिति का काम गुरुकुल-सम्बन्धी लेख लिखना तथा जयन्ती के उपलक्ष्य में अन्य पुस्तकादि प्रकाशन का कार्य करना होगा। इस समिति के सदस्य प्रो० रामदेव जी, प्रो० नन्दलाल जी, प्रो० सत्यकेतु जी, प्रो० विधुभूषण जी तथा मंत्री प्रो० सत्यव्रत जी निश्चित हुए। धन-संग्रह समिति का काम डेप्यूटेशन आदि का निश्चित करना तथा धन-संग्रह की अन्य बातों पर विचार करना होगा। इस समिति के सदस्य प्रो० रामदेव जी, प्रो० सत्यव्रत जी, प्रो० विश्वनाथ जी, प्रो० धर्मदत्त जी, डा० राधाकृष्ण जी, प्रो० नन्दलाल जी खन्ना और मन्त्री प्रो. देवराज जी सेठी निश्चित हुए। प्रबन्ध समिति का काम पण्डाल, अतिथि-सेवा, स्वयं सेवकों का संगठन तथा इसी प्रकार के अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य करना होगा। इस समिति के सदस्य मुख्याधिष्ठाता जी, पं० महानन्द जी, पं० अमरनाथ जी सप्रू, प्रो० लालचन्द जी, प्रो० वागीश्वर जी, प्रो० सत्यकेतु जी और मन्त्री प्रो० चन्द्रमणि जी निश्चित हुए। स्वास्थ्य-विभाग समिति के सदस्य गुरुकुल के सब डाक्टर तथा वैद्यों के अतिरिक्त प्रो० देवमित्र जी, पं० महानन्द जी और मन्त्री डा० राम-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयाल जी निश्चित हुए। उत्सवसमिति का कार्य बाहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निमन्त्रित करना, उत्सव के समय-विभाग की तय्यारी करना, खेलों और सम्मेलनों की आयोजना करना आदि होगा। मुख्याधिष्ठाता जी, आचार्य जी, प्रो० सत्यव्रत जी, और प्रो० विश्वनाथ जी इस समिति के सदस्य तथा मन्त्री प्रो० सत्यकेतु जी निश्चित हुए। आशा है, ये सब समितियें अपना २ कार्य शीघ्रता से सम्पादन करने में लग जावेंगी और गुरुकुल-रजत-जयन्ती को सफलता-प्राप्त होगी।

सभाएं—पिछले दिनों संस्कृतोत्साहिनी सभा की तरफ़ से पं० जयदेव जी के सभापतित्व में राज कविसम्मेलन हुवा। इसी मास वाग्वर्धनी सभा की ओर से सप्तम गुरुकुलीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन बड़े समारोह से हुवा, जिस के सभापति पं० चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार थे। इन्हीं के सभापतित्व में हिन्दी साहित्य मण्डल का प्रथम जन्मोत्सव भी मनाया गया जिस में सहभोज भी हुआ। आयुर्वेद परिषद् का जन्मोत्सव पं० शिवदत्त जी आयुर्वेदालंकार के सभापतित्व में हुआ। साहित्यपरिषद् ने बुद्ध जयन्ती और शङ्कर जयन्ती धूमधाम से मनायी। सारा मास सभाओं से भरा रहा। इस सत्र पार्लियामेन्ट १७-१८ श्रावण (१-२ अगस्त) को होगी जिस में प्रधान सचिव ब्र० ओम्प्रकाश जी 'शिक्षा सुधार-बिल' पेश करेंगे और विरोधी दल के नेता ब्र० गुरुदेव जी बिलका विरोध करेंगे। इस अवसर को दिलचस्प बनाने के लिये पं० मोतीलाल जी नेहरू, आदि नेताओं को भी निमन्त्रित किया गया है। आशा है पार्लियामेन्ट की यह बैठक सफल हो, सकेगी।

शिक्षापटल—१३ जून को मायापुर में शिक्षा-पटल की बैठक होगी। १५ जून को उन ब्रह्मचारियों की परीक्षाएँ होंगी, जो किसी कारण वार्षिक परीक्षा में या तो बैठ नहीं सके थे अथवा किसी एक आध विषय में अनुत्तीर्ण हुए थे।

पं० देशबन्धु अमेरिका को—गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक पं० देशबन्धु जी विद्यालंकार हाल ही में अपने अद्भुत शारीरिक बल के कर्तव्यों को दिखाने के लिये अमेरिका को प्रस्थान कर गए हैं। आप की अचूक तीरन्दाज़ी सचमुच सब दर्शकों को आश्चर्य में डाल देती है, आप कुछ मिन्टों के लिये अपने हृदय की धड़कन तथा खून की गति को भी सर्वथा बन्द कर सकते हैं। हमें निश्चय है कि आप अमेरिका में केवल कुल का ही नहीं अपितु अपने देश का भी नाम उज्वल कर सकेंगे।

अतिथि—कलकत्ता यूनिवर्सिटी के चीनी तथा बौद्ध-धर्म के जापानी अध्यापक प्रो० कीमुरु आजकल गुरुकुल पधारे हुए हैं। आप बौद्ध धर्म पर प्रमाणिक विद्वान् समझे जाते हैं। आप के बौद्ध धर्म पर व्याख्यान हो रहे हैं। आप एक सप्ताह तक 'कुल' भूमि में विराजेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-वाटिका

४. सुकवि-संकीर्तन:—ले० आचार्य्य महावीर प्रसाद द्विवेदी। इस ग्रन्थ में कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माईकेल मधुसूदनदत्त, पं० प्रतापनारायण मिश्र आदि विख्यात कवियों तथा विद्वानों के लघु चरित्र लिखे गये हैं। कई कवियों की रचनाओं के नमूने भी प्रस्तुत किये गये हैं। पुस्तक अच्छी है। मूल्य कुछ अधिक है। मू० १।)

५. दुर्गावती (नाटक) –ले० श्रीयुत पं० बद्रीनाथ भट्ट। हिन्दी-संसार भट्ट जी के लिखे हुए चन्द्रगुप्त, वेन-चरित्र, कुरुवन दहन आदि नाटकों से सुपरिचित है। इस नये नाटक का भी आपने ही प्रणयन किया है। नाटक में दुर्गावती के वीर-चरित्र को अच्छी तरह अंकित किया है। देशभक्ति का भाव भरा हुआ है अतः यह समयोपयोगी भी है। नाटक का काव्य भाग एवं गति अच्छे हैं। भाषा ज़ोरदार तथा मुहावरे वाली है। पुस्तक में कई रंगीन चित्र भी हैं। आशा है हिन्दी-जगत् इस सुंदर नाटक को अपनायेगा। मूल्य एक रुपया।

३. रावबहादुर (प्रहसन)–अनुवाद-कर्त्ता- श्रीयुक्त ललीप्रसाद पाण्डेय। सुविख्यात फ्रेञ्च लेखक मोलियर को कौन नहीं जानता, यह प्रहसन उन्हीं के एक प्रसहन का अनुवाद है। देश की परिस्थिति के अनुसार इस में बहुत परिवर्तन एवं काँटछाँट कर दी गई है। इस में हास्य का अच्छा मसाला भरा हुआ है। पात्रों की भाषा उन के अनुरूप रखी गई है। प्रहसन पठनीय है। मूल्य ॥।)

तीनों उपरोक्त पुस्तकें गंगा पुस्तक माला लखनऊ से मिल सकती है।

जयश्री—लेखक श्री ज्ञानचन्द्र जी शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस में सिन्ध देश की तीन राजकुमारियों का करुणा-पूर्ण वृत्तान्त है। मुसलमानों के अत्याचारों का वर्णन अच्छी तरह किया है जयश्री की देशभक्ति तथा वीरता पठनीय हैं। भाषा अच्छी है। मूल्य १।

चाँद—चाँद हिन्दी जगत् में अपना विशेष स्थान रखता है। इसके लेखों ने हिन्दी संसार में क्रान्ति उत्पन्न करदी है। हिन्दू-समाज की कुरीतियों को सुधारना इसका मुख्य उद्देश्य हैं। चाँद ने इस विषय में बहुत सफलता प्राप्त करली है। प्रस्तुत अंक से "सती प्रथा का रक्त रंजित इतिहास" नामक उत्तम लेखमाला प्रारम्भ हुई है। इस अंक से चाँद और अधिक सुन्दर और उपयोगी होगया है। हिन्दू मात्र को चाँद मँगा कर पढ़ना चाहिए।

मनोरमा—तृतीय वर्ष का पहला अङ्क हमारे सन्मुख उपस्थित है। इस में कई विद्वत्तापूर्ण लेखों एवं कविताओं का समावेश है। स्त्रियों के लिए भी कई उपयोगी लेख लिखे गये हैं। पत्रिका का संपादन अच्छा होता है। हम इस का सहर्ष स्वागत करते हैं। आशा है है हिन्दी प्रेमी मनोरमा को अपनाएँगे। वार्षिक मूल्य ५)। पता- मनोरमा, इलाहाबाद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए, अमूल्य ग्रन्थ-रत्न संपूर्ण छप गया

वेद के प्रेमी अवश्य पढ़ें!

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न
वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी का बनाया

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़ें। यह यास्क मुनि के प्रसिद्ध 'निरुक्त' का हिन्दी में सरल, सरस तथा सुबोध भाष्य है जो कि दो भागों में समाप्त हुआ है और डाक-व्यय रहित कीमत केवल ७) रुपया है। अनेक सूचीपत्र देकर ग्रन्थ को बहुत अधिक उपादेय बनाया गया है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा एम. ए. पी. एच. डी वाइस-चान्सरल इलाहाबाद युनिवर्सिटी, प्रिन्सिपल गवर्नमैण्ट कालेज काशी, प्रिन्सिपल हिन्दू विश्वविद्यालय काशी, श्री रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० घासीराम जी एम. ए. प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त, श्री सातवलेकर जी संपादक वैदिक धर्म, श्री मा० आत्माराम जी राज्यरत्न बड़ोदा, भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एलएल. बी. वाइस चान्सरल तिलक-विद्यापीठ पूना, इत्यादि प्रसिद्ध महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, और सभी ने वेदप्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। महाभारत में लिखा है कि निरुक्त शास्त्र के प्रचार के बिना वैदिक कर्म-काण्ड लुप्त हो गया था। यदि आप वेद का सच्चे अर्थों में प्रचार करना चाहते हैं, तो इस निरुक्तभाष्य को अवश्य पढ़िए। वेदार्थ करने की कुञ्जी 'निरुक्त' को प्राप्त किए बिना वेद के खज़ाने को पाना केवल स्वप्न देखना है।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्ता 'अलंकार'
डा० गुरुकुल कांगड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य पर अंग्रेज़ी में अपूर्व पुस्तक

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस पुस्तक की भूमिका श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखी है। इस में ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले विविध विषयों पर वैज्ञानिक रीति से भाव-पूर्ण १२ अध्यायों में विचार किया गया है। १६ वर्ष से ऊपर की आयु वाले हरेक अंग्रेज़ी जानने वाले के हाथ में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। २२५ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुनहरी जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ३) । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम हो जायगा कि इस विषय पर ऐसी योग्यता से लिखी हुई पुस्तक आप ने पहले नहीं पढ़ी होगी। खुद पढ़ो और अपने मित्रों को पढ़ने को दो।

'हैण्ड-ट्रेनर'

जिन्हें सुलेख लिखना न आता हो उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू का सुलेख सिखाने का अत्यन्त सरल नया तरीका आविष्कृत हुआ है, इसका नाम 'हैण्ड ट्रेनर' है। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हरेक भाषा के सेट की कीमत अलग अलग दो रुपया।

'बिजली के जेबी लैम्प'

बिजली के जेबी लैम्प पूरे तैयार तीन किस्म के हमारे पास हैं। अत्युत्तम ३); उत्तम २॥); साधारण २)। पहली बैटरी ख़र्च होने पर नई की ज़रूरत हुआ करती है, उसे हम १।) में भेज सकते हैं। डाक का ख़र्चा हम अपना करेंगे।

'किटसन लैम्प'

मुकम्मिल, मय सोलह इञ्च टांकी और सिंगल पम्प का किटसन लैम्प ३०); वही डबल पम्प सहित ३५)। कारबाईड दीवालगीर लैम्प २)।

हम उचित कमीशन मिलने पर बम्बई से मार्केट के भाव पर आप की चीजें ख़रीद कर भेज सकते हैं।

पता—दी शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी, कारनक रोड, बम्बई (२)

तार का पता	पोस्ट बौक्स नं०	टैलीफ़ोन नं०
Linkclip-Bombay	२१३५	२१४८०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदाक़त खुद ब खुद कर देती है शोहरत ज़माने में।
मुनाफ़ा इस क़दर रखिये नमक जितना हो खाने में॥

(१) गंगाविष्णु नैनामृताञ्जनः—यह सफ़ेद सुरमा शिरीष की जड़ में ६ महीने रख कर तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध करके १ साल की लगातार मेहनत के पश्चात् तय्यार किया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह सुरमा आंखों की निम्न बीमारियों में अकसीर साबित हो चुका है—

नेत्रों में ख़ारिश का उठना, रतौंधी, दूर अथवा समीप की वस्तु का साफ़ २ नज़र न आना, धूप में जाते ही आंखों का गरमी से चौंधिया जाना, देर तक किसी वस्तु अथवा पुस्तक की ओर नज़र का न टिकना, आंखों से पानी का गिरना, नज़ले की वजह से आंखों की कमज़ोरी और विशेष करके आजकल के नवयुवकों तथा वृद्धों के लिये यह सुरमा अकसीर साबित हो चुका है। कीमत २) तोला रखी गई है। ३ माशा ।।), ६ माशा १), १ तोला २)

(२) कुक्करों का शर्तिया इलाजः—एक आश्चर्य जनक औषधि। यह कोई शास्त्रीय नुस्खा नहीं है। परन्तु किसी अनुभवी वृद्ध सन्यासी का जादू है। देखने में बिलकुल मामूली ख़ाली बत्तियें नज़र आती हैं परन्तु इसके ४, ५ दिन के इस्तेमाल से ही आपको निहायत फ़ायदेमन्द साबित होंगी—

यह बत्तियाँ आंखों के पुराने से पुराने रोंहें, सुर्खी तथा पड़वाल और पानी के झर २ गिरने के लिये अकसीर है। फ़ायदे इसके अन्य भी हैं परन्तु आप इसकी एक बार परीक्षा करके हमेशा के लिये इसको अपने पास रखना चाहेंगे। सेवन विधि दवाई के साथ भेजी जाती है।

(३) मस्तिष्क पौष्टिकः—विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, क्लर्क और व्याख्याता आदि जिन्हें काम करके काफ़ी देर के लिये आराम का ज़रूरत पड़ती है, उनकी दिमाग़ी ताकत को स्थिर रखनेके लिये यह दवाई अद्वितीय है। कम से कम १५ दिन या १ महीना इसके सेवन करने से आश्चर्य जनक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इससे आपअपने काम को दिल से कर सकेंगे तथा दिमाग़ी ताकत को ज्यादा नहीं खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिये अमृत है। केवल एक बार परीक्षा की ज़रूरत है। १ शीशी १५ दिन के लिये २)

(४) केशाञ्जन खिजावः—जहां अन्य खिजावों के लगाने से काली चमड़ी होने के सिवाय बालों की जड़ें कमज़ोर होकर झड़ने लग जाती हैं, वहां इस के सेवन से बाल काफ़ी अरसेके लिये काले तथा ख़ास चमकीले मालूम देते हैं। यह दो चीज़े हैं--एक खुश्क, दूसरी तर। दोनोंको उचित मात्रामें मिला कर ब्रशसे इस्तेमाल करने से बालोंमें ख़ास चमक आती है। १ शीशी १।)

पता—पं० विष्णुदत्त विद्यालंकार, अलंकार आयुर्वेदिक फार्मेसी, कूचा लाजूमल, लुधियाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे दाम में !!

१. महावीर गेरीवाल्डी—ले०श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। आधा मूल्य॥=)

मौडर्न रिव्यू—गेरीवाल्डी का जीवन केवल व्यक्ति का जीवन नहीं परन्तु स्वाधीनता का जीता जागता इतिहास है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त रोचक है—पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी है। हम इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करते हैं।

माधुरी—विशेष महापुरुषों के जीवन चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षाप्रद होते हैं। यह जीवन चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है। भाषा रोचक और मर्मस्पर्शिनी है। नवयुवकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए

श्री शारदा—इसकी भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इस में उपन्यास का सा आनन्द आता है। मनोरञ्जन के साथ २ उपदेश की भी मात्रा रक्खी है। विषय का क्रम भी यथोचित रीति से जमाया गया है। पुस्तक में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख है जो महत्वशालिनी हैं, जिनका ज्ञान सर्वसाधारण को अपेक्षित है। यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी, विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिन्दी साहित्य में अनूठी है। हमारा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें। पुस्तक में इटली के आठ महान् व्यक्तियों के चित्र भी हैं।

२. प्राचीन भारत में स्वराज्य लेखक—श्री पं० धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार—आधा मूल्य ॥।)

प्रो० विधुभूषण दत्त जी M.A.—हमारे आर्य प्रजासत्तात्मक तथा प्रतिनिधिसत्तात्मक शासन प्रणालियों से अपरिचित न थे, प्रजा ही राजा को चुनती थी इत्यादि बातों को सिद्ध करने के लिये प्रमाणों और उदाहरणों को इकट्ठा करने में लेखक ने सराहनीय परिश्रम किया है। पुस्तक की लेखनशैली मनोरञ्जक है। विचार करने के लिये सभी को इस पुस्तक में बहुत सामग्री प्राप्त हो सकती है।

३. वैदिक विवाह का आदर्श—ले० श्री पं० नन्दकिशोर जी विद्यालंकार—आधा मूल्य ।-)

बाबू भगवान दास जी काशी—विवाह क्या है, किस से, कैसे, किस लिए और कब विवाह करना चाहिए—यह पुस्तक में बतलाया गया है। वैदिक विवाह पद्धति अन्य विवाह पद्धतियों से क्या श्रेष्ठ है, यह अच्छी तरह बतलाया गया है। इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए।

४. सन्तजीवनी—ले० स्व० श्री गिरिजा कुमार घोष—भारत के प्रसिद्ध महात्माओं-कबीरदास, गुरुनानक, गोस्वामी तुलसीदास आदि के विस्तृत जीवन चरित बड़ी मनोरंजकता से लिखे गए हैं। आधा मूल्य ।)

५. बिखरे हुए फूल-यह पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की बिल्कुल नए ढंग का, नए विषयों पर अद्भुत कविताओं का संग्रह है। आधा मूल्य ≡)

मैनेजर—साहित्यपरिषद् पुस्तक भण्डार; गुरुकुल काङ्गड़ी (हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी के भीमसेनी सुरमे की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुंधला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत ≡) पांच रुपया फ़ी तोला

सुधाधारा—इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं, जिससे रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों खरीदें? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाजार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौंता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है। जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने ।)

नोटः—अन्य दवाइयों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये।

पताः—गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी देहली नं० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा

जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २तक ।=)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा.

बिना जलन और तकलीफ के दादको २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च, १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवाको मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।)

पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिये, मुफ्त मिलेगा।

यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

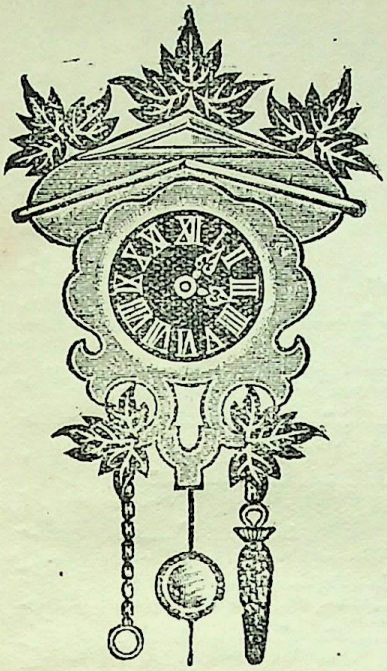

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेज दो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

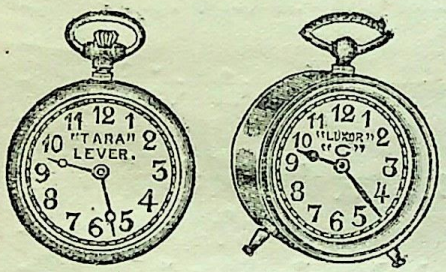

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिये है। जल्दी मंगवाये, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

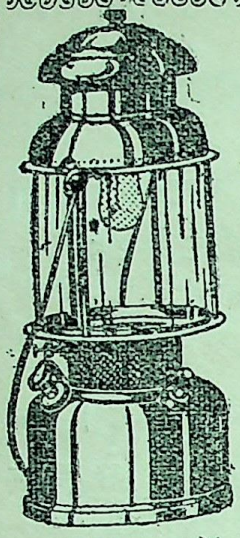

रोशनी

का

भण्डार

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टोर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिये। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती है। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटेन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती। इसमें केरोसीन आयल या पैट्रौल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मैन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का वजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इंच, तथा चिमनी अबरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३॥) फ़ी दर्जन

दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्जन

प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ६) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता:—

रविवर्मा स्टील वर्क्स अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

रूह शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

संस्कृतपाठ माला।

संस्कृत स्वयं सीखने की अत्यन्त सुगम रीति। प्रत्येक भाग का मूल्य ।-)पांच आने है। बारह भागों का इकट्ठा मूल्य ३) तीन रुपये हैं।

यदि आप संस्कृत सीखना चाहते हैं तो इसका अध्ययन कीजिये।

प्रतिदिन आध घंटा अभ्यास करेंगे तो एक वर्ष में आप रामायण महाभारत समझने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल

(औंध जि० सातारा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

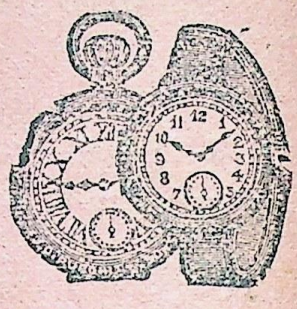

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्ठा चौताला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥) १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की

चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पताः—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A ;1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

श्रावण १९८३ जुलाई १९२६
वर्ष ३] [अङ्क २

मुख्य संपादक
प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

पृष्ठ सं०

विषय

१. बाल भावना (कविता)—श्रीयुत् शंकर ३३.
२. "प्रकृति वाद" और "विचार धारा"—श्री प्रो० नन्दलाल जी खन्ना बी. ए. एल. एल. बी. ३४.
३. ऋत—प्रो० धर्मेन्द्र नाथ जी तर्क शिरोमणि ३७.
४. वर्णव्यवस्था का तुलनात्मक अनुशीलन—श्री पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालंकार-विद्यावाचस्पति ४१.
५. अभिलाष—(कविता) कविवर श्री माल ४४.
६. "सृष्ट्युत्पत्ति"—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार ४५.
७. "भूल"— श्रीयुत् गुप्त विद्यालङ्कार ४९.
८. वेद और विकासवाद—श्री प्रो० विश्वनाथ जी विद्यालंकार ५६.
९. वेदार्थ दीपक निरुक्तभाष्य की आलोचना—लेखक प्रन्थ ले० श्री पं० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार ५९.
१०. संपादकीय— २६ जुलाई, हिन्दू-मुस्लिम समस्या ६०.
११. गुरुकुल-समाचार— ६२.
१२. ग्राहकों से निवेदन ६३.

लेखकों से प्रार्थना

१. लेख सामान्यतः अलंकार के ४ पृष्ठों से अधिक न हों।

२. लेख कागज़ के एक ओर, और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये।

३. पत्र में प्रकाशन के लिये लेख या कविता प्रत्येक देशी मास की १० तारीख तक, और गुरुकुल समाचार २५ तक अवश्यमेव संपादक के पास पहुंच जाने चाहियें।

४. किसी भी लेख को घटाने या बढ़ाने का अधिकार संपादक को होगा।

५. अलंकार के परिवर्तन में पत्र, पत्रिकाएँ, और समालोचनार्थ पुस्तकें "सम्पादक" के पते पर भेजनी चाहियें, प्रबन्धकर्ता के नाम से नहीं।

अलङ्कार में विज्ञापन का दर

	एक पृ०	आधा पृ०	चौथाई पृ०
१ वर्ष के लिये	६) मास	३॥) मास	२) मास
६ मास के लिये	७) मास	४) मास	२।) मास
३ मास के लिये	८) मास	४॥।) मास	२॥।) मास
१ मास के लिये	९) मास	५॥) मास	३॥) मास

विज्ञापन का मूल्य पहले लिया जावेगा।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क २] मास, श्रावण [पूर्ण संख्या २६

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अरंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

"बाल-भावना"

(श्रीयुत 'शङ्कर')

पंख होते तो उड़ा जाता वहाँ,
दीखते हैं चाँद और तारे जहाँ।
आसमां में कूदता आनन्द से,
पंखियों से मित्रता करता वहाँ।
बादलों पर बैठ कर मैं मोद से,
सैर करता छन्द से स्वर्लोक की।
बैठता जा पर्वतों के शृंग पर,
जा हिलाता शाखियों को औ' कभी।
चाहता हूँ उड़ चलूं मैं व्योम में,
और ये तारे इकट्ठे मैं करूं।
एक सुन्दर हार इन का गूंथ कर,
मातृ-चरणों में समर्पित मैं करूं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रकृति-वाद" और "विचार धारा"

(श्री प्रो० नन्दलाल जी खन्ना एम. ए.-एल. एल. बी.)

आज से तीस वर्ष पूर्व वैज्ञानिक अत्यन्त विश्वास पूर्वक मानते थे, और बहुत से अब भी मानते हैं, कि विचार और चेतनता का आधार दिमाग़ या Brain है। फ्रांस के विचारक Taine के शब्दों में दिमाग़ से विचार उसी प्रकार निकलता है, जैसे जिगर से पित्त निकलता है। (The brain secretes Thought as the liver secretes bile)-हर एक अंग की कुछ क्रिया (Function) होती है जैसे-आंख की दृष्टि, [illegible]। इसी प्रकार दिमाग़ (Brain) की क्रिया विचार है।

अध्यात्मवादी आरम्भ से ही इस विचार का विरोध करते चले आए हैं। उनका कहना है कि-विचार एक चेतन और वैय्यक्तिक चीज़ है। प्रकृति और दिमाग जड़ और अवैय्यक्तिक हैं। इसलिये दिमाग में से विचार कदाचित् नहीं निकल सकता। परमाणुओं की गति से विचार जैसी चीज़ उत्पन्न हो जाय, यह सर्वथा अचिन्तनीय है, क्योंकि इन दोनों में स्वभाव भेद है, यह इतना ही अयुक्तियुक्त है जैसे कोई कहे कि-पत्थर से जीता हुआ घोड़ा उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु वैज्ञानिक लोग अध्यात्मवादियों की युक्तियों की उपेक्षा किया करते हैं। आजकल कई वैज्ञानिक लोगों के निरीक्षण में कुछ बातें आई हैं, जो इस परिणाम के प्रतिकूल हैं कि विचार का आधार दिमाग है। परीक्षण तो वैज्ञानिक के अपने शस्त्र हैं, इन की उपेक्षा वह किस प्रकार कर सकता है।

वैज्ञानिक कह सकता है कि विचार दिमाग़ के Grey matter से उत्पन्न होता है। जहां कहीं Grey matter नहीं होता विचार भी नहीं होता। जितनी मात्रा Grey matter की होती है, उतनी ही मात्रा विचार की भी होती है। बच्चे के दिमाग़ में Grey matter [illegible] तौर पर कम होता है, और विचार भी अपरिपक्व होता है। जब वह बड़ा होकर लड़का बन जाता है, तो विचार में भी कुछ बल आ जाता है। जब वह युवावस्था को प्राप्त होता है, तो विचार और भी अधिक सूक्ष्म और बलयुक्त होता जाता है, और आयु के और आगे बढ़ने के साथ २ विचार भी प्रौढ़ होता जाता है। यदि किसी अवस्था में दिमाग़ को कोई चोट लग जावे तो विचार शक्ति में भी परिवर्तन आ जाता है। यदि किसी कारण से दिमाग में रक्त कम या अधिक मात्रा में पहुंचने लगे तो दिमाग में भी वैसा ही परिवर्तन आ जाता है। उदाहरण के लिये नशे की हालत लें तो विचार में गड़बड़ हो जाती है। यदि ज्वर आदि के कारण रक्त में विकार आ जाए तो दिमाग़ पर अशुद्ध रक्त का प्रभाव पड़ता है, और मनुष्य असङ्गत बातें करने लगता है, जिसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गरेज़ी में Delirium कहते हैं। यदि खोपड़ी टूट जाए, और उसका एक भाग दिमाग़ पर दबाव डालने लगे, तो विचार बन्द हो जाता है, या उस में विकार आ जाता है। यदि उस टुकड़े को ऊपर उठा दिया जाए तो विचार फिर लौट आता है। यदि खोपड़ी पर ऐसी चोट लगे, जिसका प्रभाव नीचे दिमाग तक पहुंच जाए, तो बेहोशी हो जाती है, अर्थात् कुछ समय के लिये विचार बन्द हो जाता है। वृद्धावस्था में जब सब अङ्ग शिथिल होने लगते हैं, दिमाग़ भी कमज़ोर हो जाता है, स्मृति भी शिथिल पड़ जाती है। यदि दिमाग़ का कोई हिस्सा नष्ट हो जाए तो वाणी, दृष्टि या कोई अन्य शक्ति, जिसका इस भाग के साथ सम्बन्ध होता है, नष्ट हो जाती है। अतः दिमाग़ की वृद्धि और पुष्टि में विचार की उन्नति होती है और उसके क्षय में विचार की हानि होती है।

यह बात प्रसिद्ध है कि-ईथर (Ether) क्लोरोफार्म (Chloroform) आदि सूंघने से बेहोशी हो जाती है। डाक्टर लोग प्रायः क्लोरोफार्म सुंघा कर फोड़े आदि चीरा करते हैं-क्लोरोफार्म के सूंघने से शरीर बेहोश हो जाता है। बड़े २ घाव कर दिये जाते हैं मगर मरीज को कुछ खबर नहीं लगती-हृदय की गति अत्यन्त मन्द पड़ जाती है, शरीर में रक्त का संचार बहुत आहिस्ता होने लगता है। रक्त न पहुंचने से दिमाग भी निर्बल हो जाता है, दिमाग़ को शरीर की अवस्था या व्यथा की कोई खबर नहीं होती। परन्तु कई बार विचार धारा जारी रहती है, और उसका शरीर की अवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता। स्पेन के प्रसिद्ध विद्वान् Raman de ler Sagar की स्त्री को क्लोरोफार्म सुंघाया गया, तो सारे समय उस के विचार और बुद्धि में कोई विकार नहीं आया। वह बड़ी ही शान्ति से डाक्टर से बातें करती रही और वह चाकू से उस की मांस नाड़ियाँ चीरता रहा। औपरेशन (Operation) के पीछे इसने अपने पति को बताया कि उस के विचार में (Operation) के समय विशेष आनन्द और प्रसन्नता थी। वैज्ञानिक लोगों के अनुसार तो कोई विचार होना ही नहीं चाहिये, क्योंकि रक्त का दिमाग़ में संचार बहुत ढीला पड़ गया था। यदि कोई विचार हो तो शरीर के अनुसार होना चाहिये। परन्तु शरीर को तो काटा गया था, इस लिये विचार अत्यन्त पीड़ा युक्त होना चाहिये था। विचार का आनन्दमय होना-क्या इस बात को सिद्ध नहीं करता कि—विचार, शरीर और दिमाग से स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा था।

वैज्ञानिक लोगों ने परीक्षणों से स्थापित किया है कि हिप्नाटिज्म (Hypnotism) की अवस्था में हृदय की गति में विकार आ जाता है, और अन्त में इतनी धीमी हो जाती है कि अति सूक्ष्म यंत्रों से भी मुश्किल से प्रतीत हो सकती है। फेंफड़ों की गति इतनी धीमी हो जाती है कि होंठों में से श्वास आता प्रतीत होता है। पट्ठों का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी ऐसा ही हाल होता है-दिमाग में रक्त थोड़ा पहुंचने लगता है। श्वास मन्द होने के कारण रक्त में बहुत औक्सीजन (Oxygen) मिल कर इस को शुद्ध भी नहीं करती, इसलिये रक्त में मल इकट्ठा होजाता है। कार्बोनिक ऐसिड गैस भी बहुत सी होजाती है, दिमाग पर एक बेहोशी की अवस्था आ जाती है, जिस में विचार असम्भव होना चाहिये। भौतिक दृष्टि से शरीर मृतवत् होता है। परन्तु मानसिक क्षेत्र में उस में अद्भुत शक्तियाँ आ जाती हैं। उस की स्मृति अत्यन्त तेज हो जाती है और वह प्रश्न करने पर साधारण अवस्था में भूली हुई अपने बचपन की घटनायें बता सकता है। बचपन में यदि उसने कोई भाषा एक या दो बार सुनी हो, और फिर उसे सर्वथा भूल चुका हो तो इस अवस्था में इसे बोल सकता है और समझ सकता है। यदि उसको सुना कर, किसी भाषा का एक पृष्ठ पढ़ दिया जाय जिसे वह समझ नहीं सकता, तो वह इसे अक्षरशः दोहरा सकता है। उस अवस्था से जागने पर उसे एक अक्षर भी याद नहीं रहता, और Hypnotism की अवस्था आने पर याद आ जाता है। एक मूर्ख मनुष्य इस अवस्था में बुद्धिमान् हो जाता है। Operator या इस अवस्था में लाने वाला मनुष्य सर्वथा Subject की इन्द्रियों को धोखा दे सकता है, सरदी में गरमी का अनुभव करा सकता है। यदि कोई दृश्य पदार्थ न हो तो उस के होने का भ्रम पैदा कर सकता है, और पदार्थ के होने पर उस के न होने का भ्रम पैदा कर सकता है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों को भी धोखा दे सकता है, जैसे किसी दुर्गंध वाली वस्तु में सुगंध को अनुभव करा सकता है। यदि पागलखाने के किसी पागल को हिप्नाटिक अवस्था में लाया जाय तो वह बुद्धिमान हो जाता है, परन्तु इस अवस्था के जाने के साथ ही पागलपन लौट आता है।

इन परीक्षणों से क्या सिद्ध होता है? यही कि जब दिमाग़ पूरे जोर में होता है, और उस में रक्त खूब चल रहा होता है, तो विचार और स्मृति निर्बल होते हैं, और बहुत कुछ इन्द्रियों के वश में होता है। परन्तु जब दिमाग़ निर्बल हो जाता है, तो विचार और स्मृति तेज़ हो जाते हैं और इन्द्रियों की दासता से मुक्त हो जाते हैं। इस का स्पष्ट अर्थ क्या यह नहीं है कि विचार-दिमाग़ से कुछ स्वतंत्र चीज़ है और साधारण अवस्था में दिमाग द्वारा इस का केवल एक भाग प्रकट होता है। इस लिये केवल दिमाग़ पर विचार आश्रित नहीं है परन्तु दिमाग विचार के लिये बाधा का काम करता है। कुछ और घटनाओं से यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि-विचार दिमाग़ से स्वतन्त्र है।

डाक्टर राबिन्सन (Dr. Robinson) ने एक मनुष्य को देखा जिसका दिमाग़ किसी रोग के कारण बिलकुल फोड़ा बन गया था, परन्तु वह एक साल तक इसके पीछे जीता रहा, और उसकी विचार शक्ति में ज़रा भी विकार नहीं आया। जुलाई १९१४ में Dr. Holla-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Plan ने फ्रांस की Societyof surgery के सामने बयान किया कि "एक लड़की जेल से गिर पड़ी और उस के दिमाग पर चोट लगी। (operation) औपरेशन किया गया तो मालूम हुआ कि बहुत सा दिमाग पिस कर गूंधे हुए आटे जैसा होगया था, परन्तु उसे बन्द कर दिया गया। कुछ समय में लड़की अच्छी होगई। डाक्टर ग्यूपिन (Guepin) ने सिद्ध किया है कि-दिमाग का एक भाग फट जाने से भी विचार जारी रहता है।"

उद्देश्य के लिये कष्ट सहने में, शारीरिक व्यथा और थकान के होते हुए किसी मार्ग पर दृढ़ रहने में, आत्मत्याग में और बीमारी का मुकाबला करने में विचार, दिमाग़ और शरीर से अपनी स्वतंत्रता को प्रकट करता है। वैज्ञानिक लोगों को भी आजकल अपने सिद्धान्त पर कुछ थोड़ा बहुत संदेह तो अवश्य होने लगा है। आधुनिक काल का सब से बड़ा शरीर क्रिया-विज्ञान वेत्ता Physiologist, Clauder Bernard जिस ने सारी आयु दिमाग़ की क्रियाओं के अन्वेषण में लगायी, लिखता है कि "विचार की उत्पत्ति के विषय में विज्ञान अभी तक कुछ नहीं कह सकता है।"

"ऋत"

(प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी तर्कशिरोमणि)

एक ओर हम वेदों को रखते हैं, दूसरी ओर हमारे सामने युरोप के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डार्विन, स्पेन्सर तथा हेकल की विकास पोषक तथा उन पर निर्भर अन्य वैज्ञानिकों की प्रकृतिवाद (Materialism) की स्थापक पुस्तकें हैं। समझा जाता है कि इन पुस्तकों ने पश्चिम में न केवल वैज्ञानिकों के अपितु सामान्य जनता के भी विश्वास को ईसाईयत से सर्वथा हटा दिया है। हमारा कर्त्तव्य है कि परीक्षात्मक दृष्टि से देखें कि यह क्या रहस्य है कि 'मत' और 'विज्ञान' एक दूसरे में तीन और छः का सम्बन्ध सदा से ही चला आया है? क्या वह विरोध 'वैदिक धर्म' के सिद्धान्तों पर भी लागू है या नहीं? केवल इतना कहने से 'हमारा विश्वास है' काम नहीं चलता। हमारी परीक्षात्मक दृष्टि होनी चाहिये-प्रत्येक धर्म के, दर्शन-शास्त्र के, किञ्च, प्रत्येक व्यक्ति के भी जीवन में तीन पद (Stages) होने आवश्यक हैं १-Dogmatic विश्वासात्मक, २-Sceptic सन्देहात्मक, ३-Critical परीक्षात्मक-अतः आवश्यक है कि केवल विश्वास पर निर्भर न रह कर परीक्षा की जाय।

मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि इस परीक्षा में ईसाइयत (Christianity) फेल हो चुकी है। कितना ही यत्न किया गया कि 'मत' और 'साइन्स' परस्पर विरुद्ध न रहे किन्तु ईसाइयत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सारे प्रयत्न व्यर्थ हुए। १९०० में हेकल ने 'Riddle of the Universe' लिख कर इस बात की घोषणा की कि संसार की रचना, स्थिति आदि सब कुछ प्रकृति अपने नियमों से स्वयम् करती है। इसके लिये किसी अन्य शक्ति की आवश्यकता नहीं, 'संसार का द्रव्य (Matter) नित्य है' तथा 'संसार की शक्ति नित्य है।' (Conservation of matter & conservation of Energy) इन दोनों विज्ञान के सिद्धान्तों को मिला कर हमें एक (Law) नियम Conservation of substance मिल जाता है- इसे वह जगत् का नियम बताता है। इसके द्वारा Materialistic monism की उसने स्थापना की है। (It has become the pole-star that guides our monistic Philosophy through the mighty labyrinth ....) प्रयोजन यह है कि इस नियम से प्रकृति सब कुछ स्वयं करती है। इसी प्रकार नक्षत्र जगत् में देखें तो भी Law of Gravitation-- जिस का प्रादुर्भाव न्यूटन के द्वारा हुआ-सब ग्रहगण, तारागण अपना काम कर रहे हैं, इनको नियामिका किसी शक्ति की आवश्यकता नहीं। न्यूटन के १०० वर्ष बाद लाप्लासने जिसने Nebular theory को स्थापित किया, यही कहा कि नक्षत्र जगत् की क्रियायें सम्पूर्णतया (Automatic) स्वयं सिद्ध तथा (Mechanical) यन्त्रवत् हैं इन के लिये किसी चाहने वाले ईश्वर की आवश्यकता नहीं।

जड़ जगत् को छोड़ कर यदि प्राणि-जगत् को देखें तो यह भी सब विकास का परिणाम है। मनुष्य का Evolution जिस में जीवन क्रिया बहुत ही मिश्रित (Most Complex) है छोटे से अमिश्रित जीवाणुओं से (Simple monera, form of life) हुआ है और यह सब वैज्ञानिक नियमों (Laws of evolution) से है उन में भी किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं।

प्रारम्भिक चेतनता का और जड़ का क्या सम्बन्ध है? यह एक महान् प्रश्न रह जाता है। युरोप के विद्वानों ने साक्ष्य दिया है कि जड़ से ही चेतन का विकास हो सकता है। अनैन्द्रियिक (Inorganic) पदार्थों से (Organic) या ऐन्द्रियिक पदार्थ को सम्मिश्रण (Synthesis) के द्वारा युरोप के रसायनज्ञ बहुत दिन तक न बना सके थे। परन्तु जब वुल्हर (Wohler) ने रसायन-शाला में स्वयं मूत्र (Artficial Urea) तैयार किया तब समझा जाने लगा कि अब चेतन का जड़ से बनना सम्भव हो सकेगा। चेतन का जड़ से बनना सर्वथा और बात है यह आगे दिखाया जायगा। इसी प्रकार बर्क (Burk) ने भी चाँदी के टुकड़े पर जिस में पहिले कीटाणु निकाल दिए गये थे (Sterilised bullion) रेडियम ब्रोमाइड् के प्रयोग के द्वारा कुछ चलते फिरते अणु प्रकट होते हुए दिखलाये थे परन्तु वे भी बढ़ते हुए न पाये गये इस लिए जीवाणु सिद्ध न हुए।

टेण्डल ने अपने Belfast के प्रसिद्ध व्याख्यान में यही बतलाया था कि चेतनता जड़ से उत्पन्न हो सकती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Huxley हक्सले के व्याख्यान का विषय ही 'जीवन का भौतिक मूल' (Physical basis of Life) था। इसी प्रकार शेफर रोलर आदि अनेक वैज्ञानिक इनके साथ हैं जिनका विश्वास है कि जड़ से ही चेतन का विकास हुआ है। इस प्रकार केवल जड़ प्रकृति में ही सारा जगत् सीमित है अन्य कोई चेतन शक्ति नहीं। यह जड़ प्रकृति वैज्ञानिक नियमों के अनुसार सर्वत्र अपना काम कर रही है। जगत् अपने में परिपूर्ण है (Self-explained, self-maintained है) इसे किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं। यह है हेकेल की Materialistic monism अर्थात् प्राकृतिक ऐक्यवाद। दूसरी ओर Christianity या ईसायत ऐसे परमात्मा की शिक्षा देती है जो इन प्राकृतिक नियमों में गड़बड़ डालता है। ऐसी ईश्वर की सत्ता विज्ञान कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। आलिवर लाज को भी (Sir Oliver Lodge) जो धर्म और विज्ञान को मिलाने के बड़े पक्षपाती हैं ईसाई मत के और विज्ञान के इस मौलिक विरोध को स्पष्ट स्वीकार करना पड़ा है।

"Orthodox Science suggests to us that the cosmos is self-explained, self contained and self maintaing. It is no longer a question whether Sceince can allow us to believe that God created a lot of frogs in Egypt or loaves in Judea long ago"

सारांशतः बाइबिल ऐसे परमात्मा को सिखाती है जो कि साइन्स के प्राकृतिक नियमों को तोड़ने वाला है इसलिये विज्ञान और ईसाई मत का विरोध आवश्यक है—

यहाँ अवसर है कि मैं आप को 'ऋत' का रहस्य बतलाऊँ—

वैदिक धर्म ऐसे परमात्मा की शिक्षा देता है जो इन वैज्ञानिक प्राकृतिक नियमों (Scientific Laws of Nature) का अनुसारी है—इन्हें चलाने वाला है न कि तोड़ने वाला—वेद में इन वैज्ञानिक नियमों को ही 'ऋत' कहते हैं और परमात्मा 'ऋतम्भर' है अर्थात् इन नियमों का नियामक (Upholder of the Eternal cosmic Laws) है—वेद में स्थान स्थान पर ईश्वर को 'ऋतस्य' गोपा, कहा गया है—आश्चर्य आप को इस बात से होगा कि इस विचार में युरोप के बड़े २ विद्वान् सहमत हैं—Wallace ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Cosmology of the Rigveda' में इसी बात को दिखाया है—उस के शब्दों में—

"The word used to denote the conception of the order of the universe is Rita (ऋत). Every thing in the universe which is conceived as showing regularity of action, may be said to have (ऋत) for its principle"

मैक्डोनेल ने भी Vedic Mythogy में अपना यही विचार प्रकट किया है "The cosmic Law or order prevailing in Nature is recognised under the name of ऋत"

ग्रीफिथ भी अपने वेदों के अनुवाद में ऋत का अर्थ Laws eternal स्थान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर करता है—ऋषि दयानन्द ने भी ऋत का अर्थ 'सत्य नियम' या 'सत्य विज्ञान' किये हैं-यह एक बड़े आश्चर्य का विषय है कि वेदों में प्राकृतिक नियमों का जिनका रहस्य अधुना विज्ञान के प्रकाश में पता लगा है, इतना उच्च विचार विद्यमान है-परमात्मा भी अपना काम इन नियमों के द्वारा करता है न कि इन नियमों को तोड़ने वाला है:—

'ऋत ज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मणस्पतिर्यत्र वष्टि प्रतदश्नोति धन्वना' परमात्मा जहाँ चाहता है वहाँ अपने धनुष से पहुंचता है। 'ऋत' या Eternal Laws जिस धनुष की 'ज्या' है—वेदों के सब से बड़े आचार्य दयानन्द ने इस रहस्य को समझा था- स्थान २ पर उन्होंने बतलाया है कि सृष्टि के नियमों के विरुद्ध कुछ नहीं होता। 'सर्व शक्तिमान्' के अर्थ में बतलाया है कि ईश्वर की सर्व शक्तिमत्ता का यह मतलब नहीं है कि वह अपने सृष्टि के नियमों को तोड़ दे। इतना ही नहीं, स्तुति प्रार्थना आदि पर विचार करते हुये भी दयानन्द ने कहा है कि उनका फल अन्य ही है। यह नहीं हो सकता कि परमात्मा अपने नियमों को तोड़ कर पाप क्षमा कर दे।

टेण्डल (Tyndall) का प्रार्थना के विरुद्ध यही आक्षेप था कि वर्षा के लिये प्रार्थना करने से परमात्मा बिना समय प्राकृतिक नियमों को तोड़ कर वर्षा कैसे कर सकता है— 'Can any spiritual power interfere with the sequence of natural processes, by which the molecules of water find their destination ?' परन्तु वेद में प्राकृतिक नियमों को तोड़ कर प्रार्थना नहीं किन्तु वह भी उनके अनुसार है-कल्याण की प्रार्थना है—

'ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रं भद्रं क्रतुमस्यासु धेहि'

इसके अर्थ में ग्रीफिथ ने भी कहा है—'Obedient to the Law eternal' किञ्च वेद कहता है-प्राकृतिक नियमों में सारा विश्व बैठा हुआ है—

'ऋतस्य देवा अनूव्रता गुः'

सारी दिव्य शक्तियाँ 'ऋत' के अनुकूल चलती हैं—

यहाँ तक यह दिखाया कि वेद में परमात्मा का विचार वैज्ञानिक नियमों के विरुद्ध नहीं प्रत्युत उन के साथ है-परन्तु अभी यह बात दिखानी है कि यदि प्राकृतिक नियमों से ही सृष्टि का सब काम चल सकता है तो ईश्वर की क्या आवश्यकता है ?

सज्जनो, यहाँ मैं आपको यह बतऊँगा कि युरोप के वैज्ञानिक भी ऐसे ही परमात्मा के जो कि प्राकृतिक नियमों को तोड़ने वाली शक्ति है जैसा कि बाइबिल सिखाती है, विरुद्ध है, न कि वे सर्वथा ईश्वर की सत्ता के विरुद्ध हैं। स्वयं टेण्डल जैसे वैज्ञानिक जो कि प्रारम्भ में प्रकृतिवादी Materialist या नास्तिक था और अन्त तक भ्रम से वैसा ही समझा गया वस्तुतः वह ईसाइयत के बताये ईश्वर का ही विरोधी था—वह कहता है 'It were better to have no opinion of God at all, than such an opinon as unworthy of Him, for the one

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

is unbelief, the other is contumely'

इसी प्रकार यदि Lodge लाजकी पुस्तक Life & Matter उठाइये तो उसमें वह कहते हैं कि जगत् को प्राकृतिक नियमों के अनुसार मानना और उसकी नियामक शक्ति (Controlling & Directiv Power) में विश्वास यह दोनों परस्पर अनुकूल हैं । परन्तु मैं Lodge की बात छोड़ता हूं क्योंकि वह बहुतों की सम्मति में 'वैज्ञानिक'कुल का विरोधी और 'मत' (Religion) का अनुचित पक्षपाती है- जो कुछ हो— परन्तु डाक्टर रसेल वेलेस जिन की मृत्यु हो चुकी है युरोप के सर्वोच्च वैज्ञानिक थे— वे प्रसिद्ध Evolution theory के डार्विन के सह आविष्कर्त्ता (Twin discoveror) समझे जाते हैं— उन्होंने १९१२ में पूरी आधी शताब्दी मनन करने के पश्चात् एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसका नाम है 'World of Life'— वे भी हमारी उपर्युक्त बात से ही सहमत हैं।

वर्णव्यवस्था का तुलनात्मक अनुशीलन

(ले० पं० धर्मदेव जी, सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति, आचार्य गुरुकुल मुलतान)

हम संक्षेप से इस बात को दिखाना चाहते हैं कि न केवल प्राचीन भारत में बल्कि मिश्र, फ़ारस और यूनान इत्यादि में भी बहुत से अंशों में वर्ण-व्यवस्था प्रचलित थी। यद्यपि उतने शुद्ध और आदर्श रूप में नहीं जितनी भारतवर्ष में।

डा० हाग ने फारसी मत विषयक अपने निबन्धों में स्पष्ट कहा है कि ईरानवासियों के धार्मिक ग्रन्थों में ४ वर्णों या जातियों का स्पष्ट तौर से वर्णन पाया जाता है यद्यपि उन के नाम बदल दिये गये हैं। डा० हाग के अपने शब्द यह हैं:—

"In the religious records of the Iranians of the Zend-Avesta the four castes are quite plainly to be found, only under other names"

इन चार विभागों के नाम ज़िन्द-अवस्था के यस्न में अथर्वा, रथेस्त, दहास्त्रिवशिया और हुईतिस ये दिये हैं जो क्रमशः ब्राह्मण, योद्धा, कृषक और श्रमी के द्योतक हैं। पहले दो शब्द तो साफ़ तौर पर संस्कृत अथर्वा और रथेष्ठा शब्दों से लिये गये हैं जिनका वेद में अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है।

ज़िन्द अवस्था के अनुवाद में प्रो० डार्मस्टेटर लिखते हैं कि अध्याय ६२ में चार वर्णों का (classes) स्पष्ट वर्णन पाया जाता है जोकि हमें ब्राह्मणीय वर्णव्यवस्था का स्मरण कराता है और इस में सन्देह नहीं कि यह जातियों या वर्णों का विभाग भारत से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया गया था। देखो, हाँग के जिन्दावस्था के अनुवाद की भूमिका का ३३ पृष्ठ।

प्राचीन मिश्रधर्म का अनुशीलन करने से पता चलता है कि उनके अंदर भी समाज का विभाग कुछ विशेष श्रेणियों के अन्दर किया हुआ था और धीरे २ वह विभाग भारतीय जाति-भेद के रूप में आनुवंशिक वा Hereditary हो गया था जिसमें परिवर्तन करने की किसी को स्वतन्त्रता न दी जाती थी। इतना तो अवश्य मालूम होता है कि इन भिन्न २ विभागों के अंदर परस्पर प्रीति का भाव विद्यमान था और एक दूसरे से घृणा न की जाती थी। इस विषय में International Library of the Famous Literature Vol I P. 65-68 तक में उद्धृत Manners and Customs of the Egyptians इस शीर्षक के Charles Rollen नामक प्रसिद्ध फ्रेञ्च ऐतिहासिक के लेख से कुछ आवश्यक भाग उद्धृत किये जाते हैं। वह ऐतिहासिक लिखता है कि—

"The body politic reqires a Superiority and Sub- ordination of its several members; for as in the natural body, the eye may be said to hold the first rank, yet its lustre does not dart-contempt upon the feet-, the hands and even on those parts-which are less honourabe; in like manner, among the Egyptians the priests, soldiers and scholars were distinguished by particular honours, but all professions to the meanset, had their share in the public esteem, because the despising of any man whose labours, however mean, were useful to the state was thought to be a crime".

सारांश यह कि जिस प्रकार शरीर के सब अवयव मिल कर कार्य करते हैं और उन में से कोई दूसरे से घृणा नहीं करता उसी प्रकार मिश्र देश में किसी भी व्यवसाय वा वृत्ति को घृणा की दृष्टि से न देखा जाता था क्योंकि मनुष्य से नफरत करना जिस की वृत्ति किसी भी रूप में राष्ट्र के लिये उपयोगी हो यह मिश्र में एक बड़ा अपराध समझा जाता था।

वही लेखक आगे हमें बतलाता है कि प्रत्येक मनुष्य की आजीविकादि वहां के कानूनों से निश्चित की जाती थी और वह आनुवंशिक होती थी। एक ही समय में दो वृत्तियां अथवा उस वृत्ति में परिवर्तन जिसमें कोई मनुष्य उत्पन्न हुआ हो—इस बात की आज्ञा न होती थी। इस का परिणाम क्या होता था-इसके बारे में चार्ल्स रौलन लिखता है कि:—

"By this means, men became more able and expert in employments which they had always exercised from their infancy and every man adding his own experience to that of his ancestors was more capable of atta-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ining perfection in his particular art."

तात्पर्य्य यह है कि ऐसा करने से मनुष्य अपने २ व्यवसायों में विशेष निपुणता प्राप्त कर लेते थे और भिन्न २ कलाओं में पूर्णता प्राप्त करने के अधिक अधिक योग्य होते जाते थे।

यहां यह बताने की पुनः आवश्यकता नहीं कि प्राचीन काल में भारत का मिश्र देश के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध था। कण्व, काश्यपादि मुनियों के मिश्र में जा कर काम करने का पुराणों में वर्णन आ ही चुका है।

यूनान देश की प्राचीन सामाजिक पद्धति के अनुशीलन से पता लगता है कि वह भी वर्णव्यवस्था से ही मिलती जुलती थी। प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो (अफ़लातून) ने तो एक प्रकार से स्पष्ट शब्दों में ही वर्णव्यवस्था का अपने Republic नामक ग्रन्थ में उल्लेख किया है। उस ने सम्पूर्ण समाज को सुवर्ण के मनुष्य, चांदी के मनुष्य और लोहे के मनुष्य इस प्रकार के तीन भागों में विभक्त किया है और उन्हें क्रमशः परिपालक, योद्धा, और कृषक का नाम दिया है। लोहा, चांदी, सोना यहां पर तम, रज और सत्व के प्रतिनिधि समझे जा सकते हैं। परिपालकों का (अंग्रेज़ी अनुवाद के शब्दों में Guardians के) जो कर्तव्य बताये गये हैं वे ब्राह्मणों के धर्मों का अनुकरण मात्र प्रतीत होते हैं। उन के लिये सादगी और तपस्या के जीवन को अत्यावश्यक माना गया है। मद्य पान का उन के लिये सर्वथा निषेध किया गया है। अपने पास आवश्यकता से अधिक कुछ भी द्रव्य रखने की उन के लिये सख्त मनाई की गई है जिसके विषय में अनुवादक के शब्द ये हैं:—

"None of the guardians should possess any property of his own, except what is absolutely necessary. Then none of them to have any house or store-chamber into which all can-not enter when they please."

Plato's Republic P. 136.

परिपालकों के लिये पारिवारिक चिन्ताओं से भी यथा सम्भव मुक्त रहने का इस ग्रन्थ में आदेश किया है। योद्धाओं और कृषकों के कार्य्य क्षत्रियों और वैश्यों से मिलते हैं।

मध्य यूरोप में भी Clergy, Baronage, People और Serfs मुख्यतः इन चार वर्गों में समाज का विभाग था। इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर हमें प्राचीन वर्णव्यवस्था की सार्वभौमिता बहुत अंश तक प्रतीत होती है यद्यपि उस के रूप में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन अवश्य आता रहा है और आता रहेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिलाष

[श्री माल]

दिल की यह अभिलाष पुरानी कैसे तुम्हें सुनाऊँ ?
जहाँ चाँदनी लुठक लुठक कर, करती फिरती अपना कलरव-
उसी गगन का हृदय चीर कर समा उसी में जाऊँ।
कभी सोचता हूँ घन बन कर एक साथ उड़ जाऊँ-
धाराओं में बरस बरस कर सागर में मिल जाऊँ।
या गोधूलि-काल की रज बन साँझ समय चढ़ जाऊँ-
घोर निशा में छिपे २ ही ओस बिन्दु बन जाऊँ।
भर उमङ्ग में झिलमिल करते तारों में मिल जाऊँ
उषाकाल के रंग बिरंगे आँचल में छिप जाऊँ।
झरनों की फुआर में मिल कर मैं शीकर बन जाऊँ।
उमड़ उमड़ कर मैं तरङ्ग संग लहर लहर में गाऊँ।
कभी सोचता हूँ कलियों में झूम झूम कर गाऊँ
कोकिल के कलरव में मिल कर एक कूक बन जाऊँ।
या बिरही की अश्रु धार की एक बूंद बन जाऊँ-
उस की ठण्डी आहों का निश्वास कभी बन पाऊँ।
बजती किसी हृदय-तन्त्री का एक तार बन जाऊँ
अथवा करुण-व्यथा की मैं भी एक कथा बन जाऊँ।
डाली पर पत्ता बन नाचूं, पंछी हो कर गाऊँ-
षड्ज, ऋषभ, गान्धार आदि बन ऊँची तान चढ़ाऊँ।
जैसे कैसे इस अनन्त में मैं भी अब मिल जाऊँ-
मिल कर इस असीम में मैं भी फिर असीम हो जाऊँ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सृष्ट्युत्पत्ति"

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

(१)

बाइबल तथा कुरान में सृष्टि की उत्पत्ति की विचित्र कथा पाई जाती है। उस कथा का संक्षेप यह है कि परमात्मा ने अपना एक फ़ोटो तैयार किया, जिस का नाम 'आदम' रक्खा। आदम को स्वर्ग के बग़ीचे में रख कर वहाँ की देख-रेख का काम भी उस के सिपुर्द कर दिया। उस समय आदम खेती नहीं करता था, बाग़ में जो कुछ लगा हुआ था उसी से पेट भर लेता था। वह बड़े मज़े में था, हल चला कर उसे परेशान नहीं होना पड़ता था। उसी बाग़ में एक 'ज्ञान-वृक्ष' लगा हुआ था, जिस के फल खा कर भलाई-बुराई का भेद मालूम होने लगता था। इसके अतिरिक्त एक दूसरा 'अमरता' का वृक्ष भी था, जिस के फल खाने वाला अमर हो सकता था। परमात्मा ने आदम के लिये एक स्त्री को उत्पन्न किया, और इस जोड़े को उपर्युक्त दोनों फल खाने से मना कर दिया। परमात्मा इन फलों को स्वयं तो खाता था, परन्तु इस भय से कि कहीं आदम और हव्वा इन्हें खा कर स्वयं उसी के जैसे ज्ञानी (चित्) तथा अमर (आनन्द) न हो जायँ, उन्हें रोकता था। हव्वा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में, इन ग्रन्थों में, दो क़िस्से पाये जाते हैं—पहले तो यह लिखा है कि स्त्री आदम की पसली से बनाई गई। और, आगे चल कर यह लिखा है कि आदमी और औरत इकट्ठे ही जुड़े हुये पैदा हुए थे; परमात्मा ने उन्हें बीच से काट कर दो भागों में विभक्त कर दिया, और उन का स्त्री पुरुष का व्यवहार प्रारम्भ हो गया।

उसी बग़ीचे में साँप—शैतान—भी रहता था। परमात्मा की और शैतान की लड़ाई थी। उस समय शैतान (साँप) भी हम लोगों की तरह खड़ा हो कर पैरों से चलता था। उसके हाथ-पैर थे। शैतान ने परमात्मा को ठगने की सोची, और इस काम के लिये उसने आदम की हड्डी से बनी स्त्री को अपना उपकरण बनाया। साँप स्त्री को जाकर बहकाने लगा—उस से कहा, इन फलों को बेखटके खाओ, बड़े मज़ेदार हैं, परमात्मा झूठ बोलता है, इनके खाने से कोई मर जाता होता, तो वह स्वयं अब तक कैसे जीता रहता। नहीं, तू नहीं मरेगी। स्वयं खा, और आदम को खिला। हव्वा उस की बातों में आ गई। अभी तक तो दोनों ही मिट्टी के ढेले से बने थे, नंगे फिरते थे, असभ्य थे, जंगली थे। अभी वे 'सत्'—अस्तित्व—की अवस्था तक ही पहुंचे थे। अब साँप के द्वारा बहकाए जाने पर, ज्ञान-फल को खा कर 'चित्' (Knowledge) को भी पा गए। बस, अमरता का फल चखने से पहले ही परमात्मा को षडयंत्र का पता चल गया, और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस ने इस बढ़ते हुए अनर्थ को रोक दिया। वह स्वयं तो 'सच्चिदानन्द' बना रहा, पर आदम तथा हव्वा का का स्वरूप 'सच्चित्' बनने तक ही पहुंच सका। 'अमरता' का फल भी खा लेते, तो उन में तथा परमात्मा में भेद ही क्या रह जाता? अपनी ही शकल को सामने रख कर परमात्मा ने आदम को बनाया था। लेकिन इस फल के खाने पर तो शकल इतनी मिल जाती कि असल और नकल में फ़र्क ही न रहता--मनुष्य परमात्मा ही हो जाता, और सृष्टि आदम के साथ शुरू हो कर उसी के साथ ख़तम हो जाती। जो कुछ हुआ, अच्छा ही हुआ। ख़ैर, परमात्मा ने आदम को बुलाकर पूछा--"ज्ञान फल क्यों खाया?" वह गिड़गिड़ाता हुआ बोला—"मुझे तो ईव ने खाने को दिया था?" ईव से पूछा गया। वह बोली—"मुझे छली, मायावी साँप ने बहका दिया।" फिर क्या था, साँप पर क्रोध उमड़ पड़ा। उसे पृथ्वी पर गिर कर धूल चाटने का शाप दिया गया, और यह भी कहा गया कि तुम्हारे हाथ-पैर कट जांय, और तुम पेट के बल चला करो। तभी से साँप रेंगने लगा, नहीं तो वह भी ऐंठ-ऐंठ कर चला करता था। मनुष्य तथा स्त्री को भी इस अपराध में स्वर्ग छोड़ कर भूमि पर आना पड़ा। उन्हें यह शाप दिया गया कि अब से तुम्हें बैठे बैठे मुफ़्त रोटी नहीं मिलेगी। पसीना बहाओ, और खेती कर के जीवन-निर्वाह करो। उस समय स्वर्ग से निकालते हुए परमात्मा ने उन्हें कपड़े भी सी कर पहना दिए। इस प्रकार परमात्मा और साँप की लड़ाई में ज्ञान-फल खाने के कारण, आदम की हड्डी से बनी स्त्री के द्वारा साँप का पतन हुआ, जिस में उसे हाथ-पैर भी खो देने पड़े।

प्रायः इसी वर्णन को मनुष्य के पतन का नाम दिया जाता है। परन्तु सारा वर्णन पढ़ लेने पर इसे मनुष्य के पतन की अपेक्षा शैतान का पतन कहना अधिक उचित प्रतीत होता है। शैतान के पतन के साथ-साथ मनुष्य को खेती करने तथा नंगे न रहने का शाप अवश्य दिया गया, परन्तु दोनों के शापों की तुलना में शैतान को अधिक कठोर दण्ड दिया गया है।

बाइबल तथा कुरान के इसी वर्णन की तरह पारसी पुस्तकों में भी यह कथा पाई जाती है। बिशप कोलेंसो * लिखते हैं—पारसियों के परमात्मा अहुर्मज्द ने पहले जोड़े को पवित्र तथा पाप-रहित उत्पन्न किया था। परन्तु अहिर्मान के भेजे हुए सांप ने उन्हें अमरता का एक फल खिला दिया, जिस से उन की पवित्रता नष्ट हो गई। पारसियों के यहां यह भी माना जाता है कि हेडेन (Heden) नामक स्वर्ग स्थान में 'होम' नामक वृक्ष था जिस का फल शैतान ने आदि-युगल को खिलाया था। शैतान के

* The Pentateuch Examined. Vol. IV, p. 153.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये पारसी-साहित्य में अज़िह-शब्द पाया जाता है।

ईसाई, मुसलमान तथा पारसी-धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों में भी यह कथा पाई जाती है। बैबिलोनिया की एक प्राचीन प्रशस्ति ब्रिटिश म्यूज़ियम में मौजूद है, जिस के आधार पर, जार्ज स्मिथ महोदय की सम्मति में, कहा जा सकता है कि यहूदियों के १,५०० वर्ष पूर्व बैबिलोनिया में यही गाथा प्रचलित थी। इस पर एक चित्र भी है, जिस में एक तरफ़ स्त्री तथा दूसरी तरफ़ पुरुष बैठा हुआ है। साँप भी नज़दीक ही पूंछ के बल खड़ा हुआ है। स्त्री तथा पुरुष, दोनों वृक्ष के फल की तरफ़ हाथ बढ़ाए हुए हैं।

यूनानी स्वर्ग को Elysium या Garden of Hesperides के नाम से पुकारते थे। उनके स्वर्ग या बग़ीचे में अमरता का वृक्ष था, जिस में सोने के फल होते थे। उसकी रक्षा के लिए तीन देवियां तथा एक साँप हर वक़्त तैनात रहते थे। हरक्यूलीज़ के जीवन की घटनाओं में इस वृक्ष के फल तोड़ कर लाना एक मुख्य घटना है। हरक्यूलीज़ जब इन फलों को लेने गया, तो उसने साँप को अपनी डयूटी पर मुस्तैद पाया और उसने साँप के सिर को अपने पैर के नीचे कुचल कर फल इकट्ठे किये।

मिसर में भी, इसी प्रकार स्वर्ग में, एक जीवन वृक्ष की कल्पना स्वीकार की जाती थी। उनके मुख्य देवता ओसिरिस ने इस वृक्ष के तने पर कुछ आत्माओं के नाम लिखे जाने की आज्ञा प्रचारित की थी। इस वृक्ष के फल चखने का परिणाम यह होता था कि खाने वाला ईश्वर के सदृश ही बन जाता था।

अधिक न बढ़ाकर इतना कह देना पर्याप्त होगा कि ईश्वर तथा साँप की जीवन-वृक्ष के फल के लिए लड़ाई, उस में साँप का मारा जाना, पुरुष तथा स्त्री का फल खाना—यह सब एक ऐसी कथा है जो संसार के एक या दो धर्मों में नहीं, प्रायः प्रत्येक धर्म में पाई जाती है। थोड़ा बहुत भेद अवश्य है। कहीं साँप ही मनुष्य को फल खाने के लिये बहकाता है, और कहीं साँप ही मनुष्य से उस फल की रक्षा करा रहा है। परन्तु इस प्रकार का भेद कथानक की परंपरागत समानता को देखते हुए वास्तव में नहीं के बराबर रह जाता है। हमारा मत यह है कि संसार में सर्वत्र प्रचलित इस कथा का आधार वैदिक साहित्य ही है। हम अपने मत के पुष्ट करने के लिये यहां प्रमाण तथा लोकोक्ति, दोनों का आश्रय लेंगे। परन्तु लोकोक्ति का आधार भी प्रमाण ही होगा।

ऋग्वेद के प्रथम मंडल, अनुवाक ७, सूक्त ३२ में यही कथा पाई जाती है। इस सूक्त का ३ रा मंत्र इस प्रकार है:—

"वृषायमाणोऽवृणीत सोमं
त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।
आ सायकं मघवा अदत्त
वज्रं अहन्नेनं प्रथमजामहीनाम्।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र का अभिप्राय यह है कि 'इन्द्र' ने 'सोम' का पान किया और फिर उसने 'वज्र' लेकर 'प्रथम अहि' को मार डाला। इस मन्त्र से यह स्पष्ट है कि इन्द्र स्वयं सोम-रस का पान करता है। मन्त्र में लिखा है कि वह सोम रस स्वयं पीकर 'प्रथम अहि' को मार डालता है। यदि 'प्रथम अहि' इन्द्र के सोमरस पान में कोई विघ्न न डालता, तो उसे मारने की क्या आवश्यकता पड़ जाती? इसका अभिप्राय यही मालूम होता है कि 'इन्द्र' तथा 'प्रथम अहि' में 'सोम-रस' के लिये लड़ाई हुई, जिस में इन्द्र ने अपने 'वज्र' से प्रथम अहि को मार डाला।

इन्द्र को सोम की रक्षा की चिन्ता है, यह उसी सूक्त के १२ वें मन्त्र से भी स्पष्ट है। उसमें लिखा है--'अजयः गा, अजयः शूरसोमं, अवासृजः सप्त-सिंधून्'--अर्थात् शूर इन्द्र ने गउओं को जीता, फिर सोम को भी। क्या इससे हमारा भाव और अधिक स्पष्ट नहीं हो जाता? चाहे कुछ भी हो, यह मानना ही पड़ता है कि इन्द्र की तथा प्रथम अहि की लड़ाई सोम-रस के लिये हो थी।

यह 'सोम' क्या चीज़ है, जिसे 'इन्द्र' 'अहि' को नहीं लेने देता? प्रचलित कथानक के अनुसार 'सोम' एक वृक्ष का नाम है, जो ज्ञान देता है। पारसी लोगों के 'होम' का भी यही गुण माना जाता है। सामवेद। उ० प्र० ३। अर्ध० १। मं० १९ में लिखा है—'सोमः पवते जनिता मतीनाम्' मतीनां जनिता का अर्थ बुद्धि देने वाला-ज्ञान शक्ति बढ़ाने वाला। अतः लोक यथा वेद, दोनों के अनुसार सोम 'ज्ञानप्रद वृक्ष' का नाम है। बाइबिल में यह 'ज्ञानप्रद-वृक्ष' (सोम) 'Tree of the Knowledge of Good and Evil' के नाम से पाया जाता है। जिस प्रकार बाइबिल का इष्टदेव इस वृक्ष को अपने लिये रखना चाहता है, इसी प्रकार वेद का 'इंद्र' भी 'सोम-रस' को अपने लिये रखना चाहता है। बाइबिल के कथानक के अनुसार इस वृक्ष के फल के कारण परमात्मा तथा शैतान में, जिस का सांप का स्वरूप दिखाया गया है, लड़ाई छिड़ गई। वेद की कथानुसार भी इन्द्र तथा प्रथम अहि में 'सोम' के कारण लड़ाई छिड़ती है।

सोम-रस ही बाइबिल का ज्ञान-वृक्ष है, यह हमने देख लिया। अब प्रश्न होता है कि यह 'प्रथम अहि' कौन है? इस का उत्तर यह है—बाइबिल का शैतान सांप। कैसी मज़ेदार बात है! वेदों के 'प्रथम अहि' बाइबिल के हज़रत साँप ही हैं। अहि का अर्थ लौकिक संस्कृत में 'सांप' होता है। वेदों में 'प्रथम अहि' आया है, जिसका अर्थ है सब से पहला साँप—शैतान। साँपों के सरदार—सब से पहले साँप जो ठहरे!! यह अहि सोम-रस को उड़ाना चाहता है, इन्द्र से छीनना चाहता है और, बाइबिल का शैतान साँप भी ज्ञान-वृक्ष को जिहोवा के बग़ीचे से उड़ा लेना चाहता है। पुराणों की समुद्र-मंथन की कथा में 'अमृत' निकालने के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये, सर्पराज को ही मंदराचल के लिये मंथन-रज्जु बनाया गया था। इस कथा में भी साँप तथा अमरता के फल का कुछ संबन्ध निर्दिष्ट है। हमने देख लिया कि इन्द्र और अहि की सोम-रस के लिये तथा बाइबिल, कुरान एवं अन्य धर्मों में वर्तमान परमात्मा एवं साँप की ज्ञान-वृक्ष के लिये लड़ाई, सब एक ही कथा के भिन्न भिन्न रूप हैं।

ज्यों-ज्यों हम ऋग्वेद के उक्त सूक्त का आगे आगे अध्ययन करते जाते हैं, त्यों-त्यों हमारी कल्पना अधिकाधिक पुष्ट होती जाती है। बाइबिल में साँप के विषय में स्त्री कहती है—"इसने मुझे छल लिया—मुझ पर माया कर दी।" ऋग्वेद के इसी सूक्त के चौथे मंत्र में लिखा है 'यदिंद्र अहन् प्रथमाजां अहीनां आत् मायिनां अमिनाः प्रोत-मायाः।" यहां पर 'मायिनां अहीनाम्' कह कर वेद में भी साँप के ऊपर मायावी, छली होने का दोष आरोपित किया है।

बाइबिल के अनुसार परमात्मा ने साँप को पृथ्वी पर गिराकर मिट्टी खाने का शाप दिया। ऋग्वेद के इसी सूक्त के चौथे मंत्र में लिखा है—'अहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः'—अर्थात्, साँप पृथ्वी के ऊपर आ सोया। इसके आगे बाइबिल में शाप देते हुए कहा गया है कि तू पेट के बल रेंगेगा, तेरे हाथ-पैर कट जायँगे। यही अभिप्राय ऋग्वेद के इसी सूक्त के छठे मंत्र में दिया है—"अ-पादहस्तो अपृतन्यदिप्रंन्द्रं" इस मंत्र में 'अहि' के लिये 'अपादहस्त'-विशेषण प्रयुक्त किया गया है, जो विशेष ध्यान देने योग्य है। अहि अहस्तपाद अर्थात् हाथ-पैर से रहित है। बाइबिल के सांप का भी यही हाल हुआ है. यह पहले ही लिखा जा चुका है। पहले तो वेद में सोम के लिए लड़ाई में अहि अर्थात् सांप, इस शब्द का प्रयोग होना, और फिर उसके लिए लगभग उन सभी विशेषणों का प्रयोग होना, जो बाइबिल में सांप के किस्से में पाए जाते हैं, क्या आश्चर्य में डाल देने वाली समानता नहीं?

भूल

(श्री० श्रीयुत गुप्त विद्यालंकार)

(१)

क्रोपेट ने कमरे में प्रवेश कर के देखा कि सामने मञ्च पर रक्खी हुई एक ऊँची कुर्सी पर सरपञ्च बैठा है; उस के पैरों के पास, मञ्च के नीचे, पांच व्यक्ति तलवार लिये खड़े हैं। क्रोपेट ने जान लिया कि ये लोग संघ के मुखिया सरदार हैं। जो व्यक्ति क्रोपेट के साथ आया था वह उसे कमरे तक ला कर स्वयं बाहर ही रह गया था; क्रोपेट ने प्रवेश कर के बड़े भक्तिभाव से सरपञ्च को प्रणाम किया। सरपञ्च का विकृत, खुरदरा परन्तु गम्भीर चेहरा विचित्र प्रकार से भाव पूर्ण हो उठा। उस की दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता था कि वह क्रोपेट को बहुत ही आश्चर्य और चिन्ता के साथ देख रहा है। सरपञ्च ने क्रोपेट के प्रणाम का कोई उत्तर नहीं दिया। क्रोपेट के कमरे में प्रवेश करने पर भी वहां पूर्ण सन्नाटा ही छाया रहा। क्रोपेट सामने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ा होकर सरपञ्च की ओर बड़ी श्रद्धा तथा सम्मान के साथ देखने लगा। सरपञ्च के चेहरे की बनावट देख कर उस ने पहचान लिया कि किसी समय वह एक सुन्दर मनुष्य रहा होगा- परन्तु संघ में सम्मिलित होकर संघ के नियमानुसार उस ने तेज़ाब डाल कर अपने चेहरे को विकृत कर लिया है।

कुछ देर तक इसी प्रकार सन्नाटा रहा। इसके बाद सरपञ्च ने बड़ी गम्भीरता से धीरे धीरे कहा- "क्रोपेट, क्या तुम सचमुच पूर्ण निस्वार्थ भाव से इस संघ में शामिल होना चाहते हो?"

क्रोपेट ने स्थिरता से उत्तर दिया— "जी, हाँ।"

सरपञ्च ने क्रोपेट के चेहरे पर आखें गड़ाते हुए कहा— "क्रोपेट! तुम एक बहुत बड़े जमीदार के पुत्र हो। तुम अपनी प्रखर प्रतिभा और सुप्रसिद्ध कुलीनता के आधार पर शीघ्र ही, थोड़ा यत्न करने से रूस की ज़ारशाही के भाग्य-विधाताओं में शामिल हो सकते हो। तुम्हारी सुन्दरता पीटर्सबर्ग भर में प्रसिद्ध है। यह सब जानते हुए भी क्या तुम इस संघ में शामिल होना चाहते हो?"

क्रोपेट ने शीघ्रता से उत्तर दिया— "श्रीमन्, आप मुझे गाली दे रहे हैं।"

सरपञ्च क्रोपेट का यह उत्तर सुन कर विचलित हो उठा, परन्तु उसने अपनी आवाज़ में किसी प्रकार का परिवर्तन लाये बिना ही कहा— "क्रोपेट, जानते हो— हमारा काम कितना नृशंसतापूर्ण है, हम लोग सन्देह मात्र पर ही हत्या कर डालते हैं। डाका डालते हैं। कहीं बालक चीख न उठे इसी भय से उसका गला घोंट देते हैं। अवसर पड़ने पर हमें निरपराध स्त्रियों का भी वध करना होता है। इस पर हमारा जीवन भी सुरक्षित नहीं है, प्रतिक्षण हमें जान जाने का भय बना रहता है। इतना ही नहीं, हमारे देश के बहुत से लब्ध-प्रतिष्ठ नेता भी हमें खूनी और लुटेरा कहते हैं। यह सब जानते हुए भी क्या तुम संघ में शामिल होने को तैयार हो?"

क्रोपेट ने सिर झुका कर कहा—"आज तक मैं अपनी कल्पना द्वारा इसी प्रकार के पवित्र और निष्काम देश-सेवकों के लिये सिर झुकाता रहा हूं।"

यह सुन कर सरपञ्च ने अपनी जेब से एक कागज़ निकाल कर क्रोपेट को दिया। क्रोपेट ने बड़े आदब से उस कागज को लेकर ऊंची आवाज़ में पढ़ा-"मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आज से इस संघ की प्रत्येक आज्ञा का बिना विरोध पालन किया करूंगा। संघ की प्रत्येक बात को गुप्त रख कर उस के सदस्यत्व की सब शर्तें पूरी करूंगा।" क्रोपेट ने इस कागज़ पर पर हस्ताक्षर भी कर दिये।

इस के बाद सरपञ्च ने कहा—"क्रोपेट, अब तुम्हारे धैर्य और साहस की परीक्षा ली जायगी। तुम्हें हम कुछ कष्ट देंगे। परन्तु तुम अपने मुंह से उफ़ तक भी न करना।" यह कह कर उसने नीचे खड़े हुए दो सरदारों की ओर इशारा किया।

दोनों सरदार तत्क्षण क्रोपेट के पास पहुंचे। उन्होंने क्रोपेट को दोनों हाथ आगे बढ़ाने केलिये इशारा किया। क्रोपेट ने उसी क्षण इस आज्ञा का पालन किया। दोनों सरदार एक एक करके क्रोपेट के नाखूनों में बड़े २ पिन चुभोने लगे। सरपञ्च इस समय बड़े ध्यान से क्रोपेट के चेहरे की ओर देख रहा था। शीघ्र ही क्रोपेट की कोमल उंगलियाँ नीली हो उठीं— उन से खून टपकने लगा। परन्तु वह उसी प्रकार निश्चल और अटल होकर खड़ा रहा।

सरपञ्च का मुख प्रफुल्लित हो उठा। उसे क्रोपेट से-जो कि अब तक राजकुमारों की तरह पला था- इस धैर्य की ज़रा भी आशा न थी। उसने दोनों सरदारों को एक और इशारा किया; सरपञ्च का इशारा पाते ही वे क्रोपेट को कमरे के एक कोने में ले गये; वहां एक लोहे की चौकी पर उसे खड़ा करने के अनन्तर वे दोनों बाहर चले गए। थोड़ी देर में लोहे की वह चौकी भी खूब गरम हो उठी। इस समय भी सरपञ्च बड़े ध्यान से क्रोपेट की ओर देख रहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, वह आंखें बन्द कर के इस नारकीय व्यथा को बड़े कष्ट से सह रहा था; उस के माथे से पसीने की धार छूटने लगी, परन्तु उसने अपने पैरों को हिलाया तक नहीं। थोड़ी देर में सरपञ्च ने स्वयं कुरसी से कूद कर उसे चौकी से उतार कर एक चादर पर लिटा दिया। क्रोपेट को यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि वह इस कठिन परीक्षा में भी प्रथम विभाग में उत्तीर्ण हुआ है।

सरपञ्च ने अपनी कुरसी पर बैठ कर क्रोपेट को "नायक" की उपाधि दी। इसी समय एक सरदार ने बड़े अदब से कहा— "सरपञ्च! नायक बनने के लिये एक आवश्यक शर्त अभी तक पूरी नहीं कीगई; वह शर्त है तेज़ाब छिड़क कर उमेदवार की मुखाकृति को बिगाड़ देना।"

सरपञ्च यह सुनते ही कुछ अधीर और दुखित सा हो उठा। थोड़ी देर तक चुपचाप कुछ सोचते रहने के बाद उसने घबराई हुई सी स्वर में कहा— "यह असम्भव है। क्रोपेट के के सुन्दर मुख पर तेज़ाब छिड़कने की आज्ञा मैं नहीं दे सकता।" पांचों सरदारों ने आश्चर्य के साथ सरपञ्च की ओर देखा। मालूम होता था कि वे सरपञ्च के इस कार्य से एक भयङ्कर भूल समझ रहे हैं; परन्तु नियमानुसार उन्होंने सरपञ्च की आज्ञा का विरोध नहीं किया। क्रोपेट को नायक मान कर सब सरदारों ने उससे हाथ मिलाया। सब से अन्त में सरपञ्च ने क्रोपेट को गले लगा कर उसे अपने दल में शामिल कर लिया।

(२)

क्रोपेट को संघ का सदस्य बने हुए दो वर्ष से अधिक समय नहीं हुवा, इस बीच में उस ने कई ऐसे कार्य कर दिखाए हैं जिनकी बदौलत उस की संघ में खूब प्रतिष्ठा है। इस समय दल की प्रत्येक बात उस से सलाह लेकर ही की जाती है। सरपञ्च का उस पर अत्यधिक विश्वास है। वह क्रोपेट को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता है। क्रोपेट द्वारा संघ की संख्या, बल और संगठन तीनों में बहुत वृद्धि हुई है।

क्रोपेट एक कुलीन वंशज है। वह स्वभाव ही से दयापूर्ण और कोमल प्रकृति है; उस की बड़ी बड़ी और सुन्दर आँखों से एक अद्भुत एकाग्रता और पवित्र प्रेम का भाव टपकता है। उसने अनथक यत्न करके संघ के कार्यक्रम में एक और कार्य की वृद्धि कराई है—वह कार्य है रूस के दुखित और गरीब किसानों तथा श्रमियों की सहायता करना। क्रोपेट को स्वयं इस कार्य में आत्मिक आनन्द अनुभव होता है। इस कार्य का अध्यक्ष वह स्वयं ही है।

परन्तु उस समय संघ के सदस्यों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता जब लूट, डाका और सरकारी औफिसरों की हत्या करते समय क्रोपेट अकस्मात् क्रूरता का अवतार बन जाता है। यह कार्य करते हुए वह दया, माया और ममता सब भूल जाता है। मौका पड़ने पर वह स्वयं निष्पाप और स्वर्ग राज्य के सब से प्रथम अधिकारी, मनोहर बालकों का गला अपने हाथ घोंट चुका है। कोमलाङ्गी, प्रेम और सम्मोह की वर्षा करने वाली रमणियों के खून से हाथ रंग चुका है। क्रोपेट यह सब कार्य दैत्य बन कर करता है— परन्तु उस के स्वभाव में दैत्यपना ज़रा भी प्रवेश नहीं कर पाया है। यह सब क्रूरताएँ वह निष्काम भाव से कठिन कर्तव्य समझ कर ही करता है।

(३)

क्रान्तिकारी दल का मुखिया पकड़ लिया गया—उसके पकड़ने वाले मोशिये ड्रावर को १ लाख रुपया इनाम मिलेगा। इस खबर से रूस भर में एक तहलका मच गया। उत्सुकता से स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा करने वाले दिलों पर मनों पानी पड़ गया। क्रान्तिकारी दल पूर्णतया निराश हो गया। दल को अपना भविष्य सर्वथा अन्धकार मय जान पड़ने लगा।

सरपञ्च को गिरफ़्तार हुए तीन मास बीत चुके हैं। शीघ्र ही उन्हें प्राण दण्ड दिया जाने वाला है। क्रान्तिकारियों ने उन्हें बचा लाने का—छुड़ा लाने का— पूर्ण यत्न किया है, परन्तु इसमें उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

आश्चर्य इस बात का है कि सरपञ्च के दायें हाथ सरदार क्रोपेट भी उनके कैद होने के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सप्ताह बाद ही से गायब हो गये हैं। किसी को मालूम नहीं कि वह कहां गये हैं। प्रारम्भ में दल के मुखिया समझते थे कि सम्भवतः वह सरपञ्च की सहायता करने के उद्देश्य से ही इस प्रकार अन्तर्धान हो गए हैं परन्तु इतने दिनों तक क्रोपेट का कोई भी समाचार न मिलने से उनका यह विश्वास मिट चुका है। अब क्रान्तिकारी दल में उनके सम्बन्ध में दो विचार हैं। कुछ लोगों का, दल के बहुमत का, यह कहना है कि क्रोपेट सरकारी खुफ़िया विभाग का एक उच्च अधिकारी था-उसी के द्वारा सरकार सरपञ्च को पकड़ने में सफल हो सकी है। इसके लिये वे दो प्रमाण देते हैं— सरपञ्च के पकड़ने वाला क्रोपेट का सगा भाई मोशिये ड्रावर है, जो सेक्रट पीटर्स वर्ग की पोलीस का मुख्य अध्यक्ष है। उन का दूसरा प्रमाण है— क्रोपेट का सहसा इस प्रकार गुम हो जाना। अन्य लोगों का मत है कि क्रोपेट सरकार से डर कर छिप गये हैं-क्योंकि सरकार ने उनको पकड़ने के लिये भी पूरा यत्न कर रही है। ये आपत्ति के दिन निकल जाने पर वह फिर क्रान्तिकारी दल की आयोजना करेंगे।

(४)

दोपहर का समय था। सरदियों के दिन थे। दोपहर होने पर भी सब ओर घना कुहर छाया हुआ था। ऐसे समय सरपञ्च एक लोहे के मज़बूत पिंजरे में सिर झुकाये बैठा था। वह चिंतित था परन्तु अपने लिये नहीं अपने देश के लिये। वह जानना चाहता था कि उसके दल का क्या हुआ है; उसके सहकारी क्रोपेट ने दल का संगठन टूटने तो नहीं दिया। उसे अपनी मृत्यु का पूर्ण निश्चय था, परन्तु उस आत्महुत वीर के लिये मृत्यु कोई डरावनी चीज़ थी ही नहीं थी, अगर वह एक बार जान पाता कि उसका दल यथापूर्व अपना कार्य कर रहा है तब वह हँसते २ प्राण दे सकता था।

पिंजरे के बाहर ८, १० सिपाही, नङ्गी तलवारें हाथ में लिये पहरा दे रहे थे। यह पिंजरा एक रौद्ररूप, भयंकर और पुराने किले में रक्खा हुआ था। किले के फाटक पर भी १०, १२ सिपाही पहरा दे रहे थे। पिंजरे के पिछवाड़े की ओर एक बैरक थी, जिसमें १०० से ऊपर मोटे, ताजे रूसी सिपाही रहते थे।

पिंजरे पर जो सिपाही पहरा दे रहे थे। उनमें से एक सिपाही खूब लम्बी दाढ़ी मूछों वाला था। यह बड़ा ही हंसोड़ और बातूनी था; अन्य सब सिपाही उसके साथ ड्यूटी पर जाने के लिए उत्सुक रहते थे। करीब ढाई मास से ही वह इस किले की पोलीस में शामिल हुआ था। उसका पूर्व परिचय लोग इतना ही जानते थे कि वह पहले एक कोयले की खान में कोयला खोदने का कार्य किया करता था; परन्तु पीछे से बाबू बनने की प्रवृत्ति उसे इस महकमे में खींच लाई। वह अपनी दाढ़ी, मूछों से बहुत प्रेम करता था। वह सदैव दो कोट, दो कमीजें और दो पतलून पहना करता था, दूसरे सिपाही उसे इस पर चिढ़ाया करते थे परन्तु वह कहा करता था— "बाबा, क्या करूं ? उमर भर बंद और गरम कोयले की खान में काम किया है; अब यह सरदी, यह खुली और ठण्डी हवा कैसे बरदाश्त करूँ।"

दोपहर का समय था—सब लोग इस दड़ियल सिपाही को घेर कर बातें कर रहे थे। सहसा बैरक के पीछे से "आग, आग" का शोर सुनाई दिया। इसी समय एक सिपाही बैरक की ओर से भागा हुआ इन लोगों को बुलाने के लिए आया। सब सिपाही यह शोर सुनते ही उस ओर भागे। दड़ियल महाशय भारी कपड़े पहने हुए थे-वह ज़ोर से न भाग सकने के कारण जब सब से पिछड़ गए तब उन्हों ने शोर मचाना शुरु किया— "अरे बदमाशो, इस कैदी को अकेला छोड़ कर कहां भागे जारहे हो।" परन्तु किसी ने भी उसकी इस बात का उत्तर नहीं दिया। हाँ, वह सिपाही जो बैरक की ओर से भागा हुआ आया था उसके पास आकर बोला— "चलो, कैदी पर हम दोनों ही पहरा दें।" दड़ियल बिना आना कानी किए वापिस चला आया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरपञ्च भी कौतुहल से अग्नि की उन प्रचण्ड लपटों की ओर देख रहा था। इसी समय उसे आवाज़ आई— "सरपञ्च !"

सरपञ्च ने सहसा मुड़ कर देखा कि दड़ियल पिंजरे के दरवाज़े पर खड़ा होकर उसे बुला रहा है, दरवाज़ा खुला हुवा है। कुछ क्षण तक आश्चर्य से दड़ियल की ओर देखते रह कर सरपञ्च सहसा बोल उठा— "क्रोपेट !" तत्क्षण दोनों साथी गले मिल गये।

समय अधिक नहीं था। दड़ियल ने अपनी दोहरी पोशाक उतार कर सरपञ्च को पहनने को दी। सरपञ्च के पुराने कपड़ों को इस प्रकार डाल दिया गया जिस से कि वे लेटे हुए आदमी के समान मालूम हों। इस के बाद बन्दूकें लेकर तीनों सिपाही किले के फाटक की ओर चले।

तीनों सिपाही एक साथ कदम मिलाते हुए किले के फाटक पर पहुंचे। सरपञ्च की दांयी ओर क्रोपेट चल रहा था, और बाँयी ओर बैठक की ओर से भाग कर आया हुवा सिपाही। किले के फाटक पर भी इस समय केवल दो तीन सिपाही ही बचे थे। शेष सब अग्निकाण्ड का दृश्य देखने के लिये भाग गये थे। ये सब भी फाटक से १०, १२ गज़ दूर धूप में बैठ कर सम्भवतः आग ही के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे। इस समय दड़ियल को दो अन्य सिपाहियों के साथ फाटक से बाहर जाता देख कर एक पहरेदार ने पूछा— "क्यों दड़ियल, कहाँ जारहे हो ?"

दड़ियल ने ठहरे बिना ही उत्तर दिया— "अरे यार, इतने दिनों बाद आज जाकर एक दिलचस्प तमाशा देखने को मिला परन्तु शोक, इस समय भी पर हमें चौकी पर इस मामले की इत्तला देने के लिये भेजा जा रहा है।"

पहरेदार एक बार धीरे से हँस कर फिर बातचीत में लग गए। किले से बाहर आकर तीनों व्यक्ति एक बार फिर गले मिले। क्रोपेट ने सरपञ्च को बतलाया कि वह किस प्रकार नकली दाढ़ी लगाकर अपने इस साथी के साथ किले के पहरेदारों में शामिल हुवा। और किस प्रकार ये दोनों व्यक्ति मौका पाकर स्वयं आग लगा कर उसे छुड़ाने में सफल हो सके।

तीनों व्यक्ति दो तीन घण्टों में बड़ी २ चट्टानों से पूर्ण एक जंगल में जाकर छिप गए।

(५)

क्रान्तिकारी दल के नेताओं की गुप्त बैठक होरही थी। सरपञ्च अपनी ऊँची कुरसी पर विराजमान था; क्रोपेट को भी सरपञ्च के बराबर ही ऊँचा आसन दिया गया था। शेष पांचों सरदार और "नायक" की उपाधी से विभूषित होकर बैरक वाला सिपाही मञ्च पर बैठे हुए थे। आज एक बड़े गम्भीर विषय पर विचार हो रहा था। सहसा सरपञ्च ने एक फोटो निकाला। फोटो के नीचे लिखा था— (महाशय लीमैन.S. P. के नागराध्यक्ष)

सरपञ्च ने धीरे से कहा— "आगामी १० मई की रात को इस व्यक्ति की हत्या की जायगी।" क्रोपेट फोटो देखते ही चौंक पड़ा— मानों उसे अतीत काल की कोई पुरानी स्मृति याद हो आई। परन्तु शीघ्र ही उसने अपने को सँभाल कर धीरे से कहा— "ओफ़, मोशियो लीमैन तो बहुत ही भला प्राणी है; उसका वध करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी है ?"

सरपञ्च ने तेज़ निगाह से क्रोपेट की ओर देख कर क्रोधपूर्ण स्वर में कहा— "चुप रहो !"

क्रोपेट समझ गया कि उससे अपराध हुआ है। लार्ड मेयर का वध कौन व्यक्ति करे इसके लिये पर्चियाँ डाली गईं; भाग्यवश इस के लिये क्रोपेट का नाम ही आया। क्रोपेट के चेहरे का रंग उतर गया। उसकी आंखे नीचे की ओर झुक गईं, इसी समय सरपञ्च ने क्रोपेट की ओर फोटो बढ़ा कर कहा— "क्रोपेट, तैयार हो ?"

क्रोपेट ने काँपते हुए हाथों से फोटो ले लिया। सरपञ्च के साथ सब सरदारों ने खड़े हो कर उसकी सफलता के लिये ईश्वर से प्रार्थना की।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६)

रात का समय था। चाँदनी रात थी। लार्ड मेयर के बँगले के अहाते की फूल पत्तियाँ चाँदनी में चमक रही थीं। इसी समय क्रोपेट ने काँपते हुए इस अहाते में प्रवेश किया। उसने देखा कि वह ओक का गरिमाशाली वृक्ष अब तक उसी प्रकार सिर ऊँचा किये खड़ा है— सहसा उसे आठ साल पुरानी घटनाएँ स्मरण हो आईं। ओफ़, वह कितनी बार घण्टों तक निरन्तर इस वृक्ष के नीचे बैठ कर 'उस' से बातें करता रहा है। उस समय क्रोपेट १८, २० बरस का लड़का था और वह १३, १४ बरस की बालिका थी। क्रोपेट क्षण भर तक खड़ा रह कर उस अतीत स्मृतियों से पूर्ण ओक वृक्ष की ओर देखता रहा। इसी समय सहसा मानों वह चौंक पड़ा—उसे अपना कठिन कर्तव्य याद आया। एक लम्बे श्वास के साथ इन सब कोमल और मधुर भावों को एक साथ परे ढकेल कर वह पिस्तौल पर हाथ रक्खे हुए बरामदे में जा पहुंचा।

लार्ड मेयर मोशिये लीमैन एक बहुत ही लब्धप्रतिष्ठ, धनी-मानी और सरल प्रकृति के मनुष्य थे। वर्षों से पोटर्सवर्ग की जनता एक बहुत बड़े बहुमत से उन्हें लार्ड मेयर चुनती आरही थी। लार्ड मेयर का बँगला शहर से बाहर था। वह बहुत ही उदार और दयावान थे। अतः उन्हें किसी शत्रु का भय नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का बरसों हुए देहान्त हो चुका था। उन की आत्मीया, उन की एक मात्र सन्तान, एक कन्या थी। इस कन्या का नाम रोज़ेलिन था। यह कन्या अपूर्व सुन्दरी और दिव्य गुणों से युक्त थी। क्रोपेट के पिता से मोशिये लीमैन की घनिष्ट मित्रता थी। वह प्रायः बालक क्रोपेट को साथ लेकर उन से मिलने के लिये उन के बँगले पर आया करते थे। क्रोपेट साधु स्वभाव, सुन्दर बालक था, और रोज़ेलिन देवकन्या के समान सुन्दर और शान्त-स्वभाव बालिका थी। दोनों बालक सायंकाल के समय मोशिये लीमैन के बँगले के अहाते में खेला करते थे;- एक दूसरे को प्रेम के साथ अपना सुख दुख सुनाया करते थे। इसी प्रकार निरन्तर बरसों तक दोनों का यह निष्कलङ्क और पवित्र प्रेम वृद्धि पाता रहा था। परन्तु पीछे से क्रोपेट देश भक्ति के उन्नत भावों से भर कर मातृ-भूमि को ज़ारशाही के अत्याचार-पूर्ण बन्धनों से मुक्त करने के लिये क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गया था।

क्रान्तिकारी दल का सदस्य बन कर उस ने सभी सांसारिक अभिलाषाओं और महत्वाकाङ्क्षाओं को भुला देने का यत्न किया था। अपने उच्च स्वभाव और प्रखर प्रतिभा के कारण इस "तप" में वह पर्याप्त अंश तक सफल भी हो गया था; परन्तु फिर भी कभी कभी उसे रोज़ेलिन की मधुर स्मृति हो ही आया करती थी। कभी २ वह स्वप्न लेता था कि वह अपनी मातृ-भूमि को स्वतन्त्र करने में सफल होकर रोज़ेलिन द्वारा वरमाला प्राप्त कर चुका है। इसे उसके हृदय की निर्बलता कहा जासकता है परन्तु उसकी यह निर्बलता स्वप्न में भी उसे मातृ-भूमि की सेवा से क्षण भर के लिये भी च्युत न कर सकती थी। जब उसे मोशिये लीमैन का वध करने की आज्ञा दी गई तब वह इसी कारण कांप उठा था। उस समय वह इस कार्य से इन्कार भी करने लगा था, परन्तु पीछे से कर्तव्य की प्रेरणा से उसने सिर झुका कर इस कठिन कर्तव्यको स्वीकार कर लिया था। अस्तु-क्रोपेट बरामदे में चला गया। उसने दरवाजों के बीच से देखा कि बँगले के हौल में एक गैस का बड़ा हण्डा जल रहा है, हौल में बिल्कुल सन्नाटा है, वहाँ कोई भी व्यक्ति नहीं है। क्रोपेट मोशिये लीमैन की बैठक जानता था- बैठक इस हाल से काफी दूर, तीन कमरे छोड़ कर थी। क्रोपेट पिस्तौल हाथ में लेकर लड़खड़ाती हूई टाँगों के साथ हाल में प्रविष्ट हुवा। लकवे के बीमार की तरह उसका सारा शरीर काँप रहा था। क्रोपेट के माथे से पसीने की धाराएं छूट रही थीं, उसका मुख लाल हो रहा था – हृदय बड़े वेग से धड़क रहा था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अवस्था में क्रोपेट का चेहरा और भी मनोहर हो उठा था।

क्रोपेट पिस्तौल हाथ में लिये हुए हौल में जाकर खड़ा हो गया। दीवार के पास खड़ा हो कर वह चारों ओर घबराई हुई दृष्टि से देखने लगा; कई मिनट तक वह इसी प्रकार खड़ा रहा, तब उसकी घबराहट कुछ कम हो चली।

उफ, यह क्या? सामने के दरवाजे से स्वर्गीय देवी समान सुन्दरी रोज़ेलिन आकर गैस के हण्डे के नीचे खड़ी हो गई। उसके सिर पर कोई आवरण नहीं था। क्रोपेट के शरीर में मानो बिजली घूम गई। उस ने शीघ्रता से पिस्तौल जेब में डाल लिया। रोज़ेलिन क्रोपेट को अचानक देख कर चौंक उठी। कुछ क्षण तक स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखते रह कर वह उन्मत्त की तरह क्रोपेट की तरफ बढ़ी। उसके मुंह से निकला— "ओह, क्रोपेट! तुम इतने वर्षों बाद,— इस समय,— इस अवस्था में,— यहां!"

क्रोपेट का गला भर आया, उसके मुंह से इतना ही निकला— "ओह! रोज़!" क्रोपेट के हृदय में भयङ्कर तूफान चल रहा था। वह रोज़ेलिन को इतना निकट आया देख कर एक कदम पीछे तो हटा, परन्तु इसके बाद ही उसने रोज़ का हाथ पकड़ लिया। रोज़ेलिन किङ्कर्तव्य विमूढ़ होरही थी-उसने लड़खड़ाती आवाज़में पूछा— "प्रियतम क्रोपेट, यह क्या!"

क्रोपेट मूर्च्छित हो रहा था। परन्तु वह बेहोश होकर गिरा नहीं- सम्भल गया। उसने रोज़ का हाथ चूम कर कहा— "प्रियतम रोज़! बिदाई!"

यह कह कर वह अपना हाथ छुड़ा कर बाहर की ओर भागा। रोज़ेलिन ने भी शीघ्रता से उसी ओर बढ़कर आवाज़ दी-- "क्रोपेट, प्रियतम क्रोपेट!"

परन्तु उसकी चीखती हुई पुकार का किसी ने उत्तर नहीं दिया। रोज़ेलिन ने बरामदे में आकर चाँदनी से ढके हुए बगीचे की ओर देखा। उसने देखा कि क्रोपेट एक बार ओक के उस पवित्र वृक्ष को चूम कर बाहर की ओर भाग गया।

इसी समय मो० लीमैन ने अपनी बैरक से आकर पूछा-"रोज़, क्या है?" बालिका हतज्ञान होकर बिना कोई उत्तर दिए अपने पिता का हाथ पकड़ कर अन्दर चली गई।

(७)

सरपञ्च के सामने क्रोपेट सिर झुका कर खड़ा हुआ था। इसी एक रात में क्रोपेट का सुन्दर और भरा हुआ शरीर एक दम निस्तेज और क्षीण होगया था। सरपञ्च की आंखों में आँसू भरे हुए थे। छहों सरदार और नायक सिर झुका कर बैठे हुए थे। पूरा मातम छाया हुवा था।

बहुत देर तक यही हाल रहा, अन्त में क्रोपेट धीरे २ बोला— "मैं संघ की आज्ञानुकार्य नहीं कर सका हूं-कार्य करने में असमर्थ रहा हूं। अतः नियमानुसार मुझे प्राणदण्ड दीजिये।"

सरपञ्च ने आंखों पर रूमाल रख कर गम्भीरता से कहा— "अगर संघ में प्रविष्ट करते समय तुम्हारे साथ रियायत करने की वह भूल न की जाती तो शायद आज यह बुरा दिन न देखना पड़ता।"

क्रोपेट ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सिर झुका कर हाथ जोड़ कर ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था।

इसी समय पिस्तौल की भयंकर आवाज़ हुई; देवोपम, कर्मवीर क्रोपेट का शरीर चेतनारहित होकर गिर पड़ा—

सरपञ्च ने नियमानुसार क्रोपेट को दण्ड तो दिया परन्तु वह अपने प्राणदाता के बध से उत्पन्न हुए २ दुख को सह नहीं सका। अगले ही क्षण सरपञ्च ने पिस्तौल का मुंह मोड़ कर स्वयं भी आत्मघात कर लिया।

सरपञ्च के कथनानुसार एक ज़रा सी भूल का इतना भयंकर परिणाम हुवा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद और विकासवाद

(ले० प्रो० विश्वनाथ विद्यालङ्कार)

(१)

विकासवाद से प्रायः सभी पठित लोग परिचित हैं। इस की विशेष व्याख्या की इस लेख में आवश्यकता नहीं। इस लेख में विकासवाद के केवल एक सिद्धान्त को दर्शा कर उस को वैदिक कसौटी पर परख करनी है। विकाशवाद का वह सिद्धान्त यह है कि संसार में शनैः २ विज्ञान, धर्म, आचार और नीति की उन्नति होती जा रही है। अतः इस सिद्धान्त का एक परिणाम यह भी निकलता है कि वर्त्तमान समय से जो समय अति-प्राचीन है वह वर्त्तमान समय की अपेक्षा अति असभ्य भी है। अर्थात् वर्त्तमान समय के सदृश विज्ञान, धर्म, आचार और नीति के विचार इस से अति प्राचीन समय में न तो थे हो और न होने सम्भव ही थे।

(२)

इसी कल्पना के अनुसार पाश्चात्य विद्वान् तथा विकासवादी भारतीय विद्वान् भी वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में कोई उच्च विचार नहीं रखते। यह ठीक ही है कि वेद संसार के समग्र साहित्य में अति प्राचीन ग्रन्थ हैं। और इसी कारण से विकासवादियों की दृष्टि में वेद का उतना महत्त्व नहीं। विकासवादी यदि वेद की प्रशंसा करते हैं तो इस दृष्टि से कि वेद आदि सभ्यता के विकाश के दृष्टान्तों का ख़ज़ाना है, न कि इस दृष्टि से कि वेद में विज्ञान, धर्म, आचार और नीति के उच्च सिद्धान्त हैं। इसी लिये पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों के प्रचलित स्वरूप के पौर्वापर्य के सम्बन्ध में भी तरह २ के विचार पेश किये हैं, ताकि उन की कल्पना के फैलाव को उन्हें और क्षेत्र मिल सके। चाहिये तो यह था कि वेदों के स्वरूप के वर्त्तमान तथा चिरप्रचलित पौर्वापर्य को ठीक मान कर वे विकासवादी अपने विकास सिद्धान्त के स्वरूप में उचित परिवर्तन करते। परन्तु इस उचित परिवर्तन को न करते हुए उन विकासवादियों ने— विकाशवाद के प्रचलित सिद्धान्तों में अतिशय विश्वास और श्रद्धा से प्रेरित हो कर— वेदों के स्वरूप के प्राचीन काल से आए हुए पौर्वापर्य में, अपने सिद्धान्त के अनुसार उचित परिवर्तन कर लेना आवश्यक समझा है ताकि वेदों में से विकासवाद की जड़ की कुठारता नष्ट भ्रष्ट हो सके। इस लेख में मैं यह दर्शाने की कोशिश नहीं करूँगा कि वैदिक स्वरूप का प्रचलित पौर्वापर्य ठीक है या विकाशवादियों द्वारा दर्शाया गया उस का पौर्वापर्य। अपितु, अभ्युपगमवाद द्वारा यह मान कर कि चलो! विकासवादियों द्वारा निर्दिष्ट वेदों के स्वरूप का पौर्वापर्य ही ठीक सही, तो भी विकासवाद के प्रति वेदनिष्ठकुठारता दूर नहीं हुई— इतना ही कतिपय दृष्टान्तों से मैं इस लेख में दर्शाऊँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३

इसी विकासवाद की कल्पना के अनुसार पाश्चात्य विद्वान् यह भी मानते हैं कि वैदिक समय में लेखन-कला का अभाव था। कई विकासवादी तो यह भी कहने का साहस करते हैं कि पाणिनी को भी लेखनकला का परिज्ञान नहीं था। मेरी यह निश्चित धारणा है कि पाणिनी का अथर्ववेद के साथ परिचय अवश्य था, और पाणिनी के समय में अथर्ववेद को अन्य वेदों की समकक्षता भी प्राप्त हो चुकी थी। (आर्य दृष्टि में तो चारों वेद अनादि और अत एव एक ही काल के हैं)।

पाणिनी आचार्य से पूर्व काल के अथर्ववेद के १९ वें काण्ड में हमें तीन मंत्र मिलते हैं। जिन से लेखन-कला का प्रमाण मिलता है। वे मन्त्र निम्न लिखित हैं:—

(१) अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया। ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे। अथर्व० १९। ६८॥

अर्थः— मैं बुद्धि द्वारा अव्यापक और व्यापक के भेद को खोलता हूं। उन के भेद को जानने के लिये, वेद को उठा कर, हम कर्मों को करते हैं।

(२) स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्॥ अथर्व० १९। ७१॥

अर्थः— मैंने अभीष्ट फलदायिनी वेदमाता का अध्ययन कर लिया है, जो कि द्विजों को पवित्र करने वाली है। उस वेद माता के यश का विस्तार संसार में करो।

यस्मात्कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्नन्तरव दध्म एनम्। कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण तेन मा देवास्तपसावतेह॥ अथर्व० १९। ७२॥

अर्थः— जिस पेटी में से वेद को हम ने उठाया था, उसी पेटी के भीतर इस वेद को हम रख देते हैं। क्योंकि वेद द्वारा जो हम ने इष्ट सम्पादन करना था वह कर लिया। हे देव लोगो! तुम वेद की शक्ति द्वारा मेरी इस संसार में रक्षा करो।

इन तीन मन्त्रों के अर्थों पर कुछ विचार करना चाहिये। पहले मन्त्र में "वेद को उठाने" का वर्णन है। दूसरे मन्त्र में यह कहा है कि मैंने वेद का स्वाध्याय कर लिया है। तीसरे मन्त्र में यह कहा है वेद को, स्वाध्याय के लिये, जिस "कोश अर्थात् पेटी में से हमने निकाला था, उसी कोश अर्थात् पेटी में अब स्वाध्याय के पश्चात् हम इस वेद को रख देते हैं'। इस प्रकार "वेद को उठाना" "वेद को पेटी में से निकालना" तथा "उसे पुनः पेटी में डालना" —ये तीन भाव तभी उपपन्न हो सकते हैं जब कि हम यह मान लें कि अथर्ववेद के समय में वेद लिखित रूप में अवश्य थे। इस कल्पना के बिना इन तीन भावों का उपपादन सर्वथा असम्भव है। अतः लेखन-कला की दृष्टि से वैदिक सभ्यता वर्त्तमान सभ्यता की अपेक्षा नीची प्रतीत नहीं होती। अतः लेखन कला का यह नवीन वैदिक प्रमाण विकास-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद की कल्पना के मूल पर कुठार-पात सदृश है। कई विद्वान् इन मन्त्रों में वर्णित वेद का अर्थ "झाड़ू" लेते हैं। यदि इन मन्त्रों में वेद का अर्थ झाड़ू ले लिया जाय तो ऊपर के तीन भाव झाड़ू में उपपन्न हो तो सकते हैं, परन्तु तीनों मन्त्रों के समुदित भाव, झाड़ू के सम्बन्ध में अतीव असम्बद्ध, निरर्गल, तथा व्यर्थ प्रतीत होते हैं। क्योंकि न तो झाड़ू द्वारा "अव्यापक और व्यापक के परस्पर भेद की समस्या ही हल हो सकती है, और न उसे वेदमाता शब्द से ही पुकार सकते हैं, तथा न वह झाड़ू द्विजों को पवित्र ही कर सकता है, और न झाड़ू से इष्ट वस्तुओं की सिद्धि ही हो सकती है, तथा न उस झाड़ू के द्वारा देव लोग वेद के स्तावक की रक्षा ही कर सकते हैं"। अतः इन मंत्रों में वेद का अर्थ ऋग्वेद आदि वेद ही हैं न कि झाड़ू।

(४)

विकासवादियों की द्वितीय स्थापना यह है कि असभ्य जातियों में गणना की अवधि कोई उच्च कोटि की नहीं होती। इन असभ्य जातियों में कई तो ५ तक गिन सकते हैं, कई १० तक, कई २० तक, और कई २५ तक। परन्तु वर्त्तमान समय की सभ्य जातियों में गणना की अवधि बहुत उच्च कोटि की है। इस लिये गणना की दृष्टि से भी संसार में अवश्य विकास हुआ है— ऐसा विकासवादी मानते हैं। अब मैं देखना चाहता हूं कि गणना के आधार पर विकासवाद की स्थिति वेदों के सम्बन्ध में किस प्रकार की है। यजुर्वेद के १७ वें अध्याय का दूसरा मन्त्र इस स्थिति के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डालता है, जो कि निम्न लिखित है। यथा :—

इमा मे अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च, दश च शतं च, शतं च सहस्रं च, सहस्रं चायुतं च, अयुतं च नियुतं च, नियुतं च प्रयुतं च, अर्बुदं च, न्यर्बुदं च, समुद्रश्च, मध्यं च, अन्तश्च, परार्द्धश्चैता म अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिंल्लोके

यजु० ॥ १७ । २ ॥

इस मन्त्र में एक से लेकर दस २ की वृद्धि के क्रम से संख्या की परिगणना है। इस गणना में कई प्रक्रम, वर्त्तमान संस्कृत साहित्य की गणना के अनुसार, छुटे हुए (Understood) प्रतीत होते हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि वैदिक साहित्य के अनुसार गणना की दशोत्तर वृद्धि का यह ही प्रक्रम है जो कि यजुर्वेद के ऊपर के मन्त्र में दर्शाया गया है, तो भी यह गणना आने तई इतनी उच्च अवधि तक गिनाई गई है कि यह विकासवादियों की "गणना सम्बन्धी कल्पना" का समुचित रूप में खण्डन कर सकती है। ऊपर के मंत्र में की दशोत्तरवृद्धि की गणना निम्नरूप से है। यथाः—

(१) एकम् (२) दश (३) शतम् (४) सहस्रम् (५) अयुतम् (६) नियुतम् (७) प्रयुतम् (८) अर्बुदम् (९) न्यर्बुदम् (१०) समुद्रः (११)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यम् (१२) अन्तः (१३) परार्द्धः ।

इस प्रकार यह संख्या एक से शुरु होकर १२ बिन्दुओं में समाप्त की गई है । जो १००००००००००००० अर्थात् दस खर्ब तक है । विकासवादियों की दृष्टि से, यजुर्वेद की इस गणना का, विकासवाद के सिद्धान्त के अनुकूल उपपादन असम्भव है । या तो उन्हें यह मन्त्र वर्त्तमान काल का मानना पड़ेगा और या उन्हें गणना के सम्बन्ध में अपनी विकास वाद की कल्पना छोड़नी पड़ेगी ।

(५)

इस सम्बन्ध में एक और बात भी विचारणीय है । वह यह कि हम देखते हैं कि इतनी ऊँची गणना का सम्बन्ध उच्चविज्ञान तथा ज्योतिः शास्त्र के साथ है । व्यवहारशास्त्र में इतनी बड़ी संख्या की प्रायः आवश्यकता नहीं होती । अतः गणना की इस उच्चतम अवधि की सत्ता में यह मान लेना कि वेदों में उच्चविज्ञान तथा ज्योतिः शास्त्र सम्बन्धी उच्चज्ञान भी अवश्य होगा— कोई अनुपपन्न प्रतीत नहीं होता ।

(६)

विकासवादियों की एक और भी कल्पना है वह यह कि "असभ्य या अविकसित जातियों की भाषा में एक मामूली से भाव (Idea) को दर्शाने के लिये भी बड़े २ शब्दों का प्रयोग किया जाता है । छोटे २ शब्दों द्वारा वे जातियां उस भाव को प्रकाशित नहीं कर सकती जिसे कि वर्त्तमान समय की सभ्य जातियां करती हैं । उदाहरण के रूप में उत्तर अमेरीका के "रिकारी,, और "पौनी" लोगों की भाषा में दिन को "शाकूरूई शारेट" तथा भूत को "ढाहीचकाकुपाइवाह" कहते हैं । इसी प्रकार उन असभ्य वन्य जातियों की भाषा के अन्य शब्द भी, मामूली से मामूली भाव के प्रकाशन के लिये, बड़े लम्बे २ प्रयुक्त होते हैं । परन्तु सभ्य जातियों की भाषाओं में बड़े तथा संकीर्ण भावों को भी छोटे २ शब्दों में प्रकाशित किया जा सकता है । अतः इस वर्णन से यह सिद्धान्त निकलता है कि "जिन जातियों की भाषा में भावप्रकाशक शब्द छोटे २ हैं वे उसी अनुपात से अधिकाधिक सभ्य भी हैं" । अ इस कसौटी पर वैदिक शब्दों का परख करना चाहता हूं । वेदों के शब्द जितने संक्षिप्त हैं उतने ही भाव में विशाल तथा गम्भीर भी हैं । इस का अनुभव कि वैदिक शब्द भाव में गम्भीर तथा स्वरूप में संक्षिप्त हैं— प्रत्येक वैदिक स्वाध्यायशील को है । इस के सम्बन्ध में विशेष उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं ।

(क्रमशः)

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य की आलोचना ।

(लेखक—ग्रन्थलेखक श्री पं० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार)

गतवर्ष श्री चमूपति जी एम. ए. ने यमयमी सूक्त पर एक विशेष लेख आर्य में प्रकाशित किया । मैंने उस का विस्तृत समालोचना की,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कि 'अलङ्कार' और 'वैदिक धर्म' दोनों में प्रकाशित हुई। श्री चमूपति जी ने उस का प्रत्युत्तर दिया और मेरे बनाए हुए वेदार्थदीपक निरुक्त भाष्य की आलोचना प्रारम्भ की। इसके ५ लेख क्रमशः आर्य में प्रकाशित हुए। मैंने पहले यही उचित समझा था कि इस विशेष लेख माला का कुछ भी उत्तर न देना ठीक होगा। वेद के प्रेमी सज्जन उपर्युक्त वेदार्थ-दीपक को पढ़कर स्वयमेव सन्तुष्ट हो जावेंगे। परन्तु जब यह देखा गया कि आर्यपुरुषों में वेद के लिए अभी इतनी प्रगाढ़ रुचि उत्पन्न नहीं हुई कि वे स्वयं वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करके सत्यासत्य का निर्णय करें, तो बढ़ती हुई भ्रान्ति को दूर करने के लिये मैंने श्री चमूपति जी की आलोचना की परीक्षा करना उचित समझा और तदनुसार पहला लेख आर्य में प्रकाशित करने के लिए श्री चमूपति जी सम्पादक आर्य के पास भेजा। उस आलोचन परीक्षा के आधार पर संपादक जी ने छठा लेख और लिखा और अपनी लेखमाला समाप्त की। और मेरा लेख पहुंचने के पश्चात् आर्य के तीन अंङ्क प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु उक्त संपादक जी ने उसे अपने आर्य में स्थान नहीं दिया। आलोचक संपादकों को विशेष उदार होना चाहिए, यही न्याय्य मार्ग है। मैं नहीं उचित समझता कि आर्य में प्रकाशित हुई निरुक्त-भाष्य-समालोचना-माला की परीक्षा किसी अन्य पत्र में उपस्थित की जावे। अतः बाधित होकर मैं इस परीक्षण को अब प्रारम्भ नहीं करूंगा।

सम्पादकीय विचार

२६ जुलाई

आर्य समाज के भावी इतिहास में २६ जुलाई का दिन चिर स्मरणीय रहेगा। आर्य समाज ने एक जीती-जागती शक्ति बनना है या नहीं; इसका निर्णय इस दिन होगा। जो आन्दोलन राजकीय शक्ति के दमन का मुकाबला नहीं करते; वे नष्ट होजाते हैं। उनका नामो-निशान भी इतिहास में नहीं बचता। पर जो दमनकारियों का सामना करने को तत्पर होते हैं, वे बार २ असफल होकर भी अंत में विजयी होते हैं। ब्रिटिश सरकार आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारों को कुचल रही है। नगर कीर्तन समाज के वार्षिकोत्सव का आवश्यक अंग है। उसे स्वतन्त्रता पूर्वक करना आर्यों का धार्मिक अधिकार है। पर अब सरकार इसमें अनेक बाधायें डाल रही है। देहरादून, रोहतक आदि बहुत से जिलों में नगर कीर्तन बन्द किये गये हैं। इस समय आर्य-समाज का यही कर्तव्य है कि हिम्मत के साथ सरकार का मुकाबला करे। जिस किसी भी तरह सम्भव हो, अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारों की रक्षा करे। इसी लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है, कि २६ जुलाई के दिन सम्पूर्ण भारत में आर्य-समाज की ओर से सभायें की जावें, जिनमें कि सरकार की नीति के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकृत हों। विरोध में प्रस्तावों का स्वीकृत करना अपने असन्तोष को प्रगट करने का एक साधन है। इस लिये पहले उसका अवलम्बन करना अनुचित नहीं है। पर ख्याल रखना चाहिये कि प्रस्ताव स्वीकृत कर देने से कुछ नहीं बन सकता। ब्रिटिश सरकार शक्ति से डरती है, प्रस्तावों से नहीं। इस लिये २६ जुलाई के दिन प्रस्ताव स्वीकृत करने के साथ साथ यह भी निश्चय करना चाहिये कि अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये किन क्रियात्मक उपायों का प्रयोग किया जाय। सरकार को पराजित करने का सत्याग्रह से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है। इसी को प्रयोग करने का निश्चय २६ जुलाई को करना चाहिये। स्थान २ पर उन स्वयं सेवकों का संगठन होना चाहिये, जो सत्याग्रह करने को तैयार हों। यदि यह हो सका, तो निस्सन्देह आर्य समाज का भविष्य बहुत उज्वल है। उन्नतिशालि समाज अत्याचार और दमन के सम्मुख सिर नहीं झुकाते। आर्य समाज अन्य सम्प्रदायों और विरोधी शक्तियों के साथ बहुत युद्ध कर चुका है, इसमें उसे सफलता भी हुई है। हमें विश्वास है कि यह अनुभवी योद्धा सरकार को भी पराजित कर सकेगा।

मुगल काल में हिन्दू मुसलिम समस्या

आधुनिक हिंदू-मुसलिम फ़िसादों को देख कर बहुत से लोगों को यह विश्वास हो गया है कि ये दोनों जातियां (या सम्प्रदाय) परस्पर कभी मिल नहीं सकती। परन्तु वर्तमान हिन्दू-मुसलिम झगड़े भारतीय सरकार की भेदनीति के परिणाम हैं। सरकार दोनों सम्प्रदायों को लड़ा भी सकती है और मिला भी सकती है। यह उस की नीति पर आश्रित है। अब से कई सदी पूर्व भारत के मुगल बादशाहों ने इस बात का अनुभव किया था कि अपने साम्राज्य की स्थिरता के लिये दोनों सम्प्रदायों को मिला कर रखना अनिवार्य है। मुगलों ने भारत का शासन अफ़गानों को जीत कर प्राप्त किया था। उस समय के अफ़गान और भारतीय मुसलमान स्वाभाविक रूप से मुगल साम्राज्य के विरोधी थे। अतः मुगल बादशाह उन के आश्रय पर शासन न कर सकते थे। इसी लिये अकबर ने अपने शासन का आधार मुसलमानों को न बना कर भारतीय जनता को बनाया था। अकबर को हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों पर अधिक ज्यादतियां करनी पड़ी थीं। अकबर की इस नीति का अनुसरण जहांगीर और शाहजहाँ ने भी किया। इसीलिये मुगल साम्राज्य एक शताब्दि तक किसी विरोध और बाधा के बिना निरन्तर उन्नति करता गया। सब से पूर्व औरङ्गजेब ने इस नीति का उलङ्घन किया। इसी लिये उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समय मुगल साम्राज्य का अधःपतन प्रारम्भ हो गया। औरङ्गजेब के मजबूत शासन के हटते ही साम्राज्य टुकड़े २ हो गया।

मुगलों ने शुरु से ही इस सहिष्णुता और मेल की नीति का अनुसरण किया था। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने भी इसका ही अवलंबन किया था। यह बात उसके एक पत्र द्वारा अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है। पत्र उसने अपने लड़के हुमायूं को लिखा था। इसे प्रकाशित करने का श्रेय गुरुकुल के भूतपूर्व इतिहासोपाध्याय डा० बालकृष्ण जी एम. ए; पी. एच. डी. को है। हम पत्र को यहाँ उद्धृत करते हैं—

"ज़हीर-उद्दीन महम्मद बादशाह गाज़ी का गुप्त मृत्युपत्र, राजपुत्र नसीर उद्दीन मुहम्मद हुमायूं के नाम-जिसे खुदा ज़िन्दगी बख्शे—सल्तनत की मजबूती के लिये लिखा हुआ।

ऐ बेटे! हिन्दुस्तान की सल्तनत मुख्तलीफ़ मज़हबों से भरी हुई है। खुदा का शुक्र है कि उसने तुझे उस की बादशाही बख्शी है। तुझ पर फर्ज़ है कि अपने दिल के पर्दे से सब तरह का मजहबी तअस्सुब धो डाल। हर मज़हब के कानून से इन्साफ कर। खास कर गौ की कुरबानी से बाज आ जिससे तू लोगों के दिल पर काबिज़ हो सकता है और इस मुल्क की रिआया तुझ से वफादारी से बँध जायगी।

किसी फिर्के के मन्दर को मत तोड़ जो कि हुकुमत के कानून का पाबंद हो। इन्साफ इस तरह कर कि बादशाह से रियाया और रिआया से बादशाह खुश रहे। उपकार की तलवार से इस्लाम का काम ज्यादा फतेयाब होगा बनिस्बत जुल्म की तलवार के।

शिया और सुन्नियों के फर्क को नज़रन्दाज़ कर, वर्ना इस्लाम की कमज़ोरी जाहिर हो जायगी।

और मुख्तलिफ विश्वासों की रिआया को चार तत्वों के अनुसार (जिनसे यह इन्सानी जिस्म बना हुआ है) एक रस करदे, जिससे बादशाहत का जिस्म तमाम बीमारियों से महफूज़ रहेगा। खुश किस्मत तैमूर का याददाश्त सदा तेरे आँखों के सामने रहे जिससे तू हुकूमत के काम में अनुभवी बन सके।" इस मृत्युपत्र पर तारीख १ जमादिल अव्वल सन् ३६५ हिज्री लिखा हुआ है।

गुरुकुल समाचार

ऋतु—ऋतु सुहावनी है। आकाश काली घटाओंसे घिरा रहता है। दिशायें गंगा के कल कल नाद और बादलों के गम्भीर घोष से गूंज रही हैं। भूमि ने हरी मखमल की चादर ओढ़ ली है। वृक्ष स्नान कर लहलहा उठे हैं। सूखे वृक्षों में नई २ कोपलियां निकल आईं हैं। गंगा तीव्र वेग से बढ़ रही है। चारों ओर के नालों में भी पूर आगया है। गुरुकुल इस समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक टापू बन गया है। तमेड़ें ही पार जाने का एक मात्र साधन हैं।

विगत सप्ताह ब्र० नारायण को Congestion of Brain हो गया था। अवस्था भयानक होगई थी पर ब्रह्मचारियों की अविश्रान्त सुश्रुषा और डाक्टरोंके अनवरत परिश्रम के कारण अब ब्रह्मचारी पूर्णस्वस्थ है। इस समय एकज़ीमाके बीमारोंके सिवाय और कोई बीमार नहीं है।

मान्य अतिथि महोदय— इस मास दर्शकों का आवागमन जारी रहा। विश्वविद्यालय-व्याख्यान माला के प्रसंग से कलकत्ता विश्व विद्यालय के महायान धर्मके प्रोफेसर श्री किमोरा आए थे। आपके एक सप्ताह भर तक महायान धर्म पर व्याख्यान होते रहे। इसी सप्ताह उपदेशक विद्यालय के आचार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पधारे थे। आप एक सप्ताह तक ठहरे और 'सिक्ख-धर्म' पर व्याख्यान दिया। अभी स्वामी जी की व्याख्यानमाला समाप्त नहीं हुई है। शेष व्याख्यान सम्भवतः शीतऋतु में देंगे।

इसी मास लाहौर के F. C. कालेज के फिलासफी के उपाध्याय वेण्डल एम टॉम्प्स पधारे थे। आपने शिक्षा पर एक व्याख्यान भी देने की कृपा की थी।

कल से श्री स्वामी हरप्रसाद जी पधारे हुए हैं। आपके विश्व विद्यालय व्याख्यान माला में दर्शन और वेद पर व्याख्यान हो रहे हैं।

१२ जुलाई को युगाण्डा के प्रसिद्ध करोड़पति व्यापारी नानजी कालीदास पधारे थे। आप को युगाण्डा का प्रिंस कहा जाता है। आपने एक दिन तक रह कर गुरुकुल के प्रत्येक कार्य का निरीक्षण किया। ब्रह्मचारियों की वक्तृत्व शक्ति और कौशल का प्रदर्शन भी देखा। गतकों की खेलों से खुश होकर आपने इसके शिक्षक श्री बिशनदास जी को पदक देने की इच्छा प्रगट की। आपने अपना आत्म चरित भी कुल वासियों की सभा में सुनाया, जो मनोरञ्जक होते हुए अत्यन्त उपयोगी था।

कुल पिता कुलमें — विगत मास कुलपति श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भी कुलमें पधार ने की कृपा की थी। आपका प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्मचर्य पर व्याख्यान होता रहा। ये व्याख्यान ब्रह्मचारियों के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आपकी उपस्थिति से पूर्ण लाभ उठाने के लिए कुलवासी प्रत्येक मिनट का उपयोग करने से नहीं चूके।

जन्मोत्सव— १२ जुलाई को नव स्नातक पं० प्रियव्रत वि० अ० की अध्यक्षता में संस्कृतोत्साहिनी का जन्मोत्सव समारोह से मनाया गया। ब्रह्मचारियों ने स्वरचित कविताओं और वक्ताओं ने धारा प्रवाही वक्तृताओं द्वारा दिखाया कि ब्रह्मचारियों का संस्कृत के प्रति प्रेम दिनों दिन उत्तरोत्तर गहरा होता जा रहा है। सभा के अन्त में समस्याओं की पूर्ती की गई। प्रत्येक समस्या के लिये ५ मिनट समय था। कवियों ने अपनी प्रतिभा का चमत्कार भली प्रकार दिखाया। सांयकाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहभोज के अनन्तर कविसम्मेलन हुआ जिस में प्राचीन कवियों की कविताओं की चाशनी चखाने का यत्न किया गया था।

गुरुकुलीय राष्ट्र प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन अत्यन्त निकट आगया है, ब्रह्मचारी गण इसकी सफलता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं इस अवसर पर बाह्य विद्वानों को भी निमन्त्रित किया गया है।

गुरुकुल की सब से पुरानी सभा साहित्यपरिषद्-जिसकी ओर से प्रति वर्ष वार्षिकोत्सव में सरस्वती सम्मेलन की बैठकें होती हैं--का जन्मोत्सव १९ जुलाई को होगा।

रजत जयन्ती — रजत जयन्ती सम्बन्धी सब उपसमितियां अपना अपना कार्य तेजी से कर रही हैं। रजत जयन्ती की सफलता के लिये सब प्रकार से यत्न किया जा रहा है। सब उपाध्यायों ने अपना अवकाश का समय धन संग्रह को देने के लिये स्वीकार कर लिया है। उपाध्याय महानुभावों ने अपने एक मास की आय भी इस फण्ड में अर्पण करने का निश्चय किया है। हमें निश्चय है यह त्याग की पवित्र भावना आर्य समाज की त्याग की भावना को परिपुष्ट करने में सहायक होगा। अवकाश के समय ब्रह्मचारीगण भी भिक्षा की झोली ले कर निकलेंगे। हमें विश्वास है कि आर्य जनता इन की झोलियों को भरने के लिये कुछ उठा न रखेगी।

परीक्षायें — उपसत्र परीक्षा समाप्त हो गई हैं। षाण्मासिक परीक्षा समीप है। अतः उपाध्यायगण और ब्रह्मचारीगण पढ़ाई में रत हैं। परीक्षा की तिथियां निश्चित नहीं हुईं। शीघ्र ही निश्चित होने वाली हैं।

ग्राहकों से निवेदन

(१) यहाँ से 'अलङ्कार' भली प्रकार पड़ताल करके डाकखाने में भेजे जाते हैं। डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण प्रतिमास कुछ एक ग्राहकों की हमारे पास शिकायत आती है कि उन्हें 'अलङ्कार' नहीं मिला। ऐसे ग्राहक महोदय सदा हमारे प्रबन्ध को ही कोसते हैं। इसमें सब दोष डाक विभाग का है हमारा नहीं। आप अपने डाकखाने से लिखकर पूछिए और फिर वह उत्तर हमारे पास शीघ्र भेज दीजिए, हम मुख्य अफसर के पास इस अप्रबन्ध की रिपोर्ट कर देंगे।

(२) पत्र व्यवहार करते समय प्रत्येक ग्राहक को अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखनी चाहिए। इसके बिना हमारा समय बहुत नष्ट होता है। अतः, हम आगे से ऐसे पत्रों का कुछ उत्तर न देंगे।

चन्द्रमणि-प्रबन्धकर्त्ता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए, अमूल्य ग्रन्थ-रत्न संपूर्ण छप गया

वेद के प्रेमी अवश्य पढ़ें!

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पात्रीरत्न
वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी का बनाया

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़ें। यह यास्क मुनि के प्रसिद्ध 'निरुक्त' का हिन्दी में सरल, सरस तथा सुबोध भाष्य है जो कि दो भागों में समाप्त हुआ है और डाक-व्यय रहित कीमत केवल ७) रुपया है। अनेक सूचीपत्र देकर ग्रन्थ को बहुत अधिक उपादेय बनाया गया है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा एम. ए. पी. एच. डी वाइस-चान्सरल इलाहाबाद युनिवर्सिटी, प्रिन्सिपल गवर्नमैण्ट कालेज काशी, प्रिन्सिपल हिन्दू विश्वविद्यालय काशी, श्री रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० घासीराम जी एम. ए. प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त, श्री सातवलेकर जी संपादक वैदिक धर्म, श्री मा० आत्माराम जी राज्यरत्न बड़ोदा, भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एलएल. बी. वाइस चान्सरल तिलक-विद्यापीठ पूना, इत्यादि प्रसिद्ध महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, और सभी ने वेदप्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। महाभारत में लिखा है कि निरुक्त शास्त्र के प्रचार के बिना वैदिक कर्म-काण्ड लुप्त हो गया था। यदि आप वेद का सच्चे अर्थों में प्रचार करना चाहते हैं, तो इस निरुक्तभाष्य को अवश्य पढ़िए। वेदार्थ करने की कुञ्जी 'निरुक्त' को प्राप्त किए बिना वेद के खज़ाने को पाना केवल स्वप्न देखना है।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्ता 'अलंकार'
डा० गुरुकुल कांगड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य पर अंग्रेज़ी में अपूर्व पुस्तक

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस पुस्तक की भूमिका श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखी है। इस में ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले विविध विषयों पर वैज्ञानिक रीति से भाव-पूर्ण १२ अध्यायों में विचार किया गया है। १६ वर्ष से ऊपर की आयु वाले हरेक अंग्रेज़ी जानने वाले के हाथ में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। २२५ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुनहरी जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ३) । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम हो जायगा कि इस विषय पर ऐसी योग्यता से लिखी हुई पुस्तक आप ने पहले नहीं पढ़ी होगी। खुद पढ़ो और अपने मित्रों को पढ़ने को दो।

'हैण्ड-ट्रेनर'

जिन्हें सुलेख लिखना न आता हो उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू का सुलेख सिखाने का अत्यन्त सरल नया तरीका आविष्कृत हुआ है, इसका नाम 'हैण्ड ट्रेनर' है। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हरेक भाषा के सेट की कीमत अलग अलग दो रुपया।

'बिजली के जेबी लैम्प'

बिजली के जेबी लैम्प पूरे तैयार तीन किस्म के हमारे पास हैं। अत्युत्तम ३); उत्तम २॥); साधारण २)। पहली बैटरी ख़र्च होने पर नई की ज़रूरत हुआ करती है, उसे हम १।) में भेज सकते हैं। डाक का ख़र्चा हम अपना करेंगे।

'किटसन लैम्प'

मुकम्मिल, मय सोलह इञ्च टांकी और सिंगल पम्प का किटसन लैम्प ३०); वही डबल पम्प सहित ३५)। कारबाईड दीवालगीर लैम्प २)।

हम उचित कमीशन मिलने पर बम्बई से मार्केट के भाव पर आप की चीजें ख़रीद कर भेज सकते हैं।

पता—दी शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी, कारनक रोड, बम्बई (२)

तार का पता	पोस्ट बौक्स नं०	टैलीफ़ोन नं०
Linkclip-Bombay	२१३५	२१४८०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदाक़त खुद ब खुद कर देती है शोहरत ज़माने में।
मुनाफ़ा इस क़दर रखिये नमक जितना हो खाने में॥

(१) गंगाविष्णु नैनामृताञ्जनः—यह सफ़ेद सुरमा शिरीष की जड़ में ६ महीने रख कर तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध करके १ साल की लगातार मेहनत के पश्चात् तय्यार किया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह सुरमा आंखों की निम्न बीमारियों में अकसीर साबित हो चुका है—

नेत्रों में ख़ारिश का उठना, रतौंधी, दूर अथवा समीप की वस्तु का साफ़ २ नज़र न आना, धूप में जाते ही आंखों का गरमी से चौंधिया जाना, देर तक किसी वस्तु अथवा पुस्तक की ओर नज़र का न टिकना, आंखों से पानी का गिरना, नज़ले की वजह से आंखों की कमज़ोरी और विशेष करके आजकल के नवयुवकों तथा वृद्धों के लिये यह सुरमा अकसीर साबित हो चुका है। कीमत २) तोला रखी गई है। ३ माशा ।।), ६ माशा १), १ तोला २)

(२) कुक्करों का शर्तिया इलाजः—एक आश्चर्य जनक औषधि। यह कोई शास्त्रीय नुस्खा नहीं है। परन्तु किसी अनुभवी वृद्ध सन्यासी का जादू है। देखने में बिलकुल मामूली खाली बत्तियें नज़र आती हैं परन्तु इसके ४, ५ दिन के इस्तेमाल से ही आपको निहायत फ़ायदेमन्द साबित होंगी—

यह बत्तियाँ आंखों के पुराने से पुराने रोंहें, सुर्खी तथा पड़वाल और पानी के झर २ गिरने के लिये अकसीर है। फ़ायदे इसके अन्य भी हैं परन्तु आप इसकी एक बार परीक्षा करके हमेशा के लिये इसको अपने पास रखना चाहेंगे। सेवन विधि दवाई के साथ भेजी जाती है।

(३) मस्तिष्क पौष्टिकः—विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, क्लर्क और व्याख्याता आदि जिन्हें काम करके काफ़ी देर के लिये आराम की ज़रूरत पड़ती है, उनकी दिमाग़ी ताकत को स्थिर रखनेके लिये यह दवाई अद्वितीय है। कम से कम १५ दिन या १ महीना इसके सेवन करने से आश्चर्य जनक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इससे आपअपने काम को दिल से कर सकेंगे तथा दिमाग़ी ताकत को ज्यादा नहीं खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिये अमृत है। केवल एक बार परीक्षा की ज़रूरत है। १ शीशी १५ दिन के लिये २)

(४) केशाञ्जन खिजाबः—जहां अन्य खिजाबों के लगाने से काली चमड़ी होने के सिवाय बालों की जड़ें कमज़ोर होकर झड़ने लग जाती हैं, वहां इस के सेवन से बाल काफ़ी अरसेके लिये काले तथा ख़ास चमकीले मालूम देते हैं। यह दो चीज़े हैं--एक खुश्क, दूसरी तर। दोनोंको उचित मात्रामें मिला कर ब्रशसे इस्तेमाल करने से बालोंमें ख़ास चमक आती है। १ शीशी १।)

पता—पं० विष्णुदत्त विद्यालंकार, अलंकार आयुर्वेदिक फार्मेसी, कूचा लाजूमल, लुधियाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे दाम में !!!

१. महावीर गेरीवाल्डी—ले०श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। आधा मूल्य॥=

मौडर्न रिव्यू—गेरीवाल्डी का जीवन केवल व्यक्ति का जीवन नहीं परन्तु स्वाधीनता का जीता जागता इतिहास है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त रोचक है—पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी है। हम इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करते हैं।

माधुरी—विशेष महापुरुषों के जीवन चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षाप्रद होते हैं। यह जीवन चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है। भाषा रोचक और मर्मस्पर्शिनी है। नवयुवकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए

श्री शारदा—इसकी भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इस में उपन्यास का सा आनन्द आता है। मनोरञ्जन के साथ २ उपदेश की भी मात्रा रक्खी है। विषय का क्रम भी यथोचित रीति से जमाया गया है। पुस्तक में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख है जो महत्वशालिनी हैं, जिनका ज्ञान सर्वसाधारण को अपेक्षित है। यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी, विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिन्दी साहित्य में अनूठी है। हमारा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें। पुस्तक में इटली के आठ महान् व्यक्तियों के चित्र भी हैं।

२. प्राचीन भारत में स्वराज्य—लेखक—श्री पं० धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार—आधा मूल्य ॥।)

प्रो० विधुभूषण दत्त जी M.A.—हमारे आर्य प्रजासत्तात्मक तथा प्रतिनिधिसत्तात्मक शासन प्रणालियों से अपरिचित न थे, प्रजा ही राजा को चुनती थी इत्यादि बातों को सिद्ध करने के लिये प्रमाणों और उदाहरणों को इकट्ठा करने में लेखक ने सराहनीय परिश्रम किया है। पुस्तक की लेखनशैली मनोरञ्जक है। विचार करने के लिये सभी को इस पुस्तक में बहुत सामग्री प्राप्त हो सकती है।

३. वैदिक विवाह का आदर्श—ले० श्री पं० नन्दकिशोर जी विद्यालंकार—आधा मूल्य ।-)

बाबू भगवान दास जी काशी—विवाह क्या है, किस से, कैसे, किस लिए और कब विवाह करना चाहिए—यह पुस्तक में बतलाया गया है। वैदिक विवाह पद्धति अन्य विवाह पद्धतियों से क्यों श्रेष्ठ है, यह अच्छी तरह बतलाया गया है। इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए।

४. सन्तजीवनी—ले० स्व० श्री गिरिजा कुमार घोष—भारत के प्रसिद्ध महात्माओं-कबीरदास, गुरुनानक, गोस्वामी तुलसीदास आदि के विस्तृत जीवन चरित बड़ी मनोरंजकता से लिखे गए हैं। आधा मूल्य ।)

५. बिखरे हुए फूल—यह पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की बिलकुल नए ढंग का, नए विषयों पर अद्भुत कविताओं का संग्रह है। आधा मूल्य ≡)

मैनेजर—साहित्यपरिषद् पुस्तक भण्डार; गुरुकुल काङ्गड़ी (हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी के भीमसेनी सुरमे की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुंधला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत ≈) पांच रुपया फ़ी तोला

सुधाधारा—इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं, जिससे रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों खरीदें? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाजार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौंता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है।

जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने ।)

नोटः—अन्य दवाइयों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये।

पताः—गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी देहली नं० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा
जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड
८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)
यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २तक ।≈)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा.
बिना जलन और तकलीफ के दादको २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च, १ से २ तक ।≈), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवाको मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।)
पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिये, मुफ्त मिलेगा।
यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।
सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

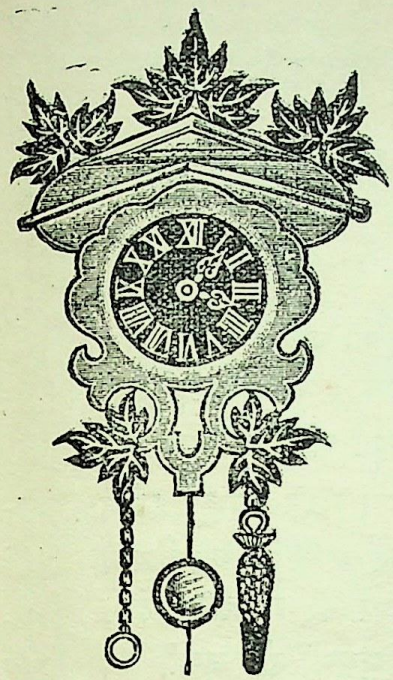

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेज दो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत——केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

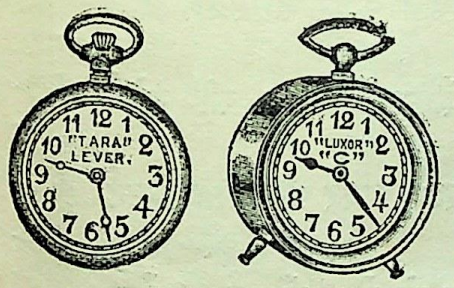

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिये है। जल्दी मंगवाये, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पताः—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

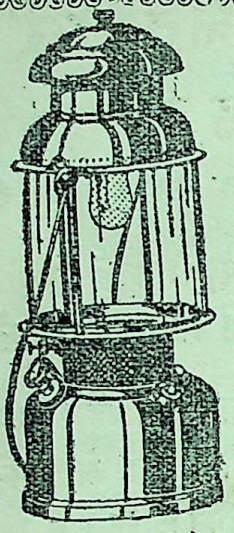

रोशनी

का

भण्डार

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टोर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिये। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती है। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटेन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती। इसमें केरोसीन आयल या पैट्रौल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मेन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का वजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इंच, तथा चिमनी अबरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३॥) फ़ी दर्जन

दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्जन

प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ६) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता:—

रविवर्मा स्टील वर्कस अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत्-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

रूह शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

संस्कृतपाठ माला।

संस्कृत स्वयं सीखने की अत्यन्त सुगम रीति। प्रत्येक भाग का मूल्य ।-)पांच आने है। बारह भागों का इकट्ठा मूल्य ३) तीन रुपये हैं।

यदि आप संस्कृत सीखना चाहते हैं तो इसका अध्ययन कीजिये।

प्रतिदिन आध घंटा अभ्यास करेंगे तो एक वर्ष में आप रामायण महाभारत समझने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल

(औंध जि० सातारा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

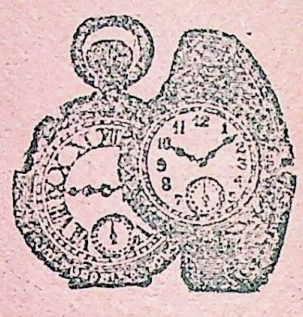

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चौतरफा १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥) १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पता:—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A ;1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

भाद्रपद १९८३ अगस्त १९२६

वर्ष ३] [अङ्क ३

मुख्य संपादक

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ से
१. निर्वेद (कविता)—श्री पं० गयाप्रसाद जी श्रीहरि	६५
२. जागृति का कवि 'भारवि'—श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति	६६
३. सृष्टयुत्पत्ति,—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार	७०
४. फूलो ! (कविता)—कविराज श्री पं० धर्मदत्त जी विद्यालङ्कार वैद्यभूषण	७३
५. शुक्रकालीन राष्ट्रीय आर्य,— श्री आचार्य रामदेव जी	७४
६. भयानक बदला,—श्री पं० आनन्दस्वरूप जी विद्यालंकार	८२
७. "गति"—श्री प्रो० सांभीराम जी एम० एस० ए० एलिजोना अमेरिका	८४
८. "पहिचान"—श्रीयुत गुप्त विद्यालङ्कार	८७
९. "नदी"—कविवर—श्रीमाल	९३
१०. सम्पादकीय	९४
११. गुरुकुल समाचार	९५

ग्राहकों से निवेदन

१. अलंकार पत्र प्रत्येक देशी मास के प्रथम सप्ताह में ग्राहकों के पास पहुंच जावेगा।

२. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे तो पहले डाकघर से पूछना चाहिये यदि पता न चले तो डाक-घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्ता के पास भेज देना चाहिये। यह सूचना देशी मास के तृतीय सप्ताह तक अवश्यमेव पहुंच जानी चाहिये। अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य न दी जावेगी।

३. पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य देनी चाहिये। अन्यथा उत्तर न दिये जाने के हम दोषी न होंगे।

४. पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड या टिकट साथ भेजना चाहिये।

५. पत्र—व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता पूरा और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये।

६. भावी ग्राहकों को चाहिये कि वे रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहकों को और हमें, दोनों को कष्ट होता है। पैसे लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है।

७. नमूने का अंक बिना मूल्य किसी को न भेजा जावेगा।

८. प्रबन्ध सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी (जि० बिजनौर) के पते से करना चाहिये।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क ३] मास, भाद्रपद [पूर्ण संख्या २७

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

* निर्वेद *

(ले० श्री पं० गयाप्रसाद जी, श्रीहरि)

बहुत लह्यो, देख्यो बहुत, सुन्यो बहुत दै कान।
नहीं आन कछु चाहिये, तुम बिन हे भगवान! ॥ १ ॥

* * *

करुणामय! तुम बिन अहो, को जानै जन पीर।
करुणा-पाणि बढ़ाय कै, को पोंछै दृग नीर ॥ २ ॥

* * *

हमैं चलौ लै देश वहि, जहां न तुम बिन कोय।
इन दुखिया अँखियान के, सम्मुख अपनो होय ॥ ३ ॥

* * *

प्रिय के प्रेम-पियूष की, कबौं न मिटि है प्यास।
प्रियतम श्री हरि एक अब, लगी तुम्हीं ते आस ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागृति का कवि—"भारवि"

(१)

(ले०—श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति)

यदि मुझ में कविता करने की शक्ति आ जाय, और फिर कहा जाय कि समयानुकूल कविता करो तो मैं किरातार्जुनीय के बहुत से सर्गों का हिन्दी में अनुवाद करने का प्रयत्न करूँ। यदि कोई जातीय विश्वविद्यालय हो, और उस में पढ़ाने के लिये संस्कृत की पाठविधि बनाने को मुझसे कहा जाय तो भी मैं वाल्मीकि रामायण से दूसरे दर्जे पर किरातार्जुनीय का ही स्थान रखूंगा। जो जातियाँ स्वाधीन हैं, धनधान्य से युक्त हैं, वैभव और ऐश्वर्य की सामग्री से अलंकृत हैं, उन के लिये मेघदूत और शाकुन्तल बहुत ठीक हैं, परन्तु जिस दशा में भारत है, उस के रहते किरातार्जुनीय और भगवद्गीता ही सब से उत्तम काव्य हैं। सब के लिये सब दशाओं में एक ही वस्तु उत्तम नहीं होती। जो भोजन एक नीरोग के लिए बहुत पुष्टि देने वाला है, वही एक रोगी के लिये विष हो जाता है। पात्र की दशा वस्तु का मूल्य बदल देती है। "शृङ्गार और ललितोद्गार" में, मधुरता और उपमा में, प्रसाद और सरसता में लौकिक कवियों में कालिदास का स्थान पहला है—पर रोगी भारत को इस समय उनमें से किसी भी गुण की तरस नहीं है—भारत को इस समय उन गुणों की तरस है जिनका अन्तर्भाव ओज शब्द के अन्दर हो सकता हो। अधमरे शिथिल रोगी को ऐसी दवा देनी चाहिये जो उसे उठा कर खड़ा कर सके—जब वह खड़ा हो जायगा तब बालों में इत्र और मुँह में पान भी शोभा देने लगेगा। इसी सिद्धान्त के अनुसार इस समय भारत किरातार्जुनीय जैसे काव्य चाहता है—मेघदूत या ऋतुसंहार जैसे नहीं।

पुराने समालोचकों ने भारवि के अर्थ गौरव की प्रशंसा की है। प्रशंसा की यथार्थता जानने के लिये अधिक नहीं—केवल प्रारम्भ के दो चार पद्यों का पढ़ लेना ही पर्याप्त है। अन्य काव्यों से किरातार्जुनीय की तुलना कर के खूब अच्छी प्रकार बताया जा सकता है कि अर्थ गौरव किसे कहते हैं? और किरातार्जनीय में किस प्रकार वह समा रहा है; परन्तु इस लेख में उस का अवसर नहीं है। इस लेख में मुझे केवल यह दिखाना है कि भारवि का किरातार्जुनीय एक ओजस्वी काव्य है, उसके उपदेश, चाहे वह स्पष्ट हों चाहे अस्पष्ट, मनुष्य को जीवित और प्रोत्साहित करने वाले हैं, उस में वह भाव भरा है जो मुर्दा जातियों को जीवित किया करता है। निराशा के अन्धकार में आशा का संचार कर देने वाली, निर्बल को बल और बूढ़े को सहारा देने वाली यदि किसी लौकिक महाकाव्य की कविता है तो वह किरातार्जुनीय की है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम सम्पूर्ण से भाग की ओर चलते हैं। भारवि के सम्पूर्ण काव्य का एक मात्र उद्देश्य अर्जुन को पाशुपतास्त्र का दान कराना है, काव्य की समाप्ति में विजय, आशा और आशीर्वाद का हर्ष-गीत सुनाई देता है— और उस हर्ष गीत के जीवन-दायी स्वर में रोती हुई पाण्डव पत्नी का आर्तनाद छिप जाता है। अन्त का दृश्य क्या ही उज्वल है? अर्जुन की युद्धकला से प्रसन्न हो कर महादेव अपना निज-स्वरूप दर्शा रहे हैं। भक्तराज अर्जुन घुटने टेक कर ऐसी प्रार्थना करता है कि भक्ति से प्रसन्न और प्रेम से गद्गद हुए देवाधिदेव पाशुपत धनुर्वेद का उपदेश करते हैं। जब देवाधिदेव प्रसन्न हो गये तो बाकी देवताओं की प्रसन्नता स्वाभाविक थी। अर्जुन पर शस्त्रों के उपहार की बौछार होने लगी। सब लोक वालों ने अपने उत्तम २ अस्त्र तपस्वी के अर्पण किये। इतना ही नहीं— शस्त्रों की शोभा से चमकते हुए तीसरे पार्थ की देवताओं ने मिल कर प्रशंसा की। अन्त में कवि उस विजय पूर्ण चमकीले दृश्य का इस प्रकार वर्णन करता है—

> व्रज जय रिपुलोकं पाद पद्मानतः सन्
> गदित इति शिवेन श्लाघितो देवसंघैः।
> निजगृहमथगत्वा सादरं पाण्डुपुत्रो
> धृतगुरु जयलक्ष्मी धर्मसूनुं ननाम।

चरण वन्दना से प्रसन्न हुए महादेव ने आशीर्वाद दिया कि बेटा! घर को जाओ और शत्रुओं का पराजय करो, देवताओं ने एक स्वर से प्रशंसा की-इस प्रकार सफलता लाभ करके जय लक्ष्मी को धारण करने वाला पाण्डु का तीसरा पुत्र अपने घर पर पहुंचा और वहां पहुंच कर धर्म सूर्य्य युधिष्ठिर के चरणों में प्रणाम किया।

कैसा दिव्य दृश्य है—कैसा उज्वल और हर्षदायक अन्त है। परन्तु इस की पूरी दिव्यता और पूरी हर्षदायकता तभी प्रतीत हो सकती है जब अन्त को आदि से मिला कर देखा जाय। जिस घर में विजयी सफल परिश्रम अर्जुन ने पहुंच कर आनन्दोत्सव रचाया, काव्य के शुरु में हम उसे उदासीन खिन्न हुआ और निराश पाते हैं। काव्य के अन्त में जिस धर्मसूनु को अस्त्रों से उज्वल भाई की चरण वन्दना लेने का आनन्द प्राप्त हुआ, काव्य के प्रारम्भ में हम उसे स्त्री और छोटे भाई के धिक्कार रूपी तीरों से छिलता पाते हैं। आरम्भ में निराशा है, पराजय है, शोक है, खिझलाहट है; और अन्त में आशा है, विजय है, आनन्द है—और आमोद है। शुरू में काला है, अन्त में उज्वल है। किरातार्जुनीय काव्य अमावस्या की आधीरात से प्रारम्भ होता है-और उज्वल प्रभात के खिले हुए नभो—मण्डल में समाप्त होता है। एक चक्रवर्ती राजपुत्र की निराशा जहाँ तक ले जा सकती है—काव्य के आरम्भ में पाण्डु-पुत्र को निराशा जहाँ तक ले जा सकती है—काव्य के आरम्भ में पाण्डु-पुत्र वहीं है; परन्तु तप अध्यवसाय और वीरता से काव्य के अन्त में वह उस जगह पहुंच जाता है, जहाँ आशारूपी पखेरू बड़ी से बड़ी उड़ारी मार कर पहुंच सकता है। यह काव्य का सार—यह उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का रहस्य है। क्या एक निराश, उदास और अस्त्रहीन जाति की कल्पना को उद्भावित करने के लिये इस से उत्तम कथा क्रम चुना जा सकता है ?

समूह रूप से देख कर अब हम काव्य की खण्डशः आलोचना करते हैं। काव्य का आरम्भ इस प्रकार होता है—कि युधिष्ठिर का भेजा हुआ एक दूत दुर्योधन के समाचार लेकर आता है। युधिष्ठिर का राज्य दुर्योधन ने छीन लिया है। दूसरे का राज्य छीन कर शासन करना बड़ा कठिन काम है। दूसरे की जायदाद और भूमि पचाने के लिए बुद्धिमत्ता का मार्ग यही है कि वह प्रजा को प्रसन्न रखे। दुर्योधन चाहता है कि प्रजा युधिष्ठिर को भूल जाय, और उस के राज्य को सुखी समझने लगे ताकि जब युधिष्ठर बनवास से निवृत होकर अपना राज्य मांगे तो दुर्योधन युधिष्ठिर को उस की ही पुरानी प्रजा की सहायता से हटा सके।

दूत ने दुर्योधन की कूटनीति का ऐसा उत्तम वर्णन किया है कि उसे पढ़ कर २० वीं सदी का भारतवासी भारवि को साधुवाद दिए बिना नहीं रह सकता। वर्त्तमान भारत के निवासी को भारवि अपनी ज्ञानचक्षु से २० वीं सदी तक देखता प्रतीत होता है। दुर्योधन की नीति क्या है ? वह बहुत ही गुणी प्रतीत होता है, बहुत ही उदार दिखाई देता है, धन धान्य की वृद्धि में बहुत ही यत्नशील है। योद्धाओं को विशेष आदर देता है, और छोटे छोटे सामन्तों को दया से ही सन्तुष्ट रखता है। ऐसा दुर्योधन है, जिसके गुण अनेक हैं, पर गुण इस लिये नहीं हैं कि वह स्वतः अच्छे हैं; प्रजा पर कृपा है पर कृपा इस लिये नहीं कि वह कृपा है; परन्तु यह सब कुछ इस लिये है कि इस से वह साम्राज्य जो अन्याय और धूर्तता से कमाया था, किसी प्रकार सदा के लिये काबू में रह सके। दुर्योधन की शक्ति अनुपम है—उस की नीति बड़ी गहरी है। उसका समय-विभाग निश्चित है-आजकल की अंग्रेज़ी सरकार के समय पालन की अपेक्षा उस का भी समय-विभाग का पालन प्रसिद्ध है (१।९) सामदान दण्ड का उचित प्रयोग खूब ही होता है (१।१२) दिल में सदा शंकित रहता है—पर मुँह से शंका नहीं दिखाता, पर चारों ओर सेना पुलिस आदि के रूप में रक्षकों से खूब घिरा रहता है (१।१४) छोटे २ सामन्त राजा उस की बड़ी पूजा किया करते हैं (१।१६) कृषि के वृद्धि के वह खब उपाय करता है (१।१७) युद्ध करने वाली जातियों की वह ख़ास ख़ातिर करता है (१।१९) गुप्तदूतों (खुफिया पुलिस) द्वारा वह छोटे और विरोधी राजाओं की खूब ख़बर रखता है (१।२०) यह सब कुछ है पर किस लिये ? कवि के अपने शब्दों में ही उत्तर लीजिये—

विशंकमानो भवतः पराभवं
नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः—
दुरोदरच्छद्मजितां समीहते
नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः ।१।७।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम वनवासी हो— और वह राज्यासन पर विराजमान है। परन्तु तो भी उसे आशंका है कि तुम उस का राज्य पलट दोगे। कारण यह है कि उसने जुए और धोखे से तुम्हारे राज्य पर कबज़ा पाया है। अब वह चाहता है कि जो राज्य उस ने अन्याय और धोखे से जीता है— उसे नीति से जीत ले। क्या ठीक विश्लेषण है! कवि उसे कहते हैं जो दिल के भाव को पहिचाने और गहराई में छुपी हुई सचाई बाहिर ला रखे। जिस ने राज्य अन्याय और छल से लिया है वह सदा शंकित दशा में रहता है और यदि बुद्धिमान् है तो यत्न करता है कि जो जो अधिकार उस ने कुत्सित उपाय से प्राप्त किया है, उसकी रक्षा वह अच्छे उपाय से कर सके।

दूत सब कथा सुना कर चला जाता है। धर्मराज अन्दर जा कर अपने भाईयों को और द्रौपदी को दूत से सुना हुआ सब वृतान्त सुनाता है। पेट में तीर खाई हुई सिंहनी की भाँति, पीठ में चोट खाई हुई काली नागिन की भाँति अपमानिता तिरस्कृता सती साध्वी द्रौपदी के हृदय की आग दुर्योधन का समाचार सुन कर भड़क उठती है। वह द्वापर की क्षत्रानी है, १९२६ की भारत जाति नहीं। क्षत्रानी अपने क्रोध और जोश को नहीं संभाल सकती, और युधिष्ठिर के आगे अपना दुखड़ा रोती है। वह रोना ऐसा है कि उस पर पत्थर को रोना आता है और द्रोपदी की आख़ीरी अपील ऐसी है कि एक सदियों की झूठी धार्मिक अहिंसाओं का मारा हुआ जैनी भी हाथ में तलवार लेकर खड़ा हो जायगा। वह ऐसा रोना है और वह ऐसी अपील है कि जो एक स्त्री के मुँह में ही आ सकती है। द्रौपदी के मुंह में वाक्य रखता हुआ कवि कवि-पदवी से कहीं ऊपर उठकर एक दिव्यदर्शी की कोटि को पहुंचा हुआ दिखाई देता है। पाठक पढ़ें— और फिर कहें कि कवि ने दिव्य दृश्य देखा या नहीं?

द्रौपदी बताती है कि स्त्री का पति को उपदेश शोभा नहीं देता पर आपत्ति के समय मर्यादा के सब बन्धन टूट जाया करते हैं। वर्तमान दुर्दशा मुझे इच्छा न रहते भी कहने के लिये बाधित करती है। वह लोग नासमझ हैं, और नष्ट हो जाते हैं जो मायावियों के साथ भले मानसों का सा व्यवहार करते हैं। ऐसे भले आदमियों के अरक्षित शरीर में धूर्तों के पेच, तीरों की भान्ति सहज में ही घुस जाते हैं—और सब की समाप्ति कर देते हैं। पर जिस औचित्य से इसे कहा गया है, उसकी प्रशंसा किये बिना कोई भी नहीं रह सकता। भारवि के यह दो पद धरु सचाई की भान्ति प्रसिद्ध हो गये हैं—

> व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
> भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

दो पद्य आगे चल कर भारवि द्रौपदी के मुख से एक और सचाई प्रकट करता है। वह सचाई भी सदा हृदय में धारण करने योग्य है। द्रौपदी कहती है कि जिस मनुष्य के हृदय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अपमानित हो कर क्रोध उत्पन्न न हो, और यदि हो भी जाय तो उस का कोई फल न हो—तो न कोई उस की प्रसन्नता की पर्वा करता है और न अप्रसन्नता की। जो दशा मनुष्यों की है, वही जातियों की है।

सृष्ट्युत्पत्ति

(२)

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

अहि तथा इन्द्र की अन्य धर्म कथाओं के साथ जो समानता पाई जाती है, उसके बाद सृष्ट्युत्पत्ति-प्रकरण में भिन्न-भिन्न धर्मों में, कई अन्य अचंभे में डाल देने वाली समानताएँ भी मिलती हैं। उनकी तरफ भी हमारा ध्यान गए बिना नहीं रह सकता। बाइबिल में लिखा है—Let us make man in our own image, after our likeness—अर्थात्, परमात्मा ने सोचा, मनुष्य को अपनी शक्ल का बनाएँ। बुनसेन महोदय की Angel Messiah—पुस्तक के १०४ पृष्ठ में लिखा है कि पारसियों के यहां भी यही भाव पाया जाता है। हमारी धारणा है कि यह भाव वेद के "योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि", इस वाक्य के आधार पर सर्वत्र फैली है। इस समानता के संम्बन्ध में अधिक न लिख कर हम सृष्टि-उत्पत्ति की एक अन्य मुख्य समानता की ओर चलते हैं।

सृष्टि-उत्पत्ति की कथा के सम्बन्ध में यहूदियों तथा ईसाइयों की मान्य धर्म-पुस्तक बाइबिल का कथन है कि स्त्री और पुरुष इकट्ठे उत्पन्न किए गए थे—एक ही शरीर का एक हिस्सा स्त्री का तथा दूसरा पुरुष का था। लिखा है— "Male and female created he them" अर्थात्, परमात्मा ने उनके दो हिस्से कर दिए।

पारसियों की धर्म-पुस्तक 'बुन्दहेश' में लिखा है, अहुर्मुज़्द ने 'माश्य' तथा 'माश्यान' नामी पुरुष और स्त्री का पीठ की तरफ़ से जुड़ा हुआ, जोड़ा पैदा किया।

इस वर्णन से एक विपरीत वर्णन भी बाइबिल में पाया जाता है, जिसके अनुसार परमात्मा ने मनुष्य को सुला-कर उस की हड्डी से स्त्री की रचना की। हमारी समझ में, स्त्री के विषय में इन दोनों वर्णनों का आधार वैदिक तथा भारतीय साहित्य ही है। पहले हम स्त्री-पुरुष के एक ही शरीर के अवयव होने के विषय में लिखेंगे।

बृहदारण्यकोपनिषद् के ४ र्थ ब्राह्मण में इस प्रकार लिखा है—

"स वै नैव रेमे। तस्मादेकाकी नैव रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ संपरिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधापातयत् ततः पतिश्च पत्नी च अभवताम्।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्, प्रथम-पुरुष इतना बड़ा था, जितना स्त्री-पुरुष मिल कर होते हैं। एक ही शरीर के अंग होने के कारण आनंद-प्राप्ति न होती थी, अतः उन के दो टुकड़े कर दिए गए, जिन्हें व्यावहारिक भाषा में लोग पति-पत्नी कहने लगे। उपनिषद् का यह वाक्य और बाईबिल की कथा एक ही हैं। भागवतपुराण, ३ स्कंध, १२ अध्याय के ५२, ५३, ५४ श्लोकों में भी स्वयंभू के पुत्र सर्वप्रथम पुरुष स्वायंभुव के विषय में भी ऐसी ही कथा आती है। श्लोक इस प्रकार हैं—

कस्य रूपमभूद् द्वेधा यत्कायमभिचक्षते ;
ताभ्यां रूपविभागाभ्यां मिथुनं समपद्यत् ।
यस्तु तत्र पुमान् सोऽभून्मनुः स्वायम्भुवः स्वराट्
स्त्री यासीच्छतरूपाख्या महिष्यस्य महात्मनः ।
तदा मिथुनधर्मेण प्रजा ह्येधांबभूविरे ॥

'क' अर्थात् 'ब्रह्मा' के दो टुकड़े हो गए—इसी लिये शरीर को काय कहते हैं। उन में जो पुमान्-भाग था, उस का नाम 'मनु' हुआ, तथा जो स्त्री भाग था, उसका नाम 'शतरूपा' रक्खा गया। तब से सृष्टि-उत्पत्ति भी मैथुन द्वारा होने लगी। स्त्री को अर्द्धांगी, वामांगी आदि कहा जाता है। इन शब्दों में भी उपनिषद्, पुराण, बाईबिल तथा कुरान की कथा भरी हुई है। बाइबिल का यह क़िस्सा -जिसे पढ़ कर हम उस की खिल्ली उड़ाया करते हैं—यथार्थ में बहुत पुराना है, और धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन करने वाले विद्यार्थी को उस स्वर्ण-युग की झाँकी दिखलाता है जब इस परम पुनीत देश की सभ्यता के टूटे-फूटे टुकड़े भी दूर दूर देशों में देवता के प्रसाद की तरह पूजे जाते थे। भारत की धूल को संसार स्वर्ण-तुल्य समझता रहा है। इस के लिए किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता नहीं। अभी हम जिस विषय की चर्चा कर रहे हैं, उसमें, कौन नहीं जानता, कितना आध्यात्मिक तत्व भरा पड़ा है? स्त्री को अर्द्धांगी कहना सत्यता की ऊँची से-ऊँची पहुंच है। इन उच्च भावों से भरपूर भारत की पूजा भला क्यों न होती? प्राचीनकाल में भारत की पूजा इतनी अधिक हो गई थी कि आगे चलकर जब भारत उच्च आदर्शों को भूल गया, तब भी इस देश में प्रचलित अर्थ-हीन शब्दों की भिक्षा लेकर अन्य देश अपने को धन्य मानते रहे और सदियों तक यह समझते रहे कि सचमुच प्रथम स्त्री-पुरुष का शरीर जुड़ा ही हुआ था, तथा परमात्मा ने उसे काटकर दो टुकड़ों में विभक्त कर दिया।

इस के अनंतर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि पुरुष की हड्डी से स्त्री के बनने की कथा का उद्भव-स्थान कहाँ है? इस प्रश्न के उत्तर के लिये हम विचारकों का ध्यान महाभारत, वनपर्व के १०० वें अध्याय के निम्न-श्लोकों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं—

दधीचिरिति विख्यातो महानृषिरुदारधीः ।
तं गत्वा सँहितासर्वे वरं वै सम्प्रचायत ॥
स वो दास्यति धर्मात्मा सुप्रीतेनान्तरात्मना ।
स वाच्यः सहितैः सर्वैर्भवद्भिर्जयकांक्षिभिः ॥
स्वान्यस्थीनि प्रयच्छेति त्रैलोक्यस्य हिताय वै ।
स शरीरं स्वमुत्सृज्य स्वान्यस्थीनि प्रदास्यति ॥
तस्यास्थिभिर्महाघोरं वज्रं संक्रियतां दृढम् ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेन वज्रेण वै वृत्रं वधिष्यति शतक्रतुः ॥

युधिष्ठिर से लोमश ऋषि कहते हैं कि वृत्र के उपद्रव से जब संसार पीड़ित होगा, तब इन्द्र महाराज दधीचि के पास जाकर अपना रोना सुनाने लगे। दधीचि ऋषि ने अपनी हड्डियाँ दीं, जिनसे वज्र बनाया गया। उस वज्र से ही वृत्र का वध किया गया। महाभारत की इस कथा का मूल वेद की निम्न लिखित ऋचा में है—'इन्द्रो दधीचो अस्थिभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कृतः जघान" (१.८४।१३)अर्थात्, इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों से वृत्र का वध किया। 'वृत्र' के लिये दूसरा शब्द वेद में 'अहि' आता है। दोनों पर्यायवाची हैं। अतः अहि के मारने के लिये इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों का वज्र बनाकर उसका प्रयोग किया, यह वेद की कथा है। बाइबिल की कथा यह है कि साँप को मारने के लिये जिहोवा या खुदा ने आदम की हड्डियों से बनी 'ईव' नामक शक्ति का प्रयोग किया। दधीचि की हड्डियों से तो अहि मारा गया, और आदम की हड्डियों से साँप। इस मारण कार्य में, वैदिक कथा में, लड़ाई इन्द्र तथा अहि में थी, और बाइबिल की कथा में लड़ाई परमात्मा और साँप में। दोनों कथाओं में लड़ाई का मूल 'ज्ञान-फल' की रक्षा थी।

मज़ेदार बात यह है कि यह दधीचि भी हज़रत आदम की तरह उसी बखेड़े से गुज़र चुके हैं। इन्हें भी आदम की तरह एक चीज़ सिपुर्द की गई थी, जिसके विषय में इन्हें भी इन्द्र ने कह दिया था कि यदि इसकी पूरी-पूरी हिफ़ाज़त न हुई अथवा किसी दूसरे के हाथ में पड़ गई, तो सख़्त सज़ा दी जायगी। सज़ा भी कम नहीं, आदम से कहा गया कि तुम इस वृक्ष की रक्षा न करके यदि इसका फल खा लोगे, तो मौत के शिकार होगे। दधीचि को भी यही भय दिखलाया गया था। आदम को ज्ञान-वृक्ष की रक्षा करने के लिये कहा गया था, और दधीचि को मधु की रक्षा करने के लिये। शतपथ-ब्राह्मण १४।१।१ में लिखा है—

"सह इन्द्रेणोक्त आस। एतं वेदन्यस्मा अनुब्रूयास्तत एव ते शिरश्छिन्द्यामिति।"

अर्थात्, इन्द्र दधीचि से बोले कि यदि तुमने मधु का निर्देश किसी दूसरे को कर दिया, तो सिर काट लिया जायगा।

बाइबिल में आदम ने फल खा लिया, और उसका पतन भी हो गया। ब्राह्मण-ग्रंथ के दधीचि ने भी मधु का निर्देश अश्विनौ को कर दिया, और अपना सिर कटवा लिया। अश्विनौ ने आकर कहा— "मधु का हमें उपदेश दो।" दधीचि ने कहा— "मुझे इन्द्र ने ऐसा करने से मना किया है।" शैतान ने आदम-ईव से आकर कहा— "फल खा लो।" उन्होंने भी यही कहा कि परमात्मा ने हमें ऐसा करने से रोक दिया है। अन्त में दधीचि ने मधु का उपदेश कर दिया, और आदम ने भी फल खा लिया। ब्राह्मण-ग्रंथ की इस कहानी में बाइबिल के साँप की जगह अश्विनौ आ गए हैं। अन्यथा अन्य सब प्रकार से कहानी वही है, जो बाइबिल में ले ली गई है। शतपथ के इस कथानक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लेकर जब हम दधीचि की हड्डियों से बने वज्र द्वारा वृत्र के वध की कथा वैदिक-साहित्य में पढ़ते है, तब तो ज़रा भी संदेह नहीं रहता कि बाइबिल के जिहोवा तथा शैतान की कथा का इन्द्र तथा अहि (वृत्र) की कथा से, ज्ञान-फल की कथा का सोम-रस तथा मधु की कथा से, आदम और ईव का दधीचि और वज्र की कथासे साधारण नहीं, अपितु असाधारण संबध है। अस्तु, प्रत्यक्ष जान पड़ता है कि बाइबिल और कुरान की सारी कथा का आधार वैदिक है।

फूलो !

(कविराज पं० धर्म्मदत्त जी विद्यालङ्कार, वैद्य भूषण)

फूलो ! खुशी खुशी से अपने ये दिन बिताना।
दिन रात आप हँसना औरों को भी हँसाना॥
आंधी तुम्हें डरावे गर धूप भी सतावे।
चेहरे पै तुमने अपने कुछ भी न ग़म दिखाना॥
जिसने तुम्हें बनाया जिस ने तुम्हें हँसाया।
खुशियों में अपने मालिक को तुम नहीं भुलाना॥
उस के चमन को तुमने सुख का सदन बनाना।
खुशबू से अपनी इस को बाग़-ए-अदन बनाना॥
छोटा हूँ या बड़ा हूँ इस पर न ध्यान लाना।
जो कुछ महक है उस को इस बाग में फैलाना॥
ठण्डी हवा से अपनी अठखेलियों में तुमने।
कर्तव्य को न अपने पल भर कभी भुलाना॥
खुश होके तुम को अपने वो सीस पर चढ़ावे।
ऐसे नज़र को अपने मालिक की तुम लुभाना।
माला में कोई उस के मन्दिर में कोई उस के।
कोइ उस की राह में ही गिर कर के काम आना॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्रकालीन राष्ट्रीय आय

ले० आचार्य रामदेव जी

वर्तमान समय के अर्थ शास्त्रज्ञों के अनुसार राष्ट्रीय आय व्यय का हिसाब बहुत उन्नत अवस्था तक पहुंच चुका है। आज कल के राष्ट्रीय बजटों में आय व्यय का विश्लेशण जिस ढंग से किया होता है वह स्पष्ट और विस्तृत होता है। इसी कारण शुक्रनीति में वर्णित राष्ट्रीय आय व्यय की तुलना अगले हम इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध अर्थ शास्त्रज्ञ मार्शल द्वारा वर्णित राष्ट्रीय आय व्यय से करने लगें तो वह हमें बहुत सन्तोषप्रद प्रतीत न होगा। परन्तु यदि हम इस ढाई, तीन सहस्र वर्ष पुराने नीति शास्त्र में वर्णित राष्ट्रीय आय व्यय की तुलना फ्रांस के १६ वीं सदी के सुप्रसिद्ध नीतिशास्त्रज्ञ बोडिन (Jean Bodin) के राष्ट्रीय आय व्यय से करें तो आचार्य शुक्र का विश्लेषण उस की अपेक्षा बहुत उन्नत प्रतीत होगा। बोडिन ने जहां राष्ट्रीय आय के स्रोतों के छः विभाग किये हैं वहां आचार्य शुक्र ने इस के नौ विभाग किये हैं। अस्तु; हम इस तुलना के विस्तार में न जाकर अपने प्रकरण को प्रारम्भ करते हैं।

आय के स्रोत—शुक्रनीति में अमात्य (अर्थ सचिव) के कर्तव्य का निर्देश करते हुए उसे इन नौ साधनों से आय प्राप्त करने का निर्देश दिया गया है—

१. भाग—भूमि कर
२. शुल्क—व्यापार, वाणिज्य पर कर।
३. दण्ड-जुर्मानों की आय।
४. अकृष्टपच्या—प्रकृति द्वारा प्रदत्त पदार्थ।
५. आरण्यक—जंगल की आय।
६. आकर—कानों द्वारा आय।
७. निधि—राष्ट्र ने जो धन अमानत (Deposites) के तौर पर धनी नागरिकों के पास रक्खा हुआ है, उसकी आय।
८. अस्वामिक—जिस सम्पत्ति का कोई मालिक नहीं।
९. तरस्कराहित—तस्कर जातियों द्वारा प्राप्त।

१. शुक्र० अ० २ श्लोक १०२-१०५।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तस्कराहित" के दो अभिप्राय हो सकते हैं—सीमा प्रान्त की तस्कर जातियों द्वारा विदेशी राष्ट्रों से लूट कर लाया गया धन, जिस में से कुछ भाग वे सरकार को देती हैं। अथवा चोरों के पास से पोलीस द्वारा बरामद किया हुवा चोरी का माल, जिस में से कुछ भाग सरकार अपने श्रम के बदले रख लेती है।

इन नौ साधनों में से चौथा, सातवां, आठवां और नौवां ये चार साधन राष्ट्र की आय के स्थिर साधन नहीं हैं। ये साधन मुख्य नहीं अपितु गौण हैं। इन की आय अनिश्चित हैं।

शुक्रनीति के चतुर्थ अध्याय के द्वितीय विभाग में राष्ट्रीय आय की जो तालिका दी है उस के अनुसार राष्ट्रीय आय के १० साधन होते हैं। इन के सम्बन्ध में शुक्रनीति में निम्न लिखित निर्देश प्राप्त होते हैं—

वाणिज्य कर—(शुल्क) यह कर चुंगी और आन्तरिक कर (Excise) इन दोनों रूपों में लगाया जाता था—"ग्राहकों और व्यापारियों के माल पर लगाए राज कर को 'शुल्क' कहते हैं। यह कर सीमा पर (चुंगी) तथा मण्डियों में (Excise) लगाया जाता है। प्रत्येक पदार्थ पर किसी न किसी रूप में एक बार कर अवश्य लग जाना चाहिये। किसी पदार्थ पर दुहरा कर नहीं लगना चाहिये। किसी पदार्थ के मूल्य का $\frac{1}{33}$ वां भाग उस पर शुल्क लगाना चाहिये। $\frac{1}{20}$ वां या $\frac{1}{16}$ वां भाग कर लगाने से भी वस्तुओं के मूल्य में कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं आता। अगर कोई व्यक्ति लागत के दाम से भी कम मूल्य पर अपना सामान बेच रहा है तब उस पर कर नहीं लगाना चाहिये। कर तभी लगना चाहिये जब कि बेचने वाले को पर्याप्त लाभ हो रहा हो।"[1]

ये ३ $\frac{1}{2}$ प्रति शत से लेकर ६ $\frac{1}{8}$ प्रति शत कर की दर बहुत अधिक नहीं है।

भूमि कर—(भोग) की दर भूमियों की उपज के अनुसार भिन्न होनी चाहिये—"उन भूमियों पर जो तालाब, नहर, कूआं, वर्षा या नदी से सींची

---

१. विक्रेतृ क्रेतृतो राज भागः शुल्कमुदाहृतम् ।
शुल्क देश हट्टमार्गाः कर सीमाः प्रकीर्तितः ॥ १०८ ॥
वस्तुजातस्यैक वारं शुल्कं ग्राह्यं प्रयत्नतः ।
क्वचिन्न वासकृच्छुल्कं राष्ट्रे ग्राह्यं नृपैश्छलात् ॥ १०९ ॥
द्वात्रिंशांशं हरेद्राजा विक्रेतुः क्रेतुरेव वा ।
विंशांशं वा षोडशांशं शुल्कं मूल्याविरोधकम् ॥ ११० ॥
न हीन सम मूल्याद्धि शुल्कं विक्रेतृतो हरेत् ।
लाभं दृष्ट्वा हरेच्छुल्कं क्रेतृतश्च सदाः नृपः ॥ १११ ॥ (शुक्र० अ० ४ ii.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं, उन की उपज के अनुसार उपज का चौथाई, तिहाई या आधा भाग कर लगाना चहिये। जो भूमि अनुपजाऊ और बंजर हो उस की उपज का छटा भाग ही कर रूप में लेना चाहिये।[1]

यह भूमि कर प्रत्येक किसान से अलग अलग नहीं लिया जाता था अपितु गांव के एक धनी व्यक्ति से ही सारे गांव की भूमि का लगान ले लिया जाता था, लगान का सारा उत्तरदायित्व उस पर ही रहता था। किसान लोग उसी को अपने लगान का अंश दे देते थे। इस प्रकार लगान जमा करने का तरीका पूरी तरह केन्द्रित था-"भूमि कर निश्चित होने पर उस की सम्पूर्ण मात्रा राजा को गांव के एक धनी से ले लेनी चाहिये अथवा गांव के एक मनुष्य को ज़ामिन बना कर उस से एक निश्चित समय के बाद लगान लेते रहना चाहिये।"[2]

इस से प्रतीत होता है कि सम्भवतः कुछ वर्षों के लिये लोगों को लगान जमा करने के ठेके दिये जाते होंगे। लगान जमा करने के लिए जो सरकारी कर्मचारी नियुक्त किये जाते थे उनका वेतन प्राप्त लगान का $\frac{1}{16}$, $\frac{1}{12}$, $\frac{1}{10}$, $\frac{1}{8}$ या $\frac{1}{6}$ होता था।[3]

यह अन्तर भी भूमि की उपजाऊ शक्ति के आधार पर ही होता था।

भूमि कर की मात्रा भूमि की उपजाऊ शक्ति के अनुसार सरकार ही निश्चित करती थी। आचार्य शुक्र ने स्पष्ट शब्दों में निर्देश दिया है कि अगर ज़मीदार को खेती करने से पर्याप्त लाभ हो तभी उस पर उपर्युक्त मात्रा में भूमिकर लगाना चहिये-

"वही कृषि सफल समझनी चाहिये जिस के द्वारा कि ज़मींदार को अपने कुल खर्च-जिस में सरकारी लगान भी शामिल है-से दुगुना लाभ अवश्य हो। इसी के अनुसार उत्तम, मध्यम और निकृष्ट भूमि निश्चित करनी चाहिये। जिस भूमि से इस से कम आय हो वह 'दुःखद' भूमि है।"[4]

---

१. तड़ाग वापिका कूप मातृकाद्देव मातृकात्।
देशान्नदी मातृकात् तु राजानुक्रमतः सदा ॥ ११५ ॥
तृतीयांशं चतुर्थांशमर्द्धांशन्तु हरेत् फलम्।
षष्ठांशमूषरात् तद्वत् पाषाणादि समाकुलात् ॥ ११६ ॥

२. नियम्य ग्राम भूभागमेकस्माद् धनिकाद्धरेत् ॥ १२४ ॥
गृहीत्वा तत्प्रतिभुवं धनं प्राक् तत्समन्तु वा।
विभागशो गृहीत्वापि मासि मासि ऋतौ ऋतौ ॥ २५ ॥

३. षोड़श द्वादश दशाष्टांशतो वाधिकारिणः।
स्वांशात् षष्ठांश भागेन ग्रामपान् सन्नियोजयेत् ॥ १२६ ॥

४. बहुमध्याल्प फलतस्तारतम्यं विमृश्य च।
राज भागादि व्ययतो द्विगुणं लभ्यते यतः।
कृषि कृत्यन्तु तच्छ्रेष्ठं तन्यूनं दुःखदं नृणाम् ११४ ॥ (शुक्र० अ० ४, ii)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस भूमि को अभी ऊपजाऊ बनाने का यत्न किया जा रहा हो उस पर भूमि कर नहीं लगाना चाहिये—"जो लोग अभी नया व्यवसाय शुरु करें, नई भूमि पर कृषि प्रारम्भ करें, अथवा जो लोग कूआं, नहर या तालाब अदि खुदवा रहे हों उन पर तब तक सरकार को लगान नहीं लगाना चाहिये जब तक कि खर्च से आय दुगनी न होने लगे।"[1]

"सरकार को किसानों की आय देख कर ही उन पर लगान लगाना चाहिये।"[2]

"राजा को जमीदारों से लगान इस प्रकार लेना चाहिए जिस प्रकार कि माली वृक्षों से फूल तोड़ता है, ताकि ज़मीन्दारों का नाश न हो। लगान कोइले के व्यापारियों की तरह नहीं लेना चाहिए।"

कोइले के व्यापारी कोइला बनाने के लिये लकड़ी को जला कर उसका नाश कर देते हैं, परन्तु माली सदैव फूल इस प्रकार इकट्ठे करता है कि उस के द्वारा वृक्ष को किसी प्रकार की हानी न पहुंचे। लगान इकट्ठा करने की यह उपमा इतनी अच्छी है कि सम्राट् अकबर के वज़ीर अब्बुल फाज़िर ने भी इसे 'आइने अकबरी' में उद्धृत किया है।

लगान जमा करने का प्रबन्ध बहुत ही उत्तम था, इस में मुगल काल की तरह कोई अव्यवस्था न हो सकती थी—"सरकार को चाहिये कि वह सब किसानों को, उन पर लगाए हुए कर की मात्रा आदि अपनी मुद्रा से अंकित कर के दे।"[4] इसी के अनुसार किसानों से कर लिया जायगा।

आचार्य शुक्र के अनुसार उस समय रैयतवारी नहीं अपितु ज़मीन्दारी की प्रथा ही सिद्ध होती है। परन्तु ये ज़मीन्दार स्वयं किसान हैं; ये जितनी ज़मीन बोते हैं उस पर इन का स्वतन्त्र अधिकार है।

खनिज कर—शुक्रनीति द्वारा यह स्पष्टतया ज्ञात नहीं होता कि कानें राष्ट्र की सम्पत्ति समझी जाती हैं या वैयक्तिक, तथापि कानों की उत्पत्ति पर कर की मात्रा इतनी निश्चित की गई है कि उस की आय का पर्याप्त भाग राष्ट्र के कोश में आजाय। इस साधन से भी सरकार को एक अच्छी रकम प्राप्त होती थी। खनिज कर की दरें इस प्रकार हैं—

---

१. कुर्वन्त्यन्यत् तद्विधं वा कर्षन्त्यभिनवां भुवम्।
तद् व्यय द्विगुणं यावन्न तेभ्यो भागमाहरेत् ॥ ११८ ॥

२. लाभाधिक्यं कर्षकादेर्यथा दृष्ट्वा हरेत् फलम् ॥ ११९ ॥ (शुक्र० अ० ४. ii.)

३. हरेच्च कर्षकाद्भागं यथा नष्टो भवेन्न सः।
मालाकार इव ग्राह्यो भागो नाङ्गारकारवत् ॥ ११३ ॥

४. दद्यात् प्रतिकर्षकाय भाग पत्रं स्वचिन्हितम् ॥ १२४१ (शुक्र० अ० ४ ii.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोने पर ५० प्रतिशत, चांदी पर ३२½ प्रतिशत, लोहे और जस्त पर ६¼ प्रतिशत और हीरे, खनिज शीपे तथा सीसे पर ५० प्रतिशत खनिज कर लगाना चाहिये।"[१] सरकार यह धन भी कर रूप में ही लेगी।

जंगलात— राष्ट्रीय आय का चौथा साधन जंगलों की उपज पर लगाया गया कर है। यह कर जंगलों की घास, लकड़ी तथा ऐसी ही अन्य उपजों पर लगता है। इस की दर इस प्रकार है—"वनों की उपज के अनुसार यह दर ३३⅓ प्रतिशत, २० प्रति शत, १४½ प्रतिशत, १० प्रतिशत या ५ प्रतिशत होनी चाहिये।"[२]

पशु कर— राष्ट्रीय आय का पांचवां साधन पालतू पशुओं पर लगाया हुवा कर है—"बकरी, भेड़, गौ, भैंस और घोड़ों की जितनी संख्या बढ़े उनके मूल्य पर १२½ प्रतिशत कर लगाना चाहिये; और बकरी, गौ, तथा भैंस के दूध से जो आय हो इस पर ६¼ प्रतिशत कर लगाना चहिये।"[३]

श्रम— राष्ट्रीय आय का यह छटा साधन कुछ विचित्र प्रतीत होता है। राष्ट्र के शिलिपयों और कारीगरों को राष्ट्र के लिये कुछ दिन तक बाधित रूप से कार्य करना पड़ता था।[४] उन का यह कार्य ही उन पर कर समझा जाता था।

चार अन्य साधन— (७) महाजनों को रुपया उधार देने से जो व्याज मिलता है उस पर ३½ प्रतिशत कर लगाना चाहिए।[५] (८) मकानों पर कर।[६] (९) दूकानों पर और मण्डियों पर कर।[७] (१०) सड़कों तथा गलियों की मुरम्मत के लिए उन पर चलने वालों पर लगाया गया कर।[८]

---

१. स्वर्णार्द्धं च रजतात् तृतीयांशञ्च ताम्रतः।
चतुर्थांशन्तु षष्ठांशं लोहात् वंगाच्च सीसकात् ॥ ११८ ॥
रत्नार्धं चैव चारार्द्धं खनिजात् व्यय शेषतः।

२. त्रिधा वा पञ्चधा कृत्वा सप्तधा दशधापि वा ॥ ११९ ॥
तृणकाष्ठादि हरकात् विंशत्यंशं हरेत् फलम्।

३. अजावि गोमहिष्याश्व वृद्धितोऽष्टांशमाहरेत्।
महिष्यजावि गो दुग्धात् षोड़शांशं हरेन्नृपः ॥ १२० ॥

४. कारु शिल्पि गणात् पञ्चे दैनिकं कर्म कारयेत् ॥ १२१ ॥

५. वाड्वुषिकाच्च कौसीदात् द्वात्रिंशांशं हरेन्नपः।

६. गृहाद्याधार भूशुल्कं कृष्ट भूमेरिवाहरेत् ॥ १२८ ॥

७. तथा चापणिकेभ्यतु पण्य भूशुल्कमाहरेत्।

८. मार्ग संस्कार रक्षार्थं मार्गगेभ्यो हरेत् फलम् ॥ १२९ ॥ (शुक्र० अ० ४, ii.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन उपर्युक्त १० विभागों में जनता की आय के सभी स्रोत अन्तर्गत हो जाते हैं। कोई भी सम्पत्ति ऐसी नहीं बचती जिस पर किसी न किसी रूप में कर न लगा हो।

इस प्रकरण से यद्यपि यह प्रतीत होता है कि आचार्य शुक्र व्यवसाय तथा वाणिज्य पर सरकार का कठोर नियन्त्रण रखने के पक्ष में हैं, तथापि वह राष्ट्रीय व्यवसाय चलाने के पक्ष में हैं या नहीं-यह बात स्पष्ट प्रतीत नहीं होती। केवल-"मध्यम राजा वैश्यों का अनुसरण करता है।"[1] इस एक पद से राष्ट्रीय व्यवासायों की सत्ता की कुछ झलक मिलती है। परन्तु केवल इसी एक आधार से कोई परिणाम निकालने का साहस हम नहीं कर सकते। इस पद का अभिप्राय सम्भवतः यह भी हो सकता है कि जो राजा अपनी वैयक्तिक आय बढ़ाने लिये व्यवसाय करे वह मध्यम होता है। यहां तक कि नमक की उत्पत्ति पर भी राष्ट्र का एकाधिकार होने का प्रमाण शुक्रनीति में नहीं मिलता।

करों की पूर्वोक्त सब दरें साधारण अवस्था के लिए हैं। आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र के हित के लिये इन दरों को कुछ समय के लिये बढ़ाया भी जा सकता है। धार्मिक संस्थाओं और मन्दिरों की जायदाद पर साधारण अवस्था में कर नहीं लगाया जाता, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन पर भी कर लगाया जा सकता है।[2] राष्ट्र के धनी पुरुषों से ऐसे समय धन की एक विशेष मात्रा ली जा सकती है।[3]

राष्ट्रीय ऋण— राष्ट्र पर कोई आपत्ति आने पर अथवा कोई अन्य आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय ऋण लेने का विधान शुक्रनीति में हैं। यह ऋण सरकार देश के धनी धनी नागरिकों से लेती थी। वे लोग सरकार को यह ऋण देने के लिये बाधित होते थे। आपत्ति हट जाने पर सरकार उन को यह धन व्याज सहित वापिस कर देती थी।[4]

कर सिद्धान्त—"जिस राष्ट्र की शक्ति जितनी अधिक हो उसका खज़ाना उतना ही बढ़ता है, जिस राष्ट्र का खज़ाना भरा हुआ हो उस की शक्ति बढ़ती है-दोनों बातें परस्पर सहायक हैं। राजा को चाहिये कि वह जिस किसी

---

१. .....मध्यमो वैश्य वृत्तितः ॥ १९ ॥
२. दण्डभूभाग शुल्कानामाधिक्यात् कोश वर्धनम्।
अनापदि न कुर्वीत तीर्थ देव कर ग्रहात् ॥ ९ ॥
३. यदा शत्रु विनाशार्थं बल संरक्षणोद्यतः।
विशिष्ट दण्ड शुल्कादि धनं लोकात् तदा हरेत् ॥ १० ॥
४. धनिकेभ्यो भृतिं दत्वा स्वापत्तौ तद्धनं हरेत्।
राजा स्वापत्समुत्तीर्णस्तत् स्वं दद्यात्सवृद्धिकम् ॥ ११ ॥ (शुक्र० अ० ४. ii)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार भी सब उपायों से धन संग्रह करे और उस के द्वारा राष्ट्र की रक्षा करे।"[1] इस प्रकार इस प्रसङ्ग में आचार्य शुक्र ने धन की महिमा बता कर धन-संग्रह के लिये सभी उचित और अनुचित (येन केन प्रकारेण) उपायों को बरतने का निर्देश किया है। कर संग्रह के इन उचित और अनुचित उपायों की उन्होंने स्वयं ही संक्षिप्त व्याख्या करदी है—

"वह मनुष्य जो धन को उचित उपायों से कमाता है और उचित ढंग पर खर्च करता है, पात्र है; इस से उलटा करने वाला व्यक्ति अपात्र है। राजा को चाहिये कि वह अपात्र का सम्पूर्ण धन ज़बरदस्ती ले ले, यह करने से राजा को पाप नहीं लगता है। पापी व्यक्ति का सारा धन राजा को छीन लेना चाहिये। धोखे से, बल से या चोरी से शत्रु राष्ट्र का धन छीन लेना चाहिये। परन्तु इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि जो राजा अपनी प्रजा को धन प्राप्त करने के लिये तंग करता है प्रजा उस के विरुद्ध होजाती है और शत्रु उस देश पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।"

इस प्रकरण में तो आचार्य शुक्र एक साम्यवादी प्रतीत होते हैं। उन के अनुसार जो व्यक्ति समाज की रचना का अनुचित उपयोग उठा कर, बुरे उपायों से, धनी बन जाते हैं उन की सम्पत्ति राष्ट्र को ज़प्त कर लेनी चाहिये। यह कर-सिद्धान्त साम्यवादियों का है।

आय के ये स्रोत कर रूप में नहीं हैं, इन्हें ऊपर की आय समझना चाहिये, इन से पूर्व हमने जिन आय के स्रोतों का वर्णन किया था वे सब कर रूप में ही थे। शत्रु राष्ट्रों को अपने आधीन लाकर उन से भेंट लेने के पक्ष में ही आचार्य

---

१. बल मूलो भवेत् कोशः कोशमूलं बलं स्मृतम्।
बल संरणात् कोश राष्ट्र वृद्धिरिति क्षयः॥ १४॥
येन केन प्रकारेण धनं सञ्चिनुयात् नृपः।
तेन संरक्षयेद्राष्ट्रं बलं यज्ञादिकाः क्रियाः॥ २॥

२. स्वागमी सद्व्ययी पात्रमपात्रं विपरीतकम्।
अपात्रस्य हरेत् सर्वं धन राजा न दोषभाक्॥ ६॥
अधर्म शीलात् नृपतिः सवशः संहरेद्धनम्।
छलाद् बलाद्दस्यु वृत्या परराष्ट्राद्धरेत् तथा॥ ७॥
त्यक्त्वा नीति बलं स्वीय प्रजा पीड़नतो धनम्।
सञ्चितं येन तत्तस्य स राज्यं शत्रुसाद्भवेत्॥ ८॥

(शुक्र० अ० ४. ii)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्र ने अपनी राय दी है। इन भेटों से राष्ट्र का कोश बहुत बढ़ता है।[1] इन भेटों को छोड़ कर राष्ट्रीय आय के लिए राष्ट्रीय व्यवसाय आदि किसी अन्य साधन का वर्णन शुक्रनीति में नहीं प्राप्त होता।

इस कर प्रकरण से हम करों के सम्बन्ध में निम्न लिखित परिणाम निकाल इस लेख को समाप्त करते हैं—

१. राष्ट्र भर की सब समाजों, जातियों तथा संघों पर समान रूप से कर लगाना चाहिये।[2] कोई भी समूह करों से वञ्चित न रक्खा जाय।

२. जिस व्यक्ति या समूह पर जो कर निश्चित किया जाय वह उस से शीघ्र ही ले लेना चाहिये। उसको चुकाने की प्रतीक्षा देर तक नहीं करनी चाहिये— "भूमि कर, भृति, आयात निर्यात कर, व्याज और जुर्माना आदि शीघ्र ही चुका लेने चाहिये।"[3]

३. कर संग्रह कर्त्ताओं का यह कर्तव्य है कि वे अपने हिसाब को खूब स्पष्ट रक्खें। कर की दर, वस्तु परिमाण, प्राप्त कर आदि की विस्तृत सूचियाँ उन्हें बनानी चाहिये।

४. कर राष्ट्र के सामूहिक हित के लिये ही लिया जाता है यह बात सदैव स्मरण रखनी चाहिये। इस लिये सदैव लाभ पर ही कर लेना चाहिये। सब प्रकार के करों- चुंगी, आन्तरिक कर और भूमि कर-को उसी अवस्था में पुष्ट किया जासकता है जब कि वे लाभ पर लिये जा रहे हों। भूमि कर तब लेना चाहिये जब कि किसान को अपने व्यय से कम से कम दुगनी आय अवश्य हुई हो। भूमि में या कृषि के साधनों में जब सुधार किया जा रहा हो तब भी कर नहीं लेना चाहिये। नये व्यवसायों से तब तक कर नहीं लेना चाहिये जब तक कि उन से आय न होने लगे।[4] इस प्रकार कर-मुक्ति द्वारा नए व्यवसायों को संरक्षण देना चाहिये। प्रत्येक पदार्थ पर एक बार कर अवश्य लगना चाहिये, साथ ही किसी वस्तु पर दुहरा कर नहीं लगना चाहिये।

---

१. मालाकारस्य वृत्यैव स्वप्रजा रक्षणेन च।
शत्रुं हि करदीकृत्य तद्धनैः कोशवर्द्धनम् ॥ १८ ॥

२. सर्वतः फलभुग् भूत्वा दासवत् स्यात्तु रक्षणे ॥ १३० ॥

३. भूविभागं भृतिं शुल्कं वृद्धिमुत्कोचकं करम्।
सद्य एव हरेत् सर्वं नतु कालविलम्बनैः ॥ १२३ ॥

४. शुक्र० अ० ४. ii. श्लोक १०९, ११४, और ११९।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयानक बदला

(ले० श्री पं० आनन्द स्वरूप जी विद्यालङ्कार)

ऐ ! गरीब बकरी ! कसाईखाने जाते हुए क्यों कहराती हो ! अपना दुखड़ा किसे सुनानी हो। तुम रोती हो, लोग हँसते हैं। तुम पुकारती हो, वे खिलखिलाते हैं। तुम सहायता के लिये उनके पास जाओगी, वे तुम्हें कसाई के हाथ दे देंगे। फिर भी रोओ जितना रो सकती हो, चिल्ला सकती हो, इस लिये नहीं कि कोई तुम पर रहम करेगा, पर इस लिये कि शायद तुम्हारे रोने से ऊपर से आसमान गिर पड़े, जलता हुआ सूरज इस शैतानी दुनियाँ को जला डाले।

रहम ! रहम किससे चाहती हो ! आदमी खतम हो चुके और शेर ही बसते हैं। जो हर वक्त तुम्हारे खून के प्यासे हैं। फिर भी रोओ जिस से कि इस दुनियाँ पर आग के शोले बरसें और यह दुनियाँ खतम हो जाय।

बेचारी बकरी रो भी न सकी, रोते २ आँखों के आंसू खतम होगए। चिल्लाते २ गला बैठ गया। भागना चाहा पर भागते २ टाँगों में बल ही न रहा कि वे भाग सकें। वह थक कर जल्लाद के पैरों पर ही गिर पड़ी टाँगें बाँध दी गईं। पर वे तो थकान से पहिले ही बंध चुकी थीं। आखिर बकरी ने एक दफा फिर जल्लाद की तरफ देखा कि उस के दिल में रहम आजाय। कहरा न सकी गला बन्द हो चुका था; रो न सकी, आँसू सूख चुके थे। आखीरी तरीका खाली दीन-दृष्टि का था।

यही उसकी आखीरी जबान थी जिससे उसने रहम की याचना की। इस दफा आँखों ने भी जवाब दे दिया। कसाई की छुरी सामने थी। आँखें भी बन्द हो गईं। शरीर भय से सुन्न हो गया। वह हिल भी न सकी, शरीर में कंपकपी भी बन्द हो गई।

कसाई ने छुरी फेरी, पर बकरी पहिले ही इस दुनियाँ को छोड़ चुकी थी। उस पर रहम करने वाला दुनियाँ में न मिला—वह फरियाद करने इस से दूसरी दुनियाँ में चली गई। जाती हुई कह गई "बदला लूँगी"! पर किसी ने सुना नहीं। सुनाना चाहती थी, पर गला जवाब दे गया था। दिल में कहा—पर कसाई ने नहीं सुना—वह छुरी तेज कर रहा था। उसे मालूम नहीं था कि उसका भी जल्लाद उस के लिये ठीक वैसे ही छुरी तैय्यार कर रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज कसाई की बारी है। उसका जल्लाद आया। कसाई डर गया। अपने गुनाहों की माफी माँगने लगा। जवाब था कि क्या तुमने भी किसी पर रहम किया है? गिड़गिड़ाया, पर बेफ़ायदा। रिश्तेदारों को मदद के लिये बुलाया पर कोई न आया। जल्लाद उसे सब के सामने खींच ले गया; माँ, बाप, भाई, बहिन रोये पर किसी की हिम्मत न पड़ी कि जल्लाद के सामने जासके। उस के हाथ पैर बाँध दिये गये। वह बिस्तरे पर बेसुध पड़ा है। हिलना चाहता है पर टाँग नहीं हिलती। बोलना चाहा पर गुन २ कर के रह गया, आवाज न निकली। आखीरी दफा फिर चिल्लाया—"बचाओ, बचाओ, बकरी मेरी जान लेना चाहती है।" पर बचाने वाला कोई न था। मित्र-दोस्त रोये, चीखें मारीं पर उसे बकरी के शिकञ्जे से कोई न बचा सका। आँखें आखीरी दफा खुलीं पर किसी को देख न सकीं। यह दुनियाँ खाली अन्धेरा दिखाई दिया। आँखें बन्द होगईं, जल्लाद की छुरी तय्यार थी। एक २ अंग में से प्राण निकलने लगा। हाथ पैर ठंडे होने लगे। वेदना असह्य थी। पर उसको प्रकट करने की ताकत न थी। शरीर हिला भी नहीं। जबान बन्द हो चुकी थी। चेहरे पर देखने से मालूम होता था कि असीम दुख है, पर उस की कोई दवा न थी। आँखें पलट गईं—उसका भी शरीर श्मशान में वैसे ही भूना गया जैसे कि उसने बकरी को भूना था।

आज अदालत का दिन है। बकरी मुद्दई है और कसाई मुद्दाला। बकरी की तरफ से वेद, शास्त्र, सब वकील हैं। मुद्दाला अकेला है। उसका दिल भी मुद्दई का गवाह बन गया है। जज ने पूछा कि 'तुमने अपराध किया है?' कसाई के पास जबाब न था। सामने नरक की दधकती हुई आग दिखाई देती थी। धीमी आवाज में बोला "माफी"! जज ने कहा—'तुमने बेगुनाह को भी माफ़ नहीं किया, तुम्हें माफ़ी कैसे?'। आज उसको कैद होगई। मानुषिक कैद नहीं जिस में कि २० साल में छुटकारा हो जाता है, पर कई जन्मों की कैद। आज कसाई और बकरी में बड़ा फर्क है; बकरी का दुख से आखीरी छुटकारा कुछ मिनट में हो गया था पर कसाई को नरक में कई जन्म उसी तकलीफ़ में काटने हैं। ओः! कैसा बदला है! भयानक बदला है!!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गति"

ले० श्री प्रो० सांभी राम जी एम० एस० ए० एलिज़ोना (अमेरिका)

मनुष्य तभी पूर्ण होता है जब कि वह खेलता है। प्राणियों में गति का होना आवश्यक है। गति शून्य प्राणि का जीवन नष्ट होजाता है।[1]

पिल्ले, बिल्ली के बच्चे, मेमने और बालक की स्वाभाविक रूपसे यदि खेल में प्रवृत्ति नहीं है तो अवश्य ही वे रोगी होंगे। खेल कूद बच्चों का जन्म सिद्ध अधिकार है, उसके बिना ज़िन्दगी मान्दगी है। यदि हम किसी बच्चे को ज़बरदस्ती खेल से वञ्चित करदें तो सदा के लिए उसका दिमाग़ पराधीन रह जायगा अर्थात् वह किसी भी काम में अग्रेसर होने के लिये उत्साहित नहीं होगा और अवश्य ही दूसरों का अनुयायी बनना चाहेगा।

देहाती बच्चों को देखिये कि वे अपने आप ही खेल कूद को अपना धर्म बना लेते हैं। उन को खेल में प्रवृत्त करो या न करो वे स्वयं टोलियाँ बना कर या तो गांव के समीप ही खेलने लग जाएंगे या जंगल में जाकर कुत्तों से खरगोश का शिकार करवाएंगे। पक्षियों को पत्थरों से उड़ाएंगे और बन्दरों की तरह वृक्षों की टहनियों पर झूलेंगे।

खेल का उत्तम से उत्तम लाभ समवयस्कों में ही हो सकता है, क्योंकि यदि वे आपस में लड़ें झगड़ें भी तो इस में बहुत अन्याय नहीं हो सकता। अपने समवयस्कों में बालक नई नई सफलताओं को विजय के शब्दों में प्रकट करता हुआ न केवल अपना उत्साह ही बढ़ाता है अपितु अपनी मातृभाषा में भी निपुणता प्राप्त कर लेता है। बड़ों की संगति में बालक सदैव अपने आप को लज्जित अनुभव करता है, क्योंकि बड़ों की आज्ञा को न चाहते हुए भी उसे मानना पड़ता है; जिस से उस की अपनी बुद्धि के अनुसार आगे बढ़ने का उत्साह नष्ट हो जाता है। यह भी संभव है कि बालक अपने आयुधर्म के विरुद्ध बड़ों की संगति से आलस्य या वैराग्य की शिक्षा प्राप्त करे। फिर जो तेज़ी व फुर्ती अपने समवयस्क बालकों में हो सकती है वह बड़ों की संगति में नहीं प्राप्त हो सकेगी; और जो बाल्यावस्था मनुष्य-जीवन की तैय्यारी के लिये बनाई गई है, नष्ट हो जायगी। अन्त में खेल का पूर्ण लाभ तभी हो सकता है जबकि हम खेलते हुवे आनन्द में खेल के अतिरिक्त दुनियां

(1) "Man is whole only when he plays; and animals must move or cease growing & die—"Youth" by Dr. G. Stanly Hall.

(2) "Child welfare magazine of America" march 1923.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सब काम काज भूल जायें और ऐसा आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है जबकि खिलाड़ियों में कोई बड़ी आयु का आदरणीय मनुष्य न हो क्योंकि उस की उपस्थिति में न तो वे कहकहा मार सकेंगे, न चिल्ला सकेंगे, और नांही वे शब्द जो समवयस्कों में बिलकुल जायज़ हैं, बोल सकेंगे।

इन उपरोक्त पंक्तियों का यह तात्पर्य बिलकुल नहीं है कि बड़ी आयु वाले मनुष्य छोटे बालकों के साथ कभी खेल में भाग ही न लें या उन खेलों का निरीक्षण ही न करें। मतलब यह है कि बालक प्रायः अपनी समान आयु वालों में ही खेलें और यदि बड़ी आयु वाले उनकी खेल में भाग लेना चाहें तो वे भी अपने में बाल-प्रकृति धारण कर लें। अर्थात् बालकों में बालक बन जायें ताकि उन की स्वतन्त्रता में बाधा न पड़े।

खेल नियम पूर्वक होनी चाहिये, ऐसा न हो कि कभी होगई और कभी नहीं। उत्तम तो यह है कि हम प्रतिदिन खेलें। यदि यह कहें कि एक आध दिन की खेल सप्ताह भर के लिये पर्य्याप्त है तो उसी एक आध दिन का भोजन भी सप्ताह भर के लिये काफ़ी होना चाहिए। डाक्टर रौस [3] लिखते हैं कि "हृदय के रोग प्रायः अनियमित व्यायाम की थकावट से होते हैं। बहुत से आदमी कभी २ व्यायाम करते हैं, और वह भी कभी तो आवश्यकता से कम और कभी आवश्यकता से अधिक। हमें प्रतिदिन के व्यायाम में ठीक उतनी थकावट होनी चाहिये जितनी कि रात भर के विश्राम से बिल्कुल उतर जाय।"

बच्चों की प्रत्येक खेल का ढंग और स्थान, माता पिता तथा अध्यापकों के निरीक्षण में रहने चाहिये नहीं तो बच्चों के आचार व्यवहार बिगड़ने का अन्देशा रहता है। निरीक्षित खेलों में बालकों में परस्पर न्याय का मादा पैदा होता है, निरीक्षण रहित खेलों में झगड़ा, मक्कारी आदि अवगुण उत्पन्न हो जाते हैं; खेल में हार मानने की जगह उपद्रव उठने शुरू हो जाते हैं। इस लिये यह आवश्यक है कि खेलों का प्रबन्धक बिना निरीक्षक नियत किये खेल को आरम्भ न होने दे। यदि कोई ख़ास योग्य निरीक्षक न भी मिले तो बालकों में से सब से अच्छे बालक को यह पदवी देकर खेल शुरु कराई जावे। कारण यह है कि सब सामूहिक खेलों में फ़ौज की तरह एक न एक की आज्ञा ज़रूर ही मानी जानी चाहिये।

काम व खेल

जीवन का कुछ लाभ नहीं है यदि उस में कुछ काम न किया जाय। काम करने का शौक बच्चों को प्रारम्भ से ही डालना चाहिये और वह भी ऐसे ढंग से जिस से वे काम को खेल या बालधर्म समझें। काम को करवाने के लिये धमकी या फौजी आज्ञा का प्रयोग नहीं करना चाहिये बल्कि बच्चों को प्रेम से

(3) Principles of Sociology By Dr. E. A. Ross, pp. 16,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझाना चहिये कि कुटुम्ब का काम अधिक होगया है, पिता धनोपार्जन में लगा रहता है और माता घर के काम से थक जाती है, क्योंकि वह भी परिवार का भाग है अतः शक्ति के अनुसार उस के कुछ काम कर लेने से घर का काम हलका हो जायगा।

मात पिता को स्मरण रखना चाहिए कि चाहे वे गरीब हों या अमीर, बच्चों को काम की आदत डालना उनका पैतृक धर्म है। यदि घर का काम नहीं है तो धनी माता पिता को बच्चों के लिये कला कौशल के छोटे२ अस्त्र (उदाहरणार्थ बढ़ई के औज़ार, लोहार के हथियार, खेती का छोटा २ सामान, चित्रकारी की वस्तुएं, कपड़ा सीने तथा भोजन बनाने का सामान) खरीद देने चाहियें। इस से एक पन्थ दो काज होंगे। ये खेल के सामान जो उनके लिये आज तक नकली हैं, कल असली हो जायँगे; क्योंकि आज की नकल कल की तैय्यारी है। वह बच्चा जो खेल के लिये ऐसे हथियारों का प्रयोग करता है खेल को जीवन का एक भाग बना लेता है, जिस का लाभ किसी स्कूल या यूनिवर्सिटी की विद्या से कम नहीं होता। मिस्टर कैबट अपनी पुस्तक में बच्चे के काम के विषय में लिखते हैं कि जो बच्चे बचपंन ही से काम करना सीखते हैं वे बड़े होकर आदमियों में बड़े आदमी, शिकारियों में बड़े शिकारी, विद्यार्थियों में बड़े विद्यार्थी, धनियों में बड़े धनी और सेवकों में बड़े सेवक बनते हैं। इसके विरुद्ध यदि उन्हें काम से वञ्चित रक्खा जाय तो वे दुनियाँ में दुखियों में से दुखी अपने आप के लिये बोझ तथा समाज के लिये हानिकारक सिद्ध[1] होंगे।

बच्चों को रिश्वत पर काम करने की आदत नहीं डालनी चाहिये। किसी काम से इन्कार करने पर शारीरिक दण्ड देना अनुचित है। जहाँ तक हो सके बच्चों से जबरदस्ती काम न लिया जाय बल्कि उन से ऐसे प्रेम से काम लें जिस से वे अपने आप ही उस काम के करने में गौरव समझें। उदारणार्थ एक कथा लिखी जाती है जिस में ब्रेडले[1] नामी बच्चे को उस की माता ने बिना रिश्वत दिये तथा बिना शारीरिक दण्ड दिये कैसे प्रेम से उस के हृदय को जीता है। अमरीका की प्रथा के अनुसार कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य का काम बिना मूल्य लिये नहीं करता, चाहे वे मनुष्य परस्पर कितने ही सम्बन्धी क्यों न हों, अर्थात् काम करने

1. "What men live by"—By R. C. Cabot, pp. 5, 6 & 65.
1. "Teaching the Boy to-work"-By Wm. A. mc. Keever.
"Child welfare magazine" May 1923, pp. 372-5.
"The Constructive Interests of Children" Dr. Kent.
"Gentle measures and Training the Young." pp, 4-43.
"Pedagogical Seminany" Dec. 1896, pp 129.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पुत्र पिता के पास मज़दूरी का बिल भेज देगा और इसी प्रकार भाई भाई के पास, इत्यादि। इसी प्रथा के अनुसार ब्रेडले भोजन करने के लिये जब टेबल पर आता है तो निम्नलिखित बिल माता के सामने टेबल पर रख देता है—

माता मेरे इस बिल की ऋणी है:—

(१) सन्देश भेजने के लिये.....५ पैसे
(२) घर में अच्छे वर्ताव के लिए ५पैसे
(३) भजन गाने के लिये .....५ पैसे
(४) साधारण सेवा इत्यादि के लिये ५ पैसे

कुल योग .... ५ आने

अपका पुत्र—
ब्रेडले

माता ने यह बिल उठाया और थोड़ी देर मुस्करा कर ५ आने लिफ़ाफे में बन्द करके एक अपना निम्नलिखित बिल बना कर इस लिफ़ाफे के पास ही टेबल पर रख दिया।

ब्रेडले मेरे इस बिल का ऋणी है:—

विषय	रू० आ० पा०
मातृ सेवा के लिए.....	०-०-०
बीमारदारी के लिये.....	०-०-०
वस्त्र तथा खिलौने आदि के लिये	०-०-०
भोजन आदि के लिये	०-०-०
कुलयोग	०-०-०

आप की हितचिन्तका—
माता

इस बिल के पढ़ते ही ब्रेडले की आँखों से आँसू निकल पड़े और बिल के ५ आने लौटाता हुआ माँ के हृदय से चिपट सिसक २ कर कहने लगा-माँ-माँ—आँ—मैं भूल गया। तेरा बिल प्रेम है, विषय विषय में तेरे जितने शून्य हैं, ये सब प्रेम-प्रेम-प्रेम हैं और उन सब का योग प्रेम का सागर है। मैं भी आज से जो तेरी सेवा करुँगा प्रेम के लिये ही करूँगा।

इस कथा से यह हर्गिज़ न समझ लेना चाहिये कि बच्चों को खर्च के लिये पैसा दिया ही न जाये। पैसा तो दो, पर किसी काम के बदले में नहीं। नियमित समय पर थोड़े २ पैसे अपनी आर्थिक अवस्था के अनुसार देना उचित है जिस से कि उन्हें बाजार में खरीदने फ़रोख्त करने में स्वतन्त्र अवसर मिले। बच्चों को कुछ पैसे देने से वे व्यापार आदि ढंग जान जायँगे।

(1) "Children's story Sermons, By Dr. T. Kerr.

"पहिचान"

(ले० श्रीयुत गुप्त विद्यालंकार)

(१)

सार्वजनिक कार्यों में दिन रात लगे रहने वाले लोग प्रायः विवाह कर के एक बड़ी मुसीबत-अपने सिर पर डाल लेते हैं। वे स्नेह-प्राप्ति की अभिलाषा से यह सोच कर विवाह करते हैं कि जब हम रोज़ी के लिए आवश्यक कार्य करने बाद शेष समय में जनता और राष्ट्र की सेवा कर के कुछ मिनटों के लिए अपने घर में जाएँगे—तो गृहस्थ की मालकिन के स्नेहपूर्ण व्यवहार से हमारी दिन भर की थकावट शान्त होजाया करेगी। परन्तु दिन भर जी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ कर परिश्रम करने के बाद घर पहुंच कर जब उन्हें घर वाली के व्यङ्गय पूर्ण उलाहने मिलते हैं, तब उन्हें अपनी भूल साफ़ प्रकट होने लगती है।–स्नेह किसी के हृदय में यूंही, मुफ़्त में देने के लिए नहीं भरा होता है, वह कुछ प्रतिदान भी चाहता है।

डाक्टर रामनाथ P. M. S. ने भी विवाह कर के इसी प्रकार की भूल की थी। जब शान्ता घर में आई थी तो वह समझते थे कि दिन भर शहर की सभाओं में लड़ झगड़ कर मेरा हृदय जितना खिन्न होजाता है उसे शान्त करने के लिये शान्ता सचमुच अपने नाम को कृतार्थ किया करेगी। परन्तु प्रातः काल ही घर से बिदाई लेकर सूर्यास्त होने के बाद जब डाक्टर साहब घर के आंगन में पधारते थे तब शान्ता सिर झुका कर नाराजगी से जो दो एक वाक्य कहा करती थी उनसे डाक्टर साहब की आशा लता शीघ्र ही मुरझा गई। यह बात नई नहीं है। निरन्तर १८ वर्षों से इसी प्रकार का स्वागत पाकर डाक्टर साहब इस स्वागत के पूर्ण अभ्यस्त होगए हैं। परन्तु इतनी मुद्दत के बाद इन दिनों एक नया प्रश्न खड़ा होगया है, जिस के कारण डाक्टर साहब घर आने से भी घबराने लगे हैं।

रात के आठ बजे थे। त्रयोदशी का चांद पूर्व दिशा में कुछ ऊपर होकर घरों में झांक रहा था। इसी समय डाक्टर साहब ने घर में प्रवेश किया। आंगन में आकर वह एक कुर्सी पर बैठ गए। आज वह बहुत अधिक थके हुए थे, म्युनिसिपैलिटी के आज के अधिवेशन में पानी के नलों का कर बढ़ाने का प्रस्ताव पेश था, डाक्टर साहब इस प्रस्ताव के विरोधियों के अगुआ थे। आज कई बार उन्होंने जोश में आकर बड़े मार्मिक शब्दों में अपीलें की थीं, पानी का दाम बढ़ जाने पर उत्पन्न होने वाले कष्टों का वर्णन किया था, इसके लिये अकाट्य दलीलें दी। परन्तु इतना ज़ोर लगाने पर भी आशा यही थी कि प्रस्ताव पास होजायगा।

प्रस्ताव पर बहस कल के लिये मुल्तवी कर दी गई थी। डाक्टरसाहब बहुत थक गए थे। कुर्सी की पीठ पर अपना सम्पूर्ण बोझ डाल कर वह इसी विषय पर विचार करने लगे। मारे गर्मी के उन के माथे से पसीना चू रहा था।

१५ बरस की बालिका लीला अपने पिता जी को आया देख कर एक पंखा लेकर उन पर हवा करने लगी। एक बार लीला की ओर देख कर डाक्टर साहब कुछ सहम से गए। उन के दिमाग़ से पानी की टैक्स वृद्धि का प्रश्न निकल कर उसके स्थान पर एक और पारिवारिक समस्या चक्कर काटने लगी। एक बार स्नेह से लीला के सिर पर हाथ फेर कर डाक्टर साहब ने उस से पङ्खा ले लिया। लीला बिना कुछ कहे वहां से चली गई।

डाक्टर साहब ने पंखे से हवा करते हुए एक ठण्डा श्वास लिया इसी समय शान्ता उन के पास आकर खड़ी होगई। शान्ता ने खूब गम्भीर होकर कहा–"आज मोचीगेट के सामने कोई मीटिङ्ग न होगी ? तुम्हीं न जाकर एक लैक्चर दे डालो।" डाक्टर साहब यह ताना सुन कर झल्ला उठे। एक बार दुखित नेत्रों से शान्ता की ओर देख कर वह सामने की दीवार पर बैठी हुई बिल्ली की ओर देखने लगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ता ने देखा कि डाक्टर साहब आज कुछ विशेष उदास हैं। उस का अभिप्राय डाक्टर साहब का जी दुखाने का कदापि नहीं था। डाक्टर साहब का मुंह देख कर वह अपने कथन पर स्वयं ही लज्जित हो उठी। थोड़ी देर तक चुप रहने के उपरान्त उस ने बड़ी नम्रता से कहा–"क्यों, आज म्युनिसिपैलिटी की बैठक में क्या निर्णय हुवा?" एक सार्वजनिक कार्य के सम्बन्ध में अपनी पत्नी का साहनुभूति पूर्ण प्रश्न सुन कर डाक्टर साहब को बहुत प्रसन्नता हुई। वह बड़े प्रेम से विस्तार पूर्वक आज के अधिवेशन की कार्रवाई शान्ता को सुनाने लगे। बिल्कुल इच्छा न होते हुए भी शान्ता बड़े धैर्य से "हूं, हां" कर के डाक्टर साहब का लम्बा किस्सा सुनने लगी। शान्ता को यह लम्बा किस्सा बिल्कुल असह्य हो रहा था। मौलवी शराफतुल्ला की दलीलों का बैरिस्टर विनोद ने किस प्रकार खण्डन किया,–ये सब बातें इसके लिए बहुत क्लिष्ट और अरुचिकर थीं। खैर यह हुई कि बीच में ही नौकर भोजन परोस कर ले आया, नहीं तो न मालूम बेचारी शान्ता को कितनी देर तपस्या करनी पड़ती। नौकर के भोजन धरते न धरते शान्ता वहां से उठ कर भाग खड़ी हुई।

रात को सोने से पूर्व शान्ता ने फिर कहा—"तुम्हें मुल्क भर की तो फिकर है। कभी किसी मीटिङ्ग में जाते हो, कभी किसी जलसे में; कभी किसी का स्वागत करने जाते हो, कभी किसी को विदाई देने। क्या केवल हम घर के लोग ही तुम्हारी इस मेहरबानी से महरूम रहेंगे। देखो, लीला इतनी बड़ी होने में आई, इतने दिनों से मैं तुम्हें यह बात कह रही हूं, तुमने अभी तक उसके लिए वर खोजने का यत्न भी नहीं किया। रोज "हूं, हां' कर के टाल देते हो।"

सचमुच बहुत दिनों से शान्ता लीला के विवाह की बात डाक्टर साहब से कर रही थी। इसी कारण उनको घर जाना भी एक मुसीबत जान पड़ने लगा था। अगर और कोई दिन होता तो वह पहले की तरह शान्ता को टरका देते परन्तु आज शान्ता के व्यवहार से वह बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने सोचा–"सचमुच, शान्ता की यह शिकायत बेजा नहीं है। मैं घर के मामलों की ओर बहुत कम ध्यान देता हूं। लीला अब बड़ी होआई। मुझे उस के लिए वर की तालाश करनी चाहिये।" इस के बाद उन्होंने सोचा—"मैं रोज सार्वजनिक कार्यों में सिर खपाता हूं, मुझे इस से लाभ ही क्या है। म्युनिसिपैलिटी के दूसरे मैम्बर मुझे सिड़ी समझते हैं। लोग समझते हैं कि मैं महज़ इज्जत के लिए ये सब कार्य करता हूं। हम रात दिन पब्लिक के लिए दौड़ें, लड़ें, झगड़ें; उस पर म्युनिसिपैलिटी में हमारी ज़रा भी पूछ न हो।" इस के बाद उन्हें फिर आज की म्युनिसिपैलिटी की कार्यवाही याद आगई। उन्होंने सोचा कि क्यों कर मैं भी दूसरे मेम्बरों की तरह महज़ लीडरी का शौक पूरा करने के लिये ही म्युनिसिपैलटी की बैठकों में हिस्सा लिया करूं। यही बातें सोचते २ उन्हें नींद आगई।

(२)

अगले दिन जब म्युनिसिपैलिटी में पानी का टैक्स बढ़ाने के प्रस्ताव पर विचार होने लगा, तब डाक्टर साहब उस अधिवेशन में सम्मिलित नहीं थे। डाक्टर साहब आज तक म्युनिसिपैलिटी की सभी बैठकों में बिलानागा शामिल होते रहे थे। आज उन्हें अनुपस्थित देख कर सभी लोगों ने यही अनुमान किया कि शायद उन के घर में कोई विशेष दुर्घटना होगई है।

अस्तु; जब विरोधी दल का नेता ही उपस्थित नहीं था तब प्रस्ताव फेल होने की की आशा ही कहां थी। डाक्टर साहब के अभाव के कारण आज बहस भी बहुत गरम न हो सकी। शीघ्र ही बहुसम्मति से प्रस्ताव पास होगया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर साहब आज मीटिङ्ग में उपस्थित नहीं थे, प्रातःकाल वह जेल का निरीक्षण करने चले गए थे। उस के बाद वह लीला के लिये वर की खोज करने लगे। सायंकाल जब ५ बजे के करीब डाक्टर साहब घूमते घामते घर के बहुत नज़दीक आ पहुंचे, तब घर की ओर देख कर वह सहसा रुक गए। घर की तरफ जाते हुए उन्हें शरम मालूम होने लगी। आज से पूर्व सदैव जब वह घर में आते थे उन के मस्तिष्क में जातीय सेवा की नागरिक बातें चक्कर काट रहा हुवा करती थीं, आज खाली हृदय उन्हें घर की तरफ जाते हुए बहुत शर्म मालूम पड़ने लगी। म्युनिसिपैलिटी में जल कर वृद्धि का प्रस्ताव पास होचुका है, यह भी उन्हें मालूम हो गया था, इस कारण भी आज उनका हृदय एक अपूर्व दुख से भरा हुआ था। अगर वह स्वयं आज म्युनीसिपैलिटी में गए होते और बावजूद उन के यत्न के जलकर वृद्धि का प्रस्ताव स्वीकृत होजाता-तब भी उन्हें दुख अवश्य होता;-परन्तु उस दुख और इस दुख में भारी भेद था—इस दुख में आत्मग्लानि की तीव्र ज्वाला मिली हुई थी।

डाक्टर साहब घर की ओर और आगे न बढ़ सके। वह धीरे धीरे ठण्डी सड़क की ओर सैर के लिए चले गए।

(३)

सार्वजनिक कार्यों के प्रति डाक्टर साहब की यह उदासीनता स्थिर न रह सकी; पब्लिक जल्सों का वह पुराना महारथी उदासीन होकर बैठ न सका। उन्हों ने फिर से इन कार्यों में भाग लेना शुरु किया। लीला के विवाह की बात को वह बीच में ही भूल गए।

जल कर वृद्धि का प्रस्ताव स्वीकृत होचुका था। शीघ्र ही-नए मास से-यह प्रस्ताव क्रिया रूप में लाया जाने वाला था। लोग इस निर्णय से अत्यन्त असन्तुष्ट थे, उन का कहना था कि म्युनिसिपैलिटी में हमारे प्रतिनिधि अल्प संख्या में हैं। सरकारी नामज़द प्रतिनिधियों की संख्या बहुत अधिक है, इस लिये हम इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकते।

डाक्टर रामनाथ ने देखा कि अगर यत्न किया जाय तो आम पब्लिक बड़ी सरलता से इस प्रस्ताव के विरोध में सब प्रकार का यत्न के लिए तैयार होसकती है। सूखा फूंस ढेर रूप में तैयार है, उस में चिनगारी लगाने भर की देर है। दूसरी ओर उन्हों ने सोचा कि चाहे वह कितना ज़ोर ही क्यों न लगालें, म्युनिसिपैलिटी द्वारा वह अपने उद्योग में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। क्योंकि एक तो उस में प्रजा के वास्तविक प्रतिनिधि हैं ही कम, और जो हैं भी उन में से कुछ पर बेतरह सरकारी खौफ़ की छाप लगी हुई है। यह देख कर डाक्टर साहब ने शीघ्र ही अपने विचार को आन्दोलन का रूप देना शुरु किया। लोग तो तैयार ही थे, एक नेता की ज़रूरत थी। शीघ्र ही इस मांग ने एक ज़बरदस्त आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। बड़ी २ सभाएं होने लगी। अधिकारियों पर गालियों की वर्षा की जाने लगी। शासक लोग कुछ डर गए।

डाक्टर रामनाथ आन्दोलन का यह उग्र रूप देख कर स्वयं भी घबरा गये। उन में प्रजा-हित की आकांक्षा तो अवश्य थी, परन्तु इस के लिये अधिकारी वर्ग को नाराज़ करने की हिम्मत उन में न थी। वह स्वयं सरकारी नौकर थे। वह डिस्ट्रक्ट जेल के निरिक्षक थे, इस के लिये उन्हें २००) रु० मासिक वेतन मिलता था। इस के अतिरिक्त जिले के अन्य चिकित्सालयों का निरीक्षण भी उन्हीं के सपुर्द था, इस कार्य के लिये भी उन्हें २५०) रु० मासिक वेतन मिलता था। इस आन्दोलन के नेता बन कर उन्हें स्वयं चिन्ता होने लगी कि कहीं इन पदों से हाथ न धोना पड़े।

परन्तु जिसे एक बार जनता से सम्मान प्राप्त करने का चस्का लग जाता है-वह उसे सरलता से नहीं भूल सकता। जनता का सम्मान कमज़ोर और नकली नेताओं को बहादुर और असली बना देता है, डाक्टर साहब स्वयं घबराते हुए भी कभी पीछे हटने का भय प्रकट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न करते थे। वह यथासम्भव भविष्य चिन्ता को अपने सामने आने ही न देते थे, अगर कभी अन्य सब विचारों को एक साथ परे ढकेल कर भविष्य चिन्ता उन के मस्तिष्क पर अधिकार कर लेती तो वह अपनी विद्वता और चिकित्सा में निपुणता की बात सोच कर सन्तोष कर लेते। क्या हुवा-अगर सरकार ने मुझे बर्खास्त कर दिया। लोगों में तो मेरी इज्जत और धाक बढ़ ही जायगी। सरकार लोगों को मुझ से दवा लेने से तो बन्द नहीं कर सकती।

परन्तु डाक्टर साहब घर पहुंचते ही बिल्कुल अधीर हो उठते थे। शान्ता के तानों के के मारे उन्हें घर में एक मिनट भी चैन लेना नसीब न होता था। घर पहुंचते ही वह बहुत उदास हो उठते थे। उन्हें अपने पर एक ऐसा भारी बोझ प्रतीत होने लगता था जो उन्हें शीघ्र ही पीस डालेगा; —लोग भड़क रहे हैं, अधिकारी नाराज़ हैं, नौकरी छिनने को है, दूकान पर जाने को भी फुर्सत नहीं मिलती, तिस पर पत्नी नाक में दम कर देती है, बेटी के ब्याह की चिन्ता अलग है।

(४)

क्रमशः जल-कर सम्बन्धी आन्दोलन बहुत उग्र हो उठा। लोग खूब जोश में आकर जलूस निकालते थे;—वन्देमातरम् आदि के नाद से आस्मान को उठा लेते थे। यहां तक कि शुक्रवार के दिन शहर भर में एक व्यापक हड़ताल करने का निश्चय किया गया। अभी शुक्रवार को दो दिन शेष थे। सब लोग हड़ताल को पूर्ण सफल बनाने के लिये यत्न करने लगे। डाक्टर साहब स्वयं इस कार्य के लिए टांगे वालों तक से मिलते थे।

शान्ता का बुरा हाल था। वह बेचारी बहुत चिन्तित थी। वह कई बार तो सोचती थी कि न मालूम मैं अभागी किस दीवाने के हाथ में पड़ी। दुनियां भर चैन की बंसी बजाती हैं, अपने परिवार को खुश करने का यत्न करती है-यहां अपनी लड़की के विवाह तक की सुध नहीं ली जाती। जन्म भर तरसते बीत गया, आज तक इन्होंने कभी मुझ से जी खोल कर प्यार से बात चीत भी नहीं की। खैर, इसे तो मैं जिस किसी प्रकार सह ही रही थी-यह एक नई आफ़त इन्होंने अपने सिर पर ले ली। न मालूम अगर कहीं कुछ होजाय तो मैं कहीं की न रहूंगी। यह सोचते सोचते उसकी आंखों में आंसू भर आए।

रात को डाक्टर साहब दस बजे के बाद घर लौटे। दिन भर हड़ताल के लिये दौड़ धूप करते रहने के कारण वह बिल्कुल बेदम होगये थे। आते ही वह पलङ्ग पर पड़ गए। शान्ता ने आज भोजन नहीं किया था, अभी तक वह आंगन में सिर झुकाए बैठी थी, डाक्टर साहब के घर में आते ही वह फूट फूट कर रोने लगी। डाक्टर साहब का हृदय भी पिघल उठा। उन की आंखों में भी पानी भर आया। परन्तु वह एक अक्षर भी न बोले। मानो वह शान्ता से बड़े दीन भाव में कह रहे थे—"क्षमा करो। मैं बहुत आगे बढ़ गया हूं।"

(५)

आज की हड़ताल एक अभूत पूर्व हड़ताल थी। शहर भर में एक भी मोटर या टांगा नहीं चल रहा था। एक भी कारखाना या दूकान आज खुली हुई नहीं थी। सब जगह सन्नाटा था। शहर भर में एक व्यापक मातम सा छाया हुआ प्रतीत होता था। लोग क्षण क्षण में घबरा रहे थे कि न मालूम अब क्या हो।

११ बज गए। अब तक कोई उपद्रव नहीं हुवा। डाक्टर साहब आज दो चार साथियों के साथ जगह जगह जाकर शान्तिरक्षा के लिये उपदेश दे रहे थे। वह जहां जाते, लोग "वन्देमातरम्" बोल कर उनका स्वागत करते। ११ बजे डाक्टर साहब चौक बाज़ार में खड़े कर होकर लोगों से कुछ बातचीत कर रहे थे कि उन्हें वहां ठण्डी सड़क पर उपद्रव हो जाने का समाचार ज्ञात हुवा। वह बेतहाशा भागे हुए वहां पहुंचे; उन्होंने देखा कि पुलीस सुपरिण्टेण्डेण्ट की मोटर को घेर कर हज़ारों लोग खड़े हैं। डाक्टर साहब को बताया गया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि सुपरि० की मोटर पर आठ दस वर्ष की उम्र के कुछ बालकों ने पत्थर फेंके थे, सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, इस पर उन के रिश्तेदार बच्चों को छुड़वाने आए। इसी बातचीत में यह भीड़ जमा होगई है। डर है कि यह मामला कोई भयङ्कर रूप धारण न कर ले।

डाक्टर साहब शीघ्रता से अपने एक मित्र के कन्धों पर चढ़ कर खड़े होगए। उन्होंने उपस्थित जनता को शान्त रहने और बिखर जाने का उपदेश देना प्रारम्भ किया। इस का लोगों पर जादू के समान असर हुआ। लोग अपने २ घरों को लौटने लगे। इसी समय सुपरिण्टेण्डेण्ट ने मोटर से नीचे उतर कर डाक्टर साहब को मजिस्ट्रेट का वारण्ट दिखा कर अपने साथ मोटर पर बैठने का हुक्म दिया। डाक्टर साहब ने लोगों से कहा—"घबराने की कोई बात नहीं है। केवल शान्ति भंग न होने पाए।' लोग समझ गए कि डाक्टर साहब गिरफ्तार कर लिए गये हैं। मोटर चलदी, परन्तु किसी व्यक्ति ने कोई उपद्रव नहीं किया।

(६)

शीघ्र ही वायु के समान वेग से डाक्टर साहब के गिरफ्तार होने की खबर शहर भर में फैल गई। परन्तु कहीं कोई दंगा नहीं हुआ। हां, लोगों में हड़ताल के लिये और भी उत्साह बढ़ गया—डाक्टर साहब पर सब की श्रद्धा दुगनी होगई।

शान्ता ने जब यह हाल सुना तो उसके तलवों के नीचे से ज़मीन निकल गई। वह प्रातः काल से जिस अनिष्ट की आशंका से कांप रही थी, वह अमङ्गल होही गया। शान्ता बेहोश होकर गिर पड़ी। लीला को भी अपार दुःख हो रहा था। परन्तु वह धीरे धीरे सिसक सिसक कर ही रो रही थी। माता को बेहोश देख कर बालक वीरेन्द्र चिल्ला २ कर रोने लगा। लीला माता को सावधान करने का यत्न करने लगी। घर में भयंकर मातम छागया। डाक्टर साहब के अनन्य मित्र श्रीयुत रामनारायण वकील घर में आकर शान्ता और लीला को आश्वासन देने लगे।

सांयकाल का समय था। शान्ता और लीला दोनों ऊपर के कमरे में फर्श पर बिछी हुई दरी पर ही लेटी हुई थीं। सहसा साथ वाली सड़क पर बैण्ड और बाजे की ऊंची और मधुर ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। लीला जाग कर उठ बैठी। उसने से सोचा आज इस मातम के दिन में यह क्या होने लगा है। उसने खिड़की से मुंह बाहर निकाल कर देखा, लीला-को जो कुछ दिखाई पड़ा उस पर वह विश्वास न कर सकी; उसने देखा कि लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ बाजे गाजे के साथ चली आ रही है। बीच में लोगों ने एक बड़ा फोटो लिया हुवा है। यह फोटो डाक्टर रामनाथ का है। फोटो को खूब अच्छी तरह सजाया गया है; वह चारों ओर से मालाओं से आवेष्टित है। लोग उस पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं। यह जलूस उस के घर की ओर ही बढ़ा आरहा है। लीला ने उत्तेजित स्वर में पुकारा—"मां, मां, ज़रा बाहर देखो।"

शान्ता चौंक पड़ी, वह दोनों हाथों में मुंह देकर कर लेटी हुई थी। लीला की आवाज़ सुन कर वह बड़े अनमने भाव से धीरे धीरे खिड़की के पास आई। उसने सिर बाहर निकाला, सहसा सुनाई दिया—"वन्दे मातरम्!" "महात्मा गांधी की जय!" "डाक्टर रामनाथ की जय!" शान्ता का उदास चेहरा एक दम आत्मभिमान से खिल उठा। वह निर्निमेश नेत्रों ने अपने पति के चित्र की ओर देखने लगी। उस का सारा शोक काफूर होगया! चेहरे पर आत्मिक आनन्द की हलकी मुस्कराहट छागई। झुका हुआ सिर गर्व से तन गया,—उस ने सोचा—"आहा! यही महात्मा मेरे पति हैं!" इस समय तक जलूस डाक्टर साहब के मकान के नीचे आकर ठहरगया। जलूस में शामिल सब लोगों ने शान्ता की ओर देख कर सिर झुका कर उसे प्रणाम किया। इस के बाद सब ने फिर से उन्ही तीनों नारों द्वारा आस्मान को गुंजा दिया। शान्ता इस समय जिस अवस्था में थी उसे वही समझ सकती है। वह इस समय यह अनुभव कर रही थी कि मानो वह सम्पूर्ण उपस्थित जनता की माता है!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

प्रातःकाल डाक्टर साहब ज़मानत पर छूट कर वापिस आए। लोगों ने बड़े उत्साह और समारोह से उनका जलूस निकाला। दोपहर के समय डाक्टर साहब किसी अनिष्ट की आशंका से घबराए हुए घर में प्रविष्ट हुए। वह सोच रहे थे कि इतने सम्मान के बाद अब शान्ता की झाड़ सुननी पड़ेगी।

इसी समय शान्ता ने दौड़ कर उनके चरणों पर सिर रख दिया। शान्ता के चेहरे पर एक विचित्र आत्मभिमान और लज्जा का भाव प्रगट हो रहा था। डाक्टर साहब अचरज में आगए, इसी समय शान्ता ने आवेश से कांपती हुई स्वर में कहा "नाथ, क्षमा करो।" डाक्टर साहब की आंखों में आनन्द के आंसू उछल आये, उन्होंने शान्ता, को उठा कर छाती से लगा लिया और कहा "शान्ता, नौकरी छिन गई।" शान्ता ने लजा कर कहा—"नाथ, इतने दिनों के बाद अब जाकर तुम्हें पहिचान पाई हूं।"

नदी

(ले०— कविवर श्री माल)

करने आयी हूं विश्राम।

भर उमंग में मैंने अपना छोड़ा था सुखधाम—
उमड़ पड़ी, भूतल पर उतरी, घर से क्या अब काम।
शैल शिखायें झुना बढ़ाकर रोक रही थीं द्वार—
घूम घाम कर जैसे कैसे कर पायी हूं पार।
उतर पड़ी भूतल पर आकर, गाती अद्भुत गान—
चली जिधर मुंह उठा उधर ही, दिल में था अभिमान।
भर घमण्ड में यहाँ उजाड़े कितने ही घर बार,
चढ़ नगरों पर मृत्यु—गान है गाया कितनी बार।
घूम घाम कर सभी कहीं हैं देखे बन और ग्राम—
ढूंढा सभी कहीं पर, पाया किन्तु नहीं आराम।
कब से यूं ही भटक रही हूँ, तन में भरी थकान,
कहाँ शरण पाऊँ अब जाकर, उतर गया अभिमान।
शरण न पाकर कहीं विश्व में आयी हूँ इस धाम—
इस सागर में ही मिल मैंने पाया है विश्राम।
चीर हृदय मैं इस के अन्दर समा जाऊँ हो एक समान,
इस में ही मिल, करदूँ अपने जीवन का अन्तिम अवसान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

गुरुकुल-रजत-जयन्ती

अब यह निश्चय हो चुका है कि १६ से २१ मार्च १९२७ को गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी की रजत-जयन्ती धूम धाम से मनायी जायगी। यह अवसर सम्पूर्ण आर्य जनता के लिये हर्ष का, उल्लास का और गौरव का होगा। इस दिन आर्य जनता के प्रारम्भ किये एक महान् परीक्षण की सफलता की दुन्दुभि दिग्दिगन्त में बजाई जायगी। शिक्षा के जिन आवश्यक सिद्धान्तों की रक्षा के लिये आर्य्य-जनता ने आवाज़ उठाई थी, उन की रक्षा हो गई, और उन सिद्धान्तों के परिपुष्ट करने के लिये स्थापित की हुई संस्था २५ साल तक अपूर्व सफलता प्राप्त करती हुई अब तक चलती रही, यह कम गौरव की बात नहीं है। यह दिन भारतवर्ष के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा और आर्य-समाज के इतिहास में तो बिल्कुल अमर हो जायगा। इस दिन गुरुकुल की सफलता की खुशी में प्रत्येक भारतीय के हृदय में रंग चढ़ जायगा क्योंकि गुरुकुल आर्यसमाज का ही नहीं, भारतवर्ष का है!

गुरुकुल सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है। भारत के भावी स्वतन्त्र राष्ट्र को दृष्टि में रखते हुए यहां तय्यारी की जाती है। भारत के राष्ट्र बनने के लिये उदार विचारों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इन्हीं उदार विचारों का पुञ्ज गुरुकुल का वायुमण्डल है। 'उदारता' के साथ 'अपनेपन' के लिये प्रेम उससे भी अधिक आवश्यक है, अन्यथा भारतीय जातीयता का आधार रेतीले टीले पर होगा। ये भाव भी गुरुकुल की नींव में पड़े हुए हैं। गुरुकुल, राष्ट्र के लिये एक भाषा का-हिन्दी का- प्रचार आवश्यक समझता है और २५ साल से इसी उद्योग में लगा हुआ है। गुजराती, मराठे, मद्रासी, ब्राह्मी, संयुक्तप्रान्तीय तथा पञ्जाबी—सभी बालकों को उच्च से उच्च शिक्षा हिन्दी में देकर गुरुकुल ने राष्ट्रीयता के निर्माण में क्रियात्मक कदम रक्खा है। गुरुकुल के स्नातकों का जीवन राष्ट्रीयता के यज्ञ में आहुति के रूप में पड़ा हुआ है क्योंकि वे इसी काम के लिये तय्यार हुए हैं।

गुरुकुल जहाँ राष्ट्रीय संस्था है वहाँ धार्मिक संस्था भी है। भारतीय राष्ट्रीयता का आधार यदि धर्म पर न होगा तो वह राष्ट्रीयता खोखली होगी। भारत का धर्म, उस की सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्य है! भारत के नवयुग में प्रवेश करने के लिये वेदों, उपनिषदों तथा दर्शनों के नए प्रकाश में और नये अर्थों में समझे जाने की ज़रूरत है! प्राचीन सभ्यता को छोड़ते ही भारत की अन्य राष्ट्रों से पृथक् सत्ता के अर्थ ही कुछ नहीं रहते। हमारा भारत अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्यके लिये जीता है। संसार भर में नवीन जीवन का सन्देश पहुंचाना हमारा कर्तव्य है! ऋषियों के जंगलोंमें किये गये अनुभवों को आत्म-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्व का तिरस्कार करने वाले भूले भाइयों के कानों में सुना देना आवश्यक है। इस के बिना भारतीय जागृति अधूरी ही नहीं निकम्मी है। गुरुकुल में यह कार्य दिन-रात के परिश्रम से निरन्तर हो रहा है। गुरुकुल में वेद, दर्शन, उपनिषदें पढ़ाई जाती हैं परन्तु अर्थशास्त्र, इतिहास, पाश्चात्य विज्ञान तथा दर्शन, अंग्रेजी आदि अन्य विषय साथ ही पढ़ाये जाते हैं। यहां पूर्व—पश्चिम का अद्भुत तथा अनोखा मेल है जो भारतीय जागृति के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

'जातीयता' तथा 'धार्मिकता' की भी आधार शिला 'सच्चरित्र'-'सदाचार'-है! अन्य संस्थाओं पर कीचड़ फेंकना हम अपना काम नहीं समझते। हम इतना अवश्य जानते हैं कि गुरुकुल में जाति की सेवा करने वाले बालकों के चरित्र को सुघटित बनाने के लिये पूरी मेहनत की जाती है। गुरुकुल का बड़ा भारी उद्देश्य यह है कि यहाँ रहते हुए हमारे देश के नवयुवक आत्मिक बल का संचय करें, अपने संचित बल को परखें और अपनी त्रुटियों का पता लगा कर उन्हें दूर करें और फिर शक्ति-संचय में लग जांय। देश को उठाने के लिये ऐसे चरित्र वान्, देशभक्त नौजवानों की ज़रूरत है। इस संस्था के युवक बाल्यावस्था में ही जड़ में लग जाने वाले घुन से बचे रहते हैं। उन्हें उच्च विचारों तथा आदर्शों में पाला जाता है। 'सदाचार' की मज़बूत चट्टान उनके जीवन रूपी भवन की नींव में डाल दी जाती है क्योंकि इस के बिना जातीयता की इमारत कच्ची रह जाती है।

इस प्रकार की अद्वितीय संस्था अपने जीवन के २५ साल समाप्त करने वाली है। उस के लिये समारोह-पूर्वक उत्सव मनाना है। १० लाख की अपील की गई है। हम अपने भाइयों से भारतीयता के, राष्ट्रीयता के और सहधर्मिता के नाते अनुरोध करते हैं कि वे इस कार्य में तन-मन-धन से सहयोग देकर इसे सफल बनावें क्योंकि इस संस्था की सफलता हमारे राष्ट्र के विजय की अनेक घोषणाओं में से एक होगी और हमारे मृत प्राय देश में नव जीवन का सञ्चार कर देगी।

गुरुकुल समाचार

ऋतु—आजकल ऋतु सुहावनी है। सूर्य और चाँद बादलों के आँचल में मुंह छिपाये रहते हैं। वर्षा की झड़ी लगी रहती है। आकाश पर विश्वास करना अपने आप को धोखा देना है क्योंकि मालूम नहीं बादल कब बरस पड़ेंगे। सारा जंगल नानाविध वनस्पतियों की हरियाली से हराभरा है। गंगा इस समय अपने यौवन पर हैं। गंगा में तैरने का ब्रह्मचारी और उपाध्याय गण खूब आनन्द उठा रहे हैं। मलेरिया के लक्षण यत्र तत्र गोचर हो रहे हैं।

अवकाश—सत्रान्तावकाश १६ अगस्त से आरम्भ होंगे। महाविद्या-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय फिर १९ अक्टूबर को खुलेगा। उपाध्याय और ब्रह्मचारी छुट्टियों में धन संग्रह का कार्य भी करेंगे। मध्यप्रदेश में श्री प्रो० सत्यकेतु जी, और श्री मा० गोपाल जी धन संग्रह के लिए घूमेंगे। क्वेटा में, श्री उपाचार्य पं० विश्वनाथ जी और श्री प्रो० सत्यव्रत जी सम्पादक 'अलंकार' चन्दे के लिये जायंगे। बिहार में श्री पं० धर्मदत्त जी वि० अ० और श्री प्रो० देवराज जी सेठी जांयगे। श्री आचार्य प्रो० रामदेव जी कलकत्ता धन संग्रह के लिये जायंगे। इन के सिवाय अन्य डेपुटेशन भी अन्य जंगहों में जांयगे। गुरुकुल महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने रजत-जयन्ती के पुण्य अवसर पर १० हजार की एक थैली कुल माता के चरणों में अर्पण करने का निश्चय किया है। अपने इस पुण्य निश्चय की सफलता के लिये ब्रह्मचारी गण सर्वत्र भ्रमण करेंगे। हमें विश्वास है कि राष्ट्रीय शिक्षा के प्रेमी तथा गुरुकुल के प्रेमी महानुभाव ब्रह्मचारियों के इस अपने शुभ निश्चय को कार्य रूप में परिणत करने में पूरी सहायता देंगे।

———

पार्लियामेण्ट—गुरुकुलीय पार्लियामेण्ट का अधिवेशन १, २, और ३ अगस्त को होगया। इस वर्ष पार्लियामेण्ट के सभ्य उदार दल, राष्ट्रीय तथा मज़दूर दल, स्वतन्त्र दल और अनुदार दल में बटे हुए थे। इन दलों के नेता क्रमशः ब्र० अवनीन्द्र, ब्र० धर्मानन्द और ब्र० विष्णुमित्र थे। प्रधान मन्त्री ब्र० ओम्प्रकाश ने 'शिक्षा सुधार बिल' पेश किया था। इस का उदार दल के अतिरिक्त स्वतन्त्र दल और अनुदार दल ने भी समर्थन किया। राष्ट्रीय तथा मज़दूर दल अकेला विरोध में था। कुछ आवश्यक परिवर्तनों के साथ बिल पास होगया।

———

जन्मोत्सव—कुल की सब से पुरानी सभा साहित्य-परिषद् का नाम भारत में वैदिक अन्वेषण के कार्य में सर्वत्र आदर से लिया जाता है। ४ श्रावण को इस सभा का जन्मोत्सव था। सभापति का आसन श्री उपाचार्य जी ने और श्री स्वामी हरिप्रसाद जी ने ग्रहण किया था। श्री स्ना० गुरुदत्त जी का निबन्ध और श्री स्ना० चन्द्रगुप्त जी की गल्प स्मरणीय वस्तुएं हैं। इस अवसर पर श्री स्ना० देवशर्मा जी द्वारा लिखित 'तरंगित हृदय' पुस्तक सभ्यों को बाँटी गई। सायंकाल प्रीतिभोज ने साथ उत्सव सानन्द समाप्त हुआ।

———

मंसूरी-डेपूटेशन—गुरुकुल के कुछ उपाध्याय पिछले दिनों मंसूरी शैल पर गुरुकुलार्थ धन-संग्रह के लिए गये। डेपुटेशन को बहुत सफलता प्राप्त हुई। महाराज नाभा ने दिवाली पर गुरुकुल में पधाने का वचन दिया है।

———

यात्रापर—रसायन के विद्यार्थी अपने उपाध्याय के साथ खाँड का कारखाना देखने अमृतसर और लाहौर १४ अगस्त को जा रहे हैं। आशा है ब्रह्मचारियों की यह यात्रा उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए, अमूल्य ग्रन्थ-रत्न संपूर्ण छप गया

वेद के प्रेमी अवश्य पढ़ें!

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न
वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी का बनाया

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़ें। यह यास्क मुनि के प्रसिद्ध 'निरुक्त' का हिन्दी में सरल, सरस तथा सुबोध भाष्य है जो कि दो भागों में समाप्त हुआ है और डाक-व्यय रहित कीमत केवल ७) रुपया है। अनेक सूचीपत्र देकर ग्रन्थ को बहुत अधिक उपादेय बनाया गया है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा एम. ए. पी. एच. डी वाइस-चान्सरल इलाहाबाद युनिवर्सिटी, प्रिन्सिपल गवर्नमैण्ट कालेज काशी, प्रिन्सिपल हिन्दू विश्वविद्यालय काशी, श्री रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० घासीराम जी एम. ए. प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त, श्री सातवलेकर जी संपादक वैदिक धर्म, श्री मा० आत्माराम जी राज्यरत्न बड़ोदा, भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एलएल. बी. वाइस चान्सरल तिलक-विद्यापीठ पूना, इत्यादि प्रसिद्ध महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, और सभी ने वेदप्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। महाभारत में लिखा है कि निरुक्त शास्त्र के प्रचार के बिना वैदिक कर्म-काण्ड लुप्त हो गया था। यदि आप वेद का सच्चे अर्थों में प्रचार करना चाहते हैं, तो इस निरुक्तभाष्य को अवश्य पढ़िए। वेदार्थ करने की कुञ्जी 'निरुक्त' को प्राप्त किए बिना वेद के खज़ाने को पाना केवल स्वप्न देखना है।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्ता 'अलंकार'
डा० गुरुकुल कांगड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य पर अंग्रेज़ी में अपूर्व पुस्तक

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस पुस्तक की भूमिका श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखी है। इस में ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले विविध विषयों पर वैज्ञानिक रीति से भाव-पूर्ण १२ अध्यायों में विचार किया गया है। १६ वर्ष से ऊपर की आयु वाले हरेक अंग्रेज़ी जानने वाले के हाथ में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। २२५ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुनहरी जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ३) । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम हो जायगा कि इस विषय पर ऐसी योग्यता से लिखी हुई पुस्तक आप ने पहले नहीं पढ़ी होगी। खुद पढ़ो और अपने मित्रों को पढ़ने को दो।

'हैण्ड-ट्रेनर'

जिन्हें सुलेख लिखना न आता हो उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू का सुलेख सिखाने का अत्यन्त सरल नया तरीका आविष्कृत हुआ है, इसका नाम 'हैण्ड ट्रेनर' है। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हरेक भाषा के सेट की कीमत अलग अलग दो रुपया।

'बिजली के जेबी लैम्प'

बिजली के जेबी लैम्प पूरे तैयार तीन किस्म के हमारे पास हैं। अत्युत्तम ३); उत्तम २॥); साधारण २)। पहली बैटरी ख़र्च होने पर नई की ज़रूरत हुआ करती है, उसे हम १।) में भेज सकते हैं। डाक का ख़र्चा हम अपना करेंगे।

'किटसन लैम्प'

मुकम्मिल, मय सोलह इञ्च टांकी और सिंगल पम्प का किटसन लैम्प ३०); वही डबल पम्प सहित ३५)। कारबाईड दीवालगीर लैम्प २)।

हम उचित कमीशन मिलने पर बम्बई से मार्केट के भाव पर आप की चीजें ख़रीद कर भेज सकते हैं।

पता—दी शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी, कारनक रोड, बम्बई (२)

तार का पता	पोस्ट बौक्स नं०	टैलीफ़ोन नं०
Linkclip-Bombay	२१३५	२१४८०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाक़त खुद ब खुद कर देती है शोहरत ज़माने में।
मुनाफ़ा इस क़दर रखिये नमक जितना हो खाने में॥

(१) गंगाविष्णु नैनामृताञ्जनः—यह सफ़ेद सुरमा शिरीष की जड़ में ६ महीने रख कर तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध करके १ साल की लगातार मेहनत के पश्चात् तय्यार किया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह सुरमा आंखों की निम्न बीमारियों में अकसीर साबित हो चुका है—

नेत्रों में ख़ारिश का उठना, रतौंधी, दूर अथवा समीप की वस्तु का साफ़ २ नज़र न आना, धूप में जाते ही आंखों का गरमी से चौंधिया जाना, देर तक किसी वस्तु अथवा पुस्तक की ओर नज़र का न टिकना, आंखों से पानी का गिरना, नज़ले की वजह से आंखों की कमज़ोरी और विशेष करके आजकल के नवयुवकों तथा वृद्धों के लिये यह सुरमा अकसीर साबित हो चुका है। कीमत २) तोला रखी गई है। ३ माशा ।।), ६ माशा १), १ तोला २)

(२) कुक्करों का शर्तिया इलाजः—एक आश्चर्य जनक औषधि। यह कोई शास्त्रीय नुस्खा नहीं है। परन्तु किसी अनुभवी वृद्ध सन्यासी का जादू है। देखने में बिलकुल मामूली खाली बत्तियें नज़र आती हैं परन्तु इसके ४, ५ दिन के इस्तेमाल से ही आपको निहायत फ़ायदेमन्द साबित होंगी—

यह बत्तियाँ आंखों के पुराने से पुराने रोंहें, सुर्खी तथा पड़वाल और पानी के झर २ गिरने के लिये अकसीर है। फ़ायदे इसके अन्य भी हैं परन्तु आप इसकी एक बार परीक्षा करके हमेशा के लिये इसको अपने पास रखना चाहेंगे। सेवन विधि दवाई के साथ भेजी जाती है।

(३) मस्तिष्क पौष्टिकः—विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, क्लर्क और व्याख्याता आदि जिन्हें काम करके काफ़ी देर के लिये आराम का ज़रूरत पड़ती है, उनकी दिमाग़ी ताकत को स्थिर रखनेके लिये यह दवाई अद्वितीय है। कम से कम १५ दिन या १ महीना इसके सेवन करने से आश्चर्य जनक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इससे आपअपने काम को दिल से कर सकेंगे तथा दिमाग़ी ताकत को ज्यादा नहीं खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिये अमृत है। केवल एक बार परीक्षा की ज़रूरत है। १ शीशी १५ दिन के लिये २)

(४) केशाञ्जन खिज़ाबः—जहां अन्य खिजाबों के लगाने से काली चमड़ी होने के सिवाय बालों की जड़ें कमज़ोर होकर झड़ने लग जाती हैं, वहां इस के सेवन से बाल काफ़ी अरसेके लिये काले तथा ख़ास चमकीले मालूम देते हैं। यह दो चीज़े हैं—एक खुश्क; दूसरी तर। दोनोंको उचित मात्रामें मिला कर ब्रशसे इस्तेमाल करने से बालोंमें ख़ास चमक आती है। १ शीशी १।)

पता—पं० विष्णुदत्त विद्यालंकार, अलंकार आयुर्वेदिक फार्मेसी, कूचा लालूमल, लुधियाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे दाम में !!!

१. महावीर गेरीवाल्डी—ले०श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। आधा मूल्य

मौडर्न रिव्यू—गेरीवाल्डी का जीवन केवल व्यक्ति का जीवन नहीं परन्तु स्वाधीनता का जीता जागता इतिहास है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त रोचक है। पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी है। हम इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करते हैं।

माधुरी—विशेष महापुरुषों के जीवन चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षाप्रद होते हैं। यह जीवन चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है। भाषा रोचक और मर्मस्पर्शिनी है। नवयुवकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

श्री शारदा—इसकी भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इसमें उपन्यास का सा आनन्द आता है। मनोरञ्जन के साथ २ उपदेश की भी मात्रा रक्खी है। विषय का क्रम भी यथोचित रीति से जमाया गया है। पुस्तक में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख है जो महत्वशालिनी हैं, जिनका ज्ञान सर्वसाधारण को अपेक्षित है। यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी, विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिन्दी साहित्य में अनूठी है। हमारा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें। पुस्तक में इटली के आठ महान् व्यक्तियों के चित्र भी हैं।

२. प्राचीन भारत में स्वराज्य लेखक—श्री पं० धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार—आधा मूल्य ॥)

प्रो० विधुभूषण दत्त जी M.A.—हमारे आर्य प्रजासत्तात्मक तथा प्रतिनिधिसत्तात्मक शासन प्रणालियों से अपरिचित न थे, प्रजा ही राजा को चुनती थी इत्यादि बातों को सिद्ध करने के लिये प्रमाणों और उदाहरणों को इकट्ठा करने में लेखक ने सराहनीय परिश्रम किया है। पुस्तक की लेखनशैली मनोरञ्जक है। विचार करने के लिये सभी को इस पुस्तक में बहुत सामग्री प्राप्त हो सकती है।

३. वैदिक विवाह का आदर्श—ले० श्री पं० नन्दकिशोर जी विद्यालङ्कार—आधा मूल्य ।-)

बाबू भगवान दास जी काशी—विवाह क्या है, किस से, कैसे, किस लिए और कब विवाह करना चाहिए—यह पुस्तक में बतलाया गया है। वैदिक विवाह पद्धति अन्य विवाह पद्धतियों से क्यों श्रेष्ठ है, यह अच्छी तरह बतलाया गया है। इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए।

४. सन्तजीवनी—ले० स्व० श्री गिरिजा कुमार घोष—भारत के प्रसिद्ध महात्माओं-कबीरदास, गुरुनानक, गोस्वामी तुलसीदास आदि के विस्तृत जीवन चरित बड़ी मनोरंजकता से लिखे गए हैं। आधा मूल्य ।)

५. बिखरे हुए फूल-यह पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की बिल्कुल नए ढंग का, नए विषयों पर अद्भुत कविताओं का संग्रह है। आधा मूल्य ≡)

मैनेजर—साहित्यपरिषद् पुस्तक भण्डार; गुरुकुल काङ्गड़ी (हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी के **भीमसेनी सुरमे** की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुंधला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत =) पांच रुपया फ़ी तोला

सुधाधारा– इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं, जिससे रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों खरीदें ? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाजार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौंता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है।

जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने ।)

नोटः—अन्य दवाइयों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये।

पताः—गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी देहली नं० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा
जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड
८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)
यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २तक ।≈)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा.
बिना जलन और तकलीफ के दादको २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च, १ से २ तक ।≈), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवाको मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।)
पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिये, मुफ्त मिलेगा।
यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।
सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

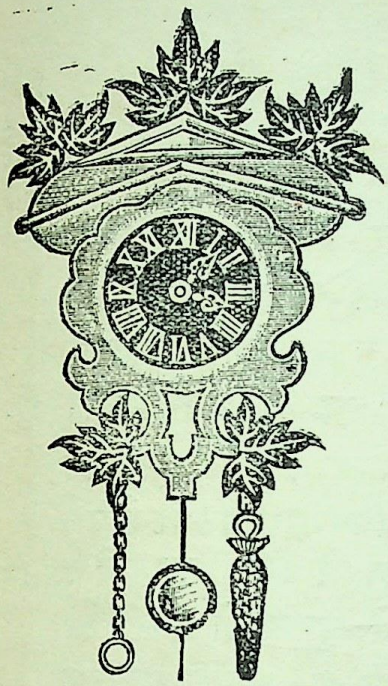

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेज दो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

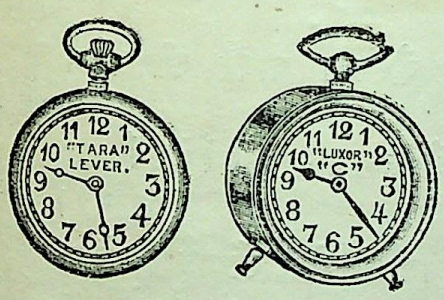

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जैब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिये है। जल्दी मंगवाये, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पताः—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोशनी

का

भण्डार

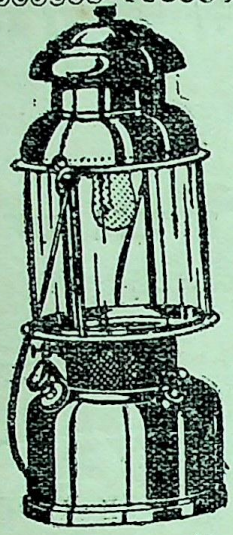

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टोर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिये। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती है। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटेन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती। इसमें केरोसीन आयल या पैट्रौल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मेन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का वजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इंच, तथा चिमनी अवरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३॥।) फ़ी दर्जन

दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्जन

प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ६) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता:—

रविवर्मा स्टील वर्कस अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

रूह शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

संस्कृतपाठ माला।

संस्कृत स्वयं सीखने की अत्यन्त सुगम रीति। प्रत्येक भाग का मूल्य ।-) पांच आने है। बारह भागों का इकट्ठा मूल्य ३) तीन रुपये हैं।

यदि आप संस्कृत सीखना चाहते हैं तो इसका अध्ययन कीजिये।

प्रतिदिन आध घंटा अभ्यास करेंगे तो एक वर्ष में आप रामायण महाभारत समझने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल

(औंध जि० सातारा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

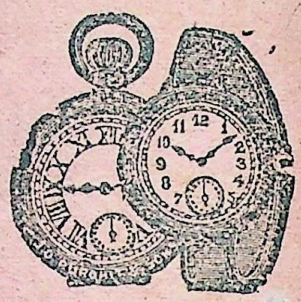

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चौताला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥। १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पताः—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A ; 1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

आश्विन १९८३ सितम्बर १९२६

वर्ष ३] [अङ्क ४

मुख्य संपादक

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ से
१. दीन कुटी (कविता)—कश्चित्	९७
२. जागृति का कवि 'भारवि'—श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति	९८
३. सृष्टयुत्पत्ति,—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार	१०३
४. बहुत दिनों के बाद (कविता)—पण्डित वंशीधर जी विद्यालंकार	१०६
५. भारतीय व्यवसाय तथा विदेशी पूंजी—पं० इन्द्र जी विद्यालंकार	१०८
६. वर्णव्यवस्था का तुलनात्मक अनुशीलन—पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति	११२
७. पावस में कुल कीर्तन (कविता)—श्री शान्त	११५
८. मनुष्य का इतिहास में स्थान—पं० कृष्ण चन्द्रविद्यालंकार	११६
९. महीधर का अश्लील भाष्य और शतपथ पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार	१२१
१०. सम्पादकीय	१२५
११. साहित्य समालोचना	१२६
१२. एक दिवंगत आत्मा	१२७
१३. गुरुकुल समाचार	१२८

ग्राहकों से निवेदन

१. अलंकार पत्र प्रत्येक देशी मास के प्रथम सप्ताह में ग्राहकों के पास पहुंच जावेगा।

२. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे तो पहले डाकघर से पूछना चाहिये यदि पता न चले तो डाक-घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्ता के पास भेज देना चाहिये। यह सूचना देशी मास के तृतीय सप्ताह तक अवश्यमेव पहुंच जानी चाहिये। अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य न दी जावेगी।

३. पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य देनी चाहिये अन्यथा उत्तर न दिये जाने के हम दोषी न होंगे।

४. पत्रोत्तर के लिए जबाबी कार्ड या टिकट साथ भेजना चाहिये।

५. पत्र—व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता पूरा और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये।

६. भावी ग्राहकों को चाहिये कि वे रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहकों को और हमें, दोनों को कष्ट होता है। पैसे लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है।

७. नमूने का अंक बिना मूल्य किसी को न भेजा जावेगा।

८. प्रबन्ध सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी (जि० बिजनौर) के पते से करना चाहिये।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क ४] मास, आश्विन [पूर्ण संख्या २८

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

दीन कुटी

कुटिया ! तू प्रियपाहुने, किन राखे धरि सोय ।
कलपत जिन के दरश हित, युगल लालची लोय ॥ १ ॥

मेरे वे प्रियपाहुने, पुनि किमि ऐहैं धाय ।
दीन कुटी मोंहि दे बता, कैसे लई बलाय ॥ २ ॥

परमप्रेमवश द्वार तव, आये मम भगवान ।
कुटिया ! मोंहि बताय दे, कियो कौन सनमान ॥ ३ ॥

इन दुखिया अँखियान ते, का है तेरो रोष ।
कुटिया जो प्रियदरश का, दियो न इनको तोष ॥ ४ ॥

दीन हीन दुखियान तैं, मैं दुखिया मतिमन्द ।
मिलै कहो क्यों पुन्य फल, प्रियतम प्रेमानन्द ॥ ५ ॥

कश्चित्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागृति का कवि 'भारवि'

(२)

(ले० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

द्रौपदी पहली दशा से वनस्थ दशा की तुलना करती है। तुलना ऐसी है मानो कोई २००० साल पूर्व के भारत से आज के भारत की तुलना कर रहा हो। कहां पर्वत की चोटी और कहां गढ़े की गहराई। कहां राजभवन और कहां पहाड़ की घाटियां। कहां मनुष्यों पर राज्य और कहां दशाओं की आधीनता। हे धर्म पुत्र! ऐसी झूठी शान्ति का त्याग करो और शत्रुओं के नाश के लिये कमर कस कर तय्यार हो जाओ। धूनी रमा कर सन्तोष कर बैठना मुनियों का काम है-राजाओं का का नहीं (१।४२) यदि आप जैसे लोग अपमान पाकर सुख में मग्न रहें तो संसार में मनस्विता के लिये कहीं ठिकाना नहीं है। (१।४३) किन्तु यदि तुमने वीरता को बिल्कुल तिलाञ्जलि देकर क्षमा का ही भरोसा लिया है तो क्षत्रिय के चिन्ह धनुष को फेंक दो, जटायें बढ़ा लो और हवन किया करो। यदि द्रौपदी एक राजकुमारी न होती तो यही कहती कि हाथ में चूड़ियां पहिन कर नाचा करो। अन्त में एक वीर कन्या और वीर पत्नी उत्साह हीन छत्रपति को आशीर्वाद देती है। एक अपमानिता क्षत्राणी का दिया हुआ आशीर्वाद या शाप कभी व्यर्थ नहीं जा सकता। वह कहती है—

विधिसमय नियोगाद्वीप्तिसंस्कार जिह्मं।
शिथिलवसुमगाध्ये मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानन्दिनादौ
दिन कृत मिवलक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः।

कृष्णा इस अमोघ आशीर्वाद के साथ अपना कथन समाप्त करती है।

दूसरा सर्ग भीमसेन के वाक्यों के साथ प्रारम्भ होता है। जो बातें एक राजकुमारी ने दया क्रोध और उत्साह के बढ़ाने लिये कहीं-और हम उन्हें पढ़ कर आज भी अनुभव करते हैं कि कोमल हृदय युधिष्ठिर की आखें उन्हें सुन कर तर होगई होंगी-वही बातें उद्धृत भीमसेन अपने ढंग पर कहता है-और युधिष्ठर को खिझा देता है। भाव वही है-भेद इतना ही है जितना एक सभा में और गदाधारी योद्धा में होना चाहिये। जहां द्रौपदी ने पुरानी बातें याद करा कर भावों की जागृति की और अपमान की स्मृति उद्बुद्ध करके हृदय को उकसाना चाहा, वहां भीमसेन शेर और हरिण के दृष्टान्तों से युधिष्ठिर को लज्जित करना चाहता है, स्पर्धा के भाव के नाम पर उकसाता है। भीमसेन के भावों का एक ही दृष्टान्त पर्याप्त है—

किमपेक्ष्य फलं पयोधरा।
ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः॥
प्रकृतिः खलुसा महीयसः
सहते नान्यसमुन्नतिं यथा।

बादल को गर्जता सुन कर शेर भी गर्जता है-इस लिये नहीं कि उसका कोई कार्य सिद्ध होता है, अपितु इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कि वह दूसरे की बढ़ती नहीं देख सकता। इस लिये हे भाई पराक्रम का हथियार हाथ में लो और आलस्य के हथियार को छोड़ दो। यह शत्रु का जो कुछ अभ्युदय दीख रहा है-यह तेरे प्रमाद के ही कारण है। दिग्गजों के भांति चिंघाड़ते हुए और समुद्रों की भांति उमड़ते हुए तुम्हारे छोटे भाइयों के तेज को कौन सहार सकता है। बस, अब तो यही एक अभिलाषा है कि शत्रु के लिये तुम्हारे और हमारे हृदय में जो आग है, वह शत्रु की विधवा नारियों के आंसुओं से ही बुझे। यही अभिलाषा और यही भीमसेन की आशा है।

उत्तेजना हो चुकी, अब तर्कना की बारी आती है। महाराज युधिष्ठिर एक बजुर्ग राजनीतिज्ञ की भांति पत्नी और भाई को समझाते हैं। आप सान्त्वना देते हैं, धैर्य का महिमा बखानते हैं और प्रतिज्ञा पालन का गौरव दिखाते हैं। आपका नीति मि० एस्क्विथ की नीति है-वह wait and see की नीति है। बड़े भाई की आवश्यकता से अधिक विवेक भरी बातों को कृष्णा और भीमसेन लिहाज से सुन रहे हैं-असम्भव नहीं कि युधिष्ठिर की वक्तृता समाप्त होते ही दोनों फिर फूट पड़ें-ठीक उसी समय महामुनि व्यास आ पहुंचते हैं और दृश्य बिल्कुल बदल जाता है।

व्यास मुनि आते हैं और सब को सान्त्वना देते हैं। वह योगी हैं—परन्तु धर्म का पराजय नहीं देख सकते, सब कुछ छोड़ चुके हैं—परन्तु धर्म के लिए योगियों का भी पक्षपात रहता है। जब सत्य और धर्म कष्ट में हो, अत्याचार और अन्याय की तूती बोलती हो, तब साधारण पुरुषों की अपेक्षा सच्चे और पराजित की सहायता करना योगी का परम कर्तव्य है। यही कर्मयोग है, यही सच्चा त्याग है। व्यास मुनि इसी भाव को निम्नलिखित पदों में प्रकट करते हैं।

वीतस्पृहाणामपि मुक्तिभाजां।
भवन्ति भव्येषुहि पक्षपाताः॥

(जिनकी इच्छायें नष्ट हो चुकी हैं-और जो मुक्ति के समीप पहुंचे हुए हैं, उन में भी सज्जनों के लिये पक्षपात रहता है।

व्यासमुनि पाण्डवों को सन्तोष की नींद सुलाने नहीं आये और न केवल उनके दुःखी हृदयों को असन्तोष की आग से जलाने आये हैं, वह आये हैं-पाण्डवों को विजय के साधन बताने। यह युधिष्ठर के धैर्य की प्रशंसा करते हैं परन्तु उसकी उपेक्षा पर गुप्त झाड़ देते हैं। वह कौरव सेना के बल का वर्णन करते हैं और अन्त में विजय का साधन बताते हैं। साधन और कुछ नहीं-तपस्या से प्रसन्न करके अर्जुन, इन्द्र और शिव से अस्त्र लाये-बस यही विजय का साधन है। बिना तप और बिना परिश्रम के शत्रु को जीत लेना असम्भव है। उचित उपदेश दे कर व्यासमुनि तिरोहित हो जाते हैं। अर्जुन हिमालय को जाने की तय्यारी करता है। जाते हुए फिर द्रौपदी अपने दिल के उद्गार अर्जुन के सामने रखती है। वह उद्गार क्या हैं-एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोध में भरी हुई क्षत्राणी के उत्तेजना पूर्ण फुंकारे हैं। द्रौपदी अपनी दुर्दशा का वर्णन करती है, कौरवों की टेढ़ी चालों का स्मरण कराती है, क्षात्र धर्म का महत्व दर्शाती है। वह सत्री आज के भारत वासियों जैसी नहीं कि अपमान को मीठे शरबत की भांति पी जाय, वह सच्ची भारत पुत्री है, वह क्षत्रिय कुल की उपज है, वह भला अपमान को कैसे भूल सकती है या क्षमा कर सकती है। द्रौपदी के उस समय के वाक्य अर्जुन के मुरझाये हुए दिल को क्रोध और जोश के तेज से उद्दीप्त कर देते हैं। द्रौपदी अर्जुन से पूछती है—

दुःशासनामर्षरजो विकीर्णैः
एभिर्विनाथैरपि भाग्यनाथैः।
केशैः कदर्थीकृतवीर्यसारः
कच्चित्स एवास्ति धनंजयस्त्वम्। ३-४७

दुःशासन की क्रोध रूपी धूल से कलुषित इन अनाथ, पर तो भी भाग्य-नाथ केशों से तेरा वीर्यधिक्कारा जा चुका है। मैं पूछती हूं कि क्या फिर भी तू वही दिग्विजयी अर्जुन है?

सक्षत्रियत्राणसहः सतां यः
तत्कार्मुकं कर्मसुयस्य शक्तिः।
वहन्द्वयीयद्यफलेऽर्थ जाते
करोत्यसंस्कारहतामिवोक्तिम्। ३।४८।

जो सज्जन और सतीजन की रक्षा कर सके वह क्षत्रिय कहाता है और जो काम करने में शक्त हो, उसे कार्मुक कहते हैं। यदि क्षत्रिय रक्षा न करसके और कार्मुक निकम्मा पड़ा रहे तो दोनों का नाम अर्थ हीन है-वह वाक्य संस्कार हीन है।

एक क्षत्रिय की क्षत्रियता का निषेध करना और उसके धनुष का व्यर्थ बताना-इस से बढ़ कर अपमान जनक और अपमान द्वारा आग भड़काने वाली चाल दूसरी नहीं हो सकती। अपमान से कलंकित, आपत्ति से कुचले हुये और दुष्टों के अत्याचारों से पीड़ित पाण्डवों को उदासीनता को द्रौपदी कोसती है और उन्हें जगाती है।

अर्जुन बन को जाते हैं। व्यासमुनि उन्हें हिमालय का मार्ग दिखाने के लिए एक यक्ष को छोड़ देते हैं। वह यक्ष पाण्डुतनय को पर्वत की ओर ले जाता है। विजय की कामना से जाते हुये अर्जुन का शरदृतु स्वागत करती है। रम्य शरदृतु, को देख कर अर्जुन विजय की आशा करता है। सामने हिमालय का दिव्य दृश्य उपस्थित होता है। पाण्डव उन्हें देखता और मोहित होता है। यक्ष उन दृश्यों का मार्मिक वर्णन करके अर्जुन को प्रसन्न करता है और तपस्या के स्थान पर अर्जुन को पहुंचा जाता है।

अपमान का बदला लेना, कलंक को धोना, स्त्री के तिरस्कार का प्रक्षालन करना, शत्रु को हराना अर्जुन का उद्देश्य है। इतना बड़ा उद्देश्य कभी फूल की गद्दियों पर बैठ कर आरामचौकियों पर लम्बी तान कर या सभा भवनों में व्याख्यान देकर नहीं सिद्ध हुआ करता, उसके लिये तप और कठोर तप की आवश्यकता होती है। तप के बिना कोई बड़ी मंज़िल नहीं तय हो सकती। मखमल के गदेले पर सोने वाले, विलासी पुरुष जाति की नैया को पार नहीं लगाया करते। आज तक कभी विश्राम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय नेताओं ने आपत्ति के बादलों को दूर नहीं किया। जो भूख और प्यास की पर्वाह नहीं करते, कांटे और कंकर जिनके लिये रेशम के गद्दे हैं, जंजीर और खंजर जिन को डरा नहीं सकते और निराशा भी जिन की आखें देख कर थर थर कांपती है-वही वीर आप त्पंक को पार सकते हैं। व्यास मुनि का यही उपदेश था, अर्जुन उसे सिर पर धर कर तप प्रारम्भ करते हैं।

तप के साथ अर्जुन का तेज बढ़ने लगता है। यहां तक कि आस पास के तपस्वी डर जाते हैं। इतना तप किस लिये ? तपस्वी यही विचार कर देवपति इन्द्र के पास जाते हैं—और नये तपस्वी की तपस्या की कथा सुनाते हैं। इन्द्र अपने पुत्र सदृशप्रिय अर्जुन का वृत्तान्त सुन कर खुश होते हैं—परन्तु खुशी को दबा देते हैं-प्रकट नहीं होने देते। वह अर्जुन के तप की परीक्षा करने का संकल्प कर के उन अप्सराओं का स्मरण करते हैं, जिनकी मनमोहनी माया की चिकनाहट पर सैंकड़ों तपस्वियों के पांव फिसल चुके हैं।

यह माया किसी न किसी रूप में हरेक क्रियाशील के सन्मुख आती है। कभी यह लक्ष्मी का रूप धारण करती है तो कभी मोहिनी का। कभी यह जागीर के रूप में आती है तो कभी नौकरी के रूप में। कभी यह उपाधि बन जाती है तो कभी पदवी। सारांश यह कि निशाचरी माया की भांति यह राजमाया विविध रूपों में एक ईश्वर भक्त, धर्म भक्त या देश भक्त के सामने उपस्थित होती है। जो छोटे दिल के हैं, वह माया की चिकनाहट पर फिसल जाते हैं, परन्तु जो दृढ़ हैं, जो फौलादी सार रखते हैं, वह माया को लात मार कर भगा देते हैं और लक्ष्मी, नौकरी या पदवी की अपेक्षा दुःख, आपत्ति या कैदखाने को उत्तम समझते हैं।

अर्जुन की दृढ़ता के सामने अप्सरायें हार मानती हैं। उनके रात दिन के विविधविलास और हाव-भाव सब व्यर्थ जाते हैं। अप्सराओं का मान और अभिमान खण्डित होजाता है। वह सफलता न होने से निराश और नौकरी में चूकने से भयभीत होकर स्वर्ग लोक का रास्ता लेती हैं। तब स्वयं इन्द्र अर्जुन की परीक्षा लेने के लिये मैदान में उतरता है। वह एक बूढ़े मुनि का रूप धारण करके आश्रम में आता है और अपने पुत्र को बुद्धि और आचार की कसौटी पर कसता है। जहां नंगी भौतिक माया नाकामयाब हुई वहां इन्द्र, शास्त्रीय विचारों के दुशालों में लिपटी हुई माया का प्रहार करता है। देखें पाठक, इस प्रहार में उसे कितनी सफलता प्राप्त होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्ट्युत्पत्ति

[३]

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

इन अत्यन्त घनिष्ठ समानताओं को देखकर सहसा यह प्रश्न उठता है कि इन कथानकों का वास्तविक अभिप्राय क्या है ? क्या ये अलिफ़लैला के किस्से और महज़ जंगली लोगों के मन बहलाव की बातें हैं, या इनके आधार में कुछ सचाई भी मौजूद है ? हमारी सम्मति में इन्हें किस्से और मन-बहलाव की ही बातें नहीं कह सकते; क्यों कि इन में मन-बहलाव की बात तो कोई नहीं है। इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों से वज्र बनाकर वृत्र को मारा और सोम-रस की रक्षा की, अथवा जिहोवा ने आदम की हड्डियों से हव्वा को बनाकर साँप को मारा, और ज्ञान-वृक्ष की रक्षा की—इस तरह की कहानियों से किस का मन बहल सकता है ? यदि मान भी लिया जाय कि कुछएक रसिकों को इसमें अपार आनंद आता है, तो भी यह माना नहीं जा सकता कि इस कहानी में इतना रस भरा है कि यह उस प्रकार विश्वव्यापी हो जाय, जिस प्रकार यह हो गई है। बहुतेरे लोगों का कथन है ये अलंकार हैं। इनका अभिप्राय और ही कुछ है। हमारी समझ में यह भी नहीं आता कि ऐसे क्लिष्ट अलंकार रखने का क्या प्रयोजन, जिन्हें कोई समझ ही न सके ? जहाँ तहाँ अलंकारों को ढूंढने की प्रवृत्ति आजकल के वेद-प्रेमियों में बढ़ती चली जा रही है; परन्तु ऐसे व्यक्ति यह भूल जाते हैं कि अलंकार का उद्देश्य अर्थ को छिपाना नहीं, विशद करना होता है। हमारे कथन का यह अभिप्राय कभी नहीं कि वेदों में अलंकार नहीं हैं। अनेक स्थलों पर जब हम वेदों के शब्दों का परिचय नहीं पाते हैं, तो वहाँ अलंकार समझने लगते हैं। यह ठीक नहीं। इसके अतिरिक्त अनेक स्थल ऐसे भी हैं, जो अब लौकिक संस्कृत की दृष्टि से तो अलंकार बन गए हैं; परंतु यदि उनके वैदिक शब्दों द्वारा अर्थ किये जायँ, तो वही साधारण अर्थ हो जाते हैं, अलंकार नहीं रहते।

प्रकृत प्रकरण में प्रश्न उपस्थित होता है कि इन्द्र तथा वृत्र की लड़ाई का वास्तविक अभिप्राय क्या है ? हम समझते हैं कि यह अलंकार-रूप में नहीं, वैदिक संस्कृत के सीधे सादे मोटे शब्दों में सूर्य तथा बादल के पारस्परिक संग्राम का कविता में वर्णन है। इन्द्र का नाम 'द्यस्' है। उसी से ग्रीक लोगों के देवता 'ज़ीयस' तथा यहूदियों के देवता 'जिहोवा' के नाम बने। इसीलिये बाइबिल में इन्द्र की जगह जिहोवा इस कथा का नायक है। वेदों में इस इन्द्र की वृत्र के साथ यत्र-तत्र लड़ाई प्रसिद्ध है, इन्द्र को वृत्रारि कहा जाता है। इन्द्र और वृत्र का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्राम चलता ही रहता है। इस वृत्र के अनेक नामों में एक प्रसिद्ध नाम 'अहि' भी है। 'अहि' शब्द का अर्थ लौकिक संस्कृत में 'साँप' है। जिहोवा तथा सर्पैंट की लड़ाई इंद्र तथा अहि की हा लड़ाई है। वेद में बादल के लिये जो विशेषण पाये जाते हैं, वे साँप पर भी घट जाते हैं; और 'अहि' का अर्थ साँप है ही, इसी कारण यहूदी, ईसाई, पारसी और मुसलमान भूल कर बैठे हैं। अहि का आलंकारिक नहीं, अपितु शाब्दिक अर्थ ही वैदिक संस्कृत में 'बादल' है। 'वृञ् वरणे' धातु से वृत्र का अर्थ बादल तो लोक-प्रसिद्ध ही है। इन्द्र का अर्थ है सूर्य। इस प्रकार इन्द्र तथा अहि की लड़ाई सूर्य तथा बादल की लड़ाई है। सोम-रस का अर्थ है जल। हमने वेद-मंत्रों का अर्थ तथा बाइबिल की कथा निर्देश करते हुए बतलाया है कि सोम-रस के लिये ही इन्द्र तथा अहि की—जिहोवा तथा शैतान की—लड़ाई हुई। वेद के कवितामय शब्दों में पानी के लिये सूर्य और बादल की लड़ाई हुई। यदि बादल जीत जाय, और पानी को अपने पास रख ले, तब वर्षा न हो, और कृषि भी न हो सके। कृषि के लिये आवश्यक है कि सूर्य बादल के गर्व को खर्व कर दे, और उसे औंधे मुँह ज़मीन पर गिरा दे। इस लड़ाई में यह देख-कर कि 'सोम-रस' अर्थात् जीवन देने वाले पानी को 'अहि' अर्थात् बादल अपने पास रखना चाहता है, 'इन्द्र' अर्थात् सूर्य को गुस्सा आया। लड़ाई छिड़ गई। परिणाम जो हुआ, वह वेद तथा बाइबिल में लिखा हुआ है—"अहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः"—बादल बरस कर पृथ्वी पर आ सोया; और, "अहादस्तो अपृतन्यत्"— बिना हाथ-पैर के लड़ाई को निकला था, वह कर ही क्या सकता? बादल के हाथ-पैर होते ही नहीं।

इस प्रकरण में यह लिख देना अनुचित न होगा कि इन्द्र का अर्थ सूर्य करना केवल अटकल पर आश्रित नहीं है। इस अर्थ का, अंत में, वेद साक्षी है। अथर्व वेद में लिखा है— "वृत्रा-ज्जातो दिवाकरः" (अथर्व ।४ का० ।१० ५) अर्थात्, वृत्र से सूर्य हुआ। अभि-प्राय यही है कि बादल के हटने से सूर्य का उदय होता है। इस प्रकरण में दिवाकर तथा वृत्र का संबन्ध देख कर पूर्वप्रतिष्ठित इन्द्र का अर्थ दिवाकर कर लेना संभवतया क्लिष्ट कल्पना नहीं कहा जा सकता।

संपूर्ण वर्णन वैसा कवितामय है प-रन्तु दुःख यही है कि ऐसे उत्कृष्ट वर्णन के आधार पर ही न जाने क्या-का-क्या खड़ा हो गया है। केवल 'अहि'-शब्द ने ऐसा धोखा दिया कि कुरान, पुराण, इञ्जील—सभी ऐसे भ्रम जाल में फँस गए कि कुछ का-कुछ ही कहने लगे। पौराणिक लोग अलंकार का नाम सुनते ही चौंक उठते हैं, और कहने लगते हैं कि हम तो वेदादि के अक्षर अक्षर को सत्य मानते हैं, और उनमें जो कुछ कथा-कहानी है, उसे वैसा ही स्वीकार करते हैं। उन के संतोषार्थ हम यहाँ यह कह देना आवश्यक समझते हैं कि हमने जो अर्थ दिया है, वह किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलंकार पर आश्रित नहीं है। यह तो सीधा वेद के शब्दों का अर्थ है। वैदिक काल में अहि तथा वृत्र-शब्दों का उन-उन प्रकरणों में उच्चारण होते ही विद्यार्थी के हृदय में एक दम बादल का खयाल आता था। इसमें कोई अलंकार नहीं है। हमारी सम्मति में वेदों में घुसकर मन-माने अलंकार ढूंढने की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी उनके सीधे शाब्दिक अर्थों के समझने की। हाँ, इससे एक बात अवश्य ध्यान में आने लगती है' और वह यह कि यदि भारत से ही अन्य धर्मों में इन कथानकों का समावेश हुआ है, तो वह तब हुआ होगा, जब भारत में वैदिक साहित्य का लोप हो चुका था, और लौकिक संस्कृत-साहित्य का सूर्य उच्चतम अंश पर पहुंच चुका था। एक समय ऐसा था, जब 'अहि' का उच्चारण करते ही 'बादल' अर्थ पहले ध्यान में आता था। और, फिर ऐसा समय आया, जब इस शब्द के उच्चारण से एकदम 'साँप' का अर्थ ध्यान में आने लगा। यदि हमारी यह कल्पना ठीक हो, तो वेदों के भारतवर्ष में अच्छी तरह से प्रचलित होने का समय बहुत पहले जा पड़ता है।

जब हम यह समझ लें कि शैतान का पतन केवल सूर्य द्वारा बादल का ज़मीन पर बरस जाना है, तो आगे यह आपही समझ में आजाता है कि बाइबिल में परमात्मा ने मनुष्य को पसीना बहा कर खेती करके भोजन पैदा करने के लिये क्यों कहा है। बादल के बरसने का खेती के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध है, इसे कौन न मानेगा? खेती के साथ कपड़े पहनने का है ही। इसी लिये बाइबिल की कथा में फल खाने के बाद नग्नता के ढकने का भाव भी दिखलाया गया है। वेदों में इंद्र तथा वृत्र का संग्राम बादल बरसाने तक ही समाप्त हो जाता है, परंतु बाइबिल आदि में उस कहानी के 'भग्न शाब्दिक अवशेष' की जैसी की तैसी रक्षा करने के अनन्तर मनुष्य के खेती करने की कथा को साथ जोड़ दिया है, जो स्वयं इस बात का प्रमाण है कि वास्तव में इस कथानक का अभिप्राय सूर्य-बादल-वर्षा-जल-कृषि इत्यादि-विषयक ही है, अन्य-विषयक नहीं। ऋग्वेद के (१ मण्डल। १८७ सूक्त के छठे) मन्त्र में भी यह निर्देश पाया-जाता है कि अन्न ने (कृषि ने) अहि (बादल) का नाश किया— 'अहिमसाववधीत्।' संभवतः ऋग्वेद का यही मन्त्र, इन्द्र तथा वृत्र की लड़ाई में, कृषि के भाव के साथ भी जुड़ जाने का आधार हो।

अब एक प्रश्न रह जाता है, और वह यह कि आदम की हड्डी से बनी स्त्री द्वारा अथवा दधीचि की हड्डी से बने वज्र द्वारा शैतान अथवा वृत्र के नाश का क्या अभिप्राय है? हमारी सम्मति में दधीचि का कथानक बिलकुल आध्यात्मिक कथानक था और उसे ऐतिहासिक रूप दे कर पुराण बाइबिल तथा कुरान आदि ने एक उच्च आध्यात्मिक सत्यता पर बलात्कार किया है। आध्यात्मिक भाव के इस वैदिक कथानक का इन्द्र तथा वृत्र की लड़ाई से कोई सम्बन्ध न था, यह एक स्वतंत्र ही कथानक था। परंतु चूँकि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र-वृत्र तथा दधीचि के दोनों कथानकों में वृत्र का नाम आया है, इस लिये पुराणकारों ने दोनों परस्पर असंबद्ध कथानकों को मिला दिया है, जिससे वेदों को छोड़ कर अन्य धर्मों की सृष्टि-उत्पत्ति संबन्धी कहानी में गड़बड़ हो गई है। इस गड़बड़ का ही बाइबिल-कुरान आदि को शिकार बनना पड़ा है। दधीचि की तथा इन्द्र और वृत्र की कथाएँ अलग अलग हैं। दोनों में भेद न कर सकना ही विचार-व्यत्यास का कारण है। विचार-व्यत्यास की सम्भावना, जैसा हमने अभी बतलाया है, दोनों कथानकों में वृत्र तथा इन्द्र शब्द का प्रयोग होना है। परन्तु हमारा ख़याल है कि वास्तव में जहाँ दधीचि का वर्णन है, वहाँ कथा का वर्षा आदि से कोई संबन्ध नहीं। वर्षा, कृषि आदि से तो इन्द्र तथा वृत्र-मात्र की कथा का ही संबन्ध है। अब प्रश्न हो सकता है कि ऐसी अवस्था में इस कथा का अभिप्राय क्या हुआ? सुनिए—

वेद-पुराण आदि की कथाओं के अनुसार अथर्वा का पुत्र दधीचि है—"तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः" (ऋक् ६।१६।१४)। अथर्वा का अभिप्राय है गुण-दोष के ज्ञान से रहित समाधि की अवस्थावाला—थर्वति गति-कर्मा का अर्थ है—जिस अवस्था में किसी प्रकार की गति न हो, उसका पुत्र दधीचि ऋषि है। दधीचि की व्युत्पत्ति निरुक्त ने—प्रत्यक्तो ध्यानम्"—यह की है। दधीचि का अर्थ हुआ गुण-दोष-ज्ञान-सहित मन वाला। इन्द्र का अर्थ है जीव, वृत्र का अर्थ है पाप। इन्द्र दधीचि की हड्डियों से वृत्र का नाश करता है, यह वेद तथा पुराण में पाया जाता है। अब इसका स्पष्ट शाब्दिक अर्थ यह हुआ—"इन्द्र अर्थात् जीव' दधीचि की अर्थात् ध्यानी पुरुष की हड्डियों अर्थात् हड्डियों तक संपूर्ण देह से वृत्र का अर्थात् पाप का नाश करता है।" यह भी आलंकारिक वर्णन नहीं, शाब्दिक अर्थ ही है। हाँ, यह वर्णन आलंकारिक न होकर भी आध्यात्मिक अवश्य है; क्योंकि इस प्रकरण में इन्द्र तथा वृत्र, ये दो शब्द आ गए हैं, और इन्हीं दोनों का ज़िक्र वर्षा प्रकरण में भी होता है। अतः भूल से दधीचि की कथा को भी वर्षा के प्रकरण में, लगा दिया गया, जिससे सृष्टि-उत्पत्ति के प्रकरण में, सब धर्मों में, आदम की कथा भी शामिल हो गई। वास्तव में दोनों प्रकरण अलग-अलग थे। फिर भी, दधीचि का आधिभौतिक अर्थ सूर्य भी किया जा सकता है। पंडित सत्यव्रत सामश्रमी ने अपने निरुक्त-भाष्य के ४ र्थ खण्ड की शब्दानुक्रमणिका के ७४ पृष्ठ पर दध्यङ् का अर्थ आदित्य किया है। भाष्य में वह लिखते हैं कि उत्तम स्थान में पठित होने के कारण दध्यङ् का अर्थ सूर्य किया जा सकता है। यदि इस प्रकार दधीचि का सूर्य अर्थ कर लिया जाय, तो उस की किरणों को दधीचि की हड्डियाँ कहा जा सकता है। इन किरणों से बाइबिल की स्त्री-रूपा विद्युत उत्पन्न होती है, जो अहि रूप शैतान को मारती

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस प्रकार दधीचि का सूर्य अर्थ करने से बाइबिल की सारी-की-सारी कथा का यह स्रोत कहा जा सकता है। इस स्थल पर यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि दधीचि का पिता अथर्वा है, जिसका अर्थ परमेश्वर किया जा सकता है। परंतु अथर्वा का अर्थ वेद तथा ज़िंदावस्था में पुरोहित भी है, और पुरोहित का सोम-रस से संबन्ध है ही। इस प्रकार अथर्वा, दधीचि आदि का सोम-रस से सम्बंध भी द्योतित हो जाता है। इस प्रकरण में यह लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है कि दधीचि के विषय में जो कुछ लिखा गया है, उससे मुझे स्वयं संतोष नहीं है। अभी इस विषय की अधिक खोज होने की ज़रूरत है।

इस प्रकार हमने देख लिया कि समस्त धर्मों में सृष्टि-उत्पत्ति-सम्बन्धी प्रचलित संपूर्ण कथाओं के आधार वेद ही हैं, और उन्हीं के यथार्थ अर्थ को न समझकर भिन्न-भिन्न धर्मों में भिन्न-भिन्न कथाओं का प्रादुर्भाव हुआ। महाभारत में सत्य ही लिखा है—"बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।" यदि लोग बहुश्रुत होते, तो संसार में धार्मिक लड़ाइयाँ और असह्य विभिन्नताएँ न दिखलाई पड़तीं।

समाप्त

—*—

बहुत दिनों के बाद

(श्री पं० वंशीधर जी विद्यालङ्कार)

(१)

जीवन नौका पड़ी हुई थी लङ्गर डाले।
भव समुद्र में थे सारे केवट मतवाले॥

(२)

चले बड़े तूफ़ान बहीं आँधी पर आँधी।
चलने को पतवार नहीं पर हमने बाँधी॥

(३)

बेसुध थे यह हवा और बेसुध थी करती।
नई कल्पना से आशा थी दिल को भरती॥

(४)

चले चलेंगे जल्दी क्या है यही सोच कर।
मस्त पड़े रहते थे नहीं थी कोई फ़िकर॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

बीते बरस पलों में पर वह बेहोशी।
टूटी नहीं कभी चढ़ी हुई हम पर जो थी॥

(६)

एका एक हुआ भूकम्प हवाएँ बदलीं।
छोटी नौका अपने आप अचानक सँभलीं॥

(७)

धक्के खाकर आज उठाया हमने लंगर।
बाँधी है पतवार उठे हैं चप्पू लेकर॥

(८)

किया दिशा का ज्ञान चले अब आगे आगे।
बहुत दिनों के बाद आज निद्रा से जागे॥

(९)

शान्त दिशा, शान्त सिन्धु है शान्त पवन है।
आतुरता से भरा हुआ पर व्याकुल मन है॥

(१०)

गए हुए बीते पर क्या रोना पछताना।
हिम्मत बाँधे साहस से है चलते जाना॥

(११)

कब पहुंचेंगे बस अब एक यही चिन्ता है।
चलते जायँ न ठहरें कहीं यही इच्छा है॥

(१२)

मचले पवन तरङ्गें उछलें ऊपर आयें।
पर ये डरते हृदय नहीं जो कुछ घबरायें॥

(१३)

दीखेगा अवश्य ही हम को कभी किनारा।
इन हाथों का उस ईश्वर का एक सहारा॥

† लेखक की अप्रकाशित पुस्तक से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय व्यवसाय तथा विदेशी पूंजी

(ले० इन्द्र विद्यालंकार)

इस समय यह निर्विवाद होचुका है कि व्यावसायिक उन्नति भारतवर्ष के लिये भी नितान्त आवश्यक है। वर्त्तमान स्पर्धामय संसार में कोई भी देश आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित किये बिना जीवित नहीं रह सकता। भारतवर्ष तो प्रारम्भ से ही अन्तर्जातीय व्यापारिक सम्बन्धों से ऐसा बन्धा हुआ है कि उसके लिये अपने को अलग कर लेना सर्वथा असम्भव है। संसार की प्रत्येक व्यापी लहर का उस पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। इस समय पश्चिमीय जगत् बड़ी तेज़ी से आर्थिक समृद्धि की तरफ बढ़ा जारहा है, भारत वर्ष को भी सम्मान पूर्ण जीवन धारण करने के लिये आर्थिक उन्नति की तरफ शीघ्र ध्यान देना होगा।

किसी देश के व्यवसाय ही उस की समृद्धि के कारण बन सकते हैं। अतः व्यावसायिक उन्नति ही सब से प्रथम आवश्यक तत्व है। इग्लैण्ड में कपड़ा, कोयला, लोहा देश के मुख्य व्यवसाय हैं, इनके विनिमय से आज वह इतना समृद्ध होगया है कि अन्य देश उस की तरफ ईर्ष्यापूर्ण दृष्टि से देखते हैं। हमारे देश के व्यवसाय अभी प्रायः सुप्त अवस्था में है, परन्तु यह सर्वथा स्वीकृत है कि उन व्यवसायों को उन्नति की पूरी सम्भावना है, यदि उत्तेजक साधन उपस्थित किये जांय। भारतीय सरकार ने इस समय उदासीनता की नीति का परित्याग कर दिया है और भारतीय व्यवसायों की उन्नति की तरफ ध्यान देना प्रारम्भ किया है। यह तो स्वतः सिद्ध है, कि बिना गवर्मेण्ट के हस्ताक्षेप से व्यावसायिक उन्नति कदापि नहीं हो सकती। तट कर नीति द्वारा, अथवा बौंटी आदि प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता द्वारा, गवर्मेण्ट व्यवसायों के विकास पर बड़ा प्रभाव डाल सकती है। हर्ष का विषय है वर्त्तमान सरकार ने भारतवर्ष के लिये व्यावसायिक उन्नति के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है, और इस दिशा में सहयोग देना भी प्रारम्भ किया है। अब जब व्यावसायिक उन्नति के सिद्धान्त को स्वीकृत कर लिया गया है, विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या भारतीय व्यवसायों की शीघ्र समृद्धि के लिये विदेशी पूंजी का प्रयोग करना उचित है या नहीं? क्या भारतवर्ष के अधिकतम हित के लिये विदेशी पूंजी का अपने देश में आमन्त्रण, लाभकर होगा अथवा नहीं। भारतीय सरकार की इस विषय में क्यानीति होनी आवश्यक है? क्या किसी प्रकार के विशेष नियम निर्माण की तो ज़रूरत नहीं?

इस में सन्देह नहीं कि व्यावसायिक उन्नति के लिये पूंजी का होना नितान्त अपरिहेय तत्व है। पूंजी, के बग़ैर उन्नति का होना सर्वथा असम्भव है, पूंजी व्यवसायों की जान है। गृहव्यवसायों के लिए भी पूंजी सर्वथा आवश्यक है, चाहे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह स्वल्पमात्रा में क्यों न हो। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या आवश्यक पूंजी भारत वर्ष में उपलब्ध नहीं होसकती? विदेशी पूंजीपतियों को आमन्त्रित करने की क्या आवश्यकता है?

लेखक का अपना मन्तव्य है कि अपने देश में पूंजी बहुत है, तथापि विदेशी पूंजी के आमन्त्रित करने की आवश्यकता है। इस स्थापना की पुष्टि क्रमशः युक्तियों से पाठकों के सन्मुख उपस्थित की जायगी।

वर्तमान समय में भारतवर्ष ने तट कर की नीति का अवलम्बन कर लिया है। आयात के मालों पर मूल्य के आनुपातिक करों की आयोजना कर दी गई है। यह तो सर्व सम्मत सिद्धान्त है कि वर्त्तमान समय में इस तट कर की हानि का बोझ खरीदार को उठाना पड़ता है। मध्यम श्रेणी के लोग इस आयोजना से घाटा ही उठाते हैं। क्योंकि तट कर लगाने से आयात मालों के दाम बढ़ जाते है, वे मंहगे बिकते हैं, गरीब क्रेत्ताओं को अधिक मूल्य ही वस्तुओं के लिए देने पड़ते हैं। केवल भविष्य की व्यावसायिक उन्नति ही है, जो मध्यम श्रेणी के लोगों के सन्तोष को बनाए रखती है, जिससे दाम और भी गिरजायेंगे। वे अपने देश के व्यवसायों की शीघ्र उन्नति की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते है, जब उन पर से भी बोझ (तट कर हटा देने के रुप में) हलका होगा और देश भी समृद्ध होगा। अभिप्राय यह है कि व्यवसायों की शीघ्र उन्नति, दोनों दृष्टियों से देश के लिये अभीष्ट हो सकती है। अब जब भावी 'जनता की समृद्धि' ही उद्देश्य है तो क्यों न उस की प्राप्ति के लिये इतर उपायों का भी आश्रय लिया जाय। यह निर्विवाद है कि जितनी अधिक पूंजी होगी, उतना शीघ्र व्यवसाय उन्नत होंगे, परिणाम में उतना शीघ्र उक्त दो प्रयोजन सिद्ध होंगे। भारतवर्ष में जितनी प्राप्तव्य पूजी है, उसका प्रथम उपयोग करना चाहिये। तदनन्तर विदेशी पूंजी के प्रयोग करने में भी सङ्कोच न होना चाहिये। भारतवर्ष में कितने व्यवसाय हैं जो पूंजी के अभाव के कारण, भूखे मर गये हैं। यह दुरवस्था दूर की जा सकती है यदि पूंजी यथासम्भव स्रोतों से उपलब्ध करने का पूरा प्रयत्न किया जाय।

लेखक आलोचकों के इस कथन को स्वीकार नहीं करता कि भारतीय लोग 'जमा करने की आदत' के कारण पूंजी का प्रयोग करने में भय करते हैं, वे नये व्यवसाय में धन लगाने में सङ्कोच करते हैं। अब तक भारतीय सरकार की मुक्त द्वार की नीति थी, व्यवसायों की स्थिरता सन्देहास्पद थी। इस अवस्था में पूंजी का न लगाना निष्प्रयोजन नहीं था। परन्तु अब जब कि तटकर नीति द्वारा सरकार की तरफ से व्यवसावों की स्थिरता निस्संशय होगई है, इस समय भारतीयों को पूजी के प्रयोग करने में कोई संकोच नहीं हो सकता। प्रश्न स्थिरता के विश्वास का है न कि पुरानी जमा करने की आदत का। इस का प्रमाण भारतीय सरकार के युद्ध ऋण में मिल सकता है। भारतीयों ने कितनी उदारता से इस ऋण में धन दिया था, क्यों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि भारतीय सरकार की स्थिरता की धाक थी। जब व्यवसायों की स्थिरता की भी धाक होगई है तो कोई कारण नहीं कि भारतीय पूंजी को लगाने में कभी संकोच करेंगे। लेखक इस भ्रम का घोर प्रतिवाद करता है कि भारतीय पूंजी लज्जावती है और बाहर नहीं जाती। इसके साथ फिर इस स्थापना को रखता है कि विदेशी पूंजी के आमन्त्रित करने की आवश्यकता है—क्योंकि इस से शीघ्र व्यावसायिक उन्नति में सहायता मिलेगी—जो कि हमारे लिए सर्वथा अभीष्ट ही है।

सचाई तो यह है कि वर्त्तमान संसार में पूंजी सार्वभौम होचुकी है। उपनिवेशों में रेलवे आदि का निर्माण विदेशी पूंजी से ही होसका है। भारत चीन, टर्की में प्रायः सारे बड़े व्यवसाय इग्लैण्ड तथा फ्रांस की पूंजी से खड़े होसके हैं। सिद्धान्त तो यह होना चाहिये कि हमें विदेशी पूंजी को लेना तो चाहिये, परन्तु मंहगे दामों पर न लेना चाहिये। ऐसा न करना चाहिये, कि बड़े २ मुनाफे विदेशों में चले जायं, हां युक्ति युक्त मात्रा में उन को स्वीकार कर लेना चाहिये। इस समय बरमा के पेट्रोल के व्यवसाय में ऐसी विदेशी पूजीं का प्रयोग हो रहा है, जिस के बड़े २ मुनाफे विदेशी व्यापारियों के पास जारहे हैं जो, सर्वथा अनुचित है। इस सम्बन्ध में ताता कम्पनी का उदाहरण अनुकरणीय है। इस कम्पनी की पूंजी लगभग ३ करोड़ रुपये की है—जिस का ९०% हिस्सा भारतीय है—बाकी विदेशी है। जूट तथा चाय के व्यवसाय में विदेशी पूंजी की अत्यधिक मात्रा है—जिसको कम-करने के लिये भारतीय सरकार को उचित उपाय करने चाहिये। इन के अतिरिक्त कई ऐसे व्यवसाय हैं, जो पूंजी के अभाव के कारण नष्ट प्राय हो रहे हैं, उन के लिये विदेशी पूंजी को आमन्त्रित करना हमारे आर्थिक हितों के लिये लाभ कर ही है।

भारत में रेलवे, नहरों, स्थानीय समितियों आदि के लिये अभी बहुत पूंजी अपेक्षित है। 'समृद्ध भारत' के निर्माण के लिये जितनी भी पूंजी हो, उतनी ही थोड़ी है। गृह व्यवसायों की स्कीम पूरा करने के लिए भी कम धन की अपेक्षा नहीं है। विदेशी पूंजी जितनी भी मिले उतना ही अच्छा है, उतना ही स्वदेश शीघ्र उन्नत होगा, उतना ही शीघ्र विदेशी पूंजी (उन्नत होजाने पर) के बहिष्कार के लिये समर्थ हो सकेगा। विनय कुमार सरकार ने अपने एक विद्वता पूर्ण लेख में—जो हाल ही में 'मौडर्न रिव्यू' में प्रकाशित हुआ है—यह प्रमाणित किया है कि अभी बहुत से व्यवसायों के लिये विदेशी पूंजी के आमन्त्रित करने की आवश्यकता है। मैसूर की कानें, कागज़ का धन्धा, तथा अन्य कई व्यवसाय हैं जिनकी उन्नति बहुत ही जल्दी होसकती है यदि विदेशी पूंजी को निर्बाध रुप में स्वीकार किया जाय।

विरोध करने वालों की प्रधान युक्ति यही होती है कि यदि विदेशियों के धन्धे भारतवर्ष में प्रारम्भ होगये, तो प्रस्तुत तट कर नीति की आयोजना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्फल हो जायगी। जब भारतीय व्यवसायों की सहायता, तटकर नीति का मुख्य उद्देश्य था, तब विदेशी पूंजी को भारत में लाने का विचार सर्वथा असम्बद्ध है—क्योंकि इस अवस्था में विदेशी लोग ही मुनाफा लेंगे और वेही तटकर नीति का लाभ उठाएंगे। इस का उत्तर पूर्व भी दिया जा चुका और फिर दोहराया जाता है कि विदेशी पूंजी को उसी मात्रा तक स्वीकार करेंगे जहां तक वह युक्तियुक्त है। अभिप्राय यह कि वही पूंजी लीजायगी जिसके मुनाफे उचित हों। अनुचित मात्रा में मुनाफा कमाने वाली पूंजी को भारतवर्ष में स्थान न दिया जायगा। भारतीय सरकार किसी भी ऐसे विदेशी को देश में कोई कम्पनी, या फर्म खोलने की आज्ञा न देगी जो कि पूंजी का अनुचित प्रयोग करती हो। ऐसे नियमों को निर्माण किया जासकता है, जिन के द्वारा भारतीय व्यवसायों के प्रतिद्वन्दी हितों का विघात हो सके। विदेशी व्यक्तियों का अपने देश में अपनी नीति से धनी बनाना निस्सन्देह अपने पैर पर अपने आप कुल्हाड़ी चलाना है, तथापि इन परिणामों को शीघ्रता से दूर किया जासकता है, यदि थोड़ी सी दूरदर्शिता से काम लिया जाय। डम्पिङ्ग एक्ट आदि की तरह ऐसे एक्ट भी बनाए जासकते हैं, जिन से देश के स्वहितों की रक्षा हो सके। बड़ी व्यवस्थापक सभा में ताता लोह-व्यवसाय के सम्बन्ध में बिल पर बोलते समय श्रीयुत पण्डित मदनमोहन मालवीय ने इसी बात पर भारतीय सरकारका ध्यान आकर्षित कराया था कि लोहे की तटकर नीति का लाभ उठा कर कहीं कोई विदेशी कम्पनी भारतवर्ष में खड़ी न होजाय। निस्सन्देह एक ऐसे व्यवसाय का, जो देश का आधारभूत व्यवसाय कहा जासकता है, एक विदेशी कम्पनी के हाथ में चला जाना स्वदेश के व्यावसायिक एवं राजनैतिक हितों के भी प्रतिकूल है। इस विषय में भारतीय सरकार को विशेषतः सतर्क रहना चाहिए।

जब गवर्मेण्ट ने व्यावसायिक नीति में हस्ताक्षेप करने का निश्चय किया है तो उसे विदेशी पूंजी के सम्बन्ध में निश्चित नीति स्थिर कर लेनी चाहिये। किन विदेशी फर्मों को गवर्मेण्ट सहायता दे सकती है, किन को नहीं? इत्यादि। वर्त्तमान भारतीय अर्थशास्त्रज्ञों ने इस तरफ अपने निर्देश दिये हैं। सभी इस पर सहमत हैं कि उन्हीं विदेशी अथवा स्वदेशी कम्पनियों को भारतीय सरकार से सहायता होनी चाहिये—जिन में भारतीय तत्व पर्य्याप्त मात्रा में हो। उनका कथन है कि वे ही गवर्मेण्ट की सहायता के अधिकारी हों जो कि—

१. रुपया पूंजी रखते हों अर्थात् रुपयेके सिक्के में अपनी पूंजी रखते हों। इस से उनको अभिप्रेत यह है कि विदेशी लोगों को विनिमय आदि बाधा आने के कारण पूंजी डालने का कम अवसर होगा और भारतीय शीघ्र पूंजी लगाने में उत्साहित होंगे।

२. अपने बोर्ड आफ डायरेक्टर में पर्याप्त संख्या भारतीयों की रखते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हों। इस से भी वे भारतीय हितों की रक्षा आवश्यक समझते हैं।

३. और अपने व्यवसायों में कुछ निश्चित संख्या भारतीय शागिर्दों की रखते हों।

अन्तिम शर्त्त तीनों में आवश्यक है। वर्त्तमान समय में विदेशी श्रम का भारत में उपयोग किया जाता है। यह विदेशी श्रम हमारे व्यवसायों की शीघ्र उन्नति में बहुत बाधक है क्योंकि इस से उत्पत्ति के व्यय पर बहुत प्रभाव पड़ता है जिस से उन व्यवसायों की वस्तुएं मंहगी बिकती है। क्रमशः उक्त व्यवसायिक शिक्षा से भारतीय काम करने के लिये तैयार होंगे, जिस से जहां भारतीय व्यवसाय उन्नत होंगे वहां अपने देश के श्रम का मुनाफा अपने देश में ही रहेगा। यह सर्वथा गलत है कि भारतीय उच्च व्यवसाय के कार्य नहीं कर सकते। उन में पूरी योग्यता है, वे वैसी ही उत्तमता से कर सकते हैं जैसे कि विदेशी। इसका प्रमाण वर्त्तमान भारतीय व्यवसायों के भिन्न २ क्षेत्रों में मिल सकता है।

संक्षेपतः विदेशी पूंजी तथा विदेशी श्रम को थोड़े समय के लिये हमें स्वीकार करना चाहिये जिस से शीघ्रातिशीघ्र दोनों से मुक्त हो सकें। उद्देश्य, स्वदेश की आर्थिक समृद्धि है, उस के लिये वाह्य सहायता अनुचित नहीं है। प्रत्येक देश की उन्नति के इतिहास में विदेशी सहायता का स्थान होता है। हमारे देश को भी अपनी उन्नति के लिए विदेशी सहायता के आमन्त्रित करने मे संकोच न करना चाहिये।

——*——

वर्ण-व्यवस्था का तुलनात्मक अनुशीलन

[३]

भारतीय और योरपीय साम्यवाद

(ले० पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति आचार्य गुरुकुल मुलतान)

वर्णव्यस्था पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार करते हुए साम्यवाद या Socialism की आलोचना करना आवश्यक प्रतीत होता है। इस समय तक सच पूछा जाय तो योरपीय साम्यवाद का कोई भी निश्चित रूप नहीं है। इङ्गलैंड, फ्रांस, जर्मनी, और रूस के साम्यवाद बहुत अंशों में एक दूसरे से भिन्न हैं। दो चार बातों को छोड़ कर प्रायः हर एक बात में बड़े २ प्रसिद्ध साम्यवादियों तक का परस्पर मतभेद है। ऐसी अवस्था में योरपीय साम्यवाद क्या मानता है और क्या नहीं मानता यह निश्चिय पूर्वक कहना बड़ा ही कठिन है तो भी हम यथाशक्ति साम्यवादियों के बहुपक्षका मत संक्षेप से यहां दिखा कर उस की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय साम्यवाद और वर्ण-व्यवस्था के साथ तुलना करेंगे।

भारतीय साम्यवाद यह शब्द कुछ नया सा प्रतीत होता है पर थोड़ी गम्भीरता से पक्षपात रहित विचार किया जाय तो साफ़ पता लग जाएगा कि समानता (Equality) बन्धुता वा सार्वजनिक भ्रातृत्व (Fraternity) और स्वतन्त्रता (Liberty) के जो उच्च सिद्धान्त प्रत्येक प्रकार के साम्यवाद की जड़ में पाये जाते हैं उन का स्पष्ट उल्लेख भारतीय साहित्य में पाया जाता है। ये सिद्धान्त योरपीय दिमाग की उपज नहीं। समानता के सिद्धान्त का ऋग्वेद के निम्न-लिखित दो मंत्रों में कितने साफ़ शब्दों में प्रतिपादन है—

'ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदो
अमध्यमासो महसा विवावृधुः॥
ऋ० ५।४९।६

तथा-अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते'
संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय॥'
ऋ. ५। ६०।५

इन दोनो मंत्रों मेंअज्येष्ठासः और अकनिष्ठासः ये दो शब्द आये हैं जिन का अर्थ यह है कि इन सब मनुष्यों में जन्म से कोई छोटा वा बड़ा नहीं है। पहले मंत्र में इन दो शब्दों के अतिरिक्त 'अमध्यमास' यह शब्द भी आया है जो सब मनुष्यों की समानता के सिद्धान्त को पुष्ट करता है। इन मन्त्रों का देवता मरुत् है और मरुत् शब्द मनुष्य वाचक होना श्री सायणाचार्य ने भी अनेक स्थानों पर 'मनुष्य रूपा वा मरुतः' इत्यादि वाक्य लिख कर स्वीकार किया है। ऊपर जो मंत्र उद्धृत किये गये हैं उन में से पहले में 'विवावृधुः' द्वारा वैयक्तिक उन्नति और दूसरे में 'संवावृधुः' द्वारा सामाजिक उन्नति का निर्देश किया गया है। समानता के सिद्धान्त के साथ २ ही दूसरे 'मन्त्र में' 'भ्रातरः' कह कर बिल्कुल साफ़ शब्दों में सार्वजनिक भ्रातृत्व के उच्च सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्ने
वानुपश्यति।
सर्वभूतेषुचात्मानंततोन
विजुगुप्सते॥

ईशोपनिषत् के इस छठे मंत्र में 'जो पुरुष, सब भूत परमेश्वर के आश्रय पर हैं और सब भूतों के अन्दर परमेश्वर व्यापक है, ऐसा जानता है वह फिर कभी किसी से घृणा नहीं करता' यह कह कर समानता के उच्च सिद्धान्त का ही तात्विक रीति से प्रतिपादन किया है, इस से कौन इन्कार कर सकता है। भगवान् श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में

"विद्याविनय सम्पन्ने,
ब्राह्मणे गविहस्तिनि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुनि चैव श्वपाके च
पण्डिताः समदर्शिनः"

यह जो ब्राह्मण और चाण्डाल तक को समदृष्टि से देखने का उपदेश किया है वह इसी समानता के ही उच्चसिद्धान्त पर है।

"आत्मवत्सर्व भूतानि
यः पश्यति स पण्डितः ॥"

यह जो सुप्रसिद्ध नीतिवाक्य पञ्चतंत्र हितोपदेशादि ग्रन्थों में पाया जाता है वह भी साफ तौर पर समानता के साथ २ ही सार्वजनिक भ्रातृत्व के सिद्धान्त का द्योतक है।

'त्वंहिनः पितावसो, सनो बन्धुर्जनिता, योनः पिता जनिता योविधाता, अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिम्' इत्यादि वेद मन्त्र परमेश्वर को सब प्राणियों का एक ही समान पिता बतलाते हैं। जब सब के सब मनुष्य चाहे वे किसी भी देश, रंग और धर्म के हों एक ही पिता के पुत्र हैं तो उन के परस्पर बन्धु या भाई होने में संदेह ही क्या होसकता है? श्वेताश्वेतरोपनिषत् के २ अध्याय में इसी भाव को प्रकट करने के लिए यजुर्वेद के 'शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा, आये धामानि दिव्यानि तस्थुः।' इस सुप्रसिद्ध मंत्र को उद्धृत किया गया है वह भी सब मनुष्यों को एक ही अमृतस्वरूप परमेश्वर के पुत्र बतलाता है।

स्वतन्त्रता के उच्चसिद्धान्त के विषय में अधिक प्रमाणों के उल्लेख करने की विशेष आवश्यकता नहीं क्योंकि वेदों के हजारों मन्त्र स्वतंत्रता के भावों को दिल के अन्दर कूट २ कर भर देने वाले हैं।

'अदीनाः स्याम शरदः शतम्।' सन्ध्या के समय यह भारतीय आर्यों की दैनिक प्रार्थना है।

"यो अस्मां अभिदा-
सत्यधरं गमयातमः॥

यह आर्यों की परमेश्वर के प्रति हार्दिक प्रार्थना है जो दासता में डालने की चेष्टा करने वाले पुरुषों के नाश और अन्धकार में डाले जाने की सूचना देती है। वैदिक ऋषियों को तो स्वतन्त्रता अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय थी, इस लिए वे अग्नि अर्थात् ज्ञान स्वरूप परमेश्वर से वेद मंत्र द्वारा यह प्रार्थना किया करते थे कि—

"योऽस्माँश्चक्षुषा मनसा चित्या
कूत्या च यो अद्याभि दासात्।
त्वंतानग्ने मेन्यामेनीन् कुरु"

जिस का अर्थ यह है कि जो पापी हमें किसी भी तरह मन से भी दास बनाने का विचार करता है उसका हे परमेश्वर तू नाश कर दे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्वतंत्रता के सिद्धान्त को हमारे पूर्वज इतना महत्व देते थे कि धर्म्मशास्त्रकार महाराज मनुने सुख दुःख का लक्षण ही 'सर्वं परवशं दुखं, सर्वमात्मवशं सुखम्" इन शब्दों में किया है। स्वाधीनता ही सुख और पराधीनता ही दुख है यह कितना उच्च सिद्धान्त है।

वैदिक धर्म के अनुयायियों का यह दावा है कि ऊपर समानता, सार्वजनिक भ्रातृत्व और स्वतन्त्रता के जिन तीन उच्च सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है वे हमारी वर्णव्यवस्था पर पूर्णतया लागू होते हैं। वैदिक वर्णव्यवस्था, जन्म सिद्ध ऊंच नीच को न स्वीकार करके सब मनुष्यों को अपना बन्धु समझने का उपदेश करती है, साथ ही वह प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता देती है कि अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों को जानकर अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार वह समाज की सेवा करें। किसी भी व्यक्ति को दासता के बन्धन में डालना वैदिक वर्णव्यवस्था के मूल सिद्धान्तों के ही विरुद्ध है॥

[क्रमशः]

पावस में कुल-कीर्तन

पावस में पुलकित करें कुलमाता का रूप,
नयन अचल चलचित्त है लख कर दृश्य अनूप।

भागी भागी भागीरथी आती पैर चूमने को,
ललक ललक बार बार बलि जाती है।
गौरव के गीत गाती फूली न समाती अंग,
प्रेम के गिराती आंसु बादलों की पांती है।
भाल पै हिमाचल जो सोहता किरीट सा है,
एक भी न उपमा वहां पै टिक पाती है।
शत शत चन्द्र वाले शिखियों की श्रेणी वहां,
एक चन्द्र वाले आसमान को लजाती है।

प्रकृति सखी ने पहिराई हरी साड़ी तुझे,
ताज पर बाल-रवि रत्न सा जड़ाया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूट फूट किरनों ने मैले आसमान पै भी,
अजब अनोखा कोई नया रंग लाया है।
हरे हरे आंचल पै सतरंगी मोतियों ने,
झिलमिल झिलमिल ज्योति को नचाया है।
ऊंचे नीचे आजू बाजू भीतर बाहर देखा,
स्वप्न सुषुमा ने भी तो टाकरा न खाया है।

"श्रीशान्त"

मनुष्य का इतिहास में स्थान

(ले०— पं० कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार)

संसार के इतिहास में उत्थान और पतन, विकास और ह्रास का नियम बहुत ही प्राचीन है। एक अवनत देश अवश्य उठेगा और एक उन्नत देश अवश्य कालचक्र के प्रभाव से गिरेगा। भारत, यूनान, मिश्र और चीन कभी उन्नत थे, आज नीचे गिरे हुवे हैं। इग्लैण्ड और अमैरिका आज सभ्य देशों में शिरोमणि समझे जाते हैं। इग्लैण्ड उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंच चुका है और अब उसके नीचे गिरने के लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं। इसी तरह अब प्रसुप्त भारत, चीन और मिश्र जाग कर उठने की तैयारी कर रहे हैं। प्रत्येक देश को इन दोनों अवस्थाओं में अवश्य गुज़रना पड़ता है। परन्तु क्या यह ह्रास अवश्यंभावी है? क्या मनुष्य में इस नियम का परिवर्तन करने की शक्ति नहीं है। क्या किसी देश के इतिहास के निर्माण में मनुष्य का कोई भी भाग नहीं है? क्या प्रकृति ही स्वयं सब काम करती है या मनुष्य को भी कुछ करने देती है? हम इस लेख में इसी प्रश्न की संक्षिप्त विवेचना करने का यत्न करेंगे।

कतिपय प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् इस का उत्तर देते हुवे कहते हैं कि मनुष्य कुछ नहीं कर सकता, वह जो कुछ करता है, प्रकृति ही उसे कराती है, प्रकृति जैसा चाहती है, मनुष्य को वेसे साँचे में ढाल लेती है। मनुष्य के जीवन पर प्राकृतिक शक्तियों और भौगोलिक परिस्थितियों का बहुत ही गहरा असर पड़ता है। इस कल्पना की उत्पत्ति १८ वीं सदी में हुई। मौन्टेस्क्यू और बकले इस कल्पना के मुख्य प्रवर्तक कहे जा सकते हैं। बकले ने अपनी पुस्तक के दूसरे अध्याय में बहुत अच्छी तरह बतलाया है कि मनुष्य स्वयं कुछ नहीं कर सकता, मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे स्वाभाविक प्राकृतिक कारण अवश्य लगे रहते हैं। अमुक ने अमुक कार्य किया यह वाक्य बकले की सम्मति में सत्य नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी प्राकृतिक नियम ने उसे उस कार्य के लिये बाधित किया होगा। बकले आगे चल कर महापुरुषों के विषय में लिखते हैं कि उनकी भी कोई सत्ता नहीं, वे जिस परिस्थिति में रहते हैं, उस परिस्थिति के वे केवल बच्चे हैं। इसविषय में Essense of Christianity के प्रसिद्ध लेखक फ्यूअरबैच का नाम लेना असंगत न होगा। इनका मत है कि मनुष्य और प्रकृति के सिवा कोई चीज़ नहीं, और मनुष्य प्रकृति के आधीन है। जल-वायु, भोजन, भूमि और अन्य प्राकृतिक परिस्थितियाँ ही मनुष्य को बनाती हैं। अंग्रेजी की Man is what he Eats युक्ति बिलकुल ठीक है। "अन्नमयं हिमनः" का भी यही अभिप्राय है। प्राकृतिक और भौगोलिक परिस्थितियों का किसी देश के इतिहास पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

भारत के तीन ओर समुद्र और एक ओर दुर्गम पर्वतमाला है, इसलिये भारत को विदेशियों का डर नहीं रहा, यही कारण है कि भारतीयों को उस काल में एकत्रित होकर लड़ने का अवसर ही नहीं मिला, जिस के कारण भारतीयों में जातीयता या राष्ट्रीयता के भावों का अभ्युदय ही नहीं हुवा। इसी तरह ग्रीसके इतिहास में हम पाते हैं। वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ही वहाँ छोटे नगर राष्ट्र बन गये थे। उन्हें भी विदेशियों का डर नहीं था, इसलिये उन को भी अपने को ग्रीक समझने का समय नहीं मिला, वे अपने को स्पार्टन, ऐथिनियन और थीब्सिन ही समझते रहे, परन्तु जब एशियामाइनर से तथा मैसिडोनिया से विदेशी आक्रमण हुवे तो सारा ग्रीस एक हो गया, उन्हों ने अपने को ग्रीक समझ कर युद्धों में पूरा भाग लिया।

इग्लैंड को चारों ओर से समुद्र से घिरा रहने के कारण विदेशी आक्रमणों का डर नहीं रहा, इसलिये उस के इतिहास का बड़ा भाग राजा और प्रजा के पारस्परिक युद्धों में-पारस्परिक संघर्ष में बीता है, प्रजा को विदेशियों से युद्ध करने में नहीं लगे रहना पड़ा।

भिन्न २ परिस्थितियों में भिन्न २ प्रभाव हुवा करते हैं। शाकाहारी और मांसाहारी प्राणियों के रूप रचना, शील तथा स्वभाव में उन की भिन्न २ परिस्थितियों के अनुसार ही भिन्नता हुवा करती है।

मनुष्य कहाँ तक नियमाधीन है, इसे बकले ने बड़ी ही विस्मयकारक रीति से सिद्ध किया है। मनुष्य के कार्य नियम के आधीन हैं या नहीं-तथा समाज को दी हुई एक अवस्था में अपराधों की संख्या समान रहती है या नहीं-यह जानने के लिये बक्ले ने विविध विषयों के ऊपर बहुत से देशों की संख्या पत्रों(Statistics) को इकट्ठा करना शुरु किया। इसमें उसे अद्भुत सफलता प्राप्त हुई। उसने देखा कि प्रत्येक साल में ७ हत्या प्रभृति अपराधों की संख्या बराबर ही रहती है। प्रत्येक काल में आत्म-हत्या करने वालों की संख्या भी उसे बराबर मिली। इन सब के अतिरिक्त मनुष्य के नियमाधीन होने का एक अद्भुत प्रमाण मिला। वे कहते हैं— "लण्डन और पेरिस के डाकखानों ने कुछ वर्षों से ऐसे पत्रों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कोष्ठक छापना शुरू किया है कि जिन पर पत्र लिखने वाले पता भूल गये हैं और हर वर्ष उनका हिसाब पूर्व वर्ष के हिसाब की हू ब हू नकल मालूम होती है। हर वर्ष पत्र लिखने वालों की एक ही संख्या इस साधारण बात को भूल जाती है। यहाँ तक कि हम वर्ष के प्रारम्भ में बतला सकते हैं कि कितने लोगों की स्मरण शक्ति उन्हें धोखा देगी।

इन सब बातों का अभिप्राय यही है कि जल वायु, भोजन, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक परिस्थितियाँ ही किसी देश के इतिहास को बनाती हैं, मनुष्य का इसमें कोई भाग नहीं। मनुष्य अगर चाहे तो भी अपनी स्थिति को ऊँचा नहीं कर सकता। किसी देश को उस के अपने पूर्वजों पर अभिमान नहीं करना चाहिये, क्यों कि उन्हों ने तो कुछ किया ही नहीं। महापुरुषों को परिस्थिति ने पैदा किया, उनकी इतिहास में कोई सत्ता नहीं।

परन्तु क्या यह विचार ठीक हैं? क्या वस्तुतः भारत के इतिहास को बनाने में राम, कृष्ण, बुद्ध, अकबर, औरंगज़ेब, शिवाजी, गुरुगोबिन्द, स्वा० दयानन्द, लो० तिलक और म० गाँधी का कोई हाथ नहीं है? इन के नाम अगर भारतीय इतिहास से निकाल दिये जावें तो भारत का इतिहास क्या बचेगा। इसी तरह रोम के प्राचीन इतिहास में से अगर सोलन, लायकरगस, जूलियससीज़र आदि प्रधान व्यक्तियों के नाम निकाल दिये जायँ तो रोम का बाकी इतिहास क्या बचेगा। इसी तरह बक्ले के सिद्धान्त में अन्य भी बहुत से दोष आ जाते हैं। बक्ले का सिद्धान्त भाग्यवाद पर आश्रित है क्योंकि इसमें मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा को कोई स्थान नहीं दिया गया। इस आक्षेप के करने वालों में मुख्य आक्षेप कर्ता प्रसिद्ध ऐतिहासिक कारलाइल हैं। इन का मत है कि इतिहास महापुरुषों की जीवनियों का संग्रह है। इतिहास निर्माण में प्राकृतिक या भौगोलिक परिस्थिति का कोई स्थान नहीं है।

परिस्थितियाँ मनुष्य को नहीं बनातीं परन्तु मनुष्य परिस्थितियों को बनाता है, वह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार परिस्थितियों को तोड़ मरोड़ सकता है। मनुष्य एक चेतनपदार्थ है उस में कर्मण्यता पर्याप्तरूप से विद्यमान होती है। इसी मत को महाभारतकार ने निम्न लिखित शब्दों में दिखाया है

कालो वा कारणं राज्ञः, राजा वा काल कारणम्।
इति ते संशयो मा भूत्, राजा कालस्य कारणम्॥
शान्ति. ६९-६।

शुक्रनीति में भी कहा है—

युगप्रवर्तको राजा धर्माधर्मप्रशिक्षणात्।
युगानां न प्रजानां न दोषः किन्तुनृपस्य हि॥
शुक्र ४-१-६०।

देश के इतिहास को महापुरुष बनाया करते हैं। धर्म, व्यवसाय, राष्ट्र-शिक्षा, और साहित्य की दिशा को महापुरुष ही दिखाया करते हैं। नवीन परिस्थितियों के निर्माण और वर्तमान परिस्थितियों के स्वरूप को बदल देने से ही क्रान्तियाँ तथा उनके स्वरूपों में वैविध्य आ जाता है और यही कारण है कि भिन्न २ समयों पर भिन्न २ देश सभ्यता के केन्द्र होते रहते हैं। भारत की भौगोलिक परिस्थियों ने भारत को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशियों के आक्रमण से बचा रखा था, परन्तु आधुनिक विज्ञान की उन्नति से वह बात न रही। मनुष्य भौगोलिक और सामजिक परिस्थितियों काउपयोग करता रहता है, कभी नई परिस्थितियाँ बनाता है और कभी वर्तमान परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता है। समुद्र पहले किसी देश के व्यापार में बाधक होते थे, परन्तु आज जहाज़ों के बन जाने से वही व्यापार में सहायक हो रहे हैं। कृत्रिम स्वेज़ नहर का इतिहास में विशेष महत्व है।

परन्तु क्या मनुष्य पूर्ण स्वतन्त्र है, उसे किन्हीं बाह्य कारणों के प्रभाव में आकर अपनी इच्छा को दबाना नहीं पड़ता! हक्सले मनुष्य की इस स्वतन्त्र इच्छा का विरोध करते हुवे लिखता है— 'स्वतन्त्रः कर्ता' का सिद्धान्त मानने वालों की मुख्यतम युक्ति यह है— प्रत्येक मनुष्य अनुभव करता है कि मैं जो चाहता हूँ, करता हूं इस युक्ति में वस्तुतः कोई सार नहीं। इनका उत्तर यह है कि इसमें किसी को सन्देह नहीं कि कुछ निश्चित सीमाओं में किसी तरह तुम अभिलषित कर्म पूरा कर सकते हो। परन्तु तुम्हारी इच्छाओं और अनिच्छाओं को कौन निश्चित करता है। तुम एक विशेष इच्छा करने में स्वतन्त्र नहीं, इच्छा को पैदा करने वाले कुछ और वाह्य कारण होते हैं। एक मनुष्य किसी काम करने में स्वतन्त्र है, परन्तु उस का धर्म तथा समाज उसे बाधित करता है कि वह वैसा काम न करे। हिन्दू-समाज प्रत्येक को अपनी लड़की के विवाह करने के लिये बाधित करता है। एक व्यक्ति जो ईसाई है, बहुविवाह, करने में स्वतन्त्र है, परन्तु उसका धर्म उसे ऐसा करने नहीं देता।

जब किसी समाज का बहुमत किसी बात को विधेय मानने लगता है तो वह बुरी नहीं रहती और जब किसी को हेय समझने लगता है तो वह कार्य समाज में गर्हणीय समझा जाने लगता है। जब समाज का बहुमत किसी पथ को मान ले तब वह पथ किसी व्यक्ति विशेष का नहीं रहता, परन्त समाज का हो जाता है। यही कारण है कि कारलाइल का महा पुरुष सिद्धान्त पुष्ट नहीं किया जा सकता। ठीक है कि महापुरुषों का प्रभाव समाज पर पड़ता है, वे अपने पथ को समाज का पथ बनाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उनके विचारों पर भी परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है, वे भी समय तथा परिस्थितियों की उपेक्षा नहीं कर सकते। रूसो अपने समय का प्रतिबिम्ब ही था। प्रसिद्ध प्राचीन दार्शनिक अरस्तू ने भी दास प्रथा का समर्थन किया था क्योंकि दास प्रथा तत्कालीन ग्रीक सभ्यता का मुख्य भाग थी। इसी तरह हमारे पण्डितों ने भी बाल-विवाह और पर्दा प्रथा का समर्थन किया क्योंकि उन दिनों लम्पट विजेता मुसलमानों से स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करनी थी। बहुत दफ़ा तो ऐसा हुआ है कि परिस्थितियों के कारण जो कुछ होना था, महापुरुष उस के पूरा करने के केवल साधन बन गये। सीज़र ने रोमन सम्राज्य का संगठन किया परन्तु यदि वह न भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता तो भी उस का संगठन निश्चित था। नैपोलियन ने सारे यूरोप का मानचित्र बदल दिया परन्तु फ्राँस का जो वर्तमान रूप है वही उस के न आने से भी होता।

महापुरुष समाज पर तभी प्रभाव डाल सकते हैं जब कि समाज उन की बातें सुनने को तैयार हो। यदि समाज उस के लिये तैयार नहीं है तो वह महापुरुष नहीं कहलावेंगे। महापुरुष मानव जाति के सफल परिवर्तन की अन्तिम सीमा को दिखादेते हैं। एक व्यक्ति बड़ा इसी लिए होता है क्योंकि वह समाज की मुख्य प्रवृत्तियों का औरों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह विश्लेषण कर सकता है और क्योंकि तत्कालीन समाज के वास्तविक भाव को, जिसका वह प्रतिबिम्ब है, औरों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है।

वस्तुतः ये दोनों पक्ष पूर्णतया सत्य नहीं हैं, इन दोनों में केवल सत्यांश है। ग्रीस और रोम के इतिहास में भौगोलिक परिस्थिति का महत्त्व ज़रूर है, परन्तु वहां मनुष्य का भी महत्त्व कम नहीं। सोलन, लायकरगस तथा जूलियस सीज़र का रोम के इतिहास में बड़ा भारी भाग है, यहां तक कि इन महापुरुषों के कार्यों को पढ़ते समय भौगोलिक परिस्थिति को हम भूल जाते हैं। इसी तरह प्रकृति ने भारत के इतिहास में अवश्य भाग लिया है। शिवाजी का कार्य इस भौगोलिक परिस्थिति के कारण ही सरल होगया था। औरंगजेब का उद्देश्य इसी परिस्थिति के कारण पूर्ण नहीं हुवा। शीत कटिबन्ध और उष्ण कटिबन्ध के लोगों की सभ्यता तथा उन्नति में प्रकृति कितना असर डालती है, कहने की ज़रूरत नहीं। आलिवर क्रामवेल में सब प्रकार की योग्यता थी, उस के विचार ऊँचे थे, और उस ने उसी प्रकार यत्न किया, पर उसे सफलता नहीं मिली। जो बात इग्लैंड में १६४६ में सफल नहीं हुई थी, वही बात १६८८ में विना रक्तपात के फलीभूत हो गई। इस का क्या अर्थ है? क्या इस का यह अर्थ नहीं कि क्रामवेल के समय उस कार्य के लिये परिस्थिति पैदा नहीं हुवी थी। १६४६ में अंगरेज़ लोगों में उस धार्मिक और राजकीय स्वतन्त्रता की कल्पना भी न थी जो क्रामवेल उन्हें देना चाहता था और इस कारण उसका प्रयत्न सफल नहीं हुवा। परिस्थिति परिपक्व होजाने पर वही कार्य बिना रक्तपात के होगया।

परन्तु मनुष्य भी चेतन पदार्थ है, उस में शक्ति है और इतिहास के निर्माण में मनुष्य का भी पर्याप्त भाग है। परिस्थिति अनुकूल होने पर शिवा जी का काम था कि महाराष्ट्र की बिखरी हुवी शक्ति को एकत्र करके एक महाशक्ति पैदा कर दे।

लूथर के विचार कई लोगों के दिलों में थे, पर लूथर की ही हिम्मत थी कि पोप के पापों को लोगों पर स्पष्टतया प्रगट कर सका। सारांश यह है कि मनुष्य का स्थान भी इतिहास में पर्याप्त है।

हम अपने लेख को एक विद्वान् के महत्वपूर्ण इन सत्य शब्दों के साथ समाप्त करते हैं Men are the product of history and history is made by them. अर्थात्— मनुष्य इतिहास की उपज है और इतिहास मनुष्य की कृति है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीधर का अश्लीलभाष्य और शत पथ

ले० पं० जयदेव शर्मा विद्यालङ्कार

महीधर ने यजुर्वेद का भाष्य किया और कर्मकाण्ड को मुख्यता दी। परन्तु इतने पर भी "गणानां त्वा गणपतिं" इस सूक्त पर जिस प्रकार का गन्दा और बेशर्मी का भाष्य किया है उस को देख कर विस्मय में पड़ना पड़ता है। यह आर्य जाति ऐसी अन्धी रही कि इस के धर्मग्रन्थों में जो भी जिस ने मिला दिया उस को वैसा मान लिया और अपने गले पड़ती फूहड़ फोश बातों को अपने से अलग कर डालने का कुछ भी विचार न किया।

महर्षि दयानन्द ने शतपथ के आधारों पर "गणानां" इस सूक्त के जो महत्वपूर्ण अर्थ प्रकट किये हैं उन को देखकर न केवल महर्षि के उच्च विचारों का पता लगता है, साथ ही ब्राह्मण ग्रन्थकारों की दीर्घ दृष्टि का और वेदों की रहस्यपूर्णता का भी पता लगता है। महर्षि की बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स्पष्टता से "भाष्यकरण शंका समाधानादि विषयः" में महर्षि ने महीधर के भाष्य को उठा कर उस के अश्लील अर्थों को खोल कर धर दिया है। उस को हम अपने लेख में दोहराना नहीं चाहते। हम केवल इस लेख में यही बतलायेंगे कि महीधर ने ये सब फूहड़बाजी का पिटारा किस आधार पर रचा है।

(१) महीधर ने जो अर्थ किये हैं उनका आधार भी शतपथ है, इस के हमें कहने में संकोच नहीं है। इतना ही हम और कहेंगे कि महीधर को बदमाशों के चलाये भैरवीचक्र का समर्थन करना था इस लिये उसने शतपथकार के लिखे का आगा पीछा काट कर बीच की बात उठा ली और यह नहीं देखा कि शतपथकार ने उस फूहड़बाजी को फूहड़बाजी ही लिखा है, कोई भले आदमियों का काम नहीं लिखा। मजा यह है कि शतपथ कार ने वह बात भी खोल कर लिख दी है और उसका वह महत्व नहीं बतलाया जो वह पहले उन्हीं मंत्रों का बतला आया है।

हमने पहले किसी अङ्क में 'आर्य' के पाठकों के समक्ष 'मांसौदन' के प्रकरण को उठाकर बतलाया था कि वे अप्रासंगिक और असम्बद्ध होने के कारण प्रक्षिप्त हैं। इन्हें पीछे से धूर्त, पाखण्डी, नीच, स्वार्थी, विषय लोलुप लोगों ने अपना मतलब साधने के लिए जोड़ दिया है। इस बार हम महीधर की मानी हुई बदमाशी के अर्थों का जो मूल शतपथ में प्राप्त होता है उसकी विवेचना करेंगे। पाठकगण सावधान होकर उस पर भी विचार करें।

शतपथ के १३ वें काण्ड में अश्वमेध की व्याख्या की है। ब्रह्मौदन पाक से प्रारम्भ करके उसी काण्ड के अ० ५ ब्राह्मण अर्थात् तृतीय प्रपाठक के तृतीय ब्राह्मण के १५ वीं कण्डिका तक समस्त अश्वमेध की व्याख्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त हो जाती है। उस के बाद वहिष्यवमान मात्र शेष रह जाता है। वहिष्यवमान का प्रकरण भी ५ वें अ० के १म० ब्राह्मण की १८ कण्डिका में लिखा गया है। इस के आगे वह फोश भाग है जिसको महीधर ने अपना आधार बनाया है। मेरी निजी सम्मति में यह प्रक्षिप्त है। यह प्रक्षिप्त भाग ५ वें अध्याय के २ य ब्राह्मण से प्रारम्भ होता है। इस के प्रक्षिप्त होने में पर्याप्त प्रमाण हैं।

(१) पांचवें अध्याय का दूसरा ब्राह्मण जो "एते उक्त्वा" से प्रारम्भ किया गया है वह यज्ञ के समाप्त हो जाने के बाद लिखा है इसलिये वह अश्वमेध के प्रकरण से बाहर है। उसका वास्तविक अश्वमेध से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(२) यह सब फोश कार्यवाही किस स्थान पर हो इस का इस स्थान पर कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है। प्रकरण प्रारंभ इस प्रकार किया गया है।

"एते उक्त्वा। यदध्रिगोः परिशिष्टं भवति तदाह। वासोऽधिवासं हिरण्यम् इति अश्वाय उपस्तृणन्ति। तस्मिन्ने नमधिसंज्ञपयन्ति" इत्यादि। इस से यह पता लगता है कि अश्व को संज्ञपन स्थान पर लाकर वहां पर्दा लगा कर यह कार्य होने वाला है। इस के पूर्व 'एते उक्त्वा' यह लिखा गया है। 'एते' ये क्या पदार्थ हैं कौन 'उप स्तृणन्ति ? कदाचित् ऋत्विग् लोग यह सब काम करते हैं। पर भाई साहब नहीं। "एते उक्त्वा" यह लिखकर आगे पूर्ण विराम (।) का दण्ड है। 'एते उक्त्वा' वह खण्डित वाक्य है और साकांक्ष है। बीच में यह लिख डाला गया कि "यदध्रिगोः परिशिष्टं तदाह।' अध्रिगु का परिशिष्ट जो है सो कहा जाता है। क्या कहता है कि—वासोऽधिवासं हिरण्यमित्यश्वाय उपस्तृणन्ति।"

पाठक गण! ठीक यही विनियोग आप अश्वमेध के प्रकरण में अ०२ के ८ वें ब्राह्मण में पढ़ेंगे। वहां अश्व को संज्ञपन किया गया है क्योंकि वहां लिखा है कि "एतेन जीवता एव पशुना इष्टं भवति"=इस 'जीते हुए पशु से ही यज्ञ किया जाता है। इस लिये पापी लोगों ने यह 'अध्रिगु' का परिशिष्ट जोड़ा है। यहां पशु के साथ पशु क्रीड़ा का फाग खेलने की धुन सवार है। और पशु को मार कर उस का कुश्ता बनावेंगे, इस लिए प्रथम उस के पैर धोने के लिये ४ स्त्रियें, और एक कुमारी अपनी सौ दासियों के साथ आती हैं और जो उन में पट रानी होती है उस को घोड़े के साथ भोग करने के लिए पास बैठा देती हैं। और पर्दा टांग दिया जाता है। बस हो गया यह महीधर का स्वर्ग लोक। अब महीधर के भाष्य की पंक्तियां ब्राह्मण में भी चलती हैं।

"निरायति अश्वस्यशिश्नं
महिष्युपस्थे निधत्ते।"

मन्त्र पढ़ा गया "वृषाबाजी रेतो-धा दधातु" और फिर उसके बाद जब दोनों घोड़ा और यजमान पत्नी एक हो गये तो अब सब के बीच में आपस में फोश मज़ाक और भड़ुए बाजी चलती है। यजमान अपनी पत्नी के साथ घोड़े

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भोग करते हुए को कहता है। "उत्सक्थ्या अवगुदंधेहि" और अध्वर्यु ब्राह्मण कुमारी को कहता है कुमारिहये। "हये कुमारि यकासं को शकुन्तिका"

कुमारी अध्वर्यु को कहती है 'हये अध्वर्यो! यकोसकौशकुन्तक" और अधिक हम नहीं लिखेंगे इस से अधिक बेशर्मी की बातें दुनिया के साहित्य में लिखी नहीं जा सकतीं। आगे रानी के साथ ब्रह्मा की और शेष रानियों के साथ उद्गाता आदि की भडुएपने की बातों के साथ २ गणपति सूक्त के वेद मन्त्र खण्डों को जोड़ २ कर महीधर ने जो रंग खिलाया है वही ३ य ब्राह्मण भाग में भी है। यह प्रक्षिप्त इस लिए है कि इन समस्त मन्त्रों का विनियोग और संज्ञपन की वैदिक रीतिका वर्णन अ० २ के ८ वें और ९ वें ब्राह्मण में आगया है और उस की उत्तम सुन्दर और महत्वपूर्ण व्याख्या भी दर्शायी गई है। वहां इस बदमाशी का खप्न भी नहीं है। प्रत्युत उस में वही सब सत्य ज्ञान दर्शाया है जो महर्षि ने अपनी भूमिका में लिखा है।

(३) जिस प्रकार वास्तविक संज्ञपन के पूर्व, होता और ब्रह्मा का ब्रह्म विषयक वाद लिखा है उसी प्रकार का ब्रह्मवाद इस भडुवेबाजी के बाद भी दोहराया गया है। जब यह विधि हो ही चुकी है तो पुनः इस को लिखना व्यर्थ है। वास्तव में भांडों ने यहां भी अपनी नीचता पर मुलम्मा चढ़ाने के लिए यह प्रकरण ऐसे ही जोड़ लिया है।

(४) साथ ही इस के वपाहोम या चर्बी की आहुतियों का विधान किया है जो मूल अश्वमेध प्रकरण में नहीं है।

(५) सब से बड़ा प्रमाण उक्त प्रकरणों के प्रक्षिप्त होने का यह है कि अश्वमेध की समाप्ति की सूचना ५ अ० ब्रा० १ की १६ वें कण्डिका में दे दी गई है। जब अश्वमेध हो चुके तभी यज्ञ की सफलता विफलता को देखा जाता है। ब्राह्मणकार ने भी १५ वीं कण्डिका में यज्ञ समाप्त करके १६ वीं कण्डिका में यज्ञ की समृद्धि की पहिचान बतलायी है कि अश्व को आस्ताव देश में से ले जाते हैं। यदि वह अश्व नीचे गर्दन करके सूंघ ले या गर्दन फेर ले तो समझें कि "समृद्धो मे यज्ञः' यज्ञ खूब अच्छा हुआ है। उस के बाद ११ ऋचाओं से होता अश्व की प्रशंसा करता है। अश्व की प्रशंसा के मन्त्र "यदक्रन्दः" यजु० अ० २१ मं० १२ से २२तक में ११ मन्त्र हैं। उस के बाद २३, २४ मन्त्र भी पढ़ कर 'मानोमित्रः' यह सूक्त (यजु० २५। २४) अध्रिगु के प्रति कहे जाने के मत का खण्डन किया गया है। और उस के बाद यह 'ऐते उक्त्वा' इस प्रकार अध्रिगु का परिशिष्ट का ब्राह्मण है। अब देखिए पूर्व ब्राह्मण में जिस अध्रिगु के अवाप का विषेध किया है पुनः उस को परिशिष्ट कहना कहां तक उचित है। और साथ ही जब वह प्रकरण सारा पूर्व ही प्रसंग बद्ध होकर आचुका है तो यह परिशिष्ट अप्रासङ्गिक स्वयं सिद्ध हो जाता है।

(६) और आनन्द यह है कि ब्राह्मणकार स्वयं इस फूहड़वाजी को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिख कर स्वीकार भी कर लेते हैं कि यह 'अपूता' वाग् है। यह वाणियां गन्दी और अश्लील हैं। उसके पाप को धोने के लिए आगे ब्रह्मवाद कहा है कि कहीं देवता लोग इस भडुए वाज़ी को देख कर उठ कर न चले जांय।

"ये यज्ञेऽपूतां वाचं, वदन्ति, वा चमेषएतत्पुनते देवयज्यायै। देवता नामपक्रमाय।

(७) फूहड़बाज़ी के बाद भी लिखा है कि "सर्वाप्तिर्वाएषावाचः यदग्नि मेथिका सर्वेकामा अश्वमेधे" औरब्रह्म वाद के बाद भी लिखा है "सर्वाप्ति-र्वाएषावाचः यद्ब्रह्मोद्यं" परन्तु ऐसी प्रशंसा कहीं पहले लिखे ब्रह्मोद्यं" में नहीं हैं। फलतः यह चोर की दाढ़ी का तिनका है। यहां इस प्रशंसा सूचक वाक्य में अमृत जहर को साथ २ मिला कर रख दिया है कि कहीं यजमान इस "सर्वाप्ति" कामना के महा साधन की उपेक्षा न कर दे। कहीं दोस्तों यारों का यह रस भंग न हो जाय।

(८) उक्तस्थल के प्रक्षिप्त होने की एक युक्ति यह है कि ग्रन्थ की स्वाभाविक संगति टूटती है। अश्वमेध की व्याख्या समाप्त हो जाने पर यह एक आवश्यक बात है कि अश्वमेधयाजी प्रसिद्ध लोगों के नाम और उन के दृष्टान्त दिखाकर इस कर्म की महत्ता दर्शायी जाय। सो ५ वें अध्याय के ४ र्थ ब्राह्मण में यही दर्शाया गया है और अश्वमेध प्रकरण समाप्त किया गया है। तदनन्तर पुरुष मेध का आरम्भ है। अब यहां वि-चार योग्य बात यही है कि जब अश्वमेध ५ वें अध्याय के १म ब्राह्मण में ही समाप्त हो गया तब उस के बाद ही अश्वमेधयाजियों की सूची आना उचित है न कि घोड़े का पुनः संज्ञपन और ऋत्विग् लोगों की भडुएबाज़ी शुरु हो जाय।

इस पर और भी आर्य विद्वान विचार करें तो सत्यार्थ प्रकट हो जायगा। अब मैं लेख समाप्त करने के पूर्व एक और विशेष बात पर ध्यान आकर्षण करना चाहता हूँ। यह परिशिष्ट अध्रिगु परिशिष्ट कहा गया है। अध्रिगु का शब्दार्थ है अजितेन्द्रिय। अर्थात् जो लोग जितेन्द्रिय नहीं है उन्होंने अश्वमेध के साथ एक यह बात भी जोड़ रक्खी है, इसी लिए यह परिशिष्ट जुड़ गया। अध्रि का दूसरा पर्याय शमिता कहलाता है। 'शमिता' महाशय वह हैं जो यज्ञ में वध कर ने योग्य पशु के, जिस की बलि करनी होती है टुकड़े अलग २ काटा करते हैं। ये जल्लाद महाशय 'अध्रिगु हैं जो १६ हो ऋत्विजों से अलग हैं। यह उनकी कारस्तानी है। ऐसे नीच वृत्ति पुरुष अपना पेशा बनाये रखने के लिए ऐसे २ अमानुषिक कामों की योजना किया करते हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थ में यह परिशिष्ट बहुत बाद में वाममार्ग के भयंकर समय में जुड़ा है और इसी आधार पर वाममार्गियों ने वेद का मन माना अर्थ कर के अपनी नीच वृत्ति का परिचय दिया है।

इसके अगले लेख में मैं पाठकों के समक्ष संज्ञपन की सचाई पर प्रकाश डालने का यत्न करूंगा। उस में भी धूर्त्तों ने हाथ डालने में कसर नहीं छोड़ी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

देश की दशा — कलकत्ते के दंगे के बाद से देश का वायु मण्डल दिन प्रति दिन खराब होता जा रहा है। एक ओर हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य तूल पकड़ रहा है तो दूसरी ओर पार्टियों की दल दल ने देश को गारत कर रक्खा है। कहां १९२०, २१ में हम स्वराज्य का सच्चा स्वप्न देख रहे थे और कहां आज दिन दहाड़े आपस की मार काट का नज़ारा देख रहे हैं। १९२० में हम हिन्दूमुसलमान एक हो राष्ट्रीयता के नशे में स्वराज्य मन्दिर की ओर पग बढ़ा रहे थे, आज वही हम साम्प्रदायिकता के नशे में मस्त हैं और कौंसिल मन्दिर में आपस की तू तू मैं मैं करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। कितना अज्ञान है, हम पराधीन भारतीय, धर्म के नाम पर गौ और बाजे के लिए अपने भाइयों का खून बहाना कर्तव्य समझते हैं। वाह रे धर्म प्रेम! नादानों को क्या पता कि गुलामों का कोई धर्म नहीं होता। इन्हें गुलामी बेडियां पसन्द हैं। परन्तु साम्प्रदायिक मिथ्या विश्वासों का का छोड़ना पसन्द नहीं। गुलाम भारत का क्या होगा कुछ नहीं सूझता भगवान् ही इस के रक्षक हैं।

लाला जी का स्वराज्यदल से त्यागपत्र— गत २४ अगस्त को लाला लाजपतराय ने स्वराज्य पार्टी से किनारा कर लिया। लाला जी ने स्वराज्य दल के नेता के पास जो पत्र लिखा है उस में इस्तीफ़े के ३ कारण बताये हैं—स्वराज्यदल की कौंसिलों से बाहर निकलने की नीति (Walk out) की असफलता, स्वराज्य पार्टी से हिन्दू हितों को हानि, कांग्रेस के चुनाव में भाग लेने से विपरीत मति। इस पत्र के पढ़ने से पता लगता है कि आज से आठ महीने पहिले के लाला जी और आज के लाला जी में बड़ा भेद है। स्वराज्यपार्टी की नीति कौंसिलों में वही है जो कानपुर में निर्धारित हुई थी। जिन्होंने कानपुर कांग्रेस में कांग्रेस की कौंसिल नीति पर लाला जी को बोलते हुए सुना है वे लाला जी के इस्तीफे से कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकते। लाला जी ने पत्र में स्पष्ट लिखा है कि वे अब भी प्रतिसहयोगियों की पद ग्रहण की नीति के विरुद्ध हैं। जब लाला जी की ऐसी सम्मति है तो लाला जी का स्वराज्यदल से किनारा करना उचित न था। इस समय देश में केवल दो दल हैं एक प्रतिसहयोगी, लिबरल और जी हज़ूरों का, जो भिन्न २ कारणों से पद ग्रहण की नीति का पक्षपाती है, दूसरा कांग्रेस का जो इस के विरुद्ध है। लाला जी स्वराज्यदल से पृथक् हो चुके हैं और दूसरे दल से उन के बिचार नहीं मिलते, फिर वे किस दल में शामिल होंगे यह समझ में नहीं आता। यह भी सुना गया है कि मुसलमानों के मुकाबले में वे हिन्दूहितों की रक्षा चाहते हैं परन्तु इस के लिए पद नहीं लिया चाहते। हमारी समझ में लाला जी की सम्मति के परिवर्तन में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की हाल की यात्रा ही कारण है— इगलैण्ड के मज़दूर दल के कई प्रमुख सदस्य लाला जी के अभिन्न मित्र हैं, लाला जी का उनसे अच्छा पत्र व्यवहार भी रहता है, अभी वे इन मित्रों से मिलने लण्डन भी गए थे। इंगलैंड के ये सज्जन काँग्रेस की कौंसिल नीति को नापसन्द करते हैं। इन सज्जनों की राय में कांग्रेस को विरोध नीतिका त्याग कर के सुधारों का पूरा लाभ उठाना चाहिए। इन मित्रों का दबाव ही लाला जी के मतिविभ्रम में कारण हुआ है। कारण कुछ ही हो, यह स्पष्ट है कि लाला जी डांवाडोल हैं और यह डांवाडोल पन लाला जी जैसे अनुभवी नेता को नहीं शोभा देता।

साहित्य समालोचना

पूर्णेन्दु— यह एक नवीन मासिकपत्र है जो प्रतापगढ़ से निकलने लगा है। पृष्ठ संख्या ४०, वार्षिक मूल्य ३) आकार छोटा, छपाई साधारण। पत्र अच्छा है। इस संख्या में निठल्ल प्रतिनिधि सभावाला लेख हास्यरसयुक्त और विचारपूर्ण है, अन्य लेख भी अच्छे हैं। प्रत्येक अंक में पर्याप्त स्थान कविता को भी दिया जाता है। पत्र उपादेय है, अवध के हिन्दी प्रेमियों को इसे अपनाना चाहिये।

संजीवन का जन्माष्टमी अंक— दिल्ली से श्री चतुरसेन जी की सम्पादकता में निकलने वाला यह अपने विषय का अनूठा पत्र है। श्री कृष्ण के जन्म दिन के उपलक्ष्य में इसका यह विशेषांक निकाला गया है जो कि बहुत सुन्दर निकला है। स्वास्थ्य सम्बन्धी लेखों का अच्छा संग्रह किया गया है। बीच २ में विषय को समझाने के लिये चित्र भी दिये गये हैं, पृष्ठ संख्या १०४, मूल्य १)। दिन प्रतिदिन कृश होने वाली भारतीय जनता के घर में इस की एक प्रति अवश्य होनी चाहिये।

विवेक— यह नवीन साप्ताहिक श्री रघुपतिसहाय जी की सम्पादकता में प्रयाग से प्रगट हुआ है। आज जब कि भारतीय जनता राष्ट्रीय भावों को भुला कर साम्प्रदायिक पंक में पग धरने जारही है, यह पत्र विवेक का काम करेगा। पत्र राष्ट्रीय भावों का पुञ्ज है। हिन्दी के केन्द्र प्रयाग में कांग्रेस की नीति के समर्थक एक पत्र की आवश्यकता बहुत दिनों से थी, जिसे इसने पूर्ण कर दिया है। आकार प्रकार प्रताप का, पृष्ठ संख्या १६, वार्षिक मूल्य ३॥)। हम इस पत्र की हृदय से उन्नति चाहते हैं।

हिन्दूपञ्च— यह भी साप्ताहिक पत्र है और हाल ही में ईश्वरीप्रसाद जी शर्मा की सम्पादकता में कलकत्ते से प्रगट हुआ है। मुसलमानों के मुकाबिले हिन्दुत्व का समर्थन इसका उद्देश्य प्रतीत होता है। लेखों में हास्य रस की अधिकता है, छपाई सफाई साधारण, पृष्ठ संख्या २०, वार्षिक मूल्य २)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकदिवंगत आत्मा

आर्यसमाज के प्रेमी और गुरुकुल के परम सहायक लाला रग्घूमल जी का गत ५ सितम्बर रविवार के दिन कलकत्ता में देहान्त होगया। आप इधर कुछ दिनों से बीमार थे परन्तु इतना शीघ्र ऐसी दुःखद घटना की सम्भावना न थी। उनके देहान्त से आर्य जगत् से एक पुण्यात्मा उठ गई। लाला जी उन मारवाड़ियों में से थे जिन पर लक्ष्मी की अपार कृपा होती है परन्तु जिन्हें अहंकार छू तक नहीं जाता। लाला जी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनन्य भक्त थे और बीमारी के दिनों में उन्हें बहुत स्मरण किया करते थे परन्तु रोगी की हालत देख कर सम्बन्धी, स्वामी जी को शीघ्र न बुला सके। रोगी के अत्यन्त आग्रह पर स्वामी जी को दिल्ली तार दिया गया परन्तु गुरु के पहुंचने से पूर्व ही लाला जी इस लोक से प्रयाण कर चुके थे। लाला जी का सारा धन सदुपयोग के लिये था, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और कन्या गुरुकुल दोनों ही आपके स्मारक हैं। आपने इनके लिए २ लाख रुपया दान दिया था। प्राचीनता तथा भारतीय सभ्यता का प्रेमी होने के कारण स्वभावतः ही उनको गुरुकुल से प्रेम था। धन के साथ निर्भयता का सहज वैर समझा जाता है परन्तु लाला जी इस के अपवाद थे। तिलक स्वराज्यफण्ड में १½ लाख रुपये का दान और दिल्ली का शहीदी स्मारक, उनकी निर्भयता तथा देश भक्ति के ज्वलन्त प्रमाण हैं। अभी आप से अनेक शुभ कार्यों ने फलना था परन्तु उस होनहार को कौन जानसकता है, जिसने हम से इस दिव्यात्मा को पृथक् कर भारतीय राष्ट्रीयता का एक प्रेमी, आर्यसमाज का एक हितैषी और गुरुकुल का एक बड़ा सहारा उठा लिया। हम इस विपत्ति के समय इन के सम्बन्धियों से हार्दिक समवेदना प्रगट करते हैं और उस प्रभु से आशीष चाहते हैं कि वह उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति दे।

लाला जी की वसीयत

श्री लाला रग्घुमल जी मृत्यु से पूर्व एक वसीयत कर गये हैं जिस के अनुसार २० लाख रुपये की जायदाद सत्कार्यों के लिये उन्होंने पृथक् करदी है, पहिले दिये गये वचनों की राशि इस से अलग है। इस के लिए एक ट्रस्ट कायम हुआ है जिस में घनश्यामदास जी बिड़ला, चौधरी छाजूराम जी और देवीप्रसाद जी खेतान शामिल हैं। ट्रस्टियों ने पूर्व दिये गए वचनों की श्री स्वामी जी से एक सूचि मांगी थी। वह सूची इस प्रकार है—

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की यज्ञशाला के लिए १००००)

परिवार गृह के लिए ५०००)

कन्या गुरुकुल के लिए एक लाख का बचन दिया था, जिस में से २१००० वे दे चुके थे बाकी ७९०००)

जब तक यह राशि न चुकादें तब तक ५००) मासिक, पिछले साल का ६०००)

दिल्ली के शहीदी स्मारक के लिये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लाख जिस में से ५००००) दे दिया था, बाकी ५००००)
गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अस्पताल के लिये ५०००)
हिन्दू यूनिवर्सिटी ५००००)
दिल्ली दलितोद्धार सभा के लिए १२००० वचन दिया, १०००) दे दिया बाकी ११०००)
दिल्ली आर्य अनाथालय की इमारत के लिए २००००) का वचन १००००) दिया बाकी १००००)

कुल संख्या २२६०००)

ऊपर की सूचि से स्पष्ट है कि लाला जी का गुरुकुल के प्रति कितना प्रेम था। वे श्री स्वामी जी से गुरुकुल में औद्योगिक महाविद्यालय खोलने के विषय में बात चीत किया करते थे, स्वामी जी ने उन से इस के लिए ५ लाख का खर्च बतलाया था। यद्यपि उन्होंने इस के लिए कोई वचन न दिया था परन्तु उन की बात चीत जारी थी। यदि ट्रस्टी लाला जी के इन विचारों का ख्याल रक्खें तो वे एक प्रमुख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की अच्छी सहायता कर सकते हैं। (लिबरेटर)

गुरुकुल समाचार

दीर्घावकाश— के कारण गुरुकुल में पाठ बन्द होगये हैं। रजत जयन्ती के लिये १० लाख रुपये की अपील की गई है, उसके लिए सब विद्यार्थी तथा अनेक उपाध्याय भिन्न २ प्रान्तों में घूम रहे हैं। प्रोफ़ेसर लालचन्द्र जी तथा प्रो० विधुभूषणदत्त जी बदरी केदार की यात्रा करने गये हैं। आजकल केवल इने गिने व्यक्ति गुरुकुल में रह गये हैं, अतः गुरुकुल सूना प्रतीत होता है।

ऋतुः— वर्षा समाप्ति पर है, गंगा क्रमशः घट रही है। धीरे २ ऋतुज्वर की मौसिम के चिन्ह प्रगट हो रहे हैं। जिधर देखिये मलेरिया बूटी का राज्य है, आज कल गर्मी खूब पड़ रही है।

गुरुकुल का नया स्थान— बाढ़ के बाद से कांगड़ी का स्थान सुरक्षित न रहने से गुरुकुल के लिए नये स्थान की बहुत दिनों से तलाश थी। अब हरिद्वार वाली ओर गुरुकुल को नई भूमि प्राप्त होगई है। यह स्थान हरिद्वार स्टेशन से २ मील पश्चिम पर्वत शृंखला के दामन में है और बड़ा सुहावना है।

१० सितम्बर को ला० रग्घूमल जी की असामयिक मृत्यु के कारण कुल वासियों की शोक सभा हुई जिस में निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ— गुरुकुल वासियों की यह सभा गुरुकुल के हितैषी दानवीर ला० रग्घूमल जी की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रगट करती है और इस विपत्ति के समय उन के सम्बन्धियों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह उन की दिवंगत आत्मा को सद्गति दे।

——:o:——

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए, अमूल्य ग्रन्थ-रत्न संपूर्ण छप गया.

वेद के प्रेमी अवश्य पढ़ें!

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न
वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी का बनाया

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़ें। यह यास्क मुनि के प्रसिद्ध 'निरुक्त' का हिन्दी में सरल, सरस तथा सुबोध भाष्य है जो कि दो भागों में समाप्त हुआ है और डाक-व्यय रहित कीमत केवल ७) रुपया है। अनेक सूचीपत्र देकर ग्रन्थ को बहुत अधिक उपादेय बनाया गया है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा एम. ए. पी. एच. डी वाइस-चान्सरल इलाहाबाद युनिवर्सिटी, प्रिन्सिपल गवर्नमैण्ट कालेज काशी, प्रिन्सिपल हिन्दू विश्वविद्यालय काशी, श्री रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० घासीराम जी एम. ए. प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त, श्री सातवलेकर जी संपादक वैदिक धर्म, श्री मा० आत्माराम जी राज्यरत्न बड़ोदा, भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एलएल. बी. वाइस चान्सरल तिलक-विद्यापीठ पूना, इत्यादि प्रसिद्ध महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, और सभी ने वेदप्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। महाभारत में लिखा है कि निरुक्त शास्त्र के प्रचार के बिना वैदिक कर्म-काण्ड लुप्त हो गया था। यदि आप वेद का सच्चे अर्थों में प्रचार करना चाहते हैं, तो इस निरुक्तभाष्य को अवश्य पढ़िए। वेदार्थ करने की कुञ्जी 'निरुक्त' को प्राप्त किए बिना वेद के खज़ाने को पाना केवल स्वप्न देखना है।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्ता 'अलंकार'
डा० गुरुकुल कांगड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य पर अंग्रेज़ी में अपूर्व पुस्तक

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस पुस्तक की भूमिका श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखी है। इस में ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले विविध विषयों पर वैज्ञानिक रीति से भाव-पूर्ण १२ अध्यायों में विचार किया गया है। १६ वर्ष से ऊपर की आयु वाले हरेक अंग्रेज़ी जानने वाले के हाथ में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। २२५ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुनहरी जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ३) । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम हो जायगा कि इस विषय पर ऐसी योग्यता से लिखी हुई पुस्तक आप ने पहले नहीं पढ़ी होगी। खुद पढ़ो और अपने मित्रों को पढ़ने को दो।

'हैण्ड-ट्रेनर'

जिन्हें सुलेख लिखना न आता हो उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू का सुलेख सिखाने का अत्यन्त सरल नया तरीका आविष्कृत हुआ है, इसका नाम 'हैण्ड ट्रेनर' है। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हरेक भाषा के सेट की कीमत अलग अलग दो रुपया।

'बिजली के जेबी लैम्प'

बिजली के जेबी लैम्प पूरे तैयार तीन किस्म के हमारे पास हैं। अत्युत्तम ३); उत्तम २॥); साधारण २)। पहली बैटरी ख़र्च होने पर नई की ज़रूरत हुआ करती है, उसे हम १।) में भेज सकते हैं। डाक का ख़र्चा हम अपना करेंगे।

'किटसन लैम्प'

मुकम्मिल, मय सोलह इञ्च टांकी और सिंगल पम्प का किटसन लैम्प ३०); वही डबल पम्प सहित ३५)। कारबाईड दीवालगीर लैम्प २)।

हम उचित कमीशन मिलने पर बम्बई से मार्केट के भाव पर आप की चीजें ख़रीद कर भेज सकते हैं।

पता—दी शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी, कारनक रोड, बम्बई (२)

तार का पता	पोस्ट बौक्स नं०	टैलीफ़ोन नं०
Linkclip-Bombay	२१३५	२१४८०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़दाकत खुद व खुद कर देती है शोहरत ज़माने में।
मुनाफ़ा इस क़दर रखिये नमक जितना हो खाने में॥

(१) गंगाविष्णु नैनामृताञ्जनः—यह सफ़ेद सुरमा शिरीष की जड़ में ६ महीने रख कर तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध करके १ साल की लगातार मेहनत के पश्चात् तय्यार किया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह सुरमा आंखों की निम्न बीमारियों में अकसीर साबित हो चुका है—

नेत्रों में ख़ारिश का उठना, रतौंधी, दूर अथवा समीप की वस्तु का साफ़ २ नज़र न आना, धूप में जाते ही आंखों का गरमी से चौंधिया जाना, देर तक किसी वस्तु अथवा पुस्तक की ओर नज़र का न टिकना, आंखों से पानी का गिरना, नज़ले की वजह से आंखों की कमज़ोरी और विशेष करके आजकल के नवयुवकों तथा वृद्धों के लिये यह सुरमा अकसीर साबित हो चुका है। कीमत २) तोला रखी गई है। ३ माशा ॥), ६ माशा १), १ तोला २)

(२) कुक्करों का शर्तिया इलाजः—एक आश्चर्य जनक औषधि। यह कोई शास्त्रीय नुस्खा नहीं है। परन्तु किसी अनुभवी वृद्ध सन्यासी का जादू है। देखने में बिलकुल मामूली खाली बत्तियें नज़र आती हैं परन्तु इसके ४, ५ दिन के इस्तेमाल से ही आपको निहायत फ़ायदेमन्द साबित होंगी—

यह बत्तियाँ आंखों के पुराने से पुराने रोंहें, सुर्खी तथा पड़वाल और पानी के झर २ गिरने के लिये अकसीर है। फ़ायदे इसके अन्य भी हैं परन्तु आप इसकी एक बार परीक्षा करके हमेशा के लिये इसको अपने पास रखना चाहेंगे। सेवन विधि दवाई के साथ भेजी जाती है।

(३) मस्तिष्क पौष्टिकः—विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, क्लर्क और व्याख्याता आदि जिन्हें काम करके काफ़ी देर के लिये आराम की ज़रूरत पड़ती है, उनकी दिमाग़ी ताकत को स्थिर रखनेके लिये यह दवाई अद्वितीय है। कम से कम १५ दिन या १ महीना इसके सेवन करने से आश्चर्य जनक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इससे आपअपने काम को दिल से कर सकेंगे तथा दिमाग़ी ताकत को ज्यादा नहीं खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिये अमृत है। केवल एक बार परीक्षा की ज़रूरत है। १ शीशी १५ दिन के लिये २)

(४) केशरञ्जन खिजाबः—जहां अन्य खिजाबों के लगाने से काली चमड़ी होने के सिवाय बालों की जड़ें कमज़ोर होकर झड़ने लग जाती हैं, वहां इस के सेवन से बाल काफ़ी अरसेके लिये काले तथा ख़ास चमकीले मालूम देते हैं। यह दो चीज़े हैं--एक खुश्क, दूसरी तर। दोनोंको उचित मात्रामें मिला कर ब्रशसे इस्तेमाल करने से बालोंमें ख़ास चमक आती है। १ शीशी १।)

पता—पं० विष्णुदत्त विद्यालंकार, अलंकार आयुर्वेदिक फार्मेसी, कूचा लाजूमल, लुधियाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे दाम में !!!

१. महावीर गेरीवाल्डी—ले०श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। आधा मूल्य॥=)

मौडर्न रिव्यू—गेरीवाल्डी का जीवन केवल व्यक्ति का जीवन नहीं परन्तु स्वाधीनता का जीता जागता इतिहास है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त रोचक है—पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी है। हम इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करते हैं।

माधुरी—विशेष महापुरुषों के जीवन चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षाप्रद होते हैं। यह जीवन चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है। भाषा रोचक और मर्मस्पर्शिनी है। नवयुवकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए

श्री शारदा—इसकी भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इस में उपन्यास का सा आनन्द आता है। मनोरञ्जन के साथ २ उपदेश की भी मात्रा रक्खी है। विषय का क्रम भी यथोचित रीति से जमाया गया है। पुस्तक में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख है जो महत्वशालिनी हैं, जिनका ज्ञान सर्वसाधारण को अपेक्षित है। यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी, विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिन्दी साहित्य में अनूठी है। हमारा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें। पुस्तक में इटली के आठ महान् व्यक्तियों के चित्र भी हैं।

२. प्राचीन भारत में स्वराज्य लेखक—श्री पं० धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार—आधा मूल्य ॥।)

प्रो० विधुभूषण दत्त जी M.A.—हमारे आर्य प्रजासत्तात्मक तथा प्रतिनिधिसत्तात्मक शासन प्रणालियों से अपरिचित न थे, प्रजा ही राजा को चुनती थी इत्यादि बातों को सिद्ध करने के लिये प्रमाणों और उदाहरणों को इकट्ठा करने में लेखक ने सराहनीय परिश्रम किया है। पुस्तक की लेखनशैली मनोरञ्जक है। विचार करने के लिये सभी को इस पुस्तक में बहुत सामग्री प्राप्त हो सकती है।

३. वैदिक विवाह का आदर्श—ले० श्री पं० नन्दकिशोर जी विद्यालंकार—आधा मूल्य ।-)

बाबू भगवान दास जी काशी—विवाह क्या है, किस से, कैसे, किस लिए और कब विवाह करना चाहिए—यह पुस्तक में बतलाया गया है। वैदिक विवाह पद्धति अन्य विवाह पद्धतियों से क्यों श्रेष्ठ है, यह अच्छी तरह बतलाया गया है। इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए।

४. सन्तजीवनी—ले० स्व० श्री गिरिजा कुमार घोष—भारत के प्रसिद्ध महात्माओं-कबीरदास, गुरुनानक, गोस्वामी तुलसीदास आदि के विस्तृत जीवन चरित बड़ी मनोरंजकता से लिखे गए हैं। आधा मूल्य ।)

५. बिखरे हुए फूल-यह पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की बिल्कुल नए ढंग का, नए विषयों पर अद्भुत कविताओं का संग्रह है। आधा मूल्य ≡)

मैनेजर—साहित्यपरिषद् पुस्तक भण्डार; गुरुकुल काङ्गड़ी (हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी

छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी के **भीमसेनी सुरमे** की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुंधला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत ५) पांच रुपया फ़ी तोला

सुधाधारा—इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं, जिससे रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों ख़रीदें? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाज़ार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है। जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने ।)

नोटः—अन्य दवाइयों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये।

पताः—गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी देहली नं० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिंधु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २तक ।=)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा.

बिना जलन और तकलीफ के दादको २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च, १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवाको मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।)

पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिये, मुफ्त मिलेगा।

यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

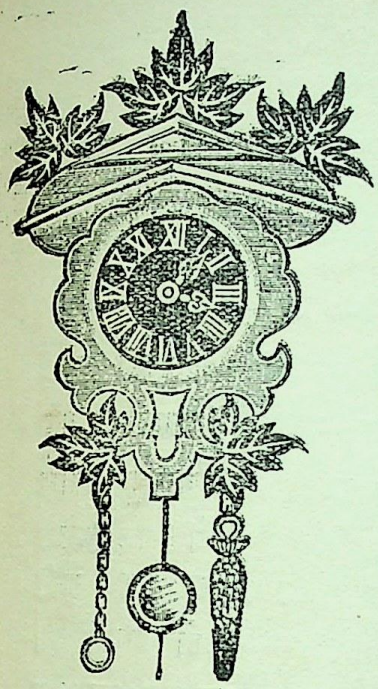

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेज दो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

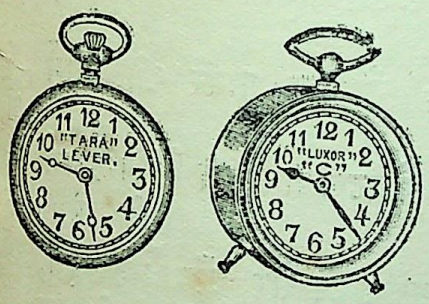

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिये है। जल्दी मंगवाये, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पोटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

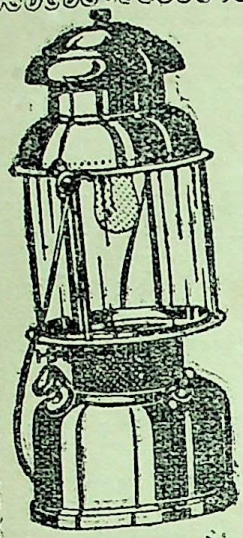

रोशनी

का

भण्डार

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टोर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिये। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती है। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटैन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती। इसमें केरोसीन आयल या पैट्रोल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मेन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का वजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इंच, तथा चिमनी अबरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३॥।) फ़ी दर्जन

दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्जन

प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ६) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता:—

रविवर्मा स्टील वर्कस अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत्-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

रूह शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

गृहस्थियो ! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो !

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में **"कामधेनु"** सेवन कराइये। मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़्लूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

आविष्कर्ता---भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

मंगाने का पता—भद्रसेन गुप्ता नया बाज़ार देहली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

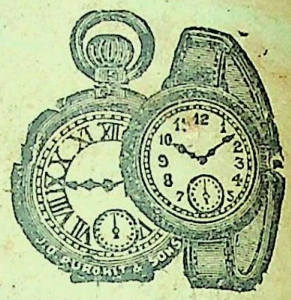

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चोताला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥। १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पता:—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A ; 1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

कार्तिक १९८३ अक्टूबर १९२६
वर्ष ३] [अङ्क ५

मुख्य संपादक
प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ से
१. कभी (कविता)—श्री पं बंशीधर विद्यालंकार	१२९
२. जागृति का कवि 'भारति'—श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति	१३०
३. वर्णव्यवस्था का तुलनात्मक अनुशीलन—पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति	१३२
४. गायक के प्रति (कविता) पं० सत्यकाम विद्यालंकार	१३६
५. परमेश्वर और उसका स्वरूप—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार	१३७
६. भारतीय सरकार की विनिमयदर नीति—पं० इन्द्र जी विद्यालंकार	१४४
७. कनक (कविता) —श्री पं० श्रीहरि	१४४
८. भारत साम्राज्य-विस्तार—श्री नारायण रामराव देश पाण्डे	१४६
९. आर्य-धर्म साधारण जनता में कैसे फैल सकता है-श्री प्रो० सांझीराम जी एम. एस.	१४९
१०. नामरूप का अन्धेर और स्वराज्य प्रकाश-श्री पं० भीमसेन विद्यालंकार	१५१
११. सम्पादकीय—हिन्दू और मुसलमान	१५५
१२. साहित्य-वाटिका	१४७
१३. गुरुकुल समाचार	१५९

ग्राहकों से निवेदन

१. अलंकार पत्र प्रत्येक देशी मास के प्रथम सप्ताह में ग्राहकों के पास पहुंच जावेगा।

२. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे तो पहले डाकघर से पूछना चाहिये यदि पता न चले तो डाक-घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्ता के पास भेज देना चाहिये। यह सूचना देशी मास के तृतीय सप्ताह तक अवश्यमेव पहुंच जानी चाहिये। अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य न दी जावेगी।

३. पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य देनी चाहिये अन्यथा उत्तर न दिये जाने के हम दोषी न होंगे।

४. पत्रोत्तर के लिए जबाबी कार्ड या टिकट साथ भेजना चाहिये।

५. पत्र—व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता पूरा और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये।

६. भावी ग्राहकों को चाहिये कि वे रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहकों को और हमें, दोनों को कष्ट होता है। पैसे लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है।

७. नमूने का अंक बिना मूल्य किसी को न भेजा जावेगा।

८. प्रबन्ध सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी (जि० बिजनौर) के पते से करना चाहिये।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क ५] मास, कार्तिक [पूर्ण संख्या २९

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

कभी[1]

(श्री पं० वंशीधर जी विद्यालंकार)

झूम झूम कर अपने विह्वल दिल की बात सुनाए जा,
गाए जा गान बजाए जा-अपनी तान चढ़ाए जा।
कुछ भी समझ नहीं पड़ती हो इस की कुछ परवाह नहीं,
अपनी अमृतमय वाणी की नदियां यहां बहाए जा।
कोना कोना कभी तुम्हारे गानों से भर जावेगा,
दिल सूखे हैं उन्हें सींच कर हरा भरा कर जावेगा।

१. लेखक की अप्रकाशित पुस्तक से।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागृति का कवि भारवि

[३]

(ले० श्री पं इन्द्र जी विद्यावाचस्पति)

मुनिरूपी इन्द्र और अर्जुन का संवाद भारवि काव्य का एक परमोज्ज्वल अंग है। मैं जब २ उसे पढ़ता हूं—मेरे हृदय में नये उत्साह और नये आवेश का संचार हो आता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने भविष्यादर्शी हो कर व्यंग्यरूप में आज कल की हमारी स्थिति का, पुराने भारत और नये भारत के संवाद मुख से चित्रण किया है। पुराने भारत से मेरा तात्पर्य उस भारत से नहीं, जिसको याद कर के ही हमारे हठीले प्राण अब तक स्थिर हैं। मेरा तात्पर्य उस भारत से है जो आज की राष्ट्रीय बातें करने वाली दुनियाँ को नासमझ मूर्ख और काफ़िर समझता है। वह पुराना भारत राष्ट्रीयता की पुकार मचाने वाले नये भारत से कहता है कि 'भाई ! जाति राष्ट्र आदि की पुकार मत मचाओ, हमारी मेहरबान सरकार नाराज हो जायगी। हम स्वतन्त्रता के बिना इतने दिन कृपालु सरकार की छत्रछाया में जिये हैं-आगे भी जी सकेंगे। भारत की शोभा धर्म से है, दया से है-शक्ति से है। यह उन्नत हिमालय, यह शीतल गंगा और यह बूढ़ा भारत सब सन्ध्या और समाधि का स्थान हैं, राजनीतिक हलचल या चल बल का स्थान नहीं'। बूढ़ा मुनि इन्द्र अर्जुन से कहता है—"अरे भाई ! संसार अनित्य है, लक्ष्मी चञ्चला है—सार है तो केवल मुनि धर्म है। कवच धनुष और बाण यह सब श्रेयः सिद्धि के बाधक हैं। दूसरे से द्रोह करना महापाप है, उस से किया हुआ तप भी नष्ट हो जाता है। यदि शत्रुओं को जीतने का शौक है तो इन्द्रियरूपी शत्रुओं को जीतने का साहस करो। इस एकान्त पर्वत में, पवित्र गंगा के तट पर मुक्ति का मार्ग ढूंढना ठीक है न कि शस्त्र उठाये फिरना।' यह शुभ और मंगलकारी उपदेश अर्जुन के हृदय पटल पर उतना ही स्थान पा सकता है, जितना कि जल का बिन्दु कमल पत्र पर। अर्जुन का हृदय तुला हुआ है, उसने अनुभव किया है, और जिसने अनुभव किया है, वह कभी भूला नहीं करता। उसने अपनी राजसम्पत्ति का छिनना, बनवास का तिरस्कार, शत्रु की उन्नति, अबला का अपमान और पराधीनता, इन का अनुभव किया है। इन का अनुभव करने वाला यदि पत्थर नहीं है और पुरुष है, तो उस पर वैराग्य के उपदेश काम नहीं कर सकते। अर्जुन का उत्तर सुनने योग्य है, वह एक गिरी हुई जाति के ध्यान करने योग्य है और नवयुवकों के मनन की वस्तु है। उस उत्तर में धर्म का अत्युच्च आदर्श नहीं है, सत्वगुण का अत्युज्जवल परिपाक नहीं है, आध्यात्मिक बल के महत्व पर व्याख्यान नहीं है। वहां यदि कुछ है तो एक जीते जागते हृदय का उद्गार है, एक क्षत्रिय की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमंग है और एक नवयुवक का जोश है। वह सब से ऊंचा आदर्श नहीं है- पर पाण्डव जिस अवस्था में थे-भूमण्डल पर सभी समयों में कोई न कोई जाति जिस दशा में रहती है- उस दशा में जो विचार एक जीवित नवयुवक के हृदय में होता है, और होना चाहिये, वही विचार अर्जुन के हृदय में आया है, और वाणी द्वारा प्रकाशित हुआ है, अर्जुन का उत्तर संक्षेप से यह है—

"मैं क्षत्रिय सन्तान हूं-मैं ने पाण्डु के वंश में जन्म लिया है। राजसभा में शत्रुओं ने हमारी अर्धांगिनी और राज्यलक्ष्मी का अपमान किया है, उसे धोने के लिये मैं ने यह तप प्रारम्भ किया है। उस पतिव्रता का सभा में दुष्टों ने जो तिरस्कार किया, क्या वह सत्य हो सकता है? हमारे बड़े भाई की क्षमा ही थी, जिसने उस तिरस्कार का सहन किया किन्तु सब युधिष्ठिर वही हैं। मेरे हृदय में उस तिरस्कार के लिए भयंकर क्रोध है। वह क्रोध भी मेरे लिये शुभ है क्यों कि यदि उस का सहारा न हो तो मैं शरीरधारण भी न कर सकूं। हमारी दशा बहुत ही हीन है-एक तिनके से भी गई गुजरी है। शत्रु ने हमें पराजित कर के कुचल दिया है और हंसी उड़ाई है। संसार में मान ही सब कुछ है और वही शत्रुओं ने ले लिया है। जो मनुष्य मान से हीन है, वह जीता हुआ मुर्दे से बदतर है। जो कुल का मान बढ़ाते हैं, वही उत्तम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं बाकी तो केवल नामधारी मनुष्य हैं। शत्रु जिसकी सम्पत्ति छीन कर आराम से बैठ जाते हैं, वह पशु है। मनुष्य की सम्पत्ति यदि छिन भी जाय तो वह उसे वापिस लिये बिना नहीं छोड़ता। मेरा तो यह प्रण है कि या तो अपने अमोघ बाणों से शत्रु पक्ष में गई हुई राजलक्ष्मी को वापिस लूंगा, और या इसी यत्न में प्राण दे दूंगा। यदि कुल की लक्ष्मी का उद्धार करने से पूर्व मोक्ष भी आयगा तो मैं उसे विघ्न समझूंगा। जो कुल की लक्ष्मी का उद्धार नहीं कर सकता, वह पतित है, कापुरुष है। जो मानशाली हैं, वह मैदान में विजय पाते हैं, मैदान से भागते नहीं।"

अर्जुन के अन्तिम शब्द यह हैं— "मेरा प्रण है कि या तो इस पर्वत के शिखिर पर टूटे हुए बादलों की भांति अपनी हस्ती को खो दूंगा और नहीं सहस्राक्ष को प्रसन्न कर के अकीर्ति-रूपी कांटे का उद्धार करूंगा"।

पुत्र का यह अटल प्रण, यह घोर वाक्य सुन कर, इन्द्र अपने मुखरूप और बनावटी उपदेश को न रख सका, प्रेम से गद्गद हो कर पुत्र को भुजाओं में लपेट लिया और शिव को प्रसन्न करने का उपदेश करके स्वर्ग का मार्ग लिया।

फिर तप—तप का अन्त नहीं, विजय की प्राप्ति के लिये इतना तप। बिलासप्रिय कलियुग सुन कर ही कांपता है, पर इतिहास पुकार २ कर कहता है कि बिना कैदखाने की सैर किये बिना गर्दनें शूली पर रखें, बिना प्राणों की आहूति दिये, बिना भूख और प्यास सहे- सारांश यह कि बिना तप किये कभी लुटी हुई लक्ष्मी का उद्धार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होता, गया हुआ राज्य वापिस नहीं आता, शत्रु द्वारा किया हुआ तिरस्कार धुल नहीं सकता। अर्जुन फिर तप प्रारम्भ करता है।

इस बार का तप और भी भयंकर है। पहले पिता को प्रसन्न करने के लिये तप किया था, अब देवता को प्रसन्न करना अभिप्रेत है। इस बार का तप पहले तप की अपेक्षा कई गुणा भयानक है। ऋषि और सिद्ध लोग उसे सह नहीं सकते। भूख और प्यास, गर्मी और सर्दी, रात और दिन अर्जुन के लिये समान हो जाते हैं। तपस्वी का तेज असह्य हो उठता है। उस से घबराये हुए तपस्वी शिव की शरण आते हैं और अपना दुखड़ा सुनाते हैं।

भक्त की तपस्या का समाचार सुन कर महादेव बहुत प्रसन्न होते हैं परन्तु विचारते हैं कि 'अर्जुन हमारी कृपा का अधिकारी भी है या नहीं? अपने गणों को साथ ले कर वह ठीक समय पर अर्जुन के आश्रम में आते हैं, क्यों कि उस समय एक दानव सुअर का रूप धारण किये अर्जुन पर प्रहार करने को उद्यत है। अर्जुन वराह को आता देख कर शरसन्धान करता है, और निशाना लगाता है। उसी समय किरात वेषधारी शिव भी बाण का प्रहार करता है। एक ही समय दोनों तीर वराह के शरीर में प्रवेश करते हैं। दो महाबलियों के हथियारों की चोट खा कर प्राण रक्षा करना प्राणी की शक्ति से बाहिर है, दानव के भी प्राणपखेरु उड़ जाते हैं। शत्रु और शिकार, दोनों का अन्त हुआ देख अर्जुन प्रसन्न मन से उस के समीप आता और अपने कामयाब तीर को देखता है, इतने में किरात सेनापति का दूत आ कर अर्जुन को छेड़ता और धमकाता है। दूत का अधिक्षेप निर्मूल है, परन्तु एक क्षत्रियपुत्र को जोश में लाने के लिये पर्याप्त है।

किरात के दूत और अर्जुन का वाद विवाद संस्कृत साहित्य का एक उज्ज्वल अंग है। भारवि सभी जगह ओजस्वी है, पर संवाद में उसे पाना कठिन है। उस का पूरा बल बात चीत में ही प्रकट होता है। यह संवाद किसी से घटिया नहीं। एक छोटे आदमी की गर्वोक्तियों का उत्तर एक महापुरुष जिस गम्भीरता से दे सकता है; एक बनावटी वीर की धमकी का जवाब, एक लाजवाब बहादुर जिस शान से दे सकता है, इस संवाद में उसकी पूरी झलक दिखाई गई है। भाषा, भाव, साहित्य और प्रतिभा की दृष्टि से किरात और अर्जुन का वाग्युद्ध अपूर्व है। उस वाग्युद्ध में भी भारवि ने वही साहस, जीवन और शूरता का पाठ पढ़ाया है जो अन्य स्थानों पर पढ़ाया गया है। किरात के आक्षेपों का उत्तर दे कर अन्त में पाण्डव कहता है—

> मया मृगान्हन्तुरनेन हेतुना,
> विरुद्धमाक्षेप्तवचस्सितिक्षितम्।
> शरार्थमेष्यत्यथ लक्ष्यते गतिं
> शिरोमणिं दृष्टिविषाज्जिघृक्षतः।

मैत्री और द्वेष के योग्य न समझ कर ही मैंने व्याध का आक्षेप सह लिया है। यदि वह तीर के लिये आयगा तो उसी गति को प्राप्त होगा जो सांप से शिरोमणि लेने वाले की हुआ करती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गम्भीर तिरस्कार भरे वाक्य को सुन कर किरात का नौकर चला गया। सेना जोश में आ गई और अर्जुन का, शिव और शिव की सेना से युद्ध प्रारम्भ हुआ। युद्ध में दोनों दलों का बल विलक्षण था। एक ओर अकेला पाण्डव—दूसरी ओर शिव और उसके हज़ारों सैनिक। घमासान संग्राम हुआ। युद्ध के उतराव चढ़ाव होते रहे, अन्त में शिव की सेना भाग निकली। अकेले महादेव युद्ध करने वाले रह गये। दोनों का द्वन्द्वयुद्ध जारी हुआ। युद्ध का कवि ने जो वर्णन किया है, वह अनुपम है। विशेषतया मल्ल युद्ध का वर्णन शायद संस्कृत साहित्य में एक ही है। और किसी महाकाव्य में ऐसा सुन्दर मल्लयुद्ध का वर्णन नहीं पाया जाता। मल्लयुद्ध हुआ और उस में शिव और अर्जुन ने मत्त हाथियों की भांति एक दूसरे पर आक्रमण किया। युद्ध में जय लाभ प्राप्त करने के लिये महादेव आकाश में कूद कर अर्जुन पर वार करने लगे ही थे कि अर्जुन ने कूद कर उनकी टांगे पकड़ लीं, और खेंच लिया। वीरता का अन्त हो गया—परीक्षा समाप्त हो गई। महादेव का चित्त भक्त की शूरता से गद्गद होगया। जगदीश्वर ने प्रसन्न हो कर अपने निजरूप में पाण्डव को दर्शन दिये और सब देवताओं के साथ मिल कर उस पर विविध शस्त्रास्त्रों और आशीर्वादों की वृष्टि की। अर्जुन का तप सफल हुआ, उसके देवता प्रसन्न हुए, और शत्रु को पराजित करने का सामान पूरा हो गया।

शत्रु को हटाना पुरुष का कर्तव्य है। जो पुरुष है, वह अपमान तिरस्कार या पराजय को भुला नहीं सकता, क्षमा नहीं कर सकता। वह अवश्य ही शत्रु को पराजित कर के नष्टभ्रष्ट हुए वैभव के उद्धार का यत्न करता है। कापुरुष या नपुंसक ही अपमान का विष अमृत कर के पी सकते हैं, वीर पुरुष नहीं। यह भारवि के काव्य का पहला उपदेश है। अपमान को धोने, राज्यलक्ष्मी का उद्धार करने और शत्रु का नाश करने के लिये कोई फूलों का मार्ग नहीं है, कोई ठण्डी सड़क नहीं है, और न कोई सुहावनी मंजिल है। विजय की प्राप्ति बड़ा दुष्कर कार्य है, उसके लिये घोर तपश्चर्या की आवश्यकता है। यह भारवि का दूसरा उपदेश है। जो विजय पर कटिबद्ध है, और उसके लिये कष्ट सहन करता है, वह यदि साहसी है और वीर है, तो उसकी सफलता को कोई रोक नहीं सकता। जहां चाह है, वहां राह निकल आती है। एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले पुरुष या राष्ट्र की इच्छा अवश्य पूरी होती है। आवश्यक केवल इतना है कि उसके लिये काफ़ी यत्न किया जाय। यह भारवि का तीसरा उपदेश है। इन तीनों उपदेशों को जिस उत्तमता, युक्ति और शृंखला की सहायता से समझाया गया है, उसके लिये भारवि की शतमुख से प्रशंसा करने को जी चाहता है।

एक अपमानित और तिरस्कृत जाति को जिस औषधि की आवश्यकता है वह किरातार्जुनीय के काव्य कानन में ही मिल सकती है, अन्यत्र नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ण व्यवस्था का तुलनात्मक अनुशीलन

[३]

भारतीय और योरपीय साम्यवाद

(पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति आचार्य गुरुकुल मुलतान)

अब हम योरपीय साम्यवाद का संक्षेप से दिग्दर्शन कराकर उसकी भारतीय साम्यवाद के साथ तुलना करेंगे। जैसे पहिले लिखा जा चुका है कि योरुप के भिन्न २ साम्यवादी नेताओं का आपस में इतना अधिक मत भेद है कि साम्यवाद के सिद्धान्तों पर कुछ भी निश्चित रूप से लिखना अत्यन्त कठिन होगया है, तथापि हम जर्मनी के साम्यलोकमतवादी दल वा Social Democrat के अभिमत प्रस्ताव उद्धृत करते हैं जो योरुपीय साम्यवाद के प्रायः सब मुख्य तत्वों को लिये हुए हैं। वे प्रस्ताव निम्न लिखित हैं:—

१. साम्राज्य के १० वर्ष से अधिक अवस्था वाले समस्त पुरुषों और स्त्रियों को वोट देने का समान अधिकार प्राप्त हो जावे।

२. कानून बनाने का काम सारी प्रजा प्रत्यक्ष रूप से करे अर्थात् सब लोगों को किसी प्रकार के कानून को प्रस्तुत करने का पूरा अधिकार रहे। राज्य के अधिकारियों का चुनाव प्रजा द्वारा हो और वे प्रजा के सामने उत्तरदायी हों।

३. सब लोगों को सैनिक कार्यों की शिक्षा दी जाय। देश में स्थायी सेना के बदले स्वयं प्रजा की सेना रहे। युद्ध-शान्ति इत्यादि का निर्णय प्रजा के प्रतिनिधि करें।

४. स्वतन्त्रता पूर्वक विचार प्रगट करने, लोगों में एकता फैलाने अथवा सभाएँ आदि करने में जितने कानून बाधक हों वे सब के सब तोड़ दिये जाएँ।

५. सार्वजनिक अथवा व्यक्ति गत बातों में जो कानून पुरुषों के मुकाबले में स्त्रियों को कुछ कम अधिकार देते हों अथवा उन्हें घाटे में रखते हों वे सब कानून तोड़ दिये जावें।

६. जितनी धार्मिक सभाएँ हैं वे सब प्राईवेट सभाएँ समझी जावें। किसी प्रकार के धार्मिक कार्य के लिये सार्वजनिक कोष से कुछ भी धन न लगाया जावे।

७. विद्यालयों में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था न की जावे।

८. न्याय की व्यवस्था बिल्कुल मुफ्त हो जावे। फाँसी की सजा बिल्कुल उठा दी जावे।

९. सब प्रकार के रोगियों की चिकित्सा बिल्कुल मुफ्त हो।

१०. वे सब कर चुंगियाँ आदि हटा दी जावें जो किसी छोटे से वर्ग के हित के विचार से लगाई गई हों और जिन से समष्टि के हित की हानि होती हों।

इसे योरपीय साम्यवाद का अच्छे से अच्छा रूप कहा जा सकता है। इस में विवादास्पद सम्पत्ति विभाग, उत्त-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधिकार, परिवार सम्बन्धी व्यवस्था इत्यादि का कोई उल्लेख नहीं है। यदि योरपीय साम्यवादका यही सर्वसम्मति अथवा बहु संख्या से स्वीकृत रूप हो तो इस में हमें कोई बड़ी आक्षेप योग्य बात भी नजर नहीं आती। इसमें कोई सन्देह नहीं कि समानता, स्वतन्त्रता, सार्वजनिक भ्रातृत्व के उच्च सिद्धान्तों को चरितार्थ करने के लिये ही प्रायः ये सब नियम बनाये गये हैं। धार्मिक शिक्षा तथा कार्यों के विषय में यहाँ सर्वथा उदासीनता दिखाई गई है जो कुछ आक्षेप योग्य है पर अधिक इस लिये नहीं कि धर्म से तात्पर्य वहाँ केवल सम्प्रदाय से है और विज्ञान, तर्कशास्त्र विरोधी ईसाई मत की शिक्षा पाकर विद्यार्थी अन्ध विश्वासी हो जायेंगे ऐसा इन नियमों को बनाने वालों को भय मालूम होता है जो बहुत अंश तक ठीक भी है।

मि० वेल्ज़ का नाम योरपीय साम्यवादी समाजशास्त्रज्ञों में बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने वर्तमान आदर्शवाद Modern-utopia इस नाम की एक पुस्तक उपन्यास के ढंग पर लिखी है जिसमें अपने विचारानुसार एक आदर्श साम्यवादी समाज का नकशा खींचा गया है। साम्यवाद के भिन्न २ विषयों के सिद्धान्तों की आलोचना करने से पूर्व उसका निर्देश कर देना अनुचित न होगा। मि० वेल्ज़ के लेख का साराँश यह है कि सारा संसार एक राष्ट्र State के रूप में हो जिस में काकेशियन, नीग्रो, मंगोलियन, सेमिटिक सब जातियों और रंगों के आदमी भाइयों और मित्रों के समान प्रीति पूर्वक मिलकर रहें और एकही भाषा बोलें, खुले तौर पर उनके परस्पर भोजन विवाहादि सम्बन्ध हों। इस सम्पूर्ण विस्तृत राष्ट्र की राजनैतिक शक्ति समुराइ नामक मनुष्यों के एक ऐसे वर्ग के हाथ में रहे जो बुद्धि, वीरता, आत्मसंयम तथा अन्य गुणों के कारण सब से अधिक प्रसिद्ध हों। यह संसार-राष्ट्र ही सारी भूमि लकड़ी, पानी, बिजली, भोजन, सामग्री इत्यादि का मालिक समझा जाए, सिवाय उन वस्तुओं के जिन्हें वह स्थानीय सरकार और म्युनिसपैलिटियों को दे दे और वे उन्हें व्यक्तियों को देवें। सब विवादों का निर्णय पक्षी प्रतिपक्षी के प्रतिनिधियों की पञ्चायत के द्वारा और जहाँ तक सम्भव हो न्यून से न्यून वेतन लेकर किया जाए। अपराधियों, पक्के शरारतियों और दूसरे सब निकम्मे लोगों को अण्डेमन जैसे द्वीपों में निर्वासित के रूप में रखा जाय और उनकी सन्तान उत्पन्न न हो, इस बात के साधन किये जाएँ। क्यों कि स्वस्थ सन्तान का उत्पन्न करना जनता के हित का वर्धक है इस लिये सब विवाहित स्त्रियों का राष्ट्र की तरफ से पालन किया जाए (सम्भवतः कुछ वेतन देकर) और विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध लगाकर अधिक आबादी के ख़तरे को निर्मूल किया जाय।

संक्षेप से मि० वेल्ज़ के आदर्श साम्यवादी राष्ट्र का नकशा उपर्युक्त है। इसके विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि यह एक उत्तम कल्पना है जो किसी उच्चभावयुक्त दिमाग़ से निकल सकती है और जो पढ़ने और सुनने वालों को आनन्द दे सकती है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर क्या यह सब कुछ कभी क्रियात्मक रूप में लाया गया है या लाया जा सकता है। सारे संसार को एक राष्ट्र बनाना और सब जातियों के लोगों का एक ही भाषा बोलना, सारे संसार में से चुने हुए कुछ थोड़े से लोगों के हाथ में सारी शासन सम्बन्धी राजनैतिक शक्ति का होना ये सब केवल कल्पना के तौर पर बड़ी सराहनीय बातें हैं पर यह कल्पना तक करना अत्यन्त कठिन है कि इतनी भिन्न भिन्न जातियों, भाषाओं और सभ्यताओं का सारा भेद मिटकर एक ऐसे नवीन अभूतपूर्व युग और समाज का प्रादुर्भाव हो जायगा जिस का निर्देश श्री वेल्ज ने अपनी पुस्तक में किया है।

(क्रमशः)

गायक के प्रति

(ले० श्री पं० सत्यकाम जी विद्यालंकार)

बस कर और न लय ऊंची कर,
बात मान जा प्यारे।
टूट पड़ेंगे एक साथ ही,
हृदय व्योम के तारे॥

* * *

नीची कर उत्ताल तालध्वनि,
सोया रहने दे उन्माद।
उभर पड़ेगा दावानल सा,
निद्रित विकट विषाद॥

* * *

धीमे बहने दे स्वर लहरी,
तैरूं मैं निःसंज्ञ समान।
रहे शेष जीवन प्रपञ्च यह,
केवल स्वप्न समान॥

* * *

अथवा बहुत थक गया मैं,
अब थमने दे स्वर गान।
कम्पन के पलने में झूले,
शिथिल गात निष्प्राण॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमेश्वर और उसका स्वरूप

नास्तिकवाद

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

फ्यूरबैच का कथन है कि जिस प्रकार सूर्य्य की सत्ता स्वयंसिद्ध है उसी प्रकार परमात्मा का न होना भी स्वयंसिद्ध है। गास्टेव फ्लोरेन्स कहता है कि परमात्मा का विचार ही हमारा शत्रु है। मानव-समाज की उन्नति नास्तिक-वाद के ही आधार पर हो सकती है। कहते हैं ब्रेडला ने अपने मकान के प्रवेश-द्वार पर "परमात्मा कहीं नहीं है 'God is nowhere' का फट्टा टाँग रखा था। इस प्रकार के, परमात्मा का अभाव मनाने वाले नास्तिक संसार में कम नहीं हैं। ऐसे नास्तिकों के प्रति जान फ़ास्टर का कहना है कि जो मनुष्य परमात्मा के अभाव को सिद्ध करना चाहता है वह पहले अपने को सर्वज्ञ सिद्ध कर ले तभी आगे बढ़ सकता है। जिस बुद्ध से परमात्मा का तिरस्कार किया जाता है उसी में परमात्म-पन आरोपित करना पड़ता है। जब तक मनुष्य सर्वज्ञ न हो तब तक उसे क्या मालूम कि शायद दुनियाँ के किसी कोने में, जहाँ तक वह अभी नहीं पहुंचा, परमात्मा की सत्ता के निशान माजूद हों? यदि संसार भर के प्रत्येक 'कर्ता' को वह नहीं जानता तो क्या मालूम जिस को वह नहीं जानता वही ससार का भी 'कर्ता' हो? जब वह कह देगा कि मैं सर्वज्ञ बन कर दुनियां भर में ढूंढ आया और परमात्मा के निशान को मैंने कहीं नहीं पाया तब हम उसी को परमात्मा मान कर उस की पूजा करने लगेंगे। परमात्मा का अभाव सिद्ध करना अपने को सर्वज्ञ कहने से कम नहीं है।

यदि कुछ देर के लिए मान भी लें कि परमात्मा नहीं है तो भी हमारा नास्तिकों से प्रश्न है कि वे संसार की गुथी को कैसे सुलझाते हैं? उत्तर मिलता है 'प्रकृतिवाद' (Materialism) से! वैसे तो 'प्रकृतिवाद' कोई एक सिद्धान्त नहीं है और इस के अवान्तर्गत सैकड़ों वाद मौजूद हैं तथापि उन सब में मुख्य विकास-वाद (Evolution) का सिद्धान्त है। इस मत के अनुसार यह माना जाता है कि प्रकृति में विकास होते २ वर्तमान 'विकृत' जगत् की उत्पत्ति होगई। सांख्यमत इसी पक्ष का पोषक है परन्तु वह कई कारणों से, जिनका यहां वर्णन नहीं किया जा सकता, नास्तिक नहीं कहला सकता। हक्सले तथा टिण्डल का कथन है कि यदि उन्हें संसार के बचपन के समय की झाँकी दिखादी जाय तो वे मृत-प्रकृति से जीवित-जगत् की रचना होते हुए देख सकते हैं—जड़ (Inorganic) से चेतन (Organic) की उत्पत्ति उन की कल्पना में आ सकती है। जीवन की इकाई 'कललरस' (Protoplasm) है जो कि 'कार्बन', 'हाईड्रोजन' 'ऑक्सीजन' और 'नाइट्रो-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन' के सम्मिश्रण से बना है—इन में परमात्मा का कोई हाथ नहीं। यही मत चारवाकों का है जिसे वे 'देहात्म-वाद' कहते हैं।*

जब से पाश्चात्य देशों में यह विचार उत्पन्न हुआ कि जड़ से चेतन की उत्पत्ति हो सकती है तब से वहाँ अनेक परीक्षण किये गये। डच तथा इटैलियन लोगों ने † बड़े मज़ेदार परीक्षण किये जिन में से एक यह था कि एक वैज्ञानिक ने पनीर और कुछ गेहूं लेकर एक कपड़े में रख दिए। कुछ दिनों बाद वहाँ चूहे नज़र आये। वैज्ञानिक ने कल्पना की कि पनीर तथा गेहूं के मिलाने से चूहे पैदा हो जाते हैं। हमें आज यह सुन कर हँसी आती है परन्तु उस समय बड़ी संज़ीदगी से इस बात को माना गया। जड़ से चेतन को उत्पन्न करने का अभी तक कोई परीक्षण सफल नहीं हुआ। यदि मान भी लें कि किसी समय रसायन-भवन की परीक्षा-नलिका में जीवन की उत्पत्ति हो जाय तो भी क्या यह सिद्ध होजायगा कि उस का कारण जड़ प्रकृति ही है?

‡डा० फ्लिन्ट लिखते हैं कि जड़ से चेतन की उत्पत्ति होती दीख भी पड़े तो भी प्रकृतिवाद सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि आस्तिक कह सकता है कि जिन अवस्थाओं में जीवन अपने को प्रकट कर सकता है उन्हीं का तुमने पता लगा लिया—जीवन को उत्पन्न तो नहीं कर पाये! जड़ तथा चेतन में जो शाश्वत भेद दिखाई देता है, उस का उत्तर प्रकृतिवाद के पास कुछ नहीं है।

प्रकृतिवादियों से हम यह भी कहना चाहते हैं कि कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन तथा नाइट्रोजन से जहाँ 'चेतनता' उत्पन्न नहीं हो सकती वहां इस से ज्ञान भी नहीं उत्पन्न हो सकता। क्या कभी कल्पना की जा सकती है कि किसी भी समय ईंटें मिल कर सभा करें और हम लोगों की तरह व्याख्यान देने लगें? यदि मनुष्य में जड़ पदार्थों के अतिरिक्त अन्य कोई शक्ति नहीं है तो वह विचार क्यों कर सकता है? दिमाग़ की आणवक गति (Molicular action) ज्ञान (Sensation-Perception) में कैसे बदल जाती है?

---

* अनिमित्ततो भावोत्पत्तिः कण्टकतैक्ष्ण्यादि दर्शनात्। न्याय, ४ र्थ अध्याय, १ आ०, २२ सूत्र। अत्र चत्वारि भूतानि भूमिर्वाय्वनलानिलाः। चतुर्भ्यः खलु भूतेभ्यश्चैतन्यमुपजायते॥ सर्वदर्शन संग्रहः।

† Seven men of Science—P. 99.

‡ Were spontaneous generation proved, materialism would remain as far from established as before."

(Anti Thiestic theories P. 164)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० टिण्डल † ने ठीक पूछा है कि दिमाग़ की भौतिक रचना तथा ज्ञान के अनुभव को मिलाने वाला कौनसा रास्ता है ? मान लिया कि दिमाग़ में एक ख़ास विचार तथा एक खास भौतिक परिवर्तन इकट्ठे होते हैं परन्तु किस साधन से, किस युक्ति से, हम दोनों को मिला देते हैं और, एक को दूसरे का कारण कहने लगते हैं ? इस में सन्देह नहीं कि ये दोनों इकट्ठे दिखाई देते हैं परन्तु यह मानना ही पड़ता है कि 'मस्तिष्क' तथा 'चेतनता' दो पृथक वस्तुएं हैं जिन्हें अभी तक विज्ञान नहीं मिला सका।

नास्तिकों का कथन है कि प्राकृतिक-तत्वों से मस्तिष्क बनता है और वही सोचता है। मस्तिष्क के अतिरिक्त अन्य शक्ति क्यों मानी जाय ? विचार (Thought) तो मस्तिष्क का ही रस (Secretion) है। परन्तु यह विचार ठीक नहीं। फ्लेमेरियन ‡ ने

† "The passage from the physics of the brain to the corresponding facts of Consciousness is unthinkable. granted that a definite thought and a definite molecular action in the brain occur simultaneously; we do not possess the intellectual organ, nor apparently any rudiment of the organ, which would enable us to pass, by a process of reasoning, from The one phenomena To the other. They appear together but we do not know why .... The chasm between the two classes of phenomena would still remain intellectually impassable."

‡ "My learned friend Edmond Perrier presented to the Academy of Sciences, in his lecture of December 22, 1913, an observation of Dr, Robinson's concerning a man who had lived nearly a year with almost no suffering and with no apparent mental trouble, with a brain that was nearly reduced to a pulp, and was no longer any thing but a vast purulent abscess. In july, 1914, Dr, Halloppean brought to the Society of Surgery the account of an operation that had been performed at the Necker hospital upon a young girl who had fallen from the Metropolitan Railway: at the Trepanning it was ascertained that large proportion of the brain matter was reduced literally to a pulp. They cleaned, Drained and reclosed the wound; the patient recovered. on March 24, 1917, at the Academy of Sciences, Dr. Guepin showed, through an operation

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी पुस्तक "मृत्यु और उसका रहस्य" में ऐसे व्यक्तियों के दृष्टान्त दिये हैं जिनका वृहत् मस्तिष्क (Cerebrum) तथा लघु मस्तिष्क (Cerebellum) गल गया था और वे विचार करते रहे। वेदान्त दर्शन† (अ० ३। पा० ३। सू० ५४) में देह तथा मस्तिष्क के अतिरिक्त आत्मा की सिद्धि कहते हुए लिखा है यदि मस्तिष्क के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं है तो—'मेरा मस्तक'—यह ज्ञान कैसे हो सकता है? क्या अग्नि अपने को जला सकती है? क्या नट अपने कन्धे पर चढ़ सकता है?—यदि नहीं तो मस्तिष्क भी, 'मेरा मस्तक' यह ज्ञान तभी कर सकता है जब उसे अपनाने वाली पृथक् सत्ता मानी जाय। इसी प्रकार की अनेक युक्तियों से भामतीकार वाचस्पति मिश्र ‡ ने देह से भिन्न आत्मा की सत्ता को सिद्ध किया है।

अब यदि यह भी मान लिया जाय कि दिमाग़ के बग़ैर मनुष्य सोच नहीं सकता तो भी इसका यही अभिप्राय होगा कि दिमाग़ एक ऐसा साधन है जिस के बिना विचार नहीं हो सकता। यह तो सिद्ध नहीं होगा कि 'विचार दिमाग़ से ही शुरु होता है, उसी में समाप्त हो जाता है और उस से ऊपर नहीं रहता। इसी भाव को सर ऑलिवर लाज * ने अपनी पुस्तक "मस्तिष्क और तत्व"

---

on a wounded soldier, that the partial ablation of the brain does not prevent manifestations of intelligence."

See Death and its Mystery (P. 38-39) by c. Frammarian.

† देखो भाष्य में—"न ह्यग्निरुष्णः सन्स्वात्मानं दहति। न हि नटः शिक्षितः सन् स्वस्कन्धमधिरोक्ष्यति।" (वे०, ३-३-५४)

‡ भामती (पृ० ६)—"न हि बालस्थविरयोः शरीरयोरस्ति मनागपि प्रत्यभिज्ञानगन्धो येनैकत्वमध्यवसीयेत। तस्माद्येषु व्यावर्तमानेषु यदनुवर्तते तत्तेभ्यो भिन्नं यथा कुसुमेभ्यः सूत्रम्। तथा च बालादिशरीरेषु व्यावर्तमानेष्वपि परस्परमहंकारास्पदंवर्तमानं तेभ्यो भिद्यते। अपिच स्वप्नान्ते दिव्यं शरीरभेदमास्थाय तदुचिताञ्भोगाञ् भुञ्जान एव प्रतिबुद्धो मनुष्यशरीरमात्मानं पश्यन् नाहं देवो मनुष्य एवेति देव शरीरे बाध्यमाने ऽप्यहमास्पदमाध्यमानं शरीराद्भिन्नं प्रतिपद्यते,। अपि च योनव्याघ्रः शरीरभेदेष्वात्मानमभिन्नमनुभवतीति नाहंकारालम्बनं देहः।"

*"Fundamentally it amonuts to this: that a complex piece of matter called the brain is the organ or instrument of mind and consciousness; that if it be stimulated, mental activity results: that if it be injured or destroyed no manifastation of mental activity is possible·····Suppose we grant all this, what then? we have granted that brain is the means whereby mind is made manifest on this mental plane, it is the instrument through which alone

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बड़े अच्छे शब्दों में लिखा है। वे लिखते हैं कि 'विचार' 'दिमाग़' से ही होता है, इसका यह अभिप्राय हुआ कि दिमाग़ हमारी चेतना का साधन है, उपकरण है। उसे उत्तेजना मिले तो मानसिक क्रिया उत्तेजित होजाती है, उसे आघात पहुँचे तो मानसिक क्रिया को भी आघात पहुंचता है। यह सब कुछ मान लेने से क्या सिद्ध हुआ? केवल यही कि मानसिक गति के प्रकट होने के लिये मस्तिष्क एक आवश्यक उपकरण है परन्तु हमने यह कहां माना कि मन ही यह उपकरण है? मन इस उपकरण की सहायता लेता हुआ भी इस से ऊपर हो सकता है।

हमने देखा कि प्रकृतिवाद, 'जीवन' तथा 'ज्ञान' के विषय में 'कहाँ से' और 'कैसे' का उत्तर नहीं दे सकता। इन तथा इसी प्रकार के अन्य आक्षेपों के कारण योरप से नास्तिकता हटती चली जा रही है। इसी लिये "एनसाइक्लोपिडया ऑफ़ रिलिजन एण्ड ईथिक्स"* में नास्तिकवाद' के प्रकरण में लिखा है कि आज कल नास्तिक वाद लग भग बिल्कुल उड़ गया है और उस की जगह अज्ञेयवाद आरहा है।

भारतीय सरकार की विनिमयदर-नीति

(ले० पं० इन्द्र विद्यालङ्कार)

प्रस्तुत लेख में हम हिन्दी पाठकों को भारतीय सरकार की विनिमयदर-नीति से परिचय कराना चाहते हैं। अपने देश की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। विशेषतः एक विदेशी सरकार की आर्थिक नीतियों का परिज्ञान रखना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है क्योंकि इन्हीं से हमारे ३० करोड़ देशभाइयों के जीवन-मरण का सम्बन्ध है। अर्थ सदस्य की लेखनी की एक चोट से आज सारा भारत कङ्गाल हो सकता है, उसकी एक निर्धारित आर्थिक नीति से देश के २४७३ लाख कृषक अर्थसंकट

---

we know it, but we have not granted that mind is limited to its material manifestation.·····Mind may be incorporate or incarnate in matter, but it may also Transcend it."

See Mind and matter by sir oliver Lodge P. 324.

*"At the present time Atheism in the definite form, which it often assumed in the Past has almost entirely Disappeared and an agnostic form of rationalism has taken its place."

Encyclopedia of Religion and Ethics–See "Atheism"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पड़ सकते हैं। अप्रत्यक्ष से वह अवस्था आज भी हो रही है; जिस को प्रकाश में रखना हमारे लेख का मुख्य उद्देश्य है। वर्त्तमान भारतीय सरकार की विनिमयदर नीति से कितने ही करोड़ भारतीय आज आधा पेट भोजन करते हैं, कितने ही लाख भारतीय बिना कपड़ों के जीवन व्यतीत करते हैं। यह अत्युक्ति नहीं, यह एक सत्यता है, जिसे अर्थशास्त्र के अध्ययन करने वाले अच्छी तरह समझ सकते हैं।

विनिमयदर नीति का प्रभाव गरीब जनता तक ही सीमित नहीं, देश के मध्यम श्रेणी के लोग भी कितने ही कष्ट, इसके कारण उठा रहे हैं। धनी जनता भी इस के क्षेत्र से बाहर नहीं, वस्तुतः सारे देश के एक २ व्यक्ति के साथ इस नीति का सम्बन्ध है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रत्येक भारतीय पर इसका प्रभाव पड़ता है और अवश्य पड़ता है। यदि हमारे देश के लोग, अपने देश की आर्थिक स्थिति की तरफ़ ध्यान रखा करें, तो उन्हें पता लगे कि किस प्रकार वर्त्तमान विदेशी शासन अपनी आर्थिक नीतियों से देश के जीवन तन्तुओं को काटे चला जारहा है।

हमारे देश का ६५ प्रतिशतक सामुद्रिक व्यापार केवल इङ्गलैंड से है। हमारे देश की मुद्राओं तथा इङ्गलैंड की मुद्राओं के मूल्य का आनुमानिक परिमाण हमारी गवर्मेंट से ही निश्चय होता है। आज कल यह आनुमानिक परिमाण १ = १-६ का है। अभिप्राय यह है कि हमारा एक रुपया इङ्गलैण्ड के एक शिलिङ्ग ६ पेन्स के बराबर है। १९२५ में यह परिमाण १: १-४ था। वर्त्तमान अर्थसदस्य ने इस वर्ष इस विनिमय दर को बढा दिया है। भारतीय सदस्यों के घोर प्रतिवाद पर भी इस विनिमयदर नीति को स्थिर किया गया है, अभिप्राय यह कि उच्च विनिमयदर- (१ = १७६) के सिद्धान्त को स्वीकृत कर लिया गया है। आगे के लेख से स्पष्ट होगा कि यह उच्च विनिमयदर भारतीय आर्थिक हितों के सर्वथा प्रतिकूल है।

निम्न विनिमयदर-नीति के क्या लाभ हैं? और उच्च विनिमयदर-नीति की क्या हानियाँ हैं? क्यों हम फिर १:१-६ से १: १-४ विनिमयदर स्थापित कराना चाहते हैं?

श्रीयुत वेसील ब्लैकेट हमें बताते हैं कि उच्चविनिमयदर नीति से भारतीय राष्ट्र को २ करोड़ ५६ लाख का अर्थलाभ हुआ है और आशा दिलाते हैं कि इस नीति से आगामी वर्ष में और भी अधिक अर्थलाभ की संभावना है। परन्तु यह अर्थलाभ कैसा है? यह कहाँ से आया है? क्या यह अकस्मात् आकाश से अर्थसदस्य पर आगिरा है? यदि लेखक से पूछा जाय तो यह अर्थ लाभ भारत की गरीब जनता के ज़ेबों को कुतर कर निकाला गया है। यह अर्थलाभ भारतीय २४७२ लाख कृषकों के त्याग से अर्थसदस्य को प्राप्त हुआ है! यह कैसे? लेखक अपनी स्थापनाको निम्न शब्दों में स्पष्ट करता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय कृषक अपने तैयार किये कच्चे माल को बाहर भेजते हैं-इसके बदले में वे पक्के आयात माल को लेते हैं। भारतीय सरकार अपने कृत्रिम स्वरचित प्रबन्ध द्वारा स्थापित विनिमय दर-नीति से उन्हें निर्यात के बदले में दाम चुकाती है। जहाँ पहले एक कृषक १ शि० ४ पें० का कच्चा माल देकर १) रु० लेता था आज वह १ शि. ६ प. का कच्चा माल देकर १ रु० ले सकता है। अभिप्राय यह कि उसे अपनी कीमत का आज ६वाँ हिस्सा कम मिलता है। अथवा १२॥ प्रतिशतक हानि होती है। यदि गत वर्षों में जूट व्यवसाय वालों को बंगाल में अपने कच्चे माल के निर्यात के लिये ६५ करोड़ रुपया मिलता था तो आज उसे ७ करोड़ रुपया कम मिलता है। क्या यह बंगाल के गरीब कृषकों को कम हानि है? क्या यह ७ करोड़ का टैक्स उन पर कम भारी है? क्या यह उनकी कमाई रोटी के टुकड़े को उनसे छीन लेना नहीं है? जो गरीब जनता आज पहले ही भारतीय सरकार की भूमिकर नीति से दबी हुई है, जो जनता नमक कर आदि घृणित टैक्सों से चूसी जारही है, जो अपना सैनिक व्यय आदि के बढ़ाने से अधमरी होरही है, उस जनता की परिश्रम की कमाई पर हाथ फेरना क्या कम अत्याचार है? यह अप्रत्यक्ष अत्याचार जलियाँवाला बाग़ के अत्याचारों से कहीं अधिक है, यदि हम अनुभव करें।

साधारण अनुमान से पता लगता है कि भारतीय कृषक जनता ने साहूकारों को ६०० करोड़ के लगभग प्रति वर्ष ऋण देना होता है। भारत की इस शोचनीय अवस्था पर अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं। कितने करोड़ कृषक महाजनों के फन्दे में बड़ी दयनीय स्थिति में पड़े हुए हैं! घरबार बिक जाता है तब भी उनका ऋण नहीं चुकता है। वे बिचारे अभागे स्वदेश बन्धु करें भी क्या, वे रुपया कहां से लाएं। भूमिकर उन पर असह्य बोझ है, वह भी पूरा न होगा। इस पर भारतीय सरकार की विनियम दर नीति से उन की अल्प मात्रिक कमाई को और भी कम कर दिया जाता है। उन को अपने परिश्रम का फल-इस नीति द्वारा आगे से भी कम दिया जाता हैं। करें तो क्या करें, अपने भाग्यों को रोएं। वे अबोध कृषक भारतीय सरकार की पेचीदी आर्थिक नीतियों को भला क्या जानें इस नीति का अप्रत्यक्ष, घातक प्रभाव उन कृषकों को अधिक कङ्गाल बनाता चला जा रहा है। यह उच्च विनिमय दर नीति की प्रथम हानि है।

दूसरी हानि हमारे सामुद्रिक व्यापार के सम्बन्ध में है। इस समय हमारा व्यापार हमारे पक्ष में है, अभिप्राय यह कि हमारे निर्य्यात अधिक हैं अपेक्षा आयात के। यह स्थिति, भारतीय हितों के अनुकूल ही है। अब यदि निम्न विनिमय दर नीति हो तो यह स्थिति स्थिर रह सकती है अन्यथा हमारे हितों के प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह स्पष्ट है कि अगर उच्च विनिमय दर नीति हो तो हमारे देश के लोग आयात अधिक मंगाएंगे, क्यों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अब उन्हें १) भेजने से १ शि. ४ पें. के माल की बजाय १ शि. ६ पें. का माल मिलता है; इस लिये इङ्गलैण्ड के माल मंगवाने के प्रलोभन से वे नहीं बच सकते, इस भांति देश के आयात माल की संख्या अधिक बढ़ती है। उस से हमारे पक्ष के व्यापार में चोट पहुंचती है। जितने भी अधिक हमारे देश में विदेशों के माल अधिक खपने लगेंगे, उतनी हमारे देश की व्यावसायिक हानि होगी, हमारे व्यवसाय बन्द हो जायंगे; क्योंकि उन की मांग कम हो जायगी। संक्षेपतः आयात वृद्धि हमारे व्यावसायिक हितों के लिये घातक होगी। इस के विपरीत इङ्गलैण्ड के व्यवसाय उन्नत होंगे, क्योंकि उन की मांग भारत में बढ़ेगी। इङ्गलैण्ड की फर्में समृद्ध होंगी भारतीय व्यवसायों की मृत्यु की राख पर। जिस नीति से यह परिणाम प्रगट हों, वह किस प्रकार भारतीय आर्थिक उन्नति का कारण बन सकती है। उच्च दर नीति से हमारे व्यवसायों के विकास पर कुल्हाड़ा चलेगा, हमारे कृषक निकम्मे होंगे, हमारी व्यावसायिक जनता बिना पेशे की हो जायगी। देश को भयंकर हानि होगी और वर्त्तमान में हो भी रही है।

इस के अतिरिक्त देश की दृष्टि से हमारी आर्थिक स्थिति शोचनीय होती जायगी। हमारा देश एक ऋणी देश है। हमारे देश का आर्थिक शोषण जगत्प्रसिद्ध है। कितना ही धन हमें अपने प्रभु ब्रिटिश सरकार को लंडन में भेजना होता है। प्रतिवर्ष कितने ही अधिकारियों के वेतनों, पेन्शनों फलों आदि के लिये व्यय यहीं से जाना होता है। यह सब धन, हमारा देश अपने निर्य्यातों द्वारा पूरा करता है। इङ्गलैंड के अतिरिक्त अन्य देशों को भी इसी विधि द्वारा उनका ऋण प्रदान करता है। अब यदि इस विनिमय दर नीति से हमारे निर्य्यातों की कमी हो जाय तो हम किस प्रकार अपने वार्षिक ऋण के भारी बोझ को उठा सकते हैं। भारतवर्ष निरन्तर कङ्गाल हो जायगा यदि उस की व्यापारिक स्थिति पर इस तरह चोट लगती रहे। हमारी व्यापारिक स्थिति, उच्च विनिमय दर नीति से बिगड़ेगी ही, सुधरेगी नहीं, यह वही जानते हैं जो अपने देश की आर्थिक समस्याओं का अनुशीलन करते रहते हैं।

एक और हानि विदेशी पूंजी के सम्बन्ध में है। उच्च विनिमय दर होने से कितने ही विदेशियों को केवल विनिमय प्रक्रिया में करोड़ों का मुनाफा हुआ है, जो भारतीयों के ही त्याग पर है। विदेशीयों ने अपनी पूंजी भारत में भेज कर फिर अपने देश में मंगा कर अपनी उच्च विनिमय दर से अपने सिक्का में परिणत कर बहुत लाभ उठाया है। १९२३ के १) के बदले में आज उन्हें १ शि. ४ पें. नहीं, प्रत्युत १ शि. ६ पै. मिलता है। श्रीवाडिया ने गणना की है कि इस तरह भारतीयों को ५० करोड़ रुपये का घाटा हुआ है।

सरपुरुषोत्तम ठाकुरदास ने बड़ी व्यवस्थापक सभा में इस विषय पर प्रकाश डालते हुए अर्थ सदस्य से उच्च

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिमय दर को हटाने के लिये कहा था। अर्थ सदस्य ने इस नीति का समर्थन करते हुए भी कहा था कि यह शीघ्र हटा दी जायगी, जिसका अभिप्राय है कि गवर्मेण्ट स्वयं भी इस नीति की अयुक्तता को अनुभव करती है। परन्तु २५६ लाख रु० का अर्थलाभ कहां से होगा जो अर्थ सदस्य ने वर्त्तमान विनिमयदरनीति से किया है? इस का उत्तर प्रत्येक भारतीय यही देगा कि सैनिक व्यय आदि कम करने से। संसार के पृष्ठ पर किसी अन्य राष्ट्र के इतने ज्यादा सैनिक व्यय नहीं जितने भारतवर्ष के। हमारा देश युद्ध प्रिय भी नहीं। यहां प्राकृतिक सुस्थिति से विदेशी आक्रान्ताओं का भय भी नहीं है, तो किस प्रयोजन से सैनिक व्यय अधिक किये जांय। क्या साम्राज्य हितों के बढ़ाने के लिये भारत अपना सर्वस्व न्योछावर कर दे? अपने को भूखा मार कर वह ऐसा करने को तैयार नहीं है।

बेबस भारतीय कर क्या सकते हैं। दादाभाई नौरोजी तथा गोपालकृष्ण गोखले ने कितनी बार आन्दोलन किया, घोर संग्राम किया, फिर भी सैनिक व्यय कम नहीं किया गया। इस समय भी ६० करोड़ रु० के लगभग सेनाओं पर व्यय होता है- जो कुल भारतीय बजट का लगभग आधा है। इसी भारी व्यय को पूरा करने के लिये सरकार को कितने ही अन्य अन्यायपूर्ण टैक्स लगाने पड़ते हैं। नमक कर, कपड़े पर गृहकर आदि उदाहरणार्थ रखे जासकते हैं। भारतवर्ष संसार के सब देशों में सब से अधिक गरीब है। जहाँ अमेरिका में प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति की ७२० रु० आमदनी है, और जहाँ केनाडा में यह आमदनी प्रति व्यक्ति ५५० रु० तक है, वहां हमारे गरीब भारत के प्रतिव्यक्ति की वार्षिक आमदनी केवल ५५ रु० ही है। इस शोचनीय आर्थिक स्थिति में भी हमारे सैनिक व्यय संसार के सब देशों से अधिक है, कैसा विपरीत अवस्था है। यदि अर्थसदस्य को बजट में अर्थलाभ के दिखाने की दृढ़ अभिलाषा है तो वह इन बढ़े हुए व्ययों को कम करके दिखाए। इसी में उसकी चतुरता है, उसकी दूरदर्शिता है और उसकी सफलता है। गरीब भारतीयों पर अप्रत्यक्ष रूप से अधिक कर लगा कर अर्थलाभ दिखाने में क्या बड़ाई है।

उच्च विनिमयदर-नीति हमारे कृषकों के हितों के प्रतिकूल है, हमारे व्यापारिक हितों के प्रतिकूल है, हमारे व्यावसायिक हितों के प्रतिकूल है। इससे हमारे देश की आर्थिक उन्नति में क्षति होती है। यह सर्वथा हेय है। इस समय युद्ध शान्त हो चुके हैं। संसार के व्यापार में समतुलता आचुकी है। अब इस कृत्रिम, स्वयं रचित विनिमयदर नीति की आवश्यकता नहीं। विनिमय दर को फिर से उसी १ शि० ४ पैं० पर स्थापित करना चाहिये। इसी में देश के आर्थिक हितों की रक्षा है।

हम समझते हैं हमने यथासम्भव सरल शब्दों में हिन्दी पाठकों के सन्मुख भारतीय आर्थिक स्थिति के गम्भीर प्रश्न पर विचार किया है। हमें पूरी आशा है कि पाठक इससे अवश्य लाभ उठाएंगे और स्वदेश की आर्थिक समस्याओं के अनुशीलन के लिये अधिकाधिक प्रवृत्त होंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* कनक *

हे प्रिय कनक ! कनक भी तुम में नहीं कहीं दोषों की ।
बनी प्रतिष्ठा शोभा तुमसे सकल विश्व के कोषों की ॥
तव अनूप अनुरूप रूप पर सकल लोक छवि वारी है ।
कहें, कहां तक, कृष्णदेव भी पीताम्बर छवि-धारी हैं ॥ १ ॥

क्या राजा, क्या रङ्क, यती क्या, सती और सुखभोगी क्या ।
गृही, वनी क्या, संन्यासी क्या, योगी और वियोगी क्या ॥
सकल विश्व हे कनकदेव ! तव पूजा करता रहता है ।
ब्रह्म समान तुझे पाने को कष्ट अनेकों सहता है ॥ २ ॥

जिस पर होती कृपा कोर तव वही गुणी वह दानी है ।
बुधि, विद्या की खानि वही, बस, पण्डित, मानी, ध्यानी है ॥
हे सुवर्ण ! इस युग में तुम ही, आशुतोष वरदानी हो ।
"श्रीहरि" स्वर्ग मार्ग के दर्शक, तुम्हीं चतुर गुरु ज्ञानी हो ॥ ३ ॥

(श्री हरि)

भारत साम्राज्य-विस्तार

(ले० —नारायण रामराव देशपांडे)

पाश्चात्य पंडित और अंग्रेजी पढे लिखे कुछ बाबू लोगों को इसके मानने में संदेह है कि "भारत साम्राज्य का विस्तार हिन्दुस्तान के बाहर किसी जमाने में हो चुका था" । इस लिये ऐतरेय ब्राह्मण के आधार पर इस बिषय को अपने भाइयों के सामने पेश किया जाता है ताकि वे इसको विचार पूर्वक पढें और अपने प्राचीन साहित्य का परिशीलन कर के योग्य मत को ग्रहण करें—

ऐतरेय ब्राह्मण नें लिखा है कि महाराजा भरत सम्राट् ने अपने दौरे हुकूमत में जो असाधारण और असामान्य कर्म किये वे किसी और मनुष्य मात्र से नहीं हो सकते और न उन के पूर्वजों या वंशजों में से किसी ने ऐसे असामान्य कर्म किए हैं—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकर्म भरतस्य
नपूर्वे ना परे जनाः ।
दिवंमर्त्य इव हस्ताभ्यां
नोदापुः पंचमानवाः ॥

भरताभिषेक के प्रभाव में निम्नलिखित मंत्र उद्धृत किया गया है —

हिरण्येन परिवृता
न्कृष्णा ञ्शुक्लदतो मृगान् ।
भष्णारे भरतो ददा
च्छतेबद्धानि सप्तच ॥

इस में बयान किया गया है कि राजा भरत ने **भष्णार** देश में **सुवर्णसे व्याप्त १०७ बद्ध** गज [हाथी] दान दिये—

[१] बद्ध शब्द का अर्थ भाष्यकारोंने शतकोटि संख्या वाचक बतलाया है—यद्यपि बद्ध शतकोटी माना जाने में संदेह हो सकता है परन्तु १०७ बद्ध गज याने इस कदर हाथी की संख्या जो कि हिन्दुस्तान में प्राप्त नहीं हो सकती मानने में सन्देह नहीं हो सकता इस लिए कि यदि यह संख्या हिन्दुस्तान में प्राप्त हो सकती तो उसको भष्णार देश में जाकर दान करने की आवश्यकता न थी—

[२] भष्णार देश हिन्दुस्तान में नहीं है—ऊपर निर्दिष्ट मंत्र से यह तो मालूम होता है कि वह प्रदेश हाथियों से पुर है । यदि किसी देश का नाम भष्णार हो भी परन्तु उस देश में हाथियों की विपुलता न हो या यह भी सिद्ध न हो कि उस देश में प्राचीनकाल में हाथी विपुल थे तो वह प्रदेश भी मंत्र में वर्णन किया हुवा, भष्णार देश सिद्ध नहीं हो सकता—

इंटर नैशनल ज्याग्रफी (International geography) में आफ्रिका खंड के वर्णन में दक्षिण रोडेशिया में भषण (Mashuna) प्रान्त का उल्लेख है—और यह भी लिखा है कि भषण प्रांत में एक काल में हाथियों की इतनी विपुलता थी कि जिस की संख्या का वर्णन कठिन है, यही नहीं किन्तु तद्देशीय और अंग्रेजों के बंदूक और तोपों का शिकार से एक भारी संख्या के नष्ट हो जाने के बावजूद भी माटाबेल, भषण प्रान्त व जैंबेज़ी नदी के किनारे पर अब भी बहुत संख्या हाथियों की मिलती है; इतनी ही नहीं किन्तु हाथियों की विपुलता के कारण यहां के उपनिवेशियों का झंडा गज चिन्हांकित है और एक किनारे का नाम हस्तिदंती किनारा (Ivory coast) रखा गया है—भषण शब्द और भष्णार शब्द में केवल रकोलाप हुआ है--और एक भाषा या प्रान्त से दूसरी भाषा या प्रांत में शब्द जाने से किसी अक्षर का लोप अशक्य नहीं है—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३] यदि यह सिद्ध भी हो जाय कि भषण और भष्णार एक ही है और हाथियों की संख्या भी उस प्रांत में विपुल है तब भी यावत्काल तीसरी शर्त "सोने से व्याप्त" "हिरण्येन" पूरी न हो सब विचार व्यर्थ हैं। इस प्रान्त में हाथियों के सिवाय सोने की कानों की भी विपुलता है। इसी कारण एक किनारे का नाम सुवर्ण किनारा Gold coast रखा गया है और एक स्थान का नाम सुवर्ण क्षेत्र (Rand gold field) भी है जहां दक्षिण अफ्रिका का प्रसिद्ध नगर जोहान्सबर्ग बसा हुआ है। पाठकों ने भूगोल में पढ़ा होगा कि दुनियां में सब से अधिक सोना इसी सुवर्ण क्षेत्र से निकाला जाता है।

यहां भारत सदृश किले, देवल, मंदिरों और किलों में सोने के काम की कारीगरी के प्राचीन काल के अवशेष से भी यह सिद्ध होता है कि यहां के निवासी बहुत उन्नत दशा में थे। बोअर युद्ध के पूर्वकाल तक यहां हरसाल चौबिस करोड़ का सुवर्ण निकाला जाता था। अस्तु

इसी मंत्र के बाद और एक मंत्र निम्नलिखित है—

भरतस्यैष दौष्यन्ते
रग्निः साचीगुणे चितः।
यस्मिन्सहस्रं ब्राह्मणा
बद्वशो गा विभेजिरे ॥

इस श्लोक में वर्णन है कि दौष्यंति भरत ने **साची गुण** देश में चयन याग किया और हजार ब्राह्मणों के उस याग में हरएक को बद्वश गौ, इस तरह पर गौओं को बांट दिया। पहिले श्लोकार्ध में साची गुण देश का उल्लेख है। इस समय भषण प्रान्त से मिला हुवा साची गुण नाम का कोई प्रदेश नहीं है परंतु भषण प्रान्त से मिले हुए देश में पोर्गीज़ ईस्ट अफ्रीका Portugese east Africa साची नदी बहती है और अजब नहीं कि यह नदी जिस प्रान्त से बहती है उस प्रान्त को एक काल में "साची गुण" कहा जाता हो, जैसा सिन्धु नद के कारण सिंध प्रसिद्ध है। इस से पूर्णतया सिद्ध होता है कि महाराजा भरत सम्राट ने आफ्रिका खंड में चयन याग किया और असंख्य गौयें और सुवर्ण व्याप्त हाथी ब्राह्मणों को दान दिए— इस से पता लगा कि भारत साम्राज्य का विस्तार आफ्रिका खंड तक हो चुका था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य-धर्म साधारण जनता में कैसे फैल सकता है

(ले० प्रो० साँझीरामजी एम० एम० ए० अमेरिका)

वर्तमान आर्य धर्म आम तौर पर शहरों के शिक्षित पुरुषों तक ही सीमित है। इस में ग्रामीण जनता अंश मात्र भी शामिल नहीं है और न ही उसे शामिल करने का विचार अब तक उत्पन्न हुआ है। जब कोई ग्रामीण शिक्षित हो कर शहरों में निवास करने लगता है तो वह स्वयं तो आर्य्य जाति में मिल जाता है परन्तु अपने साथी देहाती भाइयों को भूल जाता है। ऐसी अवस्था कब तक सही जा सकती है, गांव वालों को गंवार तथा अर्ध मूर्ख कब तक करार दिया जा सकता है। ये हमारी धार्मिक तथा सामाजिक भयंकर भूले हैं, क्योंकि ग्रामीण भाई संख्या, स्वास्थ्य, कुर्बानी गम्भीरता, और अतिथि सत्कार इत्यादि मुख्य मानवीय गुणों में शहर वालों से कहीं बढ़ चढ़ कर हैं। देहाती भाइयों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। भारत की ९० प्रतिशतक जन संख्या गांवों में बस रही है। भारत का स्वास्थ्य इन्हीं के स्वास्थ्य पर जाना जाता है। वस्तुतः! भारत का असली धार्मिक पुरुष भी देहाती ही समझा जा सकता है क्योंकि वह धर्म का जो भाग भी समझ लेता है उस के लिए मरने तक को तैयार रहता है। वर्तमान अकाली आन्दोलन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। ग्रामीण अकाली भाई यद्यपि धर्म से पूर्णतया परिचित नहीं थे तो भी उन में से कोई पुरुष शायद ही निकला होगा जिसने गवर्नमैण्ट से क्षमा याचना की हो, जितने भी धर्म द्रोही हुवे हैं वे अधिक तर शहर निवासी, शिक्षित अकाली थे। हमारा धर्म उतना ही बड़ा होता है जितनी बड़ी कुर्बानी कि हम उस के लिए कर सकते हैं। अकालियों का धर्म भी उतना ही बड़ा है जितनी बड़ी कि उन्होंने इस की रक्षा के लिए कुर्बानी की है। फिर जो कुछ कुर्बानी उन से हुई है वह देहाती भाइयों की ही कृपा है। इस से सिद्ध हुआ कि यदि भारत की सब जातियों की दशा अकालियों की सी समझी जाय तो भारत वर्ष का जीवित धर्म केवल देहातियों तक ही सीमित है। तात्पर्य यह है कि यदि आर्य्य जाति का वृक्ष अपनी जड़ें गांव की उर्वरा भूमि तक नहीं पहुंचायगा वह उन्नति से रुक जायगा और पहाड़ के उन वृक्षों की तरह पत्थर हो जायगा जिन को की अंग्रेजी जबान में फौसीलाइज़ड लकड़ी से बना पत्थर (Fossilized) कहते हैं।

हम आर्य्य धर्म को तब तक ख़तरे में देखते हैं जब तक कि इस की सहायता के लिए आर्य किसान लोग न तैय्यार हो जायँ। प्रश्न उत्पन्न होता है कि किस ढंगसे आर्य किसानों को उनके प्राचीन धर्म की तरफ आकृष्ट किया जाय। इस के कई एक उपाय हैं और प्रत्येक उपाय अपना विशेष महत्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखता है। लेखक के विचार में सब से उत्तम उपाय वैदिक मिशन की ओर से औद्योगिक प्राथमिक (Missionary industrial primary) या माध्यमिक स्कूल(Secondary schools) का जारी करना है। इसाई मिशनों ने भारत, फारस, अरब, मलाया, चीन और जापान आदि मुल्कों में जिस संख्या में ईसाई अनुयायी ऐसे स्कूलों द्वारा प्राप्त किए हैं उतने प्रचार और गिरजों आदि द्वारा नहीं हो सके। इसी लिये उनकी मिशनरी पत्रिकाओं सन्डे स्कूल, क्रिश्चियन सायन्स मानीटर (Sunday School, Christian Science Manitor, Christian Herald इत्यादि) में चीन को उस के सन्तति द्वारा जीतना "Winning China Through her Children" आदि लेख बड़े जोर शोर से निकल रहे हैं। ऐसे स्कूलों का परिणाम आज यह हुआ है कि जिन चीनियों के बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं वही चीनी अधिकतर अपने परिवारों सहित इसाई धर्म में प्रविष्ट होते हैं। ऐसे प्रविष्ट चीनियों की संख्या लाखों तक पहुँच गई है।

आर्य्य प्राथमिक या माध्यमिक स्कूल जो भारतीय ग्रामों में कामयाब हो सकते हैं उन में वर्त्तमान ढंग की शिक्षा लाभदायक होने के स्थान में सख्त हानिकारक होगी। इन विद्यालयों में वे विषय रक्खे जाने चाहिये जिनको कि ग्रामीण पुरुष न सिर्फ भली भाँति समझ ही सकें, बल्कि उन को ऐसी भाषा में समझाया जाय जो कि निहायत ही सरल हो। देहाती बच्चों को संस्कृत, अंग्रेजी, ऊँची गणित, आदि सिखाने का यत्न न किया जाय। उन के लिये तो सरल आर्य भाषा मोटे अक्षरों में पर्याप्त है।

बहुत से मनुष्य आर्य स्कूलों (Vedic Missionary schools) में धार्मिक तथा मत मतान्तरों का रखना आवश्यक समझते हैं। ऐसी धार्मिक शिक्षाओं का असर अवश्यमेव वही होता है जो कि खंडन मंडन से। सरल आर्य भाषा में देहाती बच्चों को साधारण ज्ञान मात्र ही काफी है। इतने ज्ञान मात्र से ही ग्रामीण बच्चे आर्य धर्म के सिद्धान्त सीखने तथा आर्य मत ग्रहण करने पर उद्यत हो जायगें। जहाँ जहाँ ईसाई मत अपने विद्यालय अन्य धर्मों के देशों में स्थापित करता है वह आज कल इस गरज से नहीं कि उस के धर्म की शिक्षा का विद्यालयों में प्रबन्ध हो जाय बल्कि इस गरज से करता है कि उस के मतानुयायियों की संख्या बढ़े। यह गरज, वर्तमान तजरबों के अनुसार तभी ही ठीक तरह पूरी होती है जब हम इन स्कूलों में देहातों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयत्न करें।

लेखक को कुछ समय अकाल कालिज (सिक्खों का कोलिज) में ठहरने का अवसर मिला। जिस से सिक्खों के ग्रामीण गुरुद्वारा स्कूलों का परिचय हुआ। इन स्कूलों में गुरुमुखीलिपि द्वारा बहुत मामूली ज्ञान दिया जा रहा है। परन्तु गाँव वालों की श्रद्धा इस स्कूल तथा इसके अध्यापक की ओर इतनी जबरदस्त हो जाती

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि वे स्वयं खालसा पंथ के हार्दिक सहायक बन जाते हैं। आजकल अकाल कालिज में कोई २५० (अढाई सौ) विद्यार्थी ऐसे ग्रामीण दानियों के अनाज पर निर्वाह कर रहे हैं। कालिज के विद्यार्थियों के लिये कई सौ मन अनाज, कई पशु, और पर्याप्त धन हर रोज इन्हीं ग्रामीण पुरुषों से आरहा है। आर्य देहाती प्राथमिक शिल्प स्कूलों की सहायता भी बहुत हद तक ऐसे ग्रामीण पुरुषों की तरफ से स्वयं होने लग जायगी बशर्ते की हम गाँव में मत मतान्तरों तथा कठिन विषयों से बाज रहें।

उपरोक्त शब्दों से लेखक का यह अभिप्राय नहीं है कि रामायण जैसी पुस्तकों की शिक्षा से हिन्दू जाति को वंचित रक्खा जाय अपितु यह मतलब जरूर है कि अपनी पुरानी पुस्तकों का सारांश रूप में विद्यार्थियों के लिए तैयार किया जाय। सारांश सब सरल भाषा में होंगे। पुराणों तथा अन्य प्राचीन पुस्तकों की रोचक तथा लाभ दायक कथाएं ऐसे ढंग से संग्रह की जा सकती हैं कि जिस से किसी प्रकार का वाद संवाद न हो सके।

इस अवसर पर ऐसे आर्य स्कूलों की परिपाटी पर विशेष लिखने का मंशा नहीं है। यह किसी दूसरे अंक में दिया जा सकता है। इस मौके पर सिर्फ इतना कह कर समाप्त किया जाता है कि यह बहुत हद तक सम्भव है कि हम मुनासिब प्रबन्ध करके कोई ५०) माहवार पर एक स्कूल शुरु कर सकते हैं।

ज्यों ज्यों यह स्कूल पुराना होता जायगा त्यों त्यों इस का खर्च आवश्यकता अनुसार बढ़ेगा परन्तु उस का हम को फ़िकर नहीं है क्यों कि गांव वाले खर्च का बोझ अपने सिर पर ले लेंगे। अब इन स्कूलों को ऐसे और स्कूलों से कैसे सम्बन्ध किया जाय और किस प्रकार से एक देहाती (Primary) शिल्प स्कूलों के एक स्वावलम्बी (Self Supporting) विश्वविद्यालय University की नींव रक्खी जाय की बाबत फिर लिखा जायगा।

नामरूप का अन्धेर और स्वराज्य प्रकाश

(ले० पं० भीमसेन विद्यालंकार)

उपनिषदों में लिखा है कि संसार में मनुष्य तथा जातियोंके जीवन में जो ईर्ष्या पूर्ण लड़ाइयां होती हैं उनका मुख्य कारण 'नाम रूप है। नाम रूप के मिट जाने या विस्मृत होजाने पर वैमनस्य तथा झगड़े स्वयं बन्द हो जाते हैं। नाम रूप के कारण पैदा होने वाले झगड़े तब और भी अधिक भयंकर रूप धारण करते हैं जब यह नाम रूप की रूढियाँ अपरिवर्तन शील होजाती हैं। जिस समय जातियां सिद्धान्तों को स्थिर तथा दृढ़ करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अपेक्षा नाम की स्थिरता पर अधिक जोर देती हैं उस समय यह पारस्परिक वैमनस्य अधिक तीव्र हो जाता है आज योरपके अन्दर राष्ट्रों में जो पारस्परिक स्पर्धा तथा ईर्ष्या फैली हुई है इस के अनेक कारणों में से मुख्य कारण यह भी है कि योरपियन जातियों को विशेष नामों से प्यार होगया है। वह उस विशेष नाम को धारण करने वाले गिरोह का खातिर सब कुछ बलि करने को तय्यार होजाते हैं। ऐतिहासिकों ने युरुप के स्लैव गाल काकेशिसियन आइबेरियन है लोनिक इत्यादि नामों में बांटा हुआ है। संसार के दूसरे भागोंको भी सेमिटिक मगोलियन आदि नामों में विभक्त किया है। यह विभाग किसी समय में शायद ठीक हों, अर्थानुकूल हो परन्तु आज कल मनुष्य जातिके परस्पर मेलजोल के कारण यह नाम भेद नाम मात्र का है परन्तु इन नामों के कारण जो लड़ाइयां होती हैं उन्हें देख कर ऐसा मालूम होता है कि इन भिन्न २ नाम धारण करने वाली जातियों में आकाश पाताल का अन्तर है। जातियों के नामों की अयथार्थता को हम प्रसिद्ध ऐतिहासिक एच जी. वैल्स की आऊट लाइनज़ आफ़ हिस्ट्री (The Outlines of History) के ६६ पृष्ठ (chapter XIII The Races of Mankind) के उद्धरण से प्रमाणित करते हैं।

And in the present age, man is probably no longer under going differentiation at all. Readmixture is now a far stronger force than differentiation. Men mingle more and more. Mankind from the view of a biologist is an animal species in a state of arrested differentiation and possible readmixture.

It is only in the last fifty or sixty years that varieties of men come to be regarded in this light, as a tangle of differentiations recently arrested or still in progress.

Before that times student of mankind influenced consciously or unconsciously by, the story of Noah and Ark and his three sons. Shem, ham, and Duphat, were inclined to classify men into three on four great races as having always been separate things, descended from originally separate ancestors. They ignored the great possibilities of blended races and of special local isolations and variations. The classification has varied considerably, but there has been rather too much readiness to assume that mankind must be completely divisible into three or four groups. Ethonoligists (students of races) have fallen into grievous disputes about a multitude of minor people as to whether they were of this or that

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

primary race or mixed or strayed early forms or what not. But all races are more or less mixed.

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि आज जिन प्राचीन नामों की दुहाई की जाती है वह अधिकाँश में नाम नाम ही हैं। आज कोई राष्ट्र, किसी प्राचीन जाति का रक्षक या अभिमानी बनता है कोई किसी का, सब नामों का अँधेर है। यदि वह जरा भी सोचे कि जिन के लिये अब हम लड़ रहे हैं वह तो विशुद्ध रूप से कहीं नहीं मिल सकते। जब तक युरोपियन जातियों के विचारों में से यह नाम तथा रूप रंग का अभिमान नहीं मिटेगा तब तक वैमनस्य तथा राष्ट्रों की ईर्ष्या नहीं मिट सकती। नाम रूप के कारण होने वाले अन्धेर को छिन्न भिन्न करने का साधन यही है कि इन नामों को रूढ़ि अर्थों में प्रयुक्त न किया जाय। इन के मौलिक अर्थों पर प्रकाश डाला जाय। जब तक हमारी विचार धारा संकीर्ण, संकुचित, तथा पक्ष पात पूर्ण है तब तक इन नामों का मौलिक रूप में प्रयोग नहीं हो सकता। जातियों का इतिहास बताता है कि जातियों के स्वभावादि में जो भेद है इस का मुख्य कारण देश की मौलिक परिस्थिति तथा समीपवर्ती वातावरण है। यह समझना कि अपने जन्म देश को छोड़ कर भी उनके अन्दर दूसरे देशों में जाकर पुरानी वृत्तियां बनी रहती हैं ठीक नहीं है। जिस प्रकार आर्यावर्त में रहने वाली आर्य जाति ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शुद्र चार यौगिकार्थ परक वर्णों को, नाम रूढ़ि बना कर, कास्टसिस्टम जातिभेद की बुराई पैदा की, इसी ने देश में कई बुराइयों को जन्म दिया। संसार का इतिहास लिखने वालों ने या यह कहिए कि मध्यकाल के संकीर्ण संकुचित दृष्टि वाले ऐतिहासिकों ने अपनी २ जाति को ईश्वर प्रेरित समझ कर, हृदयों में विषमता के भाव पैदा कर दिए। इसी का परिणाम था कि ग्रीस के नगर राष्ट्रों में रहने वालों को सब प्रकार से योग्य होने पर भी नागरिकता के अधिकार नहीं दिए जाते थे।

यहूदी लोग कई सदियों से अपने जन्म देश को छोड़कर भिन्न २ स्थानों पर रहे, व्यापार किया, धन कमाया, वंश चलाए परन्तु इस रूढ़ि वाद ने उन्हें कहीं का नागरिक नहीं बनने दिया। मध्य काल में स्पेन वालों तथा युरोप वालों ने मूर जाति को इसी संकीर्ण भाव से प्रेरित होकर स्वदेश से बहिष्कृत किया। आज युरोपियन, भिन्न २ उपनिवेशों में जन्म लेने वाले वहीं की मट्टी से पलने वाले भारतीयों को नाम तथा रूप के अभिमान से प्रेरित होकर भारतीयों को ओपनेवैशिक अधिकार नहीं देते।

इसी मिथ्याभिमान के कारण जर्मन सम्राट् तथा अन्य यूरोपियन महत्वकाँक्षी, एशिया वालों को अपने समकक्ष नहीं बनाना चाहते थे। यदि यह नियम स्वीकार किया जाय कि जो व्यक्ति जिस देश में रहे, जहाँ का वासी हो वह वहीं का सभ्य गिना जाय तो आज बहुत से झगड़े शान्त हो जांय। इस के बाद जो झगड़े हों वह राजनैतिक होंगे। उनके अन्दर सभ्यता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ऊंचे सिद्धान्तों का खून नहीं किया जायगा। अभी तक अमेरिका इस जातीयता के रूढ़िवाद से बचा हुआ था परन्तु अब धीरे २ वह भी इस में उलझ रहा है। यह समय की संक्रामक बीमारी है।

यह तो दूर देश की बात हुई। हम अपने देश का उदाहरण इस विषय में देकर अपने आपको और भी अधिक स्पष्ट करेंगे। युरोपियन विद्वानों के जातियों तथा सभ्यता सम्बन्धी अधूरे विश्लेषणों के वर्णन पढ़ कर भारत के बड़े२ विद्वान् तथा व्याख्याता, हिन्दुओं को सैमिटिक सभ्यता के आक्रमण से बचने की चेतावनी देते हैं, और मुसलमान-लोग मुसलमानों को अरब तथा सैमिटिक सभ्यता की रक्षा के लिये तय्यार करते हैं। इस प्रकार एक दूसरे पर अविश्वास प्रकट करते हैं। सैमिटिक आदि के विश्लेषण नाम मात्र के हैं इन में सत्य बहुत थोड़ा है। जो कुछ दिखाई देता है वह स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति का है। स्थानीय तथा भौगोलिक परिस्थिति के असर को स्थान तथा भौगोलिक प्रभाव जल्दी बदल देते हैं। भारत में रहने वाले-आर्य, शक हून तथा मुसलमान या अरब और अब अंग्रेज़ हज़ार कोशिशें करने पर भी यहां के भौगोलिक असर से नहीं बच सकते। यह भौगोलिक तथा परिस्थिति सम्बन्धी अवस्थाएँ ही नयी जातियों तथा नये समुदायों को पैदा करती हैं। भारतीय सभ्यता स्थिर चीज़ नहीं है। अनन्त समुद्र की तरह निरन्तर परिवर्तनशील है। परिवर्तनशील समुद्र परिवर्तित होता हुआ भी अपने गर्भ स्थित रत्न तथा बहुमूल्य तत्त्वों को धारण किए रहता है उसी प्रकार भारतीय सभ्यता तथा अन्य देशों की सभ्यताएँ सत्यतत्व को धारण करती हुई नए रूप बदलती हैं। यह सत्यतत्व प्रायः सब सभ्यताओं में समानरूप से पाए जाते हैं। निरन्तर होने वाले परिवर्तनों के कारण हम लोग इन तत्वों को भूल कर परिवर्तनों को ही सब कुछ समझ लेते हैं। तत्वदर्शी ऐतिहासिक ही इन तत्वों को देख सकते हैं। वही सभ्यताओं की व्यापक समानताओं को प्रकट कर सकते हैं। यदि हम इन विचारों को ध्यान में रखते हुए ऋषि दयानन्द के इस लक्षण को ध्यान से पढ़ें तो हमें मालूम होगा कि ऋषि दयानन्द कितने बड़े तत्व दर्शी ऐतिहासिक तथा दार्शनिक थे। उनके लेख का भाव यह है जो आर्यवर्त में रहता है वही आर्य है। ऋषि दयानन्द की दृष्टि से भारत में रहने वाले हिन्दु, मुसलमान, पारसी, युरोपियन जिन्होंने इसे अपना लिया है सब आर्य हैं। इसी व्यापक उद्देश्य को सामने रख कर ऋषि दयानन्द आर्य शब्द के व्यवहार पर जोर देते थे। ऋषि दयानन्द जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की रूढ़िवाद को तोड़ना चाहते थे उसी प्रकार वह भारत में, स्वदेश में एकता स्थापित करने के लिए इस रुढ़िवाद को तोड़ना चाहते थे। इसी लिए हम देखते हैं कि ऋषि दयानन्द जहाँ दूसरों के विचारों का खण्डन करते हैं वहाँ वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुराइयों का ही खंडन करते हैं। क्योंकि वह देखते हैं कि युरोपियन सभ्यता की बुराइयां केवल उसी सभ्यता की नहीं है। भारत में महाभारत काल में वाममार्ग काल में वह सब बुराइयां थीं। सभ्यताओं के कल्पित नाम ले कर, विशेष तरह के रूढिवाद का वे समर्थन नहीं करते। इसके विपरीत, मनुष्य मात्र को आर्य और अनार्य के व्यापक विभागों में बांटना चाहते हैं। जो व्यक्ति स्वतन्त्र विचार करना चाहता है उसे इस नाम रूप के अन्धकार से बचना चाहिए। जब तक हमारे सामने अथवा दूसरों के हृदयों में यह नाम रूप का अंधेर छाया रहेगा तब तक एक देश में रहते हुए भी हम एक दूसरे को म्लेच्छ, काफ़िर हिन्दु मुसलमान, हूंण, काला आदमी आदि नामों से पुकारते रहेंगे और पारस्परिक वैमनस्य को तूल दे कर देश तथा स्वदेश की प्राचीन कीर्ति में बट्टा लगाएंगे। प्राचीन लोगों ने आध्यात्मिक क्षेत्र में इस नाम रूप की अंधियारी को दूर कर ब्रह्म या स्वराज्य को पाया था। आज हमने व्यावहारिक संसार में इस नाम रूप की अंधियारी को छिन्न भिन्न कर, स्वतन्त्र-ब्रह्म तथा स्वराज्य को पाना है। जब तक हम आर्यावर्त निवासियों को एक आर्यनाम तथा भारतीय रूप में नहीं देखेंगे तब तक भारत में स्वाधीनता तथा विचार स्वातन्त्र्य का प्रसार नहीं हो सकता।

सम्पादकीय

हिन्दू और मुसलमान

जुलाई मास के माडर्न रिव्यू में प्रो० जदुनाथ सरकार ने 'दि एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम' के आधार पर लिखा है कि इन्डो-चायना के 'अनाम' प्रदेश में १२० लाख आदमी रहते हैं, जिन में से १५ लाख कम्बोडियन, १२ लाख लाओ, २ लाख चाम और मलय, १ हज़ार हिन्दु और ५० लाख जंगली हैं। जंगली लोग तो भूत-प्रेत की पूजा करते हैं परन्तु अनामी, कम्बोडियन आदि बुद्ध तथा कन्फूशियस के मत को मानने वाले हैं। 'चाम' लोगों में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने अपने पूर्वजों से अपना सम्बन्ध अभी तक नहीं तोड़ा और उनमें से कई मुसलमान हैं। मुसलमान 'चाम' अपने हिन्दू देश भाइयों को 'काफिर' शब्द से पुकारते हैं, परन्तु इस शब्द का प्रयोग वे घृणा से नहीं करते। मुसलमान-चाम शिया सम्प्रदाय के हैं। वे 'ओवलाह' (अल्लाह) की पूजा करते हैं। इस के साथ वे 'पो-देवता-थ्वोर' (ईश्वर-देवता) को पूजते हैं। इस के अतिरिक्त वे 'यो-ओवलाह तक-अला' पर दो अण्डे, एक प्याला चावल की शराब और तीन पान के पत्ते चढ़ाते हैं। यह शब्द 'अल्ला-ताला' का अपभ्रंश है जिसे उन्होंने शरीर धारी पर-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेश्वर के रूप में परिणत कर लिया है। वे हिन्दुओं की उमा-भगवती की 'यो-इनो-नोगर' तथा शिव की 'यो-यङ्गो-अमो' नाम से पूजा करते हैं, जिन में से पहली पृथ्वी की माता तथा दूसरा उस का पिता है। इन्हीं को वे सृष्टि के प्रवर्तक आदम और ईव का नाम देते हैं।

जहां अनाम के मुसल्मान—चामों ने हिन्दु देवताओं को अपने पूज्य देवताओं में स्थान दिया है वहां उस जगह के हिन्दु—चामों ने मुसल्मानी 'ला इला इल्लिल्ला मुहम्मद रसूलिल्ला' को अद्भुत तरीके से अपने देवताओं में स्थान दिया है। वे 'पो-ओवलाह' 'पो-रसूलक' और 'पो-ला तिल' की पूजा करते हैं जो उक्त वाक्य को तीन खण्डों में बांट लेने से बने हैं।

अनाम के मुसल्मान अपने धार्मिक गुरू को 'पो-ग्रु' कहते हैं जो 'गुरु' शब्द का अपभ्रंश है। 'ग्रु' के नीचे 'इमाम'—'ख़ातिब' और 'मुअज्ज़िन' आते हैं और उस के नीचे 'अचार'। यह 'आचार', 'आचार्य' का अपभ्रंश है। अनाम-देश में मस्जिद की देख-रेख करने वाले मुल्ला को सर्वत्र 'अचार' ही कहा जाता है। हिन्दुओं के धर्म गुरुओं को 'बशाई' कहते हैं। अनाम में 'अचार' और 'बशाई' बड़े प्रेम से रहते हैं और एक दूसरे के धार्मिक कृत्यों में सम्मिलित होकर सहयोग से धार्मिक उत्सवों को निबाहते हैं। वे परस्पर मेल में यहां तक बढ़े हुए हैं कि एक दूसरे के धार्मिक मनोभावों को दुःख न पहुंचाने के लिये हिन्दु सूअर का मांस नहीं खाते और मुसल्मान गौ का मांस नहीं खाते।

इसे कहते हैं धार्मिक-सहिष्णुता! अनाम की यह अवस्था कई शताब्दियों से है और इधर भारत वर्ष में यह कई शताब्दियों के बाद आने वाला स्वप्न बनी हुई है। मुसल्मानों में तो असहिष्णुता का अँश इतना बढ़ गया है कि प्रो० जदुनाथ के उक्त लेख को पढ़ कर 'इस्लामिक वर्ल्ड' के एक लेखक का खून खौल उठा है। जून के अंक में 'उठो' शीर्षक देकर उक्त पत्र में एक लेखक ने अनाम के मुसल्मानों की अवस्था पर दुःख के आँसू बहाए हैं और लिखा है:—

"अनाम के मुसल्मानों की तरफ किसी का ध्यान न होने के कारण उन की गिरावट पर्ले सिरे तक पहुंच गई है। क्या भारत के मुसल्मान इस समय भी नहीं चेतेंगे? परमात्मा ही जानता है कि 'चाम' लोगों की तरह और कितने मुसल्मान परिस्थिति के विष-मय प्रभाव में आकर गिर गये हैं क्योंकि उन के शिक्षित भाइयों ने उन की तरफ़ आंख उठा कर नहीं देखा! क्या कोई अञ्जुमन 'अनामी' लोगों में काम करने के लिए अपने प्रचारकों को नहीं भेज सकती? 'अनामी' लोगों की अवस्था 'मलकानों' से भी शोकजनक है और यदि इस कार्य में कुछ भी देरी हुई तो उस दूरवर्ती प्रान्त में इस्लाम के जो निशान दीख पड़ते हैं वे भी आंखों से ओझल हो जायंगे।"

क्या मुस्लिम-पत्र के इस लेखक महोदय के कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि वे अनामी हिन्दुओं और मुसल्मानों का पारस्परिक शान्तिमय व्यवहार पसन्द नहीं करते, उन्हें मुसमानों का गोहत्या छोड़ देना अखरता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है? सहयोगी 'माडर्न-रिव्यू' ने ठीक लिखा है कि चाम के मुसलमानों का सुधार करने की अपेक्षा 'इस्लामिक वर्ल्ड' के लेखक का सुधार करना अधिक आवश्यक है। मुसलमानों को अपने पड़ौसियों के साथ शान्ति पूर्वक रहना सीखना चाहिये परन्तु भारतवर्ष के कुछ बिगड़े दिमाग़ के मुसलमान जीवन के इस सरल नियम पर चलना नहीं चाहते। उन्हें समझ लेना चाहिये कि यदि वे अपने विधर्मी पड़ौसियों के साथ शान्ति पूर्वक रहना सीखने के लिये तय्यार नहीं हैं तो समय की चोट उन्हें यह पाठ पढ़ा कर छोड़ेगी और तब उन का झीखना किसी काम न आयगा।

साहित्य-वाटिका

कायाकल्प—लेखक श्री प्रेमचन्द। प्रकाशक भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, काशी। पृष्ठ संख्या ६२२। सजिल्द का मूल्य साढ़े तीन रुपया।

'कायाकल्प' श्रीयुत् प्रेमचन्द का नवीन उपन्यास है। इस में प्रेमचन्द जी के आदर्श—समाज की कल्पना के स्वप्न जगह २ दिखाई देते हैं। रंगभूमि की तरह इस उपन्यास में भी सेवा के मन्त्र को फूंका गया है। अत्याचारों के बोझ को प्रजा किस प्रकार सहती है, और फिर किस प्रकार वह फूट पड़ती है, इस का जीता-जागता चित्र खींचने में प्रेमचन्द जी की लेखिनी में जादू भरा हुआ है। इस प्रकार के अनेक चित्र 'कायाकल्प' में दिखाई देते हैं। देश की वर्तमान परिस्थिति का भी अच्छा नक्शा खींचा गया है। एक जगह आप लिखते हैं—'कहीं बनिये ने डण्डी मार दी और मुसलमानों ने उस की दुकान पर धावा कर दिया, कहीं किसी जुलाहे ने किसी हिन्दु का घड़ा छू लिया और मुहल्ले में फ़ौजदारी हो गई। एक मुहल्ले में मोहन ने रहीम का कंकौआ लूट लिया और इसी बात पर मुहल्ले भर के हिन्दुओं के घर लुट गये, दूसरे मुहल्ले में दो कुत्तों की लड़ाई पर सैंकड़ों आदमी घायल हुए, क्योंकि एक सोहन का कुत्ता था, दूसरा सईद का।' आज कल की अवस्था का क्या ही अच्छा ख़ाका खींचा है! हिन्दु-मुसलमानों को शान्त करने में चक्रधर ने जिस प्रकार धैर्य से काम लिया इसी प्रकार यदि देश के नेता किया करें तो इस समस्या की जटिलता इतनी विषम न रहे।

प्रेमचन्द जी के अन्य उपन्यासों की अपेक्षा इस उपन्यास में एक विशेषता है। दूसरों में जहां सेवाभोव आदि आदर्शों का चित्र है वहां इस में आध्यात्मिक तत्व (mysticism) का भी प्रवेश किया गया है। कर्मों के अन्धकारावृत मार्ग की जगह २ झाँकियां दिखलाई गई हैं। इस जन्म के पीछे की अवस्था तक हम नहीं पहुंच सकते परन्तु प्रेमचन्द जी ने अपनी कल्पना शक्ति की सहायता से महेन्द्र और देवप्रिया का 'कायाकल्प' करके उन्हें शंखधर और कमला बना दिया है। जिस रूप में पाठ उपन्यास के प्रारम्भ में प्रवेश करते हैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस से अत्यन्त परिवर्तित रूप में वे अन्त में दिखाई देते हैं—यह भी एक प्रकार का 'कायाकल्प' ही है। उपन्यास में आध्यात्मिक-तत्व का प्रवेश प्रेमचन्द जी ने प्रथम बार ही किया है परन्तु इस से उपन्यास की रोचकता घटने के स्थान में बढ़ ही गई है और हमें आशा है कि प्रेमचन्द जी इसके बाद जिन उपन्यासों में अध्यात्मिक तत्व का प्रवेश करेंगे वे इस से ज्यादह रोचक होंगे। हम प्रेमचन्द जी के इस उपन्यास का हार्दिक स्वागत करते हैं।

प्रेम-प्रतिमा—लेखक श्री प्रेमचन्द। प्रकाशक भार्गव पुस्तकालय, बनारस। पृष्ठ सख्या ३३३। मूल्य दो रुपया। यह प्रेमचन्द जी की १९ गल्पों का, जो हिन्दी की भिन्न २ पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं, संग्रह है। ये प्रेमचन्द जी की चुनी २ गल्पें हैं और साहित्य-प्रेमियों के संग्रह करने के योग्य हैं। पुस्तक सजिल्द है और छपाई सुन्दर तथा काग़ज़ बढ़िया है।

प्रेमद्वादशी—लेखक श्रीयुत् प्रेमचन्द। प्रकाशक-गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ। पृष्ठ संख्या २०६। मूल्य सवा रुपया। गंगा पुस्तक माला ने उत्तम साहित्य को सुन्दर टाईप तथा अच्छे काग़ज़ पर छपवा कर हिन्दी की अमूल्य सेवा की है। प्रेमचन्द जी की १२ मनोहर कहानियों का 'प्रेम-द्वादशी' एक मनोहर गुटका है। इस संग्रह की भूमिका में श्रीयुत् प्रेमचन्द लिखते हैं, 'ऐसी कहानी, जिस में जीवन के किसी अङ्ग पर प्रकाश न पड़ता हो, जो सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना न करती हो, जो मनुष्य में सद्भावों को दृढ़ न करे या जो मनुष्य में कुतूहल का भाव जाग्रत् न करे, कहानी नहीं है।' ये शब्द प्रेमचन्द जी की कहानियों के इस संग्रह पर अक्षरशः चरितार्थ होते हैं। 'प्रेम-प्रतिमा' तथा 'प्रेम-द्वादशी' की कई कहानियां एक ही हैं।

निबन्ध-निचय— लेखक श्रीयुत् जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी। प्रकाशक गंगापुस्तकमाला—लखनऊ। पृ० सं० २०८। मूल्य सवा रुपया। सुन्दर भाषा में, हिन्दी-सम्बन्धी-सुन्दर विचारों का, सुन्दर टाइप में, सुन्दर काग़ज़ पर छपा हुआ यह सुन्दर संग्रह है। इस में चतुर्वेदी जी के सात निबन्ध हैं जिन्हें हिन्दी-साहित्य में सुरक्षित रखने के लिए गंगा पुस्तक माला ने प्रकाशित कर दिया है।

हमें गंगा-पुस्तक-माला से निम्नलिखित पुस्तकें भी प्राप्त हुई हैं जो बच्चों के पढ़ने के काम की हैं और जिन के लिए हम उक्त पुस्तक—माला के कृतज्ञ हैं:—

१. इतिहास की कहानियां
२. खिलवाड़
३. लड़कियों का खेल
४. वनिता विलास

हिन्दु-पञ्च का विजयांक—सम्पादक पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा। 'माधुरी' के आकार का। मूल्य ६ आना। मिलने का पता—हिन्दू-पञ्चकार्यालय, बर्म्मन प्रेस, कलकत्ता। 'हिन्दूपञ्च' साप्ताहिक पत्र है और उसका वार्षिक मूल्य केवल २) है, इस लिए इस के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ते होने में कोई सन्देह नहीं। इस विशेषाङ्क में हिन्दू संगठन आदि पर उत्तमोत्तम लेख हैं और अनेक चित्र भी दिये गये हैं। अंक संग्रह के योग्य है।

दैनिक देशबन्धु— यह दैनिक पत्र खण्डवा (सी. पी) से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ है। यह स्वराज्य दल की नीति का पोषक है। वार्षिक मूल्य दस रुपया मात्र।

गुरुकुल समाचार

ऋतु— गुरुकुल में मौसम बदल रहा है। दिन में गर्मी होती है परन्तु रात को काफ़ी शीत पड़ने लगा है इस लिए कुल में मलेरिये का प्रकोप होना स्वाभाविक है। मायापुर में छोटे ब्रह्मचारियों पर मलेरिये का आक्रमण विशेष प्रतीत होता है। सर्दी के कारण गंगा का प्रवाह थोड़ा ही रह गया है। वर्षा ऋतु में जो नदी गुरुकुल के लिये भय का कारण बनती है वही आजकल छोटा नाला रह गई है। बंगले के सामने की धार और काङ्गड़ी का नाला दोनों इस वर्ष जाड़े भर चलते रहेंगे इस लिये गुरुकुल एक टापू बना रहेगा।

पढ़ाई— दो महीने का सत्रान्तावकाश समाप्त हो गया है। महाविद्यालय के ब्रह्मचारी तथा उपाध्याय दोनों ही लौट आये हैं और नियम पूर्वक पाठ आरम्भ हो गये हैं।

कुल में विजयादशमी — विजया दशमी का त्यौहार कुल का विशेष त्यौहार है, इसे कुलवासी बड़े प्रेम से मनाते हैं, खेलें तथा सभा की जाती है। इस वर्ष विजया का उत्सव छुट्टियों के अंत में पड़ा। ब्रह्मचारियों के खेल हुए सब खेलों में वालीवाल का खेल विशेष आनन्ददायक रहा। सायंकाल को पंडित चन्द्रमणि जी के सभापतित्व में एक सभा हुई, ब्रह्मचारियों तथा अन्य सज्जनों के रामचरित्र पर व्याख्यान हुए। सभा के बाद एक सहभोज होकर विजया का त्यौहार धूमधाम से समाप्त हुआ।

यात्री— गुरुकुल के प्रेमी प्रोफेसर साँझीराम जी अकाल कालिज में काम करते हैं। वहाँ से अवकाश लेकर वे पिछले दिनों कुल में आये। वे यहाँ सात दिन रहे, उनके सत्संग से कुलवासियों ने अच्छा लाभ उठाया। प्रोफेसर जी अलङ्कार से विशेष प्रेम रखते हैं उन्होंने अलङ्कार के लिये समय २ पर लेख देने का बचन दिया है। पंजाब आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बदरीदास जी भी अन्तरंग सभा के लिये गुरुकुल आये थे और एक दिन रह कर चले गये।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा कुरुक्षेत्र में भी छुट्टियाँ समाप्त हो गई हैं और पाठ प्रारम्भ हो गये हैं।

कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ— का वार्षिकोत्सव इस बार दिवाली के दिनों में न होकर बड़े दिनों की छुट्टियों में होगा। वहाँ छुट्टियों में ब्रह्मचारिणियों को मलेरिया के कारण काफ़ी तकलीफ़ उठानी पड़ी अब आराम है। गुरुकुल मुलतान के भी सब समाचार भले हैं।

गुरुकुल-रजत-जयन्ती

गुरुकुल की रजत-जयन्ती का कार्य अच्छी उन्नति कर रहा है। जयन्ती विषयक समाचार अलंकार के ग्राहकों को समय २ पर महीने मिलते रहेंगे। इन दो महीनों में गुरुकुल के डेपुटेशन भिन्न २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानों पर भेजे गये थे उनका समाचार दिया जाता है—

बिहार— के दानापुर, झरिया, जमशेदपुर स्थानों में पंडित धर्मदत्त जी विद्यालंकार तथा प्रोफेसर देवराज जी सेठी गये थे। आपको इन स्थानों में धन संग्रह के कार्य में अच्छी सफलता मिली। जमशेदपुर किसी कारण कार्य न हो सका। झरिये से ८ हजार रुपया प्राप्त हुआ, दानापुर से भी दो हज़ार रुपया प्राप्त हुआ।

ग्वालियर तथा मध्यभारत— प्रोफेसर गोपाल जी तथा प्रोफेसर नन्दलाल जी भेजे गये थे। ग्वालियर पहुंचते ही दोनों को ज्वर ने आ घेरा। महीने भर बीमारी का दुःख भोग कर दोनों को वापिस आना पड़ा। कुल राशि १०००) प्राप्त हुई।

डेरागाज़ीखाँ तथा मुजफ्फ़रगढ़ में— प्रोफेसर सत्यकेतु विद्यालंकार तथा पंडित चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार गये थे। छोटे २ स्थानों से भी आप लोग १॥ हज़ार नकद लाने में समर्थ हुए, २ हज़ार के वायदे इस से अलग हैं।

महाविद्यालय के ब्रह्मचारी भी इस वार घरों के आसपास धन एकत्र करते रहे। ब्रह्मचारियों ने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्मारक में एक भवन (Hall) बनाने के अर्थ दस हजार रुपया एकत्र करने का प्रण किया था जिसे एकत्र करने में वे सफल हुए हैं। ब्रह्मचारियों का उत्साह तथा कार्य प्रशंसनीय है। भीमसेन, कृष्णदत्त, देवनाथ, सिंहेश्वर तथा श्वेतकेतु आदि ब्रह्मचारियों का कार्य बहुत ही उत्तम तथा अनुकरणीय रहा है।

क्वेटा—प्रो० विश्वनाथजी विद्यालंकार तथा प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गये थे। आर्य समाज का उत्सव होने पर भी उनको अच्छी सफलता मिली।

ऊपर जयन्ती के डेपुटेशनों का कार्य दिया गया है। आजकल कौंसिलों के चुनाव की धूम है। बड़े२ नेता ब्रिटिश सरकार से दिये गये खिलौने के लिये जीजान से आपस में लड़ रहे हैं, उन का सारा समय तथा धन इस खिलौने की प्राप्ति के लिये स्वाहा हो रहा है। जनता को भी चुनाव दंगल से फुरसत नहीं है इस लिये गुरुकुल के डैपुटेशनों को पूरी सफलता नहीं मिल सकी। नवम्बरतक चुनाव समाप्त हो जायेंगे। गुरुकुल के डेपुटेशन भारत के भिन्न २ प्रान्तों में उसी समय भेजे जायेंगे। आशा है भारतीय जनता भारत के सब से बड़े राष्ट्रीयविश्वविद्यालय गुरुकुल की पूर्णरूपेण सहायता करेगी ताकि गुरुकुल आर्थिक चिन्ता से मुक्त हो कर अपने उद्देश्य को जो धनाभाव के कारण अभी तक अधूरा है पूर्ण करने में समर्थ हो सके।

लाहौर में— गुरुकुल रजत जयंती कार्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर में खोल दिया गया है, इस से लाहौर वासियों को जयन्ती प्रचार में अच्छी सफलता मिल सकेगी। यदि इसी प्रकार अन्य स्थानों के गुरुकुल प्रेमी स्थानिक जयन्ती कार्यालय खोल लें तो जहाँ उनको भी कार्य में सुभीता रहेगा वहां मुख्य कार्यालय का काम भी हल्का हो जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए, अमूल्य ग्रन्थ-रत्न संपूर्ण छप गया

वेद के प्रेमी अवश्य पढ़ें!

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न
वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी का बनाया

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़ें। यह यास्क मुनि के प्रसिद्ध 'निरुक्त' का हिन्दी में सरल, सरस तथा सुबोध भाष्य है जो कि दो भागों में समाप्त हुआ है और डाक-व्यय रहित कीमत केवल ७) रुपया है। अनेक सूचीपत्र देकर ग्रन्थ को बहुत अधिक उपादेय बनाया गया है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा एम. ए. पी. एच. डी वाइस-चान्सरल इलाहाबाद युनिवर्सिटी, प्रिन्सिपल गवर्नमैण्ट कालेज काशी, प्रिन्सिपल हिन्दू विश्वविद्यालय काशी, श्री रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० घासीराम जी एम. ए. प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त, श्री सातवलेकर जी संपादक वैदिक धर्म, श्री मा० आत्माराम जी राज्यरत्न बड़ोदा, भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एलएल. बी. वाइस चान्सरल तिलक-विद्यापीठ पूना, इत्यादि प्रसिद्ध महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, और सभी ने वेदप्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। महाभारत में लिखा है कि निरुक्त शास्त्र के प्रचार के बिना वैदिक कर्म-काण्ड लुप्त हो गया था। यदि आप वेद का सच्चे अर्थों में प्रचार करना चाहते हैं, तो इस निरुक्तभाष्य को अवश्य पढ़िए। वेदार्थ करने की कुञ्जी 'निरुक्त' को प्राप्त किए बिना वेद के खज़ाने को पाना केवल स्वप्न देखना है।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्ता 'अलंकार'
डा० गुरुकुल कांगड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य पर अंग्रेज़ी में अपूर्व पुस्तक

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस पुस्तक की भूमिका श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखी है। इस में ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले विविध विषयों पर वैज्ञानिक रीति से भाव-पूर्ण १२ अध्यायों में विचार किया गया है। १६ वर्ष से ऊपर की आयु वाले हरेक अंग्रेज़ी जानने वाले के हाथ में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। २२५ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुनहरी जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ३) । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम हो जायगा कि इस विषय पर ऐसी योग्यता से लिखी हुई पुस्तक आप ने पहले नहीं पढ़ी होगी। खुद पढ़ो और अपने मित्रों को पढ़ने को दो।

'हैण्ड-ट्रेनर'

जिन्हें सुलेख लिखना न आता हो उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू का सुलेख सिखाने का अत्यन्त सरल नया तरीका आविष्कृत हुआ है, इसका नाम 'हैण्ड ट्रेनर' है। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हरेक भाषा के सेट की कीमत अलग अलग दो रुपया।

'बिजली के जेबी लैम्प'

बिजली के जेबी लैम्प पूरे तैयार तीन किस्म के हमारे पास हैं। अत्युत्तम ३); उत्तम २॥); साधारण २)। पहली बैटरी ख़र्च होने पर नई की ज़रूरत हुआ करती है, उसे हम १।) में भेज सकते हैं। डाक का ख़र्चा हम अपना करेंगे।

'किटसन लैम्प'

मुकम्मिल, मय सोलह इञ्च टांकी और सिंगल पम्प का किटसन लैम्प ३०); वही डबल पम्प सहित ३५)। कारबाईड दीवालगीर लैम्प २)।

हम उचित कमीशन मिलने पर बम्बई से मार्केट के भाव पर आप की चीजें ख़रीद कर भेज सकते हैं।

पता—दी शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी, कारनक रोड, बम्बई (२)

तार का पता	पोस्ट बौक्स नं०	टैलीफ़ोन नं०
Linkclip-Bombay	२१३५	२१४८०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदाक़त खुद व खुद कर देती है शोहरत ज़माने में।
मुनाफ़ा इस क़दर रखिये नमक जितना हो खाने में॥

(१) गंगाविष्णु नैनामृताञ्जनः—यह सफ़ेद सुरमा शिरीष की जड़ में ६ महीने रख कर तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध करके १ साल की लगातार मेहनत के पश्चात् तय्यार किया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह सुरमा आंखों की निम्न बीमारियों में अकसीर साबित हो चुका है—

नेत्रों में ख़ारिश का उठना, रतौंधी, दूर अथवा समीप की वस्तु का साफ़ २ नज़र न आना, धूप में जाते ही आंखों का गरमी से चौंधिया जाना, देर तक किसी वस्तु अथवा पुस्तक की ओर नज़र का न टिकना, आंखों से पानी का गिरना, नज़ले की वजह से आंखों की कमज़ोरी और विशेष करके आजकल के नवयुवकों तथा वृद्धों के लिये यह सुरमा अकसीर साबित हो चुका है। कीमत २) तोला रखी गई है। ३ माशा ।।), ६ माशा १), १ तोला २)

(२) कुक्करों का शर्तिया इलाजः—एक आश्चर्य जनक औषधि। यह कोई शास्त्रीय नुस्खा नहीं है। परन्तु किसी अनुभवी वृद्ध सन्यासी का जादू है। देखने में बिलकुल मामूली खाली बत्तियें नज़र आती हैं परन्तु इसके ४, ५ दिन के इस्तेमाल से ही आपको निहायत फ़ायदेमन्द साबित होंगी—

यह बत्तियाँ आंखों के पुराने से पुराने रोंहें, सुर्खी तथा पड़वाल और पानी के झर २ गिरने के लिये अकसीर है। फ़ायदे इसके अन्य भी हैं परन्तु आप इसकी एक बार परीक्षा करके हमेशा के लिये इसको अपने पास रखना चाहेंगे। सेवन विधि दवाई के साथ भेजी जाती है।

(३) मस्तिष्क पौष्टिकः—विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, क्लर्क और व्याख्याता आदि जिन्हें काम करके काफ़ी देर के लिये आराम की ज़रूरत पड़ती है, उनकी दिमाग़ी ताकत को स्थिर रखनेके लिये यह दवाई अद्वितीय है। कम से कम १५ दिन या १ महीना इसके सेवन करने से आश्चर्य जनक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इससे आपअपने काम को दिल से कर सकेंगे तथा दिमाग़ी ताकत को ज्यादा नहीं खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिये अमृत है। केवल एक बार परीक्षा की ज़रूरत है। १ शीशी १५ दिन के लिये २)

(४) केशाञ्जन खिजाबः—जहां अन्य खिजाबों के लगाने से काली चमड़ी होने के सिवाय बालों की जड़ें कमज़ोर होकर झड़ने लग जाती हैं, वहां इस के सेवन से बाल काफ़ी अरसेके लिये काले तथा ख़ास चमकीले मालूम देते हैं। यह दो चीज़े हैं--एक खुश्क, दूसरी तर। दोनोंको उचित मात्रामें मिला कर ब्रशसे इस्तेमाल करने से बालोंमें ख़ास चमक आती है। १ शीशी १।)

पता—पं० विष्णुदत्त विद्यालंकार, अलंकार आयुर्वेदिक फार्मेसी, कूचा लालूमल, लुधियाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे दाम में !!!

१. महावीर गेरीवाल्डी—ले०श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। आधा मूल्य ।=)

मौडर्न रिव्यू—गेरीवाल्डी का जीवन केवल व्यक्ति का जीवन नहीं परन्तु स्वाधीनता का जीता जागता इतिहास है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त रोचक है—पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी है। हम इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करते हैं।

माधुरी—विशेष महापुरुषों के जीवन चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षाप्रद होते हैं। यह जीवन चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है। भाषा रोचक और मर्मस्पर्शिनी है। नवयुवकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए

श्री शारदा—इसकी भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इस में उपन्यास का सा आनन्द आता है। मनोरञ्जन के साथ २ उपदेश की भी मात्रा रक्खी है। विषय का क्रम भी यथोचित रीति से जमाया गया है। पुस्तक में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख है जो महत्वशालिनी हैं, जिनका ज्ञान सर्वसाधारण को अपेक्षित है। यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी, विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिन्दी साहित्य में अनूठी है। हमारा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें। पुस्तक में इटली के आठ महान् व्यक्तियों के चित्र भी हैं।

२. प्राचीन भारत में स्वराज्य लेखक—श्री पं० धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार—आधा मूल्य ।।।)

प्रो० विधुभूषण दत्त जी M.A.—हमारे आर्य प्रजासत्तात्मक तथा प्रतिनिधिसत्तात्मक शासन प्रणालियों से अपरिचित न थे, प्रजा ही राजा को चुनती थी इत्यादि बातों को सिद्ध करने के लिये प्रमाणों और उदाहरणों को इकट्ठा करने में लेखक ने सराहनीय परिश्रम किया है। पुस्तक की लेखनशैली मनोरञ्जक है। विचार करने के लिये सभी को इस पुस्तक में बहुत सामग्री प्राप्त हो सकती है।

३. वैदिक विवाह का आदर्श—ले० श्री पं० नन्दकिशोर जी विद्यालंकार—आधा मूल्य ।-)

बाबू भगवान दास जी काशी—विवाह क्या है, किस से, कैसे, किस लिए और कब विवाह करना चाहिए—यह पुस्तक में बतलाया गया है। वैदिक विवाह पद्धति अन्य विवाह पद्धतियों से क्यों श्रेष्ठ है, यह अच्छी तरह बतलाया गया है। इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए।

४. सन्तजीवनी—ले० स्व० श्री गिरिजा कुमार घोष—भारत के प्रसिद्ध महात्माओं-कबीरदास, गुरुनानक, गोस्वामी तुलसीदास आदि के विस्तृत जीवन चरित बड़ी मनोरंजकता से लिखे गए हैं। आधा मूल्य ।)

५. बिखरे हुए फूल—यह पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की बिल्कुल नए ढंग का, नए विषयों पर अद्भुत कविताओं का संग्रह है। आधा मूल्य ≡)

मैनेजर—साहित्यपरिषद् पुस्तक भण्डार; गुरुकुल काङ्गड़ी (हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी के भीमसेनी सुरमे की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुंधला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत ५) पांच रुपया फ़ी तोला

सुधाधारा—इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं, जिससे रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों खरीदें? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाजार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौंता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है।

जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने ।)

नोटः—अन्य दवाइयों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये।

पताः—गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी देहली नं० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिंधु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २तक ।≈)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा.

बिना जलन और तकलीफ के दादको २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च, १ से २ तक ।≈), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवाको मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।)

पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिये, मुफ्त मिलेगा।

यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

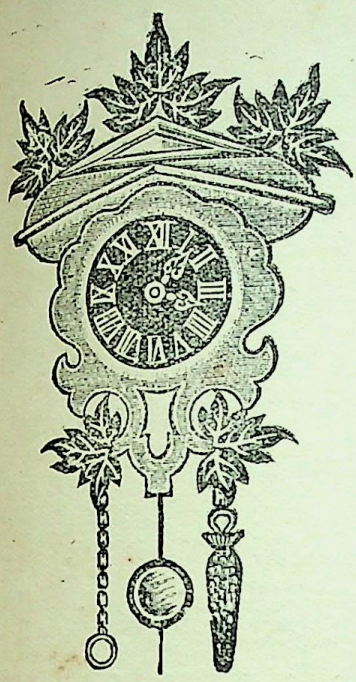

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेज दो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

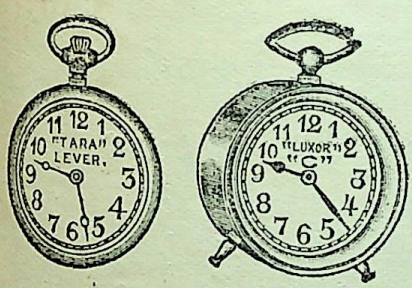

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिये है। जल्दी मंगवाये, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

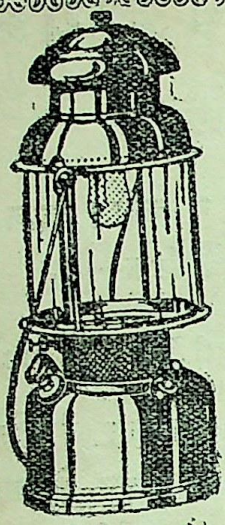

रोशनी

का

भण्डार

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टोर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिये। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती है। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटेन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती। इसमें केरोसीन आयल या पैट्रौल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मैन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का बजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इँच, तथा चिमनी अबरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३॥) फ़ी दर्जन

दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्जन

प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ६) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता:—

रविवर्मा स्टील वर्कस अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

रूह शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

गृहस्थियो! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो!

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में **"कामधेनु"** सेवन कराइये। मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़्लूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

आविष्कर्ता---भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

मंगाने का पता---भद्रसेन गुप्ता नया बाज़ार देहली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

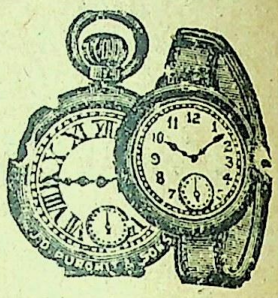

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चोतला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥) १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की

चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पताः—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A ; 1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

मार्गशीर्ष १९८३ नवम्बर १९२६

वर्ष ३] [अङ्क ६

मुख्य संपादक

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ से
१, गान में विलीन (कविता) श्री सत्यकाम विद्यालंकार	१६१
२. परमेश्वर और उसका स्वरूप—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार	१६२
३, साम्राज्य समस्या—श्री कृष्णचन्द्र जी विद्यालंकार	१६९
४, मागधी (कविता)— श्री धर्मदत्त जी विद्यालंकार	१७५
५, विषम पाठ—श्री गुप्त विद्यालंकार	१७६
६, गुबारा (कविता)—श्री वागीश्वर जी विद्यालंकर	१८६
७, महर्षिकृत अष्टाध्यायी भाष्य—श्री जयदेव जी विद्यालंकार	१८४
८, साहित्यवाटिका	१८९
९, गुरुकुल समाचार	१९०
१०, सूचना—रजन्त जयन्ती	१९२

ग्राहकों से निवेदन

१. अलंकार पत्र प्रत्येक देशी मास के प्रथम सप्ताह में ग्राहकों के पास पहुंच जावेगा।

२. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे तो पहले डाकघर से पूछना चाहिये यदि पता न चले तो डाक-घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्ता के पास भेज देना चाहिये। यह सूचना देशी मास के तृतीय सप्ताह तक अवश्यमेव पहुंच जानी चाहिये। अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य न दी जावेगी।

३. पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य देनी चाहिये अन्यथा उत्तर न दिये जाने के हम दोषी न होंगे।

४. पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड या टिकट साथ भेजना चाहिये।

५. पत्र—व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता पूरा और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये।

६. भावी ग्राहकों को चाहिये कि वे रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहकों को और हमें, दोनों को कष्ट होता है। पैसे लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है।

७. नमूने का अंक बिना मूल्य किसी को न भेजा जावेगा।

८. प्रबन्ध सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी (जि० बिजनौर) के पते से करना चाहिये।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क ६] मास, मार्गशीर्ष [पूर्ण संख्या ३०

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

गान में विलीन

(श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार)

मस्त हुआ गाने में तेरे, तू गाये जा इस ही स्वर में।
छिपे हुये हैं, गान सहस्रों-
तेरी लहर लहर में॥ १॥
सुलाये जा जीवन उन्माद, जगाये जा चिरसुप्त विषाद।
भरी हुई है गहन वेदना
तेरी इस कल कल में॥ २॥
मेरे सुख दुख भूत भविष्यत्, जग का यह सारा विस्तार।
तेरे एक बिन्दु भर जल में,
धुलता सब पल भर में॥ ३॥
शेष रहे इन व्यथा भरे-गानों का कम्पनमात्र विभो।
मैं विलीन हो रहूँ सदा बस
उस ही अजर अमर में॥ ४॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर का स्वरूप

संदेहवाद तथा अज्ञेयवाद

२

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

हमने अभी देखलिया कि नास्तिकवादने संदेह के लिये जगह खाली कर दी। संदेहने दो पृथक् २ रूपधारण किए—'संदेहवाद' (Scepticism) तथा [Agnosticism] 'अज्ञेयवाद'। संदेहवाद का मुख्य प्रवर्त्तक ह्यूम कहा जा सकता है, भारत में जैनियों का 'स्याद्वाद' † इसी का रूपांतर है। संदेहवाद में आत्म-व्याघात के अंश मौजूद हैं, इसलिये यह ठहर नहीं सकता। संदेह में तो संदेह होता नहीं, वह तो निश्चित है। फिर संदेहवाद कहाँ रहा? इसी बात को वेदांत में जैनियों के स्याद्वाद का खंडन करते हुए 'नैकस्मिन्नसम्भवात्' इस सूत्र से प्रकट किया है।

आधुनिक काल में संदेहवाद का विचार अज्ञेयवाद (Agnosticism) के रूप में प्रकट हुआ, और प्रोफेसर हक्सले ने अपने को नास्तिक कहलाने से बचाने के लिये इस शब्द का निर्माण किया। अपनी पुस्तक 'मैथड ऐंड रिज़ल्ट' * में वह एकजगह लिखते हैं कि मुझे निर्बल शक्ति में सृष्टि की अंतिम सत्ता तक पहुंच पाना असंभव प्रतीत होता है। परमात्मा के गुणों की व्याख्या

---

† वेदांत० (२, २, ३३) "सर्वत्र चेमं सप्तभङ्गीन्यायमवतारयन्ति। स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यश्च, स्यान्नास्ति चावक्तव्यश्च, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यश्चेति।...नह्येकस्मिन्धर्मिणि युगपत्सदसत्वादिविरुद्धधर्मसमावेशः सम्भवति शीतोष्णवत्। य एते सप्त पदार्था निर्धारिता एतावन्त एवंरूपाश्चेति ते तथैव वा स्युर्नैव वा तथा स्युः।"

* "The problem of the ultimate cause of existance seems to me hopelessly out of reach of my poor powers, Of all the senseless babble I have ever had occassion to read, the demonstrations of these philosophers, who undertake to tell us all about the nature of God, would be the worst, if they were not surpassed by the still greater absurdities of the philosophers, who try to prove that there is no God." Method and Results, page 245.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले मुझे बेवकूफ मालूम पड़ते हैं, और उनसे बढ़कर मूर्ख वे, जो उस की सत्ता के खंडन करने का दम भरते हैं। हक्सले का कथन था ‡ कि प्रकृति तथा परमात्मा, दोनों 'हौआ' हैं। इन के पीछे भागने से मनुष्य का कुछ नहीं बन सकता। जब मशीन † को चलता हुआ पाकर, उसमें काम करने से हमें फुर्सत नहीं, तब उसकी रचना आदि विकट प्रश्नों को सोचने में समय क्यों खोया जाय ?

परंतु हक्सले का यह विचार ठीक नहीं। मनुष्य की रचना इस प्रकार की नहीं है कि वह अंतिम सत्ताओं पर विचार करना ही छोड़ दे। ऐसा मान लेना मानव प्रकृति से अनभिज्ञता प्रकट करना है। मनुष्य जब तक मनुष्य है, तब तक वह अन्य बातों के साथ इन पर भी विचार करता ही रहेगा। और किसी २ समय तो अन्य सब कुछ छोड़ कर इन्हीं पर बड़ी प्रबलता से विचार करेगा। प्रो० हक्सले मनुष्य को मशीन का पुर्ज़ा बना देना चाहते हैं। किन्तु मनुष्य की रचना इस भाव के विरुद्ध है। मनुष्य इन पर विचार करेगा, विचार अंततक संदिग्ध अवस्था में ही रहेगा, इस बात को मानने के लिये भी मनुष्य को तैयार नहीं किया जा सकता। विचार का अभिप्राय निश्चय पर पहुंचना है, संदेह में पड़े रहना ही नहीं। अज्ञेयवाद ही यदि संसार की समस्याओं का अंतिम उत्तर होता, तो मानव-समाज कभी का आत्मघात कर इस समस्या को हल कर चुका होता। इसीलिये शॉपेनहार आदि अज्ञेयवादियों ने आत्मघात में कोई दोष नहीं देखा। कई लोग भूल से उपनिषदों को अज्ञेयवाद का प्रतिपादक समझते हैं। बुद्ध को अज्ञेयवादी कहा जासकता है, यद्यपि बहुतों की उसके विषय में यह सम्मति नहीं है। परंतु उपनिषदों को अज्ञेयवाद का प्रतिपादक कहना बड़ी भारी भूल है। उनमें स्पष्ट लिखा है— "इह चेदवेदीदथ

---

† "For what after all do we know of this terrible 'matter' except as a name for the unknown and hypothetical cause of states of our consciousness....."

‡ "Why trouble oneself about matters, which are out of reach, when the working of the mechanism itself, which is of infinite practical importance, affords scope for all our opportunities." Huxley's Critiques and Addresses, page 307.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यमस्ति न चेदवेदीन्महती विनष्टिः" उसे न जानने से तो नाश-ही नाश है *!

जिस प्रकार नास्तिकवाद का ह्रास हुआ, संदेहवाद नष्ट हो गया, उसी प्रकार अब योरप से अज्ञेयवाद भी लुप्त होता चला जा रहा है। 'इनसाइक्लोपीडिया आफ् रिलिजन एंड एथिक्स' में अज्ञेयवाद पर लिखते हुए स्पष्ट कहा है कि आधुनिक दार्शनिक विचारों का झुकाव अज्ञेयवाद को पीछे छोड़ जाने की ओर है। †

आस्तिकवाद

३

१ परमात्मा की सिद्धि

हमने देख लिया कि नास्तिकवाद, संदेहवाद तथा अज्ञेयवाद हमें संतोष नहीं दे सकते। अब प्रश्न होता है कि ऐसी अवस्था में सृष्टि की उत्पत्ति कैसे समझी जाय? हमारा विचार है कि आस्तिकवाद ही इस विकट समस्या का सबसे बढ़िया समाधान है। ईश्वर की सत्ता निम्नलिखित युक्तियों से सिद्ध की जा सकती है—

(क) जगत्कार्यत्ववाद (Cosmological Argument)— मीमांसकों मानते हैं कि संसार का स्थूल रूप अनादि है। परन्तु विज्ञान से सिद्ध हो चुका है कि प्रकृति का यह स्थूल रूप अनादि नहीं। यह किसी-न-किस समय बना, और किसी-न-किसी समय नष्ट हो जायगा। छिन्न भिन्न परमाणुओं से यह सुन्दर संसार कैसे पैदा होगया? कई प्रकृतिवादियों का कथन है कि परमाणुओं के मिलने से 'ऐसे ही (Fortuirous concourse of atoms) यह जगत् पैदा हो गया है। यह कल्पना ऐसी ही है, जैसे कोई कहे कि बहुत से अक्षरों को जोड़ देने से ऐसे ही एक पुस्तक तैयार हो गई! हम जानते हैं, संसार में ऐसे ही कुछ नहीं होता। कार्य-कारण का नियम अटल है। जो बनता है, उसका बनानेवाला भी होता है। यदि संसार बना, तो इसे किसने यह शकल दी? यह परिवर्तन कैसे हुआ? इस परिववर्तन का कारण कौन

* उपनिषदों में अज्ञेयवाद के प्रतिपादक ये वाक्य कहे जाते हैं—

"न विद्मो न विजानीमो—यस्यामतं तस्य मतं-मतं यस्य न वेद सः। अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्। इत्यादि"।

परन्तु इनका अभिप्राय यही है कि जिस प्रकार का लोग उसे बता रहे हैं, वह वैसा नहीं है। तभी उपनिषदों में लिखा है—"नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा। अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते। इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति...। कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत्।"

† "More recent philosophical developments encourage the expectation that Agnosticism will soon be a superseded mode of thought." Encyclopedia of Religion and Ethics—See, "Agnosticism"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है? जो कारण है, वही परमात्मा है।

विकासवादी कहते हैं कि प्रकृति स्वयं इस परिवर्तन का कारण है। परंतु वह स्वयं इसका कारण नहीं हो सकती। यदि प्रकृति ही कारण हो, तो मानना पड़ेगा कि परिवर्तन प्रकृति का स्वाभाविक गुण है। परन्तु 'परिवर्तन' किसी वस्तु का स्वाभाविक गुण नहीं हो सकता। स्वाभाविक गुण का अर्थ है 'नित्य गुण'। जो गुण किसी वस्तु का 'स्वभाव' हो, वह उसमें सदा—'नित्य' रहना चाहिए जब एक गुण सदा रहेगा, तो उसका विरोधी गुण उसमें नहीं रह सकता। 'परिवर्तन' का अर्थ है 'अनित्य'—बदलने वाला। अस्तु, परिवर्तन के स्वाभाविक होने का मतलब हुआ अनित्य का 'नित्य' होना। भला अनित्य को नित्य कहने वाले की बुद्धि ठिकाने हो सकती है? यदि किसी प्रकार परिवर्तन को प्रकृति का स्वाभाविक धर्म मान भी लिया जाय, तो भी प्रकृति में एक ही प्रकार की यान्त्रिक गति (Mechanical movement) होनी चाहिए—या तो वह बनती ही जाय, या बिगड़ती ही जाय। परंतु ऐसा नहीं होता। सृष्टि का प्रारंभ करने वाली प्रकृति में तो उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय—ये Primordial matter तीन विरोधी धर्म पाए जाते हैं। मैं एक पत्थर फेंकता हूं। चूंकि उसे बाहर से गति मिली है, इसलिये वह चलता है, फिर ठहर जाता है। सृष्टि में उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय परस्पर-विरोधी गुण हैं, जो यही सिद्ध करते हैं कि प्रकृति के इन गुणों का कारण प्रकृति से बाहर है, उसका यह स्वभाव नहीं। यही भाव हरिदासीय कुसुमांजलि में इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है— "क्षित्यादि सकर्तृकं कार्यत्वात् घटवत्। सकर्तृकत्वञ्च उपादानगोचरापरोक्षज्ञानविकीर्षाकृतिमज्जन्यत्वम्।"

(ख) आयोजन-धृतिवाद (Teleological Argument)— विज्ञान से पता चलता है कि जहां संसार सादि और सांत है, वहाँ वर्तमान संसार में अखंड नियम तथा व्यवस्था (Law, order, design) चल रही है। ज्योतिष शास्त्र, भूगर्भ-शास्त्र रसायन-शास्त्र, जीवन-विद्या—जहाँ कहीं भी हम आँख उठाकर देखते हैं, हमें नियम तथा व्यवस्था ही दिखाई देते हैं। हमें बगीचेमें क्रमशः वृक्षों की पंक्ति लगाने में माली की ज़रूरत पड़ती है, तो क्या ब्रह्माण्ड* के उद्यान की व्यवस्था बिना मालीं

* यदि पृथ्वी की सूर्य से दूरी १०० संख्या से सूचित की जाय, तो अन्य ग्रहों की दूरी इस प्रकार होगी—Mercury (बुध) ३९; Venus (शुक्र) ७२; Earth (पृथ्वी) १००; Mars (मंगल) १५०; Jupiter (बृहस्पति) ५२०; Saturn (शनि) ९५०; Uranus (अरुण) १९२०; Neptune (वरुण) ३०००;—Seven Men of Science पृ० ३८; (मार्स और जुपिटर के बीच अन्य ग्रह भी हैं, इसलिये इनकी दूरी में चौगुने के लगभग अंतर पाया जाता है)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हो रही है ? डॉ० फ्लेमिंग 'सेवन मेन आफ् साइन्स' में कहते हैं कि सूर्य के इर्दगिर्द जो आठ मुख्य ग्रह हैं, उन की सूर्य से दूरी एक दूसरे की अपेक्षा लग भग दुगनी के है। यह अनुपात बोड के नियम से प्रसिद्ध है। क्या इन ग्रहों की इस प्रकार नियमित और व्यवस्थित गति बिना किसी चेतन-शक्ति के हो रही है ? विकासवादी कहते हैं कि ये सब तो प्रकृति के नियम हैं। परंतु क्या नियम कभी नियन्ता के बिना रह सकते हैं ? विश्व की इसी धृति को वेद में— "स दाधार पृथिवीमुतद्याम्'-कहकर प्रकट किया है। कुसुमाञ्जलि में इसी अनुमान को इस प्रकार प्रकट किया है— "सर्गाद्यकालीनद्व्यणुकारम्भकपरमाणुद्वयसंयोगजनकं कर्म, चेतनप्रयत्नपूर्वकं, कर्मत्वात्, अस्मदादिशरीरक्रियावत्। ब्रह्माण्डादिपतनप्रतिबन्धकीभूतप्रयत्नवदधिष्ठितम् धृतिमत्वात् वियति विहङ्गमधृतकाष्ठवत्।"

प्रो० हक्सले 'क्रिटिक्स एंड ऐड्रेसेज़" † में लिखते हैं-"विकासवाद से संसार के नियमों तथा व्यवस्था को हल करने का प्रयत्न निरर्थक है। तुम जितना ही नियमों की महत्ता तथा गहनता का पता लगाते जाओगे, उतना ही आस्तिक कहेगा कि यह सब परमात्मा की महानता का प्रदर्शक है। संसार में अमुक-अमुक नियम है—यह कहकर नियन्ता परमात्मा का खंडन नहीं किया जा सकता।"

(ग) अदृष्टनियामकत्ववाद (Moral Argument)— कार्य-कारण का नियम हमें बतलाता है कि अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे का बुरा फल होना चाहिए। मनुष्य इस कर्म-फल का नियंता नहीं है. परन्तु वह नियमित

† "No doubt it is quite true that the doctrine of evolution is the most formidable opponent of all the commoner and coarser forms of Teleology...The teleolgical and the mechanical views of nature are not, however, of necessity, mutually exclusive. On the contrary, the more purely a mechanist the speculator is, the more firmly does he assume a primordial molecular arrngement, of which all the phenomena of the universe are the consequences; and the more completely is he thereby at the mercy of the teleologist, who can always defy him to disprove that this primordial molecular arrangement was not intended to evolve the phenomena of the universe." See, Critiqes and Addresses of professor Huxley; pages 305. 307.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य है। कर्म के जड़ वस्तु होने के कारण उसमें भी यह शक्ति नहीं हो सकती। जो इस अदृष्ट का नियामक है, वही ईश्वर है। इसी भाव को न्याय-दर्शन में लिखा है—"ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात्।" कुसुमांजलि में इसी पर निम्न अनुमान बनाया गया है-"अदृष्टं बुद्धिमच्चेतनकारणाधिष्ठितं, अचेतनत्वे सति कारणत्वात्, छेतृपुरुषाधिष्ठितवास्यादिवत्।"

ईसाई लोग जीवात्मा को उत्पन्न किया हुआ मानते हैं, इसलिये उन्होंने इस युक्ति को दूसरे रूप में रक्खा है। वे कहते हैं कि पशु-जगत् में मत्स्य-न्याय (Struggle for existance) दिखाई देता है; परंतु मनुष्य-जगत् में न्याय, प्रेम, दया तथा कर्तव्याकर्तव्य के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। मनुष्य की प्रकृति में 'यह करो और यह न करो' का भाव (Conscience) कहाँ से आया? ईसाईयों का कथन है कि इस भाव को हमारे अंदर परमात्मा ने पैदा किया!

(घ) निरतिशयवाद (Outological or A Priori Argument)—प्रत्येक मनुष्य के हृदय में सर्वज्ञता अनंतता, अनादित्व आदि के विचार वर्तमान हैं। प्रश्न यह है कि ये विचार कहाँ से आए, और किस सत्ता के विषय में ठीक हैं? हम पहले देख आए हैं कि संसार में एक ऐसी सत्ता है, जो इस सृष्टि का कारण हैं, चेतन है, ज्ञान-स्वरूप है, और जिसका कार्य ऐसा महान् है कि उसे यदि हम अनंत नहीं, तो सांत भी नहीं कह सकते। ऐसा ही युक्ति-युक्त भी प्रतीत होता है कि उसी सत्ता के विषय में इन विचारों को ठीक समझाजाय। प्लेटो, एन्सलम डेकार्टे आदि ने इसी युक्ति से परमात्मा को सिद्ध किया है। ये विचार मिथ्या नहीं कहे जा सकते; क्योंकि ये सदा और सब मनुष्यों में पाए जाते हैं। यदि ये विचार असत्य हैं, तो फिर मनुष्य की बुद्धि ही क्यों असत्य नहीं? इसी को योग-दर्शन में बहुत ही अच्छे प्रकार से "तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्" इस सूत्र की व्याख्या करते हुए इस प्रकार लिखा है—"अस्ति काष्ठाप्राप्तिः सर्वज्ञबीजस्य सातिशयत्वात् परिमाणवत्। यत्र काष्ठाप्राप्तिः ज्ञानस्य स सर्वज्ञः।"

इसके अतिरिक्त इसलिये भी इस ज्ञान को भ्रमात्मक नहीं कह सकते कि जितना भ्रमात्मक ज्ञान होता है, उसका सारा हिस्सा अलग-अलग कहीं न कहीं हमने देखा होता है। स्वप्न में हम आदमी के सूँड़ लगी हुई देखते हैं, परंतु प्रत्यक्ष में हमने आदमी और सूँड़ को अलग-ही-अलग देखा है। जब हमें पूर्णता, सर्वज्ञता, अनादिता और अनंतता का ज्ञान उठता है, तब प्रश्न होता है कि यह ज्ञान कैसे हुआ? हमने इन गुणों को कहाँ देखा? अतएव मानना पड़ेगा कि इनका ज्ञान अन्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमात्मक ज्ञानों के समान नहीं, प्रत्युत इनमें तथा उनमें बहुत भेद है।

(ङ) ज्ञानकारणवाद--यद्यपि यह युक्ति A Priori Argument के अंदर ही समाविष्ट हो सकती है, तथापि भारतीय दर्शनों में इस युक्ति पर बहुत ज़ोर दिया है। इसलिये इसको अलग लेना ही उचित जान पड़ता है।

जब तक ज्ञान का देनेवाला कोई न हो, तब तक मनुष्य बोल तक नहीं सकता। सारा-का-सारा ज्ञान धारा रूप में कहीं से आता है। परीक्षणों के आधार पर ये बातें सिद्ध की गई हैं। इस विषय में अकबर तथा सीरिया के राजा असुर बेनीपाल के परीक्षण प्रसिद्ध हैं। बच्चों को पैदा होते ही, गूँगी दाइयों के साथ जंगलों में रक्खा गया। वे कुछ न बोल सकते थे, हाँ, बकरियाँ पास से गुज़रती थीं, इसलिये वे बकरी की-सी आवाज़ ज़रूर निकाल सकते थे। प्रो० मैक्समूलर भी इस बात को स्वीकार करते हैं। इसी को भिन्न-भिन्न दर्शनकारों ने बड़ी प्रबल युक्ति के रूप में दिया है। योग-दर्शन कहता है—"स सर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। वेदान्त का कथन है। "शास्त्र योनित्वात्।" वैशेषिक में लिखा है—"बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।"

(च) योगि-प्रत्यक्षवाद (Intuitional Argument)—जैसे मनुष्य की आँख, नाक आदि ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, वैसे अंतःकरण (Intuition) भी एक इन्द्रिय है, जिससे मनुष्य उन सत्ताओं का अनुभव करता है, जिनका बाह्य इन्द्रियों से ज्ञान नहीं हो सकता। पूर्वीय तथा पश्चिमीय देशों में ऐसे-ऐसे संत, योगी, महात्मा हो चुके हैं, जिनका दिमाग़ बिलकुल ठीक है, जो हमसे हज़ार दर्जे ऊँचे हैं, और जो बतलाते हैं कि हमने उस सत्ता को 'अंतः प्रत्यक्ष किया है। क्या हम उनकी साक्षी का तिरस्कार कर सकते हैं? क्या हम साधारण वस्तुओं में भी नहीं देखते कि अनेक ऐसी वस्तुओं का हमें पता तक नहीं चलता, जिनका दूसरों को साक्षात अनुभव होता अथवा यंत्रादि द्वारा ज्ञान हो सकता है? कई लोगों को ख़ास-ख़ास तरह के रंग नहीं देख पड़ते। कईयों को कोई-कोई स्वाद नहीं मालूम होता तो क्या हम परमात्मा का ज्ञान न होने से उसके न होने पर विश्वास कर सकते हैं? नहीं। शक्तियों की सीमा को अब तक किसी ने नहीं बाँधा। संसार में विलक्षण तथा असीम शक्तियाँ मौजूद हैं, ऐसे महात्माओं की भी कमी नहीं, जो ब्रह्म के सन्मुख अपने को ऐसे खड़ा देखते हैं, जैसे हम अपने को किसी मूर्तिमान् पदार्थ के सामने। ठीक है, उसका आँख, नाक आदि इन्द्रियों से ज्ञान नहीं होता। परंतु हो सकता है, वह इन्द्रियों का विषय ही न हो। यदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई आँख से सूँघना चाहे, और नाक से देखना चाहे, तो वह मूर्ख कहा जायगा। हम भी इन्हीं आँखों से, जिन का विषय मूर्त पदार्थ को देखना है, अमूर्त को देखना चाहते हैं, इस में हमारा ही दोष है। मनुष्य की उस शक्ति को, जिससे भगवान् का दर्शन किया जा सकता है, 'ऋतंभरा प्रज्ञा' का नाम दिया गया है। इस ऋतंभरा प्रज्ञा की सिद्धि योग-दर्शन में इस प्रकार की गई है—

"श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यां अन्यविषया विशेषार्थत्वात्।

साम्राज्य समस्या

(ले० श्रीकृष्णचन्द्र विद्यालंकार)

साम्राज्य शब्द के अर्थ से ज्ञात होता है कि सभी साम्राज्य कतिपय राज्यों के मिश्रण हैं। परन्तु वस्तुतः इन दो प्रकार के-ऐसे साम्राज्य जिन के सभी अंग सम्पूर्ण में भिन्न २ स्थिति रखते हुए अपनी पृथक् भी सत्ता रखते हैं और दूसरा ऐसा साम्राज्य जिस के अंगों में यह भाव नहीं है—साम्राज्यों में बड़ा भेद है। जापान ने जब तक जबर्दस्ती से फ़ारमोसा और कोरिया को छीन कर अपने में नहीं मिला लिया तब तक वह साम्राज्य शब्द के सच्चे अर्थों में एक साम्राज्य था। परन्तु इन देशों को ज़बर्दस्ती दबाने के कारण वह भी एक मिश्रित साम्राज्य (Composite empire) बन गया है।

परन्तु ऐसे शुद्ध रूप के साम्राज्य का होना बहुत ही कठिन है। अमेरिका ऐसे सच्चे साम्राज्य का एक उदाहरण कहा जासकता है यद्यपि वह एकतन्त्र राजा से शासित न होकर जनता द्वारा निर्वाचित राष्ट्रपति द्वारा शासित होता है। राजा से शासित नहोने के कारण यदि उसे साम्राज्य न कह सकें तो भी अगर किसी साम्राज्य के राष्ट्र समूह (Imperial aggregate) ने राजनीतिक इकाई से मानसिक इकाई (psychoelogical unit) के रूप में बदलना हो तो उसे अमेरिका जैसी ही पद्धति स्वीकार करनी पड़ेगी जिस से उस का प्रत्येक अवयव स्थानीय आत्मनिर्भरता और पृथक् स्वतन्त्रता का उपभोग कर सके और ऐसा होते हुए भी वह एक अभिन्न समूह का अंग रह सके। परन्तु यह वहीं हो सकता है जहाँ कि उस के सब अवयव सजातीय हों जैसे ग्रेट ब्रिटेन और उस के उपनिवेश।

ऐसा सजातीय (Homogenious) साम्राज्य बनाने का संसार के इतिहास में बहुत प्रयत्न किया गया है। जर्मनी का जर्मन साम्राज्य (Pan Germanic empire) की स्थापना का विचार और मुसलमानों का मुस्लिम साम्राज्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने का स्वप्न इसी के उदाहरण हैं। परन्तु वह अपने प्रयत्न में सफल नहीं हो सके क्योंकि वे सजातीय साम्राज्य को बनाते हुवे विजातीय राष्ट्रों को भी हड़पने के लोभ को संवरण न कर सके। रूस ने मंगोलियन प्रजा को अपने आधीन किया, जर्मनी ने विजातीय राष्ट्रों और प्रान्तों को अपने वश में करना चाहा और ख़लीफ़ा ने गैर मुस्लिम प्रजा पर भी अपना प्रभुत्व कायम करना चाहा। यदि ऐसी महत्त्वाकांक्षाएँ न होतीं तो संसार का वर्तमान संगठन, जाति और सभ्यता के आधार पर बनता। रूस केवल बलकान न लेता उसे रूमानिया, ग्रीस, अलबानिया को भी मिलाना पड़ता। साम्राज्य निर्माण में एक वास्तविक समस्या यह है कि विजातीय साम्राज्य (Hetrogenious empire), जिस के अवयव संगठन, भाषा और सभ्यता में परस्पर भिन्न २ हैं, की कृत्रिम राजनीतिक एकता को सच्ची मानसिक एकता में किस तरह परिणत किया जाय?

जिन अवस्थाओं में जिस समस्या का मुकाबला आज के बड़े २ विजातीय साम्राज्य (Hetrogenious empires) कर रहे हैं, उन्हीं अवस्थाओं में और उसी समस्या को हल करने का केवल एकमात्र प्रयत्न हम प्राचीन इतिहास में पाते हैं। पाँच राष्ट्रों को मिला कर चीन ने भी एक साम्राज्य संगठित किया था, लेकिन उस के सब अवयव जाति में मंगोलियन ही थे और इस लिये इन राष्ट्रों को मिलाने में उसे बहुत कठिनता नहीं हुई। परन्तु साम्राज्यप्रिय रोम ने उस समस्या का मुकाबला किया था जिसका मुकाबला आज के साम्राज्यवादी देशों को करना पड़ रहा है और उसने उनमें से कई समस्याओं को सफलतापूर्वक सुलझा भी लिया था। रोम साम्राज्य कई सदियों तक दृढ़ और स्थिर रहा, यद्यपि उसे इस में कई आपत्तियों का सामना करना पड़ा, परन्तु उस ने उन सब आपत्तियों को झेल लिया। रोम का पूर्वीय और पश्चिमीय साम्राज्यों में विभक्त हो जाना उसकी एक असफलता थी। रोम का अन्त आभ्यन्तरिक फूट के कारण नहीं हुआ, परन्तु जीवन केन्द्र के शनैः २ नष्ट हो जाने से हुवा और वह भी तब, जब कि बर्बरजातियों ने इस की दृढ़ एकता को नष्ट कर दिया था।

रोम ने अपना शासन सैनिकविजय और सैनिक उपनिवेशों को स्थापित करके किया था। एक बार विजय करने के बाद रोम किसी देश को कृत्रिम राजनीतिक एकता से बाँध कर ही सन्तुष्ट नहीं रहा और न ही अपने योग्य और सुसंगठित शासन पर उसने पूर्ण विश्वास किया, जो आर्थिक तथा शासन प्रबन्ध की दृष्टि से लाभकर था। अन्य देशों ने उस के साम्राज्य को इसी लिये स्वीकृत किया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि उस में एक राजनीतिक बुद्धि (Political instinct) थी, जिससे सब देश संतुष्ट हो गये। यह निश्चित है कि अगर रोम उन देशों में कुछ काल तक और रहता, तो साम्राज्य बहुत पहले ही टूट जाता, क्योंकि रोमीय शासन के नीचे रह कर वे भी उसी की तरह एक पृथक राष्ट्रीयता को अनुभव करने लगते और एक स्वतन्त्र राष्ट्र की तरह अपने पृथक् योग्य शासन की प्रबल अभिलाषा उन के दिल में पैदा हो जाती। रोम की पृथक् राष्ट्रीयता के भाव ने ही उसे कई स्थानों से दूर कर दिया। रोम को जो सफलता मिली, वह उस के क्रूर भौतिक बल की योग्यता से नहीं, परंतु उस के शान्तिपूर्ण दबाव से मिली। संसार में पहली बार रोम ने अपनी एक प्रतिस्पर्धी सभ्यता को, जो उस से कई अंशों में अधिक ऊँची थी, अपनी सभ्यता का एक अंश बना कर एक ग्रीकरोमन सभ्यता का निर्माण किया। उस ने ग्रीकभाषा को पूर्व में फैलने तथा सुरक्षित रहने देकर अन्य सब जगह इस सभ्यता को लैटिनभाषा और लैटिनशिक्षा द्वारा फैलाया और गाल तथा अन्य विजित प्रांतों की नीची और प्रारम्भिक सभ्यता को जीतने में सफल हुवा। रोम भी पृथक्त्व की प्रवृत्ति को उखाड़ने में समर्थ न होता, इसलिये उसने अपनी लातीनी हुई प्रजा (Latinised subjects) को न केवल उच्चतम सैनिक और शासक पदों पर ही रक्खा, परन्तु साम्राज्य के बड़े २ पदों पर भी नियुक्त किया। यहाँ तक कि आगस्तस के बाद एक सदी भी गुज़रने न पाई थी कि पहले एक इटैलियन, गाल और उसके बाद आइबेरियन स्पेनिअर्ड ने सम्राट् पद धारण किया। इस के बाद उस ने अपनी सब प्रजाओं—एशियन, यूरोपियन और अफ्रीकन प्रजाओं को रोम की नागरिकता का अधिकार देकर भेद भाव के सब दर्जे उखाड़ने शुरु किये।

इसका परिणाम यह हुआ कि रोम का सम्पूर्ण साम्राज्य केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं किन्तुमानसिक रूपमें भीएक हो गया। रोम केवल अपने सुशासन तथा शान्तिस्थापना के कारण ही उच्च नहीं हो गया, परन्तु उसके समाज गौरव और अभिलाषाओं ने भी उसे सम्पूर्ण साम्राज्य में सब से ऊँचा कर दिया। सभ्यता के सम्बन्ध में सब प्रान्तों को सभ्यता सिखाने वाले रोम ने अपने प्रति आकृष्ट कर लिया। इसी लिये जो प्रान्तीय शासक या सेनाध्यक्ष स्वार्थवश किसी प्रान्तीय राज्य को चलाने का प्रयत्न करता था, सफल नहीं हो सकता था क्योंकि उसका कोई आधार न था, न कोई राष्ट्रीय भाव उसका साथ देते थे और न प्रजा को रोम से संबन्ध छोड़कर उस शासक की प्रजा बनने से कोई भौतिक या अन्य प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का लाभ होता था। रोम अन्य राष्ट्रों की पृथक् जीवित सभ्यताओं का शनैः शनैः अपहरण करके शासन करता था, और इस तरह कुछ काल में वह उन की जीवनी शक्ति ले लेता था जिससे उन में विरोध करने का सामर्थ्य भी नहीं रहा। रोम की यह नीति बहुत समय तक रही और यहाँ तक कि वह उन प्रान्तों से, जब उसे स्वयं आवश्यकता हुई, शक्तिशाली आदमी न ले सका जिनकी जीवनी शक्ति वह अपनी सभ्यता देकर छीन चुका था। इस के लिये उसे बर्बर जातियों का मुँह ताकना पड़ा। जब रोम साम्राज्य टुकड़े टुकड़े हो गया तो इन बर्बर राष्ट्रों ने ही उस का स्थान लिया जो उस की संरक्षा में रह कर बहुत कुछ सीख चुके थे

रोम के आदर्श पर यूरोप में बार २ साम्राज्य विस्तार के कई प्रयत्न किये गये हैं। रोम का यह उदाहरण केवल शार्लेमान के पवित्र रोमन साम्राज्य, नैपोलियन के महाप्रयत्न और जर्मनी के संसार साम्राज्य के स्वप्न का ही आधार नहीं रहा, परन्तु सभी वर्तमान साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने इस का अनुकरण करने का प्रयत्न किया है, परन्तु प्रतिष्ठा के साथ रोमन सफलता को प्राप्त करने का प्रत्येक प्रयत्न असफल हुआ है। रोम ने जिस पद्धति का अनुकरण किया था, उस पर चलते हुवे वर्तमान राष्ट्र पारस्परिक संघर्ष से टूट गये है। यह ऐसा ही हुवा है मानो प्रकृति ने कहा कि परीक्षण एक बार पूर्ण सफल हो चुका है, और एक बार ही काफी है। अब मैंने नवीन परिस्थितियाँ बनादी हैं, अब तुम भी नये साधन बनाओ या कम से कम पुराने साधनों में कुछ सुधार करो।'

वर्तमान यूरोपीय राष्ट्रों ने अपने साम्राज्यों को केवल रोमन पद्धति पर सैनिक विजय और उपनिवेश स्थापना द्वारा ही नहीं बढ़ाया, किंतु कुछ अन्य मार्गों का भी अवलम्बन किया है। वर्तमान उपनिवेश केवल शुद्ध रोमन पद्धति के उपनिवेश नहीं हैं, परन्तु कार्थेजियन और रोमन दोनों की मिश्रित पद्धति पर स्थापित हैं, वे केवल शासन सम्बन्धी या सैनिक उपनिवेश ही नहीं हैं, परन्तु वे अधिकतः व्यापारिक हैं।

जिस समस्या को रोम ने सुलझाया था, आज के राष्ट्र उसे नहीं सुलझा सके। आजके साम्राज्यवादी राष्ट्र विजित राष्ट्रों की सभ्यता और राष्ट्रीयता को नष्ट नहीं कर सके। इन सब राष्ट्रों ने अपने झण्डे के साथ अपनी सभ्यता भी पहराने का प्रयत्न किया है। पहले तो केवल विजेता की स्वाभाविक बुद्धि और राजनीतिक स्थिरता के लिये यह प्रयत्न हुआ और पीछे अपने से नीची जातियों में सभ्यता बढ़ाने के इरादे से। यह प्रयत्न सभी जगह सफल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। आयर्लैंड में इङ्गलैंड ने अपनी सभ्यता फैलाने का निष्ठुरता और उत्साह से पूर्ण प्रयत्न किया, उनकी भाषा, उनके जातीय चिन्ह सभी नष्ट कर दिये गये। आयरिशजाति ने भी अपनेपन की रक्षा करनेके लिये बहुत प्रयत्न किया। आयरिश भाषा और रीति रिवाज नष्ट होने पर भी आयर्लैंड नेअंग्रेज बननेसे साफ इन्कार कर दिया। दबाव के कुछ हटते ही आयरिश भाषा, आयरिश संस्कृति तथा आयरिश सभ्यता को पुनर्जीवित करने का बड़ा भारी आन्दोलन किया गया। जर्मनी भी पोलैंड को जर्मन न बना सका, यहाँ तक कि जर्मन भाषा बोलने वाले अलसेशियन्स को भी वह अपने में नहीं मिला सका। इसी तरह अन्य जातियों ने भी अपनी सभ्यता फैलाने के बहुत प्रयत्न किये, परन्तु कोई भी सफल नहीं हुआ। अपनी सभ्यता फैलाने के लिये बहुत बार बलप्रयोग किया गया है, परन्तु इससे एक जातीय भाव पैदा हो जाता है और साम्राज्यवादी राष्ट्र के प्रति घृणा भी हो जाती है जो साम्राज्य के लिये भयावह हैं। यूरोप में सभ्यताओं के मूलतत्व समान हैं अगर वहाँ भी भिन्न भिन्न सभ्यताओं को नष्ट कर एक सभ्यता बनाना असम्भव है तो उन साम्राज्यों में तो यह प्रश्न करनाही कठिन है जिन का सम्बन्ध एशियाटिक देशों से है और जहाँ की जातियाँ कई सदियों तक सुसंगठित राष्ट्रीय सभ्यता में रह चुकी हैं। यदि वास्तव में संस्कृति विषयक (Cultural) एकता स्थापित करनी है तो उसके लिये अन्य उपाय ढूँढने पड़ेंगे।

इस समय सभ्यताओं के एकीकरण के उस तरीके को निस्संदेह छोड़ा जा रहा है परन्तु साथ ही संसार वर्तमान अवस्थाओं में इस की ओर बढ़ भी ज़रूर रहा है। वर्तमान संसार एक ऐसी लचीली सभ्यता की खोज में है जिसे सारी मानव-जाति स्वीकृत कर ले; जिस में सभी प्राचीन और अर्वाचीन सभ्यताएँ सम्मिलित हों और प्रत्येक सभ्यता उस का एक आवश्यक भाग हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निर्बल और प्रबलसभ्यताओं में एक महान् संघर्ष होगा, परन्तु इस में सफलता सैनिक विजयों और राजनैतिक दबाव से नहीं हो सकती। आज की नवीन परिस्थितियों में केवल वही साम्राज्यवादी राष्ट्र सफल हो सकते हैं, जो इस नवीन सत्य को, कि संसार फिर प्राचीनता की ओर जा रहा है, समझ लें। परिवर्तन और नवीन सत्य की महत्ता स्वीकृत की जाने लगी है और सब सभ्यताओं को नष्ट करने के घमण्ड भरे दावे नष्ट हो रहे हैं। अब सर्बिया और बेलजियम— जैसे छोटे राष्ट्रों की भी संस्कृति विषयक इकाई (Cultural unit) मानी जाने लगी है। अब लोग एशिया की सभ्यताओं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भी कदर करने लगे हैं। उच्चजातियों के उच्चता और नीचता के सिद्धान्त को भी गहरा धक्का लगा है, इस समय संसार में नवीन व्यवस्था के बीज बोए जा रहे हैं। सभ्यताओं का नवीन मिश्रण वहाँ स्पष्टतया दीख जाता है, जहां यूरोप और एशिया परस्पर मिलते रहे हैं। उत्तरी अफ्रीका में फ्रैंच और भारत में इंग्लिश सभ्यताएँ, फ्रैञ्च और अंग्रेजी न होकर एशिया के सामने केवल यूरोपियन ही मालूम होती हैं। यहाँ साम्राज्य के राष्ट्र नहीं मिल रहे, परन्तु एक महाद्वीप दूसरे महाद्वीप से मिल रहा है। एशिया इस समय यूरोपियन सभ्यता से विज्ञान, अन्वेषण की उत्सुकता, शिक्षा प्रेम, विचार स्वातन्त्र्य समानता आदि बहुत सी बातें सीख रहा है। यह सब बातें सीखता हुआ भी एशिया अपनी सभ्यता के मूल तत्त्व, जो मानव-जाति के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण हैं को नहीं छोड़ रहा। यह सब सैनिक विजय और पारस्परिक विनिमय नहीं हो रहा परन्तु पारस्परिक सहयोग, समझौते और एक दूसरे को अच्छी तरह समझने से ही परस्पर सभ्यताएँ मिल रही हैं।

अब तक भी वह दकियानूसी ख़याल कुछ लोगों के दिलों से दूर नहीं हुवा। अब तक भी ऐसे व्यक्ति विद्यमान् हैं जो अब भी सारे भारत को ईसाई बना लेने और सब देशी भाषाओं को नष्ट करके अंग्रेजी के प्रचलित होने के स्वप्न देखते रहते हैं। परन्तु ऐसे व्यक्ति वही हैं जो संसार की वर्तमान प्रगति को समझ नहीं सकते हैं। ईसाईमत का वहीं प्रचार हुआ है, जहाँ क्रिश्चियैनिटी अपनी एक या दो विशेषताओं के कारण साधारण जनता को कुछ लाभ पहुंचा सकी है या जहाँ हिन्दुओं ने छुआछूत के कारण दलित जातियों को दूसरे धर्म में जाने पर बाधित कर दिया है। परन्तु जहाँ यह धर्म दलित जातियों को उन्नत नहीं कर सका, वहाँ ईसाई मत कुछ भी नहीं फैला। आजकल तो भारत में पुनः जागृति के कारण क्रिश्चियैनिटी के फैलने का अवसर और भी कम होगया है। अब भारत में स्वतन्त्रता और समानता के भाव फैल रहे हैं, यह परिवर्तन, यह नवीन जागृति एक उदार और विस्तीर्ण एशियन समाज के बनने की प्रारम्भिक तैयारी है। सभी जगह इस बात के चिह्न हैं, सभी शक्तियाँ ऐसा कर रही हैं। अब न फ्राँस और न इंग्लैंड यह शक्ति रखते हैं कि अफ्रीका से इस्लामिक, और भारतवर्ष से हिन्दूसभ्यता को नष्ट कर सकें।

प्राचीन साम्राज्यवाद का अपनी सभ्यता फैलाने का सिद्धान्त नष्ट हो रहा है क्योंकि वह अक्रियात्मक है, जैसा कि पहले दिखाया जा चुका है। रोम की पद्धति इस समस्या का कुछ न कुछ हल ज़रूर है, परन्तु उन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्थाओं में महान् परिवर्तन हो जाने से वह भी उपयुक्त नहीं है, अब तो नवीन आदर्श और नवीन पद्धति ही चाहिये। वर्तमान संसार की राजनीतिक और सामाजिक अवस्थाओं को देखते हुवे आजकल साम्राज्य का एक रूप तैयार किया जा सकता है और वह है संघात्मक साम्राज्य (Federal empire) का रूप। अब केवल एक समस्या रह जाती है कि क्या भिन्न २ जातियों और सभ्यताओं का बना हुवा एक संघात्मक साम्राज्यबनसकता है? अगर यह मान लिया जाय तो क्या यह कृत्रिम संगठन, स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक इकाई बन सकता है? अगर इस समस्या का हल हो जाय तो एक स्थिर साम्राज्य बन सकता है।

हमारे ख़याल में निकट भविष्य में इस समस्या का हल नहीं हो सकता। हाँ, यह ज़रूर मानना पड़ेगा कि संसार इसकी ओर प्रगति कर रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय संघ आदि इसी के चिह्न हैं। एशिया और यूरोप का परस्पर मिश्रण इसके लिये अत्यन्त आशाजनक है। यूरोप के विचार स्वातंत्र्य, समानता, लोकमत आदि गुण और एशियन सभ्यता के प्रेम, निस्पृहता और साम्राज्य के बढ़ाने के प्रति विशेष अलिप्सा आदि गुणों से मिल कर जो एक सभ्यता बनेगी, उसी की नींव पर एक विस्तृत और सच्चा साम्राज्य बनेगा, जिस में सब राष्ट्र उस के अङ्ग रहते हुवे भी अपनी भिन्न भिन्न सत्ता रख सकेंगे।[1]

१ श्री अरविन्द घोष के एक लेख के आधारपर.

मायावी

(श्री धर्मदत्त जी विद्यालंकार)

जित देखों तित तेरी माया ॥

आनन्द घन! तूही वन-उपवन, निखिल भुवन में छाया,
पत्ता है सरसाया, फूल फूल हरसाया।
जल-तल की कल कल में तेरा कलरव मधुर समाया,
भूतल पर पद पद पर तेरे पदचिन्हों को पाया।
ऊपर देखूं तो सिर पर है तेरी शीतल छाया,
इत उत देखूं तो चहुंदिस ही आनन्द तैं बरसाया।
मायावी! यह मायामय सब तेरा खेल रचाया,
इस नाटक के पट के पीछे तुझ को ही नट पाया।
सूरज तारे नयन तुम्हारे, सकल विश्व है काया,
चहुं दिस मैंने विश्वरूप में तेरा दर्शन पाया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषमता का पाठ

[ले० श्रीयुत गुप्त विद्यालंकार]

(१)

छोटा बालक पवित्रता और भोलेपन की ठोस प्रतिमा होता है। उसका हृदय दर्पण की अपेक्षा भी अधिक निर्मल होता है; जो व्यक्ति हंस हंस कर दो एक बार भी उस के साथ खेल ले, उसे वह 'अपना' समझने लगता है। उसे संसार भर का कोई भी व्यक्ति अगम्य या बड़ा नहीं जान पड़ता। महेन्द्र भी इसी श्रेणी का बालक था। वह एक पनिहारिन का लड़का है तो क्या हुवा; वह अपने को किसी साम्राट् से कम नहीं समझता। वह अपनी मां पर मनमाना हुक्म चलाया करता है; बाकी दुनिया के लोग क्या उस की माता से भी अधिक बड़े हैं। आज बाबू लोगों के घर जाते समय माता महेन्द्र को अपने साथ नहीं लेगई, आज वह आज़ाद होकर जहां चाहे घूमफिर सकता है।

अपनी छोटी सी पतङ्ग हाथ में उठा कर महेन्द्र धीरे धीरे सड़क पर चला जा रहा था कि उस की नज़र मैदान की हरी हरी घास पर बैठे हुए कुछ बालकों पर पड़ी। महेन्द्र का ध्यान सड़क पर आने जाने वाले लोगों पर से हट कर पूरी तरह उन लड़कों की ओर आकृष्ट होगया। वह स्वाभाविक प्रसन्नता से भर कर उन बालकों के पास पहुंचा। वे बालक भी उस की अपनी उमर के हैं,-महेन्द्र के लिये यही परिचय पर्याप्त था, वह उनके पास खड़ा होकर मुस्कराने लगा। ये बालक अलाहाबाद के बड़े २ रईसों के बालक हैं; आज यहां रविवार का मज़ा लेने आए हैं-यह बात उस की कल्पना में भी न आ सकती थी। महेन्द्र ने देखा कि बालक कुछ खा रहे हैं; वे क्या खा रहे हैं, इस बात का उसे ज्ञान न हो सका, उन बढ़िया २ मिठाइयों को उस ने कभी देखा तक न था। सहसा जलेबी देख कर उसे भक्ष्य पदार्थ की मधुरता का ध्यान हो आया, उस की माता कई बार बाबू लोगों के घर से पुरानी जलेबियां लाकर उसे खिला चुकी थी।

महेन्द्र के समदर्शी दिमाग में 'अधिकार' शब्द की सत्ता ही नहीं थी। जलेबी को देखते ही उस की इच्छा उसे खाने को हुई, इसी आधार पर वह हिस्सा बँटाने के लिये पंक्ति में जा बैठा। मिठाई खाने वाले बालक कौतुहल से उस की ओर देखने लगे। परन्तु कोई भी महेन्द्र से कुछ न बोला। वे अपने माता पिता की देखा देखी घर के नौकरों की सन्तानों को अपनी अपेक्षा बहुत छोटा समझते थे, परन्तु महेन्द्र उन्हें उतना मैला न जान पड़ा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद इसी से वे निर्धारित न कर सके कि उस के साथ कैसा व्यवहार किया जाय।

इसी समय बालकों के एक नौकर की नज़र महेन्द्र पर पड़ी। वह क्रोध से झपट कर महेन्द्र के पास पहुंचा, और ज़ोर से बोला "यहाँ से उठ जाओ!" महेन्द्र को नौकर की इस आज्ञा का मतलब बिल्कुल समझ नहीं आया। जब उस के समान दूसरे बालक मिठाई खारहे हैं तब उसे इस प्रकार क्यों उठाया जा रहा है। महेन्द्र उठा नहीं, बल्कि बालकोचित रोष के साथ नौकर की ओर देखने लगा। नौकर को अपना रोब दिखाने का अच्छा मौका मिला, उस ने महेन्द्र का हाथ पकड़ कर एक झटका दिया। बेचारा महेन्द्र दूर जा पड़ा, उसके कन्धे और टांगों पर हलकी चोट आगई। मिठाई के बदले अचानक यह अपमानजनक व्यथा पाकर बालक महेन्द्र दर्द से चिल्ला उठा। कुछ देर तक इसी प्रकार रोते रहने के बाद वह वहां से उठ कर सिसकियां भरता हुआ अपने घर की ओर चला। बालक के इस रुदन में दर्द की अपेक्षा क्रोध का भाव अधिक था। महेन्द्र रोता हुआ अपने घर की ओर चला जा रहा था, वह समझता था कि जब वह माता के न्यायालय में जाकर अपने इस अपमान की नालिश करेगा, तब उस का अपराधी अवश्य दण्डित होगा।

मुंह ढांप कर रोते हुए धीरे धीरे चल कर महेन्द्र सड़क पर आ पहुँचा, उसी समय बाबू लोगों के यहाँ पानी भर कर उसकी माता अपने घर की ओर वापिस आ रही थी। महेन्द्र को सड़क पर अकेला रोता हुआ देख कर वह सन्न सी रह गई, मानो किसी ने अचानक चपेट मार दी हो। वह लपक कर महेन्द्र के पास पहुँची। उस के सिर पर प्रेम से हाथ रख कर उस निस्सहाया ने पूछा--"बेटा, रोता क्यों है?" महेन्द्र और भी अधिक ज़ोर से रोने लगा, उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

माता का हृदय कांप गया; उसने महेन्द्र को उठा कर छाती से लगा लिया, फिर अपने आंचल से उस के गरम गरम आंसू पोंछते हुए उसने वही प्रश्न किया। अपने राज सिंहासन पर सवार होकर महेन्द्र का आत्माभिमान जागृत हो उठा। उस ने मां की गोद में बैठे २ अटक अटक कर अपनी सारी कहानी सुनादी। उसे पूर्ण भरोसा था कि माता उस के अपमानकर्ता को पूरा दण्ड देगी। परन्तु जब उस की माता सरोष आंखों से दूर बैठी हुई उस बालक मण्डली की ओर देखते हुए केवल इतना ही कह कर कि "बेटा, इन लोगों के पास मत जाया करो", अपने घर की ओर चल दी तब महेन्द्र का मुख फिर से अत्यन्त उदास हो उठा; मां की छाती में मुंह देकर वह फिर से रोने लगा। इस बार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपनी माता सेभी रुष्ट होगया। वह बेचारा क्या जानता था कि उस की माता कितनी असमर्थ है।

घर पहुंच कर माता ने अपने प्राणाधिक महेन्द्र को बहुत मनाने का यत्न किया परन्तु वह प्रसन्न नहीं हुआ। वह सारा दिन रूठा रहा। उस की माता किसी के सन्मुख उस का अपमान सह सकती है, यह बात उसे आज पहली बार ही अनुभव हुई। माता महेन्द्र को बहुत फुसलाती रही, मनाती रही, परन्तु बालक महेन्द्र को इस बात का ज्ञान क्योंकर हो सकता था कि साधारण लोगों के घर पानी भरने वाली उस की अभागिनी विधवा माता किस प्रकार बड़े धनियों के बालकों की भर्त्सना कर सकती है।

(२)

छोटी जमातों के लड़के स्कूल के हैड मास्टर से उतना नहीं डरते जितना कि वह अपने गणित के मास्टर से डरते हैं। अगर कहीं किस्मत से गणित का मास्टर कोई पका हुआ पुराना खुर्राट हो तो कहना ही क्या है, लड़के उस से अधिक भयंकरता की कल्पना ही नहीं कर सकते। अगर लड़कों से कहा जाय कि तुम 'भय' की तस्वीर खींचो तो शायद वे सब के सब अपने उस बूढ़े मास्टर का चित्र बनाने का यत्न ही करने लगेंगे। अलाहाबाद के सरकारी हाई स्कूल में छोटी जमातों के गणित के शिक्षक एक मौलवी महाशय थे। परन्तु सौभाग्य से वह उतने भयंकर नहीं थे कि उन्हें देख कर लड़कों समझ में आया हुआ सवाल भी भूल जायँ। फिर भी लड़कों पर उनका बहुत रोब था, लड़के उन्हें ईश्वर के समान न्यायकारी और संसार का सब से बड़ा गणितज्ञ समझते थे।

महेन्द्र की माता ने महेन्द्र को इसी सरकारी स्कूल में भरती करा दिया था। वह प्रतिभाशाली बालक था, अतः वज़ीफा मिलते देर न लगी। अपनी जमात में वह प्रायः पहले या दूसरे नम्बर पर रहता था, गणित के सवाल हल करने में तो उसे वह मज़ा आता था जो मज़ा बालकों को कहानियां सुनने में आता है। पढ़ाई में अच्छा होने के कारण गरीब होने पर भी अध्यापक उस से अच्छा सलूक करते थे। खास कर मौलवी साहिब तो उस से बहुत प्रेम करते थे। इन दिनों महेन्द्र तीसरी जमात में पढ़ता था।

गरमियों के दिन थे और प्रातःकाल का समय। मौलवी साहब स्कूल के आंगन में लगे हुए एक वृक्ष के नीचे बैठ कर तीसरी जमात की गणित की परीक्षा ले रहे थे। वह बहुत दिनों से इस परीक्षा के लिए लड़कों को तैयार कर रहे थे। उन्होंने परीक्षा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय निकलने वाले विद्यार्थियों के लिये इनाम भी रक्खे हुए थे।

एक दूसरे के पीछे कतार में बैठे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए लड़के बड़े ध्यान से मौलवी साहब का दिया हुआ दूसरा सवाल निकाल रहे थे; सहसा महेन्द्र पीछे की ओर मुंह कर करके ज़ोर से बोल उठा—"नकल मत करो!" इस के दूसरे ही क्षण महेन्द्र के पीछे बैठे हुए विद्यार्थी ने महेन्द्र के सिर पर अपनी सलेट दे मारी; इस विद्यार्थी का नाम 'राजबलि' था। महेद्र के सिर से खून टपकने लगा, परन्तु वह चिल्ला कर रो नहीं उठा। एक बार राज बलि के क्रोध पूर्ण मुख की ओर देख कर वह न्याया-भिलाषिणी आंखों से मास्टर साहब की ओर देखने लगा। उस की दृष्टि में मास्टर साहब सर्व शक्तिमान् थे, उन की उपस्थिति में राजबलि का यह कार्य उसी के लिये बुरा परिणाम पैदा करने वाला था। मास्टर साहब कुछ दूरी पर बैठे हुए थे, वह शीघ्रता से रूल हाथ में उठा कर महेन्द्र के पास पहुंचे। परन्तु सहसा राजबली की ओर देखते ही उनका हाथ एकदम रुक गया। वह बड़ी गुस्ताखी के साथ उन की ओर घूर रहा था। मास्टर साहब उसे छूने की भी हिम्मत न कर सके; उन की क्रोध भरी आंखें नीचे की ओर झुक गईं। वह बहुत अधिक दुखित होकर अपने स्थान पर आकर बैठ गए। विद्यार्थियों की दृष्टि में ईश्वर के समान न्यायकारी मास्टर भी आज इतने बड़े अन्याय पर चुप क्यों बैठे रहे; आखिर कारण क्या था, कारण यही था कि राज बलि एक बहुत बड़े ताल्लुकेदार का सुपुत्र था, उसे घर से स्कूल तक छोड़ने के लिए मोटर आया करती थी, उसके पिता से बड़े २ अफसर ख़ौफ खाया करते थे; ३० रुपया मासिक वेतन पाने वाले मास्टर साहब किस हिम्मत पर राजबलि से कुछ कह सकते थे।

महेन्द्र अब तक चुप था, परन्तु जब उस ने देखा कि मास्टर साहब ने इतने सफेद अन्याय पर भी राजबलि से कुछ नहीं कहा, तब वह इस प्रकार रो उठा जिस प्रकार कि मोम का एक बड़ा ढेला एक दम तीक्ष्ण ताप पाकर पिघल उठे। वह हिचकियां भर भर कर चीखती हुई आवाज़ में रोने लगा। बूढ़े मौलवी साहब भी अपनी असमर्थता पर अत्यन्त लज्जित थे, वह महेन्द्र के पास आकर बैठ गये और उसे पुचकार २ कर आश्वासन देने लगे। मास्टर साहब के प्रेम भरे शब्दों के प्रभाव से महेन्द्र चुप तो अवश्य होगया; परन्तु मौलवी साहबका यह प्रेम उस की उन करुणापूर्ण सिसकियों को बन्द न कर सका जो कि उस के दिल की सब से निचली तह को फाड़ कर ज़बरदस्ती ऊपर आरही थीं।

महेन्द्र आज फिर इस लायक न हो सका कि वह परीक्षा में दुबारा शामिल होसके।

(३)

बालक महेन्द्र आज महेन्द्र से 'मुन्ना-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह' बन चुका है। बचपन में ही इस संसार सागर की बड़ी बड़ी थपेड़ों ने उसे कुछ से कुछ बना दिया है। अब वह एक साधारण अपठित गरीब आदमी से बढ़ कर कुछ नहीं है। वह आज समझ चुका है कि जिस समाज में वह रहता है उस में उस की कोई पूछ नहीं है। इस समाज में 'बड़े आदमी' नाम से जो लोग शामिल हैं, महेन्द्र को उनके आगे सिर झुकाना चाहिये, उनकी जूतियां साफ करनी चाहियें, उनकी प्रशंसा के गीत गाने चाहिये; तभी जाकर वह उन्नति कर सकता है।

महेन्द्र की अभागिनी माता की मृत्यु हो चुकी है, महेन्द्र अपने स्कूल में पांच श्रेणियों से अधिक नहीं पढ़ सका था। अचानक माता की मृत्यु होजाने से वह स्कूल छोड़ने को बाधित होगया था।

आज २० बरस की उमर में बड़े यत्न के बाद अपने मजबूत शरीर और ५ बरस तक स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के आधार पर वह एक जिले की अदालत में अर्दली बन सका है। महेन्द्र आज अदालत का अर्दली है। वह अदालत के सभी कर्मचारियों को झुक-झुक कर सलाम करता है, उनकी सभी आज्ञाओं का बिना विरोध पालन करता है।

अदालत के दूसरे चपरासी महेन्द्र से चिड़ते हैं क्योंकि महेन्द्र उन में पूरी तरह घुल नहीं गया है क्योंकि वह गरीब किसानों को धमका कर, डरा कर उन से रुपया लूटना नहीं सीखा है। जब सायंकाल को दिन भर की छोटी मोटी लूट खसोट के बाद अदालत के सायन में जमा होकर सब चपरासी अपनी दिन भर की कारस्तानियाँ एक दूसरे को सुनाते थे, महेन्द्र उस समय सीधा अपने घर की राह लेता था। महेन्द्र स्वयं गरीब था, वह दूसरे गरीबों के दुःख को समझता था अतः वह उन पर किसी प्रकार का जुल्म करने की हिम्मत नहीं करता था। दूसरे चपरासी तथा अदालत के छोटे-मोटे लेखकों की आंख में महेन्द्र का यह स्वभाव खटका करता था वे उसे तङ्ग करने की कोशिश करते थे। परन्तु महेन्द्र जैसे फरमाबरदार और काम से जी न चुराने वाले आदमी को तंग करना भी बहुत आसान नहीं था। दूसरे चपरासी अपना काम उस पर डाल देते थे और वह खुशी से उसे कर दिया करता था।

अभी तक महेन्द्र ने विषमता के पाठ का केवल एक ही पहलू पढ़ा था, वह था समाज में अपने से बड़ों की इज्जत करना; धनियों, कुलीनों और पढ़े-लिखों की लातें फूल के समान सहना। विषमता के पाठ का दूसरा पहलू वह अभी तक नहीं पढ़ा था। जो पहलू है- अपने से गरीबों और छोटे कुल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालों को तंग करना, उन्हें गाली देना; उनकी गाढ़ी कमाई को अपने लिये ही समझना।

(४)

दोपहर का समय था। यद्यपि अभी वैशाख मास प्रारम्भ ही हुआ था तथापि दिन को दोपहर के समय इतनी प्रचंड गर्मी हो उठती थी कि धूप में चलना बहुत कष्टसाध्य हो जाता था। अदालत के सहन में दो पीपल के वृक्ष थे, इनके नीचे बैठ कर गरीब किसान अपनी अपनी पुकार की प्रतीक्षा कर रहे थे। चपरासी बारी बारी से एक एक को बुलाता था; पेड़ों के नीचे काफी भीड़ जमा थी। आजकल फसल के दिन थे, इन दिनों मुकद्दमों की भरमार रहती है।

इन दो पीपल के वृक्षों से कुछ दूर हट कर उत्तर की ओर एक शीशम का वृक्ष था इसकी छाया बहुत घनी नहीं थी, इसलिये प्रायः कोई मुवक्किल या गवाह इस पेड़ के नीचे नहीं बैठता था। महेन्द्र अकेला इसके नीचे सिर नीचा किये कुछ सोच रहा था– शायद अपना वेतन बढ़वाने के उपायों पर विचार कर रहा था।

इसी समय ५, ७ गरीब आदमी उस पेड़ के नीचे आये। इन में से एक व्यक्ति की पीठ पर खून जमा हुआ था, उसके माथे तथा टाँगों पर भी गहरी चोट के निशान मौजूद थे। इन सब आदमियों के कपड़े बहुत ही मैले और फटे हुए थे। वे देखने से अत्यन्त दरिद्र और नीच कुल के जान पड़ते थे– शायद इसी से वे साधारण मुवक्किलों की भीड़ में न जाकर इस एकान्त में चले आये थे। अदालत के एक चपरासी को वहाँ बैठा देखकर उन लोगों ने झुक कर उसे सलाम किया, इसके बाद वे उस से कुछ दूर हटकर बड़े अदब से बैठ गये। आज महेन्द्र को अपने बड़प्पन का कुछ गर्व हुआ।

महेन्द्र थोड़ी देर तक चुपचाप उन गरीबों के वेश, हाव-भाव तथा चेहरों को देखता रहा। आहत व्यक्ति तथा उन की दरिद्रता पर उसे कुछ दया आई। उसने उन लोगों को अपने पास बुलाया। वे बड़े अदब से उसके पास आकर बैठ गये।

महेन्द्र के पूछने पर एक व्यक्ति ने अपनी दुख-कथा कह सुनाई। वे लोग गरीब चमार थे, गाँव के नम्बरदार ने उनकी ज़रा सी गुस्ताखी पर उन्हें इस प्रकार पीटा था, यही उनकी लम्बी कहानी का साराँश था। उनकी दुख-कथा सुनकर महेन्द्र ने एक बड़े कानूनदाँ की स्वर में कहा– "अर्जी दायर कर दो।"

उन लोगों ने महेन्द्र की बात को बड़ी श्रद्धा तथा सम्मान से सुना। इसके बाद एक व्यक्ति ने पूछा—"हज़ूर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकद्दमे में हमारा कुल खर्च क्या होगा ?"

महेन्द्रने अर्दली, चपरासी, मुहर्रिर, अर्जीनवीस, वकील आदि के खर्च की लम्बी फिरहिस्त सुनानी आरम्भ की। वे गरीब आदमी इतनी रकमें सुनकर घबरा उठे उन्होंने बड़ी नम्रता से कहा— "हजूर, इतनी बड़ी रकमें हम कहाँ से दे सकेंगे।"

महेन्द्र अभी तक विषमता का पूरा पाठ नहीं पढ़ा था अतः उसे इन गरीबों पर दया आगई; उसने बड़े रोब से कहा— "अच्छा, चपरासियों का कुछ न देना। इस खर्च से मैं तुम्हें बरी करवा दूँगा।"

ठीक इसी समय अब्दुल्ला नाम का एक और चपरासी इस गिरोह के पास आकर खड़ा हो गया, उसने महेन्द्र की अन्तिम बात सुन ली; और वह दो तीन चपरासियों को बुला लाया। अब्दुल्ला ने उन चपरासियों से जाकर कहा— "देखो यार ! बड़ा ईमानदार बना फिरता था; आज इसकी ईमानदारी की पोल खुल गई। ५, ७ मुवक्किलों को लूट कर उन्हें उपदेश देरहा है कि चपरासियों को कुछ मत देना।" चपरासियों ने आकर देखा कि महेन्द्र एकान्त में ५, ७ व्यक्तियों से बातकर रहा है। यह देखकर उन्होंने अब्दुल्ला के कथन पर विश्वास कर लिया। उन्होंने सोचा कि अगर महेन्द्र ने इन लोगों से रिश्वत नहीं ली तो इन्हें एकान्त में लाने की क्या आवश्यकता थी।

चारों चपरासी जोश में भरे हुए महेन्द्र के पास पहुँचे और उस से बोले— "क्यों, महात्मा जी ! यह क्या स्वाँग है ?" महेन्द्र कुछ न बोला। एक और चपरासी ने गाली देकर चमारों से कहा— "सच-सच बताओ, यह तुम्हें क्या कह रहा था।" चमार बेचारे काँप गये। एक ने कहा—"हजूर, हम इनसे अपनी शिकायत कर रहे थे।"

एक चपरासी ने डाँट कर कहा— "सच बताओ, ये तुम्हें चपरासियों के बारे में क्या कह रहे थे।"

एक चमार ने इस प्रश्न का वास्तविक अभिप्राय न समझ कर कहा— "ये हम से कह रहे थे कि तुम्हें चपरासियों को कुछ न देना पड़ेगा।"

अर्दलियों ने एक दूसरे की ओर इस दृष्टि से देखा कि मानों उन्होंने विजय प्राप्त कर ली। एक अर्दली ने कड़क कर कहा—"ठीक २ बताओ उन्होंने तुम से क्या लिया है।"

चमारों ने डरते डरते कहा—"कुछ भी नहीं।" महेन्द्र अब तक चुप बैठा था, किसी से लड़ना-झगड़ना वह पसंद नहीं करता था। परन्तु चमारों के सामने बड़ा बनने के बाद सहसा यह अपमान उसकी सहन शक्ति से बाहर था। उसने डांट कर कहा। "क्या गरीब चमारों पर रोब दिखा रहे हो, मुझ से बात करो।" यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह कर वह उठ खड़ा हुवा। चार में से तीन चपरासी तो सहसा महेन्द्र को इस असम्भावित रूप में देख कर सहम गये। परन्तु अब्दुला महेन्द्र का यह रूपदेख कर और भी जल उठा। उस ने आगे बढ़ कर महेन्द्र को एक धक्का दिया। बाकी अर्दलियों ने भी उस पर गालियों की बौछार प्रारम्भ की, शोरगुल मच गया।

यह हल्लेबाजी सुनकर अदालत के कमरे से एक छोटे दर्जे का क्लार्क बाहर निकल आया, उस ने पासआकर पूछा— "क्यों भाई क्या मामला है?"

एक अर्दली ने खूब नमक मिरच लगा कर बाबू जी से महेन्द्र की शिकायत की और अन्त में कहा कि अब्दुल्ला अगर आज उसे हमला करने से रोक न देता तो हमारी खैर नहीं थी।" बाबू जी भी महेन्द्र को छकाने का मौका ढूँढ़ने वालों में से एक थे, उन्हों ने महेन्द्र की लम्बी चौड़ी शिकायत लिखी। गरीब चमारों को डरा धमका कर उन्होंने उनसे लिखवा लिया कि महेन्द्र ने हम से रिश्वत ली और हमें बाकी चपरासियों के बर्खिलाफ भड़काया।

शिकायत बड़े बाबू के पास पहुंची, उन्होंने चमारों को बुला कर उन की गवाही ली। चमारों ने छोटे बाबू तथा अब्दुल्ला के घुटाये हुए वाक्य सुना दिए। इतना ही नहीं अदालत के सहन में जो खोंचे वाला मिठाइयाँ बेचा करता था, उस ने भी महेन्द्र के विरुद्ध ही शहादत दी। बड़े बाबू रहम दिल थे, उन्होंने महेन्द्र पर दया कर के उसे नौकरी से बरखास्त न कर के उस पर २५) रु० जुर्माना कर दिया। उन्होंने महेन्द्र को हिदायत कर दी कि अगर भावि में तुम्हारी कभी कोई शिकायत सुनी तो तुम्हें अवश्य बरखास्त कर दिया जायगा।

सारी उम्र में आज महेन्द्र तीसरी बार फूट २ कर रोया। उसे आज एक नई शिक्षा मिली—गरीबों पर रहम करना भी मनुष्य की उन्नति में बाधक है।

महेन्द्र आज विषमता के पाठ का दूसरा पहलू भी सीख गया। वह जान गया कि जहां बड़े आदमियों की चापलूसी किये बिना उन्नति नहीं हो सकती वहां अपने से गरीबों और नीची जात वालों को दबाए बिना, उन्हें डांटे बिना अपनी स्थिति तथा अपने रोब दाब की रक्षा नहीं हो सकती। अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए किसी छोटे आदमी को अपने सामने मुंह न खोलने देना चाहिये।

(५)

महेन्द्र अब नया आदमी बन चुका है। अपनी अदालत का वह सब से अधिक क्रूर और पाषाण-हृदय अर्दली है; गरीबों पर अत्याचार करने तथा अदालत के अधिकारियों की चापलूसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में वह अदालत भर में अपना जोड़ीदार नहीं रखता।

आज प्रातः काल जब अदालत के कर्मचारियों ने यह सुना कि महेन्द्र ने अदालत की ७० वर्ष की बुढ़िया नथिया भंगिन को उस की ज़रा सी अवज्ञा पर पीट २ कर अधमरा कर दिया है- तब उन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नथिया भंगिन जैसी गौ सी भंगिन कोई बड़ी गुस्ताखी कर ही नहीं सकती इस बात को सभी लोग भली प्रकार जानते थे।

बड़े बाबू बहुत बुद्धिमान थे। वे महेन्द्र के मनोविज्ञान का शुरु से ही अध्ययन कर रहे थे। यह घटना सुन कर उन्होंने केवल इतना ही कहा- "महेन्द्र वास्तव में अब जाकर सोसाइटी में रहने लायक आदमी बन पाया है, सोसाइटी में रहने के लिये मौके २ भेड़ और शेर दोनों बनना आवश्यक है।"

गुब्बारा

(श्री वागीश्वर जी विद्यालंकार)

मस्तक उन्नत किये हुवे यह उड़ा गुब्बारा।
चला गगन की ओर वेग से अति मतवारा।
फूला अपने अङ्ग अङ्ग में नहीं समाता
देखो तो किस अजब शान से है यह जाता ॥ १ ॥

गोरा गोरा रंग, मनोहर शोभा सारी
देख देख कर मुदित हो रहे हैं नरनारी।
छोटे छोटे बालक ताली बजा रहे हैं
कर कर के जयकार व्योम को गुँजा रहे हैं ॥ २ ॥

सब के सिर सोपान समान बना कर मानी
ऊपर है उठ रहा, चाल चलता मनमानी।
इसे जिन्होंने जन्म दिया, ऊँचा पहुँचाया
देखो हँसने लगा उन्हें ही, यह इतराया ॥ ३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा सब संसार, नहीं नर ऐसा पाया
पाकर भी अधिकार जिसे अभिमान न आया।
आने पर अभिमान, पतन में देर नहीं है
अब भी सम्हल अबोध ! यहां अन्धेर नहीं है ॥ ४ ॥

सुनले मेरी बात, खोलकर कान, गुबारे
आवेगा कुछ हाथ नहीं पीछे सिर मारे।
ईश्वर न करे, कभी दुर्दशा होवे तेरी
यह तनु सुन्दर, मलिन राख की बने न ढेरी ॥ ५ ॥

माना, प्रतिपल उदय होरहा है अब तेरा
देखो जिसे, वही सहायक है सब तेरा।
सब से उज्वल और बड़ा दिखता तू तारा
आँख उठाकर तुझे देखता है जग सारा ॥ ६ ॥

तूने इस के दिये स्नेह को अरे ! जलाया
और जला कर इस के मुख पर ही बरसाया।
फिर भी यह तो हित ही तेरा चाह रहा है
तेरा ऊपर चढ़ना देख सराह रहा है ॥ ७ ॥

तू उसका अपमान भूल कर भी मत करना
इसने जो उपकार किया वह मन में रखना।
अब तू जल्दी गर्व छोड़कर आजा नीचे
काल नहीं तो अभी टाँग लेता है खींचे ॥ ८ ॥

गरमहवा जो भरी हुई है सिर में तेरे
तुझ को चक्कर खिला रही है बिना बसेरे।
निकल जायगी ज़रा देर में ही यह सारी
जहाँ बुझ गई तुच्छ अग्नि की यह चिनगारी ॥ ९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जो तेरी मित्र समान बनी है वायू
नष्ट करेगी यही शत्रु बन तेरी आयू ।
तोड़ फाड़ कर तुझे गिरा देगी जंगल में
विषम झाड़ झंखाड़ झुण्ड में अथवा जल में ॥ १० ॥

कण्टक कुल में पड़ी देह यह छिल जावेगी
पर पद दलित हुई धूल में मिल जावेगी
यह न हुवा यदि कभी अकड़ कर तनिक चलेगा
अपनी ही इस अग्नि शिखा में शीघ्र जलेगा ॥ ११ ॥

इसी लिये मैं समझता हूँ मत इतरा तू
पाकर भी पद उच्च दर्प कर नहीं जरा तू ।
शक्ति और संपति समझ बादल की छाया
किसे इन्होंने नहीं हँसाया और रुलाया ॥ १२ ॥

—:०:—

"महर्षिकृत अष्टाध्यायी भाष्य" ।

(ले० श्री निम्बार्क)

परोपकारिणी के जखीरे में से महर्षिकृत अष्टाध्यायी भाष्य प्राप्त हुआ । हमें दुख से कहना पड़ता है कि यह अपूर्व पाणिनि व्याकरण का भाष्य खण्डित हो गया । इस की पूर्ण हस्तलिपि भी प्राप्त नहीं हुई। आज से ३।४ वर्ष पूर्व भी इस अष्टाध्यायी भाष्य के विषय में चर्चा चली थी । पं० लेखराम जी ने भी इस को प्रकाशित करने की ताकीद की थी, परन्तु वह प्रकाशित न हुआ । मध्य में अंक २ करके कुछ अंक पं० भगवद्दत्त जी की सम्पादकता में प्रकाशित हुए पर वह उद्योग भी सफल न हो सका । अब पुनः श्री रघुवीर जी एम० ए० की सम्पादकता में से वह प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ है जिस के विषय में पंजाब के 'आर्य' और 'प्रकाश' पत्रों में स्वा० वेदानन्द जी तीर्थ ने कुछ लेख प्रकाशित किए हैं जिन में इस भाष्य को महर्षिकृत होने का खण्डन किया है इस कारण पंजाब के पत्रों में परस्पर घोर "तू तू मैं मैं" चल पड़ी है जो शिष्टता की सीमा से भी बाहर होगयी है। उक्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थ महाशय जिन युक्तियों से उक्त अष्टाध्यायी भाष्य को ऋषिकृत नहीं मानना चाहते हम अपने अलंकार के पाठकों को उन युक्तियों की निःसारता मात्र दर्शावेंगे जिससे वे निष्पक्ष होकर विचार करें और महर्षिकृतभाष्य को प्राप्त करने से वञ्चित न रहें।

श्री वेदानन्द जी की पहली युक्ति यह है कि-(१) ग्रन्थकार 'इत्' संज्ञा, और 'हल' का भेद नहीं जानता (२) तद्भावित और अतद्भावित शब्दों को नहीं जानता क्योंकि वह लिखता है कि यौगिक शब्दों में जो आ, ऐ, औ हैं उन को तद् भावित कहते हैं और रूढ़ि शब्दों में जो हैं वे अतद्भावित हैं। (३) 'अस्मान्सु' तत्र चोदय० यहां 'अस्मान्सु' में 'न् सु' के मध्य के 'त्' कोयम कहा है। महर्षि इस को 'यम' नहीं मानते। (४) शब्द का लक्षण 'अथ शब्दानुशासनम्' पर न लिख कर 'अइ उण' पर लिखा है इस से ग्रन्थकार प्रसंग नहीं जानता। (३) महाभाष्य कार पतञ्जलि ने 'हयवरट्' सूत्र पर 'प्रत्याहारेऽनुबन्धानां' इत्यादि प्रकरण लिखा है। वह इस ग्रन्थकार ने हल् सूत्र पर लिखा है इस से भी यह प्रसंगवित् नहीं है।

संक्षेपतः ये युक्तियां है जिन को लेकर श्री वेदानंद जी इस ग्रन्थ को महर्षिकृत मानना नहीं चाहते और पं० भगवद्दत्त जी बी०ए० को प्रलचर और कलिचर (कबाब खोर-शराब खोर) आदि गालियों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख पत्र आर्य पत्र के पृष्ठ अतिरञ्जित करते हैं।

परन्तु वास्तव में देखने पर हमें यह युक्तियां सर्वथा निःसार प्रतीत होती हैं क्योंकि क्रम से (१ म) 'इत्' और हल् के भेद का अज्ञान भाषान्तरकार का है न कि मूल संस्कृत भाष्य कार का। दूसरे 'इत्' को यदि 'हल्' भी लिखा तो क्या अनर्थ हुआ। क्या श्री वेदानन्द जी का संन्यास लेकर मनुष्यत्व भंग हो जाता है? नहीं, तो फिर 'इत्' संज्ञा होने पर भी उसका हल्त्व कैसे नष्ट हुआ। हल् 'अनुबन्ध' 'व्यंजन' आदि शब्दों का प्रयोग करना इस स्थल पर कोई दोषकर नहीं है। तीसरे भाषान्तरकार अनुवाद नहीं करता प्रत्युत भावाशय लेकर लिखता प्रतीत होता है।

दूसरा आक्षेप भी भाषान्तरकार पर जाता है, मूल भाष्यकार पर नहीं। इसी प्रकार तीसरा दोष भी भाषान्तरकार पर है मूल भाष्यकार पर ये दूषण सर्वथा नहीं आते।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा आक्षेप बिलकुल थोथा है क्योंकि 'अथशब्दानुशासनम्' पर तो शब्द का लक्षण किया ही नहीं गया। श्री वेदानन्द जी जो कीलहार्न सम्पादित' व्याकरण महाभाष्य का प्रमाण देते हैं वह सब धोखा है। तीर्थ महोदय ने 'शब्द शब्दाभिधेय' को शब्द लक्षण कह कर पाठकों को चक्कर में डालने का प्रयत्न किया है। 'प्रतीत पदार्थक-ध्वनि' को या "येनोच्चरि सारस्ना-दियतः संप्रयत्यो भवति सशब्दः "इसको शब्द लक्षण किसी भी विद्वान् ने नहीं माना। कैयट के प्रदीप और नागेश ने उसको केवल शब्दशब्दा भिधेय पदार्थ माना है। फलतः 'प्रतीत पदार्थक ध्वनि' यह पर्याय मात्र है लक्षण नहीं क्योंकि ध्वनि के स्वरूप ज्ञान की भी आकांक्षा शेष है। महर्षि के ग्रन्थ देखे होते तो श्री वेदानन्द जी को मालूम होजाता कि महर्षि दयानन्द "श्रोत्रोपलब्धि बुद्धिः निर्ग्राह्य" इस को ही शब्द का लक्षण मानते हैं। वेदांगप्रकाश के सन्धिविषय, वर्णोच्चारण शिक्षा आदि भी देखी होती तो पाठकों को इतनी गलती में न डालते। फलतः वह लक्षण तो महाभाष्य कारने और अष्टाध्यायी भाष्यकार ने भी 'अइउण्' पर ही लिखा है। जब भाष्यकार को अप्रासंसिक नहीं लगा तो फिर इस ग्रन्थकार को क्यों अप्रासंगिक जंचता।

पाँचवीं युक्ति इस से भी अधिक निसार है। 'प्रत्याहारेऽनुबन्धानां०" प्रकरण में अनुबन्ध व्यंजनों का प्रत्याहारों में 'ग्रहण क्यों नहीं होता इस का समाधान किया है। इस प्रकरण के प्रत्यहार सूत्रों के व्याख्यान में आदि मध्य अवसान तीनों प्रसंग हैं। अष्टाध्यायी भाष्यकार ने हल पर लिखा तो क्या अनर्थ किया। यह महर्षि की शैली है कि वे प्रत्यहारप्रस्तार के साथ इस प्रकरण को दर्शाते हैं। वैसा ही सन्धि विषय में किया है और वैसा ही इस भाष्य में किया है। इस प्रकरण का खास किसी सूत्र से सम्बन्ध नहीं है प्रत्युत सभी प्रत्याहार सूत्रों से है।

इस प्रकार श्री वेदानन्द जी की पांचों युक्तियां कट जाती हैं। और वह भाष्य महर्षि कृत नहीं है इस में कोई साधक युक्ति शेष नहीं रह जाती।

इसी प्रसंग में श्री वेदानन्द जी ने पं० रघुवीर जी एम. ए पर भी बड़ी टीका टिप्पणी की है। उनके लिखे टिप्पणों में से दोष दर्शाएं हैं। वे भी इतने कच्चे हैं कि देख कर आक्षेपक पर हंसी आती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणी में कहीं लिखा मिल गया "दयानन्दसरस्वतिना", तीर्थ जी इसको अशुद्ध मानते हैं ? कारण नहीं दर्शाया क्यों अशुद्ध है ? क्या शुद्ध रूप दयानन्द सरस्वत्या है । क्याहै दयानन्द छोकरी है । इसी प्रकार 'ददामः' महृदनुसंधान' इत्यादि स्थल जो 'वृहृदाम' 'महानुसंधान' इत्यादि शुद्ध रूपों के रूपान्तर केवल प्रेस के भूतों के हाथों से हुए हैं उन पर खिल्ली उड़ाने बैठे हैं । यदि उन को ये दोष प्रेस के भूतों के या 'मानुषस्लिप' नहीं भासते तो जिस कीलहार्न को आप लेकर मैदान मारने आये थे उन पर उनके सजातियों के सम्पादित सामवेद संहिता (स्टीवन्सन एच० एच विल्सन, लण्डन) की कार्हि जेन्ड्रा एद् एडेण्डा तो देख लेते कि संशोधकों और प्रेस भूतों की लीला त्रुटियां किस प्रकार की होती हैं । और यदि बिना संशोधन पत्र के वह सामवेद संहिता हाथ लगजाय तो कहीं ये तीर्थ महोदय उन को पाठ भेद मानने लगजांय । इस संहिता में 'कृष्टि' को 'वृष्टि' प्राणा को 'भ्राणा' वभ्रो को 'वश्रो' पुरुछूतं को 'पुरुदूतं' कदामृतं को 'कदाऋतं' छापा गया है । बम्बई कलकत्ता के छापेखानों की लीला और भी विस्मयकर है ।

उक्त भाष्य महर्षिकृत ही है इस पर अभी हम कुछ नहीं लिखते परन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि इस भाष्य पर महर्षि के होने के और भी नानापुष्ट प्रमाण हैं ।

तीर्थजी ने पुस्तक के छूटे पत्रे देख कर ही कुठार उठा लिया । यदि संशोधन पत्र सहित पुस्तक को देखते तो स्यात् इतना रोष रघुवीर जी पर न करते । खैर जो हो, व्यर्थ कूंजड़ों की सी 'तू तू मैं मैं, में क्या फल होता है समझ में नहीं आता । आर्यपत्रों में निराधार बातों पर व्यर्थ एक दूसरे की पगड़ियां उछाल ना बड़ा लज्जाजनक है । इस तरह से भयंकर परिणाम भी हो सकते हैं । अस्तु हम पाठकों को सचेत करते हैं कि वे व्यर्थ शोर से उद्विग्न न होकर निष्पक्ष होकर विचार किया करें ।

साहित्य वाटिका

बाल जीवन—(गुजराती) यह बालोपयोगी सचित्र मासिक पत्र बड़ौदे से प्रकाशित होता है । इस में बालकों के लिए मनोरंजक सामग्री रहती है । कथाएँ तथा बोधप्रद जीवन चरित्र आदि रहते हैं । गुजराती बालकों की ज्ञान वृद्धि के लिए यह अच्छा प्रयत्न कर रहा है । मूल्य ३) रु०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणामूर्ति—(गुजराती) संपादक श्री नृसिंहप्रसाद भट्ट—यह त्रैमासिक पत्र भावनगर के श्रीदक्षिणामूर्ति विद्यालय से प्रकाशित होता है। यह पत्र शिक्षा के मनोवैज्ञानिक तरीके पर विशेष विचार करता है। मान्टीसोरी की शिक्षण-पद्धति द्वारा बालकों को किस प्रकार शिक्षित किया जा सकता है इस पर इस में मननीय लेख छपते हैं। शिक्षक कैसा होना चाहिए और उसके क्या कर्तव्य हैं आदि बातों पर उसमें अच्छी चर्चा रहती हैं। वार्षिक मूल्य ४) रुपये।

साबरमती—(त्रैमासिक गुजराती) यह गुजरात राष्ट्रीय विद्यापीठ अहमदाबाद के विद्यार्थियों का मुखपत्र है और इस में उन्हीं के लेख रहते हैं। नवयुवकों के लिए इसमें पर्याप्त पाठ्य सामग्री रहती है। सामान्य लोग भी लाभ उठा सकते हैं। मूल्य २) रुपये। गुजरात विद्यापीठ से प्राप्य।

प्रस्थान (गुजराती) संपादक श्री रामनारायण पाठक, गुजरात विद्यापीठ। यह गुजराती भाषा का एक उन्नत मासिक पत्र है। साहित्य, विज्ञान, धर्म तथा कला पर विद्वानों के उत्तमोत्तम लेख तथा सुन्दर कविताएँ इसमें रहती हैं। ऐतिहासिक खोज विषयक लेख भी कभी कभी छपते हैं। पत्र संग्रह के योग्य है। अलंकार के गुजराती पाठक इस से लाभ उठा सकते हैं। वार्षिक मूल्य ५) रुपये।

पता—गुजरात साहित्य भण्डार, रीचीरोड, अहमदाबाद

कौमुदी—(गुजराती) सम्पादक श्री विजयराय। यह सचित्र त्रैमासिक पत्रिका है। जो स्थान हिन्दी-भाषा में साहित्य समालोचक का है गुजराती भाषा में वही स्थल कौमुदी का है। इस में साहित्य और कला की गंभीर समीक्षा की जाती है। प्रान्तीय तथा विदेशी भाषा के साहित्य के विषय में भी चर्चा रहती है। पत्रिका उच्च कोटि की है। संपादन योग्यता पूर्ण होता है। मूल्य ४)।

प्राप्तिस्थान—कुमार कार्यालय, अहमदाबाद॥

स्वदेश—हिन्दी का साप्ताहिक पत्र है पं० दशरथप्रसाद जी द्विवेदी के सम्पादकत्व में गोरखपुर से निकलने लगा है राजनीति में प्रतिसहयोगी नीति का पोषक है। इस के लेख गम्भीर तथा विचार पूर्ण होते हैं आकार प्रताप का सा पृष्ठ संख्या १२ वार्षिक मूल्य ४)

आर्य मित्र-तथा आर्य जगत् के ऋष्यंक-प्रतिवर्ष दिवाली के अवसर पर यह दोनों पत्र ऋषि दयानन्द की स्मृति में अपने विशेषांक निकाला करते हैं इस बार भी ऐसा ही किया गया है दोनों के अंक अच्छे निकले हैं लेख सब पठनीय हैं आर्य जनता को इन्हें अपनाना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-समाचार

ऋतु—गुरुकुल में सर्दी पड़ने लगी है दिन में थोड़ी गर्मी होती है परन्तु रात को अच्छा जाड़ा पडता है। मायापुर तथा कांगड़ी दोनों स्थानों के चिकित्सालयों में कोई बीमार नहीं है

दिवाली—इस वार की दिवाली गुरुकुल में खास ढंग से मनाई गई। महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने आपस में टूर्नामेंट किया जिस में चार दल शामिल थे हाकी के सान्मुख्य में हीरक दल तथा हनुमान दल बराबर रहे। वाली बाल में चार दल शामिल हुए इस खेल में पटियाला दल ने अच्छा खेल खेला परन्तु प्रतिद्वन्द्वी श्री नाथ जी के दल से परास्त हो गया। सायंकाल को कुलवासियों की एकवृहत् सभा श्री आचार्य रामदेव जी के सभापतित्व में हुई। ब्रह्मचारियों तथा अन्य सज्जनों के ऋषि चरित्र तथा राम के जीवन पर व्याख्यान हुए। सहभोज के बाद दिवाली की गई।

अतिथि—दिवाली के दिनों में मिस लेस्टर अपने भतीजे श्रीहौग के साथ सत्याग्रहाश्रम से गुरुकुल देखने आई थीं। आप लण्डन म्यूनि सपैलिटी की ऐल्डरमैन हैं तथा ब्रिटिश लेबर पार्टी की प्रमुख सदस्य हैं। महात्मागान्धी के सत्याग्रह सिद्धान्त के प्रचार के लिये इङ्गलैंड में एक सभा है जिस की आप प्रमुख कार्य कर्त्री हैं। आप तीन दिन तक गुरुकुल में रहीं, ब्रह्मचारियों के साथ नित्य के सब कार्यों में शामिल हुईं। गुरुकुल की इंग्लिश यूनियन की ओर से आप का एक व्याख्यान "विश्वप्रेम तथा हमारे आदर्श" पर हुआ था। आप गुरुकुल से बहुत प्रभावित हुई हैं। यहां से आप शान्ति निकेतन जायेंगी।

गुरुकुल का नया स्थान—हरिद्वार स्टेशन से तीन मील पश्चिम की ओर गुरुकुल के लिये नया स्थान ले लिया गया है, नवम्बर की २ तारीख को उसकी नियमानुसार रजिष्ट्री हो गई है। इस भूमि पर कूएँ की खुदाई प्रारम्भ करदी गई है। यह स्थान हिमालय की गोद में है और अत्यन्त सुहावना है।

इलाहाबाद में इसवार दिवाली की छुट्टियों में पूर्वीय साहित्य विशारदों का वार्षिक सम्मेलन हुआ था, जिस में गुरुकुल की ओर से भी तीन प्रतिनिधि पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार, पण्डित चन्द्रमणि जी विद्यालंकार तथा पण्डित ईश्वरचन्द्र जी भेजे गये थे, आप तीनों वहां से लौट आये हैं, सम्मेलन में आप तीनों के निबन्ध खूब पसन्द किये गये। इस प्रकार गुरुकुल के विद्वानों का बाहर के विद्वानों से भी परिचय बढ़ रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल रजत जयन्ती

गुरुकुल की रजत जयन्ती का कार्य अच्छी उन्नति कर रहा है। लाहौर में रजत जयन्ती का कार्य करने के लिये वहां की समाज की ओर से पृथक् कार्यालय खोल दिया गया है, इस के मंत्री पंडित भीमसेन जी विद्यालंकार नियत हुए हैं। इस कार्यालय द्वारा लाहौर में गुरुकुल के लिये धन संग्रह का काम ज़ोर शोर से प्रारम्भ कर दिया गया है। इस कार्यालय ने ३५ हज़ार जयन्ती के नोट मंगवाये हैं और अधिक मंगवाने का वचन दिया है। लाहौर समाज का यह कार्य अति प्रशंसनीय है, यदि अमृतसर, दिल्ली, आदिस्थानों के गुरुकुल प्रेमी भी अपने कर्तव्य को समझें तो वे अपने यहां अच्छा कार्य कर सकते हैं। आशा है आर्य जनता इस विषय में लाहौर समाज का अनुकरण करेगी।

जयन्ती के डेपुटेशन—धन संग्रह का कार्य करने के लिये पण्डित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार तथा पण्डित धर्मदत्त जी विद्यालंकार का डेपुटेशन जोधपुर उदयपुर आदि रियासतों में भेजा गया है।

बरमा, मध्यप्रदेश, मध्य भारत, मालवा तथा सिन्ध के डेपुटेशनों के लिये भी पत्र व्यवहार हो रहा है, यहां शीघ्र ही डेपुटेशन भेजे जायेंगे।

आज कल गुरुकुल में पाठ प्रारम्भ है यहां से उपाध्याय तथा अन्य कार्य कर्त्ताओं को बाहर भेजने में कठिनता है फिर भी समय २ पर उन को भेजा जा रहा है परन्तु जयन्ती जैसे महान् कार्य के लिये जब तक आर्य समाज की सारी संगठित शक्ति गुरुकुल के अधिकारियों के कार्य में सहायक नहीं होती तब तक इस कार्य को पूरा करना कठिन है। जयन्ती में केवल चार मास बाकी हैं गुरुकुल के लिये १० लाख रुपये की अपील की गई है इन चार मासों में इस राशि का पूर्ण होना आवश्यक है आशा है आर्यजनता तथा राष्ट्रीय शिक्षा के प्रेमी अपने कर्तव्य को समझेंगे तथा शीघ्र से शीघ्र गुरुकुल के लिये धन संग्रह के कार्य में लग जावेंगे।

मुख्याधिष्ठाता जी सूचित करते हैं कि नये बालकों को गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में प्रविष्ट करवाने वाले सज्जनों को अपने बालकों के प्रवेश पत्र ३१ दिसम्बर १९२६ तक कार्यालय में भेज देने चाहिये। गुरुकुल के नियम और प्रवेश के फार्म कार्यालय गुरुकुल काँगड़ी जिला बिजनौर से मंगवालें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए, अमूल्य ग्रन्थ-रत्न संपूर्ण छप गया

वेद के प्रेमी अवश्य पढ़ें!

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न
वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी का बनाया

वेदार्थदीपक निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़ें। यह यास्क मुनि के प्रसिद्ध 'निरुक्त' का हिन्दी में सरल, सरस तथा सुबोध भाष्य है जो कि दो भागों में समाप्त हुआ है और डाक-व्यय रहित कीमत केवल ७) रुपया है। अनेक सूचीपत्र देकर ग्रन्थ को बहुत अधिक उपादेय बनाया गया है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा एम. ए. पी. एच. डी वाइस-चान्सरल इलाहाबाद युनिवर्सिटी, प्रिन्सिपल गवर्नमैण्ट कालेज काशी, प्रिन्सिपल हिन्दू विश्वविद्यालय काशी, श्री रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० घासीराम जी एम. ए. प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त, श्री सातवलेकर जी संपादक वैदिक धर्म, श्री मा० आत्माराम जी राज्यरत्न बड़ोदा, भारत के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एलएल. बी. वाइस चान्सरल तिलक-विद्यापीठ पूना, इत्यादि प्रसिद्ध महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, और सभी ने वेदप्रेमियों से अनुरोध किया है कि वे इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। महाभारत में लिखा है कि निरुक्त शास्त्र के प्रचार के बिना वैदिक कर्म-काण्ड लुप्त हो गया था। यदि आप वेद का सच्चे अर्थों में प्रचार करना चाहते हैं, तो इस निरुक्तभाष्य को अवश्य पढ़िए। वेदार्थ करने की कुञ्जी 'निरुक्त' को प्राप्त किए बिना वेद के खज़ाने को पाना केवल स्वप्न देखना है।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्ता 'अलंकार'
डा० गुरुकुल कांगड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य पर अंग्रेज़ी में अपूर्व पुस्तक

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस पुस्तक की भूमिका श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखी है। इस में ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले विविध विषयों पर वैज्ञानिक रीति से भाव-पूर्ण १२ अध्यायों में विचार किया गया है। १६ वर्ष से ऊपर की आयु वाले हरेक अंग्रेज़ी जानने वाले के हाथ में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। २२५ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुनहरी जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ३) । इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम हो जायगा कि इस विषय पर ऐसी योग्यता से लिखी हुई पुस्तक आप ने पहले नहीं पढ़ी होगी। खुद पढ़ो और अपने मित्रों को पढ़ने को दो।

'हैण्ड-ट्रेनर'

जिन्हें सुलेख लिखना न आता हो उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू का सुलेख सिखाने का अत्यन्त सरल नया तरीका आविष्कृत हुआ है, इसका नाम 'हैण्ड ट्रेनर' है। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हरेक भाषा के सेट की कीमत अलग अलग दो रुपया।

'बिजली के जेबी लैम्प'

बिजली के जेबी लैम्प पूरे तैयार तीन किस्म के हमारे पास हैं। अत्युत्तम ३); उत्तम २॥); साधारण २)। पहली बैटरी ख़र्च होने पर नई की ज़रूरत हुआ करती है, उसे हम १।) में भेज सकते हैं। डाक का ख़र्चा हम अपना करेंगे।

'किटसन लैम्प'

मुकम्मिल, मय सोलह इञ्च टांकी और सिंगल पम्प का किटसन लैम्प ३०); वही डबल पम्प सहित ३५)। कारबाईड दीवालगीर लैम्प २)।

हम उचित कमीशन मिलने पर बम्बई से मार्केट के भाव पर आप की चीजें ख़रीद कर भेज सकते हैं।

पता—दी शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी, कारनक रोड, बम्बई (२)

तार का पता	पोस्ट बौक्स नं०	टैलीफ़ोन नं०
Linkclip-Bombay	२१३५	२१४८०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदाक़त खुद ब खुद कर देती है शोहरत ज़माने में।
मुनाफ़ा इस क़दर रखिये नमक जितना हो खाने में॥

(१) गंगाविष्णु नैनामृताञ्जनः—यह सफ़ेद सुरमा शिरीष की जड़ में ६ महीने रख कर तथा अन्य वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध करके १ साल की लगातार मेहनत के पश्चात् तय्यार किया गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह सुरमा आंखों की निम्न बीमारियों में अकसीर साबित हो चुका है—

नेत्रों में ख़ारिश का उठना, रतौंधी, दूर अथवा समीप की वस्तु का साफ़ २ नज़र न आना, धूप में जाते ही आंखों का गरमी से चौंधिया जाना, देर तक किसी वस्तु अथवा पुस्तक की ओर नज़र का न टिकना, आंखों से पानी का गिरना, नज़्ले की वजह से आंखों की कमज़ोरी और विशेष करके आजकल के नवयुवकों तथा वृद्धों के लिये यह सुरमा अक़सीर साबित हो चुका है। कीमत २) तोला रखी गई है। ३ माशा ॥), ६ माशा १), १ तोला २)

(२) कुक्करों का शर्तिया इलाजः—एक आश्चर्य जनक औषधि। यह कोई शास्त्रीय नुस्खा नहीं है। परन्तु किसी अनुभवी वृद्ध सन्यासी का जादू है। देखने में बिलकुल मामूली खाली बत्तियें नज़र आती हैं परन्तु इसके ४, ५ दिन के इस्तेमाल से ही आपको निहायत फ़ायदेमन्द साबित होंगी—

यह बत्तियाँ आंखों के पुराने से पुराने रोहें, सुर्खी तथा पड़वाल और पानी के झर २ गिरने के लिये अकसीर है। फ़ायदे इसके अन्य भी हैं परन्तु आप इसकी एक बार परीक्षा करके हमेशा के लिये इसको अपने पास रखना चाहेंगे। सेवन विधि दवाई के साथ भेजी जाती है।

(३) मस्तिष्क पौष्टिकः—विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, क्लर्क और व्याख्याता आदि जिन्हें काम करके काफ़ी देर के लिये आराम की ज़रूरत पड़ती है, उनकी दिमाग़ी ताकत को स्थिर रखनेके लिये यह दवाई अद्वितीय है। कम से कम १५ दिन या १ महीना इसके सेवन करने से आश्चर्यजनक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इससे आपअपने काम को दिल से कर सकेंगे तथा दिमाग़ी ताकत को ज्यादा नहीं खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिये अमृत है। केवल एक बार परीक्षा की ज़रूरत है। १ शीशी १५ दिन के लिये २)

(४) केशरञ्जन खिजावः—जहां अन्य खिजावों के लगाने से काली चमड़ी होने के सिवाय बालों की जड़ें कमज़ोर होकर झड़ने लग जाती हैं, वहां इस के सेवन से बाल काफ़ी अरसेके लिये काले तथा ख़ास चमकीले मालूम देते हैं। यह दो चीज़ें हैं--एक खुश्क, दूसरी तर। दोनोंको उचित मात्रामें मिला कर ब्रशसे इस्तेमाल करने से बालोंमें ख़ास चमक आती है। १ शीशी १।)

पता—पं० विष्णुदत्त विद्यालंकार, अलंकार आयुर्वेदिक फार्मेसी, कूचा लाड्डूमल, लुधियाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे दाम में !!!

१. महावीर गेरीवाल्डी—ले०श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। आधा मूल्य॥=)

मौडर्न रिव्यू—गेरीवाल्डी का जीवन केवल व्यक्ति का जीवन नहीं परन्तु स्वाधीनता का जीता जागता इतिहास है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त रोचक है—पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी है। हम इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत करते हैं।

माधुरी—विशेष महापुरुषों के जीवन चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षाप्रद होते हैं। यह जीवन चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है। भाषा रोचक और मर्मस्पर्शिनी है। नवयुवकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए

श्री शारदा—इसकी भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इस में उपन्यास का सा आनन्द आता है। मनोरञ्जन के साथ २ उपदेश की भी मात्रा रक्खी है। विषय का क्रम भी यथोचित रीति से जमाया गया है। पुस्तक में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख है जो महत्वशालिनी हैं, जिनका ज्ञान सर्वसाधारण को अपेक्षित है। यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी, विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिन्दी साहित्य में अनूठी है। हमारा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें। पुस्तक में इटली के आठ महान् व्यक्तियों के चित्र भी हैं।

२. प्राचीन भारत में स्वराज्य लेखक—श्री पं० धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार—आधा मूल्य ॥।)

प्रो० विधुभूषण दत्त जी M.A.—हमारे आर्य प्रजासत्तात्मक तथा प्रतिनिधिसत्तात्मक शासन प्रणालियों से अपरिचित न थे, प्रजा ही राजा को चुनती थी इत्यादि बातों को सिद्ध करने के लिये प्रमाणों और उदाहरणों को इकट्ठा करने में लेखक ने सराहनीय परिश्रम किया है। पुस्तक की लेखनशैली मनोरञ्जक है। विचार करने के लिये सभी को इस पुस्तक में बहुत सामग्री प्राप्त हो सकती है।

३. वैदिक विवाह का आदर्श—ले० श्री पं० नन्दकिशोर जी विद्यालंकार—आधा मूल्य ।-)

बाबू भगवान दास जी काशी—विवाह क्या है, किस से, कैसे, किस लिए और कब विवाह करना चाहिए—यह पुस्तक में बतलाया गया है। वैदिक विवाह पद्धति अन्य विवाह पद्धतियों से क्यों श्रेष्ठ है, यह अच्छी तरह बतलाया गया है। इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए।

४. सन्तजीवनी—ले० स्व० श्री गिरिजा कुमार घोष—भारत के प्रसिद्ध महात्माओं-कबीरदास, गुरुनानक, गोस्वामी तुलसीदास आदि के विस्तृत जीवन चरित बड़ी मनोरंजकता से लिखे गए हैं। आधा मूल्य ।)

५. बिखरे हुए फूल—यह पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की बिल्कुल नए ढंग का, नए विषयों पर अद्भुत कविताओं का संग्रह है। आधा मूल्य ≡)

मैनेजर—साहित्यपरिषद् पुस्तक भण्डार; गुरुकुल काङ्गड़ी (हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी के **भीमसेनी सुरमे** की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुंधला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत ५) पांच रुपया फ़ी तोला

सुधाधारा—इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं, जिससे रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों खरीदें? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाजार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है। जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने ।)

नोटः—अन्य दवाइयों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये।

पताः—गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसी देहली नं० १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा
जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड
८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिंधु

(बिना अनुपान की दवा)
यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २तक ।≈)

दद्रुगजकेशरी

दाद की दवा.
बिना जलन और तकलीफ के दादको २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च, १ से २ तक ।≈), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवाको मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।)
पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिये, मुफ्त मिलेगा।
यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

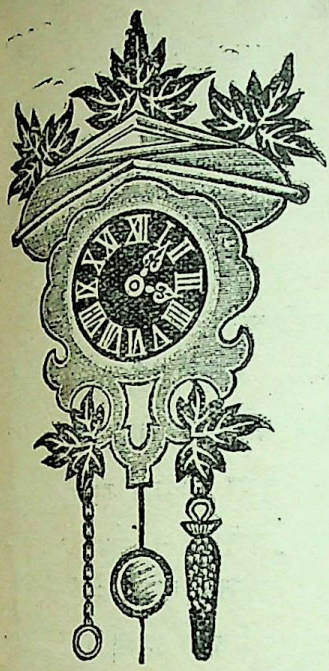

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेज दो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

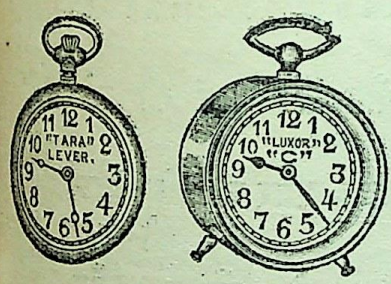

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिये है। जल्दी मंगवाये, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पताः—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

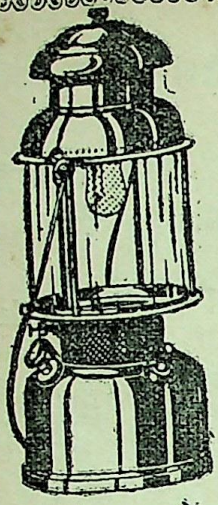

रोशनी

का

भण्डार

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टोर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिये। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती है। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटेन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती। इसमें केरोसीन आयल या पैट्रौल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मेन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का वजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इँच, तथा चिमनी अबरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३॥।) फ़ी दर्जन

दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्जन

प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ६) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता:—

रविवर्मा स्टील वर्कस अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

रूह शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

गृहस्थियो! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो!

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में **"कामधेनु"** सेवन कराइये मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़िल्यूञ्जा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

आविष्कर्ता---भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

मंगाने का पता--भद्रसेन गुप्ता नयां बाज़ार देहली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

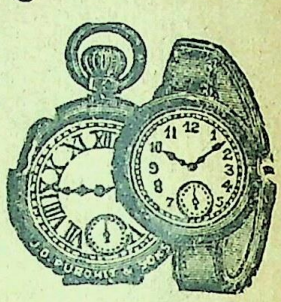

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चोताला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी।) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥) १२ शीशीका २) रु०

इस तैल के साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की

चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर मालवापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पता:—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A ; 1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

पौष १९८३ दिसम्बर १९२६

वर्ष ३] [अङ्क ७

मुख्य संपादक

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ से
१. 'चूक' (कविता) श्री पं० वागीश्वर जी विद्यालंकार	२९३
२. ईश्वर का स्वरूप—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार	२९४
३. चार धर्मों की तुलना—श्री कृष्णानन्द जी	२०१
४. जीवन-तत्व (कविता)—श्री शान्तिस्वरूप जी विद्यालंकार	२०७
५. "साम्यवाद"—श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति	२०७
६. पुरी--यात्रा—श्री पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार	२१२
७. 'प्रदीप की कथा' (कविता)—श्री शंकरदेव जी	२१८
८. सम्पादकीय	२१९
९. गुरुकुल समाचार	२२२
१०. साहित्यवाटिका	२२३

ग्राहकों से निवेदन

१. अलंकार पत्र प्रत्येक देशी मास के प्रथम सप्ताह में ग्राहकों के पास पहुंच जावेगा।

२. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे तो पहले डाकघर से पूछना चाहिये यदि पता न चले तो डाक-घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्ता के पास भेज देना चाहिये। यह सूचना देशी मास के तृतीय सप्ताह तक अवश्यमेव पहुंच जानी चाहिये। अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य न दी जावेगी।

३. पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य देनी चाहिये अन्यथा उत्तर न दिये जाने के हम दोषी न होंगे।

४. पत्रोत्तर के लिए जबाबी कार्ड या टिकट साथ भेजना चाहिये।

५. पत्र—व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता पूरा और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये।

६. भावी ग्राहकों को चाहिये कि वे रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहकों को और हमें, दोनों को कष्ट होता है। पैसे लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है।

७. नमूने का अंक बिना मूल्य किसी को न भेजा जावेगा।

८. प्रबन्ध सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी (जि० बिजनौर) के पते से करना चाहिये।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क ७] मास, पौष [पूर्ण संख्या ३१

अलंकार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

चूक

(श्री पं० वागीश्वर जी विद्यालंकार)

चारु प्राची दिशा मुसकराई, फूल फूले लता लहलहाई।
कूक कोकिल ने मीठी सुनाई, या तुरी थी किसी ने बजाई।
हाय, मैंने न आंखें उघारीं, पास आई तुम्हारी सवारी॥ १॥

पूर्व आकाश था जगमगाया, रथ सुनहला उधर दृष्टि आया।
धन्य थे वे-न अवसर गँवाया, पा लिया दिव्य दर्शन सुहाया।
हाय, मैंने न की कुछ तयारी, पास आई तुम्हारी सवारी॥ २॥

लोग गर्मी में हल थे चलाते, हर कदम पर पसीना बहाते।
मेघ आये जगत को जिलाते, खेत उन के खड़े लहलहाते।
हाय, मैंने न क्यारी सँवारी, पास आई तुम्हारी सवारी॥ ३॥

स्वाति नक्षत्र की मेघमाला, आई, पानी लिये जादु वाला।
सीपियों ने हृदय खोल डाला, पाया मोती अमोलक निराला।
हाय, मैंने पिया वह न वारी, पास आई तुम्हारी सवारी॥ ४॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर का स्वरूप

(ले० –प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

[वह क्या है]

किसी प्रकार जब हम परमात्मा की सत्ता तक पहुंच जाते हैं तब प्रश्न होता है कि उसका स्वरूप क्या है ?

हमने देखा था कि वह संसार का कारण है। कारण का अभिप्राय क्या है ? मनुष्य में कारण की आकाङ्क्षा उसे कहाँ ले जाती है ? जब मैं संसार के कारण को ढूँढ रहा हूं, उस समय यदि मुझे कोई ऐसा कारण बतला दिया जाय जो 'कारण' तो हो परन्तु स्वयं भी 'कार्य' हो और उसका भी कारण मुझे ढूँढना पड़े तो वह 'कारण ढूँढने की आकाङ्क्षा' को पूरा नहीं कर सकता। कारण ढूँढने का अभिप्राय ऐसा कारण ढूँढने से है जो सब का कारण है, परन्तु जिस का कारण नहीं, क्योंकि वह स्वयं कार्य नहीं। तभी कारण की जिज्ञासा शान्त हो सकती है, अन्यथा, मृग-तृष्णिका की तरह वह कभी शान्त ही न होगी। इस लिये यदि परमात्मा कारण है तो वह आदि-कारण (Uncaused Cause) होना चाहिये, नहीं तो कारण ढूँढने की आकाङ्क्षा ही निरर्थक है। इसी दोष को भारतीय दर्शनों में 'अनवस्था' दोष के नाम से कहा गया है। यदि वह आदि-कारण स्वयं कार्य नहीं है तो वह अनादि और अनन्त भी होना ही चाहिये क्योंकि वैसा न होने से वह 'कार्य' हो जाता है। कार्य-कारण के नियम के पीछे चलते हुए हम उस कारण की कल्पना करते हैं इस लिये यह भी मानना पड़ेगा कि वह कार्य-कारण के नियम को तोड़ नहीं सकता, अभाव से उत्पत्ति नहीं कर सकता। इसी लिये वह संसार का निमित्त कारण (Efficient cause) है उपादान कारण (Material cause) नहीं।

ईश्वर को सिद्ध करने वाली दूसरी युक्ति में हमने देखा था कि संसार में बुद्धि का प्रयोग पाया जाता है, नियम तथा व्यवस्था दीख पड़ते हैं। अतः स्पष्ट है कि वह कारण बुद्धिमान्-चेतन होना चाहिये।

ईश्वर प्रतिपादक तीसरी युक्ति से हमने देखा था कि वह कर्म-फल का नियन्ता है; इस लिये कर्म फलों का नियमन करना भी ईश्वर का ही गुण हुआ। ईश्वर 'अभाव' से 'भाव' को नहीं पैदा करता इसलिये जीवात्मा को पैदा नहीं कर सकता। यदि जीवात्मा पैदा नहीं हुआ तो वह नित्य है। 'नित्य जीवात्मा के कर्म फल का ईश्वर नियमन करे'—इस का यही अभिप्राय है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि, 'जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में परतन्त्र है।'

चौथी युक्ति के अनुसार मानना पड़ेगा कि यह अनादि, अनन्त, चेतन, कर्माध्यक्ष निमित्तकारण सीमारहित (Infinite) होना चाहिये। जब हम 'आधी' रोटी माँगते हैं तो उसका यह अभिप्राय होता है कि हमें 'पूरी' रोटी का ज्ञान है। इसी प्रकार जब हम संसार में अपूर्णता अनुभव करते हैं, उसका यही अभिप्राय है कि हमें 'पूर्णता' का ज्ञान है। इसी युक्ति का हमने 'तत्र निरतिशयं सार्वज्ञ बीजम्' या A Priori Argument के नाम से वर्णन किया था। परिमाण, सुख, ज्ञान आदि थोड़े अंशों में प्रत्येक को अनुभव होते हैं परन्तु जबतक निस्सीम का ज्ञान न हो तब तक थोड़े का ज्ञान कैसे हो सकता है? दूसरे शब्दों में जब तक 'पूरी' का ज्ञान न हो तब तक 'आधी' का ज्ञान कैसे हो सकता है? इस में सन्देह नहीं कि हमें ज्ञान होते हुए भी मालूम न हो परन्तु हमने अभी देखा कि जब तक इन गुणों का ज्ञान मनुष्य में स्वाभाविक तौर पर न मान लिया जाय तब तक वह 'आधी रोटी' भी खा नहीं सकता!

इसके अतिरिक्त परमात्मा के उक्त गुणों को पूर्ण मानने का एक और भी कारण है। यदि इन गुणों को पूर्ण न मान कर सीमित (Finite) मानलें तो इस सीमित कारण की परिधि से बाहर जो कुछ होगा वह 'कारण रहित' हो जायगा। इसी भाव को हर्बर्ट स्पेन्सर ने अपने 'फ़र्स्ट प्रिन्सिपल्स' पृ० २७-२८ में प्रकट करते हुए लिखा है कि आदि कारण निस्सीम भी होना ही चाहिये। यदि उसे सीमा रहित मान लिया जाय तो उसे 'पूर्ण' मानना भी आवश्यक है क्योंकि सीमारहित होने का ही दूसरा नाम पूर्ण होना है। यदि वह पूर्ण है तो सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान्, सर्वव्यापक, स्वतन्त्र तथा आनन्द स्वरूप भी है क्योंकि ये गुण पूर्णता के अवश्यम्भावी परिणाम हैं। इन में से एक गुण भी न हो तो वह पूर्ण नहीं रहता।

परिणाम यह निकला कि परमात्मा है, वह संसार का अकारण निमित्त कारण (Uncaused Efficient Cause) है, वह चेतन है, कर्मों का अधिष्ठाता है, पूर्ण है और इसी लिये आनन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक तथा स्वतन्त्र है। इस प्रकार के परमात्मा के विचार को 'पुरुषविशेषवाद' (Personal conception of God) कह सकते हैं—'शरीरी पुरुष वाद' (Anthropomorphic conception of God) नहीं कह सकते। इसी लिये योग दर्शन में लिखा है,—"क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः"।

परमात्मा के न्यायकारी तथा दयालु ये दो गुण भी कहे जाते हैं। कइयों का विचार है कि परमात्मा या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो न्यायकारी ही हो सकता है, या दयालु ही; दोनों नहीं; क्योंकि दोनों में परस्पर विरोध है। हमारा विचार है कि इन में विरोध नहीं—ये दोनों गुण मिल कर एक गुण बनते हैं। क्योंकि हम 'कार्य-कारण' के नियम को मानते हैं इस लिये हमें मानना ही पड़ता है कि परमात्मा न्यायकारी है, अर्थात् कार्य-कारण के नियम को अविरत जागृत रखता है। परन्तु बदला लेना भी तो कार्य-कारण का ही फल है। किसी ने मुझे पत्थर मारा तो मैं उसे पत्थर मारूं, यह भी तो कार्य-कारण का ही स्वरूप है। यहूदियों के पुराने अहकनामे में लिखा है कि यदि तुम्हारी कोई आँख फोड़े तो तुम भी उसकी आँख फोड़ दो, दाँत तोड़े तो दाँत तोड़ दो (An eye for an eye and a tooth for a tooth)। परन्तु यह बदले (Retaliation) का भाव है। परमात्मा 'न्याय' ही नहीं करता, वह 'दया' भी करता है। दया करने के लिये वह 'बदला' (Retaliation) नहीं लेता परन्तु 'सुधार' (Reformation) करता है। परमात्मा सुधार के लिये दण्ड देता है, इसी के लिये दूसरे शब्द हैं, परमात्मा दयालु और न्यायकारी है।

परमात्मा का स्वरूप जानने के लिये इतना ही आवश्यक नहीं है कि 'वह क्या है', इसके साथ यह जानना भी आवश्यक है कि 'वह क्या नहीं है?'

[वह क्या नहीं है ?]

क. अनेक देवतावाद-(Polytheism) परमात्मा, जिसका हम अभी प्रतिपादन कर चुके हैं, अनेक नहीं परन्तु एक है। पुराणों में अनेक देवता वाद माना गया है। ईसाई लोग भी 'तीन में एक और एक में तीन' (Trinity) के सिद्धान्त को मानते हैं जो अनेक देवता-वाद ही है। हमें समझ नहीं आता कि यदि सचमुच अनेक देवता हैं तो संसार में एकता कैसे आ सकती है? थियोसोफिस्टों का कथन है कि परमात्मा प्रधान देवता है और उसे अपनी सहायता के लिये अन्य देवताओं की आवश्यकता होती है जैसे वायसराय को अन्य शासकों की। यदि यह बात मान ली जाय तो परमात्मा का सर्वज्ञत्व, सर्वशक्तिमत्त्व—सभी कुछ छोड़ना पड़ता है। कइयों का कथन है कि वेद में भी बहुदेवपूजा पायी जाती है परन्तु—'स एक एव एकवृदेक एव'—'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'—आदि मंत्रों से सिद्ध है कि यह बात भ्रम है।

ख. वेदान्तवाद-(Pantheism):- परमात्मा ही परमात्मा हो, अन्य कुछ भी न हो, यह बात भी अशुद्ध है। वेदान्ती, सूफ़ी या Pantheists इस बात का क्या उत्तर देंगे कि यदि पूर्ण ब्रह्म से ही जगत् का विकास हुआ है तो इस में त्रुटि कहाँ से आयी? बराई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे उत्पन्न हुई ? यदि यह मान लिया जाय कि सब कुछ परमात्मा का ही विकास है तो इस से दुराचार भी बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त, एक से अनेक का होना समझ में भी कैसे आ सकता है ? एक से अनेक हो ही नहीं सकता। एक तो सदा एक ही बना रहेगा। एक को अनेकता में लाने वाला जो भी कारण होगा वह एक के बाहिर का ही होगा। इसलिये मानना पड़ता है कि परमात्मा के अतिरिक्त भी कुछ है। वह क्या है? वह है 'संसार'! संसार में हमें दो सत्ताएं दीखती हैं-'प्रकृति' तथा 'जीव'। ईसाईयों का कथन है कि ईश्वर ने ही इन दोनों को भी पैदा किया। इस अवस्था में अभाव से भाव की उत्पत्ति मानने के साथ यह भी मानना पड़ता है कि परमात्मा ने किसी जीव को अच्छा और किसी को बुरा, जैसी मर्ज़ी आयी वैसा बना दिया। यदि ऐसा नहीं तो ये तीनों नित्य हैं। वेद कहता है-'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया'-अर्थात् ब्रह्म, जीव तथा प्रकृति नित्य अनादि सत्ताएँ हैं। कइयों का कहना है कि यदि तीनों नित्य हैं तब तो प्रकृति तथा आत्मा भी परमात्मा के बराबर हो गए! परन्तु यह ठीक नहीं। बराबरी एक गुण के बराबर हो जाने से नहीं हुआ करती। प्रकृति जड़ है, सीमित है; आत्मा अल्पज्ञत्वादि बन्धनों से घिरा हुआ है; परमात्मा सब सीमाओं तथा बन्धनों से ऊपर है। कइयों का कहना है कि यदि परमात्मा, प्रकृति तथा जीवात्मा को पैदा नहीं कर सकता तो सर्वशक्तिमान् नहीं रहा। यह शंका ऐसी ही है कि जैसे कोई कहे कि यदि परमात्मा अपने जैसे ही और बीस परमात्माओं को पैदा नहीं कर सकता या आत्मघात नहीं कर सकता तो वह सर्वशक्तिमान् न रहा। असल बात यह है कि परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वज्ञता आदि गुणों के लिये प्रकृति तथा जीवात्मा का भी अनादि, अनन्त होना आवश्यक है। परमात्मा के ये गुण नित्य हैं; और क्योंकि इन गुणों का सम्बन्ध प्रकृति तथा जीवात्मा के साथ है इसलिये उन्हें भी नित्य मानना ही पड़ता है। नहीं तो कल्पना करनी पड़ेगी कि जिस समय प्रकृति तथा जीव नहीं थे, उस समय परमात्मा में ये गुण भी नहीं थे।

ग. शरीरी पुरुषवाद—(Anthropomorphic Conception of God):-

यूनानियों की एक कथा है कि जङ्गल के जानवरों ने सभा की। हाथी ने परमेश्वर के स्वरूप पर व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। कहा कि परमात्मा बहुत ही मोटा ताज़ा है। उसके कई मील लम्बी सूंड है, योजनों लम्बे दाँत हैं। शेर ने उठ कर कहा,—नहीं, यह कैसे हो सकता है ? परमात्मा की शक्ल तो मुझ सी है। उसके दो दो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ गज़ लम्बे नाखून हैं। उसने परमात्मा को एक भारी शेर सिद्ध कर दिया। यहूदियों तथा मुसलमानों के परमात्मा का भी यही स्वरूप है। पुराने अहकनामे में * 'जिहोवा' के हाथ पांव, उसके चलने-फिरने सभी का जिक्र आता है। क्योंकि हज़रत मुहम्मद ने भी यहूदियों के ही परमात्मा के विचार को कुछ सुधार कर अपने धर्म में जारी किया इसलिये उन का परमात्मा भी एक बड़ा भारी मनुष्य है। 'अवतार वाद' तथा 'मूर्ति-पूजा' इसी कोटि के विचार हैं। मनुष्य को परमात्मा मान लेने में जितने दोष आ सकते हैं वे सभी इस विचार में मौजूद हैं।

कइयों का कहना है कि यदि परमात्मा के हाथ-पाँव न माने जायँ तो सृष्टि की रचना भी नहीं हो सकती। सब कार्य 'हस्तस्पन्दनादियुक्तकृति' से होता है। इस लिये शरीरी-पुरुष के रूप से ही परमात्मा का मानना संगत है। परन्तु यह बात अशुद्ध है। हस्तस्पन्दन स्वयं एक कार्य है। मेरे हस्त-स्पन्दन का कारण कौन सा हस्त-स्पन्दन है? कोई दूसरा तो है नहीं? और मेरे हस्त-स्पन्दन का कारण मेरा ही हस्त-स्पन्दन हो नहीं सकता क्योंकि 'कार्य' अपना ही 'कारण' नहीं हो सकता। अतः मानना पड़ेगा कि मेरा हस्त-स्पन्दन, हस्त व्यापार रहित कृति से होता है। इसी प्रकार अंकुर का दृष्टान्त लिया जा सकता है। अंकुर बढ़ता है परन्तु उस में हस्त-व्यापार-युक्त-कृति दिखाई नहीं देती। अतः अंकुर भी बिना हस्त-स्पन्दन वाली कृति का कार्य है। यह कृति जिस में रहे उसे कर्ता या परमेश्वर कहते हैं। इसी भाव को

---

* "And they heard the voice of the Lord God walking in the Garden in the cool of the day and Adam and his wife hid themselves from the presence of the Lord God amongst the trees of the garden"

"And the Lord God called unto Adam and said unto him, where art thou?" Genesis chap. 3—8.9.

"And the Lord smelled a sweet savour; and the Lord said in his heart, I will not again curse the ground any more for man's sake" Genesis chap. 8—21

"I do set my bow in the cloud and it shall be a token of a covenant between me and the earth" Genesis chap. 9—13.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गंगेशोपाध्याय ने 'ईश्वरानुमान' में लिखा है।*

घ. एकनिष्ठ अनेक देवता वाद—(Christian Conception of God):—यद्यपि अनेक देवतावाद में इसका ज़िक्र आ चुका है तथापि, क्योंकि ईसाइयों का विश्वास अपने ढङ्ग का एक ही है इसलिये इस पर भी कुछ शब्द लिख देना आवश्यक है। पुराने अहकनामे की अपेक्षा नये अहकनामे का परमेश्वर का विचार कुछ ऊँचा है परन्तु उस में अनेकता का अंश जोड़ कर उसे नीचा कर दिया गया है। 'फ़ादर', 'सन' और 'होली घोस्ट'—इन तीन को एक और एक को तीन माना गया है जिसे 'ट्रिनिटी' के नाम से पुकारा जाता है। तीन एक हैं और एक तीन हैं—यह न जाने किस गणित शास्त्र से सिद्ध किया जा सकता है? यदि इन तीन का यही अभिप्राय है कि एक ही परमात्मा के ये तीन स्वरूप हैं तो तीन ही क्या हम सैंकड़ों स्वरूप मानने को तैय्यार हैं। पुराणों में जो भिन्न २ देवता प्रचलित हो गये उस का मुख्य कारण यही था कि परमात्मा के एक २ गुण को अलग २ व्यक्ति-विशेष मान लिया गया। ऐसा मालूम पड़ता है कि अलेग्जैन्ड्रिया स्थान पर ईजिप्ट के सम्पर्क में आने से ईसाइयत में त्रित्व का भाव घुस आया। 'कौनलिक्ट बिटवीन रिलिजन एण्ड साइन्स' * के लेखक ड्रेपर महोदय लिखते हैं कि अन्य धर्मों के सम्पर्क में आने से ईसायत में अनेक नवीन विचारों ने प्रवेश किया। ईजिप्ट में, जिसे त्रित्ववाद का घर समझना चाहिए, एक विवाद उठा। उस समय 'एरियस' नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसने कहा कि कोई समय ऐसा था जब 'God the Son'—'सन' अर्थात् 'पुत्र' होने के कारण मौजूद नहीं था। पुत्र पिता के साथ कैसे हो सकता है? परन्तु इस कथन का अभिप्राय यह था कि एरियस के मत में 'फ़ादर', 'सन' और 'होली घोस्ट' की

+ "जन्यमात्रं हस्तादिव्यापारजनककृतित्वेन न जनकत्वम्। चेष्टायां क्षित्यादौ भिव्य चचारात्॥"

"तत्र यदि हस्तादिव्यापार कृतिमान् क्षेत्रज्ञोऽभिमतस्तदा हस्तादिव्यापारस्याङ्कुरे योग्यानुपलम्भबाधात्। अथ हस्तादिव्यापार शून्यः कृतिमान् अभिमतस्तदा ओमित्युत्तरम् स एव भगवान् ईश्वरः।"—ईश्वरानुमान।

* "As years passed on, the faith described by Tertulian was transmuted into one more fashionable and more debased. It was incorporated with the old Greek mythology..... Views of Trinity, in accordance with Egyptian traditions, were established."

Conflict between Religion and Science-p-47.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ताएँ सम-कालीन नहीं हैं ! इसी विषय पर सिकन्दरिया में विवाद उठ खड़ा हुआ । सिकन्दरिया के यूनानी तथा यहूदी लोग नाटकों में मख़ौल करने लगे और कहने लगे कि बेटा और बाप इकट्ठे पैदा होते हैं, दोनों की उम्र बराबर होती है । विवाद इतना बढ़ा कि कौंस्टैन्टाइन को Council of Nicea बुलानी पड़ी जिस में त्रित्ववाद को वह स्वरूप दिया गया जो इसका इस समय ईसाइयत में पाया जाता है। कौंस्टेन्टाइन ने राज्य-शक्ति की सहायता से इस विचार का प्रचार किया, नहीं तो इस की युक्तियुक्तता में ईसाइयों को सन्देह अवश्य होना चाहिये। कई विचारशील ईसाई इस सिद्धान्त को नहीं मानते और इस लिये उन्होंने 'युनिटेरियन चर्च' की स्थापना भी की है। हमारा विचार है कि तीन अनादि सत्ताओं का वैदिक सिद्धान्त ही ईजिप्ट में पहुँचा था जिसके प्रभाव में आकर ईसाइयों ने भी तीन सत्ताओं को अनादि ठहराया, परन्तु भूल यही कर बैठे कि वे तीन सत्ताएँ कौन सी हैं !

इस प्रकार हमने देख लिया कि परमात्मा क्या है और क्या नहीं है। परमात्मा के इसी स्वरूप का प्रतिपादन निम्नलिखित वेदमन्त्रों में किया गया है:—

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते ।
न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते ।
स सर्वस्मै विपश्यति यच्च प्राणिति यच्च न ।
...स एक एव एकवृदेक एव । (अ०१३,४,१६-२१)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः
स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं-
मातरिश्वानमाहुः ॥ (ऋ०१म०१६४सू०४६मं०)

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्न्यो
ऽभिचाकशीति ॥

एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं-
विश्वं भुवनं विचष्टे ।
तं पाकेन मनसा पश्यमन्तितस्तं माता-
रेलिह स उ रेलिहमातरम् ॥

किं स्विदासीदधिष्ठानं आरम्भणं-
कतमत्स्वित्कथासीत् ।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा विद्यामौर्णो-
न्महिना विश्वचक्षाः ॥ ऋक् ॥

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो-
द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ॥ ऋक् ॥

यस्माज्जातं न पुरा किञ्चनैव.....॥यजु०३२-५॥

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं
शुद्धमपापविद्धं
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो-
ऽर्थान्व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ यजुः ॥

विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता-
विधाता परमोत सन्दृक् ॥ ऋक् ॥

अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमाविवेश

सद्यः पर्येमि पृथिवीमुत द्यामेकेनाङ्गेन-
दिवो अस्य पृष्ठम् ॥ यजु० ३२-५० ॥

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमा-
हुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
स अर्यः पुष्टीर्विज इवामिनाति अदस्मैधन्त-
स जनास इन्द्रः ॥ अथर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार धर्मों की तुलना

(ले०—श्रीयुत कृष्णानन्दजी)

१. वैदिकधर्म और बौद्धमत

बौद्धमत अहिंसा और संयम का ही पक्षपाती है परन्तु वैदिकधर्म अहिंसा और संयम के साथ-साथ उचित हिंसा (दुष्टों को दण्ड देना और अत्याचारियों का दमन करना) और शूरता की भी शिक्षा देता है। दोनों धर्मों में बड़ा भारी अन्तर यह है कि वैदिकधर्म अहिंसा (करुणा, दया, प्रेम) और उचितहिंसा (दण्डनीति) दोनों का पक्षपाती है; दुष्टों की दुष्टता और अत्याचारियों के अत्याचार को रोकने की आज्ञा देता है, लेकिन बौद्धमत सदा, सब अवसर पर, अहिंसक और शान्त बने रहने की आज्ञा देता है जिसमें दुष्टों और अन्यायियों का कोई प्रतीकार नहीं है। वैदिक धर्म सिर्फ सन्यासियों को ही क्रोध न करने की, अहिंसक या शान्त बनने की आज्ञा देता है और गृहस्थों को उचित क्रोध और उचित हिंसा करने का निषेध नहीं करता। दूरदर्शिता से देखिए, बिना उचित क्रोध और उचित हिंसा के संसार का कार्य चलना असंभव है।

दूसरा अंतर यह है कि बौद्धमत 'ज्ञान' और 'कर्म' दो को ही ज़रूरी समझता है, लेकिन वैदिकधर्म ज्ञान, कर्म और ईश्वरोपासना—तीनों को जरूरी समझता है। वैदिकधर्म सर्वाङ्गपूर्ण है, बौद्धमत में ईश्वरोपासना की कमी है, शायद इसी कमी को पूरा करने के लिए बुद्धदेवकी मूर्त्ति की पूजा चलाई गई।

तीसरा अन्तर यह है कि बौद्धमत व्यक्तिगत सुधार व उन्नति पर ज़ोर देता है लेकिन वैदिकधर्म वैयक्तिक और सामाजिक दोनों सुधारों व उन्नतियों का आदेश करता है। वैदिक और बौद्ध दोनों धर्मों में कर्मों के फल का मिलना अटल माना गया है। सत्य तो यह है कि बौद्धमत वैदिकधर्म से उत्पन्न हुआ है। वैदिकधर्म में से वेदपाठ, यज्ञ, ईश्वरोपासना और दण्डनीति इन चार बातों को निकाल देने से "संयम और अहिंसा" यही दो बातें बच जाती हैं। इन्हीं दो बातों को लेकर और कुछ अन्य बातें मिलाकर उसका नाम बौद्धमत रख लिया गया है।

२. वैदिकधर्म और ईसाईमत

ईसाईमत की बहुत सी बातें साइन्स के विरुद्ध हैं (जैसे स्वर्ग-नरक को लोक विशेष मानना, ईसा का कुँवारी कन्या से पैदा होना, उन्हें चमत्कार मिलना इत्यादि) लेकिन वैदिकधर्म में साइन्स

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विरुद्ध बातें नहीं हैं। वैदिकधर्म सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना करने को कहता है, ईसाईमत ईसा पर विश्वास लाने को कहता है। मुक्ति पाने के लिए वैदिकधर्म में ज्ञान बढ़ाना, सत्कर्म करना और ईश्वरोपासना तीनों ज़रूरी बतलाया गया है; लेकिन ईसाईमत में सिर्फ ईसा पर ईमान लाना ही मुक्ति का साधन माना गया है। शुभ या अशुभ कर्म करते हुए ईसा पर विश्वास लाने मात्र से सब पाप क्षमा हो जाते हैं और मनुष्य मुक्ति पाने का अधिकारी बन जाता है ऐसा ईसाई लोग मानते हैं। परन्तु वैदिकधर्म में शुभाशुभ कर्मों का फल मिलना अटल बतलाया गया है।

ईसाईमत कहता है कि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गाल भी फेर दो, अर्थात् कोई ज़ुल्म करे तो सह लो। लेकिन वैदिकधर्म ऐसा एकाँगी उपदेश नहीं देता। वैदिक धर्म सज्जनों [निष्कपट, नेकदिल, सच्चे और सीधे लोगों] का अपराध क्षमा करने को कहता है, साथ ही यह भी उपदेश देता है कि दुष्टों की दुष्टता और अन्यायियों के अन्याय का प्रतीकार करो।

साइन्स से मोज़े मिथ्या और कल्पित सिद्ध हो जाते हैं। मोज़ों को असत्य मान लेने पर ईसाई मत का महत्व कम हो जाता है और वैदिकधर्म में मोज़ों का वर्णन नहीं है। साइन्स के द्वारा वैदिकधर्म का महत्व नष्ट नहीं हो सकता और ईसाई मत साइन्स के सामने ठहर नहीं सकता। इस लिए ईसाईमत में अनेक त्रुटियाँ हैं और वैदिकधर्म में ऐसी कोई त्रुटि नहीं।

३. वैदिकधर्म और इस्लाममत

इस्लाममत में भी बहुत सी बातें साइन्स के विरुद्ध हैं (जैसे आसमान को छत मानना, स्वर्ग-नरक को लोक विशेष मानना, मुहम्मद साहब को चमत्कारयुक्त मानना, इत्यादि) लेकिन वैदिकधर्म की बातें साइन्स के विरुद्ध नहीं हैं। इस्लाममत कहता है कि "मज़हब में अक्ल को दख़ल नहीं" और वैदिकधर्म ज्ञान को बढ़ाने की आज्ञा देता है, अतः सिद्ध है कि वैदिकधर्म ज्ञान को रोकता नहीं और इस्लाममत ज्ञान के प्रकाश को रोकता है। वैदिकधर्म स्वतंत्र विचार करने को रोकता नहीं लेकिन इस्लाममत स्वतन्त्र विचार करने की आज्ञा नहीं देता। जहाँ किसी ने कुरान की आयत पर कुछ भी शंका की बस, वह मुरतिद समझा गया। इस्लाम और वैदिक दोनों धर्म एक ईश्वर की उपासना कर्तव्य बतलाते हैं लेकिन वैदिकधर्म में ईश्वरोपासना करते समय अन्य किसी व्यक्ति का ध्यान या नाम तक नहीं लिया जाता परन्तु इस्लाममत में खुदा की इबादत करते वक्त मुहम्मद साहब का नाम लेना बड़ा जरूरी समझा जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूँकि मुसलमान लोग खुदा की इबादत करते वक्त मुहम्मद साहब को त्याग नहीं सकते इस लिए उनका यह दावा ग़लत है कि मज़हब-इस्लाम में सिर्फ एक ईश्वर की उपासना होती है। असल बात यह है कि मुसलमान लोग खुदा और मुहम्मद दोनों को भजते हैं।

वैदिकधर्म ब्रह्मज्ञान तथा ज्ञानपूर्वक कर्म करने को मुक्ति का साधन मानता है लेकिन इस्लाममत सिर्फ कुरान व मुहम्मद साहब पर ईमान लानेको मुक्ति का साधन मानता है, फिर वह चाहे कैसा ही कर्म क्यों न करे। इस्लाममत मानता है कि तौबा करने से गुनाह माफ़ हो जाते हैं लेकिन वैदिकधर्म कहता है कि शुभाशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। वैदिकधर्म अपने से भिन्न मतवादियों पर अन्याय करने की आज्ञा नहीं देता और इस्लाममत अपने से भिन्न मतवादियों पर जुल्म करने की और उन्हें मार डालने तक की आज्ञा देता है। हमारे मुसलमान भाई शंका करते हैं कि वेदमंत्रों में राक्षसों की मृत्यु की प्रार्थना क्यों है? उत्तर यह है कि जो लोग दुष्ट, दुराचारी, अन्यायी और अत्याचारी हैं वे ही असुर या राक्षस हैं। थोड़ा विचार कीजिए, दुष्टता और जुल्म को न रोका जाय तो संसार में कितनी बड़ी आफ़त मच जायगी? इसलिए उनकी शङ्का ठीक नहीं। क्योंकि वैदिकधर्म यह नहीं कहता कि जो लोग वेद पर विश्वास न करें उन पर जुल्म करो या उन्हें मार डालो। लेकिन कुरान में मुसलमानों को स्पष्ट उपदेश है कि (१) मुसलमानों को चाहिए कि परस्पर मित्र रहें और काफिरों पर कठोरता करते रहें—'सूरा मायदा'। (२) जिस जगह काफ़िरों को देखो मारो और घर से निकाल दो—'सूरा बक़र'। (३) मुसलमानों को चाहिये कि काफ़िरों को मित्र न बनावें, जो बनाता है वह खुदा का नहीं है—'सूरा आलअमरान'। (४) यदि तुम चाहते हो कि काफ़िर न रहें तो उनको मित्र मत बनाओ और यदि वे कलमा न पढ़ें तो जहाँ देखो मार डालो—'सूरा निसा'। (५) जो मुसलमान काफ़िरों को मित्र बनाते हैं उनको खुदा के यहाँ इज़्ज़त नहीं मिल सकती और खुदा का क्रोध उन पर पड़ेगा— 'सूरा निसा'। (६) काफ़िरोंसे उस समय तक लड़ो जबतक कि उनका नाश न हो जाय और सारी दुनियाँ में इस्लाम न फैल जाय—'सूरा इनफाल'। ऐसे उपदेशों से ही प्रेरित होकर मुसलमान लोग अन्य मतवादियों को मुसलमान बनाने के लिए शुरु से अब तक बराबर जुल्म करते चले आये हैं। वे लोग उन्हीं को काफ़िर कहते हैं जो मुहम्मद और कुरान पर ईमान नहीं लाते। उनकी दृष्टि में जो मुसलमान नहीं हैं वे सब काफ़िर हैं। वैदिकधर्म यह नहीं कहता कि जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद पर शंका करे उसे मार डालो लेकिन इस्लाममत में मुर्तिद को संगसारी करके (पत्थर बरसाकर) मार डालने का विधान है। वेद और कुरान में यह बड़ा भारी अन्तर है कि वेद सिर्फ दुष्टों और अत्याचारियों का ही बध करने की आज्ञा देता है लेकिन कुरान भिन्न मत के भलेमानुसों का भी बध करने की आज्ञा देता है।

वैदिकधर्म एक-साथ एक से अधिक पत्नी रखने की आज्ञा नहीं देता लेकिन इस्लाममत एक-साथ चार पत्नी तक रखने की आज्ञा देता है जिससे विषमता और सौतिया आदि दोष उत्पन्न होते हैं। वैदिकधर्म शूरता-पूर्वक और हँसी-खुशी के साथ जीवन बिताने की आज्ञा देता है। यही कारण है कि हिन्दुओं में इतने अधिक त्यौहार होने पर कोई भी शोकसूचक त्यौहार नहीं हैं। इस्लाममत शूरता-वीरतापूर्वक किन्तु शोक के साथ जीवन बिताने की आज्ञा देता है। यही कारण है कि मुसलमानों के कई त्यौहार शोक मनाने या रोने के लिए ही हैं। वैदिकधर्म लाश को जलाने की आज्ञा देता है और इस्लाम (व ईसाई) मत गाड़ने की आज्ञा देता है। एक लाख मुर्दों को गाड़ने में आध मील लम्बी व आध मील चौड़ी ज़मीन लग जायगी लेकिन उन्हीं लाख मुर्दों को जलाने के लिए एक बीघा ज़मीन काफी है।

मज़हब-इस्लाम का एक अद्भुत सिद्धान्त यह है कि "शैतान ही मनुष्यों को पाप में प्रवृत्त करता है" (मानो खुदा ने शैतान को इसी लिए पैदा किया है कि वह सब को पाप में लगाता फिरे। न्याय तो यही है कि खुदा उसे मार डाले जिससे कोई भी पाप न कर सके। अस्तु, शैतान को मानने से खुदा अन्यायी सिद्ध हो जाता है)। दूसरा विचित्र सिद्धान्त यह है कि "खुदा ने हजरत मुहम्मद के लिए ही दुनियाँ बनाई" (खुदा यदि हज़रत मुहम्मद के लिये दुनियाँ बनाता तो हजरत को दुनियां से क्यों उठाता? उन्हें संसार में अब तक या सदा के लिए क्यों न रहने दिया? हज़रत दुनियाँ भर में मौजूद नहीं जिस से साबित है कि यह सिद्धान्त ग़लत है)। तीसरा अनोखा सिद्धान्त यह है कि "हज़रत मुहम्मद आखिरी रसूल थे अब कोई रसूल न आवेगा" (क्यों न आवेगा? क्या खुदा अब मजहब-इस्लाम फैलाना नहीं चाहता? इस समय जब कि सैंकड़ों—करोड़ मनुष्य मजहब-इस्लाम के विरुद्ध हैं, और खुदा मजहब फैलाने के लिए रसूल भेजता था, तो उसी लिये अब क्यों नहीं भेजता, उसे कौन सी रुकावट है?)।

अस्तु, वैदिक धर्म में इस प्रकार की थोथी बातें या हास्यास्पद सिद्धान्त नहीं हैं। "खुदा ने अदम् से दुनियाँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बनाया" यह इस्लामी सिद्धान्त भी साइन्स से खंडित हो जाता है। असल में गीता की ही बात "नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः" ठीक है। अदम् (असत्) से वजूद (सत्) नहीं हो सकता। साइन्स से वैदिक सिद्धान्त ही ठीक ठहरता है।

४. ईसाईमत और इस्लाम

जैसे ईसाई मत की अनेक बातें विज्ञान के विरुद्ध हैं वैसे ही इस्लाममत की भी बहुत सी बातें साइन्स के विपरीत हैं। परन्तु विचार-स्वातंत्र्य का जितना विरोधी इस्लाममत है उतना विरोधी ईसाईमत नहीं है क्योंकि बाइबिल में ऐसा नहीं लिखा कि जो लोग ईसा या बाइबिल पर विश्वास न करें उन पर जुल्म करो और उन्हें मार डालो परन्तु कुरान में तो साफ़ लिखा है कि काफिरों पर ज़ोर-जुल्म करो और उन्हें मार डालो। महात्मा ईसा ने जो दया की शिक्षा दी है उसके कारण अधिकतर ईसाई भिन्न मतवादियों पर दयाभाव रखते हैं लेकिन इस्लाममत में मुर्तिदों और काफिरों को मार डालने का उपदेश है, इसीलिए मुसलमानों के हृदय में भिन्न मतवादियों के प्रति दया नहीं होती। अगर कोई ईसाई जुल्म करता है तो इसमें बाइबल का कोई दोष नहीं, उसी ईसाई का दोष है, लेकिन मुसलमान लोग जो ग़ैर लोगों को मुसलमान बनाने में ज़ोर-जुल्म करते हैं उसमें कुरान को भी दोष है। चूँकि बाइबिल भिन्न मतवादियों पर जुल्म करने की आज्ञा नहीं देता और कुरान भिन्न मतवादियों पर जुल्म करने की तथा उन्हें मार डालने तक की आज्ञा देता है इसलिए ईसाईमत इस्लाममत से बहुत उत्तम है। हाँ, एक बात में दोनों समान हैं। केवल ईश्वर की उपासना न ईसाई करते हैं न मुसलमान। जैसे ईसाई लोग ईश्वर के साथ ईसा को भजना ज़रूरी समझते हैं वैसे ही मुसलमान लोग खुदा के साथ मुहम्मद को जपना जरूरी समझते हैं। ईसाईमत में एक साथ एक ही पत्नी का विधान है जिससे संयम की शिक्षा मिलती है परन्तु इस्लाममत में एक साथ चार औरतें तक रखने की आज्ञा है जिससे संयम की शिक्षा नहीं मिलती। इस दृष्टि से भी ईसाइयत इस्लाममत से उत्तम है।

इस्लामीमत का मूलाधार ईसाईमत व यहूदीमत है। यानी कुछ बातें ईसाईमत की और कुछ यहूदी मत की लेकर कुछ नई बातें मिलाकर मजहब—इस्लाम उत्पन्न हुआ है।

५. बौद्धमत और ईसाईमत

बौद्धमत व यहूदीमत के बहुत से सिद्धान्तों को लेकर ईसाईमत उत्पन्न हुआ है। धम्मपद व बाइबिल के उपदेशों की तुलना करने से स्पष्ट सिद्ध है कि महात्मा बुद्ध के उपदेश महात्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसा के उपदेशों से अधिक उत्तम और अधिक महत्व के हैं। इसलिये ईसाई-मत की अपेक्षा बौद्धमत बहुत उत्तम है। बौद्धमत कर्मों का फल अटल मानता है और ईसाईमत ईसा पर विश्वास लाने से पापों का क्षमा हो जाना मानता है। बौद्धमत की श्रेष्ठता और महत्ता को ईसाईमत नहीं पा सकता। ईसाई लोग नाम तो लेते हैं ईश्वर का और भजते हैं ईसा को और बौद्ध लोग ईश्वर को न भजकर बुद्ध की मूर्त्ति की पूजा करते हैं। इसलिए इस बात में दोनों समान हैं कि न तो बौद्ध लोग ही ईश्वर को भजते हैं न ईसाई लोग ही।

६. बौद्धमत और गीता

जब हम त्रिपिटक या धम्मपद से गीता की तुलना करते हैं तो स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि गीता के उपदेश त्रिपिटक और धम्मपदके उपदेशों से अधिक महत्व के हैं। गीता की महत्ता को त्रिपिटक या धम्मपद नहीं पा सकता।

७. गीता और वेद

गीता वेदों का ही साराँश है। वेदों में यज्ञों का वर्णन है; गीता में यज्ञों की फिलासफी समझाई गई है। वेदों में ज्ञान, कर्म, उपासना का वर्णन है; गीता इन्हीं तीनों का तत्त्व समझाती है। वेद में निष्काम कर्म-योग का वर्णन है; गीता उसी तत्व का निरूपण करती है। वेद में देवों के गुणों को ग्रहण करने का और राक्षसी गुणों क त्यागने का आदेश है; गीता दैवी सम्पत् को ग्रहण करने का और आसुरी सम्पत् को त्यागने का उपदेश देती है। वेद में भ्रातृभाव और जहाँ तक सम्भव है ऐसी ही समानता का उपदेश है; गीता समदर्शिता की शिक्षा देती है। वेद में दान देने और तप करने की आज्ञा है; गीता दान देने और तप करने को कहती है। इस प्रकार गीता बहुत कुछ वेदों के आधार पर ही बनी है।

८. सारांश

इस तुलना से नतीजा यह निकला कि इस्लाममतसे ईसाईमत अच्छा है। ईसाईमत से बौद्धमत उत्तम है। बौद्ध-मत से गीता-मत उत्तम है और गीता का मूलाधार वेद है। अतः वैदिकधर्म ही सब मतों से श्रेष्ठ है।

विज्ञापन

बच्चों को सर्दी खांसी से बचाने और मोटा तंदुरुस्त बनाने के लिये सुख संचारक कंपनी मथुरा का मीठा बालसुधा सब से अच्छा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन तत्त्व

(श्री पं० शान्तिस्वरूप जी विद्यालंकार)

महा-काय बन दीर्घ काल तक जीना हमें पसन्द नहीं,
नहीं दीखता है इस में कुछ जीवन-पन का चिन्ह कहीं।
रह के खड़ा पेड़ ओक का साल तीन-सौ काल घना,
गिरता है आख़िर में जाके सूखा, गंजा, ठूंठ बना ॥ १ ॥

ज़रा नज़र को घुमा उधर जहँ नलिनी वो है खड़ी हुई,
नहीं सकेगा हटा आँख को फिर उस पर से गड़ी हुई।
यद्यपि एक रात भर का ही इस का सारा जीवन है,
खिली हँसी से हिलती-डुलती हर लेती सब का मन है ॥ २ ॥

मधुप मधुर मधु पीकर इस का गुण-गण गान गुंजाते हैं,
पवन सुगन्धित हो उसका यश दूर दूर पहुँचाते हैं।
खिली चाँदनी में इक टक हो प्रीतम को भरपूर निहार,
नैन सदा के लिए बन्द फिर उस के होते ही उस पार ॥ ३ ॥

जीवन-तत्त्व पूर्ण होने को काल अपेक्षित नहीं महान,
स्वल्पकाल में पाया जिसने उस ने पाया सभी जहान।
'सुन्दरता' है सार सृष्टि का, मूल मन्त्र, जीवन-धन है,
उस से खाली जीवन सूखा, भारभूत औ बन्धन है ॥ ४ ॥

"साम्यवाद"

(ले०—पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालंकार विद्यावाचस्पति, आचार्य गुरुकुल मुलतान)

वर्तमान योरपीय साम्यवाद की मुख्य स्थापनाएं इस प्रकार कही जा सकती हैं:--

(१) उत्पत्ति, विभाग और विनिमय (Production, Distribution and Exchange) के जितने भी साधन हैं वे वैय्यक्तिक सम्पत्ति न रहें बल्कि राष्ट्र (State) उन्हें अपने अधिकार में ले ले। बड़ी २ ज़मीन्दारियों, कारख़ानों,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलों, जहाज़ों और कम्पनियों पर व्यक्तियों का नहीं अपितु सारे समाज वा राष्ट्र का अधिकार होना चाहिए। यह समाजाधिकार किस प्रकार किया जाए इस के ये तीन साधन हो सकते हैं; (क) लोग अपनी खुशी से अपनी सारी सम्पत्ति राष्ट्र के अर्पित कर दें। (ख) राज्य ज़बरदस्ती उन से सम्पत्ति छीन ले। (ग) राष्ट्र बदला या मूल्य देकर ख़रीद ले। प्रायः साम्यवादी तीसरे साधन के पक्षपाती हैं पर प्रश्न यह है कि साम्यवादी-सरकार के पास इतना धन कहां से आएगा कि वह सब वैय्यक्तिक सम्पत्तियों और कारखानों वगैरह को ख़रीद सके। इसीलिये रिगनानो तथा कुछ दूसरे साम्यवादियों ने अपहरण को ही काम में लाने की शिक्षा दी है।

(२) उत्तराधिकारी की पद्धति को उठा देना चाहिये। एक दम से ऐसा करना वे भी असम्भव समझते हैं इस लिये उनका प्रस्ताव यह है कि पिता की सम्पत्ति के $\frac{२}{३}$ का पुत्र और $\frac{१}{३}$ का राज्य उत्तराधिकारी माना जाए। पुत्र की सम्पत्ति जब पौत्र के हाथ में जाने लगे तब राज्य उस में से $\frac{१}{३}$ ले ले और इस दूसरे उत्तराधिकारी के मरने पर उसके पुत्र को कुछ न देकर शेष सारी सम्पत्ति पर राज्य अपना अधिकार कर ले। इस प्रकार करने से दो तीन पीढ़ियों में सारी वैय्यक्तिक सम्पत्ति राज्य के हाथ में आजायगी।

(३) स्वतन्त्रता के सिद्धान्त को चरितार्थ करने के लिए अनेक कट्टर साम्यवादी विवाह पद्धति और कुटुम्ब प्रथा का बिल्कुल अन्त कर देना चाहते हैं। उनका कथन है कि स्वतन्त्र-प्रेम वा Free love की प्रथा प्रचलित होनी चाहिए। जब तक जिस के साथ बनी उसके साथ रहे, जब बिगड़ी तो दोनों ने अपना अलग २ रास्ता लिया। विवाह का बन्धन अनुचित और स्वतन्त्रता में बाधक है। अराजकता-वाद के प्रवर्तक बकुनिन तथा अन्य कई साम्यवादियों का ऐसा ही मत था। पर अब नवीन साम्यवादी इतनी दूर जाने को तय्यार नहीं। उनका कथन यह है कि प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाय। व्यक्तियों का पारस्परिक बन्धन ढीला कर दिया जाए। विवाह की प्रथा रहे पर जब पति-पत्नी की अन-बन हो और वे तलाक करना चाहें तो उन्हें वैसा करने की खुली छुट्टी हो। स्त्रियों के लिए भी पुरुषों की तरह किसी न किसी रूप में समाज की सेवा करना आवश्यक माना जाए। उन्हें डाक्टर, वकील, क्लर्क, शिक्षकादि में से किसी भी व्यवसाय के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की मनाई न हो।

योरपीय साम्यवाद का मुख्य प्रयोजन आर्थिक न्याय (Economic justice) को प्राप्त कराना है। इस के धुरन्धर प्रचारक कार्लमार्क्स ने अपने ग्रन्थ "Capital" में बताया है कि कारखानों वगैरह में सारा काम तो बेचारे श्रमियों को करना पड़ता है, अपने स्वास्थ्य को भी बिगाड़ते हुए वे बेचारे दिन रात मजदूरी करते हैं पर इस सारे श्रम के बदले उनको बहुत ही कम मिलता है। प्रायः सब का सब लाभ थोड़े से पूंजीपतियों की जेबों में चला जाता है जिन के पास सौभाग्य से मशीनें होने के कारण वे इस तरह टके कमा कर मौज लूटते हैं। बेचारे श्रमियों को कोई पूछता तक नहीं। आदमस्मिथ, रिकार्डो, मिल इत्यादि अर्थशास्त्रज्ञों के अभिमत सिद्धान्तों को लागू करते हुए कार्लमार्क्स ने सिद्ध किया है कि आर्थिक न्याय इसी में है कि लाभ का बहुत सा हिस्सा श्रमियों को मिले। कार्लमार्क्स ने यहां तक लिख दिया है कि Surplus का सारे का सारा भाग केवल श्रमियों को ही मिलना चाहिये। पूंजी पतियों का उस पर बिल्कुल अधिकार नहीं है। कार्लमार्क्स ने सामाजिक न्याय वा Social justice के सिद्धान्त को न रखते हुए केवल आर्थिक न्याय पर बल दिया। मार्क्स के आर्थिक न्याय के सिद्धान्त पर कई लेखकों ने बड़ा वाद विवाद उठाया है। उदाहरणार्थ Sociology Applied to Practical Politics नामक पुस्तक के लेखक जान बेट्टाइ क्रोज़ियर (John Beattie Crozier Hou. LL.D.) जिन्होंने समाजशास्त्र पर और भी कई मौलिक ग्रन्थ लिखे हैं उपर्युक्त पुस्तक के प्रथम खण्ड में A Challenge to Socialism इस शीर्षक के नीचे मार्क्स के आर्थिक न्याय के सिद्धान्त की आलोचना करते हुए दिखाते हैं कि मार्क्स का यह कहना कि सारे Surplus पर श्रमियों का ही अधिकार है, क्योंकि यह उन्हीं के परिश्रम का फल है, अशुद्ध है, क्योंकि लाभ अधिकतर मशीनों की उपज है। मशीनें पूँजीपतियों ने धन लगाकर बड़े बड़े वैज्ञानिकों अथवा आविष्कारकों द्वारा बनवाई हैं। यदि मशीनें न होतीं तो श्रमी लोग अब जितना काम कर सकते हैं उसका २० वां हिस्सा भी न कर सकते इस लिए लाभ का श्रेय मशीनों को मिलना चाहिये। मशीनें बनाने में वैज्ञानिकों और आविष्कारकों का दिमाग लगा है इसीलिये अमेरिका के कोटिपति कार्नेगी ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"In my judgment the coins ought to go, on lines of strict economic justice, to the Scientists and only a much lesser amount to the great organisers and capitalists like myself ; in as much as without the Scientist, the labours of the organisers, Capitalists and financiers would be as barren of surplus as those of the whole united body of ordinary working men" (quoted in Crozier's Sociology P. 7)

अर्थात् मेरे विचार में लाभ का सब से बड़ा हिस्सा वैज्ञानिकों को मिलना चाहिये, उस से कम पूंजीपतियों को और सब से कम श्रमियों को क्योंकि वैज्ञानिकों के बिना पूंजीपतियों और श्रमियों के सब उद्योग व्यर्थ से होजाएँ। आर्थिक न्याय की दृष्टि से यह बात निःसंकोच कही जा सकती है। इस विषय पर विवाद का कारण साम्यवाद के पोषकों और विरोधियों का 'अति' कर देना है। जहां एक ओर मार्क्स जैसे साम्यवादी यहां तक कहने में संकोच नहीं करते कि लाभ सारे का सारा केवल श्रमियों को मिलना चाहिये वहां दूसरी ओर उनके विरोधी यह सिद्ध करने का यत्न करते हैं कि श्रमियों का लाभ पर अधिकार बहुत ही थोड़ा है क्योंकि यदि वैज्ञानिक मशीनों का निर्माण न करें और धनी उन्हें बनवाने में पैसा न लगावें तो श्रमी कुछ भी नहीं कर सकते। सच्ची बात तो यह है कि वर्तमान समय में यूरुप के अंदर, और मशीनों की कृपा से अब भारत के अन्दर भी, पूंजीपतियों और श्रमियों तथा धनियों-निर्धनों के बीच एक बड़ा विवाद सा उपस्थित हो गया है—बड़ी भारी विषमता खड़ी होगई है। एक ओर जहां थोड़े से करोड़पति हैं जो अपने बाप दादों की कमाई खाकर मौज करते हैं और जिन्हें दूसरों के हित की ज़रा भी फिकर नहीं वहां दूसरी ओर बहु संख्या, तीन-चौथाई सख्या कहा जाय तो उसमें भी अत्युक्ति न होगी, ऐसे लोगों की है जिनकी आर्थिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय है—जिन्हें पेट भर खाना और कपड़ा तक मुश्किल से नसीब होता है। "Riches and Poverty" नामक सुप्रसिद्ध पुस्तक के लेखक चोज़ा मनी ने संयुक्त राष्ट्र (United Kingdom जिसके अन्दर इंगलैंड, स्कौटलैंड और आयर्लैंड का समावेश है) के विषय में बतलाया है कि वहां ५० लाख आदमी जिनकी वार्षिक आय १६० पौण्ड वा इस से अधिक है ८३ करोड़ वार्षिक आय के स्वामी हैं। दूसरी ओर ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ ८० लाख आदमी जिनकी वार्षिक आय १६० पौंड से कम है ८८ करोड़ वार्षिक आय के मालिक हैं। अर्थात् कुल आबादी का $\frac{1}{6}$ भाग कुल आय के $\frac{1}{2}$ का भोग करता है। एक दूसरी तालिका देकर मनी महोदय ने बताया है कि संयुक्त राज्य की $\frac{1}{3}$ संपूर्ण आय से अधिक का कुल आबादी के $\frac{1}{30}$ से कम भोग करती है। ३० प्रति-शतक जन संख्या नित्य दारिद्रय अवस्था में रहती है—पृ० सं० ४२ ४३।

अमेरिका के विषय में राबर्ट हन्टर नामक प्रसिद्ध समाज शास्त्रज्ञ ने बताया है कि अच्छी फसल के साल में भी वहां एक करोड़ से कम ऐसे ग़रीब आदमी नहीं होते जिनको भोजन वस्त्रादि की तंगी रहती है। इन में से ४० लाख भिखमँगे हैं। २० लाख से अधिक श्रमी वर्ष में ४ से ६ मास तक बेकार रहते हैं। अमेरिका के आधे परिवारों के पास कोई जायदाद नहीं। १७ लाख बालकों को स्वयं कमाना पड़ता है। ५० लाख स्त्रियां स्वयं कार्य करने को बाधित हैं और उन में से २० लाख कारखानों में काम करती हैं।

इन बातों के उल्लेख करने का मतलब केवल वर्तमान समय की यूरप तथा अमेरिका जैसे सभ्यताभिमानी देशों में विशेष रूप से प्रचलित विषमता का दिग्दर्शन कराना था। यूरपीय साम्यवाद का मुख्य उद्देश्य जहां तक संभव हो इस कृत्रिम विषमता को दूर करना है। यह सम्भव नहीं कि सब प्रकार की विषमता को हटा कर सब को बराबर कर दिया जाए। स्वयं प्रकृति ने जो विषमता उत्पन्न की हुई है उसे कौन दूर कर सकता है? पर कुछ ऐसी विषमता भी है जो प्राकृतिक नहीं है और जिसे समाज की सुव्यवस्था से अवश्य दूर किया जा सकता है। इसी विषमता को दूर करने के लिए साम्यवादियों का प्रस्ताव है कि ज़मीन और पूंजी पर से व्यक्ति-गत अधिकार उठा कर उन्हें समाज के अधिकार में कर दिया जाए जिससे सुख-सम्पत्ति आदि का सारे समाज में समान रूप से बँटवारा हो जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति कहां तक हो सकेगी यह कहना बड़ा कठिन है तथापि साम्यवाद के सिद्धान्तों के प्रचार के कारण अब श्रमियों की दशा आगे से बहुत उन्नत हो गई है और लोगों के अंदर पारस्परिक सहानुभूति पूर्व की अपेक्षा बढ़ गई है इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता।

—:*:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरी-यात्रा

(ले० श्री पं० दीननाथ जी सिद्धान्तालंकार)

गत नवम्बर मास में मुझे एक मान्य महानुभाव के साथ विधवा विवाह सहायक सभा की ओर से कलकत्ता से 'पुरी' जाने का अवसर मिला। यह स्थान हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थों में से एक है। भारत के एक ओर पर होने के कारण पुरी की यात्रा विशेषतः पवित्र और महत्त्वपूर्ण समझी जाती है। उत्तर भारत के हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन, काशी इत्यादि तीर्थ स्थानों से यहां की कुछ विशेषतायें भी हैं। इसी लिए, "अलंकार" के पाठकों के सन्मुख आज हम इसी स्थान के सम्बन्ध में अपनी यात्रा के आधार पर, कुछ चर्चा करेंगे जो, आशा है, उनके लिए मनोरंजक होगी।

प्राकृतिक स्थिति

कलकत्ता से दक्षिण की ओर ३१० मील की दूरी पर समुद्र के ठीक किनारे पर यह तीर्थ स्थित है। पुरी के तीन ओर समुद्र है और एक ओर सुरम्य जंगल है। रेलगाड़ी में बैठे हुए भी समुद्र का एक पार्श्व दिखाई देता है। इस प्रकार जल और जंगल से घिरा होने के कारण यहां की प्राकृतिक छवि सुरम्य, अनुपम और शान्तिदायक है। प्राचीन कवि जनों ने घनी पर्वतमाला के पीछे से उदीयमान बाल सूर्य और गम्भीर समुद्र के अदृश्य तट की ओर अस्तंगत क्षीण तेज दिवाकर,—इन दोनों दृश्यों का बड़ी मनोहर भाषा में वर्णन किया है। इस के साथ ही प्राचीन काव्यों में हमने यह भी पढ़ा था कि शुद्ध शीतल चन्द्रज्योत्स्ना को देख सागर के समतल जल में विशेष उत्साह, चंचलता और विषमता पैदा हो जाती है और उच्च लहरों का रूप धारण कर वह उछलने लगता है। पुरी के समुद्र—तट पर हमने इन सब प्रकृति—पटों को देखा और कवियों की उक्ति की यथार्थता का अनुभव किया। मुझे लगभग एक सप्ताह तक यहां पर रहने का अवसर मिला और मैं प्रति सायं इन दृश्यों का का अनन्द उठाता रहा।

जगन्नाथ का मन्दिर

इस मन्दिर के कारण ही यह स्थान तीर्थ माना जाता है और इसी लिए इस का प्रसिद्ध नाम "जगन्नाथ पुरी" ही है। वस्तुतः पुरी की आबादी का तीन-चौथाई से भी अधिक भाग इस मन्दिर से सम्बद्ध है। यह शहर के मध्य भाग में है और ३ मील से अधिक स्थान को घेरे हुए है। पौराणिक और कपोलकल्पित गाथाओं को छोड़ इस की ऐतिहासिक स्थिति के विषय में कुछ खोज करने से यही ज्ञात हुआ है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आज से लगभग ३०० वर्ष पूर्व अनङ्ग भीमदेव नाम के एक राजा ने मन्दिर की स्थापना की थी। इस राजा के वंशज अभी तक जिवत हैं और मन्दिर तथा उस से सम्बद्ध सारी जायदाद इन्हीं के अधिकार में है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, कुल मन्दिर ३ मील से अधिक लम्बाई-चौड़ाई लिये हुये है। इसके बाहर चारों ओर ऊंची दीवार है, जिस के साथ बाहर की ओर तीन तरफ़ दुकानें हैं। इस प्रकार बाजार का मुख्य अंश मन्दिर के इर्द-गिर्द ही है। प्रवेश के लिए चारों दिशाओं में चार बड़े २ द्वार हैं जिन पर सिपाहियों का पहरा है। पर, साधारण अवस्था में तीन द्वार बन्द रहते हैं और पूर्व के द्वार से ही आना जाना होता है। मेलों के अवसर पर चारों द्वार खोल दिये जाते हैं। मन्दिर के अन्दर चारों ओर कई देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ और छोटे २ मन्दिर हैं जिनके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं है। बीच में जगन्नाथ का ऊँचा विशाल मन्दिर है। इस के बाहर एक बड़ा, ऊंचा पक्का बरामदा सा बना हुआ है। इस की छत मन्दिर की छत के साथ मिली हुई है। जगन्नाथ की मूर्त्ति जहां स्थापित है, उस से ५०-६० गज़ इधर ही तीन बड़ी मोटी बल्लियाँ गाड़ी हुई हैं और उन के दोनों किनारों पर दो २ सिपाही खड़े हैं। जनता को बस यहीं तक आने की आज्ञा है। यहीं से शीश झुका कर और दक्षिणा देकर वापस जाना पड़ता है। ५०,६० गज़ दूर मन्दिर के अन्दर बीच में जगन्नाथ, एक ओर बलभद्र और दूसरी ओर सुभद्रा की मूर्त्ति है। यहां पर गैस का लैम्प दिन में भी रहता है और शेष सारे भाग में घोर अन्धेरा है। भोले हिन्दुओं के मन पर आतंक जमाने के लिए ही यह सारा प्रबन्ध रचा गया है। पर एक बात और है। अगर कोई २५) वा इस से अधिक चढ़ावा देना चाहे तो उसे असली मन्दिर के भीतर जगनाथ की मूर्त्ति के पास जाने दिया जाता है।

सम्पूर्ण मन्दिर की रचना सुदृढ प्रस्तर मय है। आंगन भी प्रस्तरमय है। दीवारें किले के समान ऊंची और मज़बूत हैं। मन्दिर की बनावट का ढंग उत्तर भारत के प्राचीन मन्दिरों से कुछ भिन्न है। दीवारों पर कई अश्लील और लज्जाजनक चित्र भी हैं। आंगन में जगह २ लड्डू पेड़ा और फूल तथा हार बेचने वालों की दूकानें हैं। प्रातः सायं और रात के १० बजे तक यात्रियों की खूब भीड़ रहती है। यहां के पण्डा—पुजारियों से छुटकारा पाना बड़े साहस का काम है। स्टेशन से उतरते ही सी. आई. डी. के भूतों की तरह ये यात्री के पीछे लग जाते हैं और "कौन ज़िला कौन गाँव और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डा" की रट लगाना शुरू कर देते हैं। कुत्ते जैसे रोटी के टुकड़े पर झपटते और लड़ते हैं ऐसे ही ये यात्रियों पर टूटते हैं। एक २ यात्री को पांच पांच दस-दस पण्डे घेर लेते हैं और अपनी ओर खींचते हैं। वह बेचारा घबरा जाता है। जब प्रत्येक अपना अधिकार दिखाने लगता है तो इनकी आपस में तू-तू मैं-मैं और हाथा-पाई तक भी हो जाती है। उत्तर भारत के तीर्थों में "आर्यसमाजी" कह देना इस आपत्ति की रामबाण औषध समझी जाती है पर यहां पर आप चाहे कितना ही गला फाड़ २ कर अपने को "आर्यसमाजी" कहें, ये आपका पीछा न छोड़ेंगे। यहां के लोगों को पता ही नहीं है कि "आर्यसमाजी" किस बला का नाम है। स्टेशन से मन्दिर तक—लगभग ३ मील का अन्तर है—आपके साथ ऐसा ही व्यवहार होगा। आपकी भाड़ा गाड़ी के आगे पीछे और सड़क के दोनों ओर आपको पंडे ही पंडे नजर आयेंगे। इतना नहीं, आप जिस धर्मशाला या मकान में उतरे हैं, सी. आई. डी. के सिपाहियों की तरह ये वहां भी आ धमकेंगे और आपको इन के प्रश्नों का उत्तर देना ही होगा। एक और विचित्र बात है। यहां पर "ज़िला और गांव" की परिभाषा भी न्यारी है। उदाहरण के लिये जब हम से ज़िले या गाँव का प्रश्न किया जाता था तो हमें, परिभाषा के अनुसार कहना पड़ता था कि "हमारा ज़िला पंजाब और गाँव लाहौर है।"

जगन्नाथ के मन्दिर को देख कर जब आप बाहर आवेंगे तो वहां पर दिल्ली की लोहे की लाट की तरह लग भग १० गज ऊंचा एक लोह-स्तंभ गड़ा हुआ है। कहा जाता है कि मन्दिर के भीतर जगन्नाथ की मूर्त्ति की जितनी ऊँचाई है, उसी के परिमाण के अनुसार यह स्तम्भ बाहर गाड़ा गया है। इस के चारों ओर लोहे का छोटा सा जंगला है। इसके पास ही यज्ञ कुण्ड बने हुये हैं जहां पर प्रातः सांय अग्नि प्रज्वलित कर विशेष द्रव्यों के साथ यज्ञ किया जाता है।

मन्दिर का प्रबन्ध

जैसा हम पहिले लिख आये हैं, यह मन्दिर और इस से संबद्ध सारी जायदाद एक जमींदार के अधिकार में है जिसे 'राजा साहब' कहा जाता है और जो अपने को इस के संस्थापकों के वंशज कहते हैं। इन राजासाहब की कोठी मन्दिर के पास ही है। इनकी ओर से मन्दिर की रक्षा और प्रबन्ध के लिये पुलिस नियुक्त है जिस के सिपाही मन्दिर के भीतर और बाहर हमेशा पहरा देते वा प्रबन्ध करते दिखाई देते हैं। इन का वेश सरकारी सिपाहियों का सा ही है, पर इनकी पेटी पर "जगन्नाथ मन्दिर की पुलिस" ये शब्द लिखे हुये हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा साहब की कोठी के सामने ही इस सारी जायदाद का प्रबन्ध वा हिसाब रखने के लिए एक दफ्तर खुला हुआ है, जिसके ऊपर "जगन्नाथ मन्दिर के सुपरिन्टेन्ड का दफ्तर" ये शब्द अंग्रेजी में लिखे हुए हैं। पुलिस के सिपाही भी यहीं रहते हैं। राजा साहब की ओर से एक पुजारी वा महन्त मन्दिर के लिये नियुक्त किया हुआ है। प्रतिदिन की आमदनी में से-जो साधारण अवस्था में सैकड़ों और विशेष अवसरों पर हज़ारों रुपये होती है—कुछ निश्चित रकम राजा साहब के पास भेज दी जाती है और शेष मन्दिर के महन्त और पुजारी खाते हैं।

मन्दिर का भोग

नकदी और ज़ेवर के अतिरिक्त बहुत सा खाद्य पदार्थ भी मूर्त्तियों पर चढ़ाया जाता है। इस के अतिरिक्त मन्दिर के महन्त और पुजारी भी अपने विश्वास के अनुसार मूर्त्तियों के भोजन के लिए बहुमूल्य मिष्टान्न वा पकवान चढ़ाते हैं। प्रसिद्ध भाषा में इसे 'भोग" कहा जाता है। वहां से चढ़ाये जाने के बाद यह सब बाजार में बिकता है। कई दुकानदारों ने इसका सालाना ठेका लिया हुआ होता है। यह सब 'भोग' मन्दिर के भण्डारे में तैय्यार होता है। इस के अतिरिक्त यहां पर एक और विचित्र प्रबन्ध भी है। भण्डारे में दाल भात तैय्यार होता है और चढ़ाया जाकर बाजार में मिट्टी के बर्तनों में जिसे टिण्ड कहा जाता है-भरकर ।), ।-) और ।≈) तक बिकता है। अगर किसी पण्डे ने अपने १० यजमानों के लिए भोजन बनवाना है तो वह भण्डारे में पहिले सूचना दे देता है। वहाँ से बन कर और मूर्त्तियों के सामने से गुज़ारा जाकर भोजन उस पण्डे के घर में पहुंच जाता है। वहां से यजमान खा लेते हैं और पंडे को दाम दे देते हैं। इधर चूंकि दाल भात ही खाया जाता है, इसलिए यही तैय्यार होता है और बेचा जाता है पर इस भोजन में अपवित्रता बहुत होती है और बहुधा कच्चा, मट्टी मिला और गन्दा होने के कारण रोग का कारण होता है। यात्रियों को इस भोजन से हमेशा बचे रहना चाहिये।

सामाजिक स्थिति

तीर्थ स्थान होने के कारण वैसे तो यहां पर सभी प्रान्तों के स्त्री-पुरुष दिखाई देते हैं पर बंगाल-मद्रास के समीप वर्ती और उड़ीसा का एक प्रदेश होने के कारण यहां पर इन तीनों प्रान्तों के यात्री ही अधिकांश में दृष्टि गोचर होते हैं। उड़ीसा प्रान्त का प्रधान स्थान होने के कारण उड़िया लोगों की सामाजिक दशा और व्यवहार का कुछ परिचय यहां से हो जाता है। इन में अधिकांश शिखा की जगह सिक्खों की तरह केश समूह रखते हैं पर सिर के शेष बाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे २ ही रखते हैं। यहां की साधारण जनता का वेश नंगे सिर, नंगे पांव, दाढ़ी-मूछें साफ़, लांगदार-धोती बस, कमीज़ इत्यादि प्रायः नहीं पहिनते हैं। हम लोगों का वेश चूंकि इन से सर्वथा भिन्न था और सिर पर टोपी भी थी तथा मेरे मान्य साथी दाढ़ी रक्खे हुए थे इस लिए हमें कई बार मुसल्मान समझ लिया जाता था। इसी प्रकार, इधर की स्त्रियां नंगे पांव, नंगा सिर, बाल बंधे वा खुले हुए और सिर्फ ६ गजी धोती वा साड़ी पहिने हुए होती हैं। कमीज़ इत्यादि ये भी नहीं डालती हैं। आम तौर से, धोती घुटनों से ऊपर ही रहती है। वस्तुतः, स्त्रियों के इतने अधिक शरीर का नग्न रहना बड़ा खटकता है पर इधर प्रथा ही ऐसी है। इन लोगों में अन्ध विश्वास की प्रबलता और शिक्षा का भारी अभाव है। इन में अधिकांश खेती-बाड़ी, वा मजूरी, चाकरी—इत्यादि छोटे २ पेशे ही करते हैं। व्यवसाय वाणिज्य तथा साहसिक पेशों का अभाव ही प्रतीत होता है। आर्य-समाज के लिए इधर काम का बड़ा क्षेत्र है।

सार्व-जनिक संस्थायें—

यहां पर निम्न लिखित मुख्य २ सार्व जनिक संस्थायें हैं—

(१) जिले का शहर होने के कारण अदालतें, म्यूनिसिपैलिटी, अस्पताल, स्कूल, डाकखाना इत्यादि सरकारी संस्थायें हैं।

(२) यात्रियों के लिए एक अस्पताल पृथक् भी है और उनके ठहरने के लिये कई धर्मशालायें हैं जिन में मुख्य मरवाड़ियों की है।

(३) जगन्नाथ के पास ही "रघुनन्दन लाइब्रेरी" नाम का पुस्तकालय तथा वाचनालय है।

(४) इस प्रान्त के प्रधान नेता पं० गोपबन्धु दास के निरीक्षण में एक विधवा-आश्रम भी है जिसे हिन्दु महा सभा ५०) मासिक सहायता देती है। इस समय इस आश्रम में ७ विधवायें थीं।

(५) गत वर्ष चूंकि पुरी में अकाल पड़ा था और निर्धनता के कारण यहां अन्न की हमेशा ही कमी रहती है, इसलिये पं० गोपबन्धुदास की अध्यक्षता में यहां पर "अकाल-सहायक समिति" और 'चरखा प्रचारक समिति' स्थापित हैं।

(६) सरकार की ओर से सन् १९१८ से यहां पर एक संस्कृत कालेज भी है जिसके द्वारा सरकारी परीक्षायें दिलवाई जाती हैं।

(७) पं० गोपबन्धु दास की सम्पादकता में यहाँ से "समाज" नाम का एक साप्ताहिक पत्र उड़िया भाषा में प्रकाशित होता है।

(८) यहाँ कांग्रेस कमेटी भी है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस के अध्यक्ष पं० गोपबन्धुदास ही हैं।

(९) रोगियों की सेवा और यात्रियों की सहायता के लिए बंगालियों के 'भारत सेवाश्रम संघ' की शाखा यहां पर भी है।

(१०) समुद्र के किनारे २ होटल, आश्रम, तथा स्वास्थ्य सदन खुले हुए हैं जिन में प्रायः धनी पुरुष ही ठहरते हैं।

विविध

निम्न बातें भी उल्लेखनीय हैं:—

(१) सवारी के लिए बन्द गाड़ी के अतिरिक्त यहाँ पर चटाई की छत वाली, गड्डों की तरह बनी हुई हाथ गाड़ी [रिक्षा] भी बहुत चलती हैं, जिन्हें बैल की जगह आगे से दो मनुष्य खींचते हैं। समय पड़ने पर इन्हीं के आगे बैल लगा दिये जाते हैं और छत उतार दी जाती है जिस से ये माल ढोने का काम भी दे देती हैं।

(२) तीर्थों पर निम्न वस्तुएँ प्रायः अधिकांश में होती हैं—[क] पण्डा, पुजारी [ख] मन्दिर [ग] बन्दर [घ] धर्मशाला [ङ] विधवा [च] भिखारी [छ] गन्दगी—

फलतः यह सब कुछ यहां पर भी प्राचुर्य से है। पर यहां के भिखारियों में अधिक संख्या कुष्ठ पीड़ितों की है और इनके मांगने का ढंग भी विचित्र है। टाट में मुंह छिपाये किंचित रोते और चीखें मारते हुए तथा अपना कुष्ठ-पीड़ित हाथ-पाँव बाहर निकाले स्टेशन से समुद्र तक सड़क के दोनों ओर बैठे वा लेटे हुए नजर आते हैं। पण्डों की तरह वह भी बड़ा तंग करते हैं।

सुना गया है कि यहां पर १४०० से अधिक पण्डों के घर हैं। विधवाओं के अधिक होने से, स्वभावतः, व्यभिचार की मात्रा भी अधिक है।

(३) यहाँ का जलवायु मध्यम है क्योंकि समुद्र तट है। नवम्बर के मास में जब कि लाहौर में अच्छी सर्दी पड़ने लगती है यहां पर दोपहर को हमें, कभी २, छाते की आवश्यकता पड़ती थी।

(४) यहां पर पूरियाँ ॥।) सेर ॥=) सेर और १) सेर तक मिलती हैं। तरकारी के लिए अलग पैसे देने पड़ते हैं।

(५) इधर सामुद्रिक लवण ही अधिकतः व्यवहार में लाया जाता है।

(६) समुद्र के किनारे यहां पर सिक्खों का गुरुद्वारा भी है, जिसका महन्त एक उड़िया उदासी है। कहते हैं कि गुरुनानक साहब ने इसके अन्दर के कूप के नमकीन पानी को मीठा कर दिया था।

(७) यहां के लोग समुद्र के अन्दर दूर तक नौका ले जाते और जाल बिछा कर मछली पकड़ते तथा बेचते हैं।

(८) समुद्र के किनारे आते जाते जहाजों के सुभीते के लिये एक ऊँचा प्रकाश स्तम्भ स्थापित है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) उड़ीसा के कई जिलों से चावल बड़ी मात्रा में पुरी से जहाज द्वारा चीन, मद्रास इत्यादि जाता है। माल को ले जाने के लिए समुद्र के किनारे बहुत नौकायें पड़ी हुई हैं।

(१०) समुद्र के किनारे धनी-मानी पुरुषों की सुन्दर कोठियाँ बनी हुई है और जनता के बैठने के लिए कुछ बैंचे भी पड़ी हुई हैं।

(११) वैशाख और माघ में यहां पर दो बड़े भारी मेले होते हैं।

प्रदीप की कथा

(श्री शंकरदेव)

(१)

एक दिन भू पर पड़ा विच्छिन्न था,
एक दिन था उड़ रहा मैं धूल में।
भाग्य से आकर तुम्हारे हाथ में,
धन्य जीवन आज मेरा हो गया॥

(२)

मैं बटा जाकर तुम्हारे हाथ से,
स्नेह पूरित दीप में डाला गया।
प्रेम पूर्वक फिर जलाया मैं गया,
रम्य कुटिया में पुनः रक्खा गया॥

(३)

"क्षुद्र तू है"-लोग कहते हैं मुझे,
क्षुद्र हूं पर स्नेह का अवतार हूं।
दूर से आकर पतङ्ग प्रेम से,
गिर रहे हैं प्रेम-प्रण पूरा किए॥

(४)

सूर्य जाकर डूबता पश्चिम में जब,
ओढ़ करके श्याम दामन जब निशा।
लोक को सारे छिपाती ध्वान्त में,
स्वल्प ज्योति से जगाता हूं जगत॥

(५)

गर्व करके यों वृथा मिलकर सभी,
व्योम में बैठे मुझे क्या हँस रहे।
जब घटा सकते नहीं तम घोर को,
तो तुम्हें सौ बार यों धिक्कार है॥

(६)

भ्रान्त कोई पान्थ मुझको देखकर,
मार्ग पाले कामना मेरी यही।
एक इच्छा और है मन में मेरे,
ये कुटी शोभित सदा करता रहूं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

गुरुकुल-रजत-जयन्ती

भारतवर्ष में वर्तमान शिक्षा को प्रारम्भ करने के लिये जो कमेटी बनाई गई थी उसके अध्यक्ष लार्ड मैकाले थे। वर्तमान शिक्षा की भारत में नींव डालने में आप ही का सब से बड़ा हाथ है। आप ब्रिटिश राज्य की तत्कालीन आवश्यकता को समझते थे। आप का विचार था कि जब तक भारतवासी अँग्रेज़ी रंग-ढंग में नहीं ढल जाते तब तक ब्रिटिश-साम्राज्य की नींव भारत में बालू के टीले पर रहेगी। आप ने संस्कृत को न जानते हुए भी यहाँ तक लिखने का साहस किया कि संस्कृत की पुस्तकें छपवा कर हम कोरे काग़ज़ों को भी बिगाड़ते हैं। सफ़ेद काग़ज़ का कुछ तो उपयोग किया जा सकता है, उन्हीं काग़ज़ों पर संस्कृत की पुस्तकों के छप जाने के बाद तो काग़ज़ बिल्कुल निकम्मे हो जाते हैं। आप का कथन था कि संस्कृत की सब पुस्तकों का संग्रह एक तरफ़ रख दिया जाय और उस की अंग्रेज़ी साहित्य की केवल एक अलमारी में रखी पुस्तकों से तुलना की जाय तो इस तुलना में संस्कृत का सम्पूर्ण साहित्य निरुपयोगी सिद्ध होगा। मैकाले महोदय के ये उद्गार सर्वथा निरपेक्ष दृष्टि से लिखे हुए नहीं थे। आप के दिल की बात तब प्रकट हो जाती है जब भारत की शिक्षा पर लिखते हुए आप कह उठते हैं कि "इस समय हमें ऐसी श्रेणी के लोगों को उत्पन्न करने का भरसक यत्न करना चाहिये जो हमारे और उन करोड़ों व्यक्तियों के बीच में, जिन पर हम शासन कर रहे हैं, दुभाषिये का काम कर सकें। हमें ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जिन की नसों में भारतीय रुधिर बहता हो, जिनका चमड़ा हिन्दुस्तानी हो परन्तु जो मनोभावों में, मानसिक विचारों में, नीति-रीति में अंग्रेज़ हों।" ऐसे ही काली चमड़ी वाले अंग्रेज़ों की अधिकाधिक संख्या को उत्पन्न करना लार्ड मैकाले का उद्देश्य था। उनकी दृष्टि में ऐसे ही लोगों की सहायता से, जिनकी अपनी भाषा न हो, जिनका अपना साहित्य न हो, अपना धर्म न हो, अपनी सभ्यता तथा संस्कृति न हो, अंग्रेजों के पाँव भारत की भूमि में दृढ़रूप से जम सकते थे। लार्ड मैकाले के उक्त शब्द १८३५ में लिखे गये थे और ये विचार उन के दिमाग़ में ऐसे चक्कर काट रहे थे कि १८३६ में उन्होंने अपने पिता को जो पत्र लिखा उस में अपने हृदय के छिपे भावों को और भी अधिक स्पष्ट कर दिया। आप अपने पिता को लिखते हैं कि "हमारी चलाई हुई शिक्षा का प्रभाव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुओं पर आश्चर्य जनक है। जिस हिन्दू को भी यह शिक्षा मिली है, फिर वह हार्दिक भाव से अपने धर्म का उपासक नहीं रहा। कई लोग नीति की दृष्टि से हिन्दु बने रहते हैं और कई तो सीधे ईसाइयत को स्वीकार कर लेते हैं। मेरा सुदृढ़ विश्वास है कि यदि मेरे निर्दिष्ट मार्गानुसार शिक्षा चलती रही तो तीस साल के भीतर ही भीतर बंगाल में पढ़े-लिखे लोगों में कोई भी मूर्त्तिपूजक नहीं रहेगा।" वास्तव में लार्ड मैकाले भारतवासियों को मूर्त्तिपूजा से बचाने के लिये इतने उत्सुक न थे जितने उत्सुक वे ब्रिटिश-साम्राज्य की नींव को भारत में दृढ़ करने के लिये थे। लार्ड मैकाले चाहते थे कि किसी तरह भारतवासी अपने ऊँचे २ आदर्शों वाली सभ्यता और धर्म को भूल जावें। जो लोग 'अपनेपन' को भूल जावेंगे, विदेशियों के रंग में रंगे जावेंगे उनके लिये 'स्वराज्य' का कुछ अर्थ ही न होगा। इस दृष्टिकोण से ही भारत में वर्तमान शिक्षा-पद्धति की नींव डाली गई और स्कूलों तथा कालेजों में वेदों को भुला कर बाइबल का पाठ कराया गया तथा कालिदास और भवभूति को अर्धचन्द्र देकर शेक्सपीयर तथा मिल्टन को प्रतिष्ठित किया गया। सर फ्रेड्रिक हेलिडे ने 'हाउस ऑफ कामन्स' में बड़े ज़ोरदार शब्दों में कहा था कि "अँग्रेजी शिक्षा में संस्कृत और बायबल का ज्ञान आवश्यक है। कलकत्ता के हिन्दु-कालेज में इङ्गलैंड के किसी भी पब्लिक-स्कूल की अपेक्षा बायबल का ज्ञान अधिक पाया जाता है।" इसी प्रकरण में देशभक्त लाला हरदयाल ने सर चार्ल्स ट्रेविलियन का एक उद्धरण दिया है जिस में आप कहते हैं कि "हमारी तरह शिक्षा प्राप्त कर, हमारी ही प्रवृत्तियों को जागृत कर, हमीं के-से कामों में लगे रह कर हिन्दु हिन्दु नहीं रहते पर भीतर से अँग्रेज़ ही बन जाते हैं। हम भी अंग्रेज इसी लिये तो हैं क्योंकि हम अंग्रेज़ों में रहते हैं, उन्हीं से बात-चीत करते हैं और अंग्रेज़ी विचारों तथा चाल-चलन के अनुसार अपने जीवन को बनाते हैं। हिन्दू भी अब ऐसा ही करने लगे हैं। वे अच्छे से अच्छे अंग्रेजों के साथ उन की लिखी पुस्तकों आदि द्वारा प्रतिदिन परिचय पाते हैं और इस प्रकार 'अपनेपन' को छोड़ कर हमारे अधिकाधिक निकट आते जाते हैं।" आगे चलकर यही ट्रेवलियन महोदय कहते हैं कि "अँग्रेज़ी साहित्य के द्वारा ज्यों ज्यों भारतीयों का अंग्रेज़ों से परिचय बढ़ता जाता है त्यों-त्यों वे अंग्रेज़ों को विदेशीय समझना छोड़ कर उनके साथ सहयोग करने के लिये उत्सुक बनते जाते हैं। उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखने के स्थान में उन्हें अपना रक्षक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने लगते हैं। उन के हृदय की ऊँची-से-ऊँची अभिलाषा सब प्रकार से अंग्रेज़ों की नक़्ल करने की रह जाती है।" सर हन्टर ने १९७२ में यही भाव प्रकट किये थे। आपने लिखा है कि "हमारे एँग्लो-इण्डियन स्कूलों में से जो लड़के गुज़र जाते हैं, चाहे वे हिन्दु हों चाहे मुसलमान, वे अपने बाप-दादों के धर्म को घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। पाश्चात्य विज्ञान के साथ जब पूर्व के धर्मों की टक्कर लगती है तो वे पतली लकड़ी के समान सूख जाते हैं।"

स्कूलों-कालेजों में जहां 'भारतीयता' के भाव को नष्ट किया जा रहा है वहां ईसाइयत को फैलाने के लिये, हमें हमारा अपना धर्म विस्मृत कराने के लिये सरकार की तरफ़ से भी सिरतोड़ परिश्रम हो रहा है। कलकत्ता, मद्रास और बम्बई के बिशपों को सरकारी बजट में से तनख़ाह दी जाती है। यह अनुभव किया जाता है कि ज्यों २ भारतीय अपनी राष्ट्रीयता को भूलेंगे, अङ्गरेज़ी स्कूलों तथा कालेजों में शिक्षा प्राप्त कर ईसाइयत की तरफ़ झुकेंगे त्यों २ अंग्रेज़ी सरकार की नींव भी भारत में जमती जायगी। गदर के समय विलियम एडवर्ड्स नाम के एक महोदय भारत में थे जो पीछे आगरा हाइकोर्ट के जज बने। आप ने लिखा कि "हम भारतवर्ष में विदेशी—आक्रान्ता तथा विजेता हैं। यहाँ के लोग जितने सुशिक्षित तथा सभ्य होते जायंगे उतने ही वे हमारे चुंगुल में से निकलने की कोशिश करेंगे। हमारे भारत में पांव गड़ाये रखने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि किसी प्रकार देश में ईसाइयत का ज़ोर से प्रचार किया जाय क्योंकि इस तरह भारत में सब जगह बिखरी हुई बस्तियाँ ही हमारे बल बढ़ाने का मुख्य साधन हो सकती हैं।" इसी उद्देश्य को सन्मुख रखते हुए लार्ड बैन्टिक ने यह नियम बनवा दिया था कि हिन्दु के ईसाई हो जाने पर भी उसे पैत्रिक सम्पत्ति के पूरे अधिकार होंगे। इन्हीं बैन्टिक महोदय ने लार्ड मैकाले को शिक्षा कमेटी का अध्यक्ष बना कर यहाँ बुलाया था जिस की कथा हम अभी पाठकों को सुना चुके हैं।

लार्ड मैकाले की चलाई शिक्षा के इन दुष्परिणामों को आज भारतवर्ष अनुभव कर रहा है परन्तु उन्हें दूर करने का प्रयत्न अभी तक कुछ नहीं किया जा रहा। इन परिणामों को तभी दूर किया जा सकता है जब 'भारतीयता' की 'राष्ट्रीयता' की शिक्षा द्वारा रक्षा की जाय। बायबल की शिक्षा बेशक दी जाय परन्तु उस से पहले हमारे बालकों के हाथों में वेद दिये जांय, शेक्सपीयर और मिल्टन बेशक पढ़ाये जांय परन्तु उन से पहले हमारे बालक कालिदास और भवभूति के ग्रन्थों का अनुशीलन कर लें। ऐसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग और कहीं नहीं, परन्तु हिमालय के अञ्चल में, गंगा के किनारे, गुरुकुल में पिछले २५ साल से किया जा रहा है। इस संस्था का अवलोकन कर ब्रिटिश-साम्राज्य के भूत-पूर्व प्रधान मन्त्री रैम्ज़े मैग्डानल्ड ने लिखा था कि "मैकाले के भारतीय शिक्षा पर कलम उठाने के बाद से अब तक यदि भारतवर्ष में कोई नवीन महत्व पूर्ण संस्था खुली है तो वह 'गुरुकुल' है। इस देश में मैकाले की जारी की हुई शिक्षा के परिणामों से सर्वत्र असन्तोष फैल रहा है परन्तु इस असन्तोष को दूर करने के लिये गुरुकुल के संस्थापकों के सिवाय अन्य किसी ने कोई उद्योग नहीं किया।"

ऐसे महान् उद्देश्य रखने वाली संस्था २५ साल समाप्त कर अगामी सफलता के जीवनके सुख-स्वप्न ले रही है। देश के नर-नारियों का कर्तव्य है कि इस अवसर को अभूतपूर्व सफलता से मनावें।

गुरुकुल समाचार

ऋतु—गुरुकुल की ऋतु आज कल बड़ी सुहावनी है। जाड़ा अपने पूरे यौवन पर है, इस कारण गुरुकुल के सामने ही गंगा की धार भी बिलकुल क्षीण पड़ गई है। गुरुकुल से हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों का दृश्य बड़ा अच्छा मालूम देता है। गंगा के सर्वथा कम हो जाने के कारण पुल बन गये हैं और गुरुकुल आने-जाने का मार्ग बहुत सुगम हो गया है।

नई जगह— नवीन भूमि पर कुंआ खोदना प्रारम्भ कर दिया गया है। जमीन के पहाड़ के संनिकट होने के कारण ७० फीट के करीब खुद जाने पर भी अभी तक पानी नहीं निकला। दो-चार दिन में निकल आयगा।

सभाएँ—इस सत्र गुरुकुल में वाग्वर्धिनी सभा के अधिवेशन बड़ी धूमधाम से होते रहे। इस सभा का जन्म-दिन गत ६ दिसम्बर को मनाया गया। सभा के प्रतिष्ठित सदस्य पण्डित चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार सभापति थे। गुरुकुल में वाग्वृद्धि के उद्देश्य के लिये यह सभा सतत प्रयत्न करती रहती है। इसी सभा की ओर से प्रति वर्ष राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन भी किया जाता है। इस बार यह अधिवेशन ११-१२-१३ दिसम्बर को बड़ी धूमधाम से गुरुकुल के बृहत् पुस्तकालय में किया गया। राष्ट्रीय महासभा के मनोनीत सभापति पण्डित कृष्णदत्त जी विद्यालंकार दिल्ली से पधारे थे। आप के सभापतित्व में राष्ट्रीय महासभा बड़ी सफलता से समाप्त हुई।

गुरुकुल की जयन्ती का कार्य, अच्छी उन्नति कर रहा है। श्री आचार्य रामदेव जी, पण्डित प्रियव्रत विद्यालंकार को साथ लेकर धन-संग्रह के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कलकत्ता रवाना हो गये हैं। उन का डेढ मास तक कार्य करने का विचार है। मध्यप्रदेश में पण्डित सत्यकेतु जी विद्यालंकार के साथ मास्टर गोपाल जी को भेजा गया है जो कि वहाँ सेठ जमनालाल जी की सहायता से धन संग्रह का कार्य करेंगे। अन्य डेपुटेशनों के भी भेजने का प्रबन्ध हो रहा है।

जयन्ती में आने वाली जनता की संख्या को देख कर दो प्रकार के तम्बू लगवाने का प्रबन्ध हो रहा है। एक में सर्व साधारण यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध होगा, दूसरा कुछ ऐसे तम्बू भी लगवाये जाँयगे जिन में यात्री किराया दे कर ठहर सकेंगे। क्योंकि ऐसे तम्बुओं का प्रबन्ध परिमित संख्या में ही किया जायगा। इस लिये यात्रियों को पहले से ही प्रबन्ध के लिये गुरुकुल में सूचना दे देनी चाहिये।

गुरुकुल मुलतान—में अब तक दश श्रेणियों की पढ़ाई का प्रबन्ध था परन्तु खर्च की अधिकता तथा अन्य परिस्थितियों का ख्याल कर के वहाँ पर आठ श्रेणियाँ ही रखने का निश्चय किया गया है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र—ऋतु अच्छी है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। अस्पताल में एक भी बीमार नहीं है। इस बार गुरुकुल का वार्षिकोत्सव बड़े दिनों की छुट्टियों में करने का प्रबन्ध हो गया है। कन्या गुरुकुल तथा इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल के समाचार अच्छे हैं। दोनों स्थानों के ब्रह्मचारी स्वस्थ हैं तथा परीक्षाओं की तैयारी में लगे हुए हैं।

गत १३ दिसम्बर १९२६ को आर्यसमाज कांगड़ी ग्राम का द्वितीय वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से हुवा। समाज के अधिकारियों ने उत्सव के प्रति प्रेम दिखाते हुवे उत्सव की सफलता में भाग लिया और गुरुकुल से उपाध्याय तथा पंडित पधारे जिन के धर्मोपदेशों का जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। भजनीक भी बाहर से बुलाए गये थे जिनके भजन बड़े प्रभावशाली हुए। धन की अपील भी हुई, चन्दा काफ़ी प्राप्त हुआ।

साहित्य-वाटिका

दानवीर कार्नेगी—(गुजराती)—अत्यन्त गरीबी में से उठकर अपने ही उद्योग से पुरुष लक्षाधिपति की पदवी तक कैसे पहुंच सकता है, यह बात अमेरिका के धन कुबेर कार्नेगी के जीवन से भली प्रकार जानी जा सकती है। प्रस्तुत पुस्तक दानवीर कार्नेगी के अंगरेजी भाषा में लिखित आत्मचरित का गुजराती भाषान्तर है। पुस्तक की उत्तमता रली से स्पष्ट है कि यह स्वयं कार्नेगी की लिखी हुई है। अनुवाद बहुत अच्छा हुआ है। छपाई सफाई उत्तम है। मूल्य १।) प्राप्तिस्थान सस्तुं साहित्यवर्धक कार्यालय, अहमदाबाद।

किशोर कथा—(गुजराती)लेखक—श्री गिजुभाई। यह एक कथाओं की पुस्तक है। इस में कुमारोपयोगी बहुत सी शिक्षाप्रद एवं सरस कथाएँ लिखी गई हैं। पुस्तक प्राथमिक शालाओं में रखने योग्य है। मूल्य ॥) प्राप्तिस्थान—श्री दक्षिणामूर्ति-प्रकाशन-मन्दिर भावनगर, काठियावाड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलता पुर्जा—लेखक-श्री कनकप्रसाद चौधरी। इस पुस्तक में लेखक की लिखी हुई मनोरञ्जक कथाओं का संग्रह है। इस की प्रायः सभी कथाएँ हिन्दी के प्रसिद्ध साप्ताहिक-पत्र "मतवाला" में प्रकाशित हो चुकी हैं। भाषा की दृष्टि से इसकी कथाएँ बहुत अच्छी तथा मनोरंजक हैं। जिससे ज्ञात होता है कि लेखक का भाषा पर पूरा अधिकार है, परन्तु कथाओं में कोई शिक्षा देने का यत्न नहीं किया गया है। तथापि पुस्तक अच्छी। छपाई आदि उत्तम। मूल्य १)। पता—सरोज पुस्तकालय, मछुआ बाजार, कलकत्ता।

सेनापति—संपादक—श्रीरामगोविन्द त्रिवेदी। यह सचित्र साप्ताहिक हाल में ही कलकत्ते से प्रकाशित होने लगा है। इसके लेख समाचार और टिप्पणियाँ पढ़ने योग्य होती हैं। हिन्दुओं में संजीवन फूँकना इसका उद्देश्य है। हिन्दू संगठन के विषय में यह अच्छी सामग्री उपस्थित करता है। पत्र का संपादन उत्तम प्रकार से होता है। हम इसका सहर्ष स्वागत करते हैं। वार्षिक मूल्य २)। पताः—श्रीकृष्ण प्रेस, नारायणप्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता॥

आर्य—संपादक श्री पं० भीमसेन जी विद्यालंकार। लाहौर से मासिक रूप में प्रकाशित होने वाला आर्य अब साप्ताहिक रूप में निकलने लगा है। लेखों आदि की दृष्टि से अब यह अधिक उपादेय और उपयोगी हो गया है। इसकी टिप्पणियाँ पढ़ने लायक हैं। 'साप्ताहिक स्वाध्याय' स्तम्भ में मननीय विचार रहते हैं। पंजाबी भाईयों को इसे अपनाना चाहिए। वार्षिक मूल्य ४) रुपये।

वैदिक संदेश—सम्पादक श्री द्वारिका प्रसाद जी सेवक। यह राजपूताना वैदिकधर्म प्रचारिणी सभा का साप्ताहिक मुखपत्र है। इसमें वैदिक धर्म विषयक अच्छे २ लेख और कविताएँ रहती हैं। सामयिक बातों पर भी अच्छा प्रकाश डालता है। पत्र का संपादन अच्छा होता है। वार्षिक मूल्य २॥) रुपये। पता—दयानन्द यन्त्रालय, अजमेर॥

हिन्दू पञ्च (कमलांक)—संपादक श्री ईश्वरीय प्रसाद शर्मा। हिन्दू पञ्च ने थोड़े ही समय में हिन्दीजगत् में विशेष स्थान प्राप्त कर लिया है। पञ्च का यह विशेषांक दीपावली के अवसर पर कमलाङ्क नाम से प्रकाशित हुआ है। अङ्क में उत्तमोत्तम लेखों का अच्छा संग्रह है। बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी का 'खद्दर' नामक लेख पढ़ने योग्य है। कविताएं और व्यंगचित्र भी उत्तम हैं। इस अंक का मूल्य चार आने। प्राप्तिस्थान—हिंदू-पंच, बर्मन प्रेस, कलकत्ता॥

चाँद (प्रवेशांक तथा गल्पांक)—संपादक-श्री रामरखसिंह सहगल। चाँद हिन्दी साहित्य की उन्नत पत्रिकाओं में से है। इस के लेख और कविताएँ उच्चकोटि की होती हैं। इसका नव वर्ष का प्रवेशाङ्क बहुत सजधज से निकाला है। साहित्यचर्चा के साथ साथ हिन्दुओं की सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन करके चाँद ने बहुत अच्छा कार्य किया है। प्रवेशाङ्क के लेख और कविताएँ उत्तम है। हाल में ही श्रीप्रेमचन्द जी के संपादकत्व में चाँद का गल्पांक भी निकला है। इस की गल्पें उतनी रोचक नहीं जितनी प्रेमचन्द जी के सम्पादकत्व में होनी चाहियें थीं। शायद उन्हें इस अंक के निकलने को बहुत थोड़ा समय मिला है। कोई परवाह नहीं, फिर कभी सही! अभी तो गल्पांक का विचार ही पर्याप्त रोचक है। गल्पांक का मूल्य एक रुपया। पता—चाँद कार्यालय, एल्गिन रोड, इलाहबाद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिद्वार गंगा जी के तट पर

उत्पन्न हुई जगत-प्रसिद्ध उत्तम

ब्राह्मी बूटी

इसके सेवन से बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह मास्टरों, विद्यार्थियों, क्लार्कों, वकीलों, बैरिस्टरों, पण्डितों और कालेजों के लड़कों आदि दिमाग़ी काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

मू० ३) रु० सेर

हरू शुद्ध शिलाजीत

मूल्य फ़ी तोला १) रु०, २॥ तो० २) रु०, पूरे ४० दिन की खुराक ५ तो० ३॥) रु०

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगा कर लाभ उठाइए।

पता—मैनेजर 'शर्मा पुस्तकालय' तथा 'ब्राह्मीबूटी भण्डार'

नं १५ हरिद्वार (यू. पी.)

गृहस्थियो! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो!

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में "कामधेनु" सेवन कराइये मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़िल्यूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

आविष्कर्ता---भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

मंगाने का पता---कामधेनु कार्यालय देहली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

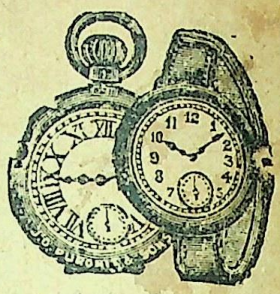

दाम १ शीशीका ॥।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चोताला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६ शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम। और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच (कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ॥।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ॥।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १॥। १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की

चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा।

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पताः—

जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल रजत-जयन्ती अंक Regd. No, A, 1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

सम्पादक—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद का पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है—

ऋषि दयानन्द

वेद में प्रवेश और उसका स्वाध्याय करने के लिए

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत

वेदार्थदीपक हिन्दी निरुक्तभाष्य

अवश्य पढ़िए। यह लगभग १००० पृ० का विशाल ग्रन्थ वेद का उत्तम स्वयंशिक्षक है। आर्यभाषा जानने वाले भी बड़ी सुगमता से इस के द्वारा वेद को जान सकते हैं। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रत्येक आर्य को, इस ग्रन्थ के पढ़ने की, सम्मति दी है। भारत के बड़े २ विद्वान् मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा कर चुके हैं। बड़ोदा, इन्दौर आदि देशी राज्योंने अनेक कापियें खरीद कर और पारितोषिक देकर इस पुस्तक को अपनाया है। इतनी अपूर्व और विशाल पुस्तक के होने पर भी दाम केवल ७) है। इसके अतिरिक्त ॥≡) डाकव्यय के लगते हैं।

प्राप्तिस्थान— प्रबन्धकर्त्ता 'अलंकार'

गुरुकुल काङ्गड़ी (बिजनौर)

सब रोगोंकी अचूक औषधि।

कामधेनु

आपकी सच्ची मित्र है।

क्योंकि घर और बाहिर सदा आपकी रक्षा करती है।

सदा पास रक्खो।

मूल्य बड़ी शीशी २॥) आधी शीशी १।) नमूना ॥)

डाकव्यय कारखाना देता है। विवरण पुस्तक मुफ्त मंगावे।

पता—भद्रसेन गुप्ता सुरजाबली।

पोस्ट—अरनियाँ (बुलन्दशहर) यू० पी०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लाo मुन्शीराम जी (गृहस्थ)

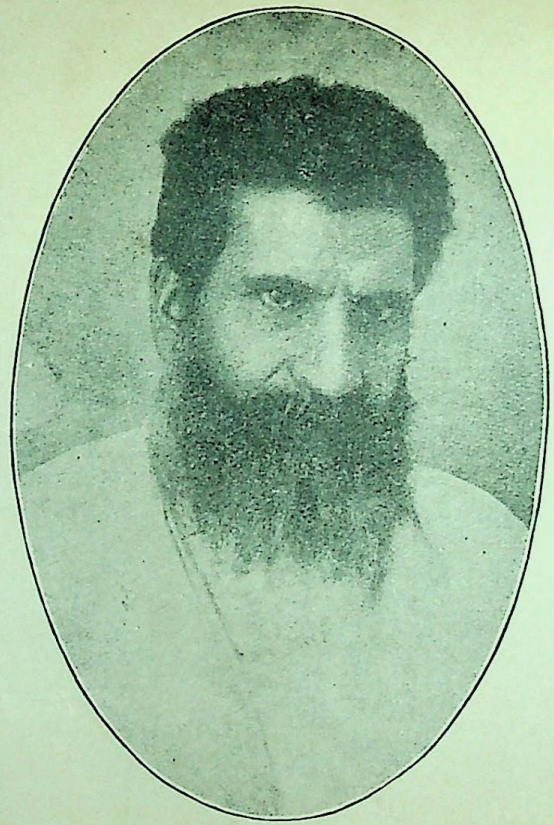

महात्मा मुन्शीराम जी (वानप्रस्थ)

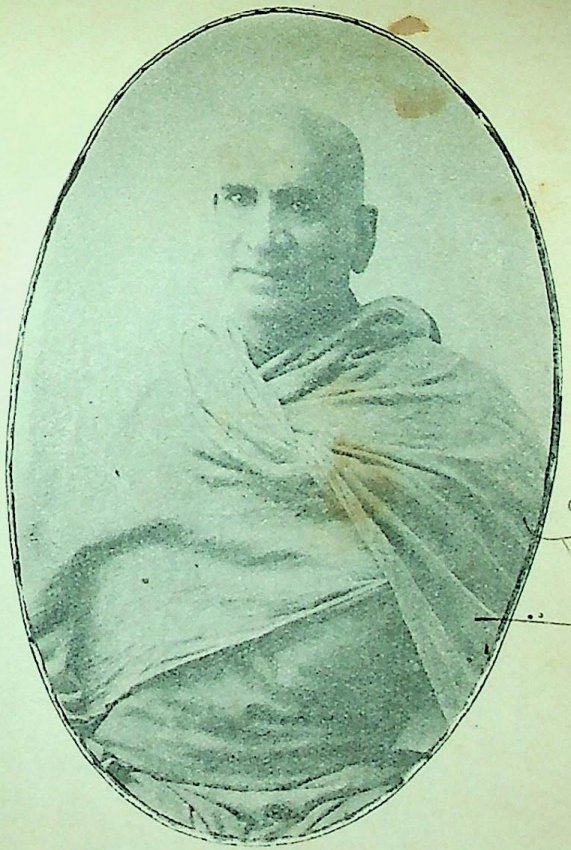

स्वामी श्रद्धानन्द जी (संन्यासी)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ऋग्वेद) के प्रमाण पृष्ठ

(यजुर्वेद) के प्रमाण पृष्ठ

(सामवेद) के प्रमाण पृष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३, अङ्क ९,१०] फाल्गुन, चैत्र [पूर्ण संख्या ३३, ३४

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

तव वन्दन हे नाथ ! करें हम ।

तव चरणन की छाया पाकर,
शीतल सुख उपभोग करें हम ॥
भारत-जननी की सेवा का,
व्रत भारी व्रत नाथ धरें हम ॥
माता का दुःख हरने के हित,
न्योछावर निज प्राण करें हम ॥
पाप-शैल को तोड़ गिरावें,
वेदाज्ञा इक सीस धरें हम ॥
फूले गुरुकुल की फुलवारी,
विद्या-मधु का पान करें हम ॥
राग द्वेष को दूर भगाकर,
प्रेम-मन्त्र का जाप करें हम ॥
सायं प्रातः तुझ को ध्यावें,
दुःख-सागर के पार तरें हम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल-पिता श्रद्धानन्द का दीक्षान्तसंस्कार में स्नातकों को उपदेश।

पुत्रो! आज मैं तुम्हें उन बन्धनों से मुक्त करता हूं, जिन के अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बन्धन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बन्धन बांध रक्खे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूं। इन बन्धनों के पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं, इसी लिए ये बन्धन और भी कड़े हैं। ये बन्धन उन उपनिषद् वाक्यों में वर्णित हैं, जिन्हें आज से हज़ारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या-समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूं।

पुत्रो! परमात्मा सत्यस्वरूप है। उस के प्यारे बनने के लिए अपने जीवन को सत्यस्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में, और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो।

धर्म-मर्यादा का उल्लंघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षि अन्तःकरण ही है, बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वही तुम्हें धर्म की मर्यादा बतलादेगा। अपने आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो।

स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचायेगा।

जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्तव्य है, उसे अपने हृदय से पूछो। यह कुल तुम्हारा आचार्य है। मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुम से केवल एक ही दक्षिणा मांगता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा ऐसा कोई काम न हो, जिस से तुम्हें अपने आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुम में से अब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे। उनसे मैं कहता हूं कि पांचों यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता पिता आचार्य और अतिथि, ये तुम्हारे देवता हैं, इनकी सदा शुश्रूषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निरभिमान थे। वे कभी पूर्ण या दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें कहता हूं कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो, और दोषों को छोड़ दो। इस संसार की अँधियारी में किसी को अपना ज्योतिःस्तम्भ बनाओ। पढ़ा पढ़ाया कुछ अंश तक पथ-दर्शक होता है, पर सच्चे पथ दर्शक वे ही महापुरुष होते हैं, जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन-समुद्र में ज्योतिःस्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी सत्यवादी और पक्षपात रहित महापुरुषों के, चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक, पीछे चलो।

लेना तो सभी संसार जानता है, तुम इस योग्य हुए हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रक्खो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलाता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारा देह बना है, जिस की गङ्गा का तुमने निर्मल जल पीया है, और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भारत-भूमि में रहते हुए तुम उसके यश को उज्ज्वल करोगे, यह मुझे पूरी आशा है। इस के साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुमने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप से उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जो कि सहस्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूंजते रहे हैं। इन्हें गुरु-मंत्र समझो और अपना पथ-दर्शक बनाओ।

इस के अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का संबन्ध रहा है। मैं तुम से गुरुदक्षिणा नहीं मांगता। गुरु-दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मांगना मेरा धर्म नहीं। मैं तुम से यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनैतिक सामाजिक या मानसिक विचार क्या क्या हैं। मैं केवल तुम से यही पूछता हूं कि क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या नहीं । स्मरण रक्खो, यह ससार सत्य पर आश्रित है । सत्य के बिना राजनीति धिक्कारने योग्य है, सत्य के बिना समाज के नियम पददलित करने योग्य हैं । यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलम्बन है, तो मुझे न कोई चिन्ता है और नाहीं कुछ मांगना है । +

कुलपिता श्रद्धानन्द का कुलजन्मोत्सव

के समय कुलपुत्रों को उपदेश

पुत्रो ! आज मुझे इतनी प्रसन्नता है कि तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात के देखने की आशा नहीं थी, उसे मैंने देख लिया । यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तय्यार हों तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा देसकता हूं। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूं, तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतन्त्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है जहां स्वतन्त्रता नहीं रुक सकती तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है; मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य की दृढ़ता को पकड़ो । सारे संसार का सत्य ही आधार है । यदि तुम्हारा मन वचन और कर्म संयमय है, तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा होगया । प्रसिद्धि के पीछे भाग कर कोई काम मत करो। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नहीं हुई । अपने सामने एक उद्देश्य रखलो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है । उपदेशक बनो या मत बनो, पर एक बात याद रखो, बनावटी मत बनो । सब को परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता । वाणी न हो न सही, किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्य-शाला बनाओ । स्वच्छ जीवन रक्खो । यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा तो मेरा पूरा सन्तोष है । *

+ यह उपदेश कुलपिता ने दूसरे दीक्षान्त-संस्कार में २८ मार्च १९१४ ई० को दिया था।

* यह उपदेश कुलपिता ने चतुर्थ कुलजन्मोत्सव के समय फाल्गुन बदी १०, सम्वत् १९७० को दिया था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धानन्द का बलिदान

काँप गयी है धरा, देख कर तेरा आज बलिदान ।
सहम गया आकाश, बढ़ा जब तेरा उसकी ओर विमान ॥

देख रही है भौचक दुनिया, आर्यवीर क्या करते हैं ।
धार्मिक युद्ध-क्षेत्र में कैसे हँसते हँसते मरते हैं ॥

जितना पीछे इन्हें धकेलो उतने आगे बढ़ते हैं ।
जितना ही पैरों से कुचलो उतने सिर पर चढ़ते हैं ॥

हुई संगठन की जय सच्ची, हुई शुद्धि की पूरी जीत ।
घर घर में क्या, हृदय हृदय में गाये जाते इनके गीत ॥

कर सकता था जीते जी जो, मर कर उससे अधिक किया ।
अमर बने रहने का सीधा पथ जो हम को दिखा दिया ॥

एक एक शोणित-कण से जनमेंगे सौ सौ श्रद्धानन्द ।
जो पल भर में आर्यजाति के काटेंगे दुखदायी फन्द ॥

कौन सदा जीवित रहने को इस दुनिया में आया है ।
धन्य वही है, आत्मत्याग से जिसने सुयश कमाया है ॥

जाओ स्वामी, पुनर्जन्म ले अबकी जब तुम आओगे ।
तब सचमुच ही काम अधूरा पूर्ण हो चुका पाओगे ॥

आँखों में ये अश्रु नहीं हैं हृदय स्वच्छ करते हैं हम ।
जान हथेली पर लेकर अब पग आगे धरते हैं हम ॥

होगा जीवन धन्य, धर्म पर जावेंगे जब अपने प्राण ।
धार्मिकता की विडम्बना से मातृभूमि पावेगी त्राण ॥

श्रीयुत बद्रीनाथ जी भट्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी श्रद्धानन्द

(डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर शान्तिनिकेतन)

हमारे देश में जो सत्य—व्रत के ग्रहण करने के अधिकारी हैं, एवं इस व्रत के लिये प्राण देकर जो पालन करने की शक्ति रखते हैं, उनकी संख्या बहुत ही कम होने के कारण हमारे देश की इतनी दुर्गति है। ऐसी अवस्था जहां पर है, वहां पर स्वामी श्रद्धानन्द से इतने बड़े वीर की इस प्रकार मृत्यु से कितनी हानि हुई होगी इसके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। परन्तु इसके मध्य एक बात अवश्य है कि उनकी मृत्यु कितनी ही शोचनीय हुई हो, किन्तु इस मृत्यु ने उनके प्राण एवं उनके चरित्र को उतना ही महान् बना दिया है। बार बार इतिहास में देखा जाता है कि जिन्हों ने अपना सब कुछ देकर कल्याण-व्रत को ग्रहण किया है, अपमान और अपमृत्यु ने उनके ललाट पर जय-तिलक की तरह अपना स्थान जमाया है। महापुरुष आते हैं प्राण की मृत्यु के ऊपर जय करने के लिये, सत्य को जीवन की सामग्री बनाने के लिये। हमारे खाद्य द्रव्य में प्राण देने का जो उपकरण है, वह वायु में भी है, एवं वैज्ञानिक परीक्षागार में भी है। परन्तु जब तक वह उद्भिज प्राणी में जीव आकार नहीं धारण करता तब तक प्राण की पुष्टि नहीं होती। सत्य के सम्बन्ध में भी यही बात है। केवल वाक्यों के द्वारा आकर्षण कर उसे जीवन-गत करने की शक्ति कितनों में है? सत्य को जानते बहुत हैं, किन्तु उसको मानता वही है जो विशेष शक्तिमान है। प्राणों की आहुति के द्वारा मान कर ही हम उस सत्य को सब मनुष्यों के लिये उपयोगी बना देते हैं। यह मानकर चलने की शक्ति ही एक सुन्दर वस्तु है। इस शक्ति की सम्पद् को जो समाज को अर्पित करते हैं उन्हीं के दान का महामूल्य है। सत्य के प्रति उसी निष्ठा का आदर्श श्रद्धानन्द इस दुर्बल देश को देगये हैं। अपनी साधना-परिचय के उपयोगी जिस नाम को उन्होंने ग्रहण किया था वही सार्थक हुआ। सत्य की उन्होंने श्रद्धा की थी। इसी श्रद्धा के मध्य सृष्टि-शक्ति है। इसी शक्ति के द्वारा वे अपनी साधना को मूर्ति के रूप में सजीव कर गये हैं। इसी से उनकी मृत्यु भी प्रकाशमय हो उनकी श्रद्धा को उस भयहीन दोषहीन तथा क्रांतिहीन अमृतमय छवि को उज्वल कर प्रकाशित कराती है। सत्य के प्रति श्रद्धा के इस श्रद्धानन्द को उन के चरित्र के मध्य आज हम सार्थक आकार में देख रहे हैं। यह सार्थकता बाह्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल स्वरूप नहीं है, अपितु निज की ही अकृत्रिम वास्तविकता में है।

विधाता जब दुःख को हमारे पास भेजता है तब वह अपने साथ एक प्रश्न लेकर आता है। वह हम से पूंछता है कि तुम हम को किस भाव से ग्रहण करोगे? विपद आवेगी नहीं ऐसा नहीं हो सकता— सङ्कट का समय उपस्थित होता है, उद्धार का कोई भी उपाय नहीं रहता, किन्तु जिस प्रकार विपद् का हम व्यवहार करते हैं इसी के ऊपर प्रश्न का सदुत्तर निर्भर है। किसी पाप के उपस्थित होने पर हम उस से डरें वा उसके सन्मुख अपना सिर झुकावें? अथवा उस पाप के विरुद्ध पाप ही को सन्मुखीन करें, मृत्यु के आघात दुःख के आघात के ऊपर रिपु की उन्मत्तता को जागृत करें? शिशु के आचरण में देखा जाता है कि जब वह गिरता है तब वह उल्टे जमीन ही को मारता है। वह जितना ही मारता है, फलस्वरूप उसको उलटा ही लगाता है। परन्तु यदि किसी वयस्क की ठोकर लगता है तो वह सोचता है कि वह किस प्रकार दूर की जावे। परन्तु हम देखते हैं कि किसी समय बाहर के आकस्मिक आघात की चमक में मनुष्य भी शिशु की बुद्धि वाला हो जाता है। वह उस समय सोचता है कि धैर्य का अवलम्बन करना ही कापुरुषता है, क्रोध का प्रकाश करना ही पौरुष है। हम यह स्वीकार करते हैं कि आज दिन स्वभावतः ही क्रोध आवेगा, मानव धर्म तो बिल्कुल छोड़ा नहीं जा सकता। किन्तु यदि क्रोध से अभिभूत हों तो वह भी मानव-धर्म नहीं है। आग के लग जाने पर यदि सब कुछ भस्म हो जावे तो आग की रुद्रता लेकर आलोचना करना वृथा है। विपद सभी पर आती है, जिनके पास उसके प्रतिकार के उपाय नहीं हैं वे भी दोषी हैं।

भारतवर्ष के अधिवासियों के मुख्यतया दो भाग हैं- हिन्दू और मुसलमान। यदि हम यह समझें कि मुसलमानों को एक ताक में रख देश की सभी मङ्गल चेष्टाओं में सफल होंगे तो यह भी एक बहुत भारी भूल है। हमारे लिये सब से ज्यादा अमंगल और दुर्गति का विषय यह है कि मनुष्य मनुष्य के पास रहता है किन्तु उनके मध्य किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहता। विदेशी राज्य में राजपुरुषों के साथ हमारा एक वाह्य योग-दल है, किन्तु आन्तरिक सम्बन्ध नहीं रहता। विदेशी राजत्व में यही हमारे लिये सब से अधिक पीड़ाजनक है।

इसी से आज हमें देखना होगा कि हमारे हिन्दू समाज में कहां कौन सा छिद्र है, कौन सा पाप है, अति निर्भय भाव से उस पर हमें आक्रमण करना होगा। इसी उद्देश्य को लेकर आज हिन्दू समाज को आवाहन करना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा, कहना होगा हम पीड़ित हुए हैं हम लज्जित हुए हैं, बाहर के आघात से नहीं किन्तु अपने भीतर के पापों के फलस्वरूप। आओ, आज हम सब मिल कर उस पाप को दूर करें। परन्तु हमारे लिये यह बहुत सहल बात नहीं है, क्यों कि हमारे भीतर बहुत प्राचीन अभ्यस्त भेद-बुद्धि भरी हुई है। बाहर बहुत पुरानी भेद की प्राचीर है। मुसलमानों ने जिस समय किसी उद्देश्य को लेकर मुसलमान समाज को आवाहन किया है, उन्हें कोई भी बाधा नहीं पड़ी। एक ईश्वर के नाम पर 'अल्लाह हो अकबर' कह कर उन्हें बुलाया है। फिर आज हम सब बुलावेंगे हिन्दू आओ, तब कौन आवेंगे? हमारे मध्य कितने छोटे छोटे सम्प्रदाय है, कितनी प्रादेशिकता है, उनको पार कर कौन आवेगा? कितनी आफ़तें पड़ीं परन्तु कभी भी तो हम एकत्रित नहीं हुए। बाहर से जब पहला बार मुहम्मद गौरी का हुआ था, तब भी तो उस आसन्न विपद् के दिन हिन्दू एकत्र नहीं हुए थे। इसके बाद मन्दिर के बाद मन्दिर लुटने लगे, देव-मूर्तियें झूठी होने लगीं, तब वे अच्छी तरह लड़े हैं, मारे गये हैं, खण्ड खण्ड होकर युद्ध करके मरे हैं, किन्तु एकत्र नहीं हुए। अलग २ थे, इसी लिये मारे गये। युग युग में हमारे इसके प्रमाण हैं। हां, सिक्खों ने अवश्य एक समय इस बाधा को दूर किया था। परन्तु सिक्खों ने जिसके द्वारा इस बाधा को दूर किया वह सिक्ख धर्म था। पञ्जाब में सिक्ख धर्म के आवाहन करने पर जाट-प्रकृति सभी जातियां एक झण्डे के नीचे एकत्रित हो सकीं थी। एवं, वे ही धर्म की रक्षा करने के लिये खड़ी हो सकीं थी। शिवाजी ने भी एक समय धर्मराज्य की स्थापना की नींव डाली थी। उनकी जो असाधारण शक्ति थी उसी के द्वारा वे समस्त मराठों को एकत्र कर सके थे। इसी सम्मिलित शक्ति ने भारत वर्ष को अपनाकर छोड़ा था। घोड़े के साथ जब घुड़सवार का सामञ्जस्य रहता है तभी वह घोड़ा किसी भी तरह नहीं रुकता। शिवाजी के साथ होकर जो उस दिन लड़े थे, उनके साथ भी शिवाजी का ऐसा ही सामञ्जस्य था। बाद में ऐसा सम्बन्ध नहीं रहा। पेशवाओं के मन में आचरण में भेद-बुद्धि का उदय हुआ और इसी के फलस्करूप उनका पतन भी हुआ। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह जो हमने भेद-बुद्धि के पाप को पाल रखा है, यह अत्यन्त भयङ्कर है। पाप का प्रधान आश्रय दुर्बल के मध्य है। अत एव यदि मुसलमान हमें मारते हैं और हम यदि उसे पड़े पड़े सह रहे हैं, तो यह केवल सम्भव हुआ है हमारी दुर्बलता के कारण। हमारे लिये, एवं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिवेशियों के लिये भी हमें अपनी दुर्बलता को दूर करना होगा। हम प्रतिवेशियों के निकट अपील करते हैं कि तुम इतने क्रूर मत बनो, अपनी उन्नति करो। नरहत्या के ऊपर किसी भी धर्म की भित्ति स्थापित नहीं की जा सकती। परन्तु यह अपील इसी दुर्बलता का रोना है। जिस प्रकार वायुमण्डल के घिर आने पर झड़ी आप ही आरम्भ हो जाती है, धर्म की दुहाई दे उसे कोई बाधा नहीं दे सकता, उसी प्रकार दुर्बलता के पाल रखने पर अत्याचार भी होने लगते हैं, उनमें कोई बाधा नहीं पहुंचा सकता। कुछ समय के लिये एक उपलक्ष्य को लेकर परस्पर में कृत्रिम बन्धुता हो सकती है, किन्तु चिरकाल के लिये नहीं हो सकती।

आज हमारे अनुताप का दिन है, आज अपराध का प्रायश्चित्त करना होगा। सत्यमय प्रायश्चित्त यदि हम करेंगे तभी शत्रु हमारा मित्र हो सकेगा, रुद्र हमारे प्रति प्रसन्न होंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की यादगार में

(लेखक श्रीयुत डा० तारकानाथदास० एम०ए०, पी०एच० डी०)

एक आततायी की गोली ने ऋषि श्रद्धानन्द को हम से छीन लिया। आप का भौतिक देह हम से बिछुड़ गया परन्तु आपकी आत्मा हमारे बीच में ही है। आज श्री स्वामी जी के भौतिक वियोग पर मैं उनकी आत्मा से और भी निकट सम्बन्ध का अनुभव कर रहा हूं। मेरे लिये वह ऋषि 'दधीचि' थे जिन्होंने धर्म-वेदी पर जीवन की अन्तिम आहुति भी दे डाली। वीरता के वह साक्षात् अवतार थे। हिन्दुओं की निर्बलताओं व कुरीतियों को दूर करने में उनसा पराक्रमी कोई नज़र नहीं आता था। उनका मिशन करोड़ों पतितों और मनुष्यता के जन्मसिद्ध अधिकारों से वंचित हिन्दु भाइयों का उद्धार करना ही न था, अपितु उनका पवित्र मिशन उन विधर्मियों को, जो ऋषि-सन्तान होते हुए भी तलवार के बल पर मुसलमान बनाये गये, शुद्ध करके हिन्दू धर्म में फिर से दीक्षित करने का था। सारांश में उन्होंने हिन्दुओं के धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक उत्थान के लिये जी जान से कोशिश की और अपने उद्योग में सफल हुए। भारतीय राष्ट्र के निर्माण के लिये जिन साधनों का उन्होंने सहारा लिया था, मैं उनकी गहराई में नहीं जाता, परन्तु इतना अवश्य कहूंगा कि वह हिन्दुओं के उन शहीदों में से जिन के नाम पर हिन्दू जाति गर्व करती है श्रेष्ठतम थे और भारतीय राष्ट्र के निर्माताओं में सब से उत्कृष्ट थे।

हिन्दूओं के कुछ राजनीतिज्ञों को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिम्मत नहीं हुई कि वह शुद्धि और अछूतोद्धार के पवित्र कार्य में महान् स्वामी का हाथ बटा सकें, क्यों कि वह विधर्मियों की धर्मान्धता से भय खाते थे। ऐसे राजनीतिज्ञों ने उस महान् स्वामी के महान् कार्यों का ज़ाहिरा और पोशीदा तौर पर विरोध करके भारतवर्ष की राष्ट्रीय एकता को भारी नुकसान पहुंचाया है, और एकता के आधारभूत सिद्धान्त धार्मिक सहिष्णुता के कायम होने में बड़ी भारी रुकावट डाली है। उम्मेद है कि ऐसे अदूरदर्शी राजनीतिज्ञ अपनी आंखें खोलेंगे और स्वामी जी के कार्यों में पूरा सहयोग देकर इस पाप का प्रायश्चित करेंगे।

उस महान् व्यक्ति की स्मृति को ताजा बनाये रखने का एक ही उपाय है, और वह यह कि उन द्वारा संचालित कार्यों को द्विगुण उत्साहसे चलाया जाये। शुद्धि और संगठन के कार्यों के अतिरिक्त २५ करोड़ हिन्दूओं को एक ही छत्रच्छाया के नीचे लाना भी उनका उद्देश्य था। इस उद्देश्य के लिये 'स्वामी श्रद्धानन्द-दिवस' मनाया जाना चाहिये और उनके कार्यों के लिये धनसंग्रह होना चाहिए। इस काम में पं० मालवीय, लाला जी, डा० मुंजे, मि० केलकर, श्रीनिवास आयंगर तथा मि० बिर्ला आदि को पूरा सहयोग देना चाहिये। प्रतिवर्ष हिन्दू जाति को स्वामी श्रद्धानन्द-दिवस मनाना चाहिए और उन के मिशन को पूरा करने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये।

स्वामी श्रद्धानन्द जी 'ब्रह्मचर्य' के प्रचारक थे। स्त्री-शिक्षा और विधवा-विवाह के वह कट्टर पक्षपाती थे। हर एक हिन्दू का, जो स्वामी जी के भक्त होने का दावा भरता है, कर्तव्य है कि वह उक्त कार्यों का क्रियात्मक प्रचार करे। २५ करोड़ हिन्दूओं में से यदि २ लाख हिन्दू भी सच्चे हृदय और दृढ़ संकल्प के साथ स्वामी जी के कार्यों को पूरा करने का व्रत ले लें तो १० वर्षों में हिन्दू जाति की काया पलट हो जाय।

हिन्दुओं को याद रखना चाहिये कि श्री स्वामी जी को हिन्दू जाति के उत्थान के निमित्त जीवन की आहुति देनी पड़ी है। एक तरह से हिन्दू जाति की पतित अवस्था ही एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा स्वामी जी की हत्या का कारण है। इस लिए याद रखिये स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की जिम्मेवारी उन सब हिन्दूओं पर है जो हिन्दू जाति की पतित अवस्था को देखते हुए भी उत्थान के लिए अपना कर्तव्य पालन नहीं करते। आइये, आज उस पाप को हम धो डालें और प्रायश्चित कर के श्री स्वामी जी द्वारा शुरु किए हुये कार्यों को द्विगुण उत्साह से करें ताकि शहीद श्रद्धानन्द का यश अमर हो और हिन्दू जाति फिर अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सके।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के श्रीचरणों में "शोकाञ्जलि"

(१)

निज मातृभू के भक्त थे तुम दीन-जन के बन्धु थे।
थे नाथ ! नाथ अनाथ के श्रद्धा-सुधा के सिन्धु थे॥
कुलभूमि के कुलदेव थे, देवत्व की वर पूर्ति थे।
मृत-जाति-जीवन-स्फूर्ति थे, करुणा क्षमा की मूर्ति थे॥

(२)

आलोक थे इस लोक के, तुम आर्य जनता-प्रान थे।
परतन्त्र भारत के सदा ही, मूर्तिमय अभिमान थे॥
निज धर्म-धन के थे धनी, धृति-सिन्धु के शुभ पोत थे।
अशरन-शरन थे पुण्य-पावन, प्रेम-गङ्गा-स्रोत थे॥

(३)

इस आर्त हिन्दू जाति के, तुम एक ही आधार थे।
रणधीर थे, नरवीर थे, वर-आत्म-बल-आगार थे॥
आपत्ति से हो भीत, देश-द्रोह तुम करते न थे।
कर्त्तव्य-पालन में कभी, हा ! मृत्यु से डरते न थे॥

(४)

हे वीर ! तुम तो वीर गति को पा चले इस लोक से।
क्यों रो रही है आज हिन्दू-जाति फिर इस शोक से॥
बलिदान की विधि धर्म पर, इस मृत्यु ने सिखला दिया।
होते अमर मर करके कैसे, दृश्य यह दिखला दिया॥

(५)

हे देव ! तुमने गोलियों को इस हृदय पर सह लिया।
हो मूक केवल ईश से मृत जाति का हित कह लिया॥
हे वीर ! जाओ शान्ति से, इस लोक से जो जा रहे।
पर देखना इस पुण्य-पथ पर, वीर कितने आ रहे॥

साहित्याचार्य गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल का महत्त्व

(हिज़ हाइनेस श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंह जी बहादुर के०सी०आई० ई० शाहपुरा)

शिक्षा का महत्त्व केवल विद्वत्ता में नहीं प्रत्युत सदाचार में है। एक बड़ा भारी विद्वान्, प्रत्येक दार्शनिक विषय को भली प्रकार समझाने की योग्यता रखने वाला यदि अपने आचार द्वारा प्रभाव नहीं डाल सकता तो उसकी समस्त विद्वत्ता लोगों के लिए व्यर्थ और उसके लिये भार स्वरूप है। इस के विरुद्ध एक साधारण विद्वान् जो अपने आचार द्वारा यह दिखला सकता है कि श्रेय और हेय मार्ग क्या है, संसार का बड़ा उपकार कर सकता है। अतएव शिक्षा पूर्ण तभी है जब कि विद्वत्ता के साथ २ चरित्र-संगठन का भी बल हो। वही शिक्षा-संस्था वस्तुतः लोकोपयोगी संस्था है जहां इस प्रकार का प्रबन्ध हो।

प्रसन्नता है कि गुरुकुल इस प्रकार की संस्थाओं में से एक है जहां विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य-जीवन व्यतीत करते हुये विद्या की प्राप्ति कराई जाती है। वृक्ष की उपयोगिता अथवा अनुपयोगिता उसके फल द्वारा निश्चय की जाती है। गुरुकुल से निकले हुये स्नातकों में से कइयों ने यह दिखला दिया है कि उन की शिक्षादात्री संस्था सचमुच देश के एक आवश्यक अङ्ग की पूर्ति कर रही है।

यह ठीक है कि बहुत से लोग इस से निराश होगये हैं, परन्तु इस का कारण है। वह यह है कि कार्य आरम्भ करते ही लोग बड़े २ फल की इच्छा करने लग जाते हैं, उन लोगों ने आशा की थी कि गुरुकुल से कणाद और गौतम निकलेंगे, परन्तु यह नहीं ध्यान दिया कि इतने दिनों की बिगड़ी हुई परिपाटी एक दम कैसे सुधर सक्ती है। आखिर वे बालक जो गुरुकुल में प्रविष्ट हुवे हैं, उन लोगों के ही सन्तान हैं जिन्होंने नियम पूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं किया है, और उन के पढ़ाने वाले किसी गुरुकुल के नहीं, प्रत्युत कालेज के निकले हुये हैं और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के वातावरण से बाहर नहीं हैं। धैर्य पूर्वक स्वामी जी के बतलाए हुये मार्ग का अनुकरण करते चले जायें, तो आशा है अवश्य सफलता प्राप्त होगी, और किसी न किसी समय वह दिन भी देखने में आजायगा जिसकी सब को प्रतीक्षा है। ईश्वर वह दिन लावे।

विज्ञापन

बच्चों को सर्दी खांसी से बचाने और मोटा तन्दुरुस्त बनाने के लिये सुख संचारक कंपनी मथुरा का मीठा 'बालसुधा' सब से अच्छा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत संस्कृति संस्कार और गुरुकुल

(ले० श्रीयुत राज्यरत्न आत्माराम जी बड़ौदा)

३२ कोटि हिन्दु प्रजा धर्म की उपासक है। मुट्ठीभर उसके सच्चे वीर नेता कांग्रेस आदि द्वारा उसको स्वराज्य दिलाने की चिन्ता में है। पर इस प्रजा का यथार्थ स्वरूप वह अभी नहीं समझ सके। वह सच्चे हैं, उनका अनुभव भी ठीक है। उन्हों ने आंखों से युरोप आदि में जाकर देख लिया है कि मज़हबी दीवानगी इस समय वहां नहीं, और जबतक वहाँ की प्रजा मज़हब की एकमात्र पुजारी बनी रही तब तक वह इस वैभव को प्राप्त नहीं कर सकी। महात्मा गांधी जी ने भी जब चरखे से स्वराज्य दिलाने की प्रतिज्ञा करते हुए हजारों हिन्दु युवकों को कारागार भिजवाया, तब भी वह सच्चे रहे, कारण कि वह कहते थे कि भारत के सब मनुष्य चर्खा नहीं कात सके इस लिये मैं स्वराज्य कैसे दिलाता? अङ्गरेज़ी शिक्षण जो कुछ भी फैला है, उसका कुछ भी प्रभाव कालेजों के पढ़े हुए युवक हिन्दु जाति के सुधारने में नहीं दिखा सके। ब्रह्मसमाज का दृष्टान्त काफ़ी है। हिन्दुओंका समाज दौर्भाग्यवश 'धर्म' शब्द के गिर्द ही चक्कर काट रहा है। महमूद गज़नबी की तलवार और वर्तमान काल की मुसलिम-गुंडेशाही ने इस के मन्दिर तोड़े, पर यह उनकी मुरम्मत करने की चिन्ता में है न कि मूर्तिपूजा छोड़ने की। एक वर्ष में एक सहस्र बालविधवाओं को मुसलमान गुंडे घरों, मेलों, तीर्थों, रेलों, यक्कों, मन्दिरों, नदियों, तथा सड़कों पर से उड़ा ले जाते हैं। पर यह बाइस करोड़ हिन्दुजाति क्या बालविधवा-विवाह की घोषणा करने को तैय्यार है? गङ्गा-स्नान से मुक्ति दिलाने वाले हमारे धर्मनेता ब्राह्मण क्या ७ करोड़ दलित और दो करोड़ भीलों को कल गंगा-स्नान से शुद्ध कर सकते हैं। देहली के 'तेज' पत्र के कृष्णांक में श्रीयुत रामप्रसाद जी बी. ए. भूतपूर्व संपादक 'बन्देमातरम्' ने सच लिखा है कि हिन्दुवीर राजनीति का दुरुपयोग करने के कारण हारते रहे। श्री सातवलेकर जी ने उसी पत्र में सत्य कहा है कि वैज्ञानिक शस्त्रों से शून्य होने के कारण हिन्दुवीर अनेक बार परास्त हुए। महाराजा रणजीतसिंह जी ने कवायद सिखाने के लिये फ्रैंच नायक रखा था, पर यदि वीर सिख सेनापति युरोप भेजे जाते तो कितना उत्तम होता? पर विदेश-गमन पाप है, यह हिन्दुधर्म कह रहा था। इस लिये जो महानुभाव देशभक्त हिन्दुनेता होने पर ३२ कोटि हिन्दुप्रजा को धर्म की बातों से एकदम हटा कर स्वराज्य की अलफ़ बे पढाना चाहते हैं, वे सच्चे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशभक्त हैं, इस में संदेह नहीं। बहडाकृर हितैषी है, यह तो ठीक हैं, पर मरीज़ की मरज़ दूसरी है। जब तक घोड़े पर बैठ कर एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में रोटी खाने को हिन्दुप्रजा तैय्यार नहीं, जब तक वह यवन वा गोरे के पानी को रणभूमि में पीने को तैय्यार नहीं, तब तक उसको स्वराज्य का पात्र समझना ठीक नहीं हो सकता। अभी दिल्ली बहुत दूर है, यह कहावत ठीक घटती है।

अब प्रश्न केवल यह रह गया कि इन २२ कोटि हिन्दुओं का सामाजिक सुधार करने के लिये पहिले क्या किया जावे ? क्यों कि जब तक ये कल्पित धर्म के भूत से डर रहे हैं तब तक आत्म-हत्या और समाज-हत्या के कुमार्ग में विवश जा रहे हैं।

इनका सामाजिक रोग भी तो बड़ा भयंकर और असाध्य कोटि का बन रहा है। जो धर्म के रक्षक कहलाते हैं, वही इस समय दुर्दैव से हिन्दुसमाज के प्राणघातक बन रहे हैं। संस्कृत भाषा के एकमात्र वे ठेकेदार हैं। २२ कोटि हिन्दुप्रजा उनकी बात को ईश्वर-वाक्य मान रही है। वे यदि कहदें कि विधवा विवाह पाप है तो क्या मज़ाल कोई सेठ इसको कर तो जावे ? इस लिये वेदों वा अन्य संस्कृत ग्रन्थों में क्या लिखा है ? और उसके अर्थ व्याकरण अनुसार क्या है ? ये बातें जब तक घर घर में न पहुंचाई जावें तब तक २२ कोटि प्रजा नहीं मान सकती कि सत्य धर्म क्या है ? कानपुर से 'धर्म' नामी एक मासिकपत्र ६ वर्ष से निकलता है। वह एक सौ पण्डितों वा शास्त्रियों की नामावलि छाप कर भोले हिन्दुओं को कहता रहता है कि एक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने यदि भूल की तो क्या हुआ, सैंकड़ों पंडित विधवा-विवाह के विरोधी हैं। इस का यथार्थ उत्तर गुरुकुल के हो जाने पर हम छाती ठोक दे सकते हैं कि यदि आप १०० संस्कृतज्ञ पंडितों के नाम विरोध में दे सकते हो तो हम गुरुकुल से निकले हुए स्नातकों के नाम, जो भारी पंडित है, उन से दुगुने वा तिगुने दे सकते हैं। विदेश-गमन पाप है, शुद्धि पाप हैं, दलितोद्धार पाप है, रण में जाना पाप है, ये सब पाप शीघ्र ही पुण्य हो जावें यदि शीघ्र ही हम गुरुकुलों की संख्या बढ़ा सकें।

संस्कृत-भाषा, संस्कृत-विद्या, वैदिक-संस्कृति और संस्कार, सब लुप्त हो चुके थे। काशी में ब्राह्मण के पुत्र को ही केवल संस्कृत और शास्त्र पढ़ाते थे। क्षत्रियों और वैश्यों के बालक कभी नहीं पढ़ पाते थे। आज गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का भारी प्रताप है कि यदि कोई ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वा दलित बालक संस्कृत तथा वेद पढ़ना चाहे, उसके लिए कोई रुकावट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वा बंधन नहीं। इस समय उक्त गुरुकुल में चारों वर्णों के ही बालक जहां वेद पढ़ रहे हैं वहां यज्ञ भी करते हैं। यही नहीं परन्तु एक पंक्ति में भोजन भी करतेहैं। यह वह उत्तम काम है जिस की स्तुति हो नहीं सकती। संगठन का यही महाप्राण है।

सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तों, महती आर्ष संस्कृति, मनुष्य को देवता वीर तथा तपस्वी बनाने वाले वैदिक षोडश-संस्कार, इनके तत्त्व को वही छात्र जान सकता है जो गुरुकुल में रह कर संस्कृत का भारी पण्डित होकर निकले। दण्ड तथा कौपीनधारी होने से प्रत्येक ब्रह्मचारी बालचर बन जाता है। आर्य-भोजन अथवा अन्नाशन की महिमा गुरुकुल खूब दिखा रहा हैं। राममूर्त्ति समान पत्थर तोड़ते हुए, और पृथिवीराज समान बाण चलाते हुए अन्नाशी ब्रह्मचारी वीरपद को सार्थक कर रहे हैं। गुरुकुल कांगड़ी के छात्रों का डंडों से शेर को मार डालना, उनके ब्रह्मचर्य्य वीरता तथा अन्नाशन का भारी प्रकाशक है। गुरुकुल कांगड़ी के जन्म तथा जीवन को मैं सफल समझता हूँ, क्योंकि यह छात्रों की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को साथ साथ करने में रातदिन लगा हुआ है।

इस समय देशभक्त ला० हरदयाल जी संस्कृत भाषा सीखने की जरूरत आर्य्य-जाति के प्रत्येक छात्र को बता रहे हैं। कलकत्ते में जो अभी भारतीय संस्कृत-प्रचारक मंडल का अधिवेशन हुआ है, उसने आर्य्य-जनता का विशेष ध्यान संस्कृत भाषा सीखने की तरफ आकृष्ट किया है। जिस संस्कृत-भाषा की तरफ इस समय आर्य जनता का ध्यान खैंचा जा रहा है, उस संस्कृत-भाषा के प्रचार का भारी काम गुरुकुल कर रहा है और करता रहेगा। महर्षि दयानन्द का जीवन व्यवहाररूप से संस्कृत भाषा सीखने तथा सिखाने का सच्चा मार्ग-दर्शक है। लौकिक और वैदिक संस्कृत का भेद जना कर अंग तथा उपाङ्ग ग्रन्थों सहित वेद तथा वैदिक साहित्य को पढ़ने की ऋषि ने अनुभव-सिद्ध चेतावनी दी है। उनके इस मार्ग पर मुनवर त्यागवीर महात्मा पंडित गुरुदत्त एम० ए० ने चलकर दिखा दिया। उस मुनि ने अष्टाध्यायी महाभाष्य निरुक्त आदि अंग और छः दर्शन वा उपाङ्ग ग्रन्थ स्वयं पढ़े और गृह पर अष्टाध्यायी, महाभाष्य तथा निरुक्त आदि पढ़ाने के लिए दो श्रेणियां खोलदीं। और तीन वर्ष तक वा मरण-पर्य्यन्त उनको चलाते रहे। जब साधु केशवानन्द ने सनातन धर्म सभा लाहौर की तरफ से धारा-प्रवाह संस्कृत में भाषण दिए तो उस समय दो घंटे तक धारा प्रवाह शुद्ध संस्कृत बोल कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक सिद्धान्तों का मंडन करते हुए पंडित गुरुदत्त ने सिद्ध कर दिया कि ऋषि दयानन्द प्रदर्शित सनातन आर्षविधि अङ्ग उपाङ्ग सहित वेद पढ़ने की सफल हो गई। पं० गुरुदत्त के इस सिद्ध प्रयोग ने गुरुकुल कांगड़ी को स्थापन करने की व्यवहार रूप से प्रेरणा की।

ज्यों २ गुरुकुल से स्नातक वा वैदिक पंडित अधिक से अधिक संख्या में निकलेंगे, त्यों २ ही वेद-मंत्रों के सच्चे अर्थ जिन्हें आज तक पौराणिक छिपा रहे थे सब पर खुल जावेंगे और विधवा-विवाह तथा नियोग को रोकने की शक्ति फिर किसी में न होगी। विदेश-यात्रा, शुद्धि, दलितोद्धार, स्त्री-शिक्षण, सहभोज, तथा संस्कार आदि सामाजिक विषय, जो इस समय गोरखधंधे के रूप में दृष्टि पड़ते हैं, सरल हो जावेंगे। यूनिवर्सिटी ने परीक्षा को रोग बना कर उस की चिन्ता से जो सैंकड़ों युवकों के मन मार दिये हैं, उसका भी संशोधन गुरुकुल की न्याय तथा प्रेम युक्त परीक्षा-प्रणाली कर रही है। मुसलमानों ने जो भ्रम फैला रखा है कि मांस खाने से ही बल आता है, इसका उत्तर गुरुकुलों ने उत्तम रूप से दे रखा है। पत्थर उठाने तीर चलाने तथा लाठी आदि की खेलें करते हुए अन्नाशी ब्रह्मचारियों ने कांगड़ी के जंगल में कुछ वर्ष हुए एक शेर को डंडों से मार कर दिखा दिया कि मांस खाए बिना भी सब वीर हो सकते हैं।

योरुप के शिक्षण-शास्त्री कहते हैं कि आदर्श-छात्र वह हो सकता है जो शरीर से पुष्ट, विद्या से विभूषित और चारित्रवान् हो, तथा समाज-सेवक बन सके। यह आदर्श गुरुकुल विशेष उत्तमता तथा सुविधा से पूर्ण कर रहा है, क्यों कि इसको यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं के लिए घोटा लगवाने की जरूरत नहीं।

देश सेवा के जो अन्य भारी तत्त्व हैं, उनकी तरफ भी गुरुकुल कांगड़ी का पूरा ध्यान सदैव रहता है। यथा, यहां शिक्षण का माध्यम हिन्दी भाषा है। इस के अतिरिक्त यहां सब वर्णों के बालक, ब्राह्मण से लेकर शूद्रकुलोत्पन्न तक न केवल संग ही रहते हैं किन्तु एक ही पंक्ति में खाना खाते हैं। अछूत बालक भी बराबर इस में लिये जाते और समान अधिकार पाते हैं। इस लिए उक्त सब कारणों से मैं इस गुरुकुल का जन्म तथा जीवन सफल समझता हूं। जब तक नगर नगर में ऐसे २ उत्तम गुरुकुल नहीं होंगे तब तक आर्यजाति की संतान की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति एक साथ नहीं हो सकेगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

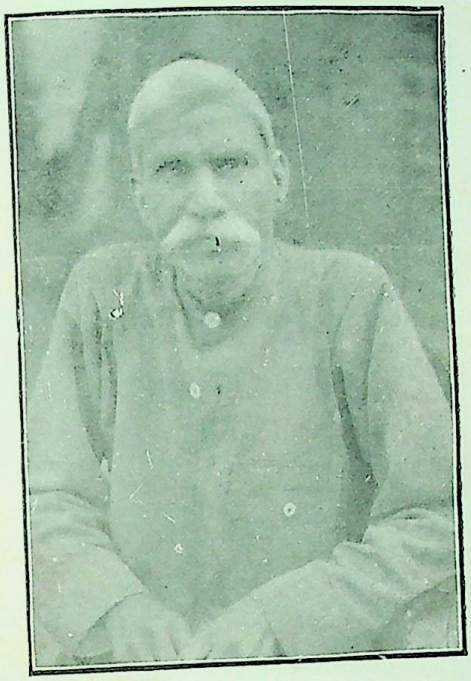

गुरुकुल कांगड़ी भूमि के प्रदाता दानवीर मुन्शी अमन सिंह जी

गुरुकुल कांगड़ी के उपाध्यायगण

Punjab Fine Art Press, Bowbazar Calcutta.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पूज्य स्वामी जी के चरणों में

श्रद्धाञ्जलि

ऐ पूज्य मेरे स्वामी, क्या भेंट मैं चढ़ाऊं।
भगवन्! तुम्हीं बतादो, कैसे तुम्हें रिझाऊं॥
उपकार जो किये थे, मुझ से गिने न जाते।
ऋण से दबा हूँ उन के, कैसे उऋण कहाऊं॥
जो कुछ भी मैं बना हूं, सब आप की कृपा थी।
बदला मैं उस दया का, कैसे कहो चुकाऊं॥
मङ्गल भरा तुम्हारा, नित हाथ शीश रहता।
आशीष थी तुम्हारी, अब कैसे उस को पाऊं॥
दलितों के तुम सहारे, तुम ने पतित उभारे।
उस कार्य को तुम्हारे, पा शक्ति मैं बढ़ाऊं॥
त्यागी परोपकारी, तुम दिव्य-देहधारी।
मन में सदा तुम्हारी, प्रतिमा गुरो! बिठाऊं॥
वो दिव्य बल तुम्हारा, दिल साफ जोश वाला।
पाऊं कि जिस से मैं भी, औरों के काम आऊं॥
दुःख को मिटा चुके हो, अमरत्व पा चुके हो।
क्यों देव सद्गति की, फिर प्रार्थना कराऊं॥
श्रद्धा का दिव्य मन्दिर, यह मेरा दिल विमल हो।
चल के तुम्हारे पथ में, जीवन सफल बनाऊं॥
बस कामना यही अब, सेवा में सब लगाऊं।
फिर अन्त में तुम्हारी, सी वीर मृत्यु पाऊं॥

स्वा० धर्मदेव विद्यावाचस्पति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य्य

(ले० प्रो० धर्मदत्त जी विद्यालंकार, उपाध्यक्ष आयुर्वेद महाविद्यालय)

विषय-वासना के संयम करने का नाम ब्रह्मचर्य्य है। विषय का संस्कार बीजरूप से प्रत्येक बालक के मन में विद्यमान रहता है। उसके युवावस्था में आने पर कुछ २ अंकुरित होने लगता है और पूर्ण युवा हो जाने पर अधिक विकसित हो जाता है। इस प्रकार विषय-वासना प्रत्येक मनुष्य के अन्दर स्वभावतः ही उत्पन्न होती है। पर इस के आधीन हो जाना ब्रह्मचर्य का नाश और इसे अपने आधीन रखना ही ब्रह्मचर्य्य है।

जब बालक के शरीर में शुक्र उत्पन्न होने लगता है तब उस का स्वभाव भी बदलने लगता है। पहले वह माता पिता की आँख के नीचे रहना पसन्द करता था, अब स्वतन्त्र और उच्छृङ्खल रहना पसन्द करता है। अब उसे किसी को आधीनता और और किसी का आश्रय अखरता है; जिन माता पिता के बिना वह थोड़ी देर में व्याकुल हो जाता था वे ही यदि उसे आधीनता की बेड़ियों में रखना चाहें तो उन के विरुद्ध द्रोह करने लगता है। स्कूलों के मास्टर बालक के इस स्वभाव-परिवर्त्तन को न समझ कर उन्हें बलात्कार जकड़ कर रखना चाहते हैं, जिस से बालक उनके विरुद्ध विद्रोह कर देते हैं और उन के तथा विद्यार्थियों के बीच झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं। अध्यापकों को जानना चाहिये कि यह स्वतन्त्रता की प्रवृति युवावस्था प्रारम्भ होने का एक ज़रूरी परिणाम है। गुरुओं को चाहिये कि वे इस आयु में बालक की नियन्त्रण-रज्जु को न तो बहुत ढीला करें और न ही बहुत खींच कर रखें, क्योंकि दोनों ही अवस्थाओं में बालक के बिगड़ने का डर है।

बालक के अन्दर अब साहस भी आने लगता है। जो पहले रात को बाहर नहीं निकल सकता था, वह अन्धेरे में निकल कर बड़े २ उपद्रव करने लगता है; प्रायः कर बालक शैतानी के कामों में इस साहस को प्रकट करते हैं, यह साहस भी युवावस्था का एक परिणाम है।

परन्तु एक विशेष परिवर्तन और भी होता है। जो बालक अब तक विषय की बात नहीं जानता था वह अब विषय की बातों में दिलचस्पी लेने लगता है। जननेन्द्रिय के लिए एक प्रकार की उत्सुकता अनुभव करने लगता है और सुन्दर बालकों तथा सुन्दर कन्याओं की ओर आकर्षण भी अनुभव करने लगता है।

बारहवें वर्ष से सोलहवें वर्ष के बीच किसी समयमें यह विषय सम्बन्धी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार प्रत्येक बालक में उत्पन्न होने आरम्भ होते हैं। इन विचारों के झोंके उसे डगमगाने लगते हैं। परन्तु यदि माता पिता और आचार्य्य की तीव्र आँखे बालक पर हर समय लगी रहें और यदि इन के अमृतमय उपदेश उसे प्राप्त होते रहें तो बालक इन झोंकों द्वारा गिरने से बच जाता है। पर यदि दौर्भाग्य से माता पिता अपने काम धन्धों में लगे रह कर और आचार्य्य दूसरे प्रबन्ध के काम में लगे रह कर ऐसे संकटमय काल में बालक को अकेला छोड़ दें तो वह इन झोंकों से डगमगाया हुआ ऐसे अन्धेरे कुएं में जा गिरता है जिस में से फिर उसे उबारना कष्ट-साध्य हो जाता है। अभिप्राय यह है कि बारहवें से सोलहवें वर्ष के बीच जब कि अण्ड-ग्रन्थियां शुक्र को बनाना आरम्भ करने लगती हैं, और युवावस्था आरम्भ होने लगती है तब बालक पुरुष बनना आरम्भ होता है। इस अवस्था में स्वाभाविक तौर से उस के अन्दर कुछ विषय सम्बन्धी विचार उत्पन्न होने लगते हैं।

शुक्रोत्पत्ति का प्रयोजन

युवावस्था में—यह ठीक है कि शुक्रोत्पति के साथ विषय सम्बन्धी विचार भी आरम्भ होते लगते हैं, परन्तु शुक्रोत्पत्ति का एक मात्र प्रयोजन बालक की मानसिक तथा शारीरिक अभिवृद्धि करने का होता है। यदि इस आयु में शुक्र उत्पन्न न हो तो बालक सदा के लिए बालक ही रह जाय और पुरुष न बन सके।

शुक्र उत्पन्न हो कर फिर से शरीर में विलीन हो जाता और शरीर की मांसपेशियों नसों और अस्थियों के निर्म्माण में सहायक होता है, अतः इसे "जीवनीय रस" कहते हैं। यदि यह जीवनीय रस शरीर में उत्पन्न न हो तो कितना ही पौष्टिक भोजन खाया जावे तब भी शरीर और मस्तिष्क की वृद्धि न हो। परीक्षण से देखा गया है कि यदि किसी प्राणी के युवाकाल के आरम्भ में ही उसकी अण्ड-ग्रन्थियां निकाल दी जावें तो उसके शरीर और मन की वृद्धि सर्वथा रुक जाती है और वह बालक के समान ही रह जाता है। पर यदि फिर उसकी किसी जगह की त्वचा को काट कर त्वचा के नीचे किसी दूसरे प्राणी की अण्ड-ग्रन्थियाँ स्थापित कर दी जावें और ऊपर से त्वचा सी दी जावे तो उस की रुकी हुई शारीरिक और मानसिक वृद्धि फिर से आरम्भ हो जाती है, जिस से पता लगता है कि अण्ड-ग्रन्थियों का रस या शुक्र शरीर और मस्तिष्क की अभिवृद्धि का अत्यावश्यक कारण है।

शरीर और मस्तिष्क की अभिवृद्धि बारहवें से बीसवें वर्ष तक विशेष तौर से होती है। बीसवें वर्ष के पीछे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिवृद्धि की मात्रा कुछ मन्द हो जाती है, किन्तु चौबीसवें या पच्चीसवें वर्ष तक जारी रहती है। अतः २४या २५ वर्ष की आयु तक शुक्र का एक मात्र प्रयोजन शरीर और मस्तिष्क की अभिवृद्धि करना ही है। इस अभिवृद्धि-काल में विषय सम्बन्धी विचार और चेष्टाएं उत्पन्न होने लगती हैं। परन्तु जो युवक उनको अपना परम शत्रु समझ कर उनको दबाये रखता है वह जहां अपने शरीर और मस्तिष्क की उन्नति में रुकावट नहीं आने देता वहां अपनी इच्छा-शक्ति को भी प्रबल बनाता और इस प्रकार अपने आप को पूर्ण मनुष्य बनाता है।

परन्तु जो युवक पच्चीस वर्ष की उमर से पहिले इस अभिवृद्धि-काल में विषय सम्बन्धी विचारों और चेष्टाओं में अपने जीवनीय रस को व्यय करना आरम्भ कर देता है, वह याद रखे कि वह अपने शरीर और मस्तिष्क के ख़र्च पर यह काम कर रहा है। यदि कोई युवक विषय सम्बन्धी विचारों और चेष्टाओं में आनन्द अनुभव करता है, वह अपना ही खून चूस कर समझता है कि मैंने अपना पेट भर लिया, अपने ही घर की अमूल्य सामग्री को जला कर समझता है मैंने तमाशा देख लिया।

अण्डग्रन्थियों को शरीर में से निकालने अथवा उन के रस को शरीर में से निकालने का परिणाम एक ही होता है। जिस प्रकार अण्डग्रन्थियों को निकालने से बालक मनुष्य नहीं बन सकता, उसी प्रकार चौबीस वर्ष से पहिले अण्डग्रन्थियों के रस के व्यय कर देने से भी बालक मनुष्य नहीं बन सकता; जो पुरुष शुक्र के बिन्दु २ को शरीर में लीन होने देता है वही सच्चा पुरुष बन सकता है।

युवावस्था के बाद—चौबीस या पच्चीसवें वर्ष के बाद शुक्र के दो कार्य हो जाते हैं:—

(१) शरीर का रक्षण (२) प्रजनन

इन में से रक्षण का कार्य मुख्य, और प्रजनन का कार्य गौण होता है। यह ठीक है कि यदि विषय सम्बन्धी चेष्टाओं में शुक्र का व्यय किया जाय तो शरीर को इतनी क्षति नहीं होती जितनी युवावस्था में, पर तो भी यदि अधिक व्यय किया जावे तो शरीर के रक्षण में न्यूनता अवश्य आ जाती है।

देखा गया है कि यदि पच्चीसवें वर्ष के बाद भी अण्डग्रन्थियों को निकाल दिया जाय तो पुरुष में पुरुषत्व के गुण नष्ट हो जाते हैं; वह भीरु और कमज़ोर हो जाता है, उस के अन्दर से उत्साह, साहस, वीरता, आत्माभिमान आदि पुरुषोचित गुण नष्ट हो जाते हैं; वह दूसरे के आक्रमण से अपनी रक्षा आप नहीं कर सकता और उसके अन्दर से विषय सम्बन्धी आनन्द तथा प्रजननशक्ति भी नष्ट हो जाती है, जिस से मालूम होता है कि शुक्र का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य प्रयोजन पुरुष के पुरुषत्व को कायम रखना है, अर्थात् पच्चीस वर्ष तक पुरुषत्व बनाना और पच्चीस के पीछे पुरुषत्व को कायम रखना शुक्र का मुख्य काम है । इस से जहां मनुष्य दूसरे पुरुषों के आक्रमण को रोक सकता है वहां उसी पुरुषत्व से नाना प्रकार की व्याधियों के आक्रमण को भी रोकने में समर्थ होता है । इसी लिये जब ऋतु-परिवर्तन होता है और रोगों का अधिक भय रहता है अथवा चारों तरफ कोई संक्रामक रोग फैला होता है तो जो पुरुष यत्न से वीर्य की रक्षा करते हैं वे रोग के आक्रमण से बच जाते हैं जब कि दूसरे लोग शीघ्र ही रोग का शिकार हो जाते हैं; इस से स्पष्ट है कि युवावस्था के पीछे भी शुक्र का मुख्य प्रयोजन आत्मसंरक्षण है और प्रजनन गौण है ।

शरीररूपी दीपक में शुक्र एक तैल है। यदि उसे उलट कर फेंक न दिया जावे तो वह शरीर में जला करता है। उसकी आग में सब रोगों के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं, उस की ज्योति आंख और चेहरे पर दिखने लगती है, उस के तेज से चेहरा धधकता करता है, उसके ज्वलन से शरीर में दिव्य शक्ति उत्पन्न होती है, जीवन में उत्साह और उमङ्ग की विद्युत् संचार किये रहती है, और यदि कोई आकस्मिक कारण न हो जावे तो जीवन रूपी दीप १०० वर्ष तक अखण्ड रूप से चमकता दमकता रहता है ।

शुक्र की उत्पत्ति के साथ विषय वासना की उत्पत्ति और स्थिति उस का लक्षण मात्र है, उद्देश्य नहीं । विषय वासना के होते हुए उसे आठों याम काबू रखना घर के सिंह को वश में रखने के सदृश है और यही सच्चा ब्रह्मचर्य है ।

माता पिता का कर्तव्य

कई बार माता दाई या दूसरे लोग बच्चे की उपस्थेन्द्रिय को हिला २ कर खुश हुआ करते हैं, परन्तु यह सर्वथा अनुचित है । जब बालक तीन या चार वर्ष का हो जावे तो उसे दाई या नौकरों के पास सर्वथा नहीं छोड़ना चाहिये; अनेक बालकों के चरित्रनाश का बीज इन्हीं नौकरों ने बोया है। जब बच्चा तीन वर्ष से बड़ा हो जावे तो उसे कभी किसी दूसरे के पास न सुलावें। अनेक मूर्ख माता पिता तो आठ या दस वर्ष के बालकों को भी एक ही चारपाई पर सुला देते हैं, इस से उनके चरित्र के नष्ट होने का भारी भय रहता है। जब बालक पांच वर्ष से बड़ा हो जावे तो उसे उठाना, प्यार करना और चूमना सर्वथा छोड़ देना चाहिये, नई बातों से उस में सोई हुई विषयवासना के उत्तेजित होने का भय रहता है ।

आठ वर्ष तक माता बालक की प्रत्येक क्रिया को अपने सामने रखे,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आठ वर्ष की उमर के पीछे आने वाले भय को सम्मुख रखती हुई माता अपने बालक को सावधान करती हुई प्यार से समझावे कि "ए मेरे प्यारे बेटे! तेरी यह उपस्थेन्द्रिय बड़ी पवित्र इन्द्रिय है, यदि इसे हाथ से स्पर्श किया जावे या कोई दूसरा इसे हाथ से स्पर्श करे तो यह अपवित्र हो जाती है, जो बच्चे इसे छूते या दूसरों को छूने देते हैं वे बच्चे ही रह जाते हैं, मनुष्य नहीं बन सकते, अतः यदि तू मनुष्य बनना चाहता है तो मेरी शपथ खाकर कर कहो कि न तो कभी इस इन्द्रिय को छुवेगा और न किसी को छूने देगा।" बालक की श्रद्धा माता पर अगाध होने से माता की बात को मान लेगा। इस प्रकार की शिक्षा को आचार्यकुल में गुरुवर्ग भी समय २ पर देते रहें।

सात या आठ साल की उमर के पीछे बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कर दें। गुरुकुलों की श्रेणियों के अध्यापकों या शिक्षकों को भी यह समझना चाहिये कि पुस्तक पढ़ाने की अपेक्षा बालक के चरित्र पर ध्यान देना उन के लिए अधिक आवश्यक है। वे याद रखें कि यदि उनके आधीन एक भी बालक में दुर्व्यसन आ जावेगा तो वे परमात्मा और दुनियाँ, दोनों के सामने इस लापरवाही के ज़िम्मेदार होंगे।

प्रायः आठ या दस वर्ष के बालकों को यह शंका उत्पन्न होती है कि "हम कहां से, कैसे उत्पन्न हुए?" माता पिता यदि उन के इस प्रश्न को टाल देंगे तो बालकों की इस प्रश्न सम्बन्धी उत्सुकता और भी अधिक बढ़ जावेगी, अतः 'उत्पत्ति' का अपने बालकों को ठीक २ ज्ञान करा देना चाहिये। उन को वनस्पतियों के फूल दिखा कर बताना चाहिये कि फल कैसे उत्पन्न होते हैं? पशुओं और पक्षियों की उत्पत्ति का भी इशारा कर देना चाहिये, क्योंकि यदि बालक अपने आप इन बातों की उत्सुकता में पड़ा रहेगा तो इस से अधिक हानि है।

यदि माता पिता तथा आचार्य चौबीस घंटे जागृत रह कर बालक के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करेंगे तो निश्चय है कि बालक के मन-मन्दिर में सोया पड़ा विषयवासनारूपी सिंह शीघ्र जागृत न होगा। परन्तु इस आयु के बाद युवावस्था के आरम्भ होते ही यह मन से उत्पन्न होने वाला 'मनसिज सिंह' स्वयमेव कुछ २ जागृत होने लगता है। तेरह से बीस वर्ष तक की आयु न केवल बालक प्रत्युत उनके माता पिता और आचार्य, सब के लिये परीक्षा का काल है। यदि वे इस काल में से बालक को ऐसी सावधानी से ले जावेंगे कि जिस से उस में जागता हुआ यह सिंह उत्तेजित होने न पावे तो वे महाधन्य होंगे, परमात्मा के दरबार में आशीर्वाद के भागी होंगे। परन्तु यदि वे इस काल में बालकों के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति लापरवाह रहेंगे तो वे याद रखें कि परमात्मा के दरबार में क्रोध और धिक्कार के पात्र होंगे।

यदि बालक किसी दूसरे लड़के से अधिक मिले या यारी दिखावे तो सावधान हो जाना चाहिये, इस उमर के लड़कों में यारी सदा चरित्र को भ्रष्ट करने के लिये होती है। माता पिता को घर में खेलने और मनोरञ्जन करने के लिये इतना सामान घर में रखना चाहिये कि बालक को इसके लिये बाहर न जाना पड़े। सायंकाल के समय माता पिता को कहीं बाहर न जाना चाहिए, घर पर रह कर बच्चों के मनोरञ्जन और खेल में उन्हें भी शामिल होना चाहिए। बालकों को खिलाने के साथ साथ मनोरञ्जन वार्तालाप से उनका ज्ञान भी अच्छा बनाया जा सकता है। यदि बालकों का पर्याप्त मनोरञ्जन हो जावे तो वे कभी दूसरे लड़कों के साथ खेलने बाहर न जावेंगे।

२० वर्ष की आयु तक लड़के को कभी नाटक, सिनेमा, नाच आदि देखने न भेजना चाहिये; गन्दा उपन्यास, अश्लील साहित्य और गन्दे चित्र तथा गन्दी गल्पें हाथ में न देनी चाहियें, क्योंकि ये विषयवासना सम्बन्धी विचारों को भड़काने वाले हैं।

यदि माता पिता और आचार्य के दिन रात सावधान रहने पर भी युवक में यह विषयवासना रूपी सिंह उत्तेजित हो जावे और वह किसी प्रकार का दुष्कृत्य कर बैठे तो उसको मारना या धमकाना नहीं चाहिये, इस से कुछ भी लाभ न होगा। उस को तो इस सिंह के विरुद्ध लड़ने और काबू करने के लिए उत्साहित करना चाहिये, पिता या गुरु उसको एकान्त में बुला कर इस विषय में उत्तम २ उपदेश दे कर समझाने की पूर्ण चेष्टा करें। प्रेम से समझाने पर युवक अपनी कठिनता को आप ही कह देता है, तब पिता या आचार्य इस शत्रु के विरुद्ध लड़ने के लिए जिस प्रकार से भी बन सके उसकी सहायता करें।

युवकों का कर्तव्य

जो हस्तमैथुन के द्वारा शुक्र का नाश करते हैं, उनके शरीर और मस्तिष्क को बड़ा धक्का लगता है। उन के शरीर की वृद्धि रुक जाती है जिससे उनका चेहरा पीला, शरीर कृश, और शरीर के कृश हो जाने से पाचन आदि के अंग भी निर्बल हो जाते हैं, पाचन आदि के क्षीण होने से स्मरणशक्ति क्षीण हो जाती और बालक पढ़ाई में निर्बल हो जाते हैं। उत्साह, साहस, तेज और ओज की मात्रा घट जाती और वह डरपोक हो जाता है, आंखों से आँख मिला कर नहीं देख सकता। उसका सारा आत्मविश्वास नष्ट हो जाता है और इसलिए वह उद्योगहीन, परिश्रमहीन हो कर आलसी हो जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जननेन्द्रिय का दुरुपयोग करने से युवकों में स्वप्नमेह का रोग उत्पन्न हो जाता है जिस से निद्रावस्था में कोई विषय सम्बन्धी स्वप्न आता है, शिश्नहर्ष होता है, और शुक्रनाश हो जाता है। इस से शरीर और मस्तिष्क और भी अधिक निर्बल होने लगते हैं। कई युवक तो अधिक हस्तमैथुन करने से गृहस्थ में प्रवेश करने से पहिले ही अपने आप को नपुंसक बना लेते हैं; इस प्रकार यह स्मरण रखना चाहिये कि यह आदत मनुष्य के जीवन को सदा के लिए दुःखी बना देती है।

माता पिता और आचार्य को चाहिये कि ऐसे बालक को प्रेम से समझावें न कि डरावें और दण्ड दें; क्योंकि प्रायः युवक को यह पता नहीं होता कि इस आदत से उसके शरीर और मन की क्या हानि होती है। यदि इस से होने वाली हानियों को उसके सामने रखा जावे तो वह अवश्य ही इस आदत को छोड़ देता है।

यदि युवक यह समझता हो कि हस्तमैथुन आदि द्वारा शुक्रनाश करने में कोई आनन्द है तो उसे स्मरण रखना चाहिये कि यह आनन्द वही है जो कुत्ते को सूखी हड्डी चबाते समय हड्डी के द्वारा मुख में से निकले खून चूसने में आता है। उसे यह भी याद रखना चाहिये कि वह इस झूठे आनन्द से भविष्य में आने वाले आनन्द को खो रहा है। इस क्रिया को अपने शरीर और मस्तिष्क के लिए घातक समझ कर इस से मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये, यदि मुक्त होने का दृढ़ निश्चय कर लेगा तो वह अवश्य ही मुक्त होगा। उसे अपने दिल में जमा लेना चाहिये कि यदि वह पच्चीस वर्ष से पहिले इन बातों से शुक्र का नाश करेगा तो पच्चीस वर्ष के बाद गृहस्थ के योग्य न होगा।

सब से प्रथम उसे व्यसनी युवकों के साथ मिलना छोड़ देना चाहिये और उन्हें अपना परम शत्रु समझना चाहिये। दृढ़ निश्चय कर लेने से भी यदि श्रवण, स्पर्शन, दर्शन आदि से कामविषयक विचार उत्पन्न होने लगें तो उसी समय शत्रु को समीप आया जान बैठा हो तो उठ खड़ा हो जाय, खड़ा हो तो दौड़ना आरम्भ कर दे; ऐसे समय में लेटे रहना या बैठे रहना उचित नहीं हैं; अथवा खुली हवा में आकर दो एक प्राणायाम कर लेने चाहियें। हर समय कार्य में लगे हुए युवक को विषय सम्बन्धी विचार अधिक नहीं तङ्ग करते, अतः अपना खाली समय खेती, फुलवारी, चित्रकारी या दस्तकारी में लगाये रखना चाहिये।

युवक को दूसरों से अलग एकान्त में भी नहीं रहना चाहिये। हँसी, खेल, सभा, सोसायटी और समाज आदि में सभ्य पुरुषों के साथ अच्छी तरह मिलना जुलना चाहिये। जो एकान्त में रहते हैं वे प्रायः इस दुर्व्यसन का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक तथा वर्तमान मुख्याधिष्ठाता और आचार्य जी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकार हो जाते हैं। यदि युवक से कभी विषय सम्बन्धी चेष्टा हो जावे तो पश्चात्ताप करना चाहिये; एक समय या एक दिन भोजन का परित्याग कर देना चाहिये; ऐसा करने से दूसरी वार फिर प्रलोभन आने पर वह अपने को अधिक बलवान पाता है।

वीर्य-रक्षा के कुछ साधन

(१) भोजन सम्बन्धी— मद्य, मांस, तैल, खटाई, लाल मिर्च, गर्म मसाले, चाय, काफी, तमाखू तथा सब तले हुए गरिष्ट भोजन, ये गर्म उत्तेजक और जननेन्द्रिय को भड़काने वाले भोजन हैं। इनका भोजन सभी को कम करना चाहिये और युवकों को तो सर्वथा न करना चाहिए। यदि भोजन अधिक मात्रा में खाया जावे तो भी रक्त का दबाव बढ़ जाता है, इस लिए वीर्य की रक्षा करना कठिन हो जाता है, अतः भोजन सदा थोड़ी मात्रा में करना चाहिये, रात्रि को तो विशेषतः इस का ध्यान रखना चाहिये।

(२) व्यायाम सम्बन्धी— निर्बल युवक और पुरुषों के लिए वीर्यरक्षा करना अपेक्षया कठिन होता है, क्योंकि शरीर की निर्बलता के साथ उत्पादक अंग भी निर्बल होते हैं और शरीर के बलवान होने के साथ उत्पादक अङ्ग भी बलवान होते हैं। उत्पादक अङ्गों की निर्बलता को हटाने के लिए सीधे खड़े होकर या पेट या पीठ के भार लेट कर टांगों को आगे या पीछे या पार्श्वों की ओर धीरे २ उठाने वाली व्यायाम करनी चाहिये। ज्यों २ जंघायें बलवान होती हैं त्यों २ उत्पादक अङ्ग भी बलवान होते हैं, अतः दौड़ना भी बड़ा लाभदायक है। इस के अतिरिक्त पीठ या रीढ़ की हड्डी की भी व्यायाम से वातनाड़ियां बलिष्ट होती हैं, इस से उत्पादक अङ्गों की वातनाड़ियां बलिष्ट होती हैं। ऐसे व्यायाम और आसन जिन में पीठ को आगे या पीछे की तरफ झुकाया जाता है प्रतिदिन कुछ काल करनी चाहिये। शीर्षासन से भी वीर्य-रक्षा में बड़ी सहायता मिलती है। यदि सायंकाल या सोने से ५ या १० मिनट पूर्व शीर्षासन किया जाये तो रात्रि को स्वप्नमेह या शिश्नहर्ष का भय नहीं रहता, क्योंकि इस से शुक्राशय और अन्य उत्पादक अङ्गों में रक्त का संचय कम हो जाता है।

(३) प्राणायाम सम्बन्धी— सिद्धासन में अर्थात् बांयें पैर की एड़ी को गुदा और उपस्थेन्द्रिय के मध्य-स्थान पर और दाहिने पैर की एड़ी को उपस्थेन्द्रिय पर ऐसा रखकर बैठे कि बांयें पैर की एड़ी से सीवन प्रदेश अच्छी तरह दबा रहे; इस स्थान के दबने से भी वीर्य रक्षा में बड़ी सहायता मिलती है। इसी प्रकार सीधा बैठकर एक नासिका से गहरा श्वास लेकर कुछ क्षण अन्दर रोक कर दूसरी नाक से कुछ धीरे २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहिर फैंके। अन्दर लेते समय पेट और छाती को फूलने दे, और श्वास फैंकते समय पेट और छाती को अन्दर सिकुड़ने दे। परन्तु सारे समय में उपस्थेन्द्रिय और गुदा को ऊपर खींच रखे।

(४) स्नान सम्बन्धी--एक टब में ताजा कूप का जल भर कर ऐसे बैठे कि टांगें तथा धड़ पानी से बाहिर रहें और जंघा से नाभि तक का प्रदेश पानी में डूबा रहे। फिर एक तौलिये से पेडू तथा शिश्न और गुदा के मध्यवर्ती प्रदेश को अच्छी तरह मलें, इस प्रकार पांच या दश मिनिट स्नान करना पर्याप्त है। इस से उत्पादक अंगों में नवीन बल प्राप्त होता है। शिश्न के अग्र चर्म के नीचे वर्तमान मल को भी साफ़ करते रहना चाहिये, क्योंकि उसके संचित होने से शिश्न के क्षोभ का भय रहता है।

(५) निद्रा सम्बन्धी—सोने से न्यून से न्यून दो घण्टा पहिले तक भोजन दूध या पानी आदि द्रव न पीने चाहियें, क्योंकि भरे हुए पेट और भरे हुए मूत्राशय का दबाव शुक्राशय पर पड़ सकता है जिस से स्वप्नमेह का भय रहता है। यदि तीव्र स्वप्नमेह की शिकायत हो तो रात्रि का भोजन कुछ दिन के लिए बन्द कर देना चाहिये। सोने से पहिले पेशाब होकर हाथ मुंह धोकर थोड़ी देर शान्ति से बिस्तर पर बैठना चाहिये; सारी चिन्ताओं को मन से हटा कर चित्त को खूब प्रसन्न करना चाहिये और अपने शरीर के सब अंगों पर हाथ फेरते हुए और विशेषतः निर्बल अंगों पर हाथ फ़ेरते हुए कल्पना करनी चाहिये कि ये सब अंग बलवान हो रहे हैं। कुछ काल के लिए चिन्ताओं से रहित आनन्द-मग्न हो अपनी रुचि के अनुसार भगवच्चिन्तन करना चाहिये और इसी निश्चिन्तता की स्थिति में लेटते ही सो जाना चाहिये। जिस प्रकार की अवस्था सोने से ठीक पहिले रहती है वैसी ही प्रायः सारी रात रहती है, अतः निश्चिन्त हो कर सोने वाले को अच्छी नींद आती है। स्वप्नमेह की चिन्ता सर्वथा न करनी चाहिये, जो जितनी अधिक चिन्ता करता है, यह भूत उसे उतना ही अधिक लिपटता है। सदा करवट पर ही सोना चाहिये, पीठ पर सोने से मूत्राशय और मलाशय के बीच में वर्तमान शुक्राशय पर दबाव पड़ता है जिससे कि स्वप्नमेह का भय रहता है।

रात्रि को एक या दो बजे के लगभग प्रायः प्रत्येक आदमी की निद्रा खुलती है, उस समय उठ कर एक वार अवश्य पेशाब कर लेना चाहिये; अधिक स्वप्नमेह की शिकायत हो तो जितनी वार नींद खुले उठ कर पेशाब कर लेना चाहिये। जिस समय शिश्न-हर्ष का पता लगे उस समय लेटे न रह कर उठ कर बैठ जाना या कुछ कदम चल लेना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) आचार-विचार सम्बन्धी - जिस प्रकार यदि आरम्भ में आँख को धूयें और धूल आदि से न बचाया जावे या उस से अधिक उपयोग या दुरुपयोग लिया जावे तो आंख कमज़ोर पड़ जाती है और फिर थोड़े से धूयें के लगने से लाल होकर पानी बहाने लगती है, फिर यदि कुछ काल आँख को पूरा आराम दिया जावे और उससे किसी प्रकार का उपयोग न लिया जावे तो आंख अपनी साधारण अवस्था में आ जाती है, इसी प्रकार यदि युवक अपनी उपस्थेन्द्रिय को दर्शन, स्पर्शन, श्रवण अथवा हस्त-मैथुन आदि से और गृहस्थ अतिस्त्रीसंग से क्षुब्ध करता रहे तो जनन सम्बन्धी अङ्ग इतने निर्बल हो जाते हैं कि थोड़े से भी क्षोभक कारण से क्षुब्ध हो जाते हैं; इसलिए पहिले तो ऐसे आचार विचार से बचना चाहिये जो जननेन्द्रिय को क्षुब्ध करने वाले हैं। यह समझ लेना चाहिये कि ये सब उत्तेजनाएं उत्पादक अंगों को अधिक २ निर्बल और असहन शील कर जाती हैं। गृहस्थियों और युवकों में उत्पादक अंगों को अधिक उत्तेजित करने से ही शीघ्रस्खलन और पुंस्त्व-नाश के रोग हो जाते हैं, अतः जनन सम्बन्धी अंगों को बलवान करने और इन्हें सब उत्तेजनाओं से बचाने के लिए पूर्ण विश्राम देना चाहिये। ब्रह्मचर्य से ही वास्तव में भोग की शक्ति और भोग का आनन्द प्राप्त होता है।

(७) औषधि सम्बन्धी— दिन में तीन या चार माषे आमलकी या हरीतकी का चूर्ण मधु के साथ खा लेने से वीर्य रक्षा में सहायता मिलती है। बबूल की भुनी हुई गोंद को बेसन के लड्डू आदि में डाल कर खा लेना इसके लिए हितकर है। अच्छा बना हुआ चन्दनासव एक या दो तोला थोड़े जल में मिला कर दिन में एक दो बार पी सकते हैं; ये सब उत्पादक अंगों के लिए शामक औषधियें हैं।

बंग, अभ्रक, प्रवालमुक्ता और शुक्ति आदि की भस्में तथा इन के बने हुए प्रयोग भी वीर्य रक्षा में बड़े सहायक होते हैं। ये उत्पादक अंगों के लिए उत्तम बल्य द्रव्य हैं। उत्पादक अङ्गों को उत्तेजित करने वाली दवाइयां न खानी चाहियें क्यों वे थोड़ी देर के लिए उत्तेजित कर के उन्हें चिरकाल के लिए निर्बल कर जाती हैं।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्॥ अथर्व वेद

ब्रह्मचर्य-तप से ब्रह्मचारी मृत्यु या पाप का हनन करते हैं, और एवं जीवात्मा ब्रह्मचर्य के द्वारा इन्द्रियों से सुखानन्द को पाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्र-साधन

(मन्दाक्रान्ता छन्द)

१

कैसा आया समय, बदला काल का रङ्ग कैसा
होती जाती भरतभुवि की आज कैसी दशा है।
आँखें खोलें विबुध, समझें देश की सर्व बातें
सोचें होके प्रयत, युग के धर्म का मर्म क्या है॥

२

आशा होवे उदय उर में, दूर होवे निराशा
सूझें सारे सुपथ, सफला युक्तियां हों हमारी।
ऐसे बाँधें नियम, जिससे कालिमा दूर होवे
आभा वाले सकल दृग हों, ज्योति फैले जनों में॥

३

प्यारी संख्या प्रति दिवस है जाति की न्यून होती
संतप्ता हो दुख-उदधि में मग्न जातीयता है।
छीने जाते हृदय-धन हैं, पत्नियां छूटती हैं
सोने जैसा सुख-सदन है प्रायशः दग्ध होता॥

४

ढाहे जाते सुर-सदन हैं, मूर्त्तियाँ टूटती हैं
बाधा होती अधिकतर है पर्व औ' उत्सवों में।
काँटे जाते प्रथित पथ में चाव से हैं बिछाये
न्यारी शोभा रहित, नित है नन्दनोद्यान होता॥

५

की जाती हैं विफल, छल से सिन्धुजा की कलायें
टूटी सी है परममधुरा भारती की सुवीणा।
क्रीड़ा द्वारा कलुषित बनी मञ्जु मन्दाकिनी है
लूटा जाता धनद-धन है, स्वर्ग है ध्वंस होता॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६

तो भी होता कलह नित है, वैर है वृद्धि पाता
सद्भावों के सुमन-चय में हैं घुसे दम्भ-कीट ।
सच्चिन्ता की ललित-लतिका हो गई छिन्नमूला
उल्लासों के विपुल विटपो पुष्प ही हैं न लाते ॥

७

धर्मों की है निपतित ध्वजा, सत्यता वञ्चिता है
हैं शास्त्रों की सबल विधियाँ रूढियों से विपन्ना ।
सत्कर्मों की प्रगति बदली लोक आडम्बरों से
मोहों द्वारा बहुमथित हो आर्यता मूर्च्छिता है ॥

८

वेदों की है अतुल महिमा, मन्त्र हैं सिद्धि-मन्त्र
धाता जैसी सृजन-पटु हैं उक्तियां आगमों की ।
भू-विख्याता, पतितजनता-पावनी जान्हवी है
आर्यों के हैं सुअन, हम में कौनसी न्यूनता है ॥

९

सच्ची शिक्षा सतत चित की उच्चता है सिखाती
सद्वाञ्छा है विदित करती त्याग संकीर्णता दो ।
उद्बोधों के विपुल मुख से है यही नाद होता
जागो जागो, कटि कस उठो, काल की क्रान्ति देखो ॥

१०

जो लोहू है गरम, यदि है गात में शेष शक्ति
जो थोड़ी भी हृदय-तल में धर्म की वेदना है ।
हो जाता है चित व्यथित जो जाति-उत्पीडनों से
तो हो जावो सजग, सम्हलो, सिद्धि का मन्त्र साधो ॥

साहित्यरत्न श्री अयोध्या सिंह जी उपाध्याय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहजात-प्रवृत्तियें और उन का शिक्षा में स्थान

(ले०--श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यालङ्कार)

पशुओं और मनुष्यों में बड़ा भेद यह समझा जाता है कि जहां पशुओं के सारे व्यवहार और उनकी सारी चेष्टायें सहजात-प्रवृत्तियों के आधीन होती हैं वहां मनुष्य अपने सारे कार्य बुद्धि से सिद्ध करता है। सहजात-प्रवृत्ति (Instinct) प्राणी के अन्दर कार्य करने की वह शक्ति है, जिस की सहायता से प्राणी फल या उद्देश्य का पहिले से ज्ञान न रहने और उद्देश्य प्राप्ति में उपरोक्त शारीरिक या मानसिक चेष्टाओं की पहले से शिक्षा न होने न पर भी अभीष्ट फल या उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। पशुजगत् अपने अधिकांश व्यवहारों को सहजात प्रवृत्तियों की सहायता से ही पूरा करता है। बिल्ली चूहे को देखते ही उस पर झपटती है; कुत्ते के सामने आते ही भाग खड़ी होती है या भागने का मौका न रहने पर लड़ने को तैयार हो जाती है है; पानी और आग से बहुत बचती है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बिल्ली की ये क्रियायें इस लिये नहीं होती कि उसे मौत, जीवन या आत्मरक्षा का कोई विचार ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है; नहीं, इस प्रकार का कोई विचार बिल्ली के मन में नहीं होता। चूहे के सामने आने पर बिल्ली उस पर झपटने और कुत्ते के आने पर भागने के लिए स्वभाव से बाधित है। यह बात दूसरी है कि इस बाधित होने का प्रयोजन आत्म-रक्षा हो। बिल्ली के मन में आत्म-रक्षा जैसा कोई विचार उपस्थित नहीं होता। बिल्ली तो चूहे के आगे आने पर इस प्रकार क्रिया कर बैठती है, जिस प्रकार किसी चीज के पास आ जाने से आँख झपक जाती है। किसी बड़ी शक्ति के मन में बिल्ली की आत्म-रक्षा का विचार हो तो हो। बिल्ली के शरीर की रचना और उसकी नस नाड़ियों की बनावट ही इस प्रकार की है कि वह चूहे का चित्र आंखों के आगे आते ही झपट पड़े।

मुर्ग़ी अण्डे पर उन्हें सेने लग जाती है। अण्डों से बच्चे निकल आने पर चुग्गा ला ला कर उनकी चञ्चु में डालने लग जाती है। मुर्ग़ी की इन क्रियाओं का प्रयोजन बच्चों की उत्पत्ति और उन की रक्षा है। पर फिर भी मुर्ग़ी को पहले से इस प्रयोजन का ज्ञान नहीं होता और नाही उसे उन तरीकों की पहिले से शिक्षा होती है, जिनका अवलम्बन करके अण्डे सेने पर उन में से बच्चे निकल आयें। अण्डे देने के दिन आने पर चिड़िया को घोंसला बनाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शिक्षा कौन देता है ? कोई नहीं, केवल सहजात-प्रवृत्ति (Instinct) से वह घोंसला बनाने लग जाती है। बिल्ली, मुर्गी और चिड़िया ही नहीं सारा पशु-पक्षी जगत् ही अपने व्यवहारों के लिए सहजात-प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है।

इस बात से प्रायः सभी विचारक सहमत हैं कि पशु-पक्षियों का जीवन सहजात-प्रवृत्तियों पर ही अवलम्बित है। पर मनुष्यों के सम्बन्ध में इस से विपरीत विचार पाये जाते हैं। समझा जाता है कि मनुष्य सर्वथा बुद्धि-जीवी प्राणी है। उस में सहजात प्रवृत्तियों का बिल्कुल अभाव माना जाता है। पर ज़रा गहरा विचार करने पर इस विचार की अवास्तविकता स्पष्ट दीखने लग जाती है। मनुष्य भी उसी प्रकार सहजात-प्रवृत्तियों पर आश्रित है जिस प्रकार पशु और पक्षी। नवजात बालक माता के स्तनों का स्पर्श पाते ही उन्हें मुख में क्यों ले लेता और दूध चूसने के लिए मुख और हाथों से उन्हें क्यों दबाने लग जाता है? भूख मिटाने की इस विधि की शिक्षा उसने कहां पायी है ? छोटा बच्चा चमकीली वस्तुओं की ओर आकृष्ट क्यों होता है ? चमकीली वस्तुओं का आकर्षण बच्चों में इतना बलवान् होता है कि अनेक वार बच्चे साँपों को पकड़ने की चेष्टा करते पाये गये हैं। अगर उक्त अवसरों पर दूसरे लोग न पहुंच गये होते तो साँप उन नन्हें बच्चों का डस लेते। बच्चों का चमकीली वस्तुओं की ओर आकर्षण क्या सहजात-प्रवृत्ति वश नहीं होता ? नवजात और छोटे २ बच्चों में ही सहज-प्रवृत्तियें नहीं पाई जातीं, प्रस्तुत युवा और वृद्धों में भी इनका पूरा राज्य होता है। युवक युवती की ओर क्यों आकृष्ट होता है और उसे सारा संसार अपनी प्रेम-पात्री के रंग में रंगा हुआ क्यों नज़र आता है? सहजात-प्रवृत्ति से ही इस घटना की की व्याख्या हो सकती है। मनुष्यों में भी पशु-पक्षियों की तरह ही सहजात-प्रवृतियों का राज्य होने पर भी उन में कुछ ऐसी शक्तियें हैं जो उन के जीवन को पशु-पक्षियों के जीवन से भिन्न बना देती हैं। मनुष्य की स्मृति शक्ति, उस को विचार करने और परिणाम निकालने की शक्ति उस के जीवन को अन्य प्राणियों के जीवन से भिन्न बना देती हैं। पशु-पक्षी किसी पदार्थ के सामने आने पर पुनः पुनः एक ही प्रकार की क्रिया करेंगे। पर मनुष्य की स्मृति आदि शक्तियें उस के और पशु-पक्षियों के जीवन में बड़ा भेद डाल देती हैं।

इस प्रकार हम देख चुके हैं कि पशु-पक्षियों और मनुष्यों का जीवन समान रूप से सहजात-प्रवृत्तियों (Instinct) पर आश्रित है। अब देखना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है कि इन सहजात प्रवृत्तियों का मनुष्य की शिक्षा में क्या मूल्य है। इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व हमें सहजात-प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में दो नियमों को संक्षेप से समझ लेना चाहिये। मनोवैज्ञानिकों का कथन है। कि (१) सहजात-प्रवृत्तियें अभ्यास से दब जाती हैं, और (२) ये चिरस्थाई नहीं होती। (१) पहले नियम का अभिप्राय यह है कि प्रायः ऐसा होता है कि जब किसी श्रेणी विशेष के पदार्थों के सामने आने पर प्राणी में कोई सहजात-प्रवृत्ति उत्पन्न हो सकती हो तो जो पदार्थ उस प्रवृत्ति (Instinct) के उद्बोधन में प्रथम आता है उसी के सामने आने पर वह प्रवृत्ति बार २ उठती है, उस श्रेणी के दूसरे पदार्थों के सामने आने पर वह प्रवृत्ति नहीं उठती। युवक के मन में युवतियों को देख कर प्रेम उत्पन्न होता है। पर जो युवती उस के अन्दर प्रेम की प्रवृत्ति (Instinct) को जगाने में प्रथम कारण होगी, युवक उसी से प्रेम करने लग जायेगा। मित्रता आदि की प्रवृत्ति (Instinct) में भी यही नियम काम करता है। इसी नियम की दूसरी व्याख्या यह है कि अनेक पदार्थों को देख कर प्राणी के अन्दर दो विरोधी सहजात-प्रवृत्तियें (Instincts) उत्पन्न होती हैं। ऐसे पदार्थ को देखने पर जो प्रवृत्ति पहले उत्पन्न हो जायेगी भविष्य में वही प्रवृत्ति पुनः पुनः उत्पन्न होगी, दूसरी नहीं। छोटे बच्चे के अन्दर कुत्ते या और प्राणियों को देखने पर उन से प्यार करने की इच्छा भी उत्पन्न होती है और साथ ही उसे इन से डर भी लगता है। अगर किसी कारण से कुत्ते के प्रथम दर्शन में बच्चे के अन्दर डरकी प्रवृत्ति (Instinct) प्रबल हो जाये तो भविष्य में सालों तक उस के मन में कुत्तों से प्यार करने की इच्छा उत्पन्न नहीं होगी: इस नियम की पुष्टि में प्राणी-जगत् और मनुष्य-संसार से लाखों उदाहरण दिये जा सकते हैं। स्थानाभाव से एक दो उदाहरण ही पर्याप्त समझे गये हैं। (२) दूसरे नियम का अर्थ यह है कि अनेक सहजात-प्रवृत्तियें एक निश्चित आयु पर ही उत्पन्न नहीं होतीं। यदि उस निश्चित आयु के अन्दर २ उद्बोधक पदार्थ आकर इन प्रवृत्तियों को जगादें तो भविष्य में भी वे पदार्थ उन्हें जगाते रहेंगे, यद्यपि उन के उत्पन्न होने की आयु बीत भी चुकी हो। परीक्षणों से देखा गया है। कि अगर मुर्ग़ी के बच्चे जन्म से लेकर आठ दस दिन तक अपनी माता की आवाज़ न सुन पायें तो फिर उनके लिए माता की आवाज़ माता की आवाज़ नहीं रहेगी। इन नियमों के अनुसार चलने से सिंह और बकरी को वास्तविक अर्थों में एक घाट पानी पिलाया जा सकता है। इन नियमों के अपवाद भी पाये जाते हैं पर उन से नियमों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल सूपा के प्रारम्भिक ब्रह्मचारी, कार्यकर्त्ता तथा संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पुष्टि ही होती है, खण्डन नहीं। इन नियमों को ध्यान में रखते हुए हम शिक्षा को इस प्रकार की बना सकते हैं जो कि विद्यार्थिओं के लिये अधिक से अधिक उपयोगी हो सके।

मनुष्यों की सहजात-प्रवृत्तियें भी उपर्युक्त दोनों नियमों से शासित होती हैं। बालकों को खेल-कूद, कथा कहानियों और चीजों की बाहिरी बातों में आनन्द आता है। युवकों को शारीरिक व्यायाम, काव्य, गान, मित्रता, प्रकृति, यात्रायें, साहस के कार्य विज्ञान और दर्शन अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। प्रौढ़ पुरुष के मन में महत्त्वाकांक्षा, नीति, अर्थ-संग्रह और दूसरों के प्रति उत्तर-दायित्व और स्वार्थ के भाव राज्य करने लगते हैं। अगर कोई बालक खेलने और कूदने के दिनों में क्रीड़ा की सामग्री और क्षेत्र से अलग रहे तो भविष्य में वह इन चीजों को कभी नहीं सीख सकेगा। यौवन के आरम्भिक काल को यदि संयम और सावधानी के साथ व्यतीत कर दिया जाये तो सारा भविष्य जीवन पवित्र और सदाचारी बन सकता है, दूसरी ओर उस समय की अत्यधिक स्वच्छन्दता भविष्य जीवन को नरक बना सकती है। अध्यापक का कार्य विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाली सहजात प्रवृत्तियों का निरीक्षण करना है। जब जिस विषय क लिए शौक पैदा हो, तभी विद्यार्थी के आगे उस के सीखने के सामान उपस्थित कर देने चाहियें नहीं तो समय बीत जाने पर वह फिर कभी उस विषय को नहीं सीख सकेगा। आलेख्य, प्रकृति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान जैसे विषयों की ओर विद्यार्थियों की रुचि एक खास समय में पैदा होती है। यन्त्र-विज्ञान, भौतिकी और रसायन का समय इसके बाद आता है। फिर मनोविज्ञान, दर्शन और धर्म के तत्त्वों की ओर रुचि हो जाती है। इस के बाद सांसरिक काम-धन्दे ही मनुष्य के लिए सब कुछ हो जाते हैं। प्रत्येक विषय के लिए रुचि कुछ समय में ही शान्त हो जाती है, उस के पश्चात् हम उसी पर निर्भर रहते हैं जो कुछ हमने उन दिनों में सीख लिया था जिन दिनों में हमारी रुचि उस विषय में उत्कट रूप में बनी हुई थी। यही कारण है कि मनुष्यों का अपने पेशों से भिन्न विषयों का ज्ञान उस से अधिक नहीं होता जितना कि उसने २५ साल से पहिले उन के सम्बन्ध में प्राप्त कर लिया था। पीछे से विषयों के सीखने के लिए आवश्यक गुण, निःस्वार्थ और उत्सुकता, जाते रहते हैं। पिछली उमर में हम पहिले तो कुछ नया सीख नहीं पाते, अगर सीख भी लें तो वह विषय हमारे लिये उतना अपना नहीं बन पाता जितने कि उस समय सीखे हुए विषय बने होते हैं जब कि उन के सीखने का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभाविक समय था।

इस लिये अध्यापक का प्रथम कर्तव्य यह है कि वह देखता रहे कि विद्यार्थी में किस समय कौनसी प्रवृत्ति (Instinct) उत्पन्न होती है। साथ ही विद्यार्थियों का यह कर्तव्य है कि वे भविष्य पर किसी विषय को न छोड़ें। हरेक विषय को उस के उचित समय में ही सीख छोड़ें। खास खास आयु में ही खास २ विषयों की ओर रुचि बढ़ती है। वह समय गुजर जाने पर उन विषयों के लिए फिर वैसा उत्साह नहीं रहता।

---

* कुलभूमि *

गङ्ग की तरङ्ग-वारी, हिमगिरि सङ्ग वारी,
पुण्य-प्रेमरङ्ग वारी, विश्व अभिराम है।

सुजन समूह वारी, सुमन-सुरभि वारी,
सरस समीर वारी, सुखद निकाम है॥

ब्रह्मवाद-राग वारी, विषय-विराग वारी,
ब्रह्मचारि-वृन्द वारी, विबुध सुधाम है।

स्वर्ग-अपवर्ग वारी, भुक्ति मुक्ति-सर्ग वारी,
प्यारी "कुलभूमि" ही हमारी पूर्ण-काम है॥ १॥

श्री हरि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल की कहानी

सुनाने लगा एक हूं मैं कहानी,
जो औरों से अब तक सुनी थी जबानी,
नहीं इसमें शक है कि वो है पुरानी,
मगर साथ ही है रहस्यों की खानी ॥
ज़रा इसलिए ध्यान से इसको सुनिए।
औ' जो कोई उत्तम हो गुण उसको सुनिए ॥ १ ॥

हिमाचल की बगली में इक बन खड़ा था,
जो अज्ञात सदियों से अब तक पड़ा था,
वो झकुाड़ झाड़ी से गुम्फित पड़ा था,
जो कांटे कंटेरी से बिलकुल मढ़ा था ॥
कि चिंघाड़ चीते जहां मारते थे।
कि दर्रे पहाड़ों के जो फाड़ते थे ॥ २ ॥

पहलवां भी इक बार थे खौफ़ खाते,
वे जा जा के फिर बीच से लौट आते,
अन्धेरा था इतना कि दिल कांप जाते,
प्रखर भानु भी थे नहीं पार पाते ॥
वो झाड़ी ही झाड़ी भरी हर जगह थी,
खड़े होने तक को न तिल भर जगह थी ॥ ३ ॥

वो मस्ते मतङ्गों से खोदा पड़ा था,
या जङ्गल के भैंसों से रोन्धा पड़ा था।
बराहों की दाढ़ों से रोंधा पड़ा था,
औ' खूंखार पशुओं से अब तक भरा था।
यहां पर जहां आज है शामियाना।
था पड़ता दिवस में भी दीपक जलाना ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुना हमने सब कुछ मगर ये सुनाओ,
ये सारा हुआ कैसे ये तो बताओ,
असम्भव से सम्भव ये कैसे, सुझाओ,
औ' विश्वास जल्दी से हमको दिलाओ ॥
कि कोले से हीरे का ये मूल कैसे ।
सड़े कीच से ये कमल-फूल कैसे ॥ ५ ॥

ये कष्ट सारे थे किसने उठाये,
कंटीले ये जङ्गल थे किसने गिराये,
गरजते वे मृगराज कैसे भगाये,
औ' कैसे वो भागीरथी-तीर आये ॥
अहो ! यज्ञशाला ये क्यों कर रचाई ।
औ' क्यों कर ये सुन्दर सुगन्धी फैलाई ॥ ६ ॥

मैं त्रिंशत् सहस्र इकट्ठे करूंगा,
मैं घर घर में दर दर भी फिरता रहूंगा,
मगर इतना जब तक न मैं कर सकूंगा,
नहीं तब तलक पैर घर में धरूंगा ॥
सुदारुण प्रतिज्ञा ये किसने थी धारी ।
कि आखिर तलक थी न धुन जिसने टारी ॥ ७ ॥

न देता था कोई भी जन यों सहारा,
ये आशा सहित हाथ किसने पसारा ।
निजैश्वर्य राशी को किसने बिसारा,
न आंधी अन्धेरे को कुछ भी विचारा ॥
करी आहुती तन औ' मन धन की अपने ।
औ' आखिर को ऐसे दिखाये हैं सपने ॥ ८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आचार्य-आदेश कैसे फैलाऊं,
औ' मैं ब्रह्मचारी कहां से बुलाऊं,
मैं कुल को कहां और कैसे चलाऊं,
सहोद्योगियों को कहां पर मैं पाऊं ॥
यही एक चिन्ता यही एक लक्ष्य ।
भले दुःख आवे, करूंगा अवश्य ॥ ९ ॥

ये प्रस्थान आखिर को कर ही दिया था,
औ' बत्तीस पुत्रों को संग ले लिया था,
उतर रेल से रुख इधर ही किया था,
बस इक "ओ३म्" का हाथ झण्डा लिया था ॥
सुनो, अन्त को सब यहीं पर थे आये ।
तथा आके डेरे सभी ने लगाये ॥ १० ॥

ये जङ्गल में मङ्गल ये ऐसे हुआ था,
प्रयत्नों से पौदा लगाया गया था,
पसीना जो इस देह का तब बहा था,
तथा चूंकि उससे ये सिञ्चित हुआ था ॥
इसी ही लिये ये फला फूला इतना ।
औ' फूले फलेगा न जाने ये कितना ॥ ११ ॥

ये पुत्रों की अन्तिम मगर याचना है,
या केवल यही एक अभ्यर्थना है,
या अवशिष्ट केवल यही कामना है,
बस अन्तिम से अन्तिम यही प्रार्थना है ॥
कि ओझल न हो कुल की ज्योती प्रभू जी ।
कभी भी किसी भी तरह से प्रभू जी ॥ १२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्यमय गुरुकुल

आज गुरुकुल की २५ वीं वर्ष-गांठ के दिन यदि उसके गत जीवन पर एक साधारण दृष्टि डाली जावे तो वह बड़ा आश्चर्य्यमय दीखता है। वह जीवन इतना आश्चर्य्यमय है, जीवन ने इतने जुदे २ भिन्न २ दृश्य दिखलाये हैं कि यदि मैं उसे एक नाटक से उपमा दूं तो कुछ अनुचित न होगा।

गुरुकुल की उत्पत्ति का दृश्य ही बड़ा अनोखा है। जिस तरह पीपल के विशाल वृक्ष का बीज बहुत छोटा होता है, उसी तरह, गुरुकुल का बीज भी बहुत छोटा था। पञ्जाब प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग में विचार पेश था कि बचा हुआ वेदभाष्य कैसे किया जावे। इस विषय में लोगों ने कई प्रकार की स्कीमें समाचार-पत्रों द्वारा प्रस्तुत की हुई थीं, जिन का अन्तिम निचोड़ कुलपिता की स्कीम थी। उस स्कीम में उन्होंने बताया था कि एक ऐसा आश्रम खोला जावे जहां कुछ विद्वान् लोग रहें जो वेदभाष्य करने के साथ साथ विद्यार्थियों को पढ़ाया भी करें और इस तरह वेदभाष्य के साथ ब्रह्मचर्य्याश्रम का पुनरुद्धार भी हो सकेगा। यह स्कीम बहुत ही छोटी थी। आज गुरुकुल जिस व्यापक रूप को धारण कर रहा है, वह उस समय उनके भी ध्यान में न था। प्रतिनिधि सभा के उस समय के कार्यकर्ता इस स्कीम को पास करना नहीं चाहते थे। परन्तु ब्रह्मचर्य्याश्रम के पवित्र नाम को सुनते ही आर्य लोगों में एक प्रकार की बिजुली का संचार हो गया। जिस दिन कुलपिता की प्रस्तावित यह स्कीम, आ०प्र०सभा पंजाब में पास हुई, उसे कभी भूल नहीं सकते। जब अधिक रात्रि के बीत जाने पर सभासद् थककर ऊंघने लग गये, तब अनावश्यक समझ कर यह स्कीम उस समय पेश कर दी गई। परन्तु इस स्कीम में अद्भुत बिजुली थी, क्योंकि इस स्कीम के आते ही सब लोग चौकन्ने होकर बैठ गये। थोड़े बाद विवाद के पीछे स्कीम पास हो गई, एक गुरुकुल का खोलना निश्चित होगया। उस के लिये तीन सहस्र रुपया मूलधन एकत्रित करना हुवा, और साथ ही यह स्वीकृत हुआ कि आठ हजार रुपया होजाने पर गुरुकुल खोल दिया जावे। अब यह देख कर आश्चर्य्य होगा कि उस समय तीन सहस्र रुपया ही गुरुकुल के लिए काफी समझा गया था, परतु उस समय इस कार्य की इस व्यापकता को कौन जान सक्ता था।

गुरुकुल का खुलना स्वीकृत हो गया। दूसरे दिन ही कुछ लोगों ने धन देने की प्रतिज्ञा भी की, परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई महीनों तक यह स्कीम काग़ज़ी पुलिन्दे से बाहिर न निकली। लोग उस समय इस काम को असम्भव समझते थे, इस लिए इसके लिए प्रयत्न करना भी कोई अपना कर्तव्य न समझता था। परन्तु ऋषि दयानन्द के लेखों ने कुलपिता के हृदय पर अंकित कर दिया था कि सारे आश्रमों की व्यवस्था सुधारने के लिए ब्रह्मचर्य प्रणाली का पुनरुद्धार अत्यन्त आवश्यक है। जब नींव ही कच्ची है तब उस पर खड़ा किया हुआ भवन मजबूत कैसे हो सक्ता है। कुलपिता उस समय विकालत छोड़कर आजीविका का कोई और ही ढङ्ग सोच चुके थे और इस पवित्र कुल के आचार्य पद के लिए तय्यार नहीं होते थे, किन्तु गुरुकुल के खोलने को अत्यन्त आवश्यक समझ कर, उस के लिए रुपया एकत्र करने का भार उन्होंने अपने ही ऊपर ले लिया। उन्होंने यह प्रतिज्ञा करली कि तीस हज़ार रुपया इकट्ठा करने के पहिले मैं अपने घर में पांव न धरूंगा। २६ अगस्त १८९९ ई० को मन में यह दृढ़ संकल्प करके वह गुरुकुल के लिए धन इकट्ठा करने बाहिर निकले।

लगभग सात महीने तक संयुक्त प्रान्त, पंजाब, और दक्षिण हैदराबाद से घूम कर उन्होंने गुरुकुल के लिए भिक्षा मांगी। उस समय गुरुकुल के कार्य में जो जो कठिनाइयें थीं, उन का विस्तार से यहां वर्णन करना असम्भव है। उस समय सब से बड़ी कठिनाई इस विचार की नवीनता थी। उस समय तक यह एक ख़याली स्कीम थी; इस प्रणाली पर चलता हुवा कोई विद्यालय उदाहरण के लिए वे लोगों के साम्हने नहीं रख सक्ते थे। लोगों के लिए यह विचार बिल्कुल ही नया था इस लिए भिक्षा मांगने के पहिले मुझे बताना पड़ता था कि गुरुकुल खोलने के क्या उद्देश्य हैं। गुरुकुल के विषय में लोगों की अनभिज्ञता का, इस से बढ़ कर क्या प्रमाण होगा कि कई स्थानों में लोग कुलपिता का ही नाम गुरुकुल समझते थे। ऐसे नये कार्य के लिए धन, आसानी से कैसे मिल सकता था? इस के सिवाय, नये ढंग के पढ़े लिखे लोगों की ओर से भी गुरुकुल की कार्यप्रणाली पर आक्षेप किये जाते थे। वे कहते थे कि सभ्यतामय बीसवीं सदी में ऐसे विद्यालय का चलना सर्वथा असम्भव है। पुराने समय को लाने के प्रयत्न को वे कुलपिता के दिमाग़ की निर्बलता बतलाते थे। सब से बड़ा आक्षेप यह था कि कौन ऐसे पाषाण हृदय माता पिता निकलेंगे जो पच्चीस वर्षों तक अपने प्यारे पुत्रों का बिछोड़ा सहने के लिए तय्यार होंगे। परन्तु कुलपिता को गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के महत्त्व पर इतना पूरा भरोसा था कि इस तरह के आक्षेप उन्हें अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य से कुछ भी विचलित न कर सके। मुझे पूरा विश्वास था कि यदि एक वार नहीं तो कई वार ब्रह्मचर्याश्रम का संदेशा सुनाते रहने से लोगों की आंखे अवश्य खुलेंगी, और वे इस की आवश्यकता को अनुभव करेंगे। ऊपर कहे हुवे सब आक्षेपों के होते हुवे भी, जहां कहीं जाकर वे वर्तमान समय में ब्रह्मचर्य की और विद्यार्थियों की शोचनीय दशा का वर्णन करते थे, लोगों की आत्माओं को अपने साथ सहमत पाते थे। लोग युनिवर्सिटी की धर्मशून्य शिक्षा प्रणाली के दोषों को अनुभव कर रहे थे; आर्य जाति के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक ह्रास को देख कर विचार शील लोग कांप रहे थे, परन्तु आर्यसमाज के पास ऐसे उपदेशकों का अभाव था जो धर्म के प्यासों तक धर्म का संदेशा पहुंचा सकें। अतएव जब लोगों को बतलाया गया कि इन सब त्रुटियों को दूर करने का एक मात्र उपाय गुरुकुल ही है, तब उनका ध्यान इधर आकर्षित होने लगा। इस छः सात महीनों के भ्रमण का फल यह हुआ कि तीस हज़ार रुपया इकट्ठा हो गया और सर्वसाधारण गुरुकुल की आवश्यकता को समझने लग गये।

रुपया एकत्र होने के पश्चात् भी कई मासों तक कार्यकर्त्ताओं की शिथिलता से यह कार्य खटाई में पड़ा रहा। सब से बड़ी रुकावट एकान्त स्थान न मिलने की थी। बहुत खोज और विचार के पश्चात्, हरिद्वार के समीप, श्री० मुंशी अमनसिंह जी के दिये हुवे कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल का खोला जाना निश्चित हुआ और इस की अधिष्ठात्री सभा ने इस कार्य का सारा भार कुलपिता पर डाला।

वह दिन मुझे और मेरे साथी ३१ ब्रह्मचारियों को अच्छी तरह याद है, जो उस समय शिवरात्रि से ४ दिन पूर्व १९५८ वि० की फाल्गुन बदी १० (४ मार्च १९०२ ई०) को इस पवित्र भूमि में पहिले पहिल आये थे। हम चार बजे की गाड़ी से हरिद्वार उतरे और दयानन्द का चित्र सामने लेकर वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए हम सीधे गुरुकुल-भूमि की ओर चले। हरिद्वार और कनखल के लोग कहते थे कि यहां दयानन्द का मठ बनेगा। कुछ अन्धेरे में हम गुरुकुल पहुंचे और जाते ही हम सब ब्रह्मचारियों ने गङ्गा की शीतल धारा में गोता लगाया। उस समय यहां बड़ा घना जंगल खड़ा था। उस में से थोड़े से स्थान को साफ़ कर के रहने के लिए और पढ़ाई के लिये कुछ छप्पर और तम्बू लगाये गये थे। आने के कुछ दिन पीछे गुरुकुल की स्थापना का उत्सव हुआ, जिस में चार सहस्र रुपया भी पूरा इकट्ठा न हो सका।

उस दिन और आज में बड़ा अन्तर है। गत पच्चीस वर्षों में गुरुकुल ने जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

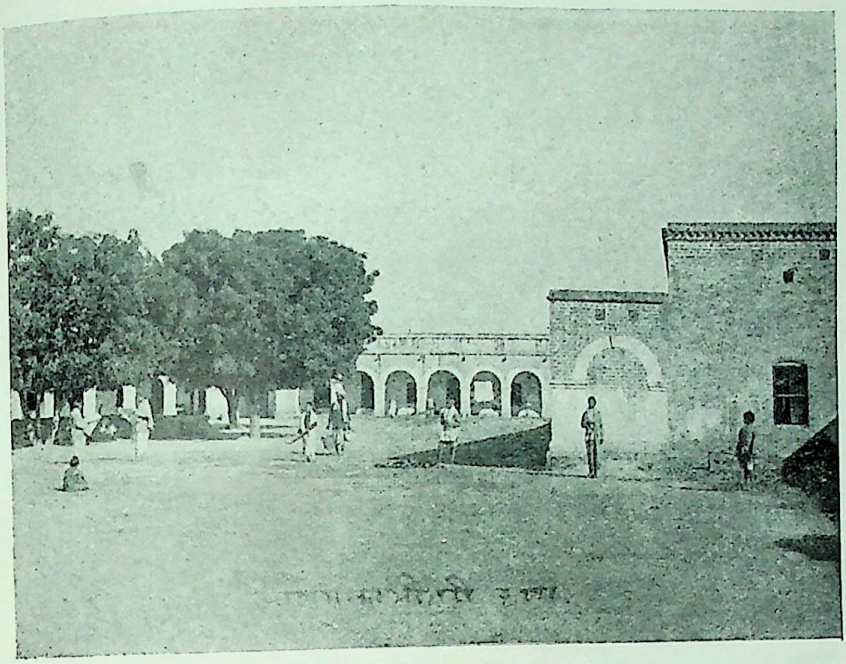

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आश्रम का भीतरी दृश्य

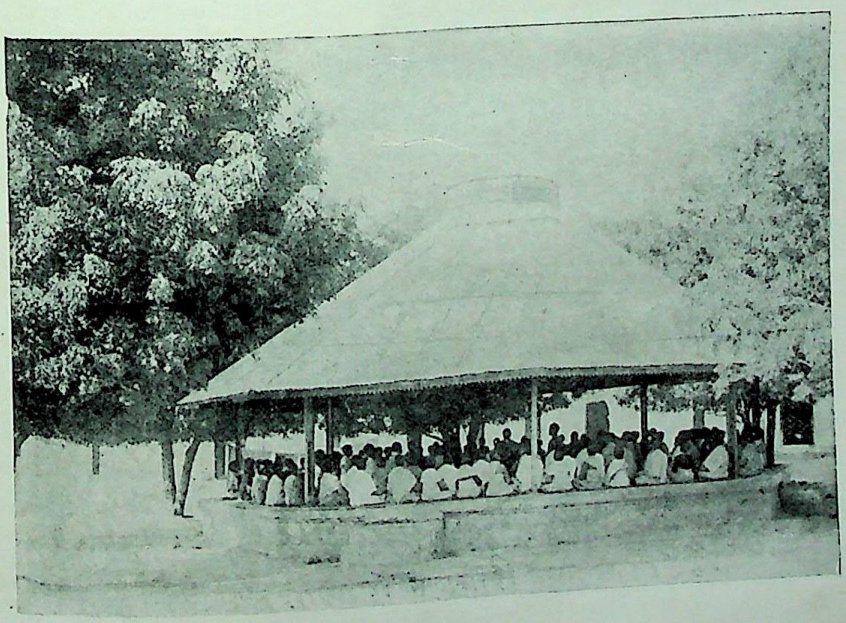

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की यज्ञशाला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नति की है, उसे अचम्भे के सिवाय और कुछ नहीं कह सक्ते। जो विद्यालय ३२ ब्रह्मचारियों से शुरु हुआ था, वहां आज ३३१ बालक शिक्षा पारहे हैं। इसके अतिरिक्त ७ शाखा-गुरुकुल हैं, जिन में एक कन्या-गुरुकुल भी है, और इन सब शाखाओं में लगभग ६७० के बालक और बालिकायें शिक्षा पा रहीं हैं। जिस गुरुकुल के विषय में यह पूछा जाता था कि वहां अपने पुत्रों को कौन भेजेगा वहां आज यह दशा है कि प्रति वर्ष डेढ़ सौ से ऊपर बालक और बालिकायें प्रविष्ट होती हैं। जहां घना जङ्गल था, वहां आज हरा भरा उद्यान दिखाई दे रहा है, और दो चार फूंस की झोपड़ियों की जगह आज आध मील तक फैली हुई गुरुकुल की इमारतें दिखाई दे रही हैं। जहां पहिले छोटा सा विद्यालय था वहां अब तीन महाविद्यालयों का संचालक विश्वविद्यालय है।

परन्तु मैं इन ईंट पत्थरों के फैलाव को गुरुकुल की वास्तविक उन्नति नहीं समझता। गुरुकुल की वास्तविक उन्नति के चिन्ह अन्दर और बाहर इन से जुदा हैं। बाहिर गुरुकुल की वास्तविक उन्नति उस की शिक्षा-प्रणाली के सामने लोगों का सिर झुकाना है। स्थान की कमी मुझे आज्ञा नहीं देती कि मैं शिक्षा प्रणाली के विषय में उन परिवर्तनों का वर्णन करूं जो इस समय विद्वान् लोगों के विचारों में हो रहे हैं। किन्तु इस में कोई सन्देह नहीं कि भारतवर्ष का शिक्षित समाज हमारी शिक्षाप्रणाली के महत्त्व को मानने लग गया है और हमारे परीक्षण को टक टकी लगाये देख रहा है। गुरुकुल की भीतरी अवस्था को वे ही लोग जान सकते हैं जो गुरुकुल के अन्दर काम करते हैं। जितना ही गुरुकुल विषयक लोगों का अनुभव बढ़ रहा है, उतना ही उन्हें दृढ़ विश्वास होता जाता है कि यदि कोई ऐसी संस्था है जो धार्मिक, आज्ञापालक, परिश्रमी, उत्साही और समाजसेवी मनुष्य बना सक्ता है तो वह गुरुकुल ही है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा तपोवन

१

जहाँ विश्वमें सब से पहिले हुआ सवेरा।
है वही भूमि वह-यही तपोवन मेरा ॥

२

जन्हु-सुता की जहाँ विमल धारा बहती है।
जिस पर उच्च हिमाचल की छाया रहती है।
जहाँ खड़े हैं विकसित द्रुम-दल शोभाशाली।
जहाँ छिटकती शुभ्र चाँदनी खिलने वाली।
जहाँ 'प्रकृति' में सब से पहले हुवा सवेरा।
है यही भूमि वह-यही तपोवन मेरा ॥

३

जहाँ धर्म की ज्योति निराली नभ में छाई।
'ब्रह्म ब्रह्म' की टेर जहाँ नित देत सुनाई।
घने वनों में जहाँ दिव्य रव गूंज रहा है।
जहाँ हृदय आनन्द-सिन्धु में डूब रहा है।
जहाँ 'भक्ति' में सब से पहले हुवा सवेरा।
है यही भूमि वह-यही तपोवन मेरा ॥

४

जहाँ खड़ी स्वाधीन-पताका फहराती है।
जिसे देख कर इन्द्र-ध्वजा भी शरमाती है।
धर्म-युद्ध के हेतु जहाँ उठतीं तरवारें।
जहाँ चण्डिका नाच रही है कर हुंकारें।
जहाँ 'शक्ति' में सब से पहले हुवा सवेरा।
है यही भूमि वह-यही तपोवन मेरा ॥ ३ ॥

पं० विद्यानिधि सिद्धान्तालंकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली

(लेखक— श्री प्रो० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार पालीरत्न)

शिक्षा के उद्देश्य

बड़े २ विद्वान विभिन्न दृष्टिओं से विचार करते हैं कि शिक्षा के क्या उद्देश्य होने चाहियें, परन्तु वे इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर उतनी स्पष्टता से नहीं देते जितनी स्पष्टता और निश्चयात्मकता से देना चाहिए। निरुक्तकार यास्काचार्य इस गम्भीर प्रश्न का हल तीन अक्षरों के 'आचार्य' शब्द में पाते हैं। यह संस्कृत भाषा की अपूर्व और विचित्र महिमा है कि उसका प्रत्येक शब्द अपने में बड़े विस्तृत ज्ञान को ढाँपे रखता है। 'आचार्य' का निर्वचन करते हुए यास्काचार्य लिखते हैं— "आचार्य आचारं ग्राहयति, आचिनोत्यर्थान्, आचिनोति बुद्धिम्" अर्थात् आचार्य वह है जो शिष्य को सदाचार ग्रहण करावे, उसमें शब्दों के अर्थों का सञ्चय करे, और उसकी बुद्धि को बढ़ावे। बस, शिक्षा के एकमात्र यही तीन उद्देश्य होने चाहियें कि (१) विद्यार्थी के सदाचार का निर्माण किया जावे, (२) उसे प्रत्येक शब्द के यथार्थ अर्थ का साक्षात्कार कराते हुए उसमें वस्तुओं का यथार्थ बोध संचित कर दिया जावे, (३) और उसकी ईश्वर-प्रदत्त बुद्धि को पूर्णतया विकसित किया जावे।

यदि वर्तमान युनिवर्सिटियों की शिक्षा-पद्धति की ओर दृष्टि डाली जावे तो हमें साफ़ तौर पर विदित होता है कि सदाचार-निर्माण, पदार्थावबोध और बुद्धि-विकाश, शिक्षा के इन तीन उद्देश्यों में से प्रथम और अन्तिम उद्देश्य को सर्वथा भुलाया हुआ है। सदाचार-निर्माण तो शिक्षा के क्षेत्र में से वहिष्कृत है ही, परन्तु इसके साथ साथ कृत्रिम पाठप्रणाली की यन्त्रकला में से बिना किसी नन्नु नच के प्रत्येक विद्यार्थी को गुजारने से उनकी ईश्वरप्रदत्त बुद्धि का विकाश भी नहीं हो पाता। होना तो यह चाहिए था कि जैसे सूर्योदय के होने पर सूर्य-प्रकाश से रोग-कृमि नष्ट होजाते हैं, चोर चोरी से और जार जारी से विरत होजाते हैं, मलिनता दूर हो जाती है और बन्द कमल खिल जाता है, उसी प्रकार विद्योदय के होने पर विद्या-प्रकाश से काम, क्रोध, लोभ, मोहादि मल दूर हों, पाप-कृमि नष्ट हों, और बुद्धि-कमल का विकाश हो। परन्तु इस माया-रूप-धारिणी विद्या से पाप-मल की वृद्धि होती है, और बुद्धि-कमल बिना खिले ही मुरझा जाता है।

एवं, शिक्षा के दूसरे उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए किताबी शिक्षा की ओर ही ध्यान दिया जाता है। ऐसी शिक्षा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दूसरा उद्देश्य भी पूर्णतया पूरा नहीं होता, पदों की रटन्त पर पूरा बल लगाया जाता है, पदार्थावबोध यथार्थ में नहीं होता। इससे पाठक समझ सकते हैं कि आधुनिक युनिवर्सिटी-शिक्षा-पद्धति कितनी दोषपूर्ण है। यह शिक्षा-पद्धति वह है जो कि शिक्षा के तीनों उद्देश्यों में से किसी भी उद्देश्य को सच्चे अर्थों में पूर्ण नहीं करती। इसलिए हमारे ऋषियों ने जो गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली प्रचलित की थी, वह विवेकपूर्ण है और वही वास्तव में मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली है। वह शिक्षा-प्रणाली कैसी है, उसे मैं ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश के आधार पर ही बतलाना चाहता हूँ जिससे विद्वान् लोग उस पर अधिकाधिक विचार करते हुए विद्यार्थियों के जीवनों को सफल बना सकें।

गुरुकुल-प्रवेश से पूर्व अपनी सन्तान के प्रति माता पिता के कर्त्तव्य-

(१) जन्म से पाँचवें वर्ष तक माता और छठे से आँठवें वर्ष तक पिता अपनी सन्तान को शिक्षा दिया करे।

(२) जब पाँच वर्ष का लड़का वा लड़की हो तब उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें और अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।

(३) इसके पश्चात् जिन से उत्तम शिक्षा, विद्या, धर्म तथा परमेश्वर का बोध हो, और जिन से माता पिता आचार्य विद्वान् अतिथि राजा प्रजा कुटुम्ब बन्धु भगिनी तथा भृत्य आदि से कैसे बर्तना चाहिए, इसका उत्तम ज्ञान प्राप्त हो, उन मंत्रों तथा श्लोकों सूत्रों और गद्य पद्यों को भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें।

(४) इसके अतिरिक्त जो २ विद्या-धर्म-विरुद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं, उनका भी उपदेश करदें जिससे उन्हें भूत प्रेत आदि मिथ्या बातों पर विश्वास न हो।

(५) माता पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों को वीर्यरक्षण में आनन्द और वीर्यनाशन से दुःख की प्राप्ति होती है, इसे भी भली भाँति जतला दें। जैसे— "देखो, पुत्रो! जिसके शरीर में वीर्य सुरक्षित रहता है, उसे आरोग्यता बुद्धि बल और पराक्रम की वृद्धि होकर बहुत सुख की प्राप्ति होती है। वीर्यरक्षा की यही रीति है कि तुम आठों मैथुनों से पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त करो। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक तथा महाकुलक्षणी बन जाता है, वह प्रमेह रोग से युक्त होजाता है जिससे वह दुर्बल निस्तेज और निर्बुद्धि हुआ हुआ उत्साह साहस धैर्य बल पराक्रम आदि से रहित होकर नष्ट होजाता है। यदि तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण तथा वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं होसकेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक हम लोग गृहकर्मों के करने वाले हैं, तब तक तुमको विद्या का ग्रहण और शरीर का बल बढ़ाना चाहिए।"

गुरुकुल का स्थान कैसा हो

(१) विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए।

(२) पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् ४ कोस दूर ग्राम या नगर रहे।

(३) लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिये।

गुरुकुल--प्रवेश के नियम

(१) इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें, पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।

(२) लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेजना चाहिए।

गुरुकुल के नियम

(१) जो अध्यापक, पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हों, उन से शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने के योग्य हैं।

(२) जो अध्यापिका और अध्यापक, भृत्य वा अनुचर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्रियें और बालकों की पाठशाला में सब पुरुष हों।

(३) कन्याओं की पाठशाला में ५ वर्ष का लड़का, और लड़कियों की पाठशाला में ५ वर्ष का लड़का भी न जाने पावे। अर्थात्, जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें, तब तक लड़का या लड़की का दर्शन स्पर्शन एकान्त-सेवन भाषण विषय-कथा परस्परक्रीड़ा विषय का ध्यान और सङ्ग, इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें। अध्यापक लोग उन को इन बातों से बचावें, जिस से वे उत्तम विद्यावान् सुशिक्षित सुशील और उत्तम स्वभाव वाले तथा शरीर और आत्मा से बलवान् होके आनन्द को नित्य बढ़ा सकें।

(४) सब को तुल्य वस्त्र खानपान और आसन दिये जावें, चाहे वे राजकुमार वा राजकुमारी हों और चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सब को तपस्वी होना चाहिये।

(५) माता पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता पिता से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्रव्यवहार एक दूसरे से कर सकें, जिस से वे सारी चिन्ताओं से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें।

(६) जब भ्रमण करने जावें तब उन के साथ अध्यापक रहें जिस से वे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें।

(७) जहां गुरुजन शिष्यों का ताड़न करते हुए उन्हें अमृत पिलाते हैं और लाड़न करते हुए उन्हें अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हाथों से विष-पान कराके उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं, वहां शिष्यों को भी चाहिए कि वे ताड़ना से सदा प्रसन्न और लाड़न से सदा अप्रसन्न रहा करें, इस से विपरीत आचरण कभी न करें। परन्तु गुरुजनों को सदा ध्यान रखना चाहिये कि वे ईर्ष्या या द्वेष से कभी ताड़न न करें, अपितु ऊपर से भय-प्रदन और भीतर से कृपादृष्टि रखें।

ऋषि दयानन्द को अपना आचार्य मानने वाले आर्य लोग आचार्य के गुरुकुल-संम्बन्धी इन संकेतों पर विशेष ध्यान दें और देखें कि वे किस मार्ग को ओर चल रहे हैं, और जो आर्य अपनी सन्तान को गुरुकुलों में न भेज कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की अवहेलना करते हैं, क्या वे अपने आचार्य की आज्ञानुसार दण्ड के भागी नहीं ?

कुल--वन्दना

जय जय जननि ! कुलदेवि ! तुझ को बार बार प्रणाम है।
यह मञ्जु अञ्जलि प्रेममय, अर्पित तुझे अभिराम है ॥ १ ॥

महिमा हिमालय की शिखायें, गा रहीं तेरी स्वयम्।
भागीरथी की बीचियों में, स्पष्ट तेरा नाम है ॥ २ ॥

हम देखते तुझ में सदा, नव प्रेम का उल्लास है।
हम को मधुरतम गोद ही, तेरा परम विश्राम है ॥ ३ ॥

तेरे विशद आकाश की, स्वाधीनता में हम पले।
स्वर्गीयता-मिश्रित जहां, उज्ज्वल उषा का धाम है ॥ ४ ॥

तेरे वनों की स्तब्धता में, दिव्य कोई राग है।
सब ओर से मानो बरसता, पुण्य का परिणाम है ॥ ५ ॥

तूने हृदय मोती पिरो कर, प्रेम के दृढ़ सूत्र में।
अनुपम बनाई यह हमारी, चारु मुक्ता दाम है ॥ ६ ॥

तू ही बजाती वीणा वह, जिस के कि हम सब तार हैं।
जो तार सारे एक स्वर हो, कह रहे अविराम हैं ॥ ७ ॥

हम हैं सदा तेरे, हमारी तू हृदय-वर-वासिनी।
सम्बन्ध यह तेरा हमारा, नित्य है निष्काम है ॥ ८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-वृक्ष

'आश्चर्यमय गुरुकुल' शीर्षक वाले लेख में दर्शाया जा चुका है कि किस प्रकार १९०२ ई० की ४ मार्च को कांगड़ी की पवित्र भूमि में लगाया हुआ नन्हा सा गुरुकुल रूपी वृक्ष फूला और फला। इस वृक्ष के जो महत्त्व हैं, वे संक्षेप से इस प्रकार कहे जा सकते हैं कि यह संपूर्ण राष्ट्र का अपनाया हुआ है, छूत अछूत सब को आश्रय देने वाला है, उत्तम जीवन का प्रदाता है, सन्तप्तों को शान्ति देता है, भारत के प्राचीन गौरव का प्रत्यक्षतया भासमान चिन्ह है, और भारतभूमि का मुख उज्वल करने वाला है। वर्तमान समय में वेद महाविद्यालय महाविद्यालय और आयुर्वेद महाविद्यालय, ये तीन बड़े २ स्कन्ध हैं। इस वृक्ष को उत्पन्न हुए ४ मार्च १९२७ ईस्वी को २५ वर्ष व्यतीत होगए। गत १६ वर्षों में इस वृक्ष के सिंचन में लगभग २० लाख ७५ हज़ार रुपय व्यय हुए, नक़द और जायदाद मिलाकर लगभग साढ़े दस लाख रुपए इस की रक्षा के लिए विद्यमान हैं, और इस वर्ष के १५ फल मिला कर कुल १६२ फल इस वृक्ष से आर्यजाति को प्राप्त हो चुके हैं। इस सुप्रसिद्ध पवित्र वृक्ष और इस की सात शाखाओं की निर्मल छाया में बैठकर इस समय लगभग एक सहस्र बालक और बालिकायें शिक्षा पा रही हैं। यह वृक्ष अमर श्रद्धानन्द के हाथों से लगाया हुआ है और उन्हीं के रुधिर से सींचा हुआ है। ऐसे अद्भुत वृक्ष की पच्चीसवीं वर्ष-गांठ मनाते हुए आर्य जाति को कुछ विशेष प्रण करने चाहियें। आर्य-जाति से मैं केवल दो प्रणों की अभ्यर्थना करता हूँ; एक तो यह कि अपने आचार्य ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए इस जाति का प्रत्येक व्यक्ति अपनी सन्तानों को विष-वृक्षों के नीचे शिक्षा के लिए न बैठा कर गुरुकुल-वृक्ष के ही नीचे बैठाना अपना कर्तव्य समझें, और दूसरा, इस वृक्ष के सिंचन में तन मन और धन, किसी की कमी न रखें। ऐसा न हो कि आर्यजाति की असावधानता से अमर श्रद्धानन्द का लगाया हुआ यह भारत-पावक वृक्ष कभी मुरझा कर सूख जावे, और फिर पीछे पछता कर सिर नीचा किये सब से यह सुनना पड़े कि अब पछताने से क्या होत है जब चिड़ियां चुग गईं खेत। अतः, ऐ आर्यजाति के वीरो, उठो, कमर कस कर तय्यार होवो, अब अधिक प्रतीक्षा का काल नहीं रहा।

चन्द्रमणि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलगीत

प्राणों से हम को प्यारा 'कुल' हो सदा हमारा ॥

(१)

विष देने वालों के भी बन्धन कटाने वाले,
मुनियों का जन्म-दाता कुल हो यही हमारा ॥

(२)

'कट जाय सिर न झुकना' यह मन्त्र जपने वाले,
वीरों का जन्म दाता कुल हो यही हमारा ॥

(३)

स्वाधीन्य-दीक्षितों पर सब कुछ बहाने वाले,
धनियों का जन्म दाता कुल हो यही हमारा ॥

(४)

निज जन्म-भूमि भारत को क्लेश से छुड़ा कर,
गौरव बढ़ाने वाला कुल हो यही हमारा ॥

(५)

तन मन सभी न्योछावर कर वेद का संदेसा,
जग में ले जाने वाला कुल हो यही हमारा ॥

(६)

हिमशैल तुल्य ऊंचा, भागीरथी सा पावन,
भटकों का मार्ग-दर्शक दुखियों का हो सहारा ॥

(७)

आजन्म ब्रह्मचारी ज्योती जगा गया है,
अनुरूप पुत्र उस का कुल हो यही हमारा ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अध्यापक गण तथा ब्रह्मचारीवर्ग

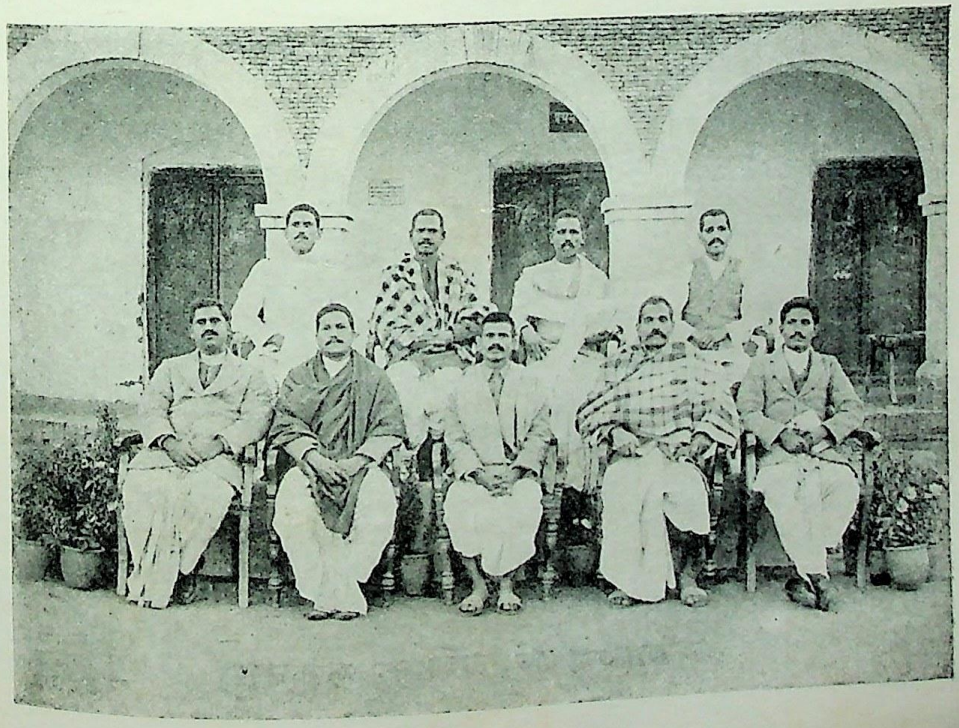

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अध्यापक वर्ग तथा कार्यकर्त्ता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल काङ्गड़ी की शाखायें

(१)

शाखा-गुरुकुल मुलतान

डेराबुद्धू मुलतान के चौधरी म० रामकृष्ण जी के भूमि और नकद दान देने पर और शाखा गुरुकुल खोलने के लिए बहुत आग्रह करने पर आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने २ अगस्त १९०८ को दानी के दान को स्वीकृत करके शाखा खोलने का निश्चय किया। तदनुसार १३ फर्वरी १९०९ के दिन डेराबुद्धू में इस गुरुकुल की स्थापना हुई जिस का नाम "शाखा-गुरुकुल देवबन्धु" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह गुरुकुल कांगड़ी की सब से पहली शाखा थी। इस शाखा के प्रबन्ध के लिए स्थानिक आर्यपुरुषों की एक गुरुकुल-सभा बना दी गई जो बड़े उत्साहमय पुरुषार्थ और जोश से काम करने लगी। थोड़े ही दिनों में कई हज़ार रुपयों की लागत के पक्के मकान और कूप आदि तय्यार होगए। परन्तु दौर्भाग्य से दो तीन वर्षों में ही दानी चौधरी जी की मति बदल गयी और उन्होंने गुरुकुल के चलाने में अनेक बाधायें डालनी शुरु कीं। लाचार होकर गुरुकुल देवबन्धु से उठाना पड़ा, और मुलतान शहर के बाहिर हजूरीमल के बाग में मुलतान के प्रतिष्ठित वकील ला० परमानन्द जी ने जो अपनी बड़ी २ दो कोठियें अस्थायी तौर पर इस के निमित्त अर्पण कर दी थीं वहां रखा गया। वहां आकर उस समय के मुख्याधिष्ठाता पं० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार और स्थानिक सभा के मंत्री ला० मदनलाल जी ने अनेक यत्न किए कि शायद चौधरी जी की मति फिर बदल जावे, परन्तु कुछ परिणाम न निकला। तब मुलतान से लगभग तीन मील की दूरी पर ताराकुण्ड के समीप स्थायी तौर पर इस शाखा को स्थापित किया गया। यह भूमि ६५॥ बीघे है, जिस का आनुमानिक मूल्य ६ सहस्र रु० है। अब तक मकानों और कूप आदि पर ३० सहस्र रु० व्यय हो चुके हैं। इसकी पुरानी देवबन्धु वाली भूमि के सम्बन्ध में चौधरी रामकृष्ण जी के साथ झगड़ा चल रहा था, वह गतवर्ष निपट गया है और वहां के मकानों की क्षतिपूर्त्ति के लिए चौधरी जी ने १७ सहस्र रु० आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब को दे दिए हैं।

पहले इस शाखा में १० श्रेणियों तक पढ़ाई का प्रबन्ध था। कई वर्ष यहां के दशम श्रेणी के ब्रह्मचारी गुरुकुल कांगडी अधिकारी परीक्षा के लिए जाते रहे और बड़े योग्य सिद्ध हुए। इस वर्ष तक २० स्नातक ऐसे हो चुके हैं जो यहीं से अधिकारी परीक्षा के लिए गए थे। परन्तु इस वर्ष स्थानिक प्रबन्धकर्त्री सभा ने यह निश्चय कर लिया है कि यह शाखा प्रथम आठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेणियों तक ही रक्खी जावे। तदनुसार इसकी नवम श्रेणी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ भेजदी गई है। अब इस समय इस शाखामें १०५ ब्रह्मचारी शिक्षा पा रहे हैं।

(२)

शाखा—गुरुकुल कुरुक्षेत्र

संवत् १९६७ में थानेसर शहर के सुप्रसिद्ध रईस ला० ज्योतिप्रसाद जी के मन में यह शुभ विचार उत्पन्न हुआ कि वे भी गुरुकुल कांगड़ी की शाखा अपने यहां खुलवायें। इन्होंने अपने ये विचार महात्मा मुन्शीराम जी [श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज]मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी के सामने रखे। तदनुसार सं० १९६९ की १ वैशाख को श्री महात्मा मुन्शीराम जी ने इस गुरुकुल की आधार-शिला रक्खी। ला० ज्योतिप्रसाद जी रईस ने प्रारम्भ में १००००) नकद तथा १०४८ बीघा भूमि इस कार्य के अर्पण की।

प्रारम्भ में इस गुरुकुल के मुख्याध्यापक श्री पं० विष्णुमित्र जी रहे। प्रबन्धकर्ता का काम ला० ज्योतिप्रसाद जी करते रहे, और उनके मित्र ला० भगीरथलाल जी भी तन मन धन से गुरुकुल की सहायता करते रहे।

दौर्भाग्य से गुरुकुल खुलने के १ वर्ष बाद ही ला० ज्योतिप्रसाद जी का स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु से गुरुकुल को बड़ी हानि हुई। उनके बाद कैथल के ला० नौबतराय जी निस्स्वार्थ-भाव से बड़ी लगन के साथ प्रबन्धकर्ता का कार्य करने लगे। इस प्रकार दिन प्रतिदिन यह गुरुकुल अधिकाधिक उन्नति करता गया। संवत् १९७३ में इस गुरुकुल का प्रबन्ध एक स्थानीय कमेटी के हाथ में दिया गया। परन्तु फिर इसका प्रबन्ध मुख्याधिष्ठाता कांगड़ी के सीधे निरीक्षण में ही आ गया। सं० १९८० में प्रथम बार यहां से ९ ब्रह्मचारी ८ म श्रेणी पास करके गुरुकुल कांगड़ी गये और तब से प्रतिवर्ष ८ म श्रेणी के बाद ब्रह्मचारी वहां पर जाते हैं।

वर्त्तमान समय में इस गुरुकुल में ८ श्रेणियें हैं। जिनमें लगभग १५० ब्रह्मचारी भारत के भिन्न २ प्रान्तों से आकर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अध्यापकों की संख्या ९ है। पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार इस शाखा के मुख्याध्यापक तथा प्रबन्धकर्ता हैं।

स्थान— देहली से कालका जाते समय मार्ग में कुरुक्षेत्र जन्कशन नाम का एक स्टेशन है। इस स्टेशन से पहोवा तीर्थ को १ पक्की सड़क जाती है। इसी पक्की सड़क के बायें हाथ कुरुक्षेत्र तीर्थ से १ मील दूर गुरुकुल कुरुक्षेत्र बना हुआ है।

गुरुकुल के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर इसका बुनियादी पत्थर रखते समय गुरुकुल के आचार्य श्री महात्मा मुन्शीराम जी [श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी] ने निम्न लिखित वाक्य कहे थे "आज हमारी प्यारी भारतभूमि पराधीनता की बेड़ी में जकड़ी हुई है। एक समय था जब कि संपूर्ण संसार के राजा आर्यावर्त के सम्राट् के चरण-रज को माथे पर लगाने में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना गौरव समझते थे। आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व इसी कुरुक्षेत्र भूमि में आर्यावर्त के नाश का बीज बोया गया था। आज उसी भूमि में आर्यावर्त की उन्नति के लिये यह बीज बोया गया है"।

कुरुक्षेत्र की इस भूमि में शाखा स्थापित करने का रहस्य तथा उद्देश्य कुलपति जी के भाषण की उपर्युक्त पंक्तियों से समझ में आ जाता है।

आज गुरुकुल को स्थापित हुए १६ वर्ष व्यतीत हुये हैं। इस थोड़े से समय में गुरुकुल ने पर्याप्त उन्नति की है। वर्त्तमान समय में इस गुरुकुल की लगभग ८००००) अस्सी हज़ार रुपये की लागत की पक्की इमारतें हैं। लगभग २०० ब्रह्मचारियों के निवास तथा पठन पाठन के लिये पर्याप्त मकान हैं। आश्रम से उत्तर की तरफ ब्रह्मचारियों के स्नान के लिये स्नानगृह बना हुआ है, जिस में लगभग ७५ ब्रह्मचारी एक साथ स्नान कर सकते हैं। दक्षिण की तरफ़ भोजन-भण्डार है। उसके पास ही परिवार-गृह बने हुए हैं।

गौशाला—ब्रह्मचारियों को प्रातः सायं ताजा दूध दिया जा सके, इसके लिये गुरुकुल की अपनी गौशाला है, जिसमें १०० के लगभग पशु हैं। कृषि आदि के लिये ५ जोड़ी बैलों की रखी हुई हैं।

वाटिका—ब्रह्मचारियों को ताजी सब्ज़ी तथा फल आदि देने के लिये ३० बीघे पक्के का एक बाग है, जिस से ब्रह्मचारियों के लिये प्रतिदिन दो अढ़ाई मन के लगभग ताज़ी सब्ज़ी निकल आती है। अनार, अंगूर, आड़ू सन्तरे, आम, अञ्जीर, केला आदि फल भी पर्याप्त मात्रा में इस वाटिका से ब्रह्मचारियों के लिये प्राप्त हो जाते हैं।

चिकित्सालय—वर्त्तमान समय में आश्रम के बीच में ही चिकित्सालय तथा रोगी-गृह हैं। शीघ्र ही आश्रम से कुछ दूर पश्चिम की तरफ़ पृथक् चिकित्सालय गुरुकुल के प्रबन्धकर्ता स्वर्गीय ला० नौबतराय जी के स्मारक में बनाया जायगा। गुरुकुल के १४ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इसकी आधार-शिला रखी थी।

पुस्तकालय—विद्यालय के साथ ही गुरुकुल का अपना पुस्तकालय है जिसमें इस समय लगभग २००० पुस्तकें हैं।

विज्ञान-भवन—विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा देने के लिये विज्ञान भवन में लगभग २०००) के मूल्य के उपकरण हैं।

कला-भवन—विद्यार्थियों को कपड़ा बुनना तथा अन्य दस्तकारी का काम सिखलाने के लिये शीघ्र ही कला-भवन की योजना की जाने वाली है। खड्डियें आ चुकी हैं, कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ करने का विचार है।

जायदाद—इस गुरुकुल के पास लगभग २२०० बीघा जमीन है जिस में चार कूप हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

शाखा—गुरुकुल मटिण्डू

यह संस्था हरियाणा प्रान्त में शिक्षा की भारी न्यूनता को अनुभव करके श्री चौधरी पीरुसिंह आदि उत्साही आर्यसज्जनों द्वारा जिला रोहतक के मटिण्डू ग्राम के समीप, यमुना नहर की एक छोटी शाखा के किनारे अत्यन्त रमणीक स्थान पर १९७२ वि० में स्थापित की गई, जिस की आधार शिला श्रीयुत पूज्यपाद श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कर-कमलों द्वारा रक्खी गई। यह संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय कांङ्गड़ी की शाखा रूप में खोली गई है।

विशेषतायें—(१) यह संस्था सर्वथा निःशुल्क संस्था है। इस में ब्रह्मचारियों को शिक्षा तो निःशुल्क दी ही जाती है किन्तु उनके भरण पोषण का व्यय भी गुरुकुल की ही ओर से होता है।

(२) ब्रह्मचारियों को इस योग्य बनाया जाता है कि अवसर पड़ने पर प्रत्येक कार्य को स्वयं कर सकें।

प्रबन्ध—संस्था का प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन है। जो महाशय १००) एक दम या ६) वार्षिक चन्दा देवे, वह कमेटी का सदस्य हो सकता है। इस के मुख्याध्यापक गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्री पं० निरञ्जनदेव की विद्यालंकार हैं। इन्हीं के आधीन विद्यालय तथा आश्रम आदि का सम्पूर्ण प्रबन्ध है।

विद्यालय—इस समय विद्यालय में ७ श्रेणियां हैं और लगभग ६० ब्रह्मचारी विद्याध्ययन कर रहे हैं। ६ साल से लगातार यहां के विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर गुरुकुल कांङ्गड़ी में अध्ययनार्थ जाते हैं। शाखाओं से जो ब्रह्मचारी कांगड़ी जाते हैं, उन्हें वहां के नियमानुसार शुल्क देना पड़ता है, किन्तु यहां के ब्रह्मचारियों के लिए शुल्क में ५) की रिआयत करदी गई है। विद्यालय की पाठविधि गुरुकुल कांगड़ी की पाठविधि के अनुसार है।

वाटिका—नहर के किनारे पर गुरुकुल की एक रम्य वाटिका है, जिस में विविध प्रकार के फलों के वृक्ष तथा नानाप्रकार के मनोहर पुष्पों के पौदे हैं। यह वाटिका समयानुसार शाक की आवश्यकता को भी पूरी कर सकती है।

गोशाला—ब्रह्मचारियों के दुग्धपान के लिए एक गोशाला भी है, जिस में इस समय ४० गौएँ तथा १० भैंसें हैं। यहां के ज़मीदारों से वैशाख तथा ज्येष्ठ मास में गोशाला के लिये भूसा एकत्रित किया जाता है, जिस से गोशाला को पर्याप्त सहायता मिल जाती है।

सहायता—इस हरियाणा प्रान्त के जाट ज़मीदार बड़े उत्साही तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवीर हैं। उन्हीं के उत्साह का फल है कि यह संस्था निःशुल्क होती हुई भी उत्तमता से अपना कार्य कर रही है। जनरल कमेटी द्वारा नियुक्त डेपुटेशनों से वैशाख और ज्येष्ठ के महीनों में जमीदारों से अनाज और गौओं के लिए भूसा तथा माघ मास में गुड़ इकट्ठा किया जाता है। अनाज सालभर में कम से कम ६०० मन के लगभग एकत्रित हो जाता है, और विवाह-संस्कारों में प्रतिवर्ष दो या अढ़ाई हजार के लगभग धन दान में आजाता है। इस के अतिरिक्त वार्षिक उत्सव पर दो या अढ़ाई हज़ार के लगभग धन प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। इस प्रकार यह संस्था ११ वर्षों से इस प्रान्त में सफलता से अपना कार्य कर रही है।

सम्पत्ति—इस गुरुकुल के पास ५६ बीघे ज़मीन है जिस का मूल्य लगभग ५६००) है। अब तक मकानों और कूप पर लगभग ५५००) व्यय हुए हैं और गोशाला के पशुओं का मूल्य लगभग ५०००) है। एवं, इस गुरुकुल की संपूर्ण संपत्ति १६०००) की है। इस संस्था का वार्षिक खर्च १०००) के लगभग है।

नवीन मकानात— इस संस्था की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखकर इसके मकानात में वृद्धि करने की अत्यन्त आवश्यकता अनुभव हुई है। अतएव उनके बनवाने के लिए १६५०) की एक लाख दस हज़ार ईन्टे और २००) का चूना तथा २००) के गार्डर, टीन आदि सब सामान समीप के बन में पड़ा हुवा है। पर्याप्त धनराशि प्राप्त हो जाने पर कार्य प्रारम्भ किया जावेगा। दानी महाशयों को इधर ध्यान देना चाहिए।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी और गुरुकुल मटिण्डू— यह संस्था श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के ही कर-कमलों से स्थापित हुई थी। इसकी उन्नति के लिए उन्हें अत्यन्त चिन्ता रहती थी। वे इसके उत्सव और अन्य समयों पर भी पधारा करते थे। इस संस्था के नूतन भवन बनवाने के लिए उन्होंने कई स्थानों से सहायता दिलवाई। बलिदान से एक मास पूर्व जो मटिण्डू के मुख्याधिष्ठाता को पत्र लिखा, उस पर आर्यजनता को विशेष ध्यान देना चाहिये। उस में वे लिखते हैं—"तुम्हारे गुरुकुल के लिए मुझे विशेष ध्यान है। जब कभी मौका मिला इस के भवन निर्माणार्थ सहायता दिलवाऊंगा।"

(४)

शाखा—गुरुकुल रायकोट

गुरुकुल रायकोट की आधार-शिला श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सम्वत् १९७६ वि० में रखी थी। इसके मुख्य सञ्चालक श्री स्वामी गङ्गागिरि जी महाराज हैं।

इस गुरुकुल के दो विभाग हैं, एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी का शाखा-विभाग, और दूसरा उपदेशकविद्यालय का। प्रथम चार श्रेणियों तक गुरुकुल कांगड़ी का शाखा-विभाग है। इस में गुरुकुल कांगड़ी की निर्धारित पाठविधि ही पढ़ाई जाती है। चतुर्थ श्रेणी पास करने के पश्चात् ब्रह्मचारी को गुरुकुल कागड़ी में भेजा जा सकता है, अन्यथा आगे यहीं पर उपदेशक विभाग की पढ़ाई प्रारम्भ हो जाती है जिस में उपदेशक विद्यालय की पाठविधि के अतिरिक्त आंगलभाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा संस्कृत के बहुत से उपयोगी विषय भी पढ़ाये जाते हैं। यह उपदेशक विभाग संवत् १९७९ वि०में स्थापित किया गया था। इस समय उपदेशक विभाग में, सिद्धान्तशिरोमणि के द्वितीय वर्ष तक की पढ़ाई हो रही है, सिद्धान्त वाचस्पति का भी प्रबन्ध करलिया गया है। उपदेशक विभाग और शाखा विभाग दोनों को मिला कर इस समय कुल ११ श्रेणियाँ हैं, और ५० विद्यार्थी तथा ८ अध्यापक हैं।

इस गुरुकुल में गुरुकुल काङ्गड़ी के नियमानुसार ही सब कार्य होते हैं। ६ से ९ वर्ष तक बालक प्रविष्ट होते हैं, विशेषावस्था में १० वर्ष तक के भी ले लिये जाते हैं। शिक्षा, निवास, चिकित्सा तथा प्रबन्धादि सब मुफ़्त होते हैं। ब्रह्मचर्य्य-पालन के अन्य सब नियम पालन करवाये जाते हैं। यहां किस परिश्रम से शिक्षा दी जाती है, गुरुकुल कांगड़ी के परीक्षक इस की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं। इस वर्ष परीक्षा में १०० प्रतिशतक विद्यार्थी पास हुए। ब्रह्मचारी व्रतपाल ने ९७ प्रतिशतक नम्बर लिये तथा दूसरे नम्बर में रहने वाले ब्र० विद्यारत्न ने ९३ प्रतिशतक नम्बर प्राप्त किये। ब्रह्मचारी व्रतपाल को गुरुकुल में प्रथम रहने के कारण "श्रद्धानन्द स्वर्णपदक" दिया गया।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की दो सभायें हैं, जिन में वे व्याख्यान निबन्ध तथा कवितादि का अभ्यास किया करते हैं। एक "वाग्वर्धिनी सभा" जिस के कार्य हिन्दी भाषा में सम्पादित होते हैं, तथा एक "विद्या विनोदिनी सभा" जिसके कार्य संस्कृत भाषा में होते हैं। ब्रह्मचारी सचित्र मासिक पत्र भी निकालते हैं जिसका सम्पादक ब्र० सत्यपाल है। अभी यह हस्तलिखित निकलता है, किन्तु कई सज्जनों ने उसको उपादेयता को अनुभव कर इसको छाप कर निकालने के लिये आग्रह किया है, इसके लिये प्रबन्ध किया जा रहा है। ब्रह्मचारियों का एक संस्कृत मासिक पत्र "भूषण" नामसे निकालने का भी विचार है।

इस गुरुकुल की जायदाद लगभग ४००००) चालीस हज़ार रुपये की है। इस का वार्षिक व्यय लगभग १००००) रु० है। शुल्क कम होने के कारण इस का अधिकांश दान रूप में जनता से इकट्ठा किया जाता है। आर्य जनता से प्रार्थना है कि वह इस नई फूलती हुई संस्था की ओर विशेष ध्यान दें।

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल रायकोट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

शाखा-गुरुकुल सूपा

गुजरात निवासियों की चिरकाल से प्रबल इच्छा थी कि विश्वविख्यात "गुरुकुल काँगड़ी" की एक शाखा गुजरात प्रान्त में भी खोली जावे। वे सोचते थे कि महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि होने का जिस देश (काठियावाड़ गुजरात) को अभिमान है उसमें उन की स्मारक स्वरूप। कोई भी संस्था नहीं है। अपरञ्च, गुजरात से गुरुकुल काँगड़ी में प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारीगण पर्याप्त संख्या में जाते थे और यहाँ के निवासी धन द्वारा भी प्रतिवर्ष गुरुकुल काँगड़ी की विशेष सहायता करते थे। धीरे २ यह चिन्ता यहाँ के निवासियों में विशेष रूप से जागने लगी।

इसी बीच में गुरुकुल काँगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्रीयुत पं. ईश्वरदत्त जी विद्यालंकार (वैदिक मिशनरी) जो विदेश से लौट कर आये थे गुजरात में गुरुकुल काँगड़ी की शाखा खोलने का विचार करने लगे। बस, गुजराती आर्य भाइयों का उत्साह दूना होगया। फल स्वरूप गुजरात गुरुकुल सभा का संगठन किया गया, और यह नियम बनाया गया कि जो महानुभाव १०००) एक हजार रुपया दान दें वह इसके सभासद् समझे जावें।

श्रीयुत पंडित ईश्वरदत्त जी विद्यालङ्कार (वैदिक मिशनरी), श्रीदयालजी लल्लूभाई और श्रीयुत झीणाभाई देवाभाई के अनथक परिश्रम और उत्साह से पचास सभासद् बन गये, और पच्चीस हज़ार रुपये गुरुकुल की स्थापना के लिये नक़द प्राप्त होगये। तब १९२३ ईस्वी को गुजरात गुरुकुल सभा की स्थापना हुई।

स्थापना—अब गुरुकुल की स्थापना किस जगह की जाय। बहुत विचारने के पश्चात् यह निर्णय किया गया कि जगत्प्रसिद्ध "बारडोली" तहसील में पूर्णा नदी के रम्य किनारे पर गुरुकुल की स्थापना की जाय। तदनुसार पूर्णानदी के रम्य तट पर गुरुकुलों के प्रवर्त्तक परम पूज्य श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी सन्यासी के मङ्गलमय पवित्र कर-कमलों से माघ शुक्ला त्रयोदशी १७८० सम्वत् तदनुसार १८ फरवरी १७२४ ई० को महर्षि-दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी के स्मारक में गुरुकुल कांगड़ी के शाखा रूप इस गुरुकुल की स्थापना हुई। "सूपा" ग्राम के निकट होने के कारण इस गुरुकुल का नाम "गुरुकुल सूपा" रखा गया। प्रारम्भ में २८ ब्रह्मचारी प्रविष्ट किए गए। प्रवेशार्थ प्रार्थनापत्र तो १०० के लगभग आए थे, परन्तु निवास स्थान की कमी के कारण थोड़े ही ब्रह्मचारी प्रविष्ट किए गए। यह बात भी गुजरात निवासियों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के साथ प्रगाढ़ प्रेम प्रदर्शित करती है।

गुरुकुल सूपा का चतुर्थ वर्ष प्रारम्भ हो चुका है। चार श्रेणियों में मिला कर लगभग ९० ब्रह्मचारी हैं। सभा का नये वर्ष का चुनाव हो चुका है। और गुरुकुल का सारा प्रबन्ध एक योग्य और उत्साही आर्य श्रीयुत चतुरभाई बाबर भाई पटेल बी० कोम को सौंपा है। शिक्षण विभाग में भी अच्छे २ कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति हो चुकी है।

प्रारम्भ से ही कई आर्य सज्जन, तन, मन और धन से इस गुरुकुल की सेवा करते आये हैं, जिनमें विजलपुर निवासी श्रीयुत झीणाभाई देवाभाई और माणेकपुर निवासी श्रीयुत डाह्या-भाई नरसिंह के नाम विशेष उल्लेख-नीय हैं। बाजीपुरा निवासी आर्य्य दानवीर श्रीयुत भक्तिभाई दुर्लभभाई जी की यह संस्था हमेशा के लिए ऋणी रहेगी क्योंकि आप के हार्दिक प्रेम से गुरुकुल सूपा को २२५ बीघा भूमि दान मिली थी। भक्तिभाई-वैदिक शिक्षण-ट्रस्ट के नाम से एक ट्रस्ट भी बन चुका है।

अल्प समयमें ही गुरुकुल ने पर्याप्त उन्नति की है गुजरात-गुरुकुल-सभा के पास अपनी संस्था के लिए निम्न-लिखित भूमि मकान आदि हैं:—

गुरुकुल भूमि २६ बीघा	रु० ८०००)
आश्रम के पांच कमरे और कार्यालय.....	रु० २००००)
भोजनालय और परिवार गृह	रु० ३५००)
स्नानागार और दो कूप	रु० ३०००)

इन के अतिरिक्त अन्य साधनों को जोड़ कर कुल जायदाद लगभग ४००००) की है। इस के सिवाय बक में स्थिर कोष के रूप में २००००) जमा है। गुजरात में गुरुकुल-शिक्षा और धर्म-प्रचार की कमी को देख कर इस का भी गु० गु० सभा शीघ्र प्रबन्ध करने का यत्न कर रही है। धर्मानुरागी और गुरुकुल-शिक्षा-प्रेमी दानी महा-नुभाव इस ओर अपनी दृष्टि करके संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति में सहायता देकर श्रेय के भागी बनेंगे।

मंत्री गुजरात-गुरुकुल-सभा

(६)

शाखा-गुरुकुल झज्झर

श्री पण्डित विश्वम्भरनाथ जी ने अफ्रीका से लौटने पर, गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा झज्झर, खोलने का संकल्प किया। कुछ आर्य भाइयों से मिलकर रुपया एकत्रित कर शाखा खोलने की आज्ञा आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब से ले ली। कार्य प्रारम्भ होते ही अकस्मात् चिन्ताओं के कारण उन्हें सदमा पहुंचा और कार्य बन्द हो गया फिर स्वामी परमानन्द जी ने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल रायकोट के ब्रह्मचारी तथा अध्यापकगण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० ब्रह्मानन्द जी से मिलकर इस गुरुकुल को १९८१ वि० से प्रारम्भ किया। इसके पास १३५ बीघे भूमि है, और बीच में एक पक्का कूप है। १५००) के पोस्ट आफिस में कैश सार्टिफ़िकेट हैं, और लगभग ८०००) पञ्जाब नेशनल बैङ्क में गुरुकुल कांगड़ी की मार्फत जमा हैं। इस समय इस शाखा में २५ ब्रह्मचारी और दो श्रेणियां हैं।

---

(७)

कन्या-गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना के समय उसकी स्वामिनी सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने जो गुरुकुल के नियम बनाए थे, उस में गुरुकुल की परिभाषा करते हुए लिखा हुआ है कि गुरुकुल उस वैदिक शिक्षणालय का नाम है जिसमें वे बालक वा बालिकायें, जिनका यथोचित वेदारम्भ संस्कार हो चुका हो, शिक्षा और विद्या प्राप्त करें। और, इसके नोट में उल्लिखित है कि कन्याओं के लिए जब सम्भव होगा पृथक् गुरुकुल स्थापित किया जावेगा। महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) प्रारम्भ से ही समय २ पर व्याख्यानों और लेखों द्वारा आन्दोलन करते रहे और आर्यजनता से जोरदार शब्दों में अपील करते रहे कि वह शीघ्र कन्या गुरुकुल की स्थापना में भी सहायक हों, परन्तु कुछ परिणाम न निकला। प्रभु की प्रेरणा से दानवीर स्वर्गीय सेठ रग्घूमल जी इस पवित्र कार्य के लिए सहायक के तौर पर आगे बढ़े। उन्होंने कन्या गुरुकुल के लिए एक लाख रुपया पहले और फिर प्रतिमास ५००) देने का संकल्प किया।

इसी महती सहायता के आधार पर आर्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने २३ कार्तिक १९८० वि० [८ नवम्बर १९२ ईस्वी] को दीपावली के शुभ दिन देहली में कन्या-गुरुकुल की स्थापना की। प्रारम्भिक वर्ष में ही ८५ कन्यायें प्रविष्ट हुई और इस समय १२५ ब्रह्मचारिणियें हैं जो सात श्रेणियों में विभक्त हैं। इस का सब प्रबन्ध गुरुकुल कांगड़ी की तरह आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के ही आधीन है। इस के प्रबन्धाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता और शिक्षाध्यक्ष आचार्य हैं। इस समय इसकी आचार्या श्रीमती विद्यावती जी सेठ बी. ए. हैं। कन्या-गुरुकुल के अन्दर काम करने वाली अध्यापिकायें आदि सब स्त्रियें ही हैं, और बाहिर के प्रबन्ध के लिए पुरुष हैं।

यह कन्या-गुरुकुल पहला है और एक ही है। इस की अभी तक किसी स्थान पर न स्थिर इमारतें बनी हैं, और न कोई अपना स्थान है। अभीतक किराये के मकानों पर ही गुजारा हो रहा है, यह बड़े दुःख की बात है। आर्य-जाति को इसकी ओर ध्यान देना चाहिए, और शीघ्र इसको स्थिर रूप में लाना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल में प्रविष्ट होते हुवे पुत्र को

पिता का उपदेश

(१)

आज से तू सूत्रधारी ब्रह्मचारी बन गया,
पालना तीखे व्रतों का पुत्र ! मन में ठन गया;
पुत्र ! विद्यापीठ तुझ को आज अनमिल मिल गया,
द्वार सच्चे ज्ञान और आचार का अब खुल गया ॥

(२)

आज से पच्चीसवें तक व्रत यही धारण करो,
वीर्य्य-रक्षा और विद्या का पठन पाठन करो;
आज से आचार्य्य के आधीन करता हूं तुम्हें,
एक दो ही बार मेरा मेल होगा वर्ष में ॥

(३)

जानते थे तुम मुझे ही जन्म-दाता आज तक,
सत्य, मैंने ही किया था देह-पोषण आज तक;
पर, तुम्हारा दूसरा यह आज विद्या-जन्म है,
पुत्र ! यह उस जन्म का दाता पिता आचार्य है ॥

(४)

पुत्र ! जब तक देह के पोषण भरण का भार था,
बस तभी तक ही पिता का पुत्र पै अधिकार था;
सौंपता हूं आज सादर मैं तुम्हें आचार्य को,
पास जिस के पावनी शिक्षा-सुधा को पा सको ॥

(५)

घर इसी आचार्य्य-कुल को पुत्र ! अपना मानलो,
आज से आचार्य्य-कुल को अपना पिता-सम जान लो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती देवी तुम्हारी आज माता हो गई,
बन्धुता यह पुत्र ! सारी अब नयी ही हो गई ॥

(६)

ब्रह्मचारी जो तुम्हें बैठे यहां हैं दीखते,
ये इसी कुल में गुरु से वेद-विद्या सीखते;
आज से सब धर्मभाई ये तुम्हारे बन गये,
पुत्र ! आगे से सुनो, अब तुम इन्हीं के हो गये ॥

(७)

बैठना उठना इन्हीं के साथ होगा सर्वदा,
भोजनाच्छादन मिलेगा साथ ही इन के सदा;
दुःख सुख में अब इन्हीं के दुःखसुख निज मानना,
स्नेह से इन बन्धुवों के साथ रहना, देखना ॥

(८)

पुत्र ! शोकातुर न होना याद कर घर के भले,
ये नये बन्धू तुझे अपने लगावेंगे गले;
शील शिक्षा के लिये रहना ज़रूरी है यहां,
उन्नती पूरी तुम्हारी हो नहीं सक्ती यहां ॥

(९)

वायु जल था हानिकारी पुत्र ! रहते थे जहां,
पुष्प-सौरभ से भरी पावन पवन चलती यहां;
पर्वतों की रम्य हरियाली मनोहर थी कहां ?
क्या विनिर्मल जान्हवी की शीत धारा थी वहां ?

(१०)

द्वेष की सत्ता नहीं, पर, प्रेम का संचार है,
दुर्गुणों के स्थान में निर्व्याज सत्याचार है;
दिव्यशोभा का यहां चारों दिशा विस्तार है,
पुत्र ! पहिले से निराला ही यहां संसार है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(११)

शील का आगार, विद्या का यहां आवास है,
ज्ञान की चर्चा निरन्तर, शास्त्र का अभ्यास है;
द्वार रत्नों की निरामय खान का मानो मिला,
रत्नसंग्रह कर सको जितना, करो उतना खुला ॥

(१२)

पुत्र ! कैसे हों नियम इस दिव्य विद्यावास के,
बर्तना वैसे, न कोई दोष जिस से दे सके,
मानना आदेश होगा सर्वदा आचार्य का,
कौन शासन, आप आज्ञा पालने बिन कर सका ? ॥

(१३)

वेश सादा, और सात्विक पान पानाहार है,
सादगी ही ज्ञानियों को शोभता शृङ्गार है;
कष्ट को झेलो, यही सच्चे बलों का धाम है,
पुत्र ! तप बिना मिलता कहां आराम है ॥

(१४)

लाड़ के ही साथ पाला था तुम्हें हमने वहां
दोष करने पर परन्तू दण्ड भी होगा यहां;
आदि में शासन गुरू का यद्यपि लगता बुरा,
पर वही परिणाम में देखा गया अमृत भरा ॥

(१५)

लोभ मोह क्रोध आदि दुर्गणों को छोड़ दो,
शील की रक्षा करो, अज्ञान मुद्रा तोड़ दो;
सत्य का आधार लो, मिथ्या कभी करना नहीं,
पाप से इस भूमि को दूषित कभी करना नहीं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१६)

खेलने को जो समय मिलता यहां थोड़ा नहीं,
चित्त-रञ्जन के लिये सामान का तोड़ा नहीं;
पुत्र ! केवल खेल का पर अब जमाना होगया,
खेल के अब साथ विद्या का समय भी आगया ॥

(१७)

ब्रह्मचर्याचार ही सब शक्ति का आधार है,
नींव है यह आश्रमों की, मृत्यु का संहार है;
ऐहिकामुष्मिक सुखों का पुत्र ! सच्चा द्वार है,
शास्त्र में विख्यात इस की कीर्त्ति अपरम्पार है ॥

(१८)

अन्त में मेरा यही सच्चा तुम्हें उपदेश है,
पालना व्रत को यथाशक्ती, यही आदेश है;
पुत्र ! आए हाथ अवसर को वृथा खोना नहीं,
बन्धुओं की आस सारी को वृथा करना नही ॥

(१९)

देवगण जो यज्ञ शाला में उपस्थित हैं यहां,
सामने उन के प्रतिज्ञा आज जो की है महां,
पालने में ध्यान देना पुत्र ! उस के सर्वदा,
दीनबन्धू स्नेहसिन्धू साथ देंगे वे सदा ॥

(श्रीकण्ठ)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गुरुकुल और मिस्टर कालेज की बातचीत

(लेखक— श्रीयुत श्रीपादराव सातवलेकर जी)

एक समय महात्मा गुरुकुल जी महाराज अन्य भूमण्डलों पर अपना कार्य समाप्त करके हमारी भूमि पर पुनः सञ्चार करने के लिए यहाँ पधारे। जब प्राचीन आर्षकाल में म० गुरुकुल जी अपने विद्या फैलाने का पवित्र कार्य किया करते थे, उस समय आश्रम निवासी ब्रह्मचारियों के वेदघोष से कानन गूंजा करते थे। परन्तु अब वह समय नहीं रहा। इस समय गुरुकुलों का स्थान कालिजों ने ले लिया है, जिन्होंने वनों की खुली पवित्र वायु को छोड़कर नगरों की गन्दी वायु में निवास करने को अधिक पसन्द किया है। यह देख कर म० गुरुकुल जी अत्यन्त दुःखित हुए। वनों से आगे बढ़कर जब उनकी दृष्टि नगरों के लोगों पर पड़ी तो बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि क्या ये लोग उन्हीं आर्यों की सन्तान हैं, जो इतने हृष्ट पुष्ट और बलिष्ठ होते थे। इन लोगों के नये रंग ढंग, विचित्र बोली और विचित्र पोशाक को देखकर उन्हें और भी चकित होना पड़ा। पूछताछ करने पर म० गुरुकुल जी को पता लगा कि यह सब नयी रोशनी का प्रभाव है, जिसके ठेकेदार मि० कालिज का आजकल इस देश में बड़ा प्रभुत्व है। मि० कालिज का निवास स्थान पूछते हुए म० गुरुकुल अंधेराबाद पहुंचे। वहाँ पहुंच कर म० गुरुकुल, मि० कालिज से मिले और उनके मध्य में जो बातचीत हुई, उसे हम यहाँ प्रकाशित करते हैं:-

महात्मा गुरुकुल— नमस्ते, महाशय!

मिस्टर कालिज— गुड मार्निङ्ग! तुम कौन हो? तुम जंगली लोगों का यहाँ क्या काम है?

म० गुरुकुल— आप नगरवासी लोगों की सेवा के लिए हम उपस्थित हुए हैं।

मि० कालिज— तुम लोगों का यहाँ कुछ काम नहीं है। हमारी सिटी लाइफ़ में तुम क्या कर सकते हो? यह हमारी युनिवर्सिटी है, यह लायब्रेरी, यह टौन हाल, इत्यादि कई इन्स्टिट्यूशन्स हमने खोल रखे हैं, यहाँ जंगली लोगों का क्या काम है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म० गुरुकुल— ठीक है महाशय ; यह तो सब कुछ अच्छा है, पर यह तो बताइए कि आपने जो जो कार्य यहाँ किये हैं, उनसे लोगों की आयु और आरोग्यता बढ़ी है या घटी है ?

मि० कालिज— आयु के साथ हमारा क्या कनेक्शन है ? तुम ऐसे प्रश्न पूछकर हमारा टाइम क्यों खराब करते हो ? गुड फ़ार नथिंग फैलो !

म० गुरुकुल— यदि आयु और आरोग्यता के साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं तो तुम्हारा किसके साथ सम्बन्ध है ?

मि० कालिज -- हमारा सिविलाइज़ेशन के साथ सम्बन्ध है ; लोगों को हम सिटिज़न बनाना चाहते हैं ।

म० गुरुकुल— महाशय जी ! क्षमा कीजिए, शताब्दियों तक पूर्वकाल में मैं यहाँ कार्य करता रहा था और उस समय हमने भी लोगों को नागरिक बनाया था । परन्तु उस समय लोगों की आयु, आरोग्यता, तेजस्विता आदि बातों में ऐसी अवनति न थी । लोग प्रायः पूर्णायुषी होते थे । अनेक शस्त्रों में प्रावीण्य संपादन करते हुए भी आरोग्य-सम्पन्न रहते थे । परन्तु इस तुम्हारी नयी प्रणाली से इन आवश्यक बातों में अवनति दीखती है ।

मि० कालिज— नान्सेन्स, ऐसी बातें करने के लिए मेरे पास टाइम नहीं है, अब मुझे क्लब में जाना है ।

म० गुरुकुल— महाशय जी ! आपका भी तो चेहरा सिकुड़ गया है ! आप थोड़ा सा हमारे साथ भ्रमण करेंगे तो अच्छा होगा । कृपा करके आइए, मेरे साथ इस पहाड़ पर चलिए, वहाँ इसी विषय में बातें करेंगे ।

मि० कालिज— मेरी हैल्थ बहुत वर्षों से बिगड़ी हुई है, देर से डिस्पेप्सिया सता रहा है, परन्तु क्या किया जावे अपनी ड्यूटी तो करनी ही पड़ती है । अब समय होचुका है, आज डा० 'क्विक डैथ' साहिब का फ़िज़िकल कल्चर पर हमारे 'बिग व्हेल क्लब' में लेक्चर होगा, वहाँ मुझे प्रिज़ाइड करना है, इसलिए अब मैं तुम्हारे साथ घूमने नहीं जा सकता ।

म० गुरुकुल— आप अपने स्वास्थ्य की रक्षा करना नहीं जानते तो औरों को वहाँ जाकर आप क्या उपदेश देंगे ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि० कालेज— तुम मेरा इन्सल्ट करते हो, तुम ज्यादा बकवाद करोगे तो इस पुलिस के हवाले तुम को कर दूँगा।

इतनी बातचीत होने पर 'बिग व्हेल क्लब' का चपरासी मोहम्मद खाँ आ पहुंचा और उसने मि० कालिज को सूचना दी कि आज डाक्टर साहिब का लेक्चर नहीं हो सकता, क्योंकि सर्द हवा के कारण उनको जुकाम होगया है।

म० गुरुकुल— महाशय जी! देखिए, आपकी प्रणाली से स्वास्थ्य की यह दुर्दशा हुई है।

मि० कालिज— तो क्या तुम्हारे सिस्टम से ठीक हो सकती है?

म० गुरुकुल— अवश्य ठीक होगी। आपने जो बिगाड़ किया है, उस के सुधार का हम पूरा प्रयत्न करेंगे। परन्तु कृपया यह तो बताइए कि आप अपनी भाषा में 'इन्सल्ट' 'सिस्टम' आदि शब्दों को मिलाकर उसे खिचड़ी भाषा क्यों बनाते हैं? क्या आपकी भाषा में इनके लिए शब्द नहीं हैं?

मि० कालिज— [कुछ लज्जित होकर] क्या करें भाई! आज कल का यही फैशन समझा जाता है। अच्छा आगे से शुद्ध भाषा बोलने का प्रयत्न करूँगा।

म० गुरुकुल— अच्छा, तो हमारे साथ पहाड़ पर घूमने चलिएगा?

मि० कालिज— चलो, आज तुम्हारे साथ ही घूमने के लिए जावेंगे। परन्तु कमज़ोरी के कारण मैं बहुत दूर तक नहीं जा सकूंगा।

म० गुरुकुल— सुनिए, महाशय जी! शहर की हवा बहुत बिगड़ी हुई होती है, परन्तु वन की हवा शुद्ध और पवित्र होती है। इसलिए मेरा कथन यह है कि सब विद्यार्थियों को न्यून से न्यून २५ वर्ष की आयु तक नगरों से दूर, वन की खुली वायु में रख कर विद्याध्ययन करवाना चाहिए।

मि० कालिज— रहना तो सब लोगों ने शहरों में ही है, फिर विद्यार्थियों को पहले से ही शहरों में क्यों न रखा जावे! इसमें हानि क्या है?

म० गुरुकुल— इसमें बड़ी भारी हानि है। देखिए, २५ वर्ष तक शरीर की वृद्धि का समय है, यदि उस समय गन्दी वायु और बुरे प्रभावों के कारण उसकी वृद्धि में रुकावट पड़ेगी तो जन्मभर के लिए स्वास्थ्य बिगड़ जावेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

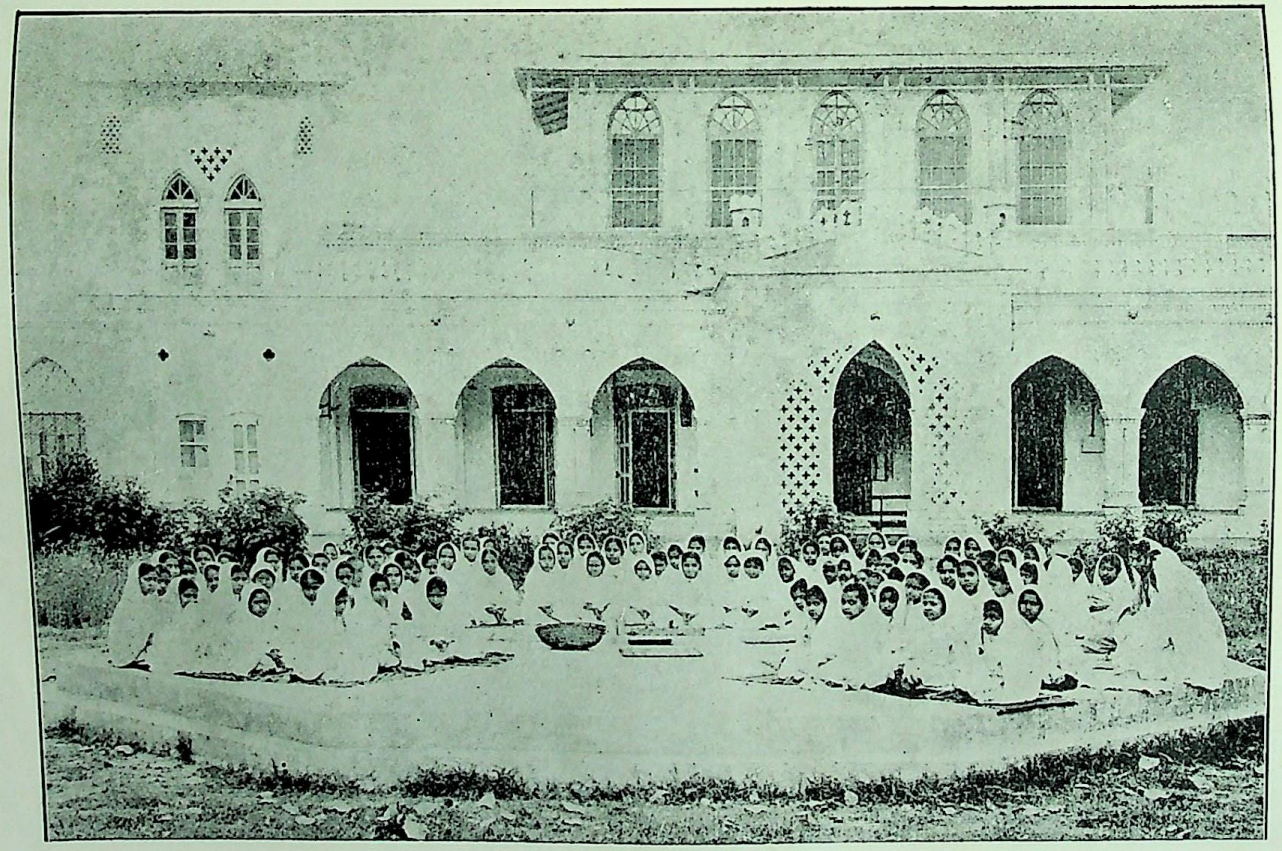

कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की ब्रह्मचारिणियँ ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु यदि पूरी शारीरिक उन्नति के पीछे विद्यार्थी शहर में रहेंगे तो कोई बड़ी हानि न होगी।

मि० कालिज— इस प्रकार तो माता पिताओं से लड़के दूर हो जावेंगे?

म० गुरुकुल— अवश्य होंगे, और अवश्य होने चाहियें। आठ वर्ष की आयु तक लड़के माता पिता के पास रहें, तत्पश्चात् वे राष्ट्र के अतिथि बनाए जावेंगे। पच्चीस वर्ष तक विद्यार्थियों की रक्षा करना, उनके माता पिता का काम नहीं प्रत्युत राष्ट्र का कर्तव्य है।

मि० कालिज— आप क्या बोल रहे हैं, हमारे ध्यान में नहीं आता। विद्यार्थी लोग राष्ट्र के अतिथि कैसे हो सकते हैं?

म० गुरुकुल— महाशय जी! ध्यान दीजिए। हमने तो आयुष्य के चार भाग किए हैं। मनुष्य की आयु १०० वर्षों से १२० तक.....

मि० कालिज— महात्मा जी! आप कब की बात करते हैं? इस समय तो ४० वर्ष तक ज़िन्दा रहना भी कठिन होता है।

म० गुरुकुल— यह मैं जानता हूं। हमारी प्राचीन व्यवस्था टूट जाने से ही तो आयु, शक्ति और तेजस्विता घटने लगी है। यदि हमारी प्रणाली पुनः चलेगी तो बराबर मनुष्य पूर्ण आयु वाले होंगे। अस्तु 'शतायुर्वै पुरुषः' यह साधारण मान है। चार विभाग करके पहले विभाग में ब्रह्मचर्य, दूसरे विभाग में गृहस्थ, तीसरे में वानप्रस्थ और चौथे में सन्यास—ये चार आश्रम निश्चित किए गये हैं। गृहस्थाश्रमी लोग ही नागरिक होते हैं। ब्रह्मचारी लोग वन में रह कर विद्याध्ययन करते हैं। वानप्रस्थी लोग वन में रह कर ब्रह्मचारियों को पढ़ाते हैं। इन दोनों आश्रमवासियों की पालना राष्ट्र का काम है। ये लोग राष्ट्र के अतिथि हैं। अब रहा सन्यासाश्रम, सन्यासी लोग सब राष्ट्रों के साथ एकसा संबन्ध रखते हैं। निष्पक्षपात होकर सब के हितार्थ उपदेश करना इनका काम है।

मि० कालिज— महाराज आप तो ख़याली दुनियाँ में सञ्चार कर रहे हैं। क्या कभी ऐसी व्यवस्था हो सकती है?

म० गुरुकुल— प्राचीन काल में आर्यावर्त में ऐसी ही व्यवस्था थी, और आप सब लोग ध्यान देंगे तो आगे भी हो सकती है। बचपन से बुढ़ापे तक शहरों में रहने से शरीर मन बुद्धि, तीनों का विकाश नहीं होता। इसके लिए आप अपना ही उदाहरण देखिए, आपका स्वास्थ्य खराब होने का यही कारण है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि० कालेज— जो आप कहते हैं, वह सब प्रतीत तो ठीक ही होता है। आज एक दिन शुद्ध वायु का सेवन करने से मुझे उत्साह विदित हो रहा है।

म० गुरुकुल— ऐसी शुद्ध वायु यदि विद्यार्थियों को सर्वदा मिले तो अवश्य उनका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा। आरोग्य ठीक रहने से विद्या भी बहुत प्राप्त हो सकती है।

मि० कालेज— गुरुजी! जो आप कहते हैं, वह सब ठीक है, मैं आज से आपका सहायक बनता हूं।

म० गुरुकुल— जो हमारा उद्देश्य है, वह आपका भी है। विद्या के प्रचार करने में हम दोनों सहमत हैं, यदि आप अपनी सब शक्ति इस ओर लगावें तो देखिए थोड़े ही काल में आरोग्यता, विद्वत्ता, तेजस्विता और सदाचार आदि गुणों का साम्राज्य सर्वत्र हो जावेगा।

मि० कालेज— मैं आज से आपका अनुगामी बनता हूं और मैं अपना तन मन धन, सब कुछ गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के प्रसार में लगा दूंगा।

इतनी बात चीत होने पर दोनों आनन्द से "सहनावतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषाव है" यह मंत्र गाने लगे। आशा है सब पाठकगण ऐसा ही निश्चय करके अपनी सन्तति को गुरुकुल में भेजेंगे।

मेरा स्वर्ग

(१)

चलो यहां से चलें वहां हम जहां क्लेश का हो न उड़ान।
पूरण सुख ही फैल रहा हो, रहता मधुर जहां मुस्क्यान॥

(२)

झूम रहीं हों जहां लतायें खिलीं बसन्तीं कलियाँ जान।
भौंरों की मीठी रागिनियां उठें प्रेम का करती गान॥
करती हो निज नवल चमेली फूलों भरी मधुर आह्वान।
हो वसन्त ऋतु छाई जिस में आठों पहर महीनों जान॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंशुक फूले हुए जहाँ हों, सीमल के हों पेड़ महान।
कोयल जिस के वन में छिप कर बैठी मधुर मधुर ले तान ॥ चलो०

(३)

मलयाचल की पवन चले जहँ शीतल कोमल सौरभवान।
यज्ञ धूम से हुआ सुगन्धित जिसका हो सारा उद्यान ॥
मृग-शावक रोमन्थ कर रहे जहां करें निर्भय विश्राम।
पक्षी वृन्द जहाँ प्रमुदित हो मान करें जगदीश्वर नाम ॥
विस्तृत हों मैदान घास के गौएँ चरती हों बलवान।
टपक रहा हो दूध थनों से बछड़े करते हों तब पान ॥ चलो०

(४)

"मोहन" चलो उसी उपवन में रहने दो पीछे का ध्यान।
जहाँ उठें तूफान अनोखे आंधी दे जीवन का दान ॥
सामगान हो नित्य सबेरे कोकिल-कुल हों देते तान।
छोटे छोटे बालक बैठे करें जहां पर प्रभु का ध्यान ॥
जहाँ मिलें उपदेश धर्म के जीवन का नित हो कल्याण।
विषयवासना छूटें सारी हों शरीर से भी बलवान ॥ चलो०

(५)

पापकर्म का ध्यान जहां पर कभी न आता हो सच जान।
आंखों से मधु बरस रहा हो जहां हृदय का हो उत्थान ॥
कहीं कुटी हो बनी और कहिं बने हुए हों भवन महान।
जँह वशिष्ठ और गौतम जैसे ऋषि रहते हों पूरन काम ॥
जहाँ क्षीर की नदियां बहतीं मीठे पकते हों पकवान।
ले चल वहां यहां से मुझ को जल्दी हे मेरे भगवान ॥ चलो०

(६)

जहां रोग का नाम न हो और जहां न भय का हो कुछ भान।
ओत प्रोत हो जहां सरलता, पावें छोटे भी सन्मान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां सङ्ग हो खाना पीना नित्य जहां हो मिल कर गान।
तप हो, व्रत हो, नियमधर्म हो जहाँ सत्य का हो सन्मान॥
जहाँ स्वार्थ का नाम न हो बस सेवा होती हो निष्काम।
पैसा तक भी पास नहीं हो फिर भी हो आनन्द निकाम॥ चलो०

(७)

घण्टे का हो नियत नाद जहँ तो हो जावें पुलकित प्राण।
ऊंच नींच का भेद जहाँ से भाग गया हो लेकर जान॥
हो समानता सब में ऐसी जैसी वन में लक्ष्मण राम।
जहाँ शोक का काम न हो कुछ और न हो धन का शुभ नाम॥
जहाँ वीरपूजा नित होती सच्चे ब्राह्मण का हो मान।
सन्यासी को सीस झुकाते दीखें सारे वृद्ध जवान॥ चलो०

(८)

चोरी, ठगी, विषय-लोलुपता जहाँ न पा सकतीं हों स्थान।
गायत्री का जप करता हो सबका पूरा ही कल्याण॥
कोई ब्रह्म-विचार करें जहँ, कोई नित्य चलावें बान।
कोई कृषक बने हों, सेवा कोई करते हों हर आन॥
गङ्गा की धारा, बस आकर जिसे कराती हो नित स्नान।
जहाँ न दुख का लेश, करें अब हम भी वहीं शीघ्र प्रस्थान॥ चलो०

(९)

मित्रों को भी संग ले चलें, चलें करें सत्वर प्रस्थान।
पुण्य हिमालय ऊपर है जहँ, नीचे है गङ्गा का स्थान॥
रहते जहां जगत के नामी स्वामी "श्रद्धानन्द" महान।
स्वर्गलोक के देव सदा हैं जिनका करते गुणगण गान॥
हे हृदयेश महेश्वर! अब तो दूभर लगता है यह स्थान।
वहां उड़ा कर ले चल, तेरा जो है शान्त मनोहर धाम॥ चलो०

पं० विद्याधर विद्यालंकार 'मोहन'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वानों की दृष्टि में गुरुकुल

ब्रिटिश साम्राज्य के भूतपूर्व प्रधान सचिव रेम्ज़े मैग्डानल्ड - भारतीय शिक्षा में गुरुकुल एक अत्यन्त महत्त्व पूर्ण वस्तु है। १८३५ में लार्ड मैकाले ने भारतीय शिक्षा के सम्बन्ध में अपनी सम्मति लिखी थी। तब से आज तक भारतवर्ष में शिक्षा के लिये जो यत्न किये गये हैं उन में यह विद्यालय सब से अधिक गौरवयुक्त यत्न है। मैकाले की सम्मति के परिणामों से भारतवर्ष में प्रायः सब लोग असन्तुष्ट हैं, किन्तु उस असन्तोष को सिवा गुरुकुल के चलाने वालों के और किसी ने कार्य में परिणत नहीं किया।

* * * *

श्रीयुत लार्ड मेस्टन भूतपूर्व लाट साहिब युक्तप्रान्त--इस आश्चर्यजनक मनोरञ्जक तथा उत्तेजक संस्था को देखने के लिए आना मेरे लिये बड़ा परितोष-दायक सिद्ध हुआ। यहां अपने कर्तव्य-पालन में तत्पर तपस्विओं का एक समुदाय देखने में आता है जो प्राचीन ऋषियों की प्रणाली को वर्तमान वैज्ञानिक रीति के साथ मिला कर वस्तुतः गुजारे मात्र पर काम कर रहे हैं। यहां के विद्यार्थी पुष्ट शरीर आज्ञाकारी, पर सच्चे राजभक्त, कार्यपरायण तथा प्रसन्न हैं, और इनका पालन पोषण अच्छी तरह किया जाता है। एक बात मैंने यहां और भी देखी है। मुझे शोक है कि जहां दौर्भाग्यवश हमारे स्कूलों और कालिजों में तीन के पीछे एक विद्यार्थी के ऐनक लगी होती है, वहां गुरुकुल में २० में एक के एनक लगी है। यह गुरुकुल मेरे लिए आदर्श शिक्षणालय है।

* * * *

कलकत्ता युनीवर्सिटी कमीशन के प्रधान डा० सेडलर महोदय--आपकी संध्या की प्रार्थना इस प्रकार की सार्वभौम है कि उस में बिना किसी परिवर्तन के सब मत और साम्प्रदायों के अनुयायी हार्दिक एकता और धार्मिक भाव से शामिल हो सकते हैं।

मैं समझता हूँ कि जिस शिक्षा-विधि में मातृभाषा को प्रथम और सब से पूज्य स्थान दिया गया है, वहां संभव है कि चित्त का स्वतंत्र विकास होकर मानसिक वृत्तियों तथा भावों पर प्रभुत्व प्राप्त हो और उच्च आकांक्षायों को ओजस्वी शब्दों में प्रकट करने की योग्यता प्राप्त हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत महामंत्री के भूतपूर्व प्राइवेट सैक्रेटरी श्रीयुत किशमहोदय—प्रबन्ध के साधनों की पूर्णता, कार्यकर्ताओं की सरलता और ब्रह्मचारियों की प्रत्यक्ष प्रसन्नता से मुझ पर इतना अधिक प्रभाव डला है कि मैं उसको इन थोड़ी सी पंक्तियों में वर्णन नहीं कर सकता।

* * * *

सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसायटी के प्रधान श्रीयुत श्रीनिवास शास्त्री महोदय—कोई भी हिन्दु ऐसा नहीं हो सकता जिसको गुरुकुल के साथ प्रेम न हो, क्योंकि यह भिन्न २ शिक्षा विषयक हिन्दु-विचारों तथा उद्देश्यों को अपने साथ रखता है, और इसके साथ ही सनातन काल के गुरु तथा शिष्य के पवित्र सम्बन्ध को पुनर्जागृत करता है। मैं देखता हूँ कि ब्रह्मचारियों की सब आदतें सादी हैं। जो सामान ये उपयोग में लाते हैं, वह भी यदि कठोर नहीं तो सादा अवश्य है। मैं समझता हूं कि ब्रह्मचारियों की नित्यप्रति की आदतें सर्वथा नियमित हैं, और वे लगभग कठिन तपस्या के समीप २ पहुँचती हैं। इस प्रकार की अवस्थाओं में शिक्षा का सफल और कृतकृत्य होना आवश्यक ही है।

———*———

ऋषि के जीवन का एक पृष्ठ

(ले०—श्रीयुत् प्रेमचन्द बी० ए०)

यों तो श्री स्वामी श्रद्धानन्द ने देश और समाज के हितों की रक्षा के लिए अपना जीवन ही अर्पित कर दिया था, पर उन में सब से बड़ा गुण जो था वह उन की अपूर्व शालीनता थी। उन्होंने जाति सेवा के लिए जो मार्ग निश्चित किया था उस में अन्य मत वालों से मतभेद होना अनिवार्य था, लेकिन सिद्धान्तों के भेद को उन्होंने कभी अपने सौजन्य पर आधिपत्य न जमाने दिया। यही कारण है कि मुसलिम नेताओं में भी शायद ही कोई ऐसा हो जिस ने मुक्त कंठ से आप की कीर्ति का अनुमोदन न किया हो। हिन्दुओं के क़लम से अब तक आप के गुणानुवाद और शोक में हज़ारों लेख निकल चुके हैं, लेकिन एक सच्चे सहृदय मुसलिम के क़लम से इस विषय में जो लेख निकला है वैसा अब तक किसी हिन्दू ने नहीं लिखा। लेख क्या है एक भक्त की श्रद्धांजलि है, जिसके एक २ शब्द में लेखक के विशुद्ध भाव झलक रहे हैं। यह लेखक दिल्ली निवासी मि० आसफ़ अली, बार-ऐट-ला हैं। आप का लेख इसी महीने के हिन्दुस्तान रिव्यू में छपा है। उस को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ने से ज्ञात होता है कि राष्ट्रवादी मुसलिमों को भी आप से कितना प्रेम था। और उस प्रेम का क्या कारण था? यही कि स्वामी जी की स्वाभाविक मृदुता, सौम्यता और शालीनता कभी उन का साथ नहीं छोड़ती थी। उनका हृदय निष्कपट था, उसमें क्षुद्रता के लिये स्थान ही न था। आप स्वामी जी के सामाजिक और धार्मिक कृत्यों का उल्लेख करने के बाद लिखते हैं—

"सन् १९१८ में जब दिल्ली में पहली वार कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो स्वामी जी स्वागत—कारिणी समिति के उपप्रधान चुने गए थे। मैं भी सहकारी मन्त्री था और मुझे स्वामी जी के साथ काम करने का उस समय बहुत अवसर मिला। आपकी स्नेह-मय उदारता, अपूर्व सज्जनता, नम्रता और निष्कपट मैत्री ने शीघ्र ही मुझे वशीभूत कर लिया। उन की गुरु-जन सुलभ सौम्यता और स्नेह और मेरी ओर से भक्ति और सम्मान के भावों ने हमारे बीच में एक ऐसा प्रगाढ़ सम्बन्ध उत्पन्न कर दिया जो अनेक विषयों पर हम में तात्विक विरोध होने पर भी अन्त समय तक बना रहा।

सन् १९२२ में मियाँवाली जेल में ~~लेखक महोदय की~~ मेरी स्वामी जी से फिर भेंट हुई, जिन की सज़ा के अब थोड़े ही दिन और बाकी रह गए थे। ज्योंही ~~आप को~~ मुझे मालूम हुआ कि स्वामी जी वहां हैं, मैं उन की कोठरी की ओर बेतहाशा दौड़ पड़ा। स्वामी जी ने दोनों बाँहें फैला कर मेरा अभिवादन किया और बड़े स्नेह से मुझे गले लगाकर अपने पास बैठा लिया।"

मियाँवाली जेल में भी स्वामी जी गीता, रामायण या दर्शन पर उपदेश दिया करते थे। क़ैदियों को जिस सत्संग का शुभ अवसर और कहीं न मिल सकता वह इस जेल में हाथ आता। प्रेमियों की एक मण्डली रोज़ जमा हो जाती थी। मौलाना आसफ़ अली ने स्वामी जी से गीता रहस्य माँग कर पढा और जब कभी उन्हें कोई शंका होती स्वामी जी बड़े हर्ष से उसे समाधान कर देते थे। कभी राजनीति पर बात चल पड़ती, कभी दर्शन पर, और कभी फ़ारसी साहित्य पर। स्वामी जी फ़ारसी साहित्य के बड़े अच्छे मर्मज्ञ थे। मौलाना रूम की मसनवी से आप को बहुत प्रेम था।

मौलाना आसफ़अली का स्वास्थ्य उन दिनों कुछ अच्छा न था। शरीर में रक्त की कमी थी। चेहरा पीला पड़ गया था। स्वामी जी को उन की दशा देख कर चिन्ता हुई। वाह! कितना सच्चा वात्सल्य भाव था। खुद जेल में थे, सभी प्रकार के कष्ट सह रहे थे, पर मौलाना आसफ़ अली की यह दशा देख कर आपने उन के लिये एक दूसरी कोठरी चुन दी जिस में धूप और प्रकाश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वच्छन्द रूप से मिल सकता था। उन के आहार के संबंध में भी जेलर से सिफ़ारिश कर दी, जो स्वामी जी का बहुत लिहाज़ करता था। यह सद्व्यवहार था, यह सज्जनता थी, जो परिचितों को भी उन का भक्त बना देती थी।

हम आज उस उपदेश को भूले जा रहे हैं जिस का सजीव उदाहरण ऋषि श्रद्धानन्द का जीवन था। हम आज मुसलमानों को 'बरबर' कहते नहीं थकते। एक व्यक्ति की परिवर्तित मानसिक वृत्ति से उत्तेजित हो कर समस्त जाति को "वहशी" और "बरबर" और न जाने क्या क्या कह रहे हैं। पर उसी वहशी और बरबर जाति का एक व्यक्ति ऋषि का अन्त समय तक चिकित्सक था। उसी वहशी और बरबर जाति के व्यक्तियों से ऋषि की मित्रता थी। अबदुल रशीद जैसे दीवाने किस समाज, किस देश और किस जाति में नहीं हैं या नहीं थे? और अगर हमारे समाचार पत्रों का औद्धत्य इसी भाँति दिन दूना रात चौगुना बढ़ता रहा तो ऐसी दुर्घटनाओं की शंका भी उसी अनुपात से बढ़ती जायगी। विद्वेषात्मक भाषा और भावों का सम्पादन करके आज तक किसी धर्म सम्प्रदाय या जाति ने कीर्ति और यश नहीं पाया है और न कभी पावेगा। किसी धर्म की श्रेष्ठता उस के अनुयाइयों के सदाचार, सेवा और सद्वृत्ति में है, गाली और फक्कड़ बाज़ी में नहीं। ऋषियों को कलंकित करने वाले, निष्ठाहीन, उत्तरदायित्व हीन, विवेकहीन युवकों को जब हम धर्म के नाम पर लट्ठ लिए देखते हैं तो यही कहना पड़ता है कि भगवन्, इस धर्म की लाज अब तुम्हारे हाथ है, अब तुम्हीं इसकी रक्षा करना। हम में खुद क्या क्या कमजोरियां हैं जिन के कारण हमारी यह दुर्गति हो रही है पहले उनका सुधार कीजिए। मुस्लिम इतिहास की जाँच परताल और मुसलिम महात्माओं की जीवन चर्या लिखने के लिए जो क्षमता, जो सहनशीलता, जो निर्पेक्षता चाहिए वह बड़े स्वाध्याय, मनन और बड़े सौहार्द्र्य से प्राप्त होती है।

गुरुकुल द्वारा उत्पन्न साहित्य

साहित्य की उन्नति करना गुरुकुल के उद्देश्यों में से एक है। इस अंग की पूर्ति के लिये भी गुरुकुल की ओर से प्रयत्न हुवा है। अब तक यहां से बहुत सा साहित्य प्रकाशित हो चुका है। पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित करने की तरफ भी गुरुकुल तथा उसके स्नातकों ने ध्यान दिया है। अब तक जो पुस्तकें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हुई हैं, या शीघ्र होने वाली हैं, उनको संक्षेप से वर्णन करना उपयोगी होगा।

गुरुकुल से संस्कृत व्याकरण और साहित्य विषयक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। संस्कृत का प्रायःसारा ही कोर्स गुरुकुल से निकल चुका है। प्रारम्भिक श्रेणियों में पढ़ाई जाने वाली संस्कृत प्रवेशिका, संस्कृत पाठावलि, बालनीति कथा माला, संस्कृतांकुर, काव्यलतिका आदि पुस्तकों के सिवाय उच्च संस्कृत पुस्तकें भी गुरुकुल से प्रकाशित हुई हैं। प्राचीन संस्कृत साहित्य में शृङ्गार रस प्रधान है। इस लिये उसे निःसङ्कोच रूप से विद्यार्थियों के हाथ में नहीं दिया जा सकता था, इस कमी को पूरा करने के लिये गुरुकुल ने विशेष रूप से प्रयत्न किया है। इसी उद्देश्य को सन्मुख रख कर हितोपदेश, पञ्चतन्त्र, रघुवंश, साहित्यदर्पण आदि पुस्तकों के संसोधित संस्करण गुरुकुल ने छपाये हैं। साथ ही महाविद्यालय विभाग में पढ़ाने के लिये 'साहित्यसुधा संग्रह' तीन भाग (बिन्दु) गुरुकुल प्रकाशित कर चुका है और शेष चौथा भाग भी छपने वाला है। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित व्याकरण की शिक्षा पद्धति को ध्यान में रख कर गुरुकुल ने अष्टाध्यायी का एक बहुत ऊँची कोटि का भाष्य प्रकाशित किया है, और एक सरल अष्टाध्यायी, महाभाष्य लिखवाया जारहा है, जो शीघ्र ही मुद्रणालय में दे दिया जावेगा। इन के सिवाय अष्टाध्यायी, महाभाष्य, मनुस्मृति, महाभारत आदि के भी गुरुकुल ने संस्करण निकाले हैं।

गुरुकुल से इतिहास, विज्ञान आदि के भी बहुत से ग्रन्थ प्रकाशित हुवे हैं। वाह्य यूनिवर्सिटियों के एफ. ए. स्टेण्डर्ड तक का उत्तम कोर्स गुरुकुल से निकल चुका है। मा० गोवर्धन जी तथा पं० महानुनि जी विद्यालंकार ने विद्यालय विभाग के लिये भौतिकी तथा रसायन शास्त्र पर ग्रन्थ लिखे हैं। और यहां के भूत पूर्व उपाध्याय प्रो० महेशचरण सिंह की 'हिन्दी केमिष्ट्री' विद्यालय विभाग के लिये विज्ञान का उत्तम ग्रन्थ है। प्रो० रामशरणदास-सक्सेना ने महाविद्यालय विभाग की दो कक्षाओं के लिये गुणात्मकविश्लेषण पर उच्चकोटि का ग्रन्थ लिखा है। यह ग्रन्थ छप चुका है। यद्यपि इन ग्रन्थों की अभी हिन्दी जगत में बिक्री बहुत कम है फिर भी प्रभूत व्यय कर के वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित करने में गुरुकुल विशेष रूप से उद्योग कर रहा है।

आचार्य रामदेव जी ने भारत के प्राचीन इतिहास पर दो प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं। हिन्दी साहित्य में इनकी बहुत कदर हुई है। पहले भाग की सात हजार प्रतियां बिक चुकी हैं और दूसरे भाग के पहले संस्करण में ३ हजार प्रतियां छपाई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई हैं। आचार्य रामदेव जी ने पुराणों का विशेष रूप से अनुशीलन कर के 'पुराणमत पर्यालोचन' नाम का एक अन्य ग्रन्थ भी लिखा है। गुरुकुल के भूतभूर्व उपाध्याय डा० बालकृष्ण जी ने भारतीय इतिहास पर दो पुस्तकें लिखी हैं, जो अनेक शिक्षणालयों में पाठ्यपुस्तक के रूप में रखी गई हैं। उन्हों ने अर्थशास्त्र, शासन व्यवस्था आदि विषयों पर भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं। गुरुकुल के भूतपूर्व उपाध्याय प्रो० साठे ने विकासवाद पर एक प्रामाणिक ग्रन्थ लिखा है जो कि गुरुकुल की तरफ से प्रकाशित किया गया है। इसी तरह प्रो० सुधाकर जी ने 'मनोविज्ञान' महत्व पूर्ण ग्रन्थ लिखा है, जिस पर कि उन्हें मङ्गला प्रसाद पारितोषक मिल चुका है।

वैदिक साहित्य के अनुसन्धान के लिये भी गुरुकुल से बहुत उद्योग हुवा है। यहां के उपाध्याय प्रो० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार ने निरुक्त का वेदार्थ दीपक भाष्य दो भागों में प्रकाशित किया है। यह भाष्य बहुत विद्वत्ता पूर्ण और प्रमाणिक है। इसी तरह उपाध्याय विश्वनाथ जी ने 'अथर्ववेद का स्वाध्याय' 'वैदिक जीवन' आदि अनेक प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे हैं। आर्यसमाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं०शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ गुरुकुल में बहुत समय तक अध्यापक रह चुके हैं और उनकी अनेक पुस्तकें गुरुकुल से ही प्रकाशित हुई हैं। इसी तरह पं० श्रीपाद दामोदर जी सातवलेकर का गुरुकुल से घनिष्ठ सम्बन्ध है और उनकी बहुत सी पुस्तकें गुरुकुल से ही प्रकाशित हुई हैं।

गुरुकुल के स्नातकों ने हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये बहुत कार्य किया है। प्रत्येक चार स्नातकों में से एक ग्रन्थ लेखक है। बहुत से लेखकों के ग्रन्थ अभी मुद्रित व प्रकाशित न हुवे हैं। यदि अप्रकाशित ग्रन्थों को भी ध्यान में रखा जावे, तो प्रत्येक तीन स्नातकों में से एक ग्रन्थ कार है। हम कुछ स्नातकों द्वारा लिखी प्रसिद्ध पुस्तकों की सूचि यहां पर देना पर्याप्त समझते हैं—

पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति—

१. नैपोलियन बोनापार्ट
२. प्रिंस बिस्माक
३. महावीर गेरीवाल्डी
४. स्वर्ण देश का उद्धार (नाटक)
५. आर्यसमाज का इतिहास

प्रो. डा० प्राणनाथ जी विद्यालंकार

१. राजनीति शास्त्र
२. राष्ट्रीय आय व्यय शास्त्र
३. शासन पद्धति
४. इङ्गलैण्ड का इतिहास (दो भाग)
५. भारतीय अर्थशास्त्र
६. कौटिल्य अर्थशास्त्र

प्रो० विश्वनाथ जी विद्यालङ्कार

१. वैदिक जीवन
२. अथर्ववेद का स्वाध्याय
३. यज्ञों में पशुहिंसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार

१. वेदार्थदीपक निरुक्त भाष्य (दो भाग)
२. वेदार्थ करने की विधि
३. महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत
४. वैदिक स्वराज्य
५. जिनचरित

पं० नन्दकिशोर जी विद्यालङ्कार

१. पुनर्जन्म
२. वैदिक विवाह का आदर्श

प्रो० जयचन्द्र विद्यालङ्कार

१. जातीय शिक्षा
२. भारतीय इतिहास का भौगोलिक आधार
३. मण्डलीक काव्य

पं० जयदेव विद्यालङ्कार

१. चिकित्साकालिका (अनुदित)
२. भैषज्यरत्नावली (टीका)
३. चक्रदत्त

पं० आत्मदेव विद्यालङ्कार

१. स्वस्थवृत्त

पं० जयदेव शर्मा विद्यालङ्कार

१. पुराणमत पर्यालोचन
२. धनुर्वेद

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

I. How to Learn Hindi
2. Confidential Talks to Young-men—ब्रह्मचर्य'।

प्रो० धर्मदत्त विद्यालंकार

१. प्राचीन भारत में स्वराज्य
२. सन्ध्या संगीत
३. गीता

पं० धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार

१. तुलनात्मक धर्म विचार
२. वैदिक कर्तव्य शास्त्र
३. वैदिक समाज शास्त्र

पं० सत्यदेव विद्यालङ्कार

दयानन्द दर्शन

पं० भीमसेन विद्यालङ्कार

वीरमराठे

पं० सोमदत्त विद्यालङ्कार

रूस का पुनर्जन्म

प्रो० वागीश्वर विद्यालङ्कार

साहित्य सुधा संग्रह (चार भाग)

पं० विद्याधर विद्यालङ्कार

पवित्र पापी

पं० अत्रिदेव विद्यालङ्कार

न्याटावैद्यक

पं० महामुनि विद्यालङ्कार

दयानन्द जीवन का मनन

पं० वंशीधर जी विद्यालंकार

'मेरे फूल'

इनके सिवाय भी बहुत से स्नातकों द्वारा लिखे हुवे ग्रन्थ हैं, जो प्रकाशित से चुके हैं। बहुत से ग्रन्थ मुद्रित हो रहे हैं, बहुत से अभी लिखे ही पड़े हैं। इस विवरण से स्नातकों द्वारा किये हुवे साहित्यिक कार्य का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

स्नातकों ने बहुत से पत्रों का सम्पादन भी किया है। दैनिक विजय, दैनिक अर्जुन, प्रणवीर, सत्यवादी, मारवाड़ी, राजस्थान केसरी, प्रभात, आर्य, आर्यकुमार, आदित्य, सद्धर्म प्रचारक, दयानन्द प्रकाश, आर्यपत्र, आर्यजीवन आदि पत्रों का सम्पादन स्नातकों द्वारा होता रहा है। अन्य भी अनेक पत्रों का सम्पादन स्नातकों द्वारा होता रहा है। अन्य भी अनेक पत्रों के सम्पादकीय विभाग में स्नातक कार्य कर रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

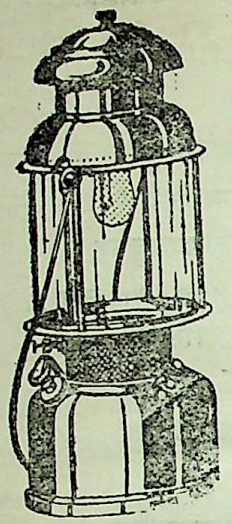

रोशनी

का

भण्डार

हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई

अपने समाज, सभा, सोसायटी, क्लब, व्यायामशाला तथा गृह को, अमरीका की बनी हुई निहायत उम्दा तथा मशहूर स्टौर्म किंग लैन्टर्न से सुशोभित कीजिए। यह लैन्टर्न अपनी चकाचौंध रोशनी के द्वारा रात को दिन कर देती है। उत्सवों की शोभा इस लैन्टर्न से दुगनी हो जाती। विवाह तथा त्यौहार आदि की खुशी के अवसर पर यह लालटेन घर की शोभा देने वाली उत्तम वस्तु है। इस लैन्टर्न से धुआँ नहीं होता। आँधी तूफ़ान तथा वर्षा में यह बुझ नहीं सकती।

इस में केरोसीन आयल या पैट्रौल इस्तेमाल किया जाता है।

(१) एक मेन्टल वाली ३५० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३०)

(२) दो मैन्टल वाली ४८० कैण्डल पावर की स्टोर्म किंग लैन्टर्न की कीमत ३५)

(३) एक मैन्टनल वाली ३०० कैण्डल पावर की हैसेग लैन्टर्न जर्मनी की बनी हुई की० २५)

इन लालटैनों का वजन लगभग दो सेर, ऊँचाई १३ इंच, तथा चिमनी अबरक की होती है। डाक द्वारा मंगाने से एक लालटैन पर पोस्टेज खर्च अलग।

मैन्टल:—

एक मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिए मैन्टल ३।।।) फ़ी दर्ज़न, दो मैन्टल वाली लैन्टर्न के लिये मैन्टल कीमत ३) फ़ी दर्ज़न प्राइमस स्टोव नं० १०० कीमत ९) डाक व्यय पृथक्

मिलने का पता— रविवर्मा स्टोल वर्कस अम्बाला छावनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

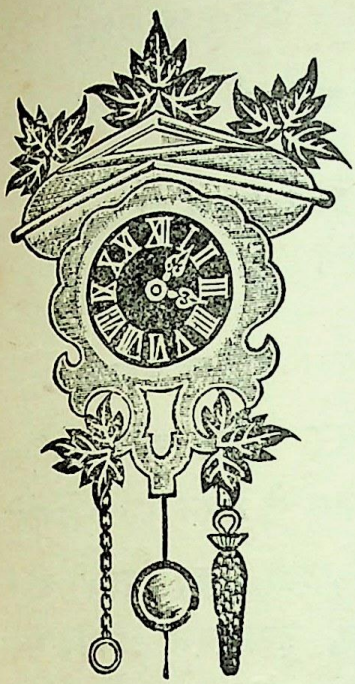

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेजदो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

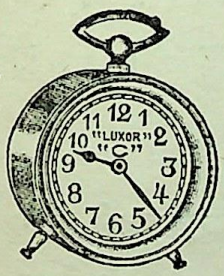

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिए है। जल्दी मंगवायें, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा

जर्मन गवर्नमेंट से रिजस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

सुधासिन्धु

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खासी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

(दाद की दवा)

दद्रुगजकेशरी

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।॥), डाक खर्च ॥) पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए, मुफ्त मिलेगा। यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चश्मा लगाने की आदत भी

छूट सकती है।

आंखें बनवाने तथा चश्मा ख़रीदने के पूर्व गुरुकुल स्नातक फ़ार्मेसीके **भीमसेनी सुरमे** की परीक्षा कर लीजिये। आशा है कि चश्मा ख़रीदने तथा आंखें बनवाने की ज़रूरत ही न रहेगी।

भीमसेनी सुरमे से बहुतों की चश्मा लगाने की आदत छूट गई है और वे बारीक से बारीक अक्षर पढ़ सकते हैं। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई भी ऐसा रोग नहीं जो इस से आराम न हो। पानी बहना, धुन्धला दीखना इत्यादि रोग तो बहुत ही शीघ्र आराम होते हैं। कीमत ५) पाँच रुपया फ़ी तोला।

सुधाधारा—इसके गुणों से तो आप परिचित ही हैं केवल यही याद दिलाना है कि घर में, यात्रा में, एक शीशी पास रहने से अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, जी मिचलाना, छोटे बच्चों के हरे पीले दस्त, पेट तथा सिर दर्द आदि तत्काल रफ़ा होते हैं। जिस से रोगी और उसके सम्बन्धियों का भय दूर होता है। इसे ही क्यों खरीदें? दवा सब से ज्यादा और कीमत वही आठ आने ॥)

जापानी मलहम—बाजार में इस से अच्छा और सस्ता मलहम कोई है ही नहीं।

कठिन से कठिन दाद, गीली सूखी खुजली, अकौंता, सिर का गंज, बिवाई आदि चर्म रोगों की अद्भुत दवा है।

जिनकी धारणा है कि दाद जड़ से जाती ही नहीं, वे इसका व्यवहार करके देखें। कीमत चार आने।)

नोट:—अन्य दवाइयों के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए।

पता—**गुरुकुल स्नातक फार्मेसी देहली नं० १**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय योग्य नई पुस्तकें

वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा

(ले० पं० विश्वनाथ विद्यालंकार, प्रोफेसर वैदिक साहित्य, गुरुकुल कांगड़ी)

लोग प्रायः कहते हैं कि वेद, यज्ञोंमें पशुहिंसा की तथा मांसभक्षण की आज्ञा देते हैं। इस पुस्तक में इसका खण्डन किया गया है और १३ प्रकरणों में यह सिद्ध किया गया है कि मूल वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, गार्ग्यायण ऋषि कृत प्रणववाद, महाभारत, भागवतपुराण, और स्कन्धपुराण आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध ग्रन्थ इस बातमें साक्षी हैं कि वेदोंमें न तो पशुयज्ञों का ही विधान है और न मांसभक्षण का ही। साथ ही गोमेध, अश्वमेध, नरमेध, अजमेध, अविमेध और पशुमेध, इन शब्दोंके रहस्यार्थों पर भी इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। मूल्य ॥) बारह आने मात्र। डाक व्यय पृथक।

वीरमाता का उपदेश

(ले० पं० विश्वनाथ विद्यालंकार, प्रोफेसर वैदिक साहित्य गुरुकुल कांगड़ी)

महाभारत में "विदुला पुत्रानुशासन" नाम से एक वीरता पूर्ण आख्यान मशहूर है। जिस के दैनिक पाठ के लिये पूजनीय मालवीय जी ने कई बार अपने उपदेशों में हिन्दुजाति को आदेश दिया है। उसी वीरतापूर्ण आख्यान का वर्णन इस पुस्तक में बड़ी ओजस्विनी भाषा में किया गया है। भारतीय माताओं आजकल अपने पुत्रोंको कैसा उपदेश दिया करें—इसका इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। माताओं और बहिनों के दैनिक स्वाध्याय की दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गई है। मूल्य ।) चार आना। डाक व्यय पृथक।

पता :—

वैदिक स्वाध्याय मन्दिर

पोस्ट, गुरुकुल कांगड़ी

जि० बिजनौर।

Printed at the Graphic arts Co. 5/1 Kenderdine Lane, Calcutta.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल पुस्तकालय

Registered No A ; 1340

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुख-पत्र]

वैशाख १९८४ अप्रैल १९२७

वर्ष ३] [अङ्क ११

मुख्य सम्पादक

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

विदेश से ६ शि० एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विषय सूची *

विषय	पृष्ठ से
१. मृत्यु पर (कविता) पं० धर्मदत्त जी विद्यालङ्कार	३३५
२. इटली का महापुरुष मुस्सोलिनी—पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार	३३६
३. प्यारे फूल (कविता) —ब्रह्मचारी भद्रजित् 'भद्र'	३४२
४. पारसी धर्म की उत्पत्ति का कारण—प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार	३४३
५. कुलमाता की स्मृति में —प्रियहंस	३११
६. अद्वैत वाद—पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्तालंकार	३५३
७. मौलिकता और अनुकरण—पं० भीमसेन जी विद्यालंकार	३५४
८. सम्पादकीय—रजत-जयन्ती महोत्सव, गांधी जी की अपील,	३५९
९. गुरुकुल-समाचार	३६४

गृहस्थियो ! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो !

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में "कामधेनु" सेवन कराइये

मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़्लूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

पता—भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल-समाचार

स्नातक मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

मृत्यु पर—

दिल में होता है बड़ा अफ़सोस मरने के लिये,
पर ये मरना अस्ल में है फिर से जीने के लिये।
जागते थे जो अभी वो एक दम में सो गये,
पर ये सोये हैं सुबह होते ही जगने के लिये।
ये हवा कैसी चली हा! पत्ता पत्ता गिर गया,
पर ये गिरते हैं नये होकर निकलने के लिये।
एक लहमे में हमारा खेल सारा मिट गया,
पर ये परदा ही गिरा है फिर से उठने के लिये।
घर को सूना छोड़ कर हा! ये किधर को चल दिये,
क्या अजब जाते उधर हों तख़्त पाने के लिए।
जिस से सारा घर था रौशन वह दिया यह बुझ गया,
पर बुझा कुछ वक्त को है फिर से जलने के लिये।
हा! ख़िज़ां ने आके सारा बाग वीरां कर दिया,
पर ये आई फिर इसे गुलज़ार करने के लिये।

—धर्मदत्त विद्यालङ्कार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इटली का महापुरुष मुस्सोलिनी (Mussolini)

उच्च आदर्श की शक्ति

(ले०—श्री पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार)

"मैं इस युग पर अपनी इच्छा-शक्ति से ऐसी मोहर लगा देना चाहता हूं जैसे शेर अपने पंजे से लगाता है" —ये शब्द एक बार इटली के वर्त्तमान शासक मुस्सोलिनी ने अपने मित्र से कहे थे। यह महापुरुष "युग पर ऐसी मोहर" लगाने में सफल हो चुका है क्योंकि आज संसार के राजनीतिक मञ्च का अधिकारी मुस्सोलिनी से बढ़ कर कोई नहीं है। ५ वर्ष पूर्व यह नाम इटली से बाहर बहुत कम विदित था पर आज इस नाम की सौगन्ध ली जाती है। इङ्गलैण्ड के बालडविन, फ्रान्स के ब्रायण्ड, स्पेन के जनरल प्रिमोडी रिविका और यहां तक कि जरमनी के सिरताज हिन्डनबर्ग-इन सब वर्त्तमान समय के शासकों और राजनीतिज्ञों को इस महापुरुष ने एक दम अन्धेरे में फेंक दिया है। इस समय राजनीतिक जगत् सब से अधिक इसी के कार्यों और व्यवहारों को उत्सुकता के साथ निहारता है। इटली में इस समय इन से अधिक अन्य कोई अपने मित्रों के लिए प्रेम और पूजा तथा शत्रुओं के लिए घृणा और क्रोध का पात्र नहीं है। इनके जीवन का अन्त करने के लिये तीन बार प्रयत्न किया जा चुका है और चौथी बार हाल ही में किया गया था। सम्पूर्ण इटली निवासियों ने घातकों के प्रति उस समय जिस घृणा और क्रोध का प्रकाश किया था, वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस देश की जनता के हृदयों पर इस व्यक्ति का कितना गहरा प्रभाव है। इसका क्या कारण है? मुस्सोलिनी के एक अनुयायी ने हाल ही में इसका जीवन चरित्र प्रकाशित किया है जिसकी भूमिका इस राजनीतिज्ञ ने स्वयं लिखी है। ये कहते हैं कि "मेरे जीवन में कोई असाधारण घटना नहीं है, कोई विजयी संग्राम नहीं है, कोई आकर्षक साहसिक कार्य नहीं है। निस्सन्देह मेरा जीवन हल चलों से भरा हुआ है पर वे उत्साह जनक नहीं हैं"। परन्तु जब हम इस जीवन को पढ़ते हैं और इस के घोर परिश्रम, प्रसन्नतामय सहनशक्ति और अन्त में अदम्य उत्साह के साथ सम्पूर्ण आपत्तियों पर विजय के रोमांचकारी वृत्तान्त पढ़ते हैं तब इस महानात्मा के प्रति प्रेम और प्रशंसा के भाव बिना उठे नहीं रहते। तब उसके इन अभिमानोचित शब्दों पर विश्वास करना पड़ता है कि "मेरा यह अनुभव है, दृढ़ विचार है कि यह जीवन मेरा नहीं है पर सब का है। सब से प्रेम और घृणा किये जाने के लिए मैं जनता के जीवन का एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिवार्य भाग हूं जिसने मुझे गहरा प्रभावित किया है।" विश्व के सभी महापुरुषों की तरह मुस्सोलिनी की महानता के पीछे भयंकर कष्ट, दुःख, विपत्ति, तपस्या और घोर संयम का जीवन है जिसके कारण ही वह अपना उद्देश्य पूर्ण करने में समर्थ हो सका है।

कष्टमय प्रारम्भिक जीवन

एक अंग्रेज़ी लेखक के लेखानुसार इटली देश के प्रिडाम्यो नामक गांव में सन् १८८३ में एक लुहार के घर जन्म ले कर मुस्सोलिनी को जीवन के कई प्रकार के ऊंच-नीच में से धैर्य्य और शान्ति के साथ गुजरना पड़ा। "मैं अपने जीवन को ही अपना महाकाव्य बनाऊंगा"—यह वाक्य वह बहुधा कहा करता था और अपनी प्रबल इच्छाशक्ति के कारण वह इस में सफल हुआ। रूसी भाषा में एक कहावत है कि पूर्ण मनुष्य बनने के लिए व्यक्ति को ४ वर्ष किसी सार्वजनिक शिक्षणालय में, एक वर्ष विश्वविद्यालय में और दो वर्ष बन्दीगृह में व्यतीत करने चाहियें और इस सच्चाई को मुस्सोलिनी से अधिक किसी ने अपने जीवन में नहीं घटाया है। अपनी जन्मभूमि के गांव में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके इसने शिक्षक बनने की योग्यता प्राप्त की और "गुआलरिरी" नामक स्थान में अध्यापक नियुक्त हो गया परन्तु एक अवसर पर गेरीबाल्डी के सम्बन्ध में गर्म भाषण देने के कारण इन्हें इस पद से च्युत कर दिया गया। अब यह स्विट्जरलैण्ड में अपनी भाग्य परीक्षा के लिए जाता है और यहीं से मुस्सोलिनी के असीम साहस, परिवर्त्तन, कारावास और कष्टों से परिपूर्ण जीवन का प्रारम्भ होता है जिसने उसके भविष्य को उज्वल बना दिया। एक बार उसके पास खाने के लिए एक पैसा भी न रहा जिसके कारण उसे निर्धनता का तीव्र दुःख अनुभव करने के साथ २ कठोर अपमान और निराहार भी सहना पड़ा। इस समय उस की आयु केवल १८ वर्ष की थी। कई दिन भोजन और काम न मिलने के कारण इस युवक ने नदी में डूब कर आत्महत्या करने का निश्चय किया। रात का समय था। भयंकर शीत पड़ रहा था। मुस्सोलिनी इस पापपूर्ण विचार को पूरा करने के लिए बाहर निकल पड़ा। अभी वह कुछ मार्ग ही चला था कि बीच में ही प्रबल आंधी और मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गई। एक ओर अन्न न मिलने के कारण शरीर में शक्ति का अभाव, दूसरी ओर तन पर वस्त्र का अभाव और फिर तीव्र शीत, आंधी और वर्षा—इन सब घातक अवस्थाओं में उसका कदम आगे न उठ सका और वह एक छापेखाने के कम्पोजीटर के केस के पीछे बेसुध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर गिर पड़ा। इसी मूर्च्छितावस्था में एक सिपाही ने उसे चोर जान कर पकड़ लिया और हवालात में बन्द कर दिया। कारावास का यह उसका पहिला अनुभव था। प्रतिकूल अवस्थाओं में धीरता और साहस धारण करने से मनुष्य की आत्मशक्ति बढ़ती है और इसी लिए इन कष्टों ने मुस्सोलिनो को वीर और साहसी बना दिया। कुछ दिन बाद यह जैनोवा गया और वहां पर घरेलू नौकर होने के साथ २ विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। इस शिक्षाकाल में प्रो० पैरिरो की शिक्षाओं ने उस पर बहुत प्रभाव डाला और उसका "अचिन्तनीय शक्ति" में दृढ़ विश्वास हो गया। सुकरात की तरह मुस्सोलिनी भी किसी ऐसी गुप्तशक्ति पर विश्वास करता था जो उसके जीवन का संचालन करती है। उसने स्वयं एक बार कहा था कि—"मैं पशु के समान हूं। जब कोई घटना आने वाली होती है, मैं एक स्वाभाविक ज्ञान (Instinct) का अनुभव करता हूं जो मुझे चेतावनी देने के साथ २ अनुसरण करने के लिए बाध्य करता है। मेरे कार्यों का निर्णय इसी शक्ति के हाथ में होता है।"

मुस्सोलिनो के जीवन पर जिन विचारकों के आदर्शों ने विशेष प्रभाव डाला वे मेशावली (Machiavelle) निटशे (Nritzsche) और सोरल (Sorel) नामक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों के विचार थे। मैशीवली की प्रिन्स (Prince) नामक पुस्तक को उसने राजनीतिज्ञों के लिए प्रकाशस्तम्भ बताया है। बोलोना की यूनिवर्सिटी ने जब उसे "डाक्टर आव लिटरेचर" की उपाधि से विभूषित करना चाहा तो उसने इसी "प्रिन्स" पर अपना निबन्ध लिखा था। "शब्दों द्वारा राज्य संचालित नहीं होते हैं" (States are not governed by words) मैशीवली के ये शब्द उस तलवार पर लिखे गये थे जो "इमोला" नामक स्थान की जनता ने मुस्सोलिनी को भेंट दी थी। जर्मन विद्वान् निटशे के सिद्धान्तों का इसके विचारों पर जो गहरा छाया पड़ा है वह इसी बात से समझा जा सकता है कि उसकी फैस्सीज़म (Fascism) के मूल सिद्धान्त इसी विद्वान् के विचारों से लिये गये हैं। इस नेता के हृदय पर गहरा प्रभाव डालने वाली दूसरी चीज़ सम्पादन कला है। उसने एक बार कहा था कि "यह सम्पादन कला है जिसने मेरे मन को संगठित किया और मुझे वह शक्ति जानने के लिए दी जिसके ऊपर राजनीति स्थित है।" इसी कला के कारण उसके अन्दर निरन्तर और कठोर परिश्रम करने की शक्ति उत्पन्न हुई। उसी समय उसने अपना सारा ध्यान सम्पादन कला की ओर लगा दिया और क्रान्तिकारी सोशलिस्ट आन्दोलन में भाग लेना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारम्भ कर दिया। १९१९ में उसने "श्रेणी युद्ध" (Class war) नामक पत्र स्थापित किया और सम्पादित करना प्रारम्भ किया जिसका उद्देश्य उस समय की साशलिस्ट पार्टी से विभिन्न था। उसी समय इसे "फोर्ली" नामक स्थान की सोशलिस्ट संघ का मन्त्री बनाया गया। वह प्रति सप्ताह अपने पत्र द्वारा इस पार्टी के उद्देश्यों में मौलिक परिवर्तन करने के लिए तीव्र आन्दोलन किया करता था।

फिर कष्ट दायक कैद

उन्हीं दिनों ट्रिपोली के साथ इटली का युद्ध छिड़ गया। उस समय की सरकार के विरुद्ध जनता में हिंसात्मक भाव फैलाने के अपराध में मुस्सोलिनी को ५ मास का सपरिश्रम कारावास दिया गया। पूर्वार्जित कष्टों के साथ इस कारावास यात्रा ने उसे शहीद बना दिया। दिसम्बर १९१२ में मुस्सोलिनी "अवान्ती" (Avanti) नामक सोशलिस्ट पत्र का सम्पादक नियुक्त किया गया। उसकी लेखनी में ऐसा जादू था कि पत्र की ग्राहक संख्या शीघ्र ही ४० हजार से १ लाख हो गई। परन्तु, अपने दल के अन्य नेताओं के साथ उसका मत भेद प्रतिदिन बढ़ता गया। १९१४ में जब विश्व व्यापी युद्ध प्रारम्भ हुआ, उस समय "मिलान" में समष्टिवादियों की यह विचार करने के लिए एक कान्फ्रेन्स हुई कि इस युद्ध के प्रति उन्हें सर्वथा तटस्थ रहना चाहिये वा सापेक्षक। मुस्सोलिनी को पहिले पक्ष का प्रतिनिधि चुना गया पर जब वह बोलने खड़ा हुआ तब उसे युद्ध के पक्ष में भाषण करते देख सब उपस्थित जनता दांतों तले अंगुली दाबने लगी। भाषण समाप्त कर बैठते ही उस पर चारों ओर से गालियों की बौछाड़ पड़ने लगी। इन अवस्थाओं में, उसे "अवन्ती" पत्र के सम्पादन से पृथक् होने के लिए बाधित होना पड़ा परन्तु इस समय उसे कई अन्य कट्टर अनुयायी मिल गये।

इन्हीं दिनों मुस्सोलिनी ने "पीपलोड" नाम का एक नया पत्र निकाला और अपने साथियों को "फैस्सीज़म" (Fascism) नामक संस्था में संगठित किया। "फैस्सीज़म"—"फैस्सस" नामक शब्द से बना है जिसका अभिप्राय उस दण्ड-समूह से है जो प्राचीन रोमन अपने हाथ में शासन का चिन्ह स्वरूप रखते थे। वाणी और लेखनी के युद्ध के अतिरिक्त मुस्सोलिनी ने तलवार से युद्ध करने की तैय्यारी प्रारम्भ की और अपना जीवन मातृभूमि के चरणों में समर्पि करने का निश्चय किया। उस विश्वव्यापी संग्राम के समय खन्दकों में उसने जिस धीरता और सहनशीलता का परिचय दिया उससे इटली निवासियों में उसके प्रति श्रद्धा और शक्ति के भाव बढ़ गये। जब यह घायल हो कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्पताल में लाया गया तब भी उसने अपने देश-बन्धुओं के नाम वीरता के ऐसे सन्देश भेजे जिनसे उन में नव-जीवन का संचार हो गया। इस महा-युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद जब सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने का अवसर आया उस समय फिर मुस्सोलिनी ने अदम्य साहस और अटूट विश्वास का परिचय यह कहते हुए दिया कि जब तक फ्रान्स राईन नदी की सीमा पर अपनी राजनीतिक चालों को बन्द न करेगा तब तक इटली भी एड्रियाटिक और अल्पाईन के सीमा प्रदेशों में इसी नीति से काम करेगा। २३ मार्च १९१९ में "मिलान" में फैस्सीस्ट की जब पहिली कान्फ्रेन्स हुई तब इस नेता ने इस सिद्धान्त की घोषणा की कि कोई देश इटली के सिर पर अपनी साम्राज्य शक्ति नहीं बढ़ा सकता, इटली को न केवल यूरुप में अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी शक्ति स्थापित करनी होगी और सम्पूर्ण मानव जाति को अपने शक्तिशाली स्वरूप से परिचित करना होगा।

अधिकारारूढ़ होना

इस छोटे से लेख में उन सब ऊंच-नीच, सुख-दुख, आशा-निराशा और जीत—हार से परिपूर्ण दिवसों का वर्णन करना असम्भव है जिनमें इस महापुरुष को गुजरना पड़ा था। परन्तु यह कभी हतोत्साह नहीं हुआ। उषः-काल से पूर्व गहरा अन्धकार होता ही है। जिस समय इटली में इस प्रकार उथल पुथल मची हुई थी, देश घरेलू लड़ाई में मस्त था और एक के बाद दूसरी आने वाली निर्बल सरकारें इन्हें रोकने में असमर्थ हो रही थीं उस समय मुस्सोलिनी ने अपने फैसीस्ट दल को "काली कमीज की सेना" (Army of Black Shirts) के रूप में संगठित किया और १९२२ में शासन की बागडोर अपने हाथ ले ली। ३० अक्टूबर १९२२ के दिन उस ने एक नपुंसक मंत्री मण्डल के हाथ से शासन कार्य प्राप्त किया और उसी समय से कलह-व्यस्त, असंगठित देश में शान्ति, नियंत्रण और संगठन स्थापित करने की "वेगवती कार्य-धारा" में अपने को प्रवाहित कर दिया। उसने संक्षिप्त शब्दों में उद्घोषित कर दिया कि फैस्सीज़म का उद्देश्य "शान्ति, नियंत्रण और राज-शक्ति है, स्वतंत्रता नहीं है।" उसने कहा कि—"यदि स्वतंत्रता का अभिप्राय व्यक्तिगत शान्ति का भंग करना है और जाति की नियमित समगति में विघ्न डालना है, यदि स्वतंत्रता का अभिप्राय धर्म, देश और राज्य के चिन्हों के प्रति तिरस्कार और घृणा प्रकट करना है, तब मैं मुख्यशासक की हैसियत से घोषणा करता हूं कि ऐसी स्वतंत्रता का अस्तित्व कभी नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा।" ये भाव बहुत कठोर हो सकते हैं पर उस समय की इटली की अवस्था में मुस्सोलिनी को ऐसा रूप धारण करने केलिए बाधित करती थी।

मुस्सोलिनी वर्त्तमान समय का सब से मुख्य राजनीतिज्ञ है, इस सचाई से इन्कार नहीं हो सकता है। पिछले दिनों यूरुप यात्रा के समय जब कवि-सम्राट् डा० रवीन्द्रनाथ टागोर इटली गये थे तब उन्होंने इस महापुरुष से भी साक्षात्कार किया था। यद्यपि डा० रवीन्द्र ने फैस्सीज़म के सिद्धान्तों की निन्दा की थी पर मुस्सोलिनी के व्यक्तित्व ने उन पर गहरा प्रभाव डाला था जिसकी उन्होंने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी। यद्यपि हर समय इटली में ऐसा भी एक दल रहा है जो उसके रक्त का प्यासा रहा है पर, निस्सन्देह जनता का बहुमत उसके साथ है। वस्तुतः मुस्सोलिनी उस श्रेणी के महापुरुषों में से है जिन के कथन और आचरण के पीछे गहरी इमान्दारी छिपी होती है, जो जिस बात को सत्य मानते हैं, उसे प्रकाशित करते कभी नहीं चूकते, भले ही वह औरों को कड़वा प्रतीत हो। उसने एक बार घोषित किया था कि "इटली को इस समय स्वतंत्रता की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी चतुर पुरुषों के एकायत्त शासन-अर्थात् ४० से ५० हजार तक संख्या के ऐसे व्यक्तियों की जो घड़ी की तरह नियम से काम करने वाले हों।"

महापुरुष मुस्सोलिनी और उसका दल इन उच्च उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहां तक सफल हुआ है—यह भविष्य की घटनाओं पर अवलम्बित है परन्तु इस में कोई सन्देह नहीं कि यदि वह आज ही मर जावे या इस उच्च पद से गिर जावे तब भी उसे गेरीबाल्डी और कैबूर के समय के बाद से इटली का सब से अधिक शक्तिशाली राजनीतिज्ञ समझा जायेगा।

——:*:——

भारत में प्रति सैंकड़ा उत्पत्ति और मृत्यु की तालिका

	१९१३		१९२१	
	उत्पत्ति	मृत्यु	उत्पत्ति	मृत्यु
भारत	३२ . २	२८ . ७१	३२ . २०	३० . ५९
मद्रास	३२ . २	२१ . ४	२७ . ०	२० . २
बम्बई	३४ . ९६	२६ . ६३	३२ . ५९	२६ . ०
बंगाल	३३ . ७५	२७ . ३८	२८ . ०	३० . १
संयुक्त प्रान्त	४७ . ६७	३४ . ८४	३४ . ३९	३९ . ५७
पञ्जाब	४५ . ४	३० . १९	४१ . ५	३० . १३
उड़ीसा बिहार	४२ . १०	२९ . १४	३४ . ६	३२ . ८०
आसाम	३३ . ०६	२७ . ६६	२९ . ६३	२६ . ४८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारे फूल !

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति

(ब्रह्मचारी भद्रजित्–"भद्र")

प्यारे फूल ! प्यारे फूल !! प्यारे फूल !!!
प्यारे फूल ! न तेरा जीवन जग सक्ता है भूल,
प्यारे फूल !

सुन्दर नयन न तेरे खुल भी पाये उससे पूर्व
खड़ा हुआ था निज काँटों से घेरे हुए बबूल,
प्यारे फूल!

किन्तु हँस पड़े यह कह कर तुम "करते हो क्या भूल,
माता की आशीष न मुझको होने देगी शूल"
प्यारे फूल !

किया तीक्ष्ण रवि ने किरणों को जब तेरे प्रतिकूल
तब भी तुम हँस कर पैंगें भर मुदित रहे थे झूल,
प्यारे फूल !

ऊपर से रवि किरणें पड़तीं अग्नि कणों के तुल्य
चारों ओर घिरे काँटों की सहनी थी उफ़ ! हूल,
प्यारे फूल !

तब अधर्म अन्याय सूर्य हो चला अस्त-मुख द्वार
खिलने लगीं और भी कलियाँ हो तेरे अनुकूल,
प्यारे फूल !

लोट गए तब पैरों पर माता के हे फूल
मातृ-चरण पर अब तुम प्यारे पड़े हुए बन धूल,
प्यारे फूल !

अमर-कीर्ति-सौरभ से सारा व्याप्त हो गया विश्व
तब बलिदान-रक्त से होंगे "रक्तबीज" † से फूल,
प्यारे फूल !

† पौराणिक उपाख्यान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पारसी-धर्म' की उत्पत्ति का कारण

(ले०— प्रोफ़ेसर सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

पाश्चात्य लेखकों का कथन है कि किसी अज्ञात भूत-काल में आर्य-लोग किसी अज्ञात भू-भाग में एकत्र रहा करते थे। अवस्थाओं ने उन्हें वहां से ढकेला, और वे जीवनयात्रा में भिन्न २ जल तथा स्थल के स्थानों में पहुंच गए। आर्यजाति की एक शाखा फ़ारस की तरफ़ बढ़ रही थी, और बहुत दिनों तक उसकी अवांतर शाखाएँ नहीं फूटी थीं। जब इस शाखा के लोग आक्सस और यक्सार्टीज़-नदियों से घिरे हुए प्रांतों और बैक्टीरिया जैसे समुन्नत तथा सुरम्य भू-प्रदेशों में पहुंचे, तो उनमें से कुछ की इच्छा वहाँ बसने की हो गई। वे घूमने-फिरने के जंगली जीवन से तंग आ चुके थे। इन्हीं स्थानों पर रहकर उन्होंने खेती शुरू कर दी, और घर बना कर रहने लगे। धीरे-धीरे इन लोगों के पास सामग्री जुटने लगी। अपने कुछ साथियों को इस प्रकार संपन्न होते देख दूसरे आर्यों के भी हृदय में डाह उत्पन्न हुई। उन्होंने इन पर धावे बोलने शुरू कर दिए। इस झगड़े के कारण उनके दो दल हो गए—एक दल घर-बार बनाकर, एक जगह टिककर, रहने लगा। दूसरा गउएँ-भेड़ें चराता हुआ रात को एक जगह और दिन में दूसरी जगह टिकने लगा। इनमें से जो बैक्टीरिया में बस गए, वे ही वर्तमान पारसी हैं; और जो उनकी संपत्ति पर छापे मारते रहे, वे हम लोग हैं जो पीछे आकर पञ्जाब में बस गए। पारसियों की 'यस्न हप्तन्हैति'-नामक पुस्तक के १२ वें प्रकरण में उनके शुद्धि संस्कार का वर्णन पाया जाता है। उसमें दीक्षित होता हुआ व्यक्ति कहता है—"मैं अब से 'देव-पूजक' नहीं रहा। 'असुर धर्म' के अनुयायियों के घरों को जो लोग लूटते हैं, उन्हें मैं घृणा की दृष्टि से देखता हूं। मैं गौ-बकरियों को खुला छोड़ता हूं; वे स्वतंत्र विचरण करें।" इन वाक्यों से यह परिणाम निकाला जाता है कि अवश्य ही आर्यों में दो दल उत्पन्न हो गए होंगे, जिन में घर-बार बनाकर फ़ारस में बैठ जाने वालों को लूटा जाता होगा। कहते हैं, आर्यों के इस परस्पर कलह का परिणाम यह निकला कि दोनों एक दूसरे के देवतों को गालियाँ देने लगे। दूसरा दल शांतिभंग करने वाले, चरवाहे आर्यों के धार्मिक संस्कारों को भी घृणा की दृष्टि से देखने लगा। संभवतः उस समय यह समझा जाता था कि 'देवधर्म' मानने वाले आर्यों की कृतकार्यता का मुख्य कारण उनका 'इंद्र' देव को 'सोम-रस' पिलाना और मंत्रोच्चारण करना है। इसीलिये फ़ारस में घर बनाकर रह जाने वाले लोगों ने चिढ़ कर अपनी धर्म पुस्तक—'ज़िंदावस्था'—में आर्यों के मुख्य देवता 'इन्द्र' को दैत्यों में गिना, सोम-रस की भरपेट निन्दा की, मंत्रोच्चारण को गर्हित ठहराया। पारसी लोग देवतों की एक नियामक-सभा में विश्वास करते थे, जिसका नाम 'अमेशस्पंत' था। यह भी कल्पना की गई थी कि इनके मुकाबिले में पारसियों के शैतान 'अंगिरामन्यु' ने अपनी एक नियामक-सभा तैयार की है। चूंकि 'देव'-शब्द का आर्यों के यहाँ अच्छा अर्थ था, अतः पारसियों ने 'देव'-शब्द का बुरे अर्थ में प्रयोग करना शुरू किया, और शैतान का नाम 'देवानां देवः' (सब से बड़ा देव) रक्खा। आर्यों के जो बड़े-बड़े देवता थे, उन्हें शैतान (अंगिरामन्यु) की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौंसिल का सदस्य बनाया गया। ये थे इन्द्र, सौर्व (शिव) और नाहत्य (नासत्य)। पारसी धर्म का नाम 'वि-देव-धर्म' (देवतों का विरोधी धर्म) और उनकी धर्म पुस्तक—'ज़िंदावस्था' के मुख्य भाग का नाम 'वेंदीदाद' (वि-देवदत्त—देवतों के विरोध में दी गई) रक्खा गया। पारसी पुस्तकों में नरक का नाम 'द्रुज देमास्' है। उनमें लिखा है कि इस नरक में 'देव-धर्म' के अनुयायी कवि, पुरोहित, ब्राह्मण और ऋषि जाते हैं। विद्वानों का कथन है कि प्राचीन काल में 'कवि'-शब्द का बड़े उत्तम अर्थ में प्रयोग होता था। और, आर्यों में उच्च व्यक्ति के लिये इस शब्द का समान प्रयोग होता था। जब आर्यों में लड़ाई छिड़ गई, तब पारसियों ने 'कवि' का 'कवा' कर लिया, और अपने पूज्य व्यक्तियों को कवि' के नाम से नहीं, 'कवा' के नाम से याद करने लगे। मामला यहीं नहीं समाप्त हुआ। जब 'कवा' का अर्थ पारसियों में पूज्य समझा जानेलगा, तब ब्राह्मणों ने उसी शब्द का प्रयोग बुरे अर्थ में करना शुरू कर दिया। इसीलिये निरुक्त में कवा–कपूयः, निंदितः लिखा है। इंद्र का नाम वेदों में 'कवारी'–कवा को मारनेवाला–रक्खा गया। इसी प्रकार आर्यों में पहले 'असुर'–शब्द का 'जीवन–प्रद' अर्थ में प्रयोग होता था। ऋग्वेद १-२४-१४, ४-२-५, ७-२-३, १-३५-७, ५-४२-११, ५-४१-३, १-१३१-१,५-८३-६ और ३-२९-१४ में सब जगह इन्द्र, अग्नि, सावित्री, द्य आदि देवतों को 'असुर' नाम से स्मरण किया गया है। आर्यों में लड़ाई होने के बाद जब पारसियों ने 'असुर'-शब्द को अपना लिया, अपने धर्म को 'असुर-धर्म'—'अहुर धर्म'—'अहुर्मुज्द' का धर्म–कहने लगे, तब इतर आर्यों ने उस शब्द का बुरे अर्थ में प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार फ़ारस में आर्यों की पारस्परिक लड़ाई के कारण 'देवासुर संग्राम' शब्द की उत्पत्ति हुई। पारसी अपने को 'असुर-धर्म पूजक' या 'देव-धर्म-नाशक' और दूसरे लोग अपने को 'देव-धर्म-पूजक' एवं 'असुर-धर्म-नाशक' कहने लगे। इसीलिये वेदों में कम, परन्तु (आगे चल कर) ब्राह्मण ग्रंथों में अधिकतया देवासुर-संग्राम का वर्णन पाया जाता है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण (१-२३) में इस संग्राम का बड़ा रोचक तथा विस्तृत विवरण दिया गया है। सारांश यह कि पाश्चात्य विद्वानों की सम्मति के अनुसार प्राचीन आर्यों की उस शाखा में, जो अविभक्त रूप से फ़ारस तक पहुंच चुकी थी, कोई भारी कलह उत्पन्न हो गया था, जिसका परिणाम यह निकला कि वे एक दूसरे के देवी-देवतों, रीति-रिवाजों तथा संस्कारों को बुरा-भला कहने लगे। इस कलह का कारण उनमें से कुछ लोगों का घुमक्कड़ जीवन (Pastoral Life) छोड़कर कृषि-जीवन (Agricultural Life) को स्वीकार करना था।

पाश्चात्य लेखकों के इस परिणाम का आधार मुख्यतः विकास वाद का विचार है; क्योंकि विकासवाद सत्य का सार है, यह पहले ही से मानी हुई बात है। चूँकि फ़ारस तथा भारत की तरफ़ बढ़ती हुई आर्यों की शाखा में किसी प्रकार का कलह उत्पन्न हो गया दिखाई देता ही है, और चूँकि पारसियों की धर्म-पुस्तक 'ज़िंदावस्था' में जगह-जगह कृषि के लिये प्रेरणा की गई है, इस लिये यह परिणाम निकाल लिया गया है कि 'इतर आर्य' अवश्य ही पशु चराते फिरते होंगे, कभी-कभी अपने पारसी भाइयों पर छापे मारकर उन्हें लूटा करते होंगे, और इस प्रकार दोनों की लड़ाई शुरू हो गई होगी। हमारी सम्मति में पाश्चात्य विचारकों की यह भूल है। हम यह तो मानते हैं कि इधर पैर बढ़ाती हुई आर्यों की शाखा में किसी समय मतभेद अवश्य उत्पन्न हुआ; परन्तु साथ ही हमारी यह भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ धारणा है कि उसका कारण एक दूसरे की मार काट अथवा लूट खसोट नहीं था। उसका कारण 'प्राचीनआर्यों का कृषि से अनभिज्ञ होते हुए मवेशी चराते रहना' न था। वैदिक साहित्य का जिसने थोड़ा-सा भी अनुशीलन किया है, वह कह सकता है कि यदि वेदों को मनुष्य-कृत भी मान लिया जाय, जैसा मानने के लिये हम तो तैयार नहीं हैं, तो भी उन में वह अवस्था दिखाई ही नहीं देती, जिसे घुमक्कड़-जीवन या Pastoral Life कहा जाता है। अथर्व-वेद का 'कृषि-सूक्त' तो प्रसिद्ध ही है; परन्तु चूँकि पाश्चात्य विद्वान् उसे पीछे का बना हुआ मानते हैं, इसलिये हम उन्हीं के पुराने माने ऋग्वेद में से ही निम्न-मंत्र पाठकों के सम्मुख रखते हैं—

इन्द्रः सीतां निगृहणातु तां पूषानुगच्छतु ;
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्।
शुनं नः फाला विकृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः;
शुन पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्।

(ऋग्वेद ४-५७-७,८)

इन मंत्रों में कृषि का बड़े स्पष्ट शब्दों में वर्णन है। इसी प्रकार १० वें मंडल का १०१ सूक्त भी कृषि-सूचक ही है। किन्तु वेदों में कहीं-कहीं गाय-बकरी-भेड़ का ज़िक्र आ जाने मात्रसे ऋषियों को गाय बकरी चराने वाला नहीं कहा जा सकता। इनका वर्णन तो इस बीसवीं सदी की अच्छी से अच्छी पुस्तक में भी पाया जा सकता है। यह बुरी आदत है कि जहाँ गाय-बकरी का नाम आया, वहाँ झट विकासवाद के गीत अलापने शुरू कर दिए। पाश्चात्य विचारकों को अपनी यह बुरी आदत छोड़ देनी चाहिए। हम तो वैदिक सभ्यता को कृषिमय पाते हैं। वेदों में कृषि का 'विकास हो रहा' नहीं दिखाई देता; प्रत्युत् वह तो 'विकसित अवस्था' में देख पड़ती है। वेदों की-सी उच्च सभ्यता को पारसियों के 'ज़िंदावस्था' की सभ्यता से वही नीचे ठहरा सकता है, जिस में या तो पक्षपात हो अथवा जो वेदों से सर्वथा अनभिज्ञ हो। पाश्चात्य विचारक वैदिक काल की सभ्यता को कृषि से अनभिज्ञ मानने की दुरूह कल्पना इसीलिये करते हैं कि उन्होंने कई मनमाने स्वयं-सिद्ध सिद्धान्त मान रक्खे हैं, जिनके विरुद्ध वे त्रिकाल में भी नहीं जा सकते। उदार-हृदय पाश्चात्य विचारकों की यही सब से बड़ी अनुदारता है।

पश्चिम के विद्वानों का कहना है कि जिन कारणों का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, उन्हीं से आर्यों की परस्पर लड़ाई हुई, और इसलिये चिढ़कर उन्होंने एक दूसरे के देवतों को बुरा कहना शुरू किया। इसीलिये 'असुर' शब्द का अर्थ पारसियों में अच्छा है, और दूसरों में बुरा। परंतु प्रश्न यह उठता है कि जब लड़ाई से पहले दोनों एक ही थे, दोनों के पूज्य देवता, संस्कार आदि भी एक ही थे, तब यह बात कैसे घट सकती है? यदि परस्पर कलह के पूर्व भी उनमें दो दल होते, और उनमें एक 'असुरपूजक' और दूसरा 'देवपूजक' होता, तब तो कलह के अनंतर एक दूसरे के देवतों को बुरा-भला कहने का कुछ मतलब निकल आता है, अन्यथा नहीं। इसके अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि आर्यों के दो भेद होने के पूर्व 'असुर', 'कवा' आदि शब्दों के अच्छे तथा बुरे, दोनों अर्थ वेदों में पाए जाते हैं। यदि यही मान लिया जाय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि परस्पर लड़ाई होने के बाद ही 'असुर' शब्द का पञ्जाब में आकर बसनेवाले आर्यों ने बुरे अर्थों में प्रयोग किया, तो इसका क्या कारण है कि ऋग्वेद के दूसरे मण्डल (२-२३-४) में तो 'असुर'-शब्द बुरे अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, और सातवें मण्डल (७-२-३) में अच्छे अर्थ में? यदि पहले 'असुर'-शब्द का अच्छा अर्थ होता था, और पीछे छेड़-छाड़ के बाद बुरा शुरू हुआ, तो दूसरे मण्डल में उसका बुरा और सातवें में अच्छा अर्थ किया जाना समझ में नहीं आ सकता। एक बात और है। यजुर्वेद से पहले आर्य लोग आपस में लड़ चुके थे, यह पाश्चात्यों का मत है। परन्तु यजुर्वेद में 'गायत्री-आसुरी', 'उष्णिक्-आसुरी', 'पंक्ति-आसुरी' छन्द पाए जाते हैं, और ठीक ऐसे ही छन्द 'ज़िंदावस्था' के 'गाथा'-भाग में भी मिलते हैं। 'गाथा-अहुन्वैति' में 'गायत्री-आसुरी' और 'गाथा-वोहुक्षत्र' में 'उष्णिक्-आसुरी', 'गाथा-उष्टवैति' और 'स्पेंतामन्यु' में 'पंक्ति-आसुरी' छन्द मिलते हैं, और इसी प्रकार के छन्दों का प्रयोग यजुर्वेद में भी पाया जाता है। यदि 'असुर'-शब्द का 'देव-धर्मोपासक' आर्यों में छेड़-छाड़ और लूट-मार के बाद बुरा अर्थ ही चल पड़ा था, तो फिर छन्दों के इन नामों में उसका अच्छे अर्थों में प्रयोग क्यों किया गया?

'कवा'-शब्द पर जो बड़े-बड़े लम्बे-चौड़े सिद्धान्त निकाले गए हैं, वे भी हमें आश्चर्य में डालते हैं। इसमें संदेह नहीं कि 'कवा' का पारसियों में अच्छे तथा इतर-आर्यों में बुरे अर्थ में प्रयोग हुआ है; परन्तु दोनों साहित्यों के परिशीलन से ज्ञात होता है कि यह शब्द इतना प्रचलित नहीं था कि दोनों दलों के आपसी-वैमनस्य को सूचित करे। इसके अतिरिक्त यदि सचमुच आर्य लोगों में ऐसी फूट पड़ गई थी कि वे एक दूसरे की जान और माल पर हमला करने लगे थे, और इसी से एक दूसरे से चिढ़कर पारसियों ने 'कवि'-शब्द का अपभ्रंश 'कवा' बना लिया तथा वैदिक-आर्यों ने 'कवा' के 'कुत्सित' अर्थ करना प्रारम्भ किया, तब तो उनकी सम्पूर्ण देव-माला, संस्कारों तथा अन्य कार्यों में कोई समानता न पाई जानी चाहिए, सब जगह भेद-ही-भेद दृष्टिगोचर होना चाहिए। यह भेद इतना प्रबल होना चाहिए कि जो-जो देवता एक तरफ़ अच्छे माने गए हैं, वे सभी दूसरी तरफ़ बुरे माने जाने चाहिएँ। पूर्णरूप से नहीं, तो पर्याप्त मात्रा में यह नियम घटना चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं है। 'इन्द्र', 'शिव' और 'नासत्यौ' को छोड़कर अन्य किसी देवता का बुरे अर्थ में स्मरण नहीं किया गया; वेद के सब अच्छे देवतों का शिष्ट अर्थों में स्मरण किया गया है। अपने कथन की पुष्टि में हम दोनों धर्मों के समान देवतों का साधारण-सा विवरण यहाँ देते हैं—

(१) मित्र— ज़िन्दावस्था में फ़रिश्तों के लिये 'यजत'-शब्द का प्रयोग हुआ है। वेदों के 'मित्र'-देवता को पारसी-धर्म-पुस्तकों में 'यजत' गिना गया है। वेदों में तो मित्र का वर्णन प्रायः 'वरुण'—जिसे ग्रीक लोग उरेणस (Uranus) कहते हैं—के साथ आया है; परन्तु ज़िन्दावस्था में दोनों देवतों का पृथक्-पृथक् वर्णन है। ज़िन्दावस्था के एक भाग को 'मिहर-यष्ट' कहते हैं। यह 'मिहर-यष्ट' पारसियों के 'मिथ्र'—देवता पर ही लिखा गया है। पारसियों का 'मिथ्र' और वेदों का 'मित्र' एक ही है। दोनों के वर्णनों में भी समानता है। ऋग्वेद ३-५९ की 'मिहिर-यष्ट' के वर्णन से पूरी-पूरी तुलना की जा सकती है। दोनों जगह 'मित्र' सूर्य के लिये प्रयुक्त हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) अर्यमन्—'मित्र' और 'वरुण' के साथ संबद्ध देवता वेदों में 'अर्यमन्' है, जो कि ज़िन्दावस्था में 'ऐर्यमन्' है। दोनों धर्म-पुस्तकों में 'अर्यमन्' के दो अर्थ हैं—स्नेही और विवाहादि का अध्यक्ष प्रधान देवता। पारसियों में उसे जो मुख्यता दी गई है, वह निराधार नहीं है। भगवद्गीता (१०-२९) में भी पितरों में 'अर्यमा' को प्रधानता दी गई है, और "पितॄणां अर्यमा चास्मि" कहा है।

(३) भग—'भग' परमात्मा का नाम है; क्योंकि वह हमारे भाग को, हिस्से को, देनेवाला है। इसीलिये मनुष्य के हिस्से में जो परमात्मा देता है, उसे 'भाग्य' कहते हैं। ज़िन्दावस्था में 'बघ'-शब्द का प्रयोग 'भाग्य' के लिए आया है, और 'भाग्य से नियमित' इस भाव का द्योतन करने के लिये 'बघोबख्त', पद का प्रयोग हुआ है। रशियन, पोलिश आदि स्लैवोनिक भाषाओं में भी 'बोग' (Bog)-शब्द का प्रयोग परमात्मा के लिये ही पाया गया है।

(४) अरमति—वेदों का यह स्त्री-देवता ज़िन्दावस्था में 'अर्मैति' कहलाता है। ज़िन्दावस्था में 'अर्मैति' के दो अर्थ हैं—पृथिवी तथा भक्ति। यही दोनों अर्थ 'अरमतिः' के ऋग्वेद (१०, ९२-४-५; ७, १-६; ७, ३४-२१) में पाए जाते हैं। 'प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्व दस्मे अरमतिर्वसूयुः'—इस मंत्र में 'अरमतिः' का अर्थ पृथिवी तथा भक्ति, दोनों किया जा सकता है।

(५) नाराशंस—'अग्नि', 'पूषन्', 'ब्रह्मणस्पति' (निरुक्त, ८-६) आदि देवतों के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है, ख़ासकर 'अग्नि' के लिये। यह ज़िन्दावस्था का 'नर्योसंह' है, जो 'अहुर्मुज़्द' के दूत का काम करता है। वेदों में 'अग्नि' और 'पूषा' भी दूत ही का काम करते हैं।

(६) वायु—ज़िंदावस्था के 'राम-यष्ट' में 'वायु' उस शक्ति का नाम है, जो सर्वत्र विचरण करती रहती है। यह वेदों का और ज़िन्दावस्था का 'वायु-देवता' एक ही है।

(७) वृत्रहा—'वृत्र' को मारनेवाले 'इन्द्र' के अनेक नामों में यह भी एक नाम है। यह नाम दूसरे नामों की अपेक्षा प्रधान है, और वेदों में अनेक स्थलों में प्रयुक्त हुआ है। 'बहराम-यष्ट' में इसे 'वृत्रघ्न' नाम दिया गया है। हम आश्चर्य से देखते हैं कि जिस 'इंद्र' को पारसियों ने राक्षसों की श्रेणी में गिना, उसी के दूसरे नाम वृत्रघ्न को अच्छे अर्थों में प्रयुक्त कर लिया। डॉ० हॉग की सम्मति में इसका कारण यह है कि 'वृत्रघ्न'-शब्द वेदों में केवल 'इंद्र' के लिये ही नहीं, अपितु 'त्रित' के लिये भी आता है। यह 'त्रित' पारसियों के यहाँ 'थ्रित' रूप से पूजा जाता था। अतः 'वृत्रघ्न'-शब्द का प्रयोग 'इंद्र' को लक्ष्य में रख कर नहीं, किंतु 'थ्रित' को लक्ष्य में रखकर किया गया है। परन्तु इससे कुछ हल नहीं होता; क्योंकि एक ही देवता को दो-तीन नामों से मानने का रिवाज़ पारसियों के यहाँ नहीं पाया जाता, और न एक देवता को दो बार पढ़ लेने से कोई विशेष अभिप्राय दृष्टिगोचर होता है। हमारा मत है कि पारसी लोग अपने समय में प्रचलित वैदिक-धर्म को गिरते हुए और उस समय के मुख्य देवता 'इंद्र' को देव-माला में उच्च स्थान पर चढ़े हुए देखकर जब प्राचीन वैदिक धर्म के पुनः प्रतिष्ठान का प्रयत्न कर रहे थे, तब उन्होंने 'इंद्र' का बहिष्कार तो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया; परन्तु जैसे अन्य देवतों को स्वीकार कर अपनी देव-माला का अंग बना लिया, वैसे 'इंद्र' को भी उसके दूसरे नाम 'वृत्रघ्न' के रूप में अपनाना चाहा।

(८) तेंतीस देवता—अथर्ववेद और ब्राह्मण-ग्रंथों में अनेक स्थलों पर 'त्रयस्त्रिंशद्देवाः' अर्थात् ३३ देवतों का वर्णन पाया जाता है। वे हैं—८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, प्रजापति और वषट्कार। इसी प्रकार ज़िंदावस्था में लिखा है कि 'अहुर्मुज़्द' ने अपने धर्म की स्थापना के लिये 'ज़रथुश्त्र' द्वारा तेंतीस 'रतुओं' की पूजा चलाई। ज़िंदावस्था में इन तेंतीस की गिनती नहीं दी गई। इससे डॉ० हॉग अनुमान करते हैं कि 'तेंतीस' संख्या पहले से पवित्र समझी जाती रही होगी, और ज़रथुश्त्र तथा उसके अनुयायियों ने उसे अपना लिया होगा।

(९) यम राजा—वेदों में 'यम' का पारिवारिक नाम 'वैवस्वत्' अर्थात् 'विवस्वान्' का पुत्र है; ज़िंदावस्था के 'यम-क्षेत्र', का पिता भी 'विवन्वान्हो' है। 'क्षेत' का अर्थ है 'राजा'। 'यिम-क्षेत' का अपभ्रंश आगे चलकर 'जमशेद' हो गया। ज़िन्दावस्था के अनुसार 'यिम' ने पशु-पक्षियों को इकट्ठा किया, और जब बहुत बर्फ़ पड़ी, तब चुने हुए जानवरों को लेकर एक स्थान पर जाकर रहने लगा। ऋग्वेद १०—१४, १, २ के अनुसार 'यम' भी लोगों को इकट्ठा करनेवाला, रास्ता दिखानेवाला, नीची तराई से उँचाई पर ले जानेवाला तथा विश्राम-स्थान का सबसे पूर्व पता लगानेवाला है। वर्तमान् कथानकों में यम को मृत्यु का राजा बना दिया गया है। ज़िन्दावस्था तथा शाहनामे की कथाओं के अनुसार 'यिम' उनके स्वर्णीय युग का शासक था। शब्द-शास्त्र के प्रमाणों द्वारा यह भी दिखाया जा सकता है कि 'नूह' तथा 'मनुः' के जल-प्लावन की कथा एवं 'यिम' की बर्फ़ पड़ने की कथा का आधार एक ही है।

(१०) त्रित, त्रैतन—ज़िंदावस्था के अनुसार 'थ्रित' और 'थ्रैतन' (फ़रदून) 'साम'-परिवार के माने जाते हैं, जो 'अहिर्मान्' की उत्पन्न की हुई सब बीमारियों को दूर करते हैं। अथर्ववेद (६—११३, १) में भी 'त्रित' को रोगों को शांत करनेवाला कहा है। बुराई को भी (ऋक् ८-४७, १३) वही दूर करता है। ज़िंदावस्था में 'थ्रित' को 'साम'-वंश का मानने से यही प्रतीत होता है कि वे भी इसके शांत करने के गुण में विश्वास करते हैं। 'त्रित' का पुत्र 'त्रैतन' है। वेदों में 'त्रित' के लिये 'अप्त्य'-शब्द का भी प्रयोग पाया जाता है। ज़िंदावस्था में 'थ्रैतन' के पिता, 'थ्रित' के लिये 'अथ्त्य' शब्द का प्रयोग मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि ज़िन्दावस्था के 'थ्रित' और 'थ्रैतन' वेदों के 'त्रित' और 'त्रैतन' ही हैं।

(११) काव्य उशना—ऋग्वेद में (४—२६, १) इंद्र अपने को 'अहं कविरुशनाः' कहता है। 'कवि-का' जो हो, उसे 'काव्य' कहेंगे, और वही 'काव्य उशना' कहा जायगा। इसने 'अग्नि' को मनुष्य-जाति का 'होता' नियुक्त किया है—'उशना काव्यस्त्वा निहोतार मसादयत्' (ऋक् ८—२३, १७)। इसने बादलों को जीत लिया है—'आ गाः आजत् उशना काव्यः' (ऋक् १—८३, ५)। ये सारे काम 'इंद्र' के हैं, अतः 'काव्य उशना' भी इंद्र ही का नामांतर है। पहले हम यह देख ही आए हैं कि 'इंद्र' के नाम 'वृत्रघ्न' को पारसियों ने अच्छे अर्थों में प्रयुक्त किया है, और यहाँ फिर देखते हैं कि 'इंद्र' के 'उशना' नाम को भी उन्होंने अच्छे ही अर्थ में रक्खा है, बुरे में नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१२) दानव—वेदों तथा ज़िंदावस्था में 'दानव' शब्द का प्रयोग उन शत्रुओं के लिये आया है, जिनसे युद्ध करना आवश्यक है। ऋग्वेद में तो यह 'इंद्र' के शत्रु 'वृत्र' का नाम है। यदि सचमुच पाश्चात्य विद्वानों का कथन सत्य है, तो पारसियों ने 'इन्द्र' के शत्रु 'दानव' का बुरे अर्थ में प्रयोग क्यों किया? 'इन्द्र' उनके यहाँ बुरा देवता माना जाता है इसका शत्रु तो उनके लिये बहुत अच्छा होना चाहिए था!

(१३) तिषत्र्य और इंद्र—वेदों के कथानक के अनुसार 'इंद्र' तब तक वर्षा नहीं ला सकता, जब तक उसे 'वृहस्पति' की सहायता न मिले। ज़िंदावस्था के अनुसार 'तिष्त्र्य' 'वूरुकाश'-नामक समुद्र से तब तक वृष्टि नहीं ला सकता, जब तक मनुष्यों की प्रार्थनाओं की उसे सहायता न मिले। संभवतः वेदों में वृहस्पति की सहायता का अभिप्राय 'मनुष्यों की प्रार्थना' ही है। इस प्रकार इस कथानक में भी इंद्र के समान ही कार्य करनेवाले एक देवता को, जो इंद्र का ही प्रतिनिधि प्रतीत होता है, ज़िंदावस्था में प्रतिष्ठित माना है।

इन समानताओं को छोड़ कर ज़िन्दावस्था तथा वेदों की भाषा में, छन्दों में, संस्कारों में इतनी समानता है कि यह मानना कठिन हो जाता है कि चूंकि पारसी लोगों के खेतों पर आर्य-लोग छापा मारा करते थे, इसी लिये दोनों धर्म अलग-अलग हो गए। भाषा आदि की समानता पर हम फिर कभी प्रकाश डालेंगे परन्तु जो समानता हमने दर्शाई है, उसे भी देखकर यही मानना पड़ता है कि पारसी-धर्म का उदय गिरते हुए वैदिक धर्म को फिर से अपने आदर्श की तरफ़ लाने के लिये ही हुआ था। श्रीयुत राजेन्द्रलाल मित्र का कथन है कि जिस समय आर्यों में गो-मांस खाया जाने लगा, उस समय उन में दो वृन्द हो गए, और एक वृन्द यह कहने लगा कि 'गो-मेध' का अभिप्राय मांस खाना नहीं, अपितु कृषि करना है। इसलिये उनके ग्रंथों में कृषि पर इतना ज़ोर दिया गया है। इसीलिये 'गाथा अहुन्वैति' में हम पढ़ते हैं कि "गौश उर्वा (Geush urva) के जीवन पर आक्रमण हो रहे थे और वह चिल्ला रही थी और देवतों की सहायता मांग रही थी। 'अहुर्मुज़्द' के सामने जब 'गौश-उर्वा' की शिकायत पेश हुई तो उस ने कहा कि किसानों के लाभ के लिये ही 'गौश-उर्वा' को मारा जा रहा है। देवतों के इस सन्देश को मनुष्यों तक पहुंचाने के लिये ज़रथुश्त्र को चुना गया और उस ने सर्व साधारण को समझाया कि 'गौश-उर्वा' (गौ-उर्वरा) को मारने का अभिप्राय 'कृषि-करना' है।" इसी गाथा में कृषि करने के लिये 'गौश-तशा' (गो-तक्षन्, गौ को तराशना) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका अभिप्राय भी कृषि करना ही है। ऋग्वेद में भी 'निश्चर्मण ऋभवो गामपिंशत सं वत्सेनासृजता मातरं पुनः'—(१. ११०. ८) इस मन्त्र में गौ के मारने से कृषि का ही अभिप्राय है। प्रकरणवश हम यहां पर यह भी कह देना चाहते हैं कि जिस प्रकार पारसी-धर्म में 'गौ को मारने' के अर्थ ज़रथुश्त्र ने 'खेती करना' बतलाये उसी प्रकार आधुनिक काल में ऋषि दयानन्द ने सब से पहले 'गो-मेध' का अर्थ 'कृषि' किया। ऋषि दयानन्द के कथन की पारसी-धर्म से पुष्टि होती है। मित्र महोदय कहते हैं कि 'गो-मेध' के यथार्थ अर्थों को बतलाते हुए कृषि के महत्व पर पारसी-धर्म के प्रवर्तक ज़रथुश्त्र ने ज़ोर दिया। पं० गंगाप्रसाद का कथन है कि चूंकि 'देव'-शब्द का प्रायः बहुवचन में प्रयोग पाया जाता है, और 'असुर' का एक वचन में, इसलिये एक-देवतावाद का पुनः स्थापन तथा बहु-देवतावाद का खण्डन करने के लिये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारसी-धर्म उत्पन्न हुआ, जिसने 'असुर' को परमात्मा और 'देवतों' को राक्षस बना दिया। डॉ० हॉग तथा उन सरीखे अन्य पाश्चात्य विद्वानों का कथन, जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं, यह है कि पारसी आर्यों के एक जगह घर बनाकर बस जाने से इतर-आर्य, जो अभी जगह-जगह फिरते रहते और कृषि से अपरिचित थे, अपने पड़ोसियों पर आक्रमण करने लगे, और इस प्रकार जो कलह उत्पन्न हुआ, उसका परिणाम पारसी-धर्म का उदय है। हमारे विचार में तो इसमें संदेह नहीं कि किसी समय आर्यों में परस्पर कलह अवश्य हुआ, उनमें दो पार्टियाँ भी बनीं; परन्तु उसका कारण वह नहीं, जो डॉ० हॉग बतलाते हैं। उसका कारण था गिरते हुए वैदिक धर्म का पुनरुज्जीवन, एक-देवतावाद की पुनः प्रतिष्ठा तथा गो-मांस-भक्षण का निषेध और समाज का मूलतः सुधार। इस दृष्टि को सन्मुख रखते हुए यह समझ में आ जाता है कि 'देव-धर्म' का इतना खंडन करते हुए भी क्यों 'पारसी-धर्म' ने मूलतः 'देव-धर्म' ही को अपनाया, उन्हीं देवतों को अपना पूज्य माना, उन्हीं संस्कारों को अपने यहाँ भी प्रचलित किया। वैदिक धर्म के इतिहास में यह घटना नवीन नहीं है। जब जब इस पवित्र धर्म का ह्रास हुआ, तब-तब किसी असाधारण प्रतिभाशाली महात्मा का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने पतनोन्मुख धर्म की रक्षा की। जब से आर्य-लोग भारत में रहने लगे, तब से कई बार धर्म-संकट उपस्थित हो चुका, और तत्काल दिव्य-शक्ति-सम्पन्न महात्माओं का प्रादुर्भाव भी हुआ। कृष्ण, बुद्ध, शङ्कर, दयानन्द—सब इसी कोटि की उच्च आत्मा हैं। सम्भवतः भारत में पहुंचने के पूर्व भी वैदिक धर्म अनेक सङ्कटों में से गुज़र चुका था, और उन्हीं में से एक सङ्कट का समय वह था, जब इस धर्म की रक्षा के लिये महात्मा ज़रथुश्त्र का जन्म हुआ। ज़िन्दावस्था के अध्ययन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उस समय वैदिक धर्म के एकेश्वरवाद का पवित्र स्वरूप बहु-देवपूजा से कलङ्कित होने लगा था, यज्ञों में पशुओं की बलि दी जाने लगी थी, और मंत्रों का दुरुपयोग होना प्रारम्भ हो गया था। ज़रथुश्त्र ने इस अधःपतन के विरुद्ध आवाज़ उठाई, पुराने लुप्त धर्म की तरफ़ इशारा किया, उसी को फिर से जीवित करना चाहा। इसके लिये एक 'शुद्धि-संस्कार' भी प्रचलित किया गया। इस संस्कार में यह भी लिखा मिलता है कि ज़रथुश्त्र स्वयं पहले 'देव-पूजक' था। जिस प्रकार उसने स्वयं धर्म के अधःपतन की बातों को छोड़कर प्राचीन धर्म को अपनाया, उसी प्रकार अपने प्रबल प्रचार से सैंकड़ों और हज़ारों को पवित्र वैदिक धर्म की शरण में लाता रहा। यदि खेती करने और डाके डालने ही से झगड़ा खड़ा हुआ था, तो इस 'शुद्धि-संस्कार' का क्या अभिप्राय है? आगे चलकर वैदिक धर्म में नव-जीवन संचार करनेवाला यह संप्रदाय भी, जैसा सदा से चला आया है, जिन बुराइयों को दूर करने के लिये उत्पन्न हुआ था, उन्हीं का शिकार बन गया। परन्तु जब तक ज़रथुश्त्र जीवित रहा, तब तक डॉक्टर के नश्तर की तरह रुग्ण वैदिक धर्म के शरीर-स्थित मल को दूर करता रहा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। यह भी सम्भव है कि इस कार्य में कोई गरम बात हो गई हो, और शब्दों को परस्पर भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाने लगा हो। परन्तु इस मतभेद का वह कारण बिलकुल नहीं, जो पाश्चात्य विचारकों ने बतलाया है। हम समझते हैं, हमने अपने पक्ष की पुष्टि में यथेष्ट युक्तियाँ और प्रमाण दे दिए हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलमाता की स्मृति में-

(श्री० प्रियहंस)

खेल चुकी मेरे शिशु काल की गुलाबी उषा,
तेरी कुंज वीथियों की पुष्पभरी गोद में,
मेरे बाल्यपने का प्रभात भागीरथी-कूल-
धूल में माँ ! तेरे चरणों की बीता मोद में।
अभी तो कुमार-काल पूरा न हुआ था मेरा,
'चण्डी' के प्रपात से लगा था मैं विनोद में,
आगया है संध्याकाल अभी कैसे मात ! मेरा,
डाला मुझे आज कैसे विस्मय औ विरोध में ॥ १ ॥

* * * *

तेरी वन-वीथियों में साथियों के साथ साथ,
कितनी बेर बेरियों से बेर झाड़ खाये हैं,
जेठ के प्रचण्ड ताप लूओं की लपेट में भी,
घोर घाटियों में घूम घूम प्याल लाये हैं।
मन्दाकिनी-कूल वाले मंजुल निकुञ्ज बीच,
'हाथी वाली' जामुनों पै कितनी बार धाये हैं,
स्वर्ग जैसी तेरी सुख-संपदा को याद कर,
तुझ से जुदा होके किसने आँसू न बहाये हैं ॥ २ ॥

* * * *

वर्षा में घटायें घनघोर घिर आतीं जब,
चन्द्रमा सितारे मारे भय के भाग जाते थे,
तेरी कहीं शोभा न बिगड़ जाय यही सोच,
मेघवृन्द आसमाँ से मोती बरसाते थे।
चारों दिशा हरे हरे शाल से सजातीं तुझे,
कानन प्रसून भरी अञ्जली चढ़ाते थे,
रूप धार देवता मयूरों का धरा पै तेरी,
एक चन्द्र छोड़ सौ सौ चन्द्र ले के आते थे ॥ ३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल पत्तियों में वृक्ष वल्लियों में जन्म मिला,
तो मैं तेरी घाटियों की गोद में ही बढ़ूंगा,
फलों में न आम बना चाहूं बन जाऊं बेर,
'बेर खाने वालों' की मैं झोलियों में झड़ूंगा।
'प्याल' होके भले ही पहाड़ पै तपस्या करूँ,
बन्धुओं की जेब बीच प्यार से तो पड़ूंगा,
और न सही तो बन जाऊँ एक गोखरू ही,
चाहूंगा जिसे मैं उसी पैर में जा गड़ूंगा ॥ ४ ॥

* * * *

बर्फ़ जो बना तो मैं हिमाद्रि चोटियों पै चढ़ा,
तेरी शुभ्र शोभा भरी-आँखों से निहारूँगा,
चलूंगा हिमाचल से गंगा में विलीन होके,
तेरे पाद-पङ्कज, मैं प्रेम से पखारूँगा।
स्नान समय साथियों ने छाती से लगाया तो मैं,
अपने जन्म जन्म उन बन्धुओं पै वारूँगा,
अन्यथा चलूंगा भवसागर में मातृभूमि !
तेरा नाम लेके निज देह यह तारूँगा ॥ ५ ॥

* * * *

सूखता है आज मेरे हृदय का अनोखा स्रोत,
कल्पना का आज मेरा टूटता विमान है,
भग्न हुई आज मेरी वीणा की सुरीली तार,
सदा को समाप्त होता मेरा दिव्य गान है।
आज से विलीन मेरे हँसी औ विनोद हुए,
प्रतिभा का आज मेरी होता अवसान है,
होता है विछोह मेरी माता का औ मेरा आज,
कौन मेट सकेगा यह विधि का विधान है ॥ ६ ॥

* * * *

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान्हवी को एक बार सदा को निहार लूँ मैं,
पुण्य गिरिराज वनमाला को प्रणाम है,
बैठ लूँ पवित्र 'खटुए' की आज छाया नीचे,
देवलोक वासी पिता ! तुम्हें लो प्रणाम है।
और कौन बचा ?-मेरे बन्धुओ तुम्हीं हो एक,
तुम्हें तो बसाने को यह मेरा हृदय-धाम है,
दृष्टि निज प्रेम की न पुत्र से हटाना कभी,
अच्छा तो विदा है, मातः ! मेरा ले प्रणाम है ॥ ७ ॥

अद्वैत वाद

(ले०— श्री पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्तालंकार)

(१)

द्रोणाचार्य अपने शिष्यों को धनुर्विद्या की शिक्षा दे चुकने के बाद परीक्षा के लिए उन्हें एक वृक्ष के नीचे ले जाते हैं। वृक्ष पर एक कृत्रिम पक्षी टाँग दिया जाता है। शिष्यों को आदेश दिया जाता है कि इस पक्षी की आँख को बींधना है। सब से प्रथम युधिष्ठिर सामने आता है। जिस समय तीर चलाने को तैयार होता है, आचार्य पूछते हैं— तुम्हें सामने क्या २ नज़र आ रहा है ?

युधिष्ठिर— पक्षी की आँख, पक्षी, वृक्ष, कौरव पाण्डव तथा अन्य सब नज़र आ रहे हैं।

आचार्य द्रोण— परे हो जाओ ! तुम इस योग्य नहीं कि पक्षी की आँख को बींध सको।

इसी प्रकार क्रमशः अन्य शिष्य परीक्षास्थल पर आते हैं, आचार्य सब से पूर्वोक्त प्रश्न करते हैं, पर युधिष्ठिर का सा उत्तर पाकर सबको परे करते जाते हैं। अन्त में अर्जुन को बुलाया जाता है। अर्जुन से भी वही प्रश्न किया गया कि तुम्हें क्या नज़र आता है।

अर्जुन— पक्षी की आँख।

आचार्य द्रोण— कौरव पाण्डव तथा मैं नज़र आ रहे हैं या नहीं ?

अर्जुन— नहीं।

आचार्य द्रोण— जिस वृक्ष पर पक्षी टँगा है उसका कोई अंश तो दीखता होगा ?

अर्जुन— बिलकुल नहीं।

आचार्य द्रोण— पक्षी तो सम्पूर्ण दृष्टि में है ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुन— गुरुजी ! मुझे तो केवल पक्षी की आँख ही दीखती है अन्य कुछ नहीं।

यह उत्तर सुनते ही आचार्य, अर्जुन को तीर छोड़ने की आज्ञा देते हैं। तीर सीधा जाकर पक्षी की आँख को लगता है।

जिस समय मनुष्य पूर्ण ध्यान की अवस्था में एकाग्रचित्त होता है उसे ध्येय या लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ नहीं दीख रहा होता। उसकी दृष्टि में केवल लक्ष्य ही की सत्ता होती है। इसी कारण जिस समय अर्जुन ने तीर छोड़ा उसे पक्षी की आँख के अतिरिक्त कुछ न दीख रहा था।

(२)

भूरुड या ततैया, एक कीड़े को जिसकी आकृति उससे सर्वथा भिन्न होती है लाता है, उसे मिट्टी के एक खोल में बन्द कर देता है। किसी प्रकार का बाह्य प्रभाव उस पर नहीं पड़ने देता। केवल अपना ही प्रभाव उस पर डालता है। परिणामतः कुछ काल बाद उस कीड़े की आकृति, रङ्ग, ढङ्ग सब भूरुड जैसे हो जाते हैं।

प्रारम्भ में, अण्डे में एक जलीय द्रव ही होता है। इसकी कोई विशेष आकृति नहीं होती। जल की तरह जहाँ डालो वैसा ही बन जाता है। पक्षी उसे सेता है। उसे अपने प्रभाव में रख देता है। किसी प्रकार की बाह्य वायु का उस पर असर नहीं होने देता। कुछ काल बाद अण्डा फूटता है। उस में से वही आकृति निकलती है जो उसे से रही थी।

पतिव्रता स्त्री के सामने हर समय पति की आकृति रहती है। वह अपने हृदय पर किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव नहीं पड़ने देती। उसकी सन्तान भी पति की आकृति लिए ही पैदा होती है। अमेरिका में एक श्वेताङ्ग स्त्रीपुरुष के यहाँ सन्तान हबशियों की सी पैदा हुई। कारण का पता लगाया गया। उस स्त्री के शयनागार में एक हबशी का चित्र टँगा था। वह नित्य सोते, उठते उसका ध्यान कर लेती थी। उसके ध्येय का चित्र गर्भ पर पड़ा। सन्तान भी वैसी ही पैदा हुई।

किसी वस्तु को जिस प्रकार की परिस्थितियों में रक्खा जायगा वह वैसी ही हो जायगी। यही सिद्धान्त मानसिक चिकित्सा (Mind Cure Movement) का आधार है। प्रबल मानसिक परिस्थिति से (विचार) रोगी मनुष्य नीरोग हो सकता है, नीरोग रोगी। इसीलिए प्राचीन ऋषि लोग सत्सङ्ग को जीवन का मुख्य अङ्ग समझते थे।

(३)

एक अभ्यासी क्रमशः स्थूल सूक्ष्म वस्तुओं में ध्यान को एकाग्र करने का अभ्यास करता हुआ अन्त में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ष्मतम ब्रह्म को ध्येय बनाता है। अर्जुन के समान अपनी दृष्टि को सब ओर से हटा कर ब्रह्म की ओर ही लगाता है। जब इसमें सफल होजाता है तो उसे ब्रह्म ही ब्रह्म दृष्टि गोचर होता है। संसार से दृष्टि परे करली, अपने से परे करली, केवल ब्रह्म में लगादी। यही इसके ध्यान का लक्ष्य है।

जीव सत् चित् है, ब्रह्म सत् चित् आनन्द है। जिस प्रकार कीड़ा भूण्ड के प्रभाव में बैठ जाता है, अण्डा पक्षी के प्रभाव में होजाता है, ठीक उसी प्रकार यह सत् चित् जीव सच्चिदानन्द ब्रह्म के प्रभाव में बैठ जाता है, उसके ध्यान का वही एकमात्र विषय बन जाता है। वह अपनी दृष्टि सब ओर से हटा कर उसी ओर लगा देता है। आनन्दमय परिस्थितियों में बैठा हुआ यह सत्चित् भी सच्चिदानन्द बन जाता है। चारों ओर प्रकाश तथा आनन्द का वास है, यह भी आनन्द है। अपूर्व साम्य है। वह भी सच्चिदानन्द, यह भी सच्चिदानन्द। आनन्द न था, वह भी मिल गया। अनुभव करता है, "योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि"–मेरे चारों ओर जो दिव्य सच्चिदानन्द पुरुष है मैं भी वही सच्चिदानन्द हूं। "नेहनानास्ति किंचन" यहां तो एक ही आनन्द रस है, इस में नानाभाव नहीं। पहुंचा हुआ गुरु शिष्य को कहता है, तू भी इस ब्रह्म को जान और अनुभव कर "तत्वमसि" तू भी वही सच्चिदानन्द है। "ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्" इस अवस्था में जो सब कुछ "एतन्मय" ही नज़र आता है। अनन्त आनन्द सागर के बीच पड़े को भला आनन्दस्रोत के सिवाय और कुछ नज़र भी क्यों कर आवेगा।

इसी का नाम अद्वैत है। यही पारमार्थिक अवस्था कहाती है।

(४)

नवीन वेदान्ती इस पारमार्थिक अवस्था के आधार पर संसार को मिथ्या कहते हैं। उन के अनुसार क्योंकि इस चरम अवस्था में योगी को ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कुछ दृष्टि गोचर नहीं होता अतः उस 'अतिरिक्त' की सत्ता को मानना भी निर्मूल है। यही मनुष्य की उत्कृष्टतम अवस्था है। इस अवस्था का ज्ञान ही वास्तविक है। अन्य अवास्तविक।

इस में सन्देह नहीं कि यह पारमार्थिक ही उत्कृष्टतम अवस्था है। पर यह क्या है ? विश्लेषण करने से पता लगेगा कि यह ध्यान से बनाई हुई एक अवस्था है। जिस प्रकार अर्जुन ने पक्षी की आंख को बींधने के लिए अपने आपको ऐसी अवस्था में रक्खा कि उसे पक्षी की आंख के सिवाय और कुछ न दीखने पावे, उसी प्रकार एक योगी एकरस आनन्द को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार का अभ्यास करता है कि उसे एकरस आनन्दमय ब्रह्म के सिवाय कुछ दृष्टिगोचर न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस में वह सफल हो जाता है । इस का नाम पारमार्थिक अवस्था है । "इस अवस्था में उसे ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ नहीं नज़र आता अतः यह सब भ्रम है"-यह कहना उतना ही मूल्य रखता है जितना यदि कोई अर्जुन के तात्कालिक अनुभव के आधार पर यह कहे कि उस के पक्षी की आंख को बींधते समय कौरव पाँडव तथा द्रोण सब नष्ट हो गए थे, वृक्ष हां न था, पक्षी न था, केवल उसकी आंख ही थी। मेरा ध्यान किसी पुस्तक के पढ़ने में है, सामने ही बहुत सी घटनाएं होती रहती हैं। मेरे लिए यद्यपि वे न हुई के समान हैं पर उन के होने से इनकार करना मेरी मूर्खता का ही द्योतक है। इसी प्रकार ब्रह्मलीन योगी को यदि संसार नज़र नहीं आता है अतः "यह है ही नहीं" यह कहना भी उसी प्रकार हमारी मूर्खता को बताएगा। योगी के लिए यह संसार न के समान है पर वास्तव में इस की सत्ता नष्ट नहीं हुई। यह सत्य है। इसी भाव को पतञ्जलिमुनि ने योगदर्शन में निम्न शब्दों में रक्खा है— "कृतार्थं प्रति नष्टमप्यनष्टं तदन्य साधारणत्वात्" यद्यपि यह संसार कृतार्थ [पारमार्थिकावस्थापन्न योगी] के लिए नष्ट हो जाता है पर इस की सत्ता वैसी ही बनी रहती है क्योंकि अन्य लोग तो इस का साक्षात्कार कर ही रहे हैं।

मौलिकता और अनुकरण

(ले० पं० भीमसेन जी विद्यालंकार)

मनुष्य-समाज में दो तरह के विचारक पाए जाते हैं। कई विचारकों के विचार मौलिकता पूर्ण होते हैं, कइयों के विचार प्रकट व अप्रकट रूप से दूसरे विचारकों के प्रतिबिम्ब होते हैं। विचारकों की श्रेणी में मौलिक विचार करने वालों को उच्च श्रेणी का विचारक समझा जाता है। बहुत थोड़े विचारक ऐसे दिखाई देते हैं, जो अपने विचारों की मौलिकता या नवीनता को अस्वीकार करने को तय्यार हों। हरेक यही सिद्ध करना चाहता है कि अमुक विचार का मैं ही आविष्कारक हूं। बहुत थोड़े लोग सचाई के साथ यह कहने का साहस करते हैं कि हमने अमुक विचारक का अनुकरण किया है। इन प्रवृत्तियों के आधार पर हम सारे वाङ्मय को दो भागों में विभक्त कर सकते हैं:—

(१) साहित्य का वह भाग जो मौलिकता तथा नवीनता से भरपूर हो,

(२) वह जिस में दूसरे विचारकों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विचारों के अनुकरण में ग्रन्थ लिखे गए हों। दूसरे विचारकों के विचारों को प्रकारान्तर से प्रकट किया गया हो। भाष्य, टीका, टिप्पणियों के लेखक दूसरे वर्ग के लेखों में गिने जाने चाहिये। इन भाष्यकारों, टीकाकारों तथा टिप्पणी लेखकों के परिश्रम का परिणाम यह होता है कि साधारण जनता इनकी उलझन में पड़ कर, मौलिकता तथा नवीनता के साथ विचार करने वाले विचारकों से कोसों दूर चली जाती है। भाष्य, टीका आदि के अनुशीलन का प्रभाव जनता के व्यवहार पर भी पड़ता है। इस प्रकार के विचारों वाली जनता "बाबा वाक्यम्" को प्रबल तर्क समझने लगती है। हम इस विचार को हिन्दू धर्म के इतिहास से स्पष्ट करना चाहते हैं।

आज हम देखते हैं कि जो व्याख्याता हिन्दू जनता पर अपने किन्हीं भी विचारों की छाप अङ्कित करना चाहता है, वह जनता की इस 'प्राचीन बातों को अनुकरण करने की प्रवृत्ति' से फ़ायदा उठा कर यही सिद्ध करना चाहता है, कि प्राचीन समय में भी ऐसा ही होता था।

परन्तु यदि उसी विचारक से आप दूसरे समय में यह कहें कि आपने इस नए आन्दोलन को अमुक विचारक के विचारों के अनुकरण में चलाया है, तो वह इस बात से इनकार करेगा और यह सिद्ध करने की कोशिश करेगा कि मैंने ही इस नए विचार को वर्तमान समय में जन्म दिया है। कहने का अभिप्राय यह है कि हिन्दू जनता की अनुकरण प्रधान प्रवृत्ति का मुख्य कारण भाष्य, टीका तथा टिपणी प्रधान साहित्य ही है। यदि आज हिन्दू जाति के विचारक, इन अनुकरण में में लिखे गए ग्रन्थों की अपेक्षा मौलिक ग्रन्थों के अनुशीलन में अधिक समय दें तो जनता की प्रवृत्ति में भी फ़रक आजायगा, जनता भी हरेक प्रश्न पर नए प्रकाश तथा नई अवस्थाओं के अनुसार विचार करने लगेगी।

ऋषि दयानन्द ने भी जाति के विचारों तथा साधारण जनता के दिमाग़ में से इस मनोवृत्ति को दूर करने के लिये ही, मौलिक आर्य साहित्य पर विशेष बल देना आवश्यक समझा था। उनके इस विशेष आन्दोलन का परिणाम हम स्पष्ट देख रहे हैं। लोगों के अन्दर, प्राचीन आर्ष ग्रन्थों का स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वह व्याख्यान तथा टीका ग्रन्थों की सहायता लेते हैं, परन्तु उनको अन्तिम प्रमाण नहीं मानते। यह प्रवृत्ति आर्य समाज के भविष्य के लिए बड़ी आशा जनक है। परन्तु हमें सावधान रहना चाहिये क्योंकि निर्बल मनुष्य पर कई तरह के अदृश्य प्रभाव काम कर जाते हैं। इस समय इसी तरह का एक अदृश्य प्रभाव आर्यसमाज के विचारकों पर प्रभाव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाल रहा है। यह अदृश्य प्रभाव पश्चिमीय विचारकों का है।

आज कल हम देखते हैं कि आर्य-सामाजिक पत्रों में यह प्रवृत्ति बढ़ रही है कि वह, जहाँ किसी अंग्रेज़ी अख़बार में अंग्रेज़ या युरोपियन विचारक के विचार को थोड़ा बहुत आर्य समाज के विचारों से मिलता जुलता देखते हैं झट बड़ी २ सुरखियां देकर, उस विचार को प्रबल प्रमाण रूप से पेश करते हैं। कई व्याख्याता युरोपियन विद्वानों के उद्धरणों पर ही ज़ोर लगा देते हैं और समझते हैं कि बस इन उद्धरणों के द्वारा हमने जो कुछ सिद्ध करना था वह सिद्ध तथा प्रमाणित होगया है।

अभी तक तो हमें इस प्रवृत्ति का बुरा प्रभाव नहीं दिखाई देता, परन्तु कुछ समय पीछे, यह अवस्था हो जायगी कि साधारण जनता अंग्रेज़ी में लिखे गए या कहे गये किसी भी प्रमाण को अकारण सत्य समझने लगेगी। जिस प्रकार हमारे देश में मध्यकाल में संस्कृत के "किसी भी वाक्य" को वेद प्रमाण या श्रुति वचन समझा जाने लगा था उसी प्रकार अंगरेजी का कोई भी उद्धरण चाहे वह किसी वक्ता का अपना बनाया हुआ क्यों न हो प्रबल प्रमाण समझा जायगा।

अभी तक आर्यसमाज के साधारण से सभासदों के अन्दर, स्वतन्त्र तर्कना शक्ति की झलक दिखाई देती है। यह स्वतन्त्र तर्कना शक्ति मौलिकता तथा नवीनता के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करती है, परन्तु यदि इस स्वतन्त्र तर्कना शक्ति का, अनुकरण-वाद या भक्तिवाद के द्वारा नाश किया गया तो याद रखना चाहिए कि आर्य समाज भी हिन्दुसमाज की अपनी परम्परागत रूढ़ियों तथा मन्त्र व्याख्याओं को अन्तिम लकीर समझने लगेगा और हिन्दु जाति की तरह लकीर का फ़कीर बन जायगा। ऋषि दयानन्द ने हमें स्वतन्त्र तर्कना शक्ति दी है, उन्हों ने हमें इस बात की प्रेरणा की है कि मेरे विचारों तथा व्याख्यानों और भाष्यों को अन्तिम मत समझो। इनकी परख भी स्वतन्त्रतर्कना शक्ति द्वारा करो। इस स्वतन्त्र तर्कना शक्ति को खो कर ही भिन्न २ धर्म वा समाज, सम्प्रदायों का रूप धारण करते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जिस समाज के विचारों में मौलिकता होती है, वह कभी सम्प्रदाय नहीं बनता; जहां अनुकरण करने की प्रवृत्ति मुख्य होती है वहां साम्प्रदायिकता घर कर जायगी। इस लिए समाज के हितचिन्तकों को मौलिकता की तरफ़ पग बढ़ाना चाहिए।

विज्ञापन

बच्चों को सर्दी खांसी से बचाने और मोटा तन्दुरुस्त बनाने के लिये सुख संचारक कंपनी मथुरा का मीठा 'बालसुधा' सब से अच्छा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

रजत-जयन्ती महोत्सव

जिस जयन्ती महोत्सव की चर्चा साल भर समाचार पत्रों में रही वह १६ से २१ मार्च को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पचास हज़ार से कुछ ज़्यादह यात्री भारत के भिन्न भिन्न प्राँतों से देश की जीती-जागती जातीय संस्था की जयन्ती मनाने के लिए आये। देश के गण्य-मान्य नेताओं में से महात्मा गाँधी, पं० मदन मोहन मालवीय, श्रीनिवास आयङ्गर, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, साधुवर वास्वानी, प्रिन्सिपल ध्रुव, सेठ जमनालाल बजाज़, शंकरलाल बैंकर, पीयूष कान्ति घोष, डा० अविनाशचन्द्र दास, डा० मुञ्जे आदि पधारे। प्रायः सभी प्रान्तों के आर्य पण्डित तथा प्रतिष्ठित सन्यासी भी उपस्थित थे। गुरुकुल के इस उत्सव को, जैसी आशा की जाती थी, वैसी ही सफलता हुई। पच्चीस साल तक के गुरुकुल के उत्सवों में यह पहला ही उत्सव था जिस में इस संस्था के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी उपस्थित नहीं थे। प्रत्येक हृदय स्वामीजी के अभाव को प्रतिक्षण अनुभव कर रहा था और इस सम्पूर्ण आनन्द के समारोह में यह निरन्तरवाही वेदना मिली हुई थी। अब तक ३ लाख के लगभग धन आ चुका है और प्रतिदिन कुछ-न-कुछ आ रहा है। आशा है, जो उत्साह आर्य जनता ने स्वामीजी की स्थापित इस संस्था के प्रति दिखलाया है उससे ५ लाख की अपील शीघ्र ही पूरी हो जायगी। उत्सव में, दीक्षान्त संस्कार के समय श्री राजेन्द्र प्रसाद जी, मालवीय जी तथा गाँधी जी के भाषण हुए जिनका संक्षेप नीचे दिया जाता है-

राजेन्द्र बाबू

राजेन्द्र बाबू ने दीक्षान्त-सम्भाषण देते हुए कहा—

"मैं यह नहीं कहता कि पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान को छोड़ दीजिये। पर इस ज्ञान-विज्ञान को लोक-हितकारी बनाना और इसीके अनुकूल मनोवृत्ति रखनी चाहिए। किन्तु जब तक भोग और विलास की प्रवृत्ति उचित सीमा में मर्यादित नहीं होती, जब तक हम यम नियम की कठिन साधना से इन्द्रिय निग्रह नहीं करते, जब तक त्याग और सेवा से आत्मा को पुष्ट नहीं करते, इस ज्ञान-विज्ञान को लोक हितकारी बनाना असम्भव है। हमारे गुरुकुलों और राष्ट्रीय विद्यालयों का यह उद्देश्य होना चाहिए कि आवश्यक ज्ञान-विज्ञान की चर्चा और लेन-देन के साथ साथ, आत्म-निग्रह, त्याग और सेवा की दीक्षा दी जाय।"

राष्ट्रीय विद्यालय की व्याख्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए उन्होंने कहा—

"भारत की कोई भी संस्था भारतीय या राष्ट्रीय कहलाने का हक तभी पा सकती है जब वह अपने विद्यार्थियों को हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत का, जरूरतों का, हीनता और दीनता का, दुःख दारिद्र का अनुभव करावे जो इस दुःख दारिद्र को दूर करने, देश की दुर्बलता को हटाने, बिखरी शक्ति का सञ्चय करने और नवजीवन का मार्ग बतावे; और उस मार्ग पर संकल्प, साहस, दृढ़ता और एकाग्रता के साथ चलने की योग्यता विद्यार्थियों में उत्पन्न करे... सन् १९२१ में हिन्दुस्तान के सैकड़े ९० अदमी गाँवों के रहने वाले थे और १८९१ से १९२१ तक शहर वाले, बस्ती के परिमाण में सैकड़े १ बढ़े हैं। जो यह हिसाब जारी रहा तो हिन्दुस्तानियों को शहराती बन जाने में तीन हज़ार साल चाहिए। इसलिए हमें यह बात माननी ही चाहिए कि गाँव और गाँवों के जीवन को ही आधार मान कर हमें अपनी शिक्षणशैली का निर्माण करना चाहिए।"

आजीविका के सवाल का विचार करते हुए उन्होंने कहा—

"हम जानते हैं कि आज बीस पच्चीस रुपयों की मामूली नौकरी के लिए मैट्रिक्युलेटों और ग्रेजुएटों की सैकड़ों, हज़ारों अर्जियाँ पड़ती हैं। यह दावा तो झूठ है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने से नौकरी मिलनी ही है। सरकारी स्कूलों के, सरकारी शिक्षा पद्धति के बड़े से बड़े, और कट्टर से कट्टर हिमायती से मैं पूछता हूं कि वहाँ के पढ़े हुए सभी विद्यार्थियों को नौकरी मिल ही जाती है, या उनकी रोटी का सवाल टल जाता है क्या? अगर बात ऐसी न हो तो यह क्यों पूछा जाता है कि राष्ट्रीय पाठशालाओं के-गुरुकुलों के-विद्यार्थियों का आगे चलकर क्या होगा? अगर दोनों जगह रोटी का सवाल एक सा ही मुश्किल हो तो फिर किस लिए लोग राष्ट्रीय विद्यालयों को अपनाते नहीं हैं? यहाँ से तो निकल कर विद्यार्थियों को राष्ट्र-सेवा और समाज-सेवा का अवसर मिलेगा, उधर सरकारी विद्यालयों में रहकर तो सरकारी चक्की चलानी है, सरकार को गुलामी का राज्य बनाये रखने में मदद करनी है।"

मालवीय जी का आशीर्वाद

इसके बाद साधु वास्वानी उठे। उन्होंने सभी ओर बैठे हुए श्रोताओं को प्रणाम किया, और प्रणाम करके बैठ गये। इसका भी वैसा ही असर हुआ, जैसा भाषण का होता। इसके बाद पं० मदन मोहन मालवीय जी आशीर्वाद देने को खड़े हुए। पंडित जी की बुलन्द आवाज़ से भला कौन शान्त नहीं होता? सारा कोलाहल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरंत ही शान्त हो गया। यों कह कर कि, गुरुकुल को जीता रखने के लिए सदा तत्पर रहो और स्वामीजी की विरासत को बढ़ाओ, उन्होंने उपस्थित जनता से व्रत-भिक्षा माँगी। यह भिक्षा और कुछ नहीं थी, केवल विदेशी वस्त्र के त्याग, खादी-धारण और जहाँ खादी न मिले, वहाँ स्वदेशी मिल का कपड़ा पहनने का व्रत था। इस सम्बन्ध में उनका भाषण स्मरणीय था।

इसके बाद, पदवी-प्राप्त स्नातकों को पदवियाँ और पारितोषिक वगैरह दिये गये। स्वामीजी के खून के बाद, खूनी को बहादुरी से पकड़ने वाले स्ना० धर्मपाल जी को तीन तगमे मिले। और स्वामीजी को बचाने में अपनी जान जोखम में डालने वाले धर्मसिंह को ५००) रु० का इनाम मिला। पीछे से वह रकम उन्होंने गुरुकुल को अर्पण कर दी।

गान्धी जी का आशीर्वाद

इसके बाद गाँधी जी बोलने को उठे। थोड़ी देर तक तो कुछ भी कोशिश करने पर उनकी आवाज लोगों तक पहुंचती ही नहीं थी। गर्म पानी पिया, तब जाकर आवाज कुछ सुधरी। उन्होंने कहा—

"आज तो मेरे मन में ऐसा प्रतीत होता है कि साधु वास्वानी के जैसे मैं भी प्रणाम करके बैठ जाऊँ। पर यों हर किसी की नकल नहीं कर सकता। अनुकरण भी स्वाभाविक होना चाहिए। इससे मुझे तो जो कहना है, वह कह-ही दूँगा।

"स्वामीजी का देहान्त हुआ ही नहीं है। देहान्त तो तब होगा, जब हम उनकी सच्ची देह को मिटाने का कोशिश करेंगे, अगर्चे कि सच्ची बात तो यह है कि हमारी कोशिश से भी उनकी देह का नाश होने को नहीं है—जब तक यह गुरुकुल कायम है, जब तक एक भी स्नातक गुरुकुल की सेवा करता है, तब तक स्वामीजी जीते हैं। स्वामीजी का शरीर तो किसी दिन गिरने को था ही। पर स्वामी जी का सबसे बड़ा काम गुरुकुल है, उन्होंने अपनी सारी शक्ति इसमें लगादी थी, इसे पैदा करने में उन्होंने अधिक से अधिक तपश्चर्या की थी। तुमने सत्य की प्रतिज्ञा ली है। अगर तुम अपने वचन का पालन करोगे तो किसी की हिम्मत नहीं कि वह गुरुकुल को मिटा देवे।"

"पर गुरुकुल को चिरस्थायी रखने के लिए, उस वीरता, ब्रह्मचर्य और क्षमा की ज़रूरत है, जो हमने उनके जीवन में देखी। वीरता का लक्षण क्षमा, और ब्रह्मचर्य, और वीर्य का संयम है। वीरता और वीर्य की रक्षा से तुम देश और धर्म की पूरी पूरी रक्षा कर सकोगे। मैं जानता हूं कि यह काम मुश्किल है। तुम्हारे यहाँ के बहुत से विद्यार्थियों के पत्र मेरे पास पड़े हुए हैं। कोई मेरी स्तुति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है तो कोई गाली देते हैं। स्तुति तो नाकाम चीज़ है। उसका असर मेरे ऊपर नहीं होता। परन्तु जब विद्यार्थी चिढ़ कर गाली देते हैं तो मुझे चिन्ता होती है क्योंकि क्रोध से वीर्य का नाश होता है। स्वामीजी के सामने मैंने ब्रह्मचर्य की अपनी व्याख्या रक्खी थी और वे मेरे साथ सम्मत थे। किसी स्त्री का मलिन स्पर्श न करने में ही ब्रह्मचर्य नहीं होता। हाँ, ब्रह्मचर्य वहाँ से शुरु ज़रूर होता है। पर क्षमा की पराकाष्ठा ब्रह्मचर्य का लक्षण है। पिछले साल स्वामीजी जब टंकारा से पीछे लौटते समय मुझसे मिलने गये थे तो उन्होंने मुझे कहा कि 'हिंदू धर्म की रक्षा नीति से ही सम्भव है।' अगर तुम वैदिक आचार और विचार की रक्षा करना चाहते हो तो तुम यह बात याद रक्खो कि तुम्हें पग २ पर रुपये मिल जायँगे, मगर ब्रह्मचर्य का, नीति का पाया यहाँ पर न होगा तो तुम्हारा गुरुकुल मिट्टी में मिल जायगा। इस भूमि के तो आत्मा नहीं है। इसकी आत्मा तुम्हीं हो। अगर तुम आत्मबल खो दोगे और 'उदर-निमित्तं बहुकृतवेषः' जैसे बन जाओगे तो तुम्हारी सारी शिक्षा बेकार जायगी।

"मैं आज तुम्हारे आगे चर्खा और खादी की बात करने नहीं आया हूं। तुम्हारा पहला काम ब्रह्मचर्य और वीरता का—क्षमा का है। उसे भूल जाओगे तो स्वामीजी का काम कायम नहीं रहेगा। अब्दुलरशीद की गोली से स्वामी जी का क्या हुआ? वे तो उस गोली ही से अमर हुए।

"स्वामीजी का दूसरा काम अछूतोद्धार था। जिन शब्दों में मालवीय जी ने खादी की वकालत की, मैं नहीं कर सकता। पर इतना ज़रूर कहूंगा कि अगर हम हमेशे ग़रीबों और अछूतों की फिक्र रक्खेंगे तो खादी से अलग नहीं रह सकते। अगर किसी असली काम में वीर्य की रक्षा का उपयोग करना हो तो खादी से बढ़कर दूसरा कोई काम नहीं है। खादी के कार्य के साथ मैं स्वामीजी का नाम नहीं जोड़ना चाहता, क्योंकि यह उनका मुख्य काम नहीं था। पर तुम स्नातक विदेशी कपड़े से अपना शरीर सजाने का विचार न करोगे पर अपने ग़रीबों और अछूतों की रक्षा के लिए केवल खादी ही धारण करोगे।'

"ईश्वर तुम सबके ब्रह्मचर्य, सत्य और तुम्हारी प्रतिज्ञाओं की रक्षा करें, गुरुकुल का कल्याण करें, और स्वामी जी का हर एक काम परमात्मा चालू रक्खें।"

गांधी जी की अपील

दीक्षान्त-संस्कार के दिन सायंकाल अपील हुई। आचार्य रामदेव जी की अपील के बाद महात्मा गान्धी भाषण देने के लिये उठे। आपने कहा:—

"आर्य समाज की मैं टीका करता हूं, पर स्तुति भी करता हूं और जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्दिक स्तुति करता है, उसे टीका करने का अधिकार होता ही है। मैं मानता हूं कि ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के बाद शिक्षितों का जनता के साथ आध्यात्मिक संबन्ध नहीं रहा और उस संबंध का पुनरुद्धार करने वाला आर्यसमाज है।

"आज जो दृश्य यहां दिखलाई पड़ता है, वैसे दृश्य भाग्य से ही कहीं दूसरी जगह देखने में आते हैं। मैं आपका कुछ अनुकरण करता हूं पर मुझे बालटियों में पैसे नहीं मिलते। मैं तो रुमालों में पैसा इकट्ठा करता हूं। मुझे तो पैसा मिलता है, और आपको रुपये मिलते हैं। सभी के सभी पञ्जाबी कुछ धनिक नहीं हैं। आप में भी गरीब लोग तो हैं ही। पर आपका दिल उदार है। मैं आर्यसमाज की टीका करता हूं; आप को झगड़ालू कहता हूं पर आज आप का काम करने आया हूं। उदार पंजाबियों को मैं कहता हूं कि जो पैसा दे चुके हैं, वे फिर से देवें, क्योंकि मैं यहां स्वीकार करना चाहता हूं कि गुरुकुल की मार्फत हिन्दुस्तान की सेवा हो रही है। मैं ऐसा नहीं मानता कि आप की टीका करते हुए मैं आप का त्याग न समझता होऊंगा। आप में त्याग तो भरा हुआ है ही पर इस त्याग पर सन्तुष्ट न हो जाओ। जो त्याग आगे दिखलाना है, उसके मुकाबिले में, यह त्याग कुछ भी नहीं है। पर मैं आप के त्याग की स्तुति करता हूं क्योंकि आप के बराबर दूसरे में त्यागशक्ति नहीं है। काम तो वही है जो त्यागवृत्ति से किया जाय। बाकी तो स्वच्छन्द है।

"आपकी स्तुति करता हूं तो इससे सन्तुष्ट न हो जाना। आपने दिया तो इससे यह न समझना कि पूरा दे दिया। दान का अर्थ ही है कि वह अधिक से अधिक दिया जाय। जिस संस्था के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के सर्वस्व का त्याग था, उसके लिए जितना दे सको, दो। और कुछ परिणाम न भी निकले तो भी गुरुकुल ने संस्कृत के अभ्यास को स्थान दिया है, यह क्या कुछ छोटी बात है? जब किसी पंजाबी को मैं देवनागरी पढ़ते देखता हूं तो अटकल करता हूं कि वह गुरुकुल का पढ़ा होगा। दोष किस संस्था में नहीं होते? पर दोषों के होते हुए भी गुरुकुल संस्था की सेवा बहुत बड़ी है। इस गुरुकुल की आप सेवा करो और इसे जीवन्त रक्खो। स्वामी श्रद्धानन्द का कहना है कि इस संस्था के लिए उन्होंने ब्रह्मचर्य और तपश्चर्या के दो दान दिये थे। आप कहो कि इस संस्था को जीती रखने के लिए हमसे जितना हो सकेगा, हम दान करेंगे।"

इन के अतिरिक्त स्वामी सत्यानन्द जी, नारायण स्वामी जी, स्वामी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वदानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, प्रो० इन्द्र जी, पं० बुद्धदेव जी, पं० चमूपति जी, प्रो० सत्यव्रत जी, डा० बालकृष्ण जी तथा अन्य आर्य विद्वानों के व्याख्यान हुए। सर्व-धर्म सम्मेलन, जात-पात-तोड़क-मण्डल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कविता सम्मेलन, राष्ट्रीय-शिक्षा-परिषद्, गुरुकुल सम्मेलन आदि की बैठक हुई। उत्सव पूर्ण सफलता से समाप्त हुआ।

गुरुकुल-समाचार

ऋतु— ग्रीष्म काल की लूएँ और आंधियां चलने लग गई हैं, फिर भी आकाश और जमीन सदा प्रचण्ड सूर्य के प्रखर ताप से नहीं तपते। आकाश में मण्डराते बादल नजर आ ही जाते हैं। कुछ कुछ बूंदा बूंदी भी हो जाती है इस कारण रात ठण्डी रहती है। टेसू के फूल चारों ओर खिल आने के कारण दोपहर को चतुर्दिक् अग्नि-शिखा की लपटें धधकती हुई मालूम होती हैं।

ऋतु परिवर्तन के कारण बुखार और खांसी के रोगी साधारण से ज्यादा मात्रा में आज कल हैं। जयन्ती महोत्सव और कुम्भ मेला के कारण भी ऋतु पर और कुल वासियों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ा है।

अकाल मृत्यु— एक नव प्रविष्ट ब्रह्मचारी यशपाल को (Mumps) (कर्ण ग्रन्थि शोथ) हो गए थे। यह रोग बढ़ते बढ़ते निमोनिया के रूप में बदल गया। सारी चिकित्सा, ब्रह्मचारियों की दिन रात की सम्पूर्ण सेवायें, काल के सामने निष्फल हुईं और वह नया ब्रह्मचारी सबके देखते देखते, संसार की नश्वरता बताते हुए और मनुष्य की शक्तियों की क्षुद्रता पर हंसते हुए २५ चैत्र को सायंकाल ६ बजे चल बसा और कुल को सूना तथा शोकाकुल कर गया।

पढ़ाई— महाविद्यालय की परीक्षा का परिणाम कुछ निकल गया है और बाकी का शीघ्र ही निकलने वाला है। पढ़ाई शीत काल के समय विभाग के अनुसार से नियम पूर्वक हो रही है। इस वर्ष श्री आचार्य जी ने कुल में स्थिर रूप से रहने का निश्चय किया है; इस के फल स्वरूप आपने १२ वीं श्रेणी का पाश्चात्य दर्शन और १४ वीं श्रेणी का अंग्रेजी पढ़ाने का कार्य स्वयं अपने हाथ में लिया है। १ मई से गर्मियों का समय विभाग आरम्भ होगा।

अधिकारी परीक्षा का परिणाम निकल आया है। १९ ब्रह्मचारी परीक्षा देने आये थे जिन में से ८ ब्रह्मचारी सर्वथा उत्तीर्ण हैं। ४ ब्रह्मचारियों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुबारा एक विषय में परीक्षा है। ब्र० सर्वमित्र इस परीक्षा में प्रथम रहा है।

सभायें— ब्रह्मचारियों की सभायें रात को नियम पूर्वक नए उत्साह से होनी प्रारम्भ हो गई हैं। इस वर्ष सब सभाओं के मन्त्री नए और उत्साही ब्रह्मचारी हैं। साहित्य परिषद्, वाग्वर्धिनी सभा, संस्कृतोत्साहिनी और विज्ञान परिषद् के इस वर्ष ब्र० धर्मानन्द, ब्र० पूर्णचन्द्र, ब्र० समरसिंह, ब्र० भीमसेन क्रमशः मन्त्री चुने गए हैं। सब सभाएं अपने विशेष सम्मेलनों की आयोजना कर रही हैं।

त्यौहार— पिछले दिनों आर्यसमाज का स्थापना दिवस और 'राम नवमी' का त्यौहार विशेष समारोह से मनाए गए। सभापति के आसन पर श्री आचार्य जी थे। वक्ताओं ने दयानन्द और राम की आलोचना करते हुए, ब्रह्मचर्य पर बहुत ज़ोर दिया। स्वर्गीय कुल पिता की स्मृति से ये सभायें भी खाली नहीं रही। वक्ता और श्रोता अपने उत्तर दायित्व को समझते थे, और कुल को तथा अपने को उसके अनुरूप बनाने के प्रण को लेकर सभा से विदा होते थे।

मान्य अतिथि— श्री प्रो० सांझीराम जी से कुल के प्रेमी ही नहीं आर्य जगत् भी परिचित है। आज कल आप यहां कुल में पधारे हुए हैं। आप के आगमन ने ब्रह्मचारियों में नवीन स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है। देशी खेलें गतका, बनैटी, डण्डा आदि खेलों में नव जीवन आ गया है। आप बड़े उत्साह से छोटे और बड़े ब्रह्मचारियों को इस की शिक्षा दे रहे हैं। सब कुल वासी आप की कुल में स्थिरता चाहते हैं।

कुम्भ के अवसर पर बंगाल का महावीर दल सेवा के लिए आया हुआ था। एक दिन के लिए यह दल यहां भी आया। इस ने अपनी खेलों से कुल को आनन्दित किया। बाक्सिंग, चाकू, गतका के खेल अधिक प्रशंसनीय रहे। सायंकाल फुटबाल का गुरुकुल दल से मित्र भाव से मैच भी हुआ। तीसरे प्रसिद्ध अतिथि प्रो० सोमेश चन्द्र वसु हैं। आपकी प्रतिभा और जीवन को देख कर आदमी चकित हुए बिना नहीं रह सकता। यह सुन कर आश्चर्य होता है कि जो व्यक्ति आज से १० साल पहिले एक बार में ही २॥) ३) का भोजन खा जाता था आज १॥) महीने में गुजारा करता है। सप्ताहमें आप दो दिन निराहार रहते हैं। २½ सेर सत्तू के सहारे इन्हों ने इङ्गलैण्ड की यात्रा की। ५ सेवों के बल पर इङ्गलैण्ड से अमेरिका गये। इन के बदन पर केवल एक धोती और चादर है। यह तपस्या और संयम की एक पवित्र मूर्ति हैं। इन का दिमाग इतना विशाल और प्रतिभा इतनी प्रखर है कि आदमी दांतों तले अङ्गुली दबाने लगता है। आप ने गणित के पांच बड़े २ प्रश्नों का उत्तर १० मिन्ट में ठीक २ मौखिक ही दे दिया। जिस समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप मन में इन प्रश्नों का उत्तर सोच रहे थे उस समय आप के कानों में घण्टे बजाये गये, शोर किया गया परन्तु किसी प्रकार से भी आपके कार्य में विघ्न न हुआ। इन प्रश्नों को गणित का एम. ए. काग़ज़ पेन्सिल पर कम से कम दो तीन घण्टे में कर पाता।

कुम्भ की चहल पहल— हरिद्वार में गंगा स्नान करने के लिए लाखों की संख्या में जो यात्री आये हैं, उन का अधिकांश भाग गुरुकुल दर्शन करने के प्रलोभन को संवरण नहीं कर सका। गुरुकुल के प्रवेश द्वार पर खड़े हो कर कोई देखे तो उसको गुरुकुल की सड़क पर नर-मुण्ड का समुद्र लहरें मारता हुआ प्रतीत होता था। बंगाल, सिन्ध, गुजरात के यात्री अत्याधिक संख्या में आये। गुरुकुल कितना लोक प्रिय हो गया है यह प्रतिदिन आने वाली सवारियां बतलाती हैं। लोग टांगे, मोटर करके तपती दोपहर में गुरुकुल दर्शनार्थ आते थे। स्वर्गीय कुल पिता स्वा० श्रद्धानन्द की महिमा गाते थे। गुरुकुल हरिद्वार से कम महत्व पूर्ण तीर्थ नहीं रहा। कुम्भ में होने वाले दङ्गल में यहां के ब्रह्मचारी भी सम्मिलित हुए थे। यद्यपि ब्रह्मचारियों का अभ्यास थोड़े दिनों का था, फिर भी सब ब्रह्मचारी ओर उन के गुरु यथोचित पुरस्कार से सम्मानित किए गए।

परिवर्तन— गुरुकुल के वर्तमान मुख्याधिष्ठाता श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी ने निरन्तर ५३ साल तक जिस अनवरत परिश्रम, धैर्य, लगन, उत्साह और निस्वार्थ भाव से काम किया है उस का अनुसरण, आगे आने वाले कार्य कर्त्ता गौरव और अभिमान के साथ कर सकते हैं। अब आप गुरुकुल से विदाई ले रहे हैं। निस्सन्देह इस समय आप की गुरुकुल में अत्यन्त आवश्यकता है पर आप सिद्धान्तों के व्यक्ति हैं। सिद्धान्तों से आपको विचलित करना सहज नहीं है। कुल-वासी आप की जुदाई से दुःखी हैं और इसे हृदय से अनुभव कर रहे हैं। आपके स्थान पर आचार्य रामदेव जी ही मुख्याधिष्ठाता का भी कार्य करेंगे। १४ अप्रैल को कुल-सभा में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुआ—

"गुरुकुल निवासियों की यह सभा अपने भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता श्रीमान् पंडित विश्वम्भरनाथ जी के गुरुकुल से विदा होने पर उन के प्रति अपने हार्दिक सम्मान और श्रद्धा के भाव प्रकाशित करती है। उन्होंने पांच वर्षों से अधिक समय तक गुरुकुल की जो निष्काम सेवा की है, जिस प्रकार निरन्तर गुरुकुल की सब तरह की उन्नति, सुव्यवस्था तथा स्थिरता के लिये उद्योग किया है, उसे गुरुकुल वासी भुला नहीं सकते। गुरुकुल वासियों की श्री भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता जी से यही प्रार्थना है कि वे गुरुकुल से बाहिर रहते हुए भी अपने प्रिय कुल की उन्नति के लिये यथा पूर्व ही प्रयत्न करते रहें।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

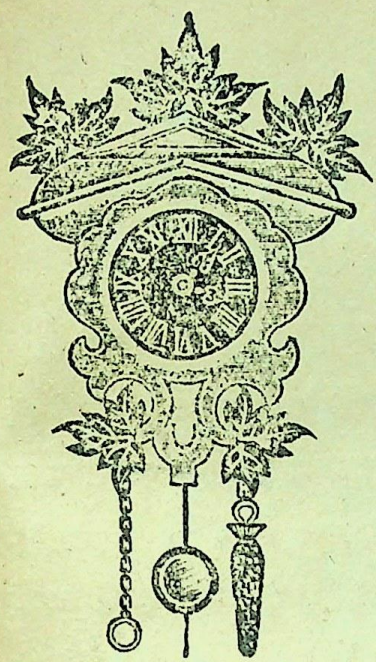

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेजदो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

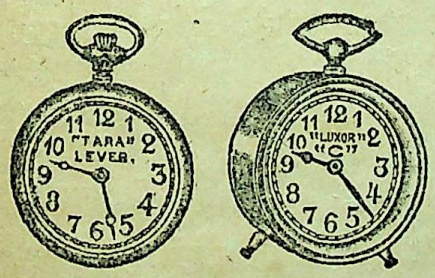

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिए है। जल्दी मंगवायें, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

सुधासिन्धु यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खासी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

(दाद की दवा)

दद्रुगजकेशरी बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।॥), डाक खर्च ॥) पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए, मुफ्त मिलेगा। यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. A. 1340

वर्ष ३] ज्येष्ठ, १९८४ [अङ्क १२

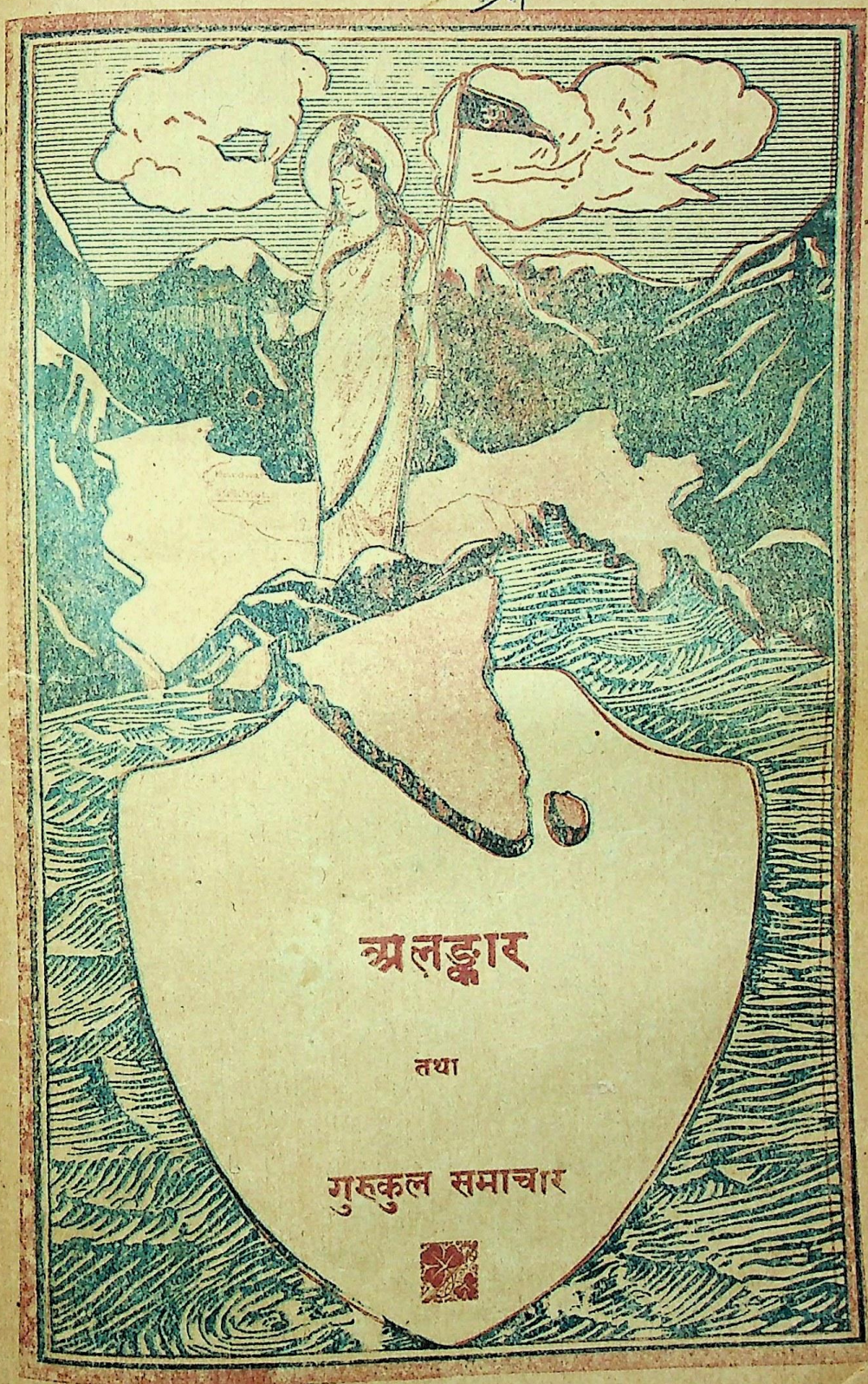

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

सम्पादक— प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ में
१. आँसू (कविता)—श्री पं० निरंजनदेव जी आयुर्वेदालंकार	३६७
२. गीता का सन्देश—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार	३६७
३. खुशामद—आचार्य गड़बड़ानन्द	३७१
४. फाँसी की तख़्ती पर (कविता)—प्रियहंस	३७६
५. बौद्धधर्म की चार महासभाएँ—श्री प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालङ्कार	३७७
६. जीवन-पथ (कविता)—श्री शंकरदेव	३८३
७. मौसम का बदलना (गल्प)—श्री प्रो० वागीश्वर जी विद्यालंकार	३८४
८. सम्पादकीय—	
आर्यसमाज और गोरा अख़बार	
ऋषि दयानन्द का पत्र	
गिरावट की पराकाष्ठा	३९१
९. गुरुकुल-समाचार	३९६
१०. साहित्य-वाटिका	३९८

गृहस्थियो ! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो !

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में "कामधेनु" सेवन कराइये

मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़िल्यूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

पता—भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल-समाचार

❋ स्नातक-मण्डल गुरुकुल-काँगड़ी का मुख-पत्र ❋

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः ।
हविष्मन्तो अलंकृतः ॥ ऋ० १. १४. ५ ।

आँसू !

(श्री पं० निरञ्जनदेव जी आयुर्वेदालङ्कार)

मोती ये मेरी माला के ॥
बिखर गये सब हँसते हँसते,
कुछ मेरी आँखों के रस्ते,
छलक छलक दिल में जा बसते,
थे अमूल्य, पर अब तो सस्ते, ले लेगा क्या कोई आके ॥ मोती०
चलो, नहीं कोई यह मेला,
करो भई ! सब दूर झमेला,
रहने दो बस मुझे अकेला,
मैं न इन्हें बेचूं ले धेला, कोई मत इनको अब ताके ॥ मोती०
जो चाहे लेना वह आवे,
अपना साथ हृदय दे जावे,
फिर कोई न इसे लौटावे,
सौदा यह जिसके मन भावे, ले जाये वह देख दिखाके ॥ मोती०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता का सन्देश

(ले०-प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

मनुष्य किसी काम को भी करता हुआ 'मनन' करता है, विचारता है—'यह काम करना चाहिये या नहीं करना चाहिये'। कई बार सन्देह की मात्रा साधारण होती है। संशय-मेघ के दो-एक टुकड़े मानसिक क्षितिज के किनारे किनारे चक्कर काट कर ही निश्चयात्मिका बुद्धिरूपी वायु के धक्कों से तितर-बितर हो जाते हैं। इस प्रकार की सन्देहावस्था मन को विक्षिप्त नहीं करती, इस में धैर्य्य बँधा रहता है। कभी २ तो इस में मज़ा ही आता है। इसके बिना जीवन फीका-सा लगने लगता है। परन्तु मानवजीवन के अन्तरिक्ष में जहां शरद्ऋतु के क्षुद्र मेघखण्ड दिखाई देते हैं वहां पावस की प्रलयकारी घनघोर घटाएँ भी उमड़ पड़ती हैं, आशा-सूर्य्य के प्रकाश की एक एक किरण के लिये मनुष्य तरसता है परन्तु अन्धकार से घिरे होने के कारण रास्ता ढूंढने के लिये जितना अधिक हाथ-पैर मारता है उतना ही अधिक भटकता जाता है। इस अवस्था में मनुष्य का दिमाग़ ठिकाने नहीं रहता। उसका चित्त विक्षिप्त हो जाता है। वह पागल-सा बन जाता है। दुःख की सीमा इससे परे नहीं जा सकती। इस अवस्था में वह किंकर्तव्य-विमूढ़ होकर जीवन को भार-रूप समझने लगता है। मनुष्य दुःख को निमन्त्रण देता है, सुख तक पहुंचने के लिये; अन्धकार का आनन्द उठा सकता है, प्रकाश का मज़ा लूटने के लिये; निराशा में अपने को छोड़ सकता है, आशा को पाने के लिये! वह इसी लिये जीता है क्योंकि उसे मालूम है कि दुःख के पीछे सुख, अन्धकार के पीछे प्रकाश और निराशा के पीछे आशा आ सकती है। यदि मानव-समाज का आज यह अनुभव हो जाय कि दुःख दुःखरूप में ही अनन्त काल तक बना रहेगा, अन्धकार के छिन्न-भिन्न करने के लिये प्रकाश की किरणों का उदय नहीं होगा, निराशा के तप्त झोंके प्रलय तक हमारे हृदयों को दग्ध करते रहेंगे तब तो सारा मानव-समाज मिलकर आत्मघात कर ले। जिन व्यक्तियों के जीवन में कभी कभी ऐसी लहर चल जाती है, वे फिर जी भी नहीं सकते। उनके लिये प्राण भारी हो जाते हैं और वे शीघ्र ही संसार से बिदाई लेने का अवसर ढूंढ निकालते हैं।

मनुष्य के मन की दोनों अवस्थाएँ दीख पड़ती हैं। कभी कभी तो थोड़ा बहुत तर्क-वितर्क करने के बाद शीघ्र ही निश्चय की अवस्था आ पहुंचती है, परन्तु कभी कभी मनुष्य जितना तर्क

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता जाता है, जितना दिमाग़ पर बोझ डालता है, उतना ही सन्देह के जाल में उलझता जाता है—एक ही मार्ग उसे नहीं दिखाई देता, एक की जगह दो और दो की जगह दस दीख पड़ने लगते हैं। ऐसी अवस्था के लिये भगवान् कहते हैं—

"व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ।"

हे कुरुनन्दन ! जीवन का सीधा रास्ता तो एक ही है। जीवन में डाँवाडोल हो जाने पर अनन्त रास्ते दिखाई देते हैं, परन्तु सब भटकाने वाले हैं। सन्देह में से निकलो, तभी जी सकते हो; सन्देह में पड़े रहना मृत्यु के लक्षण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी समय, विक्षेप की अवस्था आती है। लाख कोशिश करने पर भी मनुष्य अपने कर्तव्य का निश्चय नहीं कर सकता है। इस प्रकार सन्देह सागर में गोते खाता हुआ प्राणी अपने ऊपर किये हुए सारे भरोसे को खो बैठता है और अपने से किसी ऊँची शक्ति की तरफ़ टिकटिकी बाँधे हाथ-पैर मारना छोड़ कर अनन्त की शय्या में अपने को छोड़ देता है। इसी निस्सहाय अवस्था में, जब वह बिल्कुल निराश हो चुका होता है, कोई अदृश्य हाथ उसकी अँगुली पकड़ लेता है, डूबते को तिनके का सहारा मिल जाता है। यह विश्वव्यापी अनुभव है। इस अनुभव का अभिप्राय इतना ही है कि निराशा का अन्त निराशा में ही नहीं है, अन्धकार का अन्त अन्धकार में ही नहीं है, सन्देहों का अन्त सन्देहों में ही नहीं है। कृष्ण भगवान् सन्देहों की आंधी के झोंकों से डावांडोल अर्जुन को सम्बोधन करके कहते हैं – "अर्जुन ! घबड़ा मत, सन्देहों में मत पड़ा रह, निश्चय की तरफ़, व्यवसायात्मक बुद्धि की तरफ़ बढ़ने का प्रयत्न कर !" कृष्ण भगवान् की सहायता से अर्जुन के सन्देह निवृत्त हुए। वह चिल्ला उठा :—

"नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ।"

हे कृष्ण ! तेरे प्रसाद से मेरा मोह नष्ट हो गया, दिमाग़ ठिकाने आ गया, सन्देह छिन्न भिन्न हो गये। मैं अब अपने कर्तव्य को समझने लगा हूं, मेरी बुद्धि व्यवसायात्मिका हो गई है।

गीता की यही शिक्षा है। नाक की सीध में चलते चलते जब मनुष्य दोराहे पर पहुंचता है, और वहां पर भी बीसियों रास्ते इधर-उधर फटते हुए पाता है, तो घबड़ा जाता है, सन्देहों से घिर जाता है। उसे समझ नहीं पड़ता कि क्या करे ? ऐसी अवस्था में कई व्यक्ति निराश हो कर हिम्मत हार देते हैं, उनकी कमर टूट जाती है, वे एक कदम भी आगे नहीं रख सकते। गीता में एक इसी प्रकार के व्यक्ति का चित्र हमारी आंखों के सामने खींचा गया है। वह किंकर्तव्य-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमूढ़ होकर, सन्देहों से घिरा जाकर ठीक रणक्षेत्र में मट्टी की तरह ढेर हो जाता है। उस समय अर्जुन की अवस्था ठीक ऐसी हो जाती है जैसी पाद-कन्दुक की क्रीड़ाक्षेत्र में उसकी फूंक निकल जाने से होती है। ऐसी अवस्था में मुर्दे को ज़िन्दा बनाना और ज़िन्दा हुए को शेर बना देने का काम गीता ने किया है। भटके को मशाल बन कर रास्ता दिखला दिया, डूबते को तिनका बन कर सहारा दे दिया, मरते को जीवनसुधा बन कर प्राण का दान कर दिया। यदि सदियों पहले गीता ने यह काम किया था तो आज भी वह इस काम को कर सकती है। अर्जुन को जिस मोह ने आकर घेर लिया था, वह जिन सन्देहों का शिकार बन गया था उस प्रकार के सन्देह आज भी मानव-समाज के मानस को घेरे हुए हैं। यदि उस समय वृन्दावन-विहारी की वंशी की मधुर तान ने सूखे हृदय में जीवन का अमृत रस भर कर उसे सरसा दिया था तो आज भी उसमें दिव्य-शक्ति विद्यमान है। वह जादूगर अपनी जादू करने वाली वंशी को पीछे छोड़ गया है। जिसका जी चाहे उस वंशी को उठाये और बजाये! इसकी मधुर तान सुन कर एक बार तो अवश्य ही सूखे हृदय से भी शान्ति का झरना फूट कर बह निकलेगा।

सन्देहों से व्याकुल अर्जुन को गीता ने रास्ता दिखलाया। उसे कृष्ण ने जो शब्द कहे वे सन्देहों से दोलायमान प्रत्येक व्यक्ति के लिये कहे गये थे। भगवान् कहते हैं:—

"कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन!
क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप!"

हे मूढ़! हे विक्षिप्तहृदय! इस नाज़ुक मौके पर तुझे किस पाप ने आ घेरा है। इससे तेरा कभी भला न होगा। यह तुझे नामर्द बना देगा। सन्देहों के जाल को झाड़ कर उठ खड़ा हो, दिल को मज़बूत बना और काम में जुट जा। कैसे उत्साह से भर देने वाले शब्द हैं! सन्देहों की उलझन में लिपटे हुए व्यक्ति के कान में जब ये जीवन का रस टपकाने वाले अमृतमय शब्द पड़ते हैं तो आधी निराशा तो ऐसे-ही भाग जाती है, उसकी मुर्दा नसों में खून बहने लगता है और वह अन्धकार के पर्दे में से मुख निकाल कर प्रकाश की किरणों की प्रतीक्षा करने लगता है। ऐसा व्यक्ति जब गीता को हाथ लगाता है तो उसके सन्देह कट कट कर गिरने लगते हैं। यह समझना भूल है कि गीता का उद्देश्य केवल अर्जुन के सन्देहों को दूर करना है। अर्जुन को तो मानव जाति के उपलक्षक एक व्यक्ति के रूप से सम्मुख रख लिया गया है। यथार्थ में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के हृदय की जो दोलायमान अवस्था होती है उस में से निकाल कर व्यवसायात्मिका-एक-बुद्धि तक पहुंचाना ही गीता का उद्देश्य है। गीता में जीवन के उन मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जिन से सब प्रकार के सन्देहों की निवृत्ति हो जाती है। यह निराश व्यक्ति के लिये जीता-जागता आशा का सन्देश है। इस दृष्टि से गीता का अध्ययन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को आशामय तथा प्रकाशमय बना सकता है। गीता के विषय में निस्संकोच भाव से कहा जा सकता है:—

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय"

खुशामद !

(लेखक— आचार्य गड़बड़ानन्द)

अरे भाई खुशामद करो, खुशामद ! इस दुस्तर संसार में यदि जीना चाहते हो तो खुशामद से बढ़िया दूसरा मन्त्र नहीं, नुस्ख़ा नहीं, जादू नहीं। खुशामद सृष्टि का सार है; खुशामद सफलता की अचूक चाबी है; खुशामद छोटे-बड़े सबके लिये ब्रह्मास्त्र है। यह बुरी चीज़ हर्गिज़ नहीं है। यह तो प्रखर बुद्धि का एक दाँव है, एक पेंच है। बेवकूफ़ लोग 'आत्मा'-'आत्मा' रटा करते हैं। आत्मा का खुशामद से क्या सम्बन्ध? खुशामद तो जीवन संग्राम में हाथ मार ले जाने का एक 'आर्ट' है; यह एक कला है; एक कौशल है; सिद्ध-हस्तता है! ऐसी नाज़ुक आत्मा भी किस काम की कि ज़रासी खुशामद की और आत्मा पर दाग़ लगा! मज़ा तो यही है कि भरपेट खुशामद कर काम भी निकाल लिया जाय और आत्मा भी दर्पण की तरह शुद्ध-पवित्र बनी रहे। और देखो तो, यह सोचने की बात है कि यदि खुशामद बुरी ही चीज़ होती तो यह ज़िन्दगी के लिये इतनी ज़रूरी क्यों होती कि इसके बिना दम लेना भी मुश्किल हो जाता। दुनियाँ को देखो! परमात्मा को मानने वाले अपने अमली जीवन से ढिंढोरा पीट २ कर कह रहे हैं कि खुशामद 'लॉ ऑफ गॉड' है; प्रकृति को मानने वाले चिल्ला रहे हैं कि खुशामद 'लॉ ऑफ़ नेचर' है। यदि अब भी मानने की सलाह न हो तो न मानो पर यह बात गाँठ बाँध लो कि यदि खुशामद के चप्पू के बग़ैर जीवन-नौका को संसार-समुद्र के पार लगाना चाहोगे तो अपने से बड़ों के अभिमान की घुमरघेरियों में फँस कर डूब जाओगे,—बस, डूब जाओगे !!

* * *

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं उन में से हूं जिन्हें कई लोग डाह से 'खुशामदी-टट्टू' कहा करते हैं। मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि जीवन में मेरी असाधारण सफलता को देखकर वे लोग चिड़ते हैं। मुझ में और दूसरे लोगों में यही फ़रक है कि मैं जहाँ जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों का गहरी दृष्टि से अध्ययन कर उनके अनुकूल अनुष्ठान करता हूं वहाँ कई बुद्धू उन सिद्धाँतों की तरफ़ आँख तक नहीं उठाते। मेरे सारे जीवन के परिश्रम का एक ही निष्कर्ष है। मैं समझ गया हूं कि 'खुशामद' कितना अमोल हीरा है। आत्मा, परमात्मा, प्रकृति—सृष्टि के मौलिक-तत्व समझे जाते हैं परन्तु मेरी फ़िलासफ़ी में 'खुशामद' ही सृष्टि का अनादि-अनन्त-सनातन तत्व है। मुझे खूब याद है। जब मैं स्कूल में पढ़ा करता था मुझे कुछ न आता था पर मैं रोज़ शाम को मास्टर साहेब के पाँव दाब आता था। मौके २ पर उनके घर में भाजी-तरकारी-मिठाई दे आता था। उनके बच्चे के लिए खिलौने ले जाता था। बस, मास्टर साहब मुझ पर मस्त रहा करते थे। मैं कभी फ़ेल नहीं हुआ। जो लड़के मुझ से ज़्यादह रटा करते थे, इम्तिहान के दिनों में वे मुझ से कई नम्बर पीछे रहा करते थे। लड़के मुझे खुशामदी कहते थे और मास्टर साहेब मुझे सुशील कहते थे। साल भर की कड़ी मेहनत वह काम न कर सकती थी जो मेरी ज़रा सी खुशामद कर लेती थी। मैं पढ़-लिख कर एक स्कूल में मास्टर हो गया। सब मास्टर लोग मुझसे ज़्यादह पढ़े हुए थे, इसलिए मुझ पर रोब जमाते थे। मैं स्कूल की 'मैनेजिंग कमेटी' के मेम्बरों के घरों में जाकर रोज़ उनको सलाम कर आता था—बस, और कुछ नहीं, केवल सलाम कर आता था। नतीजा यह हुआ कि साल ही भर में मुझे सैकन्ड--मास्टर बना दिया गया, मेरी तनख़्वाह दुगुनी हो गयी और रोब जमाने वाले मास्टर बग़ले झाँकते ही रह गये। खुशामद के नुस्ख़े का यह मामूली सा चमत्कार था। सब मास्टर मुझे खुशामदी कहते थे लेकिन कमेटी के मेम्बर मुझे विनयशील और साधु स्वभाव वाला कहते थे। मैं अपने प्रभुओं के जूते तक उठाने में नहीं कतराता था; जो काम मुझे सौंपा गया हो उसे छोड़कर उनका निजू काम पहले करता था; उनके मुख से बात निकलने के पहले ही हाथ जोड़कर 'जी-हजूर' की झड़ी लगा देता था—मेरे जीवन की अभूतपूर्व सफलता का यही रहस्य था। नीचे वाले इसे चाटुकारिता या खुशामद कहते हैं, ऊपर वाले इसे विनय और शील कहते हैं—मैं इसे बुद्धिमत्ता, जीवन का गुर या सफलता की कुञ्जी कहता हूं। जो लोग मेरी इस विवेकशीलता को खुशामद का नाम देकर मुझे बदनाम करते हैं उनसे मैं पूछना चाहता हूं कि ज़रा मुझे यह तो बता दें कि दुनियाँ का कौनसा कोना इससे ख़ाली है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* * *

मैं जब भी किसी साधु-संत के यहाँ उसकी फूंस की छत के नीचे गया हूं, मैंने देखा है कि उसका हृदय मुझसे प्रणाम की भिक्षा माँग रहा होता है। मैं उसके सामने हाथ जोड़ दूँ तो उसका चेहरा खिल उठता है, न जोड़ूं तो उस पर निराशा की रेखाएँ घनीभूत हो जाती हैं। कोई-कोई महात्मा तो ऐसे निकलते हैं कि उन्हें नमस्कार न भी किया जाय, वे हाथ उठाकर आशीर्वाद पहले ही देने लगते हैं। शायद उनके दिल में यह होता है कि यदि भगत ने सिर झुकाने का अपना 'कर्तव्य' पालन नहीं किया तो हम उसके सिर झुकने की कल्पना ही करके आशीर्वाद देने के बड़प्पन के 'अधिकार' का इस्तेमाल क्यों न कर लें? सब एषणाओं को छोड़ देने का दावा रखने वाले साधुओं के झोंपड़ों से आवाज़ आ रही है—'खुशामद'-'खुशामद'-'खुशामद के बिना हम नहीं जी सकते!' 'हमारे सामने सिर झुकाओ, नहीं तो हम मरे जाते हैं'!!

* * *

मैं सभा सोसाइटियों में जाता रहता हूं। कई अपने को बड़ा समझने वाले सभाओं में सब से पीछे जूतियों पर बैठ जाते हैं और चारों तरफ़ इस आशा से कनखियाँ चलाते रहते हैं कि कोई आकर उनका हाथ पकड़ कर उन्हें सब से आगे ले जाय और कुर्सी पर बिठला दे। यदि उन्हें कोई न पूछे तो उनके दिल में आग सुलग जाती है और जी करने लगता है कि शिव की तरह उनके तीसरा नेत्र होता तो वे उस सभा के संञ्चालकों को क्षण भर में भस्म कर देते। ऐसे लोगों के दिल की बीमारी के लिये खुशामद ही सबसे बढ़िया मरहम है। वे खुशामद के बिना नहीं जी सकते। यदि ज़रासी खुशामद से ऐसे महापुरुषों के जीवन की रक्षा की जा सके तो इसमें हर्ज क्या है? आख़िर इन्हीं के प्रताप से तो बड़ी २ संस्थाएँ चलती हैं। प्राचीन ऋषियों का वर मालूम नहीं पूरा उतरता था या नहीं, पर कलियुग के इन ऋषियों का वर तो सोलहों आने पक्का होता है। यदि इन की कृपा दृष्टि होजाय तो संस्थाओं के भाग्य जग जाँय। इन सब के लिए खुशामद की ज़रूरत है। खुशामद के बिना ये नहीं जी सकते और इन के बिना 'पब्लिक वर्क' नहीं जी सकता।

* * *

क्या मज़े की बात है! आज छोटा आदमी अपने से बड़े के चढ़े-मिजाज़ को देख कर नाक-भौंह सिकोड़ने लगता है, परन्तु खुद उस हालत में पहुंचते ही अपना मिज़ाज़ बिगाड़ लेता है। आज हम अपने से दो इञ्च लम्बे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी के सामने सिर झुकाने में खुशामद की बू पाते हैं लेकिन अपने से एक इञ्च छोटे आदमी से साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम की आशा रखते हैं। सब अपने ऊपर वाले के सामने झुके हुए और नीचे वाले के सामने तने हुए हैं। हुक्कामों की जूती खाते और मातहतों के जूती लगाते हैं। किसी सरकारी आफ़िस में चले जाओ, यही नज़ारा है। हरेक बाबू, बड़े बाबू के सामने बिल्ली और छोटे के सामने शेर है। बड़े की खुशामद करता और छोटे से खुशामद करवाता है। 'हजूर' कहलाने के लिये बेचैन और कहने के लिये हिचकिचाता है। खुशामद के बग़ैर रेल का बाबू टिकट नहीं देता; खुशामद के बग़ैर म्यूनीसिपैलिटी वाला दस रुपये महीने की नौकरी नहीं देता; खुशामद के बग़ैर अदालत का कारिन्दा अर्ज़ी पेश होने नहीं देता; खुशामद के बग़ैर किसी अफ़सर का चपरासी बात नहीं करता। खुशामद के बग़ैर दुकान नहीं चलती, ठेका नहीं मिलता, हमारे अपने हक़ हमें कोई नहीं देता। जब परमात्मा को यही मन्ज़ूर है, फिर बतलाओ खुशामद क्यों न की जाय?

* * *

खुशामद का अर्थ है, हरेक बात में हुक्काम के ओहदे के मुताबिक—'जी हाँ'—या—'जी हजूर' कहना! खुशामद एक लैन्स है जिसमें से अल्पज्ञ जीव अपने को सर्वज्ञ देखने लगता है, बेवकूफ़ अपने को बुद्धि का अगाध समुद्र समझने लगता है, अशक्त मनुष्य अपने को सर्वशक्तिमान् अनुभव करने लगता है! खुशामद से हरेक भलेमानस को उल्लू बनाया जा सकता है। जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने का इस-सरीखा अमोघ-शस्त्र न किसी ने बनाया है, न बना सकता है, न बना सकेगा। इसके सामने बली निर्बल हो जाते हैं, संयमियों का वर्षों का संयम टूट जाता है, तपस्वियों के तप ढले पड़ जाते हैं, विवेकी पुरुष हतबुद्धि हो जाते हैं, राजाओं के सिंहासन डगमगा जाते हैं। इससे आँखों को अन्धा किया जाता और कानों को 'भरा' जाता है। जो जितना बड़ा है उसके इर्द-गिर्द उतने ही खुशामदियों का गिरोह घिरा रहता है। इसी बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि जिसके इर्द-गिर्द जितने ज़्यादह खुशामदी हों वह उतना ही बड़ा होता है। नौकरी में भिन्न २ दर्जों की रचना खुशामदियों की संख्या बढ़ाने के लिए ही की जाती है। दस आदमियों में बीस ओहदे कायम किये जाते हैं ताकि खुशामद के लिये सिरतोड़ 'कम्पीटीशन' हो। सबसे मुख्य चाटुकार को 'बड़ी सरकार' टैलीफ़ोन की तरह अपने कान के पास रखती है और उसका काम सरकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बेवकूफ़ियों में हामी भरने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं होता। इसी के लिये उसे तनख़्वाह दी जाती है। 'बड़े हजूर' की समझ में यह नहीं आ सकता कि दो बेवकूफ़ मिलकर अक्ल की बात कैसे पैदा कर लेंगे। वे इसी बात से सन्तुष्ट हैं कि उनकी हरेक बेवकूफ़ी को 'अक्ल' बताने वाला कोई है! इस में शक नहीं कि खु.शामद करने से मनुष्य की आत्मा उसे काटती है, वह अपने को छोटा अनुभव करती है, पर उसका इलाज भी तो खु.शामद ही है। खु.शामदी को जो बीमारी हो जाती है उसे खु.शामद ही दूर कर सकती है। वह अपने महाप्रभु के सब से बड़े दर्जे पर पहुंच कर अपने से छोटों से खु.शामद करवाता है। जो करने लगते हैं उनसे तो उसके दिल की बीमारी कुछ कुछ शान्त होती ही है परन्तु जो नहीं करते उन्हें मज़ा चखाने के लिये वह दिन रात स्कीमें बनाया करता है। बदला लेना उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य हो जाता है। खु.शामद से आत्मा के जिस खोखलेपन को वह अनुभव करता है उसे दूर करने के लिये उसकी आत्मा तड़पती रहती है, पर भाई साहेब, उसका इलाज भी तो खु.शामद ही है। खु.शामद के रास्ते पर चलने वाला एक गोल घेरे पर घूमता है—वह अगलों की खु.शामद करता है और पिछले उसकी खु.शामद करते हैं—इससे जीवन का, जीवन का नहीं तो कम-से-कम रोटी-दाल का, गुज़ारा तो खूब हो ही जाता है!

* * *

खु.शामद की फ़िलासफ़ी को लोग समझते नहीं। खु.शामद तो नफ़े ही नफ़े का सौदा है; इसमें घाटा कहाँ है? हाँ, आत्मा को भी कोई चीज़ माना जाय तो खु.शामद से कुछ 'आत्म-ग्लानि' ज़रूर होती है, अन्यथा इसमें मज़ा ही मज़ा है। लेकिन जो इस सन्मार्ग पर कदम उठाएगा वह आत्मा से सरोकार ही क्यों रखेगा? जिन्हें आत्मा हो उन्हें आत्मा-ग्लानि भी हो, इधर तो आत्मा की ही कोई ज़रुरत नहीं। जिन भूले भटकों के आत्मा होगा उनके लिए भी सबसे अच्छा नुस्ख़ा है, कि एकान्त में बैठकर आत्म-निरीक्षण जैसी कोई बेवकूफ़ी न करें। दूसरों का ही निरीक्षण करते रहें! इस प्रकार खु.शामदपूर्वक दिवस बिताते हुए जीवन का जो आनन्द प्राप्त होता है वह परमात्मप्राप्ति के आनन्द से किसी प्रकार कम नहीं है। हमने यह आजमा कर देखा है, दूसरे जिनका जी चाहे आजमा कर देख सकते हैं।

विज्ञापन

बच्चों को सर्दी खांसी से बचाने और मोटा तन्दुरुस्त बनाने के लिये सुख संचारक कंपनी मथुरा का मीठा 'बालसुधा' सब से अच्छा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काकोरी अभियोग के पश्चात्

फाँसी की तख़्ती पर

[१]

विश्व खड़ा ताकता—स्वतन्त्रता के मञ्च पर,
ख़ून की ये कौन होली खेलने को आया है।
प्याला देशभक्ति का पिया है, मस्तहाल हुआ
फूल से करों को बेड़ियों से बाँध लाया है।
तान सुन बैठना न भूल से, छिलेगा दिल
गीत 'सरफ़रोशी' का इसी ने नित्य गाया है,
आँख ज़रा फेर ऐसे पागलों को देख डालो
देखो तो ज़माने में ये कैसा रंग लाया है!

[२]

कञ्चन सी काया मिली, शान्त मुख-मुद्रा बनी
आँखों में न जाने ज्योति कौन सी जलाई है,
कहता है—"बहुत दिन हुये माँ की पूजा किये,
भैरवी का आज नाच करने की समाई है।
आज होली खेलूं बलि कालिका पै भेंट डालूं
जुआ खेलने की भी उमङ्ग उठ आई है,
पासा मातृभूमि की स्वतन्त्रता का फेंकता हूँ
देखूं, आज बाजी निज प्राणों की लगाई है।

[३]

"कितने अरमान निज छाती में छिपाये रहा,
सीस बेचने की धुन कब से समाई है।
शून्य में विलोक चुप चाप आँसू डाल डाल,
कितनी घनी रातें मैंने 'आह' से बिताई हैं।
आज गरवीला चमकीला ये प्रभात आया,
अग्नि चण्डिका ने यज्ञ-कुण्ड में जलाई है।
बाना धार केसरी, लगाऊँ टीका खून का, लो,
पूर्णाहुति डालने की बारी आज आई है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४]

"फाँसी की पवित्र वेदिका पै चढ़ा झूमूंगा मैं,
चारों ओर देख ज़रा मीठे मुसकाऊँगा।
आँख बन्द किये माता भारता का ध्यान धरूं,
उसी 'वन्दिनी' के चरणों में झुक जाऊंगा।
कण्ठ से गिरेगी रक्तधार मेरे बार बार,
आंख से किसी की अश्रुधार गिरवाऊंगा।
'आह' कोई कहेगा, औ 'हाय हाय' कोई कहे,
किसी न किसी के मुंह से 'वाह' कहलाऊंगा।"

प्रियहंस

बौद्ध धर्म की चार महासभायें

(ले०-प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालङ्कार)

प्राचीन भारत के धार्मिक इतिहास में बौद्ध धर्म की चार महासभाओं का बड़ा महत्त्व है। बौद्ध धर्म को संगठित, विश्वव्यापी और विशुद्ध बनाने में इन से बहुत सहायता मिली। हम इस लेख में इन महासभाओं का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न करेंगे।

प्रथम महा सभा

भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् (४७७ ईस्वी पूर्व में) बौद्ध संघ का नेता आचार्य महाकाश्यप बना। इसने अनुभव किया कि भगवान् की शिक्षाओं को विशुद्ध रूप से लेख बद्ध करने की आवश्यकता है। बुद्ध ने अपने जीवन काल में कोई ग्रन्थ नहीं लिखा था। भिन्न भिन्न स्थानों पर वे जो उपदेश दिया करते थे, जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया करते थे, शिष्य गण उन्हें स्मरण कर लेते थे। अनेक शिष्य होने के कारण वास्तविक सिद्धान्तों में मतभेद हो सकता था। साथ ही, बुद्ध के साथ निरन्तर निवास करने वाले शिष्य भी निर्वाणपद प्राप्त करते जाते थे। इसी लिये उस समय लोगों ने कहना प्रारम्भ कर दिया था कि "भगवान् की शिक्षायें धूम्र की तरह लुप्त होती जाती हैं, पुराणे सब भिक्षुओं का स्वर्गवास होगया है अतः भगवान् द्वारा उपदिष्ट सूत्रान्त, विनय और मात्रिका का पाठ अब बन्द होगया है।"

इस जनापवाद को दृष्टि में रख कर आचार्य महाकाश्यप ने भिक्षु पूर्ण को आदेश दिया कि सब भिक्षुओं को एकत्र करो। पूर्ण के प्रयत्न से ५०० प्रधान भिक्षु मगध की राजधानी राजगृह में एकत्रित हुए। उस समय मगध के राजसिंहासन पर राजा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजात शत्रु विराजमान था। वह स्वयं बौद्ध धर्म का अनुयायी था। अतः इस महासभा के लिये उस ने राजगृह के न्यग्रोधगुहा नामक विहार में सब प्रकार का प्रबन्ध कर दिया। सात मास तक न्यग्रोधगुहा में निरन्तर इस महासभा के अधिवेशन होते रहे। इस बीच में 'विनय' 'धम्म' और 'अभिधम्म' पिटकों का संग्रह किया गया। अभी तक अनेक इस प्रकार के भिक्षु जीवत थे, जो महात्मा बुद्ध के साथ निवास कर चुके थे और जिन्हें बुद्ध के बहुत से उपदेशों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुवा था। विशेषतः बुद्ध के साथी भिक्षु आनन्द और उपाली की सहायता से इन पिटकों को संगृहीत किया गया। अन्य भिक्षुओं ने भी उनका अनुमोदन किया और इस प्रकार प्रथम महासभा में त्रिपिटकों को निश्चित रूप से लेख बद्ध कर दिया गया।

द्वितीय महासभा

बौद्ध धर्म की द्वितीय महासभा बुद्ध के परिनिर्वाण के ११० साल पश्चात् (३६७ इ०पू० में) वैशाली में हुई। यद्यपि पहली महासभा में धर्म के सिद्धान्तों का पूर्णतया निश्चय होचुका था, पर उनकी व्याख्या तथा पालन करने में अब निरन्तर शिथिलता आ रही थी। विशेषतया, वैशाली के भिक्षु लोगों ने बौद्ध धर्म में दस नवीन बातों (दस वत्थुनि) का समावेश कर दिया था। ये दस नवीन बातें निम्न लिखित हैं:—

(१) वैशाली के भिक्षु लोग सम्बोधन के लिए 'अलल' इस शब्द का प्रयोग करने लग गये थे। यह सम्बोधन असली धर्म और पुराणी प्रथा के प्रतिकूल था।

(२) वैशाली के भिक्षु आनन्द भोग में लग गये थे। वे भोग को धर्म विरुद्ध नहीं समझते थे।

(३) वैशाली के भिक्षु अपने हाथ से ज़मीन खोदने लग गये थे। वे स्वयं ज़मीन खोदने या अपने लिए ज़मीन खुदवाने को धर्मानुकूल समझते थे।

(४) वैशाली के भिक्षु अपने पास नमक सञ्चित करके रखना धर्म के विरुद्ध नहीं समझते थे।

(५) वैशाली के भिक्षु अपने 'विहार' से एक योजन या आधा योजन दूर जाकर एकत्रित होने, तथा वहाँ मिलकर भोजन करने को धर्म के अनुकूल समझते थे।

(६) वैशाली के भिक्षुओं ने नरम और कड़ा—दोनों प्रकार का भोजन खाना प्रारम्भ कर दिया था। वे केवल दूसरों द्वारा अवशिष्ट भोजन ही नहीं खाते थे। साथ ही भिक्षुओं की पुरानी प्रथा को छोड़कर उन्होंने दो उँगलियों से भोजन करना शुरू कर दिया था।

(७) वैशाली के भिक्षुओंने शराब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि मादक द्रव्यों का सेवन प्रारम्भ कर दिया था।

(८) वैशाली के भिक्षुओं ने समय समय पर कच्ची लस्सी प्रभृति आहार भी नियमानुकूल समझ लिया था।

(९) वैशाली के भिक्षुओं ने पुरानी भिक्षुप्रथा के प्रतिकूल एक नई प्रकार की चटाई का प्रयोग करना भी स्वीकृत कर लिया था।

(१०) वैशाली के भिक्षु गोलाकृति भिक्षापात्र को नानाविध सुगन्धों से सुगन्धित तथा पुष्पों से सुशोभित करना धर्म के प्रतिकूल नहीं समझते थे।

इन दस बातों में अनेक इस प्रकार की भी हैं, जो बहुत साधारण हैं, जिन का धर्म से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता। परन्तु वे एक भाव को सूचित करती हैं। इनसे प्रतीत होता है कि वैशाली के भिक्षु बुद्ध द्वारा उपदिष्ट तपस्यामय जीवन को त्याग कर भोग की तरफ़ झुक रहे थे। परमार्थ की अपेक्षा सांसारिक विषयों का उन्हें अधिक ध्यान था। धर्मों के इतिहास का अनुशीलन करते हुए हम देखते हैं कि प्रायः सभी धर्मों में इसी प्रकार धीरे २ शिथिलता आती रहती है। कुछ समय बाद साधु, भिक्षु व सन्यासी लोग अपनी स्थिति को भूल कर सांसारिक प्राणी बन जाते हैं और धर्म को बहुत क्षति पहुँचाते हैं। इस प्रवृत्ति से बौद्धधर्म की रक्षा करने के लिये आचार्य यश ने प्रयत्न किया। वैशाली के इन भिक्षुओं के विरुद्ध यश के नेतृत्व में एक भारी आन्दोलन प्रारम्भ हुवा। बौद्ध साहित्य द्वारा ज्ञात होता है कि आचार्य यश ने इसी प्रयोजन के लिये बहुत से देशों में भ्रमण किया और सब स्थानों के भिक्षुओं को इस प्रवृत्ति के विरुद्ध आन्दोलन में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। इसी तरह वैशाली के भिक्षुओं ने भी आन्दोलन शुरू किया। वे भी अपनी बातों का प्रचार करने के लिए नानाविध उपायों का आश्रय लेने लगे। इस प्रकार बौद्ध जगत् में एक महत्त्वपूर्ण समस्या उत्पन्न होगई। इसी को हल करने के लिये वैशाली नगरी में यह द्वितीय महासभा की गई। इसमें ७०० प्रसिद्ध अर्हत व भिक्षु लोग एकत्रित हुवे। वैशाली के भिक्षुओं की 'दस वत्थूनि' पर इसमें विचार किया गया और यह निर्णय किया गया कि ये दसों बातें धर्म के विरुद्ध हैं। वैशाली के भिक्षुओं की इस महासभा में पराजय हुई।

परन्तु इस वादविवाद का यहीं अन्त नहीं होगया। इस महासभा के समाप्त होते ही पराजित दल ने नई सभा का आयोजन किया। उसमें कुल मिलाकर दस हजार भिक्षु सम्मिलित हुवे। इस सभा को बौद्ध साहित्य में महासंगति नाम से कहा जाता है।

दीपवंश में इस महासंगति का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्तान्त लिखा है। उसके अनुसार इसमें सम्मिलित भिक्षुओं ने बुद्ध की शिक्षाओं को तोड़मोड़ कर धर्म-ग्रन्थों की नई व्याख्या शुरू कर दी। भगवान् बुद्ध के वास्तविक अभिप्राय को भुला कर मनमाने अर्थ करने प्रारंभ कर दिये। परिणाम यह हुवा कि बौद्ध-धर्म में दो बड़े भाग होगये। इस 'महासंगति' में सम्मिलित भिक्षु एक नये सम्प्रदाय में परिवर्तित होगये, जिसे 'महासांघिक'' कहा जाता है। ये लोग पुराने सनातन विचार रखने वाले सम्प्रदाय को 'थेरवाद' वा स्थविरों (Conservatives) का सम्प्रदाय और अपने आपको 'आचार्य-वाद' वा विद्वानों (Learned) का सम्प्रदाय कहने लगे।

इस तरह वैशाली की महासभा के बाद बौद्धधर्म में पहली फूट (Schism) होकर थेरवाद और महासांघिक (आचार्यवाद) सम्प्रदायों का जन्म हुवा। थेरवाद का दूसरा नाम 'विभज्यवादिन्' सम्प्रदाय भी है। यह फूट की प्रक्रिया यहीं समाप्त नहीं होती। हम देखते हैं, कि इन दो सम्प्रदायों से और अनेक सम्प्रदायों की उत्पत्ति होती है। तिब्बती ग्रन्थ भव्य के अनुसार वैशाली की महासभा के पश्चात् बौद्धधर्म १८ सम्प्रदायों में विभक्त होगया। धीरे २ महासांघिक सम्प्रदाय ८ भागों में और थेरवाद सम्प्रदाय १० भागों में विभक्त होगया। महासांघिक सम्प्रदाय के ८ भाग निम्न-लिखित हैं—

(१) महासांघिक
(२) एकव्यावहारिक
(३) लोकोत्तरवादिन्
(४) बहुश्रुतीय
(५) प्रज्ञप्तिवादिन्
(६) चैत्यिक
(७) पूर्वशैल
(८) अवरशैल

इसी तरह स्थविरवाद वा थेरवाद निम्नलिखित दस सम्प्रदायों में विभक्त हुवा—

(१) स्थविर या हेमवत
(२) सर्वास्तिवादिन् या हेतुविद्य
(३) उत्तरीय व संक्रान्तिवादिन्
(४) सद्धर्मवर्षक या काश्यपीय
(५) वत्सीपुत्रीय
(६) धर्मोत्तरीय
(७) भद्रायनीय
(८) सम्मतीय
(९) महीशासक
(१०) धर्मगुप्तक

इन सम्प्रदायों के सिद्धान्त क्या थे और ये किस प्रकार विभक्त हुवे, इसे यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। ३६७ ई० पू० से लेकर २४६ ई० पू० तक-एक सदी के लगभग समय तक-बौद्धधर्म इसी प्रकार नानाविध सम्प्रदायों में विभक्त होता रहा। उसे मिला कर एक करने के लिये-उसमें नई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्फूर्ति उत्पन्न करके लिये कोई प्रयत्न नहीं किया गया। इस बीच में बौद्धधर्म की उन्नति बहुत कुछ रुक सी गई। सम्पूर्ण उत्तरीय भारत में भी बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार नहीं हुवा। मध्य और प्राच्यदेशों के बौद्ध भिक्षुओं ने परस्पर वादविवाद और साम्प्रदायिक झगड़ों में ही अपनी शक्ति को लगा दिया।

तृतीय महासभा

२४६ इ० पू० में इस अवस्था को दूर करने के लिए आचार्य मोद्गलिपुत्र तिष्य ने प्रयत्न किया। इस समय प्रायः सम्पूर्ण भारत मगधसाम्राज्य के अधीन हो चुका था। प्रताप शाली मौर्य्य सम्राट् भारत में राजनीतिक एकता स्थापित करने में समर्थ हुवे थे। सम्राट् अशोक स्वयं बौद्ध था। उसके शान्तिमय और 'धम्म' प्रचार में निरत शासन में बौद्ध सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बांधकर सम्पूर्ण संसार में भगवान् बुद्ध की शिक्षाओं को फैला देने की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। इस का नेता आचार्य मोद्गलिपुत्र तिष्य बना। उसने पाटलिपुत्र में अशोक की सहायता से बौद्ध भिक्षुओं को एकत्र किया। आचार्य तिष्य थेरवाद सम्प्रदाय (विभज्यवादिन्) का था, अतः इस महासभा में भी इसी सम्प्रदाय व इस के अन्तर्गत सम्प्रदायों के भिक्षुओं को एकत्रित किया गया था। महासांघिक सम्प्रदाय के जो बहुत से भिक्षु इस महासभा में सम्मिलित होने के लिए आगये थे, उन्हें 'मिथ्या भिक्षु' समझ कर बहिष्कृत कर दिया गया। इस प्रकार जो भिक्षु बहिष्कृत हुवे, उनकी संख्या महावंश के अनुसार ६० हज़ार है। अब यह महासभा केवल एक दल वा एक सम्प्रदाय की ही रह गई। दूसरा मुख्य सम्प्रदाय इस में न रहा। मालूम पड़ता है कि महासांघिक और थेरवाद-इन दो सम्प्रदायों में मतभेद इतना बढ़ चुका था, कि उसे दूर कर सकने की कोई सम्भावना नहीं थी। इसी लिए मौद्गलपुत्र तिष्य ने थेरवाद के आन्तरिक भेदों को दूर करना ही पर्याप्त समझा था। इस के लिए प्रयत्न करने और धार्मिक विचार के लिए १००० विद्वान् भिक्षुओं को चुन लिया गया। पाटलिपुत्र के प्रसिद्ध आशोकाराम में ये विद्वान् भिक्षु ९ मास तक सभा करते रहे। अन्त में उनके आन्तरिक भेद मिट गये और आचार्य तिष्य ने सब विवादग्रस्त विषयों पर निर्णय देने के लिए एक ग्रन्थ तैयार किया, जिस का नाम 'कथावत्थु' है। इस में थेरवाद सम्प्रदाय के सब विवाद ग्रस्त विषयों पर व्यवस्था दी गई है।

इस महासभा में थेरवाद सम्प्रदाय के आन्तरिक भेदों को ही मिटाने का प्रयत्न नहीं किया गया अपितु बौद्धधर्म को विश्वव्यापी धर्म बनाने के लिए बड़ा भारी आयोजन किया गया। सर्वत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए ९ प्रचारक मण्डल तैयार के किए गये। इन प्रचारक मण्डलों तथा उन्हें समर्पित देशों की सूचि इस प्रकार है—

देश	मण्डल का नेता
कश्मीर और गान्धार	मज्झन्तिक
महीशमण्डल (माइसूर)	महादेव
बनवासी (उत्तरीय कनारा)	रक्खित
अपरान्तक (बम्बई का उत्तर तट)	योनक धर्मरक्खित
महारट्ठ (महाराष्ट्र)	महारक्खित
योन (भारत से उत्तरपश्चिम के प्रदेश)	मज्झिम, कस्सप
सुवन्न भूमि (पेगू और मौलमीन)	सोण, उत्तर
लङ्का (सीलोन)	महिन्द

इन प्रचारकों ने किस प्रकार बौद्धधर्म का विभिन्न देशों में विस्तार किया, इस पर प्रकाश डालने की कोई आवश्यकता नहीं है। इतना लिखना पर्याप्त है, कि इसी तृतीय महासभा के द्वारा थेरवाद सम्प्रदाय का विस्तार प्रारम्भ हुवा, और इसी से बौद्धधर्म में एक ऐसी शक्ति उत्पन्न हुई, जिस से कि वह विश्वव्यापी धर्म बन गया। इस दृष्टि से तृतीय महासभा का बड़ा महत्त्व है।

चतुर्थ महासभा

बौद्धधर्म की चतुर्थ महासभा सम्राट् कनिष्क के शासनकाल में ईसा के एक सदी पश्चात् हुई। कनिष्क कुशानजाति का प्रसिद्ध सम्राट् हुवा है। इसका राज्य सम्पूर्ण पश्चिमीय भारत के सिवाय अफ़गानिस्तान, कान्धार, काशगर, यारकन्द और खोतान तक विस्तृत था। पाटलीपुत्र और तिब्बत तक भी कनिष्क की सेनाओं ने विजय यात्रा की थी। इस शक्तिशाली सम्राट् ने बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित होकर बौद्धधर्म को स्वीकृत कर लिया। इसके गुरु का नाम आचार्य पार्श्व था। बौद्धधर्म का अनुशीलन करते हुवे कनिष्क ने अनुभव किया कि धार्मिक ग्रन्थों में अनेक मतभेद उपलब्ध होते हैं। नानाविध सम्प्रदायों की सत्ता ने उसके हृदय को आन्दोलित कर किया और इसी लिए अपने गुरु आचार्य पार्श्व की सलाह से उसने बौद्धधर्म की चतुर्थ महासभा का आयोजन किया। यह महासभा काश्मीर की राजधानी श्रीनगर में हुई। बहुत बड़ी संख्या में भिक्षु लोग एकत्रित हुवे। परन्तु सभा के लिये ५०० विद्वान् भिक्षुओं को चुन लिया गया। आचार्य वसुमित्र सभापति चुने गये तथा उपसभापति के पद पर आचार्य अश्वघोष को नियत किया गया। इस महासभा में बौद्धधर्म के सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गम्भीर अनुशीलन किया गया और पिटक ग्रन्थों की नई व्याख्या की गई। सूत्र पिटक की व्याख्या के लिए उपदेश शास्त्र, विनयपिटक की व्याख्या के लिए विनय विभाषाशास्त्र, अभिधर्म पिटक की व्याख्या के लिये अभिधर्मविभाषा शास्त्र नाम की टीकायें तैय्यार की गईं। प्रत्येक प्रश्न पर इन टीकाओं में विचार किया गया। सम्राट् कनिष्क की आज्ञा से इन ग्रन्थों को ताम्रपत्रों पर खुदवा कर एक मजबूत सन्दूक में बन्द कर रखवा दिया गया और ऊपर से एक स्तूप का निर्माण कर दिया गया। यह स्तूप श्रीनगर के समीप ही बनवाया गया था।

बौद्धधर्म के इतिहास में इस चतुर्थ महासभा का बड़ा महत्त्व है। महायान और हीनयान इन दो सम्प्रदायों का स्पष्ट भेद इसी महासभा के पश्चात् हुवा। इस विषय पर हम फिर कभी प्रकाश डालने का यत्न करेंगे।

जीवन-पथ

(श्री शंकर)

जीवन पथ में कहीं किसी के-
साथी तुम भी बनते जाना।
यदि न किया उपकार किसी का
पर अपकारी ना हो जाना॥

श्रावण की घनघोर घटा में,
झँझा वातों की विपदा में,
चञ्चु उठाये चातक को तुम,
एक बूँद ही बस दे जाना॥

* * * * * *

जीवन के गुरुतर भावों से,
झुके हुए जो जन जाते हैं।
उन वृद्धों की आश्रय लठिया,
बन कर आश्वासन दे जाना॥

* * *

स्वतन्त्रता के रण में डट कर,
वैरी दल के दिल दहला कर।
मातृभूमि के जय घोषों से-
स्वर्गासन को थर्रा जाना॥

जीवन-पथ से विचलित होकर,
घोर निशा में भटक रहे हों।
भग्न-हृदय उन भ्रान्त जनों को,
ज्योति-दीप दिखलाते जाना॥

* * * * * *

सेवा-पथ है दुर्गम राही!
इस जीवन का सार यही है।
जग में आकर यह न किया तो,
निष्फल मानव तन में आना॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसम का बदलना !

[लेखक— पं० वागीश्वर जी विद्यालंकार]

(१)

"नहीं, यह हरगिज़ न होगा। हुसैन! मैं अपने मालिक के साथ नमकहरामी नहीं कर सकता। लाला ने बचपन से मुझे पालापोसा है। मैं उन्हें दग़ा नहीं दे सकता। मैं कुछ पढ़ा-लिखा भले ही नहीं हूं पर यह मैं ख़ूब जानता हूं कि बुराई बुराई ही है चाहे वह मुसलमान के साथ की जावे, चाहे ग़ैर मुसलमान के।"

हुसैन ने कहा—"मौसम! तुम बड़े कमज़ोर दिल के आदमी हो। ऐसे सबाब का मौका तुम्हें हासिल है पर तुम हिचकिचाते हो और बगलें झाँकते हो! देखो, लाला रूपचन्द ने आज अब्दुल्ला को बरख़ास्त किया है, कल अहमद का नम्बर होगा और परसों तुम्हारी भी बारी आसकती है। लाला इस बात पर आमादा मालूम होते हैं कि और हिन्दुओं की तरह वे भी अब किसी मुसलमान को नौकर न रक्खेंगे। अच्छा यही सही। हम भी देख लेंगे।"

मौसम ने कहा—"भाई! अब्दुल्ला ने जब लाला के काम में कई बार बेई-मानी की तो लाला ने मजबूरन उसे अलग किया है। इस बेईमानी को तो कोई मुसलमान मालिक भी बरदाश्त नहीं कर सकता। इसमें लाला का क्या कसूर है?"

हुसैन—"काफ़िर को धोखा देना गुनाह में शामिल नहीं।"

मौसम—"हुसैन! क्या मुसलमानों के सिवाय सभी काफ़िर हैं? अगर यह ठीक है तब तो खुद रसूल साहब के माँ बाप भी काफ़िर ठहरेंगे। क्या तुम उनकी इज़्ज़त नहीं करते हो।"

हुसैन—"इस सबका क्या मतलब है?"

मौसम—"इसका मतलब यह है कि सारे अच्छे आदमी मुसलमानों में ही नहीं होते। इस्लाम से बाहर भी बहुत नेक आदमी हो सकते हैं। मेरे मालिक भी उन्हीं में से एक हैं। मैं उन्हें काफ़िर नहीं समझता।"

हुसैन—(ज़रा जोश में आकर) "मौसम! तुम अजीब खोपड़ी के आदमी हो। यहाँ अपनी समझ की बात ही क्या है। हमें तो कुरानपाक का हुक्म पत्थर की लकीर है। उसके मुताबिक अगर खुद मुहम्मद साहब के बाप भी काफ़िर ठहरें तो हमारे लिये वे वैसे ही हैं जैसे और हिन्दू वगैरह। अगर ज़रूरत पड़े तो हम उनके साथ भी वैसे ही पेश आवें जैसे कि और काफ़िरों के साथ आते हैं। ख़ैर यह सब रहने दो। हमारे मज़हब में अकल का दख़ल नहीं। हरेक आदमी सयाना नहीं हो सकता। इसलिये जो राह सयाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलावें उसपर चलना हम सब का फ़र्ज़ है। अब मतलब की बात करो। मैं 'हाँ' या 'ना' में जबाब माँगता हूं। बोलो, तुम सरला को चाहते हो या नहीं।"

अब तो मौसम चक्कर में पड़ गया। सरला की भोलीभाली सूरत उसकी आँखों के सामने नाचने लगी। यह प्रश्न उसके लिये बिल्कुल नया था। अभी तक मौसम खुद भी ठीक ठीक न जानता था कि वह सरला को चाहता है या नहीं। वह सरला के साथ बहुत दिनों खेला है। वह उससे अब भी उसी तरह मुहब्बत करता है। वह नहीं चाहता कि सरला का तनिक बाल भी बाँका हो। पर इन सब शुभ-कामनाओं के पीछे कोई और भी छुपा हुवा भाव काम कर रहा है या नहीं यह उसे खुद मालूम न था। पर आज हुसैन के ऊपर वाले सवाल ने इस मामले को ऐसे साफ़ कर दिया जैसे कि हवा का एक झोंका बादल को हटा कर आसमान को साफ़ करदे। मौसम ने अपने दिल को बारबार टटोला तो भी उसे उसमें एक ज़र्रा भी खुदगर्ज़ी का निशान न दीखा। उसने कड़क कर जवाब दिया—"हुसैन! मैं सरला को नहीं चाहता। मैं उसे अपनी छोटी बहिन की तरह प्यार ज़रूर करता हूं। मेरी यह दिली ख़्वाहिश है कि मैं किसी तरह भी उसका कुछ भला कर सकूं। पर मैं उसे उन मायनों में नहीं चाहता जिनमें कि तुम सवाल कर रहे हो।"

हुसैन—"मौसम! मैं देखता हूं कि हिन्दू की रोटी खाकर तुममें भी वहम का माद्दा बहुत बढ़ गया है। इसका नतीजा तुम्हारे लिये ही बेहतर न होगा। तुम फिर भी हमारी बात मानोगे। फ़ज़ूल वक़्त क्यों खोते हो। अभी बहुत से काम बाकी हैं। मैं पहिले पहिल तुम्हारे ही पास आया हूं। तुम बिसमिल्ला ही ग़लत किये देते हो। देखो इसमें तो शक है ही नहीं कि मेरे आदमी हिन्दू मुहल्लों में आग लगावेंगे, उनकी औरतों और लड़कियों और बच्चों को भगायेंगे और उनके बाज़ारों को लूटेंगे। तुम सारी उमर नौकरी करके जो नहीं पा सकते वह सिर्फ़ दो घण्टे के फेर में पाजावोगे। लाला रूपचन्द लखपति आदमी हैं। उनकी दौलत का एक बहुत बड़ा हिस्सा तुम्हारे हाथ लगेगा। उनकी परीजमाल लड़की तुम्हारी बीबी बनेगी। बोलो और क्या चाहते हो? इतनी बड़ी नियामत को ठुकराना अक़्लमन्दी का काम न होगा। सरला को तुम कबूल न करोगे तो वह ज़रूर ही किसी और मुसलमान के पल्ले बाँध दी जावेगी। उसकी तो किस्मत में यही बदा है; और यही होकर रहेगा। हाँ, तुम अलबत्ता ऐसे मौके से हाथ धो बैठोगे और पीछे अपनी बेवक़ूफ़ी पर पछताओगे। तुम मेरे दोस्त हो इसीलिये मैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे साथ इतनी मन्थापच्ची कर रहा हूं। अब तो तुम सरला के साथ निकाह करके ही उसका भला कर सकते हो और किसी तरीके से नहीं।"

यह सब कुछ सुनकर मौसम चौंक पड़ा। उसने अपने आपको एक अजब शशोपञ्ज में पड़ा हुआ पाया। वह कुछ देर तक चुपचाप खड़ा सोचता रहा। आख़ीर में उसने मन-ही-मन उस साज़िश का भण्डाफोड़ करना ही तय किया। उसने यह पक्का इरादा कर लिया कि वह ठीक मौके पर, यानि मुहर्रम के दिन ही, अपने मालिक को और दारोग़ा साहिब को इसका भेद देदेगा। मगर ऐसा करने में उसे अपनी जान जाने का पूरा ख़तरा है क्योंकि बदमाश उसे हरग़िज जीता न छोड़ेंगे। उस ने हुसैन से पूछा—"भाई मुझे इस काम में कोई आगापीछा नहीं। मगर हरेक काम के सारे पहलुवों पर पहिले ही ग़ौर कर लेना दानाई है। मैं डरपोक नहीं हूँ। मगर सिर्फ़ दूर-अन्देशी के ख़याल से एक बात पूछता हूँ।"

हुसैन—"बड़े शौक से पूछो।"

मौसम—"अगर हम में से कोई फूट पड़े या और ही किसी तरह से हिन्दुओं को या सरकार को ही हमारी इस चाल का पता चल जावे तब तो बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा।"

हुसैन—"बस इतनी ही सी बात है। इसीलिये तुम इतने कतराते हो। यह तो कुछ भी बात नहीं। बेफ़िक्र रहो। सब बन्दोबस्त पक्का है। यह तो तुम जानते ही हो कि सारी पुलिस, मय दारोग़ा साहिब के मुसलमान है। उस पर तुर्रा यह कि डिप्टी साहिब भी मुसलमान हैं। अब तो "सैय्याँ भये कोतवाल फिर डर काहे का" तिस पर भी दारोग़ा साहिब ने ख़ुद मदद करना कबूल कर लिया है।"

मौसम ने देखा कि अब कोई चारा नहीं है। होनहार ज़बरदस्त है। उसके आगे सिर झुकाना ही पड़ेगा। उसने मन-ही-मन कुछ सोचा और अन्त में कहा—"अच्छा देखा जावेगा"। हुसैन ने ताना देते हुये कहा—"अब आये बच्चू सीधे रास्ते पर। मैंने पहिले ही कहा था कि 'मियाँ जी पछतायेंगे वही चने की खायेंगे' अब भी तो कबूल करना ही पड़ा। देखो, तुम बड़े ख़ुशकिस्मत हो। ख़ुदा ने चाहा तो तुम देखते ही देखते एक बहुत बड़े आदमी बन जावोगे। अच्छा, अब आराम करो। मैं कल फिर मिलूंगा।"

(२)

लाला रूपचन्द शहर के नामी ग्रामी रईसों में से हैं। लक्ष्मी की भी आप पर विशेष कृपा है। ज़मींदारी और लेन-देन के साथ २ सर्राफ़े की एक दूकान भी ख़ूब अच्छी चल रही है। सब लोग आपकी इज़्ज़त करते हैं। आप की आयु अब लगभग चालीस साल के होगी। सन्तान केवल एक कन्या है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसका नाम है-सरला। सरला को यदि पूर्णयुवती नहीं कहा जासकता तो इसमें भी सन्देह नहीं वह अब बालिका नहीं है। वह देखने में १४, १५ साल की मालूम होती है। लाला जी उसे बहुत प्यार करते हैं। उसकी शिक्षा-दीक्षा का भी विशेष ध्यान रखते हैं। आपके विचार बहुत उदार हैं। हिन्दु होते हुवे भी, हिन्दुओं की सम्मति में आप मुसलमानों से विशेष सौहार्द रखते हैं। रामलीला के चन्दे के लिये कभी तंग हाथ होने की शिकायत भले ही करदें पर खिलाफ़त के फंड में जी खोल कर देते हैं। चारों ओर से जब हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों के समाचार आते हैं तो आप उनकी उत्तरदायिता हिन्दुओं पर ही डालने की भरसक कोशिश करते हैं। यह स्वीकार करने में भी आप संकोच नहीं करते कि इन झगड़ों का मूल कारण हिन्दुओं की ज़्यादती ही है, जो उन्होंने शुद्धि और संगठन का आन्दोलन चलाकर मुसलमानों पर की है। अपने इन विचारों के लिये उन्हें कभी २ अपने जातिभाइयों के आक्षेप भी सुनने पड़ते हैं तथापि आप अपने विचारों पर दृढ़ हैं।

आपका यह भी विचार है कि ज़मींदारी के काम में हिंदू कर्मचारी उनकी उतनी सहायता नहीं कर सकते जितनी कि मुसलमान। इसीलिये लगान आदि वसूल करने के लिये उन्होंने प्रायः सारे मुसलमान नौकर ही रख छोड़े हैं। उन्हें अपने इन कर्मचारियों पर पूरा विश्वास है। प्रश्न उठने पर वे प्रायः कहा करते हैं कि दुनियाँ भरके मुसलमान अपने मालिकों को भले ही धोखा देदें पर ये मेरे आदमी ऐसा नहीं कर सकते। मैं इन्हें २०, २० बरसों से आजमा रहा हूं। अजी मैं तो आँख देखकर नस्ल पहचानता हूँ-इत्यादि। उनका यह भी विचार है कि मुसलमान कर्मचारी अपनी मुस्तैदी से जितना फ़ायदा अपने मालिक को पहुंचाता है उसके एवज़ में यदि वह अपनी मुट्ठी भी गरम करले तो कुछ हर्ज़ नहीं क्योंकि एक हिंदू नौकर से वह फिर भी सस्ता पड़ता है। यद्यपि उन्होंने अभी कुछ दिन हुवे अपने एक नौकर अब्दुल्ला को कई वार ठीक हिसाब न देसकने के कारण अलग कर दिया है तथापि उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुवा है।

मौसम पर उनकी विशेष कृपा है। उसके माँ बाप जुलाहे का काम करते थे और उनके ही किसी गाँव की रैयत थे। बहुत दिन हुवे कि बीमारी में दोनों को ही अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा। उस वक्त मौसम ७, ८ बरस का लड़का था। तब से लाला ने उसे अपने घर पर रखकर ही इतना बड़ा किया है। वह लालाजी का ख़ास नौकर है। उसके लिये मकान, दुकान, बाहर भीतर कहीं बन्दिश नहीं है। अपनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ास तालियाँ भी उसके हाथ में देते हुये उन्हें संकोच नहीं होता। मौसम भी उन्हें अपने बाप से बढ़कर मानता है। लाला के नौकरों के साथ वह अलग जगह नहीं रहता घर पर ही खाना खाता है और बाहरली बैठक में सो रहता है। वह और सरला साथ २ खेले हैं। दोनों ही आपस में एक दूसरे को भाई बहिन की तरह प्यार करते हैं। धर्म का भेद उनके मेल मिलाप में कोई दीवार खड़ी नहीं करता। मौसम प्रायः कहा करता है कि परमेश्वर ने किसी भूल से उसे मुसलमान घर में जन्म देदिया है। वह नाम मात्र को ही मुसलमान है क्योंकि उसका रहन-सहन खाना पीना सब हिन्दू ढंग का ही है। उसका यह काफ़िरपना उसके जातिभाइयों को बहुत खटकता है। इधर कुछ दिनों से हुसैन नाम के एक कसाई ने उससे बहुत मेलमोल पैदा कर लिया है। हुसैन के मां बाप कसाई ज़रूर थे मगर हुसैन का दिमाग़ तेज़ था, वह कुछ पढ़कर म्युनिसपैलिटी में नौकर होगया था। सड़कों का काम उसके हाथ में था। मगर रिश्वत ख़ोरी के कसूर में उसे वहाँ से अलग कर कर दिया गया। तब से उसने मिट्टी के तेल की दूकान करली है। शहर भर के गुण्डों का वह सरदार समझा जाता है। हिन्दुओं से उसे ख़ास नफ़रत है क्योंकि कुछ हिंदू मैम्बरों की वजह से ही उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ा था। इसी मुहर्रम के मौके पर हिंदुओं की दुकानें लूटने तथा उन्हें नीचा दिखाने के लिये उसने एक बड़ा गिरोह तैय्यार कर लिया है। उसी गिरोह में मौसम को भी शामिल करने के लिये वह कल कोशिश कर गया है। बाज़ार में जहाँ २ मुसलमानों की दुकानें थी वहीं २ लाठियों और छुरों का प्रबन्ध होरहा है।

(३)

जुम्मे की नमाज़ ख़तम होचुकी तो एक मशहूर लीडर वाज़ के लिये खड़े हुवे। आपने कहा—"भाइयो! आज इस्लाम की हस्ती ख़तरे में पड़ी हुई है। मुसलमानों की ज़िन्दगी या मौत का सवाल सिर पर है। इन मुट्ठी भर आर्यों ने हमारी नाक में दम कर रक्खा है। इनकी देखादेखी हिंदुओं की बासी कढ़ी में भी उबाल आया है। इन्होंने भी संगठन और शुद्धि के काम में हाथ लगाया है। यही हालत रही तो वह दिन दूर नहीं कि हिंदुस्तान में काफ़र-ही-काफ़र नज़र आवेंगे। ख़ुदा के बन्दों को यहाँ एक पल भर ठहरना मुश्किल होजावेगा। क्या तुम्हें यह मंज़ूर है कि जिस बड़े मुल्क को हमारे बुज़ुर्गों ने अपना ख़ून बहा कर हमारे ऐशोआराम के लिए फ़तह किया था आज उसमें तुम्हें हिंदुओं के रहम का भिखारी होकर रहना पड़े। वे चाहें तो तुम उनके गुलाम बनकर किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोने में अपनी हेच ज़िन्दगी के दिन पूरे कर सको नहीं तो अपना बोरिया बँधना उठाकर यहाँ से कूच करना पड़े। क्या तुम्हें मंजूर है कि कल जो तुम्हारे पैरों की जूतियाँ चाटते फिरते थे वे ही आज तुम्हारी छाती पर मूंग दलें।"

"नहीं-नहीं, यह हमें हरगिज़ मंजूर नहीं।"

"क्या तुमने हिंदुओं को तलवार के ज़ोर से फ़तह नहीं किया था?"

"क्यों नहीं किया था?"

"तो क्या उस इस्लामी तेग़ को अब जंग लग गया?"

"नहीं-नहीं, यह तेग़ अब भी काफ़िरों के ख़ून की वैसी ही प्यासी है।"

"अच्छा, तो मैं देखता हूँ कि अब भी तुममें ज़िन्दगी के निशान बाक़ी हैं। तुम मर नहीं सकते। मगर हाँ, इस वक़्त भी तुम्हें हिंदुओं के दिल पर अपना रोब फिरसे जमाने के लिये जी तोड़कर यत्न करना पड़ेगा। इसके लिये ख़ून ख़राबी से भी नहीं डरना होगा। अब मौलाना हुसैनबख़्श आपके रूबरू मुहर्रम के जुलूस के मुतल्लिक अपने ख़यालात का इज़हार करेंगे। मुझे उम्मीद है कि आप उनकी तजवीज़ों पर ज़रूर ग़ौर फ़रमायेंगे।"

इसके बाद हमारा पूर्व परिचित हुसैन खड़ा हुआ और उसने थोड़े से, मगर बहुत ही गैरज़िम्मेवार शब्दों में, लोगों के वहिशयाना जोश को भड़का दिया। कुरान के हवाले देदेकर उसने लोगों को समझाया कि काफ़िरों का सब कुछ तुम्हारे लिये हलाल है। उसने यह भी कहा कि काफ़िरों के साथ मेल मिलाप रखने और उनकी नौकरी करने से दोज़ख़ में जाना होता है। जिन्होंने अब तक यह गुनाह ग़लती से या जान-बूझ कर किया है उन्हें चाहिए कि वे अब उससे तोबा कर डालें। इस काम के लिये मुहर्रम से बढ़कर और कौनसा मौका होगा। एक काफ़िर के ख़ून या एक काफ़िर औरत के साथ निकाह से ही यह पाप धुल जासकता है-इत्यादि। अख़ीर में उसने ख़ुदा और कुरान के नाम लोगों को कसम दिलवाई कि वे अपने वायदे पर पक्के रहेंगे और इस कार्रवाई का भेद किसी को न देंगे।

(४)

मौसम को सरला के सामने जाने और उस से बात चीत करने का साहस और दिनों की तरह आज न हुवा। उसे अपनी अन्तरात्मा रह रह कर धिक्कारती थी। जो पाप करने का निश्चय उसने आज कर लिया था वह उसे बार बार लज्जित करने लगा। उसके शरीर में ख़ून तेज़ी से चक्कर काटने लगा। अब बैठक में अधिक बैठना उसके लिये असम्भव हो गया। वह उठा और कम्पनी बाग़ में आकर छाया में पड़ी एक बैञ्च पर बैठ गया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने सोचा कि यदि यह काम बुरा नहीं तो मेरा दिल इतना डरता क्यों है।

सुमति— मौसम ! यह काम वस्तुतः बुरा है। जिसके सोचने से भी तुम्हें इतनी बेचैनी हो रही है उस के कर लेने से तुम्हारा क्या हाल होगा ?

कुमति— कितने ही अच्छे काम भी जब पहिले पहिल शुरु किये जाते हैं उन में घबराहट सी मालूम होती है। कुछ समय बाद वह हट जाती है।

सुमति— रात के अंधेरे में मैले और साफ़ कपड़े में भेद नहीं मालूम होता, इसका यह मतलब नहीं कि मैला कपड़ा मैला ही नहीं।

कुमति— यदि तुम्हें इतनी ही शंका है तो अपने सुख स्वप्नों पर ख़ाक डालो। कोल्हू के बैल की तरह सारी उमर तुम्हें पिसना ही पसन्द है तो मेरे पास तुम्हारे लिये कोई इलाज नहीं। सरला की काली नागिन सी ज़ुल्फ़ों को भूल जावो। लाला की खनखनाती हुइ थैलियों को भूल जावो। चैन से जिन्दगी बसर करने के मन्सूबों को भूल जावो।

सुमति— हां भूल जावो। पाप के पेड़की जड़ गहरी नहीं होती। तुम्हें इन चीज़ों को लेकर क्या करना है। जिस लाला रूपचन्द को तुमने बाप से बढ़ कर माना है, जिसने तुम्हारी अब तक परवरिश की है उसे धोखा देना कहां तक ठीक है। सरला तुम्हें भाई की तरह प्यार करती है। जब तुम राक्षस बन कर उसके सामने जावोगे तो उसे कितना दुःख होगा ?

कुमति— तो, अच्छा मैं जाती हूं। तुम धर्म पर दृढ़ रहो और दर दर जूतियां चटकाते फिरो। तुम्हारी किस्मत ही ऐसी है। सरला तुम्हारे देखते २ दूसरे की बीबी बनेगी-तुम उसके कोई न होगे। मछली पानी के अन्दर भी प्यासी रहे तो किसी और का क्या दोष है। अपना बोया अपने आप काटो।

अबतो कुमति की विजय हुई। मौसम अब भी सब कुछ छोड़ सकता है लेकिन सरला का ख़याल छोड़ना शायद उसके लिये असम्भव है। परमात्मा के सबसे नाज़ुक लेकिन सब से मज़बूत जाल में उस का दिल उलझ गया। वह एक बन्द गाड़ी साथ लिये घर-पर पहुँचा। भीतर जाकर उसने सरला से कहा-"बहिन ! कल मुहर्रम का दिन है। शहर भर बड़ा भारी दंगा होने की अफ़वाह गरम है। इस लिये लाला जी दुकान से उठ कर सीधे शहर से बाहर वाली कोठी में चले गये हैं और उसकी सफ़ाई वगैरह करवा रहे हैं। मुझे तुम्हारे लेने के लिये यहां भेजा है। अब देर का काम नहीं। गाड़ी तय्यार खड़ी है। कपड़े पहिरो और चल बैठो।" सरला को अपने चिरसंगी, विश्वास-पात्र, भ्रातृतुल्य सेवक पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं था। वह सीधे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभाव से गाड़ी में जा बैठी। गाड़ी रवाना हुई और कुछ ही देर में किसी मुसलमानी मुहल्ले में एक घर के आगे जा लगी। अब सरला को मालूम हुवा कि उसे धोखा दिया गया है। किन्तु अब रक्षा का क्या उपाय है। हाय, अभागी सरला!

(५)

सारे शहर में कुहराम मचा हुवा है। लोग दुकान बढ़ा २ कर अपने घरों की ओर भागे जा रहे हैं। पकड़ो मारो का शोर मच रहा है। बदमाश लोग घन बजा २ कर ताले तोड़ते हैं और बहुमूल्य वस्तुयें, कपड़े, लोहे की पेटी वग़ैरह को ठेलों पर लाद २ कर ले जा रहे हैं। लूटपाट करके दुकान में आग लगा देते हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं।

लाला रूपचन्द दुकान बन्द करही रहे थे कि इसी समय कुछ आदमियों के साथ मौसम भागा हुआ वहाँ आपहुंचा। लालाजीने पूछा—क्या बात है मौसम!

मौसम ने कहा—"लालाजी आप फ़िकर न करें। मेरे जीते जी आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता। यह कहते हुवे मौसम ने लालाजी को दुकान से बाहर धकेल दिया और तिजोरी को खोल डाला। नीचे गिरते गिरते लालाजी ने बड़ी करुणापूर्ण दृष्टि से मौसम की ओर देखते हुवे कहा—"मौसम! क्या तुम भी ऐसे होगये।" उस बदमाश ने कड़ककर कहा—"लाला जी! अब मौसम बदल गया है।"

सारे बाज़ार में गुण्डेशाही का राज्य था। किसी को किसी का डर न था। ये बदमाश भी अपने लालच को न रोक सके। इतने रुपये देख कर इनकी आँखें खुल गईं। नोटों की गड्डियाँ निकाल २ कर ये वहीं बँटवारा करने लगे। लालाजी का किसी को ख़याल ही न रहा। लालाजी ने भी मौका देख धीरे से संकल चढ़ा दी। अब बदमाशों को अपनी भूल पर पछताना पड़ा। वे भीतर से ही किवाड़ तोड़ने की कोशिश करने लगे पर फल कुछ न हुवा। पुलिस ने आकर सबको गिरिफ़्तार कर लिया।

* * *

शहर के लोगों में अब जब कभी इस दंगे की चर्चा चलती है तो कुछ लोग कहते हैं कि इन बदमाशों के पकड़े जाने में ईश्वर का हाथ था कुछ कहते हैं कि नहीं, मौसम की सुमति कारण थी। ख़ैर कुछ भी हो लालाजी का नशा उतर गया है और सरला का विवाह अपने 'भाई' के साथ नहीं हुवा है।

सम्पादकीय

आर्यसमाज और गोरा अख़बार

बम्बई के 'टाइम्स ऑफ इन्डिया' में उसके किसी सम्वाददाता का एक लेख छपा है जिस पर पत्र के सम्पादक ने निम्न टिप्पणी की है:—

"हमारे संवाददाता की सम्मति में आर्यसमाज ही उन तमाम लड़ाई झगड़ों तथा दंग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जड़ है जो देश के भिन्न भिन्न भागों में बार बार हुआ करते हैं और जिन में गवर्नमेंट निहत्थे आदमियों पर गोली चला कर अत्यन्त निन्दनीय कार्य करती है। आगे चल कर हमारा संवाददाता कहता है कि या तो सरकार को चाहिये कि वह आर्य समाज को बिल्कुल दबा दे और अगर वह ऐसा करने में असमर्थ है और जनता के जानोमाल की रक्षा नहीं कर सकती और शान्ति स्थापित नहीं रख सकती तो उसे चाहिये कि अपनी असमर्थता को खुल्लमखुल्ला स्वीकार करले और शासन का काम एक दम छोड़ दे। हमारी सम्मति में इन जातिगत लड़ाई-झगड़ों के कारणों की जांच ज़रूर करनी चाहिये और साथ ही साथ यह भी जांच करने की जरूरत है कि तंज़ीम, शुद्धि और संगठन इत्यादि आन्दोलनों का देश पर क्या असर पड़ता है। हम अपने संवाददाता के सभी परिणामों को स्वीकार नहीं कर सकते पर इतना अवश्य कहेंगे कि यदि जांच करने पर गवर्नमेंट को यह पता लग जावे कि आर्यसमाज ही तमाम झगड़ों की जड़ है तो फिर बिना किसी हिचकिचाहट के गवर्नमेंट को आर्यसमाज दबा कर बन्द कर देनी चाहिए। ऐसा करने पर अनेक लोग यह आन्दोलन उठायेंगे कि सरकार हमारे धर्म में हस्तक्षेप कर रही है पर इस प्रकार के आन्दोलन से किसी भी गवर्नमेंट को जो अपने को न्याय के पक्ष में समझती है, नहीं न करना चाहिए।"

जब से आर्य-समाज ने देश के कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया है तब से चारों तरफ़ जागृति के चिन्ह दीखने लगे हैं। चारों पहलुओं में देश उन्नति कर रहा है। आर्य समाज ने शिक्षा में, राजनीति में, समाज में क्रान्ति न मचा दी होती तो हिन्दु-धर्म पचास ही साल में इतिहास की चीज़ हो गया होता। इस समय भारत सचेत दीखता है, भारतवासी जगे हुए हैं और यह सब आर्यसमाज की ही सिपाहीगिरी का परिणाम है। भला यह बात भारत के लुटेरों को कैसे पसन्द आ सकती है? चोर कब चाहता है कि घरवाला जाग जाय? इसी लिए समय २ पर हिन्दु जाति के शत्रुओं की तरफ़ से आवाज़ उठती रहती है—'आर्यसमाज को दबाओ, आर्यसमाज ही सब झगड़ों की जड़ है'! मुसलमान आर्यसमाज को दबाना चाहते हैं क्योंकि यह हिन्दुओं को अपने पूर्वजों के धर्म पर दृढ़ रखने में कमर कस कर प्रयत्न कर रहा है; ईसाई आर्यसमाज को अपनी आंखों का काँटा समझते हैं क्योंकि उन के दांव भी यह नहीं चलने देता; सरकार भी आर्य समाज को अपने लिये ख़तरनाक समझती है क्योंकि आर्यसमाज देश की स्वतन्त्रता चाहता है। परन्तु क्या इस देश के शत्रु मिल कर आर्यसमाज को दबा लेंगे? आर्यसमाज पर इस थोड़े से जीवन काल में जितनी विपत्तियां पड़ी हैं और उसने जिस वीरता से उनका मुकाबिला किया है क्या उसे देख कर भी आर्यसमाज के शत्रुओं की आँखें नहीं खुलीं? आर्यसमाज को पाशविक बल से दबाने का स्वप्न लेने वालों को, चाहे वे मुसलमान हों, ईसाई हों या पशुबल की प्रतिनिधि सरकारें हों, याद रखना चाहिये कि आर्यसमाज का प्रवर्तक ऋषि दयानन्द-घुला हुआ काँच पीकर मरा था, आर्यसमाज का सिपाहा लेखराम छुरी खाकर मरा था और आर्यसमाज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्राण श्रद्धानन्द अभी छाती पर गोल खा कर विदा हुआ है। आर्यसमाज देश में क्रान्ति करने के लिये, हिन्दु सभ्यता पर हो रहे आक्रमणों को अपनी छाती पर लेकर उसकी रक्षा करने के लिये जन्मा है और इस काम में आर्यसमाज अपने एक २ बच्चे को न्यौछावर कर देने के लिये तय्यार है। 'टाइम्स' का संवाददाता और सम्पादक शायद दोनों आर्यसमाज के इतिहास से अपरिचित हैं। नहीं तो उन्हें पहले से ही मालूम होना चाहिए था कि आर्य समाज पर की गई एक-एक चोट आर्यसमाज के बल को दुगुना करती चली जायगी और आर्यसमाज की तपस्या का बल उसे सर्वथा अजेय बना देगा।

रही शुद्धि, संगठन और तबलीग की बात। 'टाइम्स' के संवाददाता को विदित होना चाहिए कि शुद्धि और संगठन के शस्त्रों को हिन्दुओं ने अपनी रक्षा के लिये उठाया है। मुसलमान अपने धर्म के पहले दिन से तबलीग करते आये हैं। उन की तबलीग ज़बर्दस्ती भी होती रही है। यदि मुसलमानों की तबलीग और ईसाइयों के मिशन रोके बिना किसी सरकार ने शुद्धि और संगठन को रोकने की बेवकूफ़ी की तो शक्ति के मद से मत्त उस सरकार को पता चल जायगा कि निश्शस्त्र प्रजा भी अत्याचारों से पीड़ित हो कर क्या २ कर सकती है। साथ ही, जब शुद्धि और संगठन का काम हिन्दुओं की प्रतिनिधि सभा हिन्दु महासभा की ओर से हो रहा है तो इस में आर्य समाजियों को सब से अलग कर के गालियाँ निकालने लग जाना कहां की बुद्धिमत्ता है। शुद्धि और संगठन अब हिन्दु-समाज की आर्यसमाज के साथ साझी सम्पत्ति है और उस पर हाथ चलाना बाईस करोड़ व्यक्तियों के अधिकार पर हस्तक्षेप करना है। हमारा विश्वास है कि भारत सरकार ऐसी अन्धी नहीं है कि किसी एक गोरे अख़बार के लिखने से अक्ल खो बैठे अतः हम इस प्रकार के अख़बारों को ही चेतावनी देना चाहते हैं कि वे जो कुछ लिखा करें उस के परिणामों को पहले सोच लिया करें। यदि सरकार ने आर्य समाज को दबाने की किसी प्रकार की नाजायज़ हरकत की तो इतना ही नहीं होगा कि 'अनेक लोग यह आन्दोलन उठाएँ कि सरकार धर्म में हस्तक्षेप क्यों कर रही है'; उस समय जो कुछ होगा उस के लिये 'आन्दोलन' शब्द काफ़ी नहीं होगा। वह आन्दोलन नहीं होगा परन्तु उत्कट तपस्या में शान्ति-पूर्वक अपने खून का बलिदान होगा!

ऋषि दयानन्द का पत्र

१६ दिसम्बर १९२६ के कानपुर के 'प्रताप' में यू० पी० आर्य प्रतिनिधि के अन्तरङ्ग सदस्य पं० अर्जुनदेव जी ने ऋषि दयानन्द का एक अप्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र प्रकाशित करवाया है। उनका कहना है कि उन्हें यह पत्र एक नैपाली से मिला है। इस पत्र में स्वामी जी के हवन, जात पाँत, नियोग, विधवा विवाह तथा स्मृतियों के सम्बन्ध में विचार मिलते हैं। यदि यह पत्र सत्य है, और जो कुछ इस में पाया जाता है उस के युक्ति-युक्त होने में हमें तो कोई सन्देह नहीं दीखता, तो यह पत्र स्वामी जी के उदात्त उदार विचारों का निदर्शक है। पत्र इस प्रकार है:—

विक्रमी संवत् १९४०, कार्तिक बदी प्रथमा

श्रीयुत कल्याणानन्द जी आनन्दित रहो।

रुग्णावस्था के कारण आप के पत्र का उत्तर देने में विलम्ब हुआ। स्वास्थ्य दिन पर दिन ख़राब हो रहा है। विदित होता है कि आपने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन भली प्रकार किया। आपके प्रश्नों का उत्तर क्रमवार दिया जाता है।

(१) यदि प्रति दिन हवन करने का सामर्थ्य न हो तो गृह सन्मुख आवार में अच्छे अच्छे सुगंधित फूल व बूटियों के पौदे लगाने चाहिये। फूल बूटियों के गन्ध से भी वायु शुद्ध होता है। ऐसा आयुर्वेद का मत है।

(२) गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था के विषय में यह आवश्यक है कि वर्तमान जन्म मूलक जात पाँत के बन्धनों को तोड़ कर विवाह हो। इस कार्य की सिद्धि के लिये प्रत्येक प्रान्त की समाजें मिल कर यत्न करें। जन्म-मूलक जात पाँत जब तक कायम है, देश तथा आर्यों की उन्नति नहीं हो सकेगी। जात पाँत तोड़े सिवा वर्णव्यवस्था तो आर्यों के लिये मरण व्यवस्था बन गई है। देखें इस डाकिन से आर्यों का पीछा कब छूटता है।

(३) यदि आपका विचार है कि नियोग की व्याख्या मैंने ठीक नहीं की है, तो मैं आपके समत्यानुसार यह प्रश्न विद्वानों के सन्मुख रख कर उसका यथार्थ अर्थ जो सर्व सम्मति से स्वीकृत होगा, उसे सत्यार्थ प्रकाश की आगामी आवृत्ति में छपवा दूँगा। मैं सदा सत्य को ग्रहण करने के लिये उद्यत हूं। देश की अवस्था को देखते हुए यह उचित है कि अनाथों की रक्षा करना, अनाथ बच्चों को गोद लेकर उन्हें शिक्षा देकर योग्य बनाना, अधिक सन्तान की इच्छा से श्रेयस्कर है। मैं सच्चा नियोग उसे समझता हूं कि "एक पुरुष वा स्त्री ग्यारा अनाथ बच्चों का पुत्रवत् पालन कर उन्हें सुयोग्य बनावें" यही सच्चा नियोग है। स्वास्थ्य ठीक न होने से विद्वानों की सभा अभी नहीं कर सकता।

(४) विधवा विवाह करना न करना स्त्रियों के अधिकार में रखना उचित है। स्त्री जाति को उनके अधिकारों से वञ्चित रखना पाप है। अतः धर्मार्य सभा में जहाँ पुरुष प्रतिनिधि रहें वहाँ स्त्रियाँ भी अपनी उन्नति, अधिकारों की रक्षा, तथा सुधारार्थ प्रतिनिधि रहें। फिर यह प्रश्न निश्चित हो जाना चाहिये कि विधवा तथा रँडुओं को पुनर्विवाह का मार्ग श्रेयस्कर है या नहीं। स्त्रियों की अनुमति सिवाय विधवाओं के लिये कोई भी निर्णय ठीक न होगा। प्राचीन समय में गार्गी, सुलभादि सभाओं में अपने मत देती थीं। अब भी ऐसा ही होना चाहिये।

(५) स्मृतियों के अध्ययन से पता लगता है कि परिस्थिति के अनुसार स्मृतियाँ अर्थात् कानून बदलते रहे हैं। अब भी ब्रिटिश राज्य में नये २ कानून बन रहे हैं। समय चक्र सदा बदलता रहता है। अतः जो कुछ कहा या लिखा, उसे बाबा वाक्यम् प्रमाण् न मानते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ले उसी को चार चीजें मुफ्त इनाम

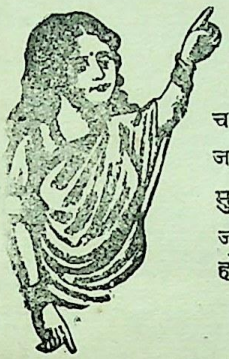

मजलशे हैरान केश तैल

की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ नाना विध नव जात कच्चे पुष्पों की सुमधुर सुगन्धि ऐसी आने लगती है, जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं।

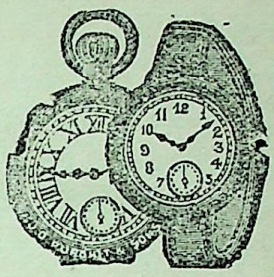

दाम १ शीशीका ।।।) बारह आना

२ शीशी लेने से १ फौन्टेनपेन कलम मुफ्त इनाम। और ४ शीशी लेने से ठण्डा चोताला १ चश्मा मुफ्त इनाम दिया जायगा। और ६) शीशी लेने से १ फैन्सी सौफानी हवाई रेशमी चद्दर मुफ्त इनाम और ८ शीशी लेने से १ रेलवे जेबी घड़ी गारन्टी २ वर्ष वाली मुफ्त इनाम दी जायगी। और १० शीशी मंगाने से १ फैन्सी रिष्टवाच कलाई पर बांधने की घड़ी) मुफ्त इनाम।

डाक खर्च २ शीशी का ।।।) बारह आना जुदा,

४ शीशीका ।।।≡) ६ शीशी का १।) ८ शीशीका १।।) १२ शीशीका २) रु०

इस तैलके साथ ऊपर लिखी हुई इनाम की

चीजें न लेकर सिर्फ तेल की शीशीयें लेनेसे १ ग्रुस १२दर्जनका दाम७२रु०

जो ले उसी को उधार पर माल

कम से कम १२ दर्जन तैल की शीशीयें दाम ७२) रु० की लेने से प्रथम आधे दाम ३६) रु० लेकर माल उधार पर दे दिया जाता है। और बाकी के ३६) रुपये माल के बिकने पर लिये जांयगे। मालको दुकानदार चाहे १ वर्ष ही में बेचे, मगर माल वापस न लिया जायगा

नगद कैश दाम देकर १२ दर्जन लेने से

२५) रुपया सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; किन्तु ध्यान रहे कि तैल के साथ इनाम की चीजें लेने वाले ग्राहकों को, और उधार पर माल लेने वाले दुकानदारों को कुछ भी कमीशन नहीं दिया जाता है।

मिलने का पूरा पताः—

जे०डी० पुरोहित एण्ड सन्स, नं० ७१ क्लाईव स्ट्रीट, कलकत्ता।

प्रो० सत्यव्रत जी प्रिन्टर तथा पब्लिशर के लिये गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में छपा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ सं०
१. तव वन्दन हे नाथ करें हम	२६१
२. कुलपिता श्रद्धानन्द का दीक्षान्त-संस्कार में स्नातकों को उपदेश	२६२
३. कुलपिता श्रद्धानन्द का कुलजन्मोत्सव के समय कुल-पुत्रों को उपदेश	२६४
४. श्रद्धानन्द का बलिदान (कविता)— श्रीयुत बद्रीनाथ जी भट्ट	२६५
५. स्वामी श्रद्धानन्द— डा० रवीन्द्रनाथ जी ठाकुर	२६६
६. स्वामी श्रद्धानन्द की यादगार में— डा० तारकनाथदास जी एम. ए.	२६९
७. स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में शोकाञ्जलि (कविता)— श्रीहरि जी	२७९
८. गुरुकुल का महत्त्व—श्रीमान् राजाधिराज नाहरसिंह जी शाहपुराधीश	२७२
९. संस्कृत, संस्कृति, संस्कार और गुरुकुल— श्री राज्यरत्न आत्माराम जी	२७३
१०. स्वामी जी के चरणों में श्रद्धाञ्जलि (कविता)— श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति	२७७
११. ब्रह्मचर्य—श्री प्रो० धर्मदत्त जी विद्यालङ्कार	२७८
१२. मंत्र—साधन (कविता) साहित्यरत्न श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय	२८८
१३. सहजात प्रवृत्तियें और उनका शिक्षा में स्थान— श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यालंकार	२९०
१४. कुल-भूमि (कविता) श्रीहरि जी	२९४
१५. कुल की कहानी (कविता)	२९५
१६. आश्चर्यमय गुरुकुल	२९८
१७. मेरा तपोवन (कविता) श्री पं० विद्यानिधि जी सिद्धान्तालङ्कार	३०२
१८. गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली—श्री प्रो० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार	३०३
१९. कुल-वन्दना (गीति)	३०६
२०. गुरुकुल-वृक्ष—श्री प्रो० चन्द्रमणि जी	३०७
२१. कुल-गीत	३०८
२२. गुरुकुल कांगड़ी की शाखायें	३०९-३१७
(१) शाखा-गुरुकुल मुलतान	३०९
(२) शाखा-गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३१०
(३) शाखा-गुरुकुल मटिण्डु	३१२
(४) शाखा-गुरुकुल रायकोट	३१३
(५) शाखा-गुरुकुल सूपा	३१५
(६) शाखा-गुरुकुल झज्झर	३१६
(७) कन्या-गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	३१७
२३. गुरुकुल में प्रविष्ट होते हुए पुत्र को पिता का उपदेश—(कविता) श्रीकण्ठ	३१८
२४. महात्मा गुरुकुल और मिस्टर कालेज की बातचीत—श्रीपादराव सातवलेकर जी	३२२
२५. मेरा स्वर्ग (कविता) श्री पं० विद्याधर जी विद्यालङ्कार	३२६
२६. विद्वानों की दृष्टि में गुरुकुल	३२९
२७, ऋषि के जीवन पर एक पृष्ठ— श्रीयुत् प्रेमचन्द जी	३३०
२८. गुरुकुल द्वारा उत्पन्न साहित्य	३३२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए अपनी बुद्धि, विद्या, समय, तथा परिस्थिति का लाभ सबको उठाना चाहिये।

—ह० दयानन्द सरस्वती

स्थान अजमेर

गिरावट की पराकाष्ठा

श्रीयुत् अमृतलाल ठक्कर ने दो पत्र 'हिन्दी नवजीवन' में छपवाए हैं। कठियावाड के एक गांव की घटना है। वहाँ एक अध्यापक जो अन्त्यज जाति के ही हैं रहते हैं। वे ठक्कर महोदय को लिखते हैं:—

प्रथम पत्र

ता० ९-४-२७

नमस्कार के साथ वि० है कि ता० ५-४-२७ को मेरी धर्मपत्नी प्रसूत हुई। ता० ७-४-२७ के दो पहर के बाद वह बहुत बीमार होगई। कई जुलाब हुये और ज़बान भी बंद होगई। सांस बढ़ गया, छाती सूख गई, और पसलियां भी दुखने लगीं। इस लिये मैं यहां के मिहरबान डॉ .....को बुलाने के लिये गया। परन्तु उन्होंने कहा कि मैं ढेडवाडे में नहीं जाऊंगा। ढेड को छूकर उसकी जांच नहीं करूंगा। अन्त में नगरसेठ और गरासिया दरबार को लेकर मैं डॉ० सा० के पास गया। २ नगरसेठ से फीस देना कुबूल कराया तब उन्होंने इस शर्त पर आना कुबूल किया कि मरीज़ को ढेड वाडे से बाहर लाओ तो चलता हूं। दो दिन की प्रसूता जच्चा को ढेड वाडे से बाहर लाया गया। तब डा० साहब ने मुसलमान को थर्मामिटर दिया और उन्होंने मुझे दिया। मैंने उसे लेकर अपनी पत्नी की बगल में रक्खा और निकाल कर फिर मुसल्मान को दे दिया। मुसल्मान ने पुनः उसे डा० सा० को लौटा दिया। उन्होंने अंधेरे में दूर से, बिना देखे ही कह दिया कि इसे न्यूमोनिया हो गया है। रात के आठ बजे होंगे। डा० साहब गये, हम लोग दवा लाए, अलसी के लेप का डिब्बा मैं दूकान से खरीद कर लाया, दवा कर रहे हैं। डा० साहब ने शरीर की जांच नहीं की, दूर से देख कर चले गये। २) फी० के दे दिये। ऐसी गंभीर बीमारी है।.....से मेरी स्त्री के कुशल समाचार लेने के लिए आये हैं। परमात्मा करेगा सो होगा। अब क्या करना चाहिए, कृपया लिखें।

आपका नम्र सेवक.....

द्वितीय पत्र

विशेष यह है कि चिराग गुल होगया। मेरी स्त्री आज दो पहर के दो बजे चल बसी।

सेवक.....

एक पढ़ा-लिखा डाक्टर अपने अन्त्यज भाई को थर्मामीटर एक मुसल्मान के हाथ से देता है और उसे उसी के हाथ से वापिस लेता है। थर्मामीटर को पाक रखने का यही उपाय है। क्या वह मुसल्मान जिस के द्वारा थर्मामीटर दिया गया, हिन्दु धर्म पर घृणा पूर्वक अट्टहास न कर रहा होगा? क्या, यदि सचमुच कोई ऐसा धर्म है ही तो उस के समूलोन्मूलन में क्षण भर की भी देरी करनी चाहिये? और यदि कोई धर्म ऐसी आज्ञा नहीं देता तो जिस धर्म को उस व्यक्ति ने बदनाम किया उस में से उसे बहिष्कृत न कर देना चाहिये? धर्म! तेरे नाम पर इतना पतन और इतना अत्याचार!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-समाचार

ऋतु—आकाश और ज़मीन दोनों दिन में तप जाते हैं। लू इस साल अभी तक चलनी आरम्भ नहीं हुई है। गगन में मण्डराते बादलों की टुकड़ियां भी नज़र आ जाती हैं। रात ठण्ड होती है। केवल चद्दर से अभी गुजारा नहीं होता। गङ्गा की धारा अभी क्षीण काय है। पहाड़ से बर्फ़ ढुलक ढुलक कर आनी आरम्भ नहीं हुई है फिर भी ब्रह्मचारी गङ्गा स्नान का आनन्द उठा ही लेते हैं। गर्मी के बढ़ जाने के कारण महाविद्यालय का समय १ मई से प्रातः काल हो गया है। सब ब्रह्मचारी स्वस्थ हैं। कुछ छोटे ब्रह्मचारियों की आँखें दुःखने आगई हैं वरना छोटे ब्रह्मचारी भी सर्वथा स्वस्थ हैं।

परिणाम—महाविद्यालय की १९८३ वि० का परीक्षा परिणाम निकल आया है। यह सन्तोष के साथ सुना जायगा कि कोई भी ब्रह्मचारी सर्वथा अनुत्तीर्ण नहीं हुआ है। केवल कुछ एक ब्रह्मचारियों की एक विषय में दुबारा परीक्षा होगी जिस का निश्चय १९ मई की शिक्षा पटल की बैठक में होगा।

मान्य दर्शक—इस मास प्रतिष्ठित दर्शकों के आगमन से कुल वञ्चित नहीं रहा। सर्व प्रथम स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पधारे। आप बम्बई और कलकत्ता यूनिवर्सिटी के व्याख्याता है। आपने 'वेदान्त क्या है' इस विषय पर एक सारगर्भित व्याख्यान वर्तमान विज्ञान को आधार में रख कर दिया। आप की व्याख्यान शैली नवीन, आकर्षक तथा मनोरञ्जक थी। आपने फिर आने का वचन दिया है तथा विश्वविद्यालय व्याख्यान माला में आप वेदान्त विषय पर व्याख्यान देंगे।

दूसरे सज्जन गुजरात विद्यापीठ के वाइस चाँसलर आचार्य कृपलानी महोदय थे। आपने ११ बजे से ५ बजे तक निरन्तर वर्तमान भारत की भिन्न २ समस्याओं पर अपने विचार प्रगट किए। हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य, राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षणालयों में विद्यार्थियों की कमी का कारण, चर्खा और मैशीनरी पर प्रश्नोत्तर के रूप में बहुत मनोरञ्जक व्याख्यान दिया। सब आप के विचारों की मौलिकता और उनको प्रगट करने की रीति पर मुग्ध थे। आपने कुल को प्रत्येक हिन्दू के लिए तीर्थ बताया और इस से पहले न आने के लिए खेद प्रकाशित किया। आप दो दिन तक कुल में रहे और फिर आने की आशा दिला गए हैं।

तीसरे महानुभाव पूना के महिला विश्वविद्यालय के संस्थापक और सर्वे सर्वा श्री प्रो० कर्वे थे। आप ने स्त्री शिक्षा की वर्तमान समय में अवस्था और आवश्यकता तथा महिला विश्वविद्यालय की उत्पत्ति वृद्धि और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे की योजनाओं को बताया। आप इस समय महिला विश्वविद्यालय के लिए धन संग्रहार्थ निकले हुए हैं। आपने ब्रह्मचारियों से इस मिशन में योग देने की अपील की और कार्य क्षेत्र में सफलता लाभ के लिए आशीर्वाद दिया।

सम्मेलन—गुरुकुल की सब सभायें नियम पूर्वक उत्साह से चल रही हैं। पिछले दिनों वेद परिषद् का भी चुनाव हो गया है। क्रमशः इनके मन्त्री ब्र० शिवप्रसाद और ब्र० इन्द्रसेन चतुर्दश चुने गये हैं। इस मास सभाओं ने अपने विशेष सम्मेलनों की योजना भी की।

श्री उपाचार्य पं० विश्वनाथ जी वि० अ० की अध्यक्षता में १२ अप्रैल को आर्य-धर्म-सम्मेलन हुआ। इस में स्वामी जी की यादगार में दिल्ली में एक विशाल भवन बनाने का, निकटवर्ती ग्रामों में प्रचार का, वेद प्रचार, छूआछूत हटाने, नगर कीर्तनों के विषय में सरकारी नीति के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुए। ब्रह्मचारियों ने आस पास के गांवों में कार्य आरम्भ कर दिया है। इस दिशा में ब्र० श्वेतकेतु और ब्र० केशवदेव सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष पहिले ही पहिले कुल में श्री पं० प्रियव्रत वि० अ० की अध्यक्षता में संस्कृत साहित्य सम्मेलन हुआ। संस्कृत साहित्य सम्मेलन का होना ब्रह्मचारियों के संस्कृत प्रेम का परिचय देता है। सम्मेलन में संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि और उसके प्रचार के साधनों पर विचार हुआ। ब्रह्मचारियों ने इस सम्मेलन के फल स्वरूप एक देव मण्डली की स्थापना की है जिसके सदस्य सदा संस्कृत में बोलते हैं। इस प्रकार कुल में संस्कृत-प्रेम का वातावरण उत्पन्न हो रहा है।

१ और २ मई को हिन्दी साहित्य सम्मेलन श्री पण्डित निरञ्जनदेव जी आयुर्वेदालंकार उपसम्पादक 'अर्जुन' के सभापतित्व में सफलता के साथ हुआ। स्वागत समिति के अध्यक्ष ब्र० शंकरदत्त थे। दो बैठकों में अध्यक्षों के भाषणों के सिवाय नागरी प्रचार, हिन्दी प्रचार, विश्वविद्यालयों में हिन्दी आदि विषयों के प्रस्तावों पर विचार हुआ।

२ मई को कवि दर्बार हुआ जिस में शिवाजी महाराज के दर्बार में भूषण, तुलसी, पद्माकर, कबीर, हरिऔध, श्री पन्त, श्री गुप्त, श्री त्रिवारी आदि कवियों के प्रतिनिधियों ने उनकी कृतियां सुनाईं। रात्रि को हिन्दी साहित्य मंडल का जन्मोत्सव हुआ। इस में कवियों और अन्य लेखकों ने अपनी कवितायें और गल्पें सुनाईं। कुल का साहित्य कितना सरस और मधुर है इसका परिचय उस दिन मिला। श्रोताओं का दिल ही नहीं मुंह भी मीठा किया गया।

शिवाजी जयन्ती—३ मई को खूब उत्साह के साथ शिवाजी त्रिंशत जयन्ती का महोत्सव मनाया गया। बैण्ड के साथ राष्ट्रीय-पताका का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलूस निकाला गया। श्री आचार्य जी की अध्यक्षता में सभा हुई। वक्ताओं ने शिवाजी को हिन्दू संस्कृति-सभ्यता का पुनरुज्जीवक बताया। उनकी बहादुरी राजनीतिज्ञता और अन्य गुणों की ओर निर्देश करते हुए उनके आदर्शों को इस समय जीवन में ढालने की आवश्यकता बताई।

नवीन प्रस्तोता— १६ मई को गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा पटल की बैठक होगी। श्री० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार प्रस्तोता (Registrar) नियुक्त हुये हैं।

साहित्य-वाटिका

तामिल वेद— दक्षिण देश में तिरूवल्लुवर नाम के एक प्रसिद्ध सन्त होगये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन्ही महात्मा तिरूवल्लुवर के धर्म, नीति, राजा, राजतन्त्र, तपस्वी जीवन, गृहस्थ जीवन आदि विषयों पर लिखे हुए उत्तमोत्तम विचारों का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया गया है। स्वाध्याय प्रेमियों के लिए यह पुस्तक बहुत अच्छा है। मूल्य केवल ॥) है। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मंडल अजमेर।

बालक— संपादक, श्री रामवृक्ष शर्मा। यह बालोपयोगी सचित्र सुन्दर मासिक पत्र है। हिन्दी भाषा में निकलने वाले बाल साहित्य विषयक पत्रों में 'बालक' सर्वश्रेष्ठ है। यह वस्तुतः बालकों का राजकुमार है। वार्षिक मूल्य केवल ३) हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहेरिया सराय, बिहार।

खिलौना— संपादक-श्री रामजीलाल शर्मा। खिलौने में आने वाले लेख, कथाएं, कविताएँ तथा चित्र छोटे बालक बालिकाओं के लिये बहुत शिक्षाप्रद होते हैं। टाइटल पेज विश्वविख्यात चित्रकार रैफल के चित्रकारी अनुकृति है। वार्षिक मूल्य २) हिन्दी प्रेस, प्रयाग से प्राप्त होता है।

इन्दु— (मासिक पत्र) संपादक श्री अम्बिका प्रसाद गुप्त। इन्दु के अब कई वर्षों के उपरान्त दर्शन हुए हैं। अब तक निकले हुए अङ्कों से ज्ञात होता है कि यह शीघ्र ही हिन्दी साहित्य में अच्छा स्थान प्राप्त कर लेगा। लेख कथाएँ तथा कविताएँ उच्च कक्षा की हैं। मूल्य ४॥) । पता— प्रबन्धक 'इन्दु' बनारस सिटी॥

मनोरमा— (सम्मेलनांक)-संपादक श्री ज्योतिप्रसाद निर्मल। मनोरमा हिन्दी की श्रेष्ठ पत्रिका है। हाल में ही इसका सम्मेलनांक प्रकाशित हुवा है, इस अङ्क को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'गाइड' कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। इस सर्वाङ्ग सुन्दर अङ्क का मूल्य ३) है। संपादक महोदय ऐसे बढ़िया अङ्क प्रकाशित करने के लिये धन्यवादाई हैं। बेलवेडीयर प्रेस, प्रयाग से प्राप्य।

चाँद (अछूताङ्क)— सम्पादक श्री नन्दकिशोर तिवारी। मूल्य २)। मिलने का पता—फाइन आर्ट प्रिन्टिंग काटेज इलाहाबाद। चाँद के सञ्चालकों ने मौके पर मौके की चीज़ निकाली है। यह अंक हरेक वाचनालय में और हरेक प्रचारक के हाथ में होना चाहिये।

स्नातक मण्डल का विशेषाधिवेशन—२८ मई को गुरुदत्त भवन लाहौर में रात्रि के ८ बजे स्नातक मण्डल का विशेषाधिवेशन होगा। स्नातक भाई अधिक संख्या में पहुँचने की कृपा करें। विषय ये हैं—

(१) अलङ्कार पत्र (२) सार्वदेशिक सभा का प्रस्ताव (३) अन्य आवश्यक

चन्द्रमणि-मंत्री स्नातक मण्डल

प्रा० सत्यव्रत प्रिंटर और पब्लिशर के लिये गुरुकुल-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

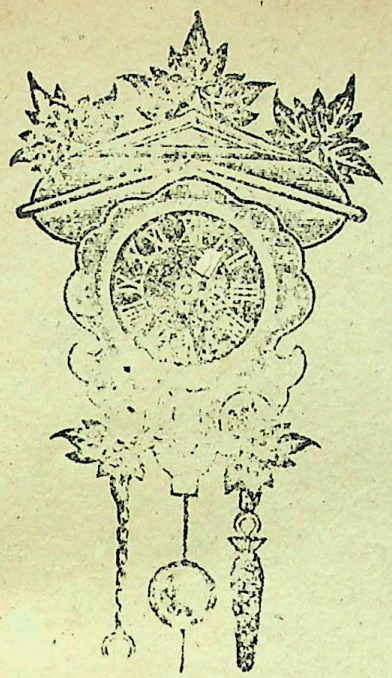

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेजदो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

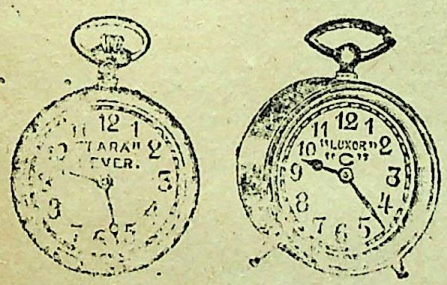

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिए है। जल्दी मंगवायें, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा

जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

सुधासिंधु

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खासी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ।।) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

(दाद की दवा)

दद्रुगजकेशरी

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ।।) पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए, मुफ्त मिलेगा। यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. N0. A. 1340.

वर्ष ४] आषाढ़ १९८४ [अङ्क १

ओ३म्

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

[स्नातक-मण्डल गुरुकुल-कांगड़ी का मुख-पत्र]

मुख्य संपादक

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

* विषय सूची *

विषय	पृष्ठ सं०
१. प्रेम भिक्षा—श्रीहरि	१
२. मोअज़ा अर्थात् चमत्कार—श्रीकृष्णानन्द जी	२
३. नवद्वीप यात्रा— पं० दीनानाथ जी विद्यालंकार	७
४. विश्व-नाटक— श्रीगयाप्रसाद जी शास्त्री	११
५. भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क— प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार	१२
६. अनुराग—पं० रमाशंकर जी मिश्र	१८
७. प्राचीन-शिक्षा-प्रणाली—प्रो० विश्वनाथ जी विद्यालंकार	१९
८. अब वे सुख के दिन जाते रहे	२१
९. नालन्दा का विश्वविद्यालय— एक इतिहास प्रेमी	२२
१०. कलियुगी दान— पं० माताप्रसाद जी द्विवेदी	२७
११. सम्पादकीय—	३०
११. गुरुकुल समाचार	३२

विदेश से ४) एक प्रति का ।-) वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

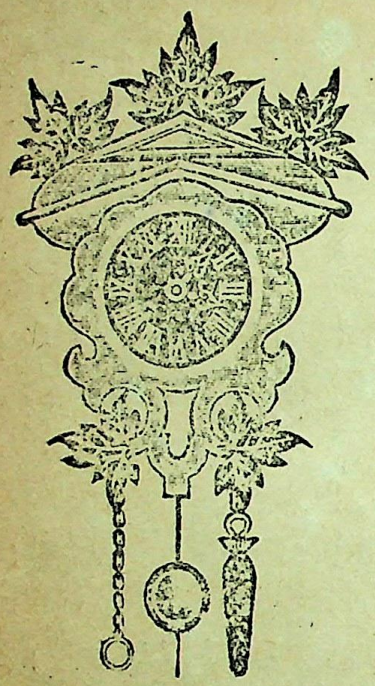

केवल तीन रुपये में

एक घड़ियाल

ज़रा भी संकोच न करो। आज ही आर्डर भेजदो क्योंकि टिक—टैक

Tik-Tak Regd Wall Clock

घड़ियाल ठीक समय देता है। सब को पसन्द आयगा ही। इस से कमरे की दीवारों को सुशोभित कीजिये।

कीमत—केवल रुपया तीन

इसे कौन न चाहेगा ?

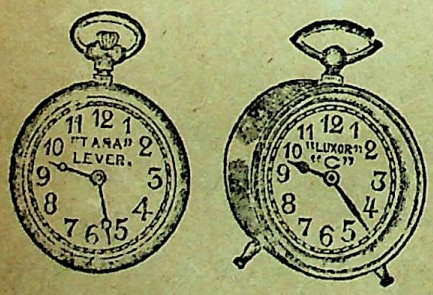

हमारी रजिस्टर्ड 'तारा' जेब-घड़ी रोल्ड-गोल्ड डायल वाली है। इस की ५ वर्ष की गारन्टी है। कीमत केवल ५) है। जो इसे खरीदेगा उसे प्रख्यात सी टायमपीस घड़ी मुफ्त में दी जायगी। यह अवसर कुछ ही दिनों के लिए है। जल्दी मंगवायें, न चूकिये। पता अंग्रेज़ी में लिखिये।

पता:—

पीटर वाच कम्पनी,

पोस्ट बाक्स २७—मद्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल-समाचार

* स्नातक-मण्डल गुरुकुल-काँगड़ी का मुख-पत्र *

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः ।
हविष्मन्तो अलंकृतः ॥ ऋ० १. १४. ५ ।

* प्रेमभिक्षा *

(श्रीहरि)

(१)

अलि ! मञ्जु गुञ्जन से, विनय की छोड़ दे अब चाल को ।
यह विश्व सारा जानता, तेरे प्रणय के जाल को ॥
तू है निठुर, चञ्चल चतुर निज स्वार्थ का ही दास है ।
जिसका हुआ, उस को किया, तू ने सदैव निरास है ॥

(२)

यह पुण्यपावन प्रेम-पथ, तुझ से कलङ्कित हो रहा ।
रस-लालची रस के लिए, बिष-बीज तू है बो रहा ॥
जाकर पपीहे से प्रथम तू, प्रेम-प्रण की सीख ले ।
इस प्रेम-मन्दिर द्वार पर फिर, प्रेम की यह भीख ले ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोअज़ा अर्थात् चमत्कार

(ले० श्री कृष्णानन्द जी)

ईश्वरीय नियम (कानून कुदरत) को नजान कर बड़े विद्वान् भी भारी भूल कर बैठते हैं। उदाहरणार्थ मोअजों † (चमत्कारों) पर दृष्टि डालिए। किसी व्यक्ति को मोअज़ा (अलौकिक शक्ति या चमत्कार) मिलना ईश्वरीय नियम के विपरीत है। ईश्वर कभी किसी को मोअज़ा नहीं देता परन्तु पौराणिक, बौद्ध, जैन, ईसाई, यहूदी और मुसलमान आदि सब मतों के विद्वान् भी अपने अपने मत वा ग्रन्थ के मोअज़ों पर विश्वास रखते और अपने से भिन्न किसी मत के किसी मोअज़े को सत्य नहीं मानते। इस बात पर ध्यान दीजिये कि कोई मतवादी अपने से भिन्न मत के मोअज़ों को सत्य क्यों नहीं मानता? मेरे विचार से इसका कारण पक्षपात और दुराग्रह है। सब सम्प्रदाय के मोअज़ों में अन्ततः अलौकिकता और सृष्टिक्रम विरुद्धता है। इस का कारण यह कभी नहीं हो सकता कि किसी एक मत का मोअज़ा सत्य हो और शेष सब मतों के मोअज़े असत्य हों। यदि किसी मत का मोअज़ा सत्य होता तो उस मत के लोग अब भी मोअज़े दिखला सकते, क्योंकि उस मत के लोग भी मौजूद हैं और ईश्वर भी मौजूद है। यदि ईश्वर ने पहले उन लोगों को मोअज़ा दिया तो अब क्यों नहीं देता? और आश्चर्य यह कि मोअज़ों के द्वारा भी कोई सम्प्रदाय सारे संसार में न फैल सका। यदि हमारे पौराणिक भाइयों के देवी-देवता सचमुच अद्-

† जैसे हनुमान जी का सूर्य को निगल जाना, देवताओं का पर्वताकार शरीर धारण कर लेना, अगस्त्य का समुद्र को पीजाना, श्री कृष्ण के मुख में तीनों लोक देखना या ऊंगली पर पर्वत उठा लेना, अथवा द्रौपदी की साड़ी को लाखों गज लम्बा कर देना, रामचन्द्र के जन्म के समय ७२० घन्टे का एक दिन होना, रामचन्द्र का वनवास से वापस आने पर हजार रूप धारण करके लाखों मनुष्यों से अलग अलग क्षण भर में मिलना, ईसा का कुमारी कन्या से पैदा होना और इच्छा मात्र से मुरदों को जिन्दा कर देना या एक रोटी व एक मछली से हजारों मनुष्यों का पेट भर देना, मुहम्मद साहब की ऊँगली के इशारे से चन्द्रमा के टुकड़े कर देना या सेर भर दुहारे से सैंकड़ों मनुष्यों का पेट भर देना, मुहम्मद साहब को देख कर दीवार व वृक्षों का कल्मा पढ़ना, तीर्थंकर का पैर के अँगूठे से पृथिवी को हिला देना, मूसा के डंडे का अजगर बन जाना इत्यादि और सन्तों के ऐसे चमत्कार जैसे पानी को तुरन्त दूध या घी बना देना, मुट्ठी में से हजारों रुपया या अशर्फी पैदा कर लेना, गायब होकर क्षण भर में हजारों कोस की दूरी पर चले जाना इत्यादि चमत्कारों का वर्णन ईसाईयों, मुसाइयों मुहम्मदियों तथा हिन्दुओं में पाया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुत अलौकिक शक्ति वाले होते तो वे संसार में प्रकट होकर पौराणिक धर्म का प्रचार क्यों नहीं करते और दुष्टों को दण्ड क्यों नहीं देते ? जब कि ये देवता पर्वताकार राक्षसों को मार डालने में समर्थ हैं और क्षण भर में लोप होजाने तथा पर्वताकार शरीर धारण करने की सामर्थ्य रखते हैं तो उन्हें कौन सी रुकावट है जो वे प्रकट होकर पौराणिक धर्म का प्रचार नहीं करते या पौराणिक धर्म के विरोधियों का विध्वंस नहीं करते ? वे तो अमर हैं, उन्हें कोई मार सकता नहीं, उन्हें किस बात का डर है जो वे संसार में नहीं आते ? यदि तीर्थंकर पचास पचास और सौ सौ गज़ के लम्बे जवान और अमर व अद्भुत शक्तिशाली होते तो उन्हें संसार में प्रकट होकर जैनमत का प्रचार करने में ज़रा भी कठिनाई या रुकावट न होती। यदि महात्मा बुद्ध ईश्वर होते तो बार बार संसार में प्रकट होकर धर्म की ध्वजा फहराते।

यदि ईसामसीह मोअज़ों से युक्त होता तो अब भी वह संसार में अवश्य आता और ईसाई मत का प्रचार करता। उसे यहाँ आने में कोई रुकावट न हो सकती, क्योंकि वह ईश्वर का इकलौत बेटा है। तिस पर ईश्वर और उसका पुत्र दोनों संसार में धर्म प्रचार करना चाहते हैं। ऐसी दशा में ईश्वर अपने पुत्र को दुबारा क्यों नहीं भेजता। क्या ईश्वर या उसका पुत्र अब संसार में धर्म को प्रचार करना नहीं चाहते ? यदि पैग़म्बर लोग मोअज़ों से युक्त होते तो अब भी संसार में आते और मोअज़ों के द्वारा सारे संसार को मुस्लिम बना डालते। क्योंकि मोअज़ों (अद्भुत शक्ति) के कारण कोई आदमी रत्ती भर भी उन्हें हानि न पहुंचा सकता। जिस का मददगार ख़ास ख़ुदा हो और वह अलौकिक शक्ति से स्वयं युक्त हो, क्या मजाल कि कोई आदमी उसे कुछ भी हानी पहुंचा सके ? परन्तु यह मतवादियों का माया जाल है जो ईश्वर को अपने सम्प्रदाय का सहायक सिद्ध करने के अभिप्राय से अपने ग्रन्थों में मोअज़ों का उल्लेख कर दिया। अगर यह कहा जाय कि अब ईसा को या मुहम्मद को ख़ुदा दुनियाँ में भेजना नहीं चाहता, तो प्रश्न यह उठता है कि क्या ख़ुदा ईसाई मज़हब को दुनियाँ में फैलाना नहीं चाहता ? आखिर ईश्वर ने अपने प्रिय पुत्र को संसार में किस लिए भेजा था ? जिस लिए पहले भेजा था उसीलिए अब क्यों नहीं भेजता ? उसे कौन सी रुकावट है ? और अचरज है हज़रत ईसा के चुपचाप बैठ जाने पर, वह अपने पिता से बिनती नहीं करते कि—"ऐ पिता ! तू मुझे संसार के कल्याणार्थ फिर भेज, जिस से मैं पुनः सारे संसार को धर्मोपदेश देकर स्वर्ग का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारी बनाऊँ।" इसी प्रकार यदि खुदा को मज़हब इस्लाम फैलाने की ज़रा भी ख्वाहिश होती तो वह मुहम्मद साहब को दुबारा, तिबारा संसार में अवश्य भेजता, क्योंकि क़ादिर मुतलक़ खुदा को कोई रुकावट नहीं हो सकती। और आश्चर्य है कि हज़रत मुहम्मद भी चुपचाप आसमान पर बैठे देख रहे हैं कि सैकड़ों, करोड़ों आदमी [काफ़िर] मज़हब इस्लाम फैलाने का इरादा नहीं करते और खुदा से भी ऐसी प्रार्थना नहीं करते कि ऐ खुदा! तू हमें फिर दुनियां में भेज ताकि मैं सब काफ़िरों को पक्का मुसलिम बना डालूँ। "मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त" वाला मामला है। खुदा और हज़रत मुहम्मद दोनों तो चुप चाप बैठे हैं, उन्हें अपना मज़हब फैलाने की तनिक भी चिन्ता नहीं और हमारे मुसलमान भाई समझ बैठे हैं कि खुदा मज़हब इस्लाम फैलाने का भूखा है। वे नहीं सोचते कि अगर खुदा को मज़हब इस्लाम परम प्रिय होता तो वर्तमान समय में भी वह हज़रत मुहम्मद को जरूर भेजता। चूंकि खुदा क़ादिर मुतलक़ है इस लिए मुहम्मद साहब को दुनियाँ में भेजने में जरा भी रुकावट न होती। मैं सच कहता हूँ कि अगर हज़रत मुहम्मद दुनियाँ में आकर [कुरान के लेखानुसार] मोअज़्ज़े दिखलाना शुरु करदें तो सब लोग उन के मोअज़्ज़ों को देख कर ही मुसलमान बन जायंगे। लेकिन असल बात यह है कि उनको मोअज़्ज़ा हरगिज़ नहीं मिला था। मुसलमान विद्वानों ने भी इस बात का अनुभव कर लिया है कि अब विद्या व ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है। अब लोग थोथी बात (कि खुदा ने अपना मजहब फैलाने के लिए पैगम्बर को भेजा था) पर विश्वास न करेंगे, उन्होंने झट एक सिद्धान्त गढ़ लिया कि "मुहम्मद साहब आख़िर रसूल थे अब कोई रसूल न आवेगा"। क्यों न आवेगा? क्या दुनियाँ भर में मज़हब इस्लाम फैल गया? क्या दुनियाँ में अब काफ़िर नहीं रहे? मैं कहता हूँ जब तक दुनियाँ में करोड़ों काफ़िर मौजूद रहें तब तक पैग़म्बर का दुनियां में रहना जरूरी है। चूंकि इस्लाम मत के विरोधियों की संख्या १४० करोड़ होने पर भी खुदा पैगम्बर को नहीं भेज रहा है इस से साबित है कि खुदा मजहब इस्लाम को फैलाना नहीं चाहता।

अस्तु, मेरा निश्चय है कि आरम्भ में किसी एक मज़हब वाले ने अपने ग्रन्थों में मो अज़्ज़ों का वर्णन लिख दिया, उसे देखकर दूसरे मज़हब वालों ने सोचा होगा कि यदि लोग हमारे मज़हब में चमत्कारों का वर्णन न पावेंगे तो लोग हमारे मज़हब को निर्बल व तुच्छ समझेंगे। ऐसा विचार कर उन्होंने अपने अपने ग्रन्थों में भिन्न भिन्न प्रकार के अद्भुत कर्मों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मोअज़ों) का उल्लेख कर दिया। उनकी आशा भी पूर्ण हुई। क्योंकि वह समय उन के अनुकूल था पर अब अन्धविश्वास का समय नहीं रहा। अब ऐसी बातों पर कोई नवशिक्षित विश्वास नहीं करता। विज्ञान (साइन्स) से भी मोअज़ों का मिथ्यात्व सिद्ध है। मनः शशि और मैस्मरेज़म के द्वारा जो आश्चर्य कर्म देखे जाते हैं उन से भी प्राचीन मोअज़ों की (जैसे सूर्य को निगल जाना, चन्द्रमा को उँगली के इशारे से काट देना, इच्छा मात्र से मुरदे को जिन्दा कर देना, इत्यादि) सिद्धि नहीं होती। तर्क और दूरदर्शिता से विचार करने से पता लगता है कि ईश्वर ने किसी मज़हब को फैलाने का ठेका नहीं ले रक्खा है। वह संसार को रचता, धारण करता और अपने न्याय-नियम के अनुसार सब जीवों को शुभाशुभ कर्मों का फल देता है। ईश्वर को कुछ भी आवश्यकता नहीं कि वह लोगों को मोअज़ा दे। असल में यह मज़हब वालों की कारस्तानी है जो अपने मज़हब को खुदा का मज़हब सिद्ध करने के लिए और अपने मज़हब की प्रतिष्ठा व प्रसिद्धि के लिए मोअज़ों की मिथ्या कल्पना कर ली है।

पुराणों के देवता हमारे प्राचीन पूर्वज आर्य थे। और धर्मात्मा, सुशील, जितेन्द्रिय, शूरवीर, विद्वान्, ईश्वरभक्त, परोपकारी और कलाकौशल के प्रेमी थे। दैत्य, दानव और राक्षस मनुष्य ही थे। लेकिन वे अधर्मी, अन्यायी, दुष्ट और दुराचारी थे। आर्यों और अनार्यों की लड़ाई का नाम देवासुर संग्राम है। लिखने का ढंग निराला है। पुराणों में जो देवासुर संग्राम का वर्णन है वह वास्तव में आर्यों और उनके शत्रुओं का पारस्परिक घोर युद्ध है। मेरा मुख्य अभिप्राय यह है कि वे सब मनुष्य ही थे। पुराण के लेखकों ने असल घटनाओं में नमक-मिर्च मिला दिया है—मोअज़ों (चमत्कारों) का वर्णन लिखा दिया है लेकिन वे सब मोअज़े कल्पित और मिथ्या हैं।

जैनियों के तीर्थंकर हमारी तरह मनुष्य थे, दस दस हाथ या पचास पचास गज़ के लम्बे नहीं थे। हम में और उन में अन्तर इतना ही है कि वे अहिंसक, त्यागी, योगाभ्यासी और तपस्वी थे परम महात्मा थे, उन के हृदय में विश्वप्रेम का भाव भरा हुआ था। ईसामसीह हमारी तरह मनुष्य थे, कुवारी कन्या से पैदा नहीं हुए थे और न उन्हें मोअज़ा मिला था। वह एक महात्मा थे। उन में दया, प्रेम, परोपकार, उदारता आदि उच्चभाव भरे थे। वह ब्रह्मचारी और ईश्वर के भक्त थे। परन्तु उन के शिष्यों ने उन्हें ईश्वर का पुत्र मानकर उन के जीवन चरित में कल्पित मोअज़ों को बढ़ा दिया। हज़रत मुहम्मद हमारी तरह मनुष्य थे। वह ईश्वर के दूत नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और न मोअज़ों से युक्त थे। वह एक सुधारक, दृढ़निश्चयी और शूरवीर पुरुष थे। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और शूरता से इस्लाम मज़हब को फैलाकर अरबवालों का सुधार और संगठन कर दिया। मुहम्मद के शिष्यों और अनुयायियोंने उन्हें ईश्वर का दूत मानकर उनके चरित में मोअज़ों को बढ़ा दिया। हज़रत मूसा भी एक सुधारक मनुष्य थे। निदान जिन्हें लोग देवता, अवतार, पैगम्बर, तीर्थंकर और ईश्वर पुत्र मानते हैं वे सब मनुष्य थे। मोअज़ों (अद्भुत चमत्कारों) की बातें बनावटी और मनगढ़न्त हैं। कोई मतवादी यह नहीं कहता कि सब मत के सब मोअज़े सच्चे हैं। परन्तु किसी मतवादी का अपने मज़हब के मोअज़े को सत्य मानना और दूसरे मत के मोअज़ों को असत्य मानना पक्षपात और अन्याय है। किसी एक मत के मोअज़ों को सत्य मानने में अकाट्य युक्ति और प्रबल प्रमाण क्या है ? हमें कोई सज्जन बतलावें कि इसका क्या सबूत है कि उसी एक मत के मोअज़े सत्य हैं और शेष सब मतों के मोअज़े असत्य हैं। मेरा निश्चय है कि जब तक लोग ऐसे मोअज़ों से विश्वास न हटा लेंगे तब तक सत्यमत को प्राप्त नहीं हो सकते।

अस्तु, मैं यहां पर मनस्वी लाला लाजपतराय के एक अमृत वचन को उद्धृत करना उचित समझता हूं—

"औरों के सुख से अपना सुख तथा औरों के दुःख में अपना दुःख जानकर अपने जीवन को परमात्मा की सृष्टि की सेवा में अर्पण करने वाले, दृढ़ता और पुरुषार्थ से अपने उद्देश्य पर स्थिर रहने वाले महापुरुषों का होना किसी भूमि विशेष अथवा जाति विशेष में नियत नहीं है किन्तु हर एक जाति में समय समय पर वे उत्पन्न होते रहते हैं। ऐसे महापुरुषों की असाधारण शिक्षा, असाधारण शक्ति, असाधारण साहस, असाधारण ज्ञान, असाधारण परोपकार और अकारणिक प्रेम को देख कर लोग उन्हें रसूल, पैग़म्बर, वली अल्लाह, अवतार, देवता, महात्मा आदि भिन्न भिन्न नामों से प्रेम पूर्वक स्मरण करते हैं और उन की शिक्षा का अनुगामी होना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं और उनके नाम से स्मारक चिन्ह स्थापित करते हैं, उन के उपदेशों को प्रमाण मान कर उनका पालन करना परम कर्तव्य समझते हैं।"

विज्ञापन

बच्चों को सर्दी खांसी से बचाने और मोटा तन्दुरुस्त बनाने के लिये सुख संचार कंपनी मथुरा का मीठा 'बालसुधा' सब से अच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवद्वीप-यात्रा

(लेखक श्रीयुत पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार, कलकत्ता)

कलकत्ता से उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग ६६ मील दूर यह स्थान है जो भारत का और विशेषतः बंगाल का मुख्य तीर्थ क्षेत्र है। गतमास हमें वहां जाने का अवसर मिला। "अलंकार" के बहुत से पाठकों के लिये इस स्थान का वृत्तान्त कुछ नवीन होगा-इस लिये उसका कुछ संक्षिप्त वर्णन अनुचित न होगा।

प्राकृतिक स्थिति

जैसा कि "नवद्वीप" इस नाम से ज्ञात होता है, यह एक द्वीप होगा जब कि इस नगर की स्थापना की गई थी परन्तु आजकल यह द्वीप नहीं है अपितु 'प्राय द्वीप' है। अर्थात्-इस समय यह स्थान तीन ओर से गंगा द्वारा घिरा हुआ है। रेलवे स्टेशन पर उतरते ही सामने एक छोटा सा नाला नज़र आता है जो थोड़ी दूर जाकर ही रह गया है। किसी समय में वहां भी गंगा की धारा होती थी। और यदि उस क्षीण जल-धारा को भी मान लिया जावे तब तो यह स्थान वस्तुतः द्वीप ही है और अगर उसे छोड़ दिया जावे तब यह प्राय द्वीप ही है। कुछ ही हो, भागीरथी के तट पर और उसी की धारा तीन ओर से आवृत होने के कारण इस स्थान की प्राकृतिक शोभा बड़ी चित्तार्षक है।

इस से पहले कि नवद्वीप यात्रा के विषय में अन्य कुछ लिखा जाय यह बतलाना उचित प्रतीत होता है कि यह स्थान तीर्थ क्यों कर गिना जाता है?

भागीरथी-तट पर आबाद होने के कारण तो यह तीर्थ है ही पर इस के अतिरिक्त कुछ और कारणों से भी यह महत्त्व पूर्ण समझा जाता है जो संक्षेपतः ये हैं:—

१. प्राचीन इतिहास देखने से प्रतीत होता है कि नवद्वीप संस्कृत विद्या का बड़ा भारी केन्द्र था। इस स्थान का प्रसिद्ध नाम = 'नदिया' है और "नदिया के नैय्यायिक" "काशी के वैय्याकरणियों" की तरह सदा से विख्यात रहे हैं। अब भी न्याय-शास्त्र का मुख्य केन्द्र नदिया वा "नवद्वीप" ही माना जाता है। काशी की टक्कर का संस्कृत विद्या का अगर कोई अन्य केन्द्र भारत में अब भी है तो वह नवद्वीप ही है। गदाधर, रघुनाथ जैसे प्रसिद्ध नैय्यायिक यहीं हुए थे।

२. वैष्णव-मत के संस्थापक गौराङ्ग देव (निमाई वा चैतन्यदेव) की जन्म भूमि भी इसी स्थान में मानी जाती है। इस शहर के किस विशेष भाग में इस महापुरुष का जन्म हुआ था—यह अभी तक निश्चित नहीं हो सका है, यद्यपि इस के लिये सरकारी और गैर-सरकारी-सभी प्रयत्न हुए हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विषय में अभी तक विद्वानों का बड़ा मतभेद है। कुछ भी हो, गौरांगदेव के जन्म स्थान होने से नवद्वीप वैष्णवों का एक बड़ा भारी गढ़ है। हरिद्वार-वृन्दावन की तरह यहां पर भी सैंकड़ों मन्दिर हैं। प्रतिमास की पूर्णिमा को मेला होता है, पर माघ-पूर्णिमा का मेला विशेष प्रसिद्ध है। इन अवसरों पर भारत के और विशेषतः बंगाल-उड़ीसा और आसाम के यात्री दूर दूर से आते हैं। गत माघ-पूर्णिमा के मेले पर हम नवद्वीप में ही थे। इन मेलों की विशेष उल्लेखनीय बात-जो उत्तर भारत के अन्य तीर्थों पर प्रायः नहीं पाई जाती-वैष्णवमतानुयायी पुरुषों का इकट्ठा—ढोल की और छन्नों की ताल पर उछल २ कर कूदना और नाचना है। बहुधा, यह भक्ति के प्रबल वेग में ही होता है।

३. वैष्णवों की तरह शाक्तों का भी यह केन्द्र स्थान है। उनके माघ-पूर्णिमा मेले की तरह इनका कार्त्तिकी पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला होता है। उस अवसर पर देवी की १८ प्रकार की पुराण वर्णित भिन्न २ आकृति की मूर्त्तियां १५ और २० फीट तक ऊंची निकाली जाती हैं और गंगा में विर्जित की जाती हैं। नवद्वीप के ठीक केन्द्र स्थान में शाक्तों का एक प्रधान मन्दिर है जिसका नाम-"पोड़ा-माताला" है। स्थान के पण्डितों की अधिक संख्या शाक्तमतानुयायी है इस लिये वे और उनके सब छात्र भी प्रतिदिन प्रातः सायं इस मन्दिर में देवी की पूजा करते हैं और जब कोई छात्र यहां से विद्याध्ययन समाप्त करके घर को वापस जाता है तब उसे देवी को प्रणाम करना अनिवार्य होता है।

पहिले शाक्तों और वैष्णवों में प्रायः झगड़े हो जाया करते थे पर आजकल दोनों मतों के अनुयायी शान्ति से अपने उत्सव कर लेते हैं। पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि इन सब कारणों से इस तीर्थ स्थान का महत्त्व कितना अधिक है! इसी लिए, काशी सेवन की तरह बंगाली भद्र पुरुष वृद्धावस्था में नवद्वीप में निवास करना पुण्य समझते हैं।

विधवाओं की दुर्दशा

यूं तो सभी तीर्थ स्थानों पर विधवाओं की दुर्दशा होती है पर जैसी करुणाजनक अवस्था यहाँ देखी गयी है ऐसी हमें उत्तर भारत के अन्य किसी तीर्थ पर देखने को नहीं मिली। अगर आप नवद्वीप के बाज़ारों, सड़कों, चौरस्तों और घाटों पर जावें तब आप को विधवायें ही नज़र आयेंगी, पुरुष बहुत कम दीखेंगे। आबादी की दृष्टि से भी यहाँ पर स्त्रियों की-उनमें भी विधवाओं की-संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक है और इसलिए, अगर इस स्थान का नाम "नवद्वीप" की जगह "विधवा द्वीप" रख दिया जावे तो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं है ! इस अवस्था में दुराचार और व्यभिचार सम्बन्धी जितने पाप कल्पित किये जा सकते हैं, यहाँ पर उन सब का नग्न चित्र देखा जा सकता है। विधवाओं के सुधार के लिए यहाँ पर निम्नलिखित संस्थायें खुली हुई हैं—

भजन आश्रम—भिवानी के एक मारवाड़ी सज्जन ने इस आश्रम की स्थापना की है। यहाँ पर प्रतिदिन औसतन ३०० विधवायें प्रातः ३ से १० तक और शाम को ५ से रात के ९ बजे तक "हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे" का एक साथ उच्च स्वर से पाठ करती हैं और इसके फलस्वरूप इन्हें दोनों समय १ पाव चावल, दाल, कुछ नमक-मिर्च और कभी २ हरी तरकारी दी जाती है। पुरुषों के बैठने के लिये पृथक् स्थान बना हुआ है पर वे इस कीर्तन में दर्शक रूप से ही भाग लेते हैं। यद्यपि यह संस्था परोपकार भाव से खोली गई है तथापि इससे वस्तुतः विधवाओं का कुछ भला होता है-यह सन्दिग्ध है। रात को इन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता है कि वे जहाँ चाहें रहें। फलतः दुष्टों के पञ्जे में फँसने का फिर भी बड़ा अवसर रह जाता है। इस के अतिरिक्त यहाँ पर वास्तविक हरिभजन की अपेक्षा आडम्बर की अधिकता प्रतीत होती है।

मातृ मन्दिर (Maternity-Home)—नवद्वीप में बँगाल, उड़ीसा और आसाम के भिन्न २ ज़िलों से ऐसी विधवायें—कभी २ कुमारी कन्यायें भी-बहुत आती हैं जो गर्भवती होती हैं। वहाँ रहने वाली भी कई इस अवस्था को प्राप्त होजाती हैं। ऐसी घटनाओं में अधिक दोष पुरुषों ही का होता है। इन गर्भवती विधवाओं की रक्षा के लिये कुछ सज्जनों की ओर से एक "मातृ मन्दिर" स्थापित है जिसमें गर्भ-रक्षा की जाती है और प्रसव काल के कुछ समय बाद तक विधवा को वहाँ रहना पड़ता है। परन्तु इस "मन्दिर" में १७ आसन ही (Beds) हैं और माँग इतनी है कि उसके मुकाबिले में ये बहुत थोड़े हैं। फल यह है कि यह मातृ मन्दिर तो सिर्फ अमीरों के लिए रह गया है और बहुत से गुप्त मातृ-मन्दिर खुल गये हैं। अनुमान से इन की संख्या ५० के लगभग है। गर्भवती विधवायें इनमें रक्खी जाती हैं और जब सन्तान होती है तब उसे प्रायः मार दिया जाता है। ९० फी सदी बच्चे इस प्रकार मार दिये जाते हैं। अब बचे हुओं में से अधिकाँश कहाँ जाते हैं यह भी ज़रा हृदय पर पत्थर रखकर सुन लीजिये। गंगा के दूसरे तट पर कृष्णनगर बसा हुआ है। नदिया ज़िले की कचहरियाँ इत्यादि इसी स्थान पर हैं। यहाँ पर ईसाइयों की ओर से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अनाथालय खुला हुआ है। इस अनाथालय के आदमी नवद्वीप में घूमते रहते हैं। उन्हें इन गुप्त मातृमन्दिरों का भी पता है। फलतः हिन्दुओं की अबोध और निर्दोष सन्तानें उन ईसाइयों के हाथ ३) या ४) फ़ी सन्तान के हिसाब से बेच दी जाती हैं। यही बच्चे बड़े होकर फिर और हिन्दुओं को ईसाई बनाने का काम करते हैं। नवद्वीप में हमने यह भी सुना था कि कभी २ ऐसे बच्चे मुसलमानों के हाथ भी बेच दिये जाते हैं। हिन्दुओं की भयंकर पतित अवस्था का यह कुत्सित रूप है। क्या इस पर भी कुछ टीका टिप्पणी की आवश्यकता है?

विधवा आश्रम—यहाँ पर लाला माधोराम रोहतक निवासी की ओर से एक विधवा आश्रम भी खुला हुआ है जिसका मुख्य कार्यालय लाहौर में है। इस आश्रम के द्वारा विधवा-विवाह भी होते रहते हैं।

अन्य सार्वजनिक संस्थायें

नवद्वीप में उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित उल्लेखनीय सार्वजनिक संस्थायें भी खुली हुई हैं—

१. वेद-विद्यालय—संस्कृत पढ़ने वाले निर्धन छात्रों के लिए यह एक निवास-स्थान है जिसमें आजकल ८ के लगभग विद्यार्थी रहते हैं। मारवाड़ी समाज की ओर से ३) प्रतिछात्र और सरकार की ओर से ४) प्रतिछात्र मासिकवृत्ति मिलती है। विद्यार्थियों से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि यह छात्रवृत्ति वर्तमान समय के अनुसार, सर्वथा अपर्याप्त है। संस्कृत पढ़ने वाले निर्धन छात्रों के लिये इस के अतिरिक्त यहाँ अन्य कोई विशेष प्रबन्ध नहीं है।

२. सेवाश्रम—एक कमेटी की ओर से स्थापित है जिस के मन्त्री श्री सदानन्द महाचार्य हैं। मेले वा अन्य समयों पर भी यहाँ से रोगियों को मुफ़्त दवा दी जाती है और विशेष रोगियों को अस्पताल में रक्खे जाने का भी प्रबन्ध है। इन रोगियों को भोजन भी दिया जाता है। जनता के लिए इसके साथ ही, अस्पताल के बीच में एक देव-मन्दिर भी है।

३. एँग्लो-संस्कृत पुस्तकालय—सरकार की ओर से संस्कृत-ग्रन्थों का यहाँ एक छोटासा पुस्तकालय खुला हुआ है। इसमें बंगला और अँग्रेजी की भी थोड़ी सी पुस्तकें हैं।

विविध चर्चा

१. ललिता सखी—यह एक ऐसा दर्शनीय पदार्थ है जो पाठकों को अन्य तीर्थों पर देखने को नहीं मिलेगा। यह कोई मन्दिर, मठ वा सभा नहीं है अपितु एक दाढ़ी-मूछ वाले हम आप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे बंगाली-ब्राह्मण महाशय हैं जिन्होंने कृष्ण महाराज की उपासनाके लिये अपने को पत्नी मान स्त्रीरूप धारण कर लिया है। दाढ़ी-मूछ साफ़, स्त्रियों के से ही सिर पर लम्बे बाल, कान, नाक और हाथ में इन्हीं से आभूषण पहरे हुए तथा सदा साड़ी पहिने स्त्रीलिंग में ही बात चीत करते हैं। पहिले ये यहां पर एक बाबा जी के शिष्य थे पर अब सखी भाव धारण कर लिया है। अन्ध-बुद्धि और विश्वासों में डूबी हुई हिन्दू जनता में तो सभी बातों के लिए गुंजाइश है। इस लिए, इन ललिता-सखी जी की खूब पूजा होती है। इन्होंने कुछ ही सालों में यहां पर बड़ी जायदाद खड़ी करली है जिस में प्रतिदिन भागवत पाठ होता है। स्त्री रूपधारी इन "सखी" जी के विषय में यहां पर कई बातें सुनी गईं जिनका यहां पर उल्लेख अनावश्यक प्रतीत होता है।

२. तीर्थ स्थान होने से यहां पर मन्दिरों की भरमार तो है ही पर इन में कई मन्दिर ऐसे भी हैं जिनमें ब्राह्मणातिरिक्त जनता से ≈), ।) और मेले के अवसरों पर ॥) तक की पुरी मिलती हैं। यहां आदमी के प्रवेश की फीस भी ली जाती हैं।

३. यहां पर पण्डे और बन्दर कहीं भी देखने को नहीं मिले। अन्य तीर्थ स्थानों से यह विभिन्नता है।

४. दक्षिण देश के मन्दिराधीशों की तरह यहां के वैष्णव मन्दिराधिकारियों ने भी देवदासियां रक्खी हुई हैं जिनकी संख्या छ से लेकर दस तक और कहीं २ इससे अधिक भी है। इस का अनिवार्य परिणाम व्यभिचार की वृद्धि है।

—*—

* विश्वनाटक *

(पं० गयाप्रसाद शास्त्री साहित्याचार्य 'श्रीहरि')

जिन को हँसाता है अभी, उन को रुलाता फिर कभी,
ठुकरा दिया जिनको अभी, उनको बुलाता फिर कभी।
जो प्रेम सागर-मग्न थे, दुःखदाव वे डाले गए,
हैं वे अनाथ, सनाथ जो कल प्रेम से पाले गए॥ १॥
तब प्रेम रस की प्यास से, जो आज तेरे पास हैं,
सन्ताप की मरु भूमि में कल पा रहे वे वास हैं।
नट राज! निशि दिन विश्व में नाटक नए यों हो रहे,
हैं हँस रहे कोई कहीं, कोई कहीं पर रो रहे॥ २॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क

और विचार प्रणाली में भेद

(ले० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

Pococke महाशय अपनी पुस्तक India in Greece में लिखते हैं–'The primitive history of Greece is the primitive history of India'– अर्थात् भारत का प्राचीन इतिहास ही ग्रीस का प्राचीन इतिहास समझना चाहिये। उनके कथनानुसार मगधदेश के राजा जिनकी राजधानी राजगृह थी भारतवर्ष से जाकर ग्रीस में बसे थे। राजगृह के लोग ग्रैहिक कहलाते थे। वे ही युरुप में जाकर ग्रीक कहे जाने लगे। ऐतिहासिकों के कथनानुसार ग्रीक लोगों के ग्रीस में पहुंचने से पूर्व वहां Pelasgi (पैलसगी) नामक एक जाति निवास करती थी। पोकोक महोदय का कथन है कि पैलसगी जाति के लोग भी मगध से ही गये थे। प्राचीन काल में मगधराज्य के विहार प्रान्त का नाम पैलास था। यही विहार प्रान्त के पैलासी लोग पैलसगी नाम से प्राचीन ग्रीस में पाये जाते हैं। ग्रीस के एक प्राचीन कवि एसियस के कथनानुसार ग्रीस का राजा पिलासगस 'गया' में उत्पन्न हुआ था। स्मरण रहे, 'गया' प्राचीन भारत में मगध राजा के पैलास या विहार प्रान्त की राजधानी थी। एलैग्ज़ेन्डर की राजधानी मैसिडोन थी, मैसिडोन और मगध इन दोनों शब्दों की समानता को देख कर ही कई लोग यह कहने के लिए बाधित हो जाते हैं कि मगध के कुछ लोगों ने ही मैसिडोन को बसाया था। हमारे पूर्वज कूपमण्डूक की भांति चार दिवारी में ही बन्द नहीं रहे। वे इतने कमज़ोर नहीं थे कि किसी दूसरे का सम्पर्क उन्हें अपवित्र कर देता। जब उनकी समृद्धि भारत सरीखे विशाल एवं विस्तृत देश में भी न समा सकी तब वे अपने विमानों तथा जहाज़ों की सहायता से दूर २ देशों में उपनिवेश बनाकर रहने लगे। (यजुर्वेद–६ अ० १२ मं०) में लिखा है—'समुद्रं गच्छ स्वाहा, अन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा'—समुद्र द्वारा, अन्तरिक्ष द्वारा जिस प्रकार भी हो सके दूर २ जाकर उपनिवेश बना कर रहो।

पोकौक महोदय के प्रबल प्रमाण इस बात को सिद्ध कर देते हैं कि फैलते हुए भारतीयों के उपनिवेशों में से ग्रीस भी उनका एक उपनिवेश ही था। जो लोग इतनी बड़ी बात मानने के लिये तय्यार नहीं वे भी इस कथन से तो किसी प्रकार इन्कार नहीं कर सकते कि अत्यन्त प्राचीन काल से भारत तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीस में परस्पर सम्बन्ध अवश्य था।

प्राचीन इतिहास लेखक जोज़ेफस का कथन है कि एशिया में एरिस्टोल की एक यहूदी से बात चीत हुई। यह यहूदी सीरिया की राजधानी डेमास्कस के एक ऐसे पन्थ का अनुयायी था जो अपने को हिन्दु विचारकों को चेले कहते थे। एरिस्टोटल ने उस यहूदी से बात चीत कर के कहा कि हम उसके ज्ञान में जितनी वृद्धि कर सके, उस से कई गुणा ज्यादह उसने हमारे ज्ञान में वृद्धि की—अर्थात् उसने हमें बहुत कुछ नया ज्ञान दिया। (See Budhist and Christian Gospels by Albert J. Edmunds M. A. I Vol. Philadelphia 908 P. 116).

इस ऐतिहासिक कथन से स्पष्ट है कि जिस समय ग्रीस में दार्शनिक विचार प्रौढ़ावस्था में आने का प्रयत्न कर रहा था उस समय ग्रीस का माना हुआ प्रौढ़ विद्वान् ऐरिस्टोटल किसी न किसी तरह भारतीय विचारकों के सम्पर्क में आ चुका था। यह कथन एक और तरह से भी पुष्ट होता है। डायोडोरस के कथनानुसार एलेग्ज़ैन्डर दि ग्रेट का यह भी इरादा था कि युरुप तथा एशिया को अन्तर्विबाह तथा स्थान परिवर्त्तन द्वारा एक कर दिया जाय। वह लिखता है:—

" (He decreed) that there should be interchanges between cities, and that people should be transferred out of Asia, to the end that the two great continents, by inteamarriages and exchange of good offices, might become homogeneous and established in mutual friendship." (See Budhist and Christian Gos. P. 1 14).

एलेग्ज़ैन्डर ने भारत पर आक्रमण किया और ११ महीने के लगभग वह भारतवर्ष में ही पड़ा रहा। यदि एलेग्ज़ैन्डर के उल्लिखित विचार थे तो क्या इस में कोई संशय रह जाता है कि जब ग्रीस तथा भारत में ११ मास तक लगातार सम्बन्ध रहा, उस समय इस मार्ग से भारत का बहुत कुछ-सभ्यता, साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान—ग्रीस में पहुंच गया होगा। इसके अतिरिक्त जब हम यह स्मरण करते हैं कि एरिस्टोटल एलेग्ज़ैन्डर का गुरु था तब एरिस्टोटल के भारतीय विचारों से प्रभावित होने में तनिक भी सन्देह नहीं रहता।

एरिस्टोटल के बाद भी ग्रीस भारतवर्ष से बहुत कुछ पढ़ता रहा है। साइरिल तथा एपिफ़ेनियस के कथनानुसार टेरिबिन्थस का पूर्वज सीथियेनस भारत के साथ व्यापार करता हुआ जब खूब मालदार होगया, तब बहुतसी हिन्दू पुस्तकों को एलेग्ज़ैन्ड्रिया में अपने साथ ले आया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Ibid p. 138) एलेग्ज़ैंड्रिया में ग्रीक लोगों के अध्ययन का यही एक मुख्य स्थान था। सम्भव हो सकता है कि एलेग्जैन्ड्रिया में लाई हुई हिन्दू पुस्तकों से ग्रीक लोगों को अपने विचरों की उन्नति करने में पर्याप्त सहायता मिली हो। जब मुसलमानों ने इजिप्ट पर आक्रमण किया तब एलेग्जैन्ड्रिया के पुस्तकालय को यह कह कर जला दिया गया कि यदि ये पुस्तकें कुरान के अनुकूल हैं तो इन में जो कुछ है वह कुरान में मौजूद ही है-अतः इन की कोई ज़रुरत नहीं और यदि कुरान के प्रतिकूल हैं, तब तो इन्हें रहने ही नहीं देना चाहिये। यह कह कर एलेग्ज़ैन्ड्रिया के पुस्तकालय में आग लगादी गई, नहीं तो आज ग्रीस विचार पर भारतीय प्रभाव को सिद्ध करने की आवश्यकता न पड़ती-एलेग्ज़ेन्ड्रिया का भारी पुस्तकालय इसी बात की साक्षी स्वयं देता।

एरिस्टोटल ग्रीस के विचार-क्रम को ढालने वाला है। ग्रीस ने युरोप के विचार क्रम को ढाला है परन्तु अरस्तु तथा ग्रीस-दोनों पर भारतीय विचारकों की छाप लगी हुई है। यही कारण है कि जिन विचारों को हम भारतीय कहते हैं वही विचार उसी रूप में पश्चिम में भी पाये जाते हैं। दर्शन का विद्यार्थी न्यायदर्शन पढ़ता हुआ, अचानक से एरिस्टोटल के विचारों को अपने सन्मुख घूमता हुआ देखता है। साँख्य दर्शन का अध्ययन करते हुये डार्विन और स्पेन्सर के विकास-वाद के विचार सामने आजाते हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि संसार में ज्ञान का विस्तार भारत से ही हुआ है और इसी लिए पूर्वीय तथा पाश्चात्य देशों के विचारों में अत्यधिक समानता पायी जाती है। पूर्व तथा पश्चिम के देशों में आना-जाना टूट जाने के कारण उन के दर्शन, भाषा, धर्म तथा जीवन का विकास भिन्न भिन्न दिशाओं की तरफ़ होगया है और उन्हीं भिन्नताओं में से दार्शनिक विचार प्रणाली की भिन्नता पर ही इस लेख-माला में विचार किया जायगा।

दार्शनिक विचार प्रणाली की भिन्नता एक मुख्य भिन्नता है परन्तु इस से सम्बद्ध अन्य भी अनेक भिन्नताएं हैं जिनका वर्णन भी संक्षेप से करने का प्रयत्न किया जायगा।

१ उद्देश्य।

सब से प्रथम प्रश्न जो प्रत्येक विचारक के सन्मुख उपस्थित होता है, यह है कि दर्शन का प्रयोजन क्या है? किस उद्देश्य को लेकर इस की प्रवृत्ति है?

इसका उत्तर न्यायदर्शनकार ने बड़े स्पष्ट रूप से प्रथम अध्याय के दूसरे तथा तीसरे सूत्रों में दिया है। वे कहते हैं:—

"प्रमाण प्रमेय संशय प्रयोजन दृष्टान्त सिद्धान्तावयव तर्क निर्णय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद जल्प वितण्डा हेत्वाभास छल जाति निग्रह स्थानानां तत्वज्ञानान्निश्रेयसाधिगमः"-अर्थात् इन पदार्थों के तत्वज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति होगी। इस से अगले सूत्र में लिखते हैं-"दुःख-जन्मप्रवृत्ति दोष मिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः"—न्यायकार की सारी प्रवृत्ति का प्रयोजन अपवर्ग की प्राप्ति प्रतीत होता है।

वैशेषिक दर्शन का प्रारम्भ भी इसी प्रकार के सूत्रों से होता है। प्रथम सूत्र है:-"अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः" दूसरे सूत्र में लिखा है "यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः"। वैशेषिक का ध्येय भी निःश्रेयस के अतिरिक्त और कुछ प्रतीत नहीं होता।

'सांख्य कारिका' को "दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ" इसी से प्रारम्भ किया गया है। सांख्यकार को संसार में सर्वत्र अधिभौतिक, आधिदैविक, तथा आध्यात्मिक दुःख ही दुःख दिखाई देता है, इसी लिये "व्यक्ताव्यक्तज्ञ विज्ञानात्"—अर्थात् व्यक्त, अव्यक्त तथा ज्ञ के ज्ञान से सुख-प्राप्ति को दृष्टि में रख कर उन्होंने अपने दर्शन को प्रारम्भ किया है।

योगदर्शन में "क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्ट जन्म वेदनीयः" "सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः" "परिणामताप संस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः" इत्यादि सूत्रों से संसार में दुःख को देखकर उसे दूर करने के उपाय ढूंढने की तरफ़ ही इशारा किया है।

वेदान्त में स्थल २ पर दुःख दूर करने की इच्छा विद्यार्थी को संसार की असारता का परिचय कराती है। "तरति शोकमात्मवित्" "इति सोऽहं भगवः शोचामि तं मां भगवाँच्छोकस्य पारं तारयतु" इत्यादि उपनिषद् वाक्य सर्वत्र वेदान्त सूत्रों की व्याख्या में बिखरे हुये हैं।

इससे क्या परिणाम निकलता है? यही कि भारत के सम्पूर्ण दार्शनिक विचारकों का एक मात्र आधार दुःख निवृत्ति तथा निश्रेयसाधिगम है। भारतीय विचारक के लिये छोटी से छोटी क्रिया का भी और कोई उद्देश्य दिखाई नहीं देता। संसार की अद्भुत लीलामयी रङ्गस्थली को देख कर भारतीय विचारक का हृदय एकदम ऊपर को उछलता है। वह केवल तना ही प्रश्न नहीं करता कि यह क्या है? यह क्यों है? वह इन शब्दों को करता हुआ एक बड़ा प्रश्न करता है। वह प्रश्न है 'इस सब का मेरे साथ क्या सम्बन्ध है'? उसके सामने बड़ा भारी प्रश्न उपस्थित होता है—वह पूछता है-'यह दुःख कहां से आया' 'इसकी निवृत्ति का क्या उपाय है?'। भारत का न्यायदर्शन सचाई को इसलिए नहीं ढूँढना चाहता क्योंकि सचाई सचाई है-वह इसलिए ढूँढना चाहता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है क्योंकि इससे निःश्रेयस की प्राप्ति होती है।

इस विचार को दृष्टि में रखते हुए आप पाश्चात्य दार्शनिकों से पूछिये कि वे Logic का क्या उद्देश्य समझते हैं। वे आपको स्पष्ट शब्दों में बतायेंगे कि Logic का मुक्ति से कोई सम्बन्ध नहीं। Logic का उद्देश्य केवल इतना है कि वह आप को हेत्वाभासों से बचना सिखादे, आप शुद्ध युक्तियुक्त बोलना सीख जांय, इससे अधिक Logic का कोई उद्देश्य नहीं। Professor Minto का कथन है:—

"The Main aim of Logic is not the attainment of truth but the organisation of reason against confusion and falsehood; Logic does not so much beckon a man into the right path as beckon him back from the wrong. The existence of Fallacies calls Logic into existence. As a practical science Logic is needed as a protection against fallacies."

Logic की एकमात्र आवश्यकता मनुष्य को हेत्वाभासों से बचाने के लिये है। यह मनुष्य की बुद्धि को अच्छा व्यायाम कराती है। Logic के विषय में यह पाश्चात्य विचार है।

भारतीय विचारकों के अनुसार प्रत्येक कार्य का उद्देश्य मुक्ति होना चाहिये इसलिए Logic का उद्देश्य भी मुक्ति माना गया है। पाश्चात्य विचारकों के अनुसार Logic का उद्देश्य बुद्धि का परिमार्जन मात्र है, मुक्ति Mataphysics, Ethics या Religion का विषय है। भारतीय विचारकों ने धर्म को सर्वोच्च आसन दिया है—पाश्चात्य विचारकों ने युक्ति को सब से ऊपर रक्खा है।

एक भ्रम दूर करके मैं आगे बढ़ूंगा। शायद कोई यह समझ ले कि भारतीय विचारकों ने Logic के पूरे २ महत्व को नहीं समझा इसीलिए उन्होंने इसके उद्देश्य को पाश्चात्य विचारकों के उद्देश्य से भिन्न समझा। मैं इस विचार को भ्रम कहता हूं। कारण यह है कि Logic का जो उद्देश्य पाश्चात्य समझते हैं उस उद्देश्य से भारतीय विचारक इन्कार नहीं करते। न्यायदर्शन में सब से पूर्व कहा है-"प्रमाणतोऽर्थ प्रतिपत्तौ प्रवृत्ति सामर्थ्यादर्थ वत्प्रमाणम्"। प्रमाण की अर्थवत्ता इसलिए है क्योंकि उसी के कारण सब प्रकार की प्रवृत्ति हो सकती है। मनुष्य के विचार को परिष्कृत करना न्याय का मुख्य उद्देश्य है। मेरी समझ में इस उद्देश्य में जहां तक न्यायदर्शन सफल हुआ है, वहां तक Logic को सफलता प्राप्त नहीं हुई। Logic जितना काम करना चाहता है, न्याय उससे इन्कार नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता, उसे बड़ी अच्छी तरह करता है। परन्तु इस सम्पूर्ण कार्य को अद्वितीय सफलता से निबाहता हुआ न्याय Logic से एक कदम आगे बढ़ता है, वह बुद्धि को परिष्कृत करता हुआ उसे एक ऊंचे उद्देश्य की तरफ ले जाना चाहता है, जो उसके शब्दों में है:— 'तदत्यन्त विमोक्षोपवर्गः'।

न्याय का उद्देश्य है 'मुक्ति'— Logic का उद्देश्य है 'बुद्धि की परिष्कृति'। न्याय का उद्देश्य बड़ा है, Logic का छोटा है। Logic के सब उद्देश्यों को न्यायदर्शन पूर्ण कर देता है परन्तु न्याय के सब उद्देश्यों को Logic पूर्ण नहीं कर सकता। अब हमें यह देखना है कि इन उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए वे किन मार्गों का अवलम्बन करते हैं।

२. प्रत्यक्ष

जो लोग भारतीय दर्शनों से परिचित हैं उनसे छिपा हुआ नहीं है कि हमारे यहां, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान तथा शब्द—ये चार प्रमाण माने गये हैं। इन्हीं से न्याय का उद्देश्य पूर्ण हो सकता है। पश्चिम की परिभाषाओं में इन्हीं को क्रमशः Observation, Inference, Analogy तथा Testimony कहते हैं।

प्रत्यक्ष पर यहां बहुत कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। जो कुछ कहना होगा वह 'शब्द प्रमाण' पर विचार करते हुए ही कहा जायगा। इस समय इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि Observation तथा Experiment पर Logic की पुस्तकों में जो कुछ प्रपञ्च से लिखा हुआ है वह सब न्यायदर्शन के—'इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्'—इस सूत्र में आ जाता है।

प्राचीन काल में Observation तथा Experiment दोनों के आधार पर Inductive method द्वारा बहुत कुछ अन्वेषण होता था, इसके सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं। भारतवर्ष का ज्योतिष शास्त्र तथा वैद्यक शास्त्र जो सर्वथा Observation तथा Experiment पर आश्रित हैं-इस कथन की पुष्टि करते हैं। प्रो० विल्सन का कथन है:—

"The Science of astronomy at present exhibits many proofs of accurate observation and deduction, highly creditable to the science of Hindu astronomers. The division of the ecliptic into lunar mansions, the solar Zodiac, the mean motions of the planets, the procession of the equinox, the earth's self-support in space, the diurnal revolution of the earth on its axis, the revolution of the moon on her axis, her distance from the earth, the dimensions

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

of the orbits of the planets, the calculations of eclipses, are parts of a system which could not have been found among an unenlightened people."

इस तरह के जबरर्दस्त प्रमाण सिद्ध करते हैं कि भारतीय दर्शन में लिखा 'प्रत्यक्ष' किताबी बात ही नहीं था, परन्तु यही भारत के 'विज्ञान' का पिता था।

——:०:——

अनुराग

(श्री पं० रमाशङ्कर जी मिश्र)

हम मूक हैं तो भी हृदय में है भरी शुभ भावना,
यदि पङ्गु हैं तो भी चरण रज की हमें है चाहना।
होकर बधिर भी सुन रहे हम हैं सुरीली तान को,
दर्शन बिना ही मुग्ध हैं रखते तुम्हारे मान को ॥

* * * *

मम कामना के कुञ्ज की कलियां अनूठी अध खिलीं,
तव स्नेह सिञ्चित हैं लखो मन भावनी कैसी भलीं।
आओ अहो प्राणेश ! पहिनो इस मनोहर माल को,
अनुराग-लाल-गुलाल से आकर सजा लो भाल को ॥

* * * *

निज भक्त पर अनुरक्त यदि हो भी न तो मैं दास हूं,
हृदयेश ! समझो दूर ही तुम क्यों न पर मैं पास हूँ।
विश्वास है तुम पर अटल करता सदा गुण गान हूं,
है प्रेम श्रद्धा भक्ति भी धरता तुम्हारा ध्यान हूं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन शिक्षा प्रणाली

(प्रो० विश्वनाथ जी विद्यालङ्कार, उपाचार्य)

शिक्षा का प्रश्न बड़े महत्व का है। शिक्षा बीज है और आचार-व्यवहार उस के फल हैं। मनुष्य को जैसी शिक्षा दी जायगी वैसे ही उस के आचार-व्यवहार होंगे। यह नियम जातियों में भी लगता है। भिन्न २ देशों की भिन्न २ जातियों में आचार और व्यवहार के भेद का मूल कारण, उन २ जातियों की जातीय शिक्षाओं के भिन्न २ प्रकारों में देखना चाहिए। अतः "प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रकार क्या था" यह प्रश्न वैयक्तिक और जातीय दोनों दृष्टियों से बड़े महत्व का है। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली पर संक्षेप से विचार करने के लिए हमें 'आचार्य' शब्द के रहस्यार्थ पर गहरा विचार करना चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में आचार्य शब्द का स्थान विशेष गौरवान्वित है। इस शब्द के अर्थ में शिक्षा का सम्पूर्ण रहस्य छिपा पड़ा है। "शिष्य के प्रति आचार्य के शिक्षा-सम्बन्धी क्या कर्तव्य हैं" इनका दिग्दर्शन आचार्य शब्द द्वारा कराया गया है। निरुक्तकार यास्काचार्य ने आचार्य शब्द का जो निर्वचन किया है उस से प्रतीत होता है कि प्राचीन भारत में शिक्षा के तीन विभाग किये गये थे। यास्काचार्य ने आचार्य शब्द का निर्वचन निम्नलिखित शब्दों में किया है। यथाः—

"आचारं ग्राहयति, आचिनो-
त्यर्थान्, आचिनोति बुद्धिम्"।

इसका अर्थ यह है कि आचार्य वह है जो कि शिष्य के आचार को ठीक करे, शिष्य के मस्तिष्क में पदार्थों का संचय करे, तथा उस में बुद्धि-शक्ति को जागृत करे।

इस निर्वचन में शिक्षा के तीन विभाग दर्शाए हैं। १. आचारशिक्षा २. अर्थशिक्षा ३. बुद्धिशक्ति का जागरण। भारत की वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के इन तीन विभागों में से केवल एक विभाग पर ही अधिक बल है और वह है "अर्थशिक्षा"। अध्यापक की यह इच्छा कि विद्यार्थियों के मस्तिष्कों में संख्या की दृष्टि से अधिक अर्थों अर्थात् पदार्थों का बोध भर दिया जाय—"अर्थ शिक्षा" कहलाती है। वर्त्तमान अंग्रेज़ी ढंग के चले हुए भारतीय स्कूलों की विशेषतया, तथा कालिजों की सामान्यतया यही अवस्था है। इन संस्थाओं में विद्यार्थियों के मस्तिष्कों को Lumber Room अर्थात् कबाड़िये की दुकान बनाने पर जितना ज़ोर दिया जाता है उस की शतांश ज़ोर भी विद्यार्थियों को "श्रेष्ठ मनुष्य" बनाने में नहीं दिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता। परन्तु भारतीय शिक्षा प्रणाली का यह हाल न था। भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य था "पूर्ण मनुष्यत्व"। इसी लिए भारत के आचार्य शिक्षा के तीन विभागों के उपाध्याय समझे जाते थे जिन में पहला विभाग था "आचार शिक्षण"। आचार के बिना पदार्थबोध अति हानिकारक है। (आचार, जीवन-पुष्प का उत्तम सुगन्ध है और सूखे देह-वृक्ष का सुन्दर पुष्प-शृंगार है।) वर्त्तमान युग में आचार-शिक्षण के अभाव के साथ जो पदार्थ-बोध पर ज़ोर दिया जाता है— इस का ही यह परिणाम है कि संसार में अशान्ति का राज्य दिनोंदिन अधिक हो रहा है। चाहिए तो यह था कि विज्ञान की उन्नति के साथ २ मनुष्यों के दुःखनिवारण के उपायों का अधिक अन्वेषण किया जाता, परन्तु वर्त्तमान युग में इस से उलटा हो रहा है। वर्त्तमान युग में विज्ञान ही दुःखों का उग्र कारण बन रहा है। विज्ञान की उन्नति का प्रयोग मनुष्यों के दुःख निवारण के लिए नहीं हो रहा, अपितु इस का प्रयोग उन दुःखों के अधिक बढ़ाने में हो रहा है। इस का यही कारण है कि वर्त्तमान समय में "अर्थशिक्षा" के साथ "आचार शिक्षा" पर बल नहीं दिया जाता। आचार-शिक्षण के इस रहस्य को जान कर ही मनु महाराज ने "ब्रह्मचर्याश्रम में प्रविष्ट होते हुए बालक को पहले क्या शिक्षा देनी चाहिए" इस सम्बन्ध में निम्न लिखित एक श्लोक लिखा है:-

उपनीय गुरुः शिष्यं शिक्षयेच्छौचमादितः।
आचारमग्निकार्यं च संध्योपासन मेव च॥

इसका अर्थ यह है कि गुरु शिष्य का उपनयन संस्कार करने के पश्चात् उसे आरम्भ में शुद्धि का पाठ पढ़ावे। तदनन्तर सदाचार, अग्निहोत्र तथा संध्योपासन का उपदेश दे।

इस श्लोक में "अर्थशिक्षा" और "बुद्धि के जागरण" का वर्णन नहीं किया। शिक्षा के इन दो प्रक्रमों का स्थान शुद्धि, सदाचार, अग्निहोत्र और सन्ध्योपासन के शिक्षण के पश्चात् का है।

शुद्धि में, रहन सहन के स्थान, वस्त्रों, शरीर और इन्द्रियों को साफ़ रखना शामिल है। इस शुद्धि के उपदेश के पश्चात् सदाचार शिक्षण का आरम्भ होता है। सदाचार शिक्षण के भी दो विभाग हैं। एक तो "व्यवहार-शिक्षण" जिसे कि शिष्टाचार या सभ्यता कहते हैं, और दूसरा "इंद्रिय-निग्रह" जिस में कि सत्य, अहिंसा ब्रह्मचर्य, तप आदि यमनियम सम्मिलित हैं। जब यह देख लिया जाय कि शिष्य अब शुद्धि की कसौटी पर पूरा उतर आया है तब उसे सदाचार का उपदेश देना चाहिए। इस सदाचार के शिक्षण में प्रथम शिष्टाचार पर बल देना चाहिए और तत्पश्चात् यम नियमों के आचरण पर। शुद्धि और सदाचार के शिक्षण के पश्चात् अग्नि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होत्र के नियमन द्वारा स्थूल नियमों का अभ्यास करा कर पुनः शनैः २ संध्योपासन के सूक्ष्म विषयों तथा अन्तर्ध्यान का बोध कराना चाहिये। इस प्रकार मनु महाराज के मत के अनुसार शिष्य के प्रति शुद्धि सदाचार, धर्म के स्थूल तथा सूक्ष्म-नियमों का उपदेश देना ही आचार शिक्षा है। इस आचार शिक्षा के पश्चात् भारतीय शिक्षा प्रणाली में "अर्थ शिक्षा" का प्रारम्भ होता था। इस अर्थ शिक्षा में व्याकरण, साहित्य, शिल्प, ज्योतिष, गणित आदि विषयों का परिज्ञान कराया जाता था। आचार शिक्षा के दृढ़ आधार पर खड़ा किया गया अर्थशिक्षा का यह प्रासाद अत्यन्त सुखकारी तथा हितकारी हुआ करता था। इसी अर्थ शिक्षण के साथ २ भारत का प्राचीन आचार्य यह भी देखा करता था कि यह अर्थशिक्षा विद्यार्थी में स्वतः परिस्फुरण होने वाली तथा ऊहापोह कर सकने वाली बुद्धि को भी अङ्कुरित कर रही है या नहीं। अंग्रेज़ी रंग में रङ्गी हुई भारत की वर्त्तमान शिक्षा विद्यार्थियों में इस बुद्धि-शक्ति को जागृत नहीं होने देती। भारत की वर्तमान शिक्षा का बी० ए० युरोप के पढ़े बी० ए० के मुकाबिले में कुछ भी नहीं है। इस का कारण यही है कि भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली का ढंग ऐसा भद्दा और अस्वाभाविक है कि जिस से बुद्धि शक्ति सहज स्वभाव से परिस्फुटित हो ही नहीं सकती। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में यह बात न थी। इस प्रणाली में बुद्धि के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था।

इस प्रकार आचार्य शब्द के आधार पर मैंने यह दर्शाने की कोशिश की है कि प्राचीन भारत वर्ष में शिक्षा के तीन विभाग हुआ करते थे, 'आचार शिक्षा'; 'अर्थशिक्षा' और बुद्धि, का जागरण'। इन तीन विभागों से ही शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण हो सकता है। केवल किसी एक विभाग पर ज़ोर देने से शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता।

अब वे सुख के दिन जाते रहे

कोकिल के कलकूजन के संग, कोमल कण्ठ से गाते रहे।
मञ्जुल मालती का मकरन्द, अमन्द अनन्द से पाते रहे॥
पीकर प्रेम सुधा नित ही, नव नेह का नाता निभाते रहे।
"श्री हरि" प्रेमी मिलिन्द अहो अब वे सुख के दिन जाते रहे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नालन्दा का विश्वविद्यालय

(ले०– एक इतिहास प्रेमी)

प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम सामरव तव तपो वने,
प्रथम प्रचारित तव वन भवने, ज्ञान धर्म्म कत काव्यकाहिनी ।

रवि बाबू की यह उक्ति नालन्दा विश्वविद्यालय सदृश विश्वविद्यालयों के प्राचीन भारत में अस्तित्व ने ही चरितार्थ की है । भारत को ज्ञान और धर्म के कारण संसार का गुरु बनाने का श्रेय नालन्दा सदृश विश्वविद्यालयों को ही है । चीन, कोरिया, जापान, इन्डोचाइना, तुर्किस्तान और तिब्बत यदि भारत को आज भी आदर की दृष्टि से देखते हैं और भारत को अपनी धर्मभूमि मानते हैं, तथा भारत की यात्रा कर अपने जन्म को सार्थक करते हैं तो इसका श्रेय नालन्दा, उदन्तःपुर और विक्रमशिला सदृश बौद्ध काल में स्थापित विश्वविद्यालयों को प्राप्त है । इन्हीं विद्यालयों से हजारों की संख्या में भारत से बाहर महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं और भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति को ले जाने वाले बौद्ध भिक्षुओं का प्रवाह प्रवाहित हुआ जो निरन्तर मुसलमानों के आक्रमण से पूर्व तक जारी रहा । इन प्राचीन विश्वविद्यालयों में नालन्दा का विश्वविद्यालय सर्व प्रथम स्थापित हुआ था । इस समय जब कि हम भारतीय संस्कृति के आधार पर स्वतन्त्र शिक्षणालयों की स्थापना करने में प्रयत्नशील हैं ऐसे समय नालन्दा विश्वविद्यालय का संस्मरण हमारे अन्दर स्फुर्ति और हमारे आदर्शों के अन्दर सजीविता उत्पन्न करेगा ।

स्थान— नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेष इस समय भी नष्ट भ्रष्ट अवस्था में विहार प्रान्त के बड़गांव से ३०० फीट की दूरी पर पाये जाते हैं । 'बड़गांव' 'राजगिर' से ८ मील दूर है । नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेषों के दर्शनोत्सुकों को विहार-बख्तियारपुर रेलवे से जाना चाहिए और बड़गांव स्टेशन पर उतरना चाहिए । इससे एक मील पर नालन्दा विश्वविद्यालय के प्राचीन गौरव की स्मृति को फिर से ताजा बनाने वाले अवशेष दीख पड़ेंगे ।

इतिहास— नालन्दा विश्वविद्यालय कब स्थापित हुआ और किसने किया यह अभी तक निश्चय पूर्वक नहीं कहा जासकता । इस का प्रारम्भ एक साधारण बौद्ध बिहार के रूप में हुवा, जिस में कि अनेक स्थविर और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिक्षु लोग निवास करते थे। प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य सारिपुत्र इसी स्थान पर निवास करता था। बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार उस ने इसी स्थान पर अपने ८० हज़ार शिष्यों और अर्हतों के साथ निर्वाणपद को प्राप्त किया था। बौद्ध विहार और संघाराम के रूप में नालन्दा की कीर्ति भगवान् बुद्ध के काल से ही प्रारम्भ होती है। प्रसिद्ध तिब्बती ऐतिहासिक तारनाथ के अनुसार सम्राट् अशोक ने यहां पर एक विशाल मन्दिर और विहार का निर्माण कराया और अशोक के प्रयत्नों से ही नालन्दा एक शिक्षाकेन्द्र के रूप में परिवर्तित होना प्रारम्भ हुवा। इस के बाद धीरे धीरे नालन्दा की उन्नति होती गई। सुविष्णु नामक एक ब्राह्मण ने यहां १०८ मन्दिरों का निर्माण कराया और 'अभिधर्म' की शिक्षा के लिये १०८ शिक्षणालयों की स्थापना की। इस के बाद अनेक सदियों तक नालन्दा एक शिक्षाकेन्द्र के रूप में धीरे धीरे विकसित होता रहा। पीछे से राजशक्ति का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट हुवा और सब से पूर्व शक्रादित्य नाम के राजा ने नालन्दा में अनेक इमारतों का निर्माण कराया। इसी तरह उसके पीछे बुद्धगुप्तराज तथा गतगुप्तराज और बालादित्यराज ने नालन्दा की उन्नति में बहुत सहायता पहुंचाई। बालादित्यराज प्रसिद्ध हूण आक्रान्ता मिहिरकुल का समकालीन था और छठी सदी में मगध का राजा था। गुप्त सम्राटों द्वारा सहायता को प्राप्त कर नालन्दा ने बड़ी उन्नति की और शीघ्र ही विश्वविदित विश्वविद्यालय बन गया। अनेक चीनी तथा अन्य विदेशी विद्यार्थियों का ध्यान इसकी ओर आकृष्ट हुवा और बड़ी संख्या में विदेशी विद्यार्थी यहां पर विद्याध्ययन के लिये आने लगे। नालन्दा में शिक्षाप्राप्त विदेशी विद्यार्थियों में कुछ के नाम निम्नलिखित हैं-

१. शर्मण् ह्यून चिन,—प्रकाश मति, ७ वीं सदी में आया और तीन वर्ष तक यहां रहा।

२. थौ-ही,—श्रीदेव, इस ने यहाँ रह कर महायान धर्म का अध्ययन किया।

३. आर्यबर्मन्—यह एक कोरियन था और नालिन्दा में ही मरा।

४. ६८८ में एक कोरियन भिक्षु आया।

५. स्वी हाँग—७ वीं सदी में आया और यहां ८ वर्ष तक रहा।

६. ओ-कोग,—धर्मदत्त, यहां तीन वर्ष तक रहा।

७. इत्सिंग— बुद्धकर्मा, १० साल तक नालिन्दा में रह कर शिक्षा पाई।

८. तोफांग-चन्द्रदेव, यह नालन्दा के दर्शनों को आया था।

९. तांगतांग- महायान सम्प्रदाय का था। नालन्दा के दर्शनों को आया था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. ह्यून सांग-२ साल के लगभग यहां रह कर इसने अध्ययन किया।

११. ह्यून सन-यह एक कोरियन भिक्षु था। यह प्रयाणवर्मा नाम से ज्यादा मशहूर है। यह भी नालिन्दा के दर्शनों को आया था।

१२. किंग-चू-शीलप्रभ-यहां रह कर कोष का अध्ययन किया।

१३. ह्यून ताता—१० साल तक यहां रह कर अध्ययन किया।

१४. वान हींग-प्राज्ञ देव, यहां रह कर कोष का अध्ययन किया।

इन आगत विद्यार्थियों के द्वारा ही नालिन्दा विश्वविद्यालय के बारे में बहुत सी ज्ञातव्य बातें हमें मालूम होती हैं। विशेषतः ह्यूनसांग और इत्सिंग के यात्रा वृत्त विशेष तौर से इस प्रसंग में सहायक हैं। हम उन्हीं के यात्रा वृत्त के आधार पर संक्षेप से नालन्दा विश्वविद्यालय का वर्णन यहां देते हैं।

संचालन— इस महान् विश्वविद्यालय का संचालन अनेक राजाओं के द्वारा दिए गए निरन्तर दान से होता था। राजाओं ने इस के संचालन के लिए सैकड़ों गावों की आमदनी विश्वविद्यालय के आधीन कर दी थी। ह्यूनसांग के समय विश्वविद्यालय के पास २०० गांव थे। गांवों से ही आवश्यक सामग्री प्राप्त होती थी। प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित परिमाण में भोजन मिलता था जो कि इस प्रकार था— १२० जम्बीर, २० पूगा, महाशाली चावलों का एक पैक। तैल, मक्खन इत्यादि भी नियमित परिमाण में दिया जाता था।

शिक्षा क्रम— नालिन्दा विश्वविद्यालय में केवल ऊंची ही शिक्षा दी जाती थी। इस में प्रविष्ट होने के लिए एक अधिकारी परीक्षा ली जाती थी जिस में उत्तीर्ण होने के बाद ही विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो सकते थे। इस परीक्षा के लिए निम्न विषयों में उत्तीर्ण होना आवश्यक था:-

१. व्याकरण-इस के पाठ्य विषय में ५ मुख्य ग्रन्थ थे। प्रथम सिद्ध, दूसरा धातु, इस ग्रन्थ में एक हजार श्लोक थे, तीसरा सूत्र, चौथा खिल, खिल मन्त्र अष्ट धातु, मंड और उणादि इन तीन विभागों में विभक्त होता था। इस में कुल तीन हजार श्लोक थे। पांचवा ग्रन्थ वृत्ती सूत्र था जो कि पाणिनी अष्टाध्यायी के भाष्य का नाम था।

२. गद्य और पद्य--इस परीक्षा में विद्यार्थियों के लिए धारावाहिक रूप से संस्कृत में गद्य लिखना आना आवश्यक था, साथ ही पद्य रचना की योग्यता भी आवश्यक थी।

३. हेतु विद्या—इस में 'न्याय द्वार तर्क शास्त्र' नामक ग्रन्थ का अनुशीलन कर उस में उत्तीर्ण होना आवश्यक था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. अभिधर्म कोष-(Metaphysics)

यह परीक्षा 'द्वार पंडित' नामक विश्वविद्यालय के अधिकारी द्वारा ली जाती थी। ह्यूनसांग ने लिखा है कि यह अधिकारी परीक्षा बहुत कठोर होती थी, इस में अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या ४० प्रतिशतक से कम नहीं होती थी। इस से प्रतीत होता है कि नालिन्दा विद्यालय के संचालकों को अपने विश्वविद्यालय का स्टैन्डर्ड ऊंचा रखने का हमेशा ध्यान रहता था। विश्वविद्यालय में कौन से विषय मुख्यतया पढ़ाये जाते थे इसका वृत्तान्त भी चीनी विद्यार्थियों के लेखों से मिलता है। बौद्ध धर्म का ऊंचे से ऊंचा अध्ययन इस विश्वविद्यालय का मुख्य कार्य था। इसी लिए बौद्ध धर्म के सभी प्रसिद्ध शास्त्र यहां पर पढ़ाये जाते थे। पर केवल बौद्ध धर्म के शास्त्र ही नहीं अपितु अन्य विद्याओं को पढ़ाने का भी यहां समुचित प्रबन्ध था।

शिक्षा प्रबन्ध—इत्सिंग के अनुसार इस विश्वविद्यालय में इस प्रकार के शिक्षक थे जो सब सूत्रों और शास्त्रों का अध्यापन करते थे। ५०० ऐसे विद्वान् जो ३० 'विद्यासंग्रहों' को पढ़ा सकते थे, और १० ऐसे विद्वान् थे जो ५० 'विद्यासंग्रहों' की व्याख्या कर सकते थे। इन्हीं दस विद्वानों में एक कुलपति आचार्य होता था। विश्वविद्यालय में ऐसी १०० वेदियां थी जहां से शिक्षक लोग व्याख्यान दिया करते थे। ह्यूनसांग के समय शीलभद्र नाम का आचार्य नालिन्दा विश्वविद्यालय का प्रधान था। यह शीलभद्र बंगाल का राज कुमार था परन्तु इसने राज्य की आंकाक्षा छोड़ कर शिक्षा में ही अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया था।

ह्यूनसांग के अनुसार १०००० विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते थे। नालन्दा में शिक्षकों और विद्यार्थियों का पारस्परिक संबन्ध बड़ा घनिष्ट होता था। विद्यार्थी लोग अपने गुरुओं की सेवा करते थे, और गुरु केवल विद्यादान ही नहीं करते थे प्रत्युत् विद्यार्थियों के चारित्र्य को उन्नत करना अपना कर्तव्य समझते थे। नालिन्दा के स्नातकों की उपाधि को राज्यद्वारा स्वीकार किया गया था। उन्हें राज्य की ओर से कार्य मिलता था।

पुस्तकालय— इस महान् विश्वविद्यालय का पुस्तकालय भी एक विराट् पुस्तकालय था जो संसार के प्राचीन पुस्तकालयों में एक अनुपम था। यह पुस्तकालय भी नालन्दा के 'धर्मागंज' नामक विभाग में स्थित था। यह भवन तीन विभागों में विभक्त था जिन के नाम क्रमशः 'रत्न सागर' 'रत्नोदधि' और 'रत्नरञ्जक' थे। ये तीनों भवन बड़े विशाल थे। इनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशालता का इसी से अनुमान किया जा सकता है कि रत्नोदधि नव मञ्जिला था। इस में विशेषतया धार्मिक साहित्य प्रचुर मात्रा में था। मुसलमान आक्रन्ताओं ने इस पुस्तकालय को भी अछूता नहीं छोड़ा और आग की ज्वालाओं के यह अर्पित हो गया।

वैभव— इस विश्वविद्यालय का वैभव अपार था। ह्यून सांग ने इस के वैभव के विषय में लिखा है—

इस विश्वविद्यालय के विशाल भवनों के ऊँचे बुर्ज और सुन्दर रमणीक मीनारें पर्वत की चोटियों की तरह शोभायमान हैं। इस की वेधशालायें प्रातः कालीन वाष्प में विलीन रहती हैं, इस के ऊंचे भवन बादलों को छूते हैं। खिड़कियों से मेघ और वायु द्वारा निरन्तर चित्रित किए जाते हुए आकाश को देखा जा सकता है, तथा रोशनदान से सूर्य और चन्द्रमा के सम्मेलन का अपूर्व दृश्य दिखलाई देता है। निर्मल पारदर्शी जलाशयों पर नील इन्दीवर, लाल कनक पुष्प अनुपम शोभा उत्पन्न करते हैं। आम्र कुञ्जों की सघन छाया द्वारा दृश्य और भी अपूर्व तथा सुन्दर हो जाता है। उपाध्यायों के मकान एक ही प्रकार के चौमञ्जिले बनाये गए हैं। सीढ़ियां मोड़दार बनाई गई है। यह विशाल वैभव किसी भी जाति के लिए गर्व का कारण हो सकता है।

अन्त —नालन्दा के विश्वविद्यालय के समीप ही एक और विश्वविद्यालय विक्रमशिला नामक विकसित हो रहा था। पाल वंशी राजाओं के बढ़ते वैभव, प्रताप और श्री के साथ साथ विक्रम शिला का वैभव और श्री तथा गौरव बढ़ता गया। पालवंशी राजाओं ने नालन्दा के स्थान पर विक्रम शिला को राजकीय विश्वविद्यालय बनाया और उसी को उन्नत करने और बढ़ाने में अपना ध्यान दिया। राज्य-सहानुभूति के अन्त हो जाने से नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रभा भी क्षीण होने लगी। फिर भी बहुत समय तक यह विक्रम शिला के सामने प्रतियोगिता में टिका रहा और उन्नति करता रहा। महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री की सम्मति में १०वीं और ११ वीं शताब्दी तक नालन्दा विश्वविद्यालय शक्ति शाली विश्वविद्यालय था जो न केवल विक्रमशिला की प्रतियोगिता में खड़ा रहा पर अपने प्राचीन गौरव को भी कायम रख सका। मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी के बिहार और बंगाल पर आक्रमण के समय में भी नालन्दा विश्वविद्यालय विद्यमान था। मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी के आक्रमणों ने ही इस विश्वविद्यालय का अन्त किया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कलयुगी दान'

(पं० माता प्रसाद द्विवेदी, अध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी)

पण्डित दीनानाथ पाण्डे, बी. ए., एल. एल. बी. वकील हाई कोर्ट कुर्सी से एक फिट ऊंचा उछल कर मेज़ पर ज़ोर का घूसा जमाते हुये बोले "महाशय पहले गाँठ ढीली कीजिये, पीछे इतिहास शुरु करना, मेरे पास इतना टाईम नहीं जो आप के साथ फिजूल मगज़ पच्ची कर समय खराब करूँ"।

देहाती— "सरकार यह तो बतलाइये, कि इस मामले में कुछ जान भी है, या नहीं ?"

वकील— (लापरवाही से) "जान बान की तुम्हें क्या फ़िकर, जान डालना और निकालना तो हमारे हाथ में है।"

वकील साहब के दाहने हाथ पर ही करीब १½ गज़ की दूरी पर दलाल करीम बकस जी विराजमान थे, यह महानुभाव ग़रीब भोले भाले देहातियों को अपने चंगुले में फँसा कर लाया करते, और इसी प्रकार अपना निर्वाह किया करते थे। यह झट बोल उठे,—"खैर जान बान की तो सब देख ली जावेगी, स्याह का सफ़ेद और सफेद को स्याह कर दिखाना तो हमारे वकील साहब का बांयें हाथ का खेल है, अभी जुम्मा २ आठ दिन भी नहीं हुवे एक मुकदमे में कामयाब हुवे थे, जो कि सोलहों आने झूठा था।"

वकील— "अच्छा, तुम अपना केस किलियर करो, क्या मामला है ?"

देहाती— "एक आदमी पर मेरे ७०० रुपये चाहियें, उन्हीं की मैंने नालिश करनी है"।

वकील— "हुन्डी पर दिये थे या रुक्के पर ?"

देहाती— "साहब" रुक्का, बुक्का तो कछू नाहीं; ऐसे ही इतबार पै दै दये हते !"

वकील— "कोई गवाह है ?"

देहाती— "साहब, गवाहन को तो कछू फ़िकर नाहीं, एक नाहीं २० तैयार कर लीवे, साँची बात है, कछू झूंठी तो है ही नाहीं, मुल आप ऐसी किरपा करें, कि वाके आगे हमारी मूंछ न झुक पावे, रुपैय्यन की तो इती कछू परवाह नाहीं है। रही मेहताने की तो हम आप का खुश कर दीवे"

वकील— "कुछ पढ़े लिखे हो ?"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहाती— "पढ़ा तो छुटपन में बहुत कछु रहा, मुदा अबतो सब कछु भूल गवा।"

वकील— "दस्तखत भी नहीं कर सकते"

देहाती— "अब तो काला अच्छर भैंस बरब्बर है।"

वकील— "यह तो मुशकिल है"

उपरोक्त वाक्य कहते हुये वकील साहब ने, अपने दलाल करीम बक्स की ओर निगाह दौड़ाई और आँखों ही आँखों में कुछ इशारे हुये, जिनको भोला भाला देहाती न समझ सका, बस दलाल साहब झट बोल उठे,— "अंगूठे का निशान तो बना ही सकते हैं, फिर दस्तखत की क्या जरूरत है?"

वकील— "यह लोग देहात में खेती किसानी का काम करते हैं और इस काम में अंगूठे की लकीरें ठीक नहीं रहती हैं घिस जाती हैं।"

करीम बक्स— "अजी हाथ कंगन को आरसी क्या, बनवा कर देख न लीजियेगा।"

वकील साहब ने एक काग़ज़ का टुकड़ा और स्याही की डिब्बी दलाल को दे कर कहा—"अच्छा बनवा लो।"

दलाल— "हाँ, ज़रा देखें तो सही, तुम्हारा अंगूठा कैसा आता है।"

यह कहते हुये दलालराम ने अंगूठे का निशान उस कागज़ के टुकड़े पर लिया और उसे वकील साहब की मेज पर रख कर बोले-"देखिये ऐसा आया है"

वकील— (गौर से देखकर) "ठीक तो है पर स्टाम्प (Stamp) पर भी ऐसा ही आवे तब बात है"।

दलाल— "तो स्टाम्प (Stamp) पर भी देख लीजिये, एक टिकट ही तो खराब होगा, और क्या?"

वकील साहब लापरवाही से सिर हिला कर बोले-"देख लो"। दलाल ने एक लम्बा फुलिसकेप का कागज़ और चार पैसे का टिकट निकाल कर दिया, और वकील साहब ने उस पर टिकट चिपका कर देहाती का अंगूठा लगाने के लिये दे दिया और स्वयं मेज़ पर पड़ी हुई पुस्तक के पृष्ठ लौटने लगे। इतने में दलालराम उस का अंगूठा लगवा कर स्वयं गौर से देख कर वकील साहब से बोले—"साहब, टिकट भी खराब हुआ और काम भी न बना।"

वकील— "क्या हुआ देखें?"

दलाल ने कागज़ वकील साहब को दिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील साहब देखकर— "इम्प्रेशन (Impression) तो ठीक नहीं बैठा, मगर हाँ सावधानी से लिया जावे तो ठीक आजावेगा।"

इतने में दलाल करीम बक्स देहाती के कुर्ते की ओर घूर कर देखते हुवे बोला, "भाई ! देखो !! देखो !!! तुम्हारे कुर्ते पर यह क्या मकड़ी आ पड़ी," देहाती इधर उधर देखने लगा। इतने में वकील साहब ने उस कागज़ को झट पट मेज़ पर पड़ी हुई पुस्तक में छिपा दिया, और उतना ही बड़ा एक दूसरा कागज़ जो पहिले से ही मेज़ पर पड़ा था, हाथ में ले लिया और ध्यान पूर्वक देखकर यह कहते हुये— "खैर काम चल जायगा"-फाड़ कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया, और बोले,—"अच्छा तो अब तुम कल आकर नालिश लिखा देना, इस समय तो कोई मुहर्रिर है नहीं।"

देहाती—"बहुत अच्छा सरकार" कह कर चला गया। देहाती के चले जाने पर वकील साहब तथा दलाल ने मिल कर उसी काग़ज पर जिसको पुस्तक में छुपा दिया था ५००) का रुक्का लिखा लिया और दूसरे दिन जब देहाती राम आये, यह कहकर चलता किया,—"मुझे आज कल मरने तककी फ़ुरसत नहीं है,पुराने मुकदमे ही इतने पड़े हैं कि निबटने में नहीं आते हैं,अच्छा हो यदि आप किसी और वकील का इन्तजाम कर लें।"

* * * *

उपरोक्त घटना को ४ मास व्यतीत हो गये। दलालों की धूर्तता तथा भागीरथ प्रयत्न से पोरडे जी की वकालत अच्छी चौकड़ियाँ भरने लगी, और उचित तथा अनुचित उपायों से खासी आमदनी भी होने लगी। इधर सार्वजनिक कामों में भी इनके ढोंग की अच्छी धाक जम गई, यही नहीं कि खास, खास आदमियों से ही इनकी परिचिति हो वरन् सर्व साधारण भी इनका सिक्का मानते थे। चार महीने बाद वकील ने उसी देहाती पर (जिससे अंगूठे का निशान लगवाया था) नालिश ठुकवा दी और स्वयं, पैरवी पर खड़े हो गये। केस अदालत में चला। यद्यपि देहाती राम ने धोखे से उस कागज़ पर अंगूठा लगवा लेने के लिये सब कुछ कहा परन्तु नगाड़ खाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है ? उसकी भोली भाली सच्ची बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया गया और दलाल को डिगरी दे दी गई। देहाती को रुपया जमा करना पड़ा।

* * * *

पं० दीनानाथ जी सभामें जलियान वाले बाग़ में हुये शहीदों के फंड के लिये ज़ोर दार अपील करते हुये बोले— "सज्जनो आप लोगों को भली प्रकार से मालूम है, कि किस तरह से हमारे सैंकड़ों प्यारे भाई अपने देश के लिये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम आये और सैंकड़ों रमणियों को, बच्चों को, अनाथ कर गये। इस समय आप लोगों का जो कर्तव्य है उसे आप लोग स्वयं विचारिये ! हम सब लोग परस्पर भाई भाई हैं। उन विधवाओं तथा अनाथों की सहायता करना हमारा सब से पहला धर्म है जिनके पति तथा पिता हमारी खातिर देश के लिये अपनी जान देकर स्वर्ग लोक को प्राप्त हो गये हैं। आप लोगों का इस समय यह मुख्य कर्तव्य है, कि अपने पसीने की कमाई इस धर्म कार्य में अर्पण करदें, यही धन का सद् उपयोग है।" यह कह कर वकील साहब ने अपनी पाकेट से १००) के नोट निकाल कर कहा कि—"मैं उन अनाथ और विधवाओं की सहायातार्थ १००) देता हूं।" वकील साहब की उदारता तथा देश भक्ति पर मुग्धता देखकर लोगों की तालियों से सभा मण्डप गूंज उठा। लोग आपस में कानाफूसी करने लगे कि, वकील साहब बड़े उदार हैं, बड़े धर्मात्मा हैं, अपनी कमाई सदा शुभ कार्यों में खरच करते हैं। कई बोले, और कमाल तो यह है कि वकील साहब हमेशा सच्चे ही मुकदमों की पैरवी करते हैं, झूठा मुकदमा तो आज तक इन्होंने कभी लिया ही नहीं है।

* * * *

वकील साहब ने १००) उन ५००) में से दिये थे जो उन्होंने उस देहाती पर झूठी नालिश करके प्राप्त किये थे।

सम्पादकीय

कुरान में मुहम्मद की घरेलू बातें

ईश्वरीय-ज्ञान के नाम से प्रचलित पुस्तकों में से कुरान भी एक है। परन्तु कुरान की, अन्य धर्म-पुस्तकों की अपेक्षा एक विशेषता है। दूसरी इल्हामी पुस्तकों में या तो पैग़म्बरों का नाम तक नहीं और यदि है तो उन का जीवन चरित्र ही है परन्तु कुरान में मुहम्मद साहब के जीवन-चरित्र के स्थान में उन की घरेलू बातों का ज़िक्र है। घरेलू बातें भी ऐसी जिन्हें पढ़ कर हंसी आती है कि ऐसी बातों को सुन कर कुरान को कौन आदमी इल्हाम मान सकता है।

मुहम्मद साहब ने ज़ैद को अपना दत्तक पुत्र माना हुआ था। एक बार वे उस के घर पर उसे मिलने गये। ज़ैद घर पर नहीं था। हज़रत घर में घुस गये। अचानक से ज़ैद की स्त्री ज़ैनब पर नज़र पड़ गई और वे मुग्ध हो गये। ज़ैद को पता चला तो वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ैनब को तलाक़ देने के लिये राज़ी हो गया। यह देख कर मुहम्मद साहब भी शादी के लिये तय्यार हो गये और एक दिन जब अपनी प्रिया धर्मपत्नी आयशा के पास बैठे हुए थे तब एक दम चिल्ला उठे-'ख़ुदा ने मेरा ज़ैनब के साथ निकाह कर दिया है'। अन्त में मुहम्मद की ज़ैनब से शादी होगई। यह देख कर कुरैशी लोग उसे बुरा-भला कहने लगे क्योंकि अरब जैसे गिरे हुए मुल्क में भी दत्तक-पुत्र की वधू से शादी करना बिल्कुल ही नयी चीज़ थी। यह देख कर मुहम्मद साहब को आयत उतरी जो इस प्रकार थी:—

"तू तो परमात्मा को जो बात मंज़ूर है उसे छिपाना चाहता है क्योंकि तू मनुष्य से डरता है। जब ज़ैद ने ज़ैनब को तलाक़ कर दिया तब हमने उस की तुझ से शादी कर दी ताकि आगे से दत्तक-पुत्र की वधू से शादी करना पाप न समझा जाय। जिस बात की ख़ुदा ने पैग़म्बर को इजाज़त दी हो, वह बुरी नहीं समझनी चाहिये।" (सूरत्तुल्ल हज़ाब-३७ आयत)

कुरान के अनुसार ४ स्त्रियों से ही शादी कर सकते हैं परन्तु हज़रत ने १० के लग भग स्त्रियों से शादी की थी। इस के लिये भी ख़ुदा को चिन्ता हुई और निम्न आयत (सूरत्तुल्ल हज़ाब-४९) भेजी गई:—

"अरे नबी, जिन २ को भी तूने दहेज़ दिया है उन सब औरतों को रखनेकी हम तुझे इजाज़त देते हैं। जिन औरतों को तूने लड़ाई में जीता वे भी तुझे देते हैं। तुम्हारे चचा की, बूआ की लड़कियों को भी हम तुझे देते हैं। ईमान लाने वाली हरेक औरत को हम तुझे देते हैं। तू जिस से शादी करना चाहे कर सकता है। तुझे यह दूसरों पर तरजीह है।"

परमात्मा की तरफ़ से इस प्रकार का लाइसेन्स हज़रत मुहम्मद साहब ही ले सकते थे। दूसरा कोई तो ऐसी बातों को सुन कर ही शर्म से सिर नीचा कर ले।

इसी अध्याय की ५९ अयात में और मज़ेदार बात आती है। वहां लिखा है:—

"अरे मुसल्मानो, नबी के घर में उस के बग़ैर पूछे मत घुसो। जब वह तुम्हें खाने को बुलाये तभी उस के घर में जाओ और तब भी भोजन करते ही चले आओ। घर में धन्ना मार कर मत बैठ जाओ। उस के साथ ऐसे बात मत करो जैसे वह तुम्हारे साथ का आदमी हो, क्योंकि इस से नबी को तकलीफ़ होगी, वह तो शर्म के मारे तुम्हें कुछ न कहेगा परन्तु ख़ुदा को तो सच बोलने से शर्म नहीं आती।"

एक बार अबूबकर और उमर हज़रत मुहम्मद के सामने ही बड़ी ज़ोर से बहस करने लगे। बड़े आदमियों के सामने छोटों का इस प्रकार झगड़ पड़ना शिष्टाचार के विरुद्ध था परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबूबकर और उमर ने इसका ख़्याल ही न किया। यह देख कर एक आयत उतरी जो सूरतुल हुजरात (२-५) में में इस प्रकार है:—

"अरे मुसल्मानो, नबी की आवाज़ से ऊंची आवाज़ मत किया करो। जैसे दूसरों के सामने ज़ोर से बोलते हो वैसे नबी के सामने मत बोला करो। कहीं ऐसा न हो कि ऐसा करने से तुम्हारा सब किया कराया फ़िज़ूल जाय और तुम्हें मालूम ही न हो। जो लोग नबी के सामने अपनी आवाज़ धीमे रखते हैं उनके हृदय पर खुदा का असर है।"

कहते हैं कि कुछ कुरैशियों ने मुहम्मद को मार डालने का जाल रचा था। उन्हें लक्ष्य में रख कर एक आयत उतरी जो इस प्रकार है:—

"वे तुझे जाल में फंसाना चाहते हैं, उन्हें याद रहे कि जो इमान नहीं लाते वही जाल में बधेंगे।"

जैसा हमने पहले कहा, अन्य धर्म-ग्रन्थों में अनेक ऐसी बातें हैं जिन से उन के ईश्वरीय ज्ञान अथवा इल्हाम होने में सन्देह होता है परन्तु कुरान में इस प्रकार की बातें ख़ास तौर पर पायी जाती हैं जिन्हें देख कर मालूम पड़ता है कि यह तो नबी के घर का कच्चा चिट्ठा है। एक ख़ास आदमी के घरेलू मामलों को नज़र में रख कर उसे अपने-दत्तक पुत्र की स्त्री से शादी करने की इजाज़त देना, बेशुमार औरतों के साथ निकाह कर सकने तक की इजाज़त दे देना, उस के मकान में बग़ैर पूछे न जाने का उपदेश देना आदि ऐसी बातें हैं जो मुसल्मानों की इल्हामी किताब के सिवाय दूसरी किताबों में नहीं पायी जातीं।

गुरुकुल—समाचार

ऋतु—ग्रीष्म ऋतु अपने पूरे ज़ोर पर है। दिन को गरम लू चलती है, आकाश में धूली चढ़ी रहती है। कभी २ सवेरे और सायंकाल को ठण्डी हवा के झोंके आ जाते हैं। रात को भी गरमी कम नहीं होती, जिससे नींद आनी तक दूभर हो जाती है। चारों ओर प्रकृति मुरझाई हुई सी प्रतीत होती है। वृक्ष, लता, पल्लव झुलसे हुए हैं। समीपस्थ पर्वत पर इस महीने प्यालों की खूब बहार रही है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। चिकित्सालय खाली पड़ा है।

गंगा—प्रचण्ड गर्मी के कारण पर्वत की बर्फ पिघलने लगी है, अतः गंगा में पानी बढ़ रहा है। पुल टूटते जा रहे, उन के स्थान पर यात्रियों के लिए नौका चलती है। गंगा में पानी बढ़ने से स्नान का सुविधा होगया है। ब्रह्मचारी प्रतिदिन गंगा से तैरने का खूब आनन्द लेते हैं। गंगा का जल स्वच्छ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभाएँ— कुल की सब सभाओं के अधिवेशन नियम पूर्वक हो रहे हैं। इस मास में भी इन सभाओं की ओर से कई एक विशेष सम्मेलन हुए हैं।

साहित्य परिषद् की ओर से वैशाख पूर्णिमा को श्री पं० चन्द्रमणि जी पालिरत्न विद्यालंकार के सभापतित्व में कुल में बुद्ध जयन्ती बड़े उत्साह के साथ मनाई गई। बहुत से वक्ताओं ने भगवान् बुद्धदेव के जीवन पर उत्तमोत्तम व्याख्यान दिए और उन का गुणकीर्तन किया।

पिछलों दिनों संस्कृतोत्साहिनी सभा की ओर से "प्रतिभा सम्मेलन" नामक एक विशेष अधिवेशन बड़ी सफलता के साथ किया गया। इस में ब्रह्मचारियों ने दो दल बनाकर स्वरचित संस्कृत श्लोकों में अन्त्याक्षरी की। ब्र० प्रकाशचन्द्र तथा ब्र०शंकरदेव के दो दल थे जिन में श्लोकों की सरसता और मधुरता के कारण ब्र० शंकरदेव का दल विजयी माना गया। श्री पं० वागीश्वर जी विद्यालंकार श्री० पं० सत्यकेतु जी विद्यालंकार तथा श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यालंकार, निर्णायक सभापति थे। यह सम्मेलन बहुत वर्षों के उपरान्त इस वर्ष किया गया था। अतः यह सम्मेलन इस वार विशेष उत्साह के साथ संपन्न हुआ। महा० वाग्वर्धिनी सभा की ओर से हाल में ही एक 'कविता सम्मेलन' अर्जुन के उपसंपादक श्री पं० सत्यकाम जी के सभापतित्व में हुवा। इस में ब्रह्मचारियों ने सरस एवं भावभरी कविताएँ तथा कथाएँ सुनाईं। इस के अतिरिक्त उत्साहिनी की ओर से भी एक संस्कृत कविता सम्मेलन हुआ।

गृहस्थियो! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो!

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में **"कामधेनु"** सेवन कराइये

मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़्लूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥), छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

पता—भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

मो० सत्यव्रत प्रिंटर और पब्लिशर के लिये गुरुकुल-यन्त्रालय काँगड़ी में छपा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा

जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

सुधासिंधु यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खासी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

(दाद की दवा)

दद्रुगजकेशरी बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।॥), डाक खर्च ॥) पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए, मुफ्त मिलेगा। यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. A. 1340.

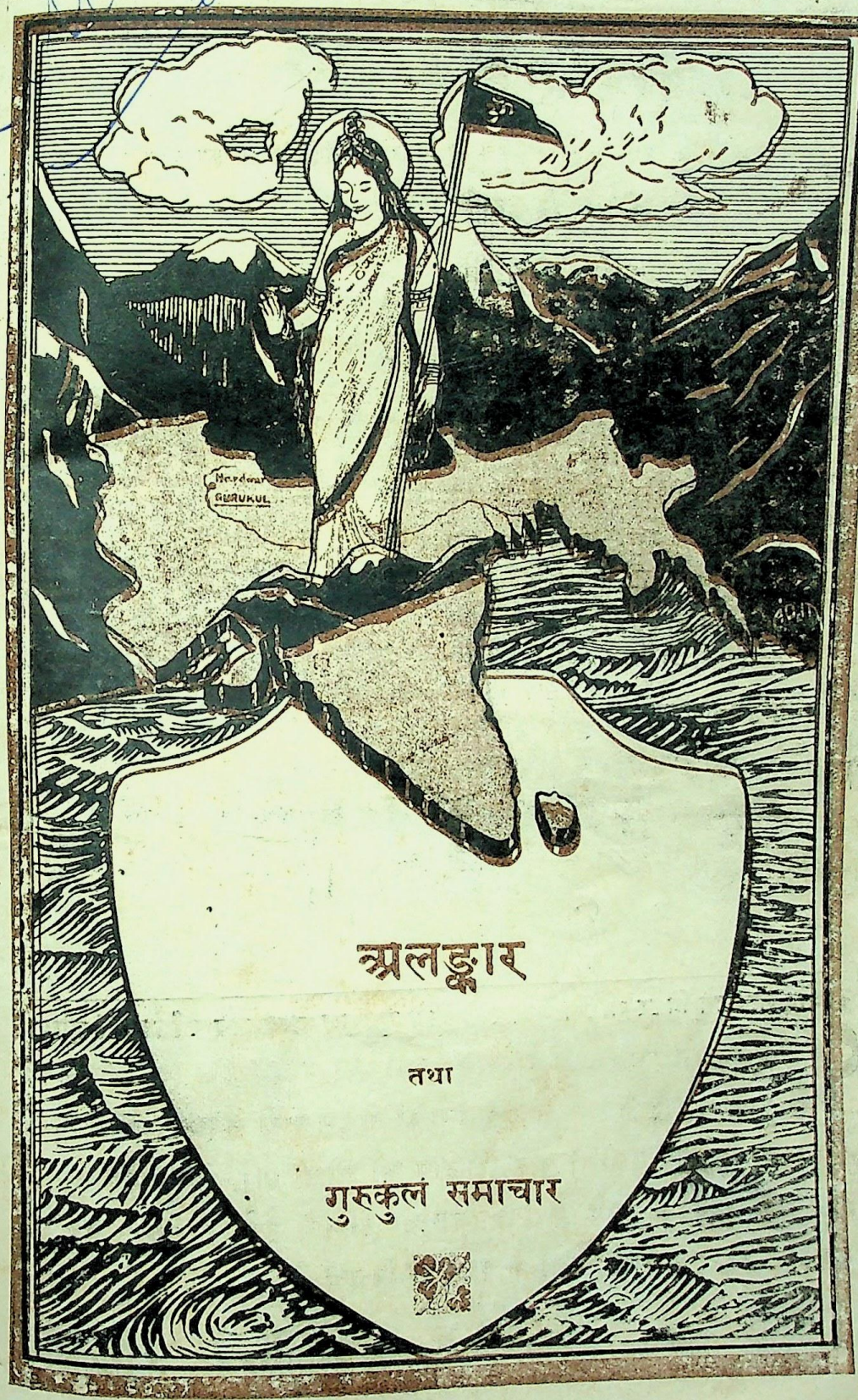

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

सम्पादक— प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विषय सूची *

विषय	पृष्ठ सं०
१. सुमन की आत्म कथा—श्री पं० रमाशंकर जी मिश्र	३३
२. भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क और विचार प्रणाली में भेद—श्री प्रो० सत्यव्रत जी	३४
३. दीर्घ जीवन के उपाय—श्री कविराज सत्यदेव जी विद्यालंकार वैद्यभूषण	४२
४. विक्रमशिला का विश्वविद्यालय—श्री अवीनन्द्र	४७
५. कृतज्ञता—श्री पं० चन्द्रगुप्त जी विद्यालङ्कार	५३
६. सम्पादकीय—	६२
७. गुरुकुल-समाचार—	६४

प्रो० सत्यव्रत प्रिंटर और पब्लिशर के लिये गुरुकुल-यन्त्रालय काँगड़ी में छपा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल-समाचार

* स्नातक-मण्डल गुरुकुल-काँगड़ी का मुख-पत्र *

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः ।
हविष्मन्तो अलंकृतः ॥ ऋ० १. १४. ५ ।

सुमन की आत्मा कथा

(श्री पं० रमाशंकर मिश्र)

तेरी सघन लोनी लता में थे शरण पाते रहे,
झोंके सुखद मञ्जुल मलय के झूम-झुक खाते रहे ।
लोभी मधुप-मन मुग्ध मधु के हेतु थे आते रहे,
मकरन्द पा तव गोद में, यश गीत थे गाते रहे ॥१॥

* * *

होकर विलग, वैराग्य का नव बीज मन में बो चले,
पावन परम प्रिय-प्रेम-पथ, प्रेमाश्रुओं से धो चले ।
सुषमा सने सुस्नेह का शुभ सौख्य सारा खो चले,
अबतक तुम्हारी आस थी, पर अब पराए हो चले ॥२॥

* * *

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क और विचार प्रणाली में भेद

(लेखक—श्रीयुत प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार)

३ अनुमानः—

अनुमान हमारे जीवन का मुख्य अङ्ग है—ज्ञान का यही सब से लम्बा रास्ता है—इसलिए न्याय-दर्शन तथा Logic की पुस्तकों में इस पर बहुत कुछ लिखा गया है। इस पर तुलनात्मक दृष्टि से कुछ लिखना आवश्यक प्रतीत होता है।

(क) पाश्चात्य दर्शन दो भागों में विभक्त है। एक का नाम है Deductive Logic तथा दूसरे का नाम है Inductive Logic.

Deductive logic में अनुमान के उस स्वरूप का वर्णन है जिसका प्रवर्त्तक एरिस्टोटल था। Deductive inference का आधार सामान्य नियम है। हम एक सामान्य नियम को जानते हैं-उसी के आधार पर पक्षसिद्धि करते हैं; 'यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वन्हिः' इस ज्ञान से परिचित हैं—उसी के आधार पर 'पर्वतोऽयं वन्हिमान्' यह समझ जाते हैं। सामान्य से विशेष के अनुमान को ही Deduction कहते हैं।

Inductive logic में अनुमान के उस स्वरूप का वर्णन है जिस का प्रवर्त्तक बेकन था। मिल ने भी इस पर बहुत कुछ लिखा है। Inductive logic की आधार, विशेष घटनाएं हैं। हम घटना विशेषों को जानते हैं—उन्हीं के आधार पर एक सामान्य नियम निकाल लेते हैं। उदाहरणों तथा दृष्टान्तों को जानते हैं-उन्हीं के आधार पर व्याप्तिनिरूपण कर लेते हैं; बाज़ारों, रसोई-घरों में धूम्र तथा अग्नि के संयोग को देख चुके हैं अतः 'यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वन्हिः' इस नियम को समझ जाते हैं। विशेष से सामान्य के अनुमान को ही Inductive कहते हैं। जब से योरप में विज्ञान ने उन्नति प्रारम्भ की तब से Inductive inference को प्रधानता मिलने लगी, क्योंकि इसी के बताए नियमों के आधार पर, विज्ञान के परिणामों को परखा जा सकता था। इसीलिए कई लेखकों ने इसका नाम Material logic भी रख दिया है।

स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि पाश्चात्य विचारकों के लिए ये दोनों भेद कहां तक युक्तियुक्त हैं? Deduction तथा Induction को अलग २ रखना स्वाभाविक है या अस्वाभाविक?

हमारी सम्मति में अनुमान-खण्ड के ये दोनों भेद अत्यन्त कृत्रिम हैं, अत्यन्त अस्वभाविक हैं। हमारा अनुमेय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान जितना भी है उस सब में Deduction तथा Induction दूध और पानी की तरह मिले हुए हैं, उन्हें अलग अलग नहीं किया जा सकता। Deduction में Induction मिला हुआ है, Induction में Deduction मिला हुआ है, दोनों एक दूसरे के ऊपर आश्रित हैं, एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। उदाहरणार्थ, जब हम कहते हैं-'यत्र २ धूम्रस्तत्र २ वन्हिः'-तब हम एक Deduction या व्याप्ति का प्रतिपादन करते हैं। परन्तु क्या यह व्याप्ति कभी सम्भव हो सकती है जब तक हमने अनेक जगह अपने अनुभव से धूएँ और आग को इकट्ठा न देखा हो! क्योंकि हम धूम्र तथा वन्हि को अनेक स्थलों पर इकट्ठा देख चुके हैं अतः उन Inductions के कारण ही हमें 'यत्र २ धूम्रः तत्र २ वन्हिः' इस Deduction अर्थात् व्याप्ति का ज्ञान होता है। जिस तरह Deduction के लिए Induction ज़रूरी है उसी तरह Induction के लिए Deduction ज़रूरी है। रसोई में धूएँ को देख कर अग्नि को देखते समय मैं इस बात पर विचार नहीं करता कि कहीं मेरी आँखों ने मुझे धोखा न दे दिया हो-कार्य कारण के नियम पर भी उस समय मैं शंका नहीं करता। उस समय मैं Induction करता हुआ Deduction का आश्रय लेता हूँ। सारांश यह है कि अनुमान करते हुए Deduction तथा Induction इन दो भेदों का करना सर्वथा कृत्रिम है-ये भेद स्वाभाविक नहीं जान पड़ते।

भारतीय दर्शन में अनुमान खण्ड के ये कृत्रिम भेद नहीं किए। न्याय दर्शन में अनुमान के पांच अवयव दिखाए गए हैं-प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन तथा निगमन। पञ्चावयव के प्रतिज्ञा, हेतु, तथा उदाहरण-ये तीन हमें व्याप्ति तक पहुंचाने में सहायक हैं। उदाहरणों द्वारा हम व्याप्ति को ढूँढ निकालते हैं-विशेष द्वारा सामान्य की तरफ जाते हैं-Logic के शब्दों में Inductive method of inference का आश्रय लेते हैं। परन्तु उसी अनुमान के पिछले दो अवयव-उपनय तथा निगमन-व्याप्ति का आश्रय लेकर उसे स्थल विशेष में घटाते हैं, सामान्य द्वारा विशेष की तरफ जाते हैं, Logic के शब्दों में Deductive method of inference का आश्रय लेते हैं। न्यायदर्शन के पञ्चावयव में Induction तथा Deduction दोनों आ जाते हैं। प्रतिज्ञा, हेतु तथा उदाहरण से व्याप्ति का निकालना Induction है और व्याप्ति, उपनयन तथा निगमन से पर्वत में वन्हि का सिद्ध कर देना Deduction है। भारतीय दार्शनिकों ने इन दोनों में कृत्रिम भेद उत्पन्न करने का प्रयत्न नहीं किया। अनुमान करते हुए प्रथम तीन Inductive तथा पिछली तीन Deductive बातों का आना आवश्यक है। इसी से अनुमान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वाङ्गपूर्ण बनता है। जब Induction तथा Deduction एक ही अनुमान के अङ्ग हैं तब जो दर्शन Syllogism अर्थात् अनुमान में इन दोनों अंगों को इकट्ठा रखता है वह दूसरे दर्शन की अपेक्षा अवश्य उत्कृष्टतर है और इसी लिये भारतीय दर्शन पाश्चात्य-दर्शन की अपेक्षा उत्कृष्टतर है।

भारतीय दर्शन का गौरव और भी बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि यहां Deduction तथा Induction के भेदा को सर्वथा भुला नहीं दिया गया।

न्याय दर्शन में अनुमान के दो भेद किए गए हैं। एक का नाम है स्वार्थानुमान, दूसरे का नाम है परार्थानुमान। स्वार्थानुमान में केवल तीन अवयव होते हैं-परार्थानुमान में पांच। स्वार्थानुमान का प्रकार निम्नलिखित है:—

१. यत्र २ धूम्रस्तत्र २ वन्हिः।

२. धूमवाँश्चायं पर्वतः।

३. अतः पर्वतोऽयं वन्हिमान्॥

यदि ध्यान से देखा जाय तो प्रतीत होगा कि एरिस्टोटल की Syllogism का भी यही तरीका है—

1. All men are mortal.
2. Socrates is a man.
3. Therefore Socrates is mortal.

स्वार्थानुमान तथा एरिस्टोटल के Deductive inference की तुलना से स्पष्ट हो जाता है कि स्वार्थानुमान तथा Deductive Inference एक ही बात हैं, दोनों में अनुमान के केवल तीन अङ्गों का वर्णन किया जाता है। परार्थानुमान दूसरे को समझाने के लिये होता है, अतः उस में विशेष से सामान्य अर्थात् व्याप्ति किस प्रकार प्राप्त हुई-फिर व्याप्ति से विशेष ज्ञान किस प्रकार हुआ-यह सब कुछ बताने की जरूरत पड़ती है और इसीलिए परार्थामान में Induction तथा Deduction दोनों मिले रहते हैं। स्वार्थानुमान में केवल Deduction ही होता है क्योंकि स्वार्थानुमान दूसरे को समझाने के लिए नहीं किया जाता-यह अपने ही लिये है। अपने लिये अनुमान करने में Deductive method ही उपयुक्त है, अतः स्वार्थानुमान में एरिस्टोटल के अनुमान की तरह तीन ही अवयव रखे गये हैं। स्वार्थानुमान अर्थात् Deductive inference में लम्बे चौड़े सिलसिले का क्या आवश्यकता है? इसीलिए बौद्ध दार्शनिक अनुमान के केवल दो अवयव मानते हैं। उन के मत में 'क्योंकि पहाड़ पर धूँआ दिखाई देता है इस लिए वहां अग्नि अवश्य है,' एतावन्मात्र अनुमान के लिये पर्याप्त है। इसी भाव को वेदान्त की निम्न परिभाषा में बड़े स्फुट शब्दों में कहा गया है:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र पञ्चतयं केचिद् द्वयं मन्ये वयं त्रयम् ।
उदाहरण पर्यन्तं यद्वौदाहरणादिकम् ॥

वेदान्तियों के मत में प्रतिज्ञा, हेतु तथा उदाहरण, अथवा उदाहरण, उपनयन तथा निगमन इन दोनों में से किसी तरह का अनुमान किया जा सकता है। यदि अनुमान में प्रतिज्ञा हेतु तथा उदाहरण मात्र दिये जांय तो यही Inductive methed of inference कहलायगा; यदि उदाहरण, उपनयन तथा निगमन मात्र दिये जाँय तो यही Deductive Method of Inference कहलायगा।

इस में कोई सन्देह नहीं कि यूरोप में एरिस्टोटल ने Deductive logic का हा प्रचार किया। एरिस्टोटल के बाद १६-१७ वीं शताब्दी में फ्रान्सिस बेकन ने और १९वीं शताब्दी में J. S. Mill ने Inductive logic की आधार-शिला को रक्खा। बेकन तथा मिल ने कहा कि सामान्य से विशेष परिणाम निस्सन्देह निकल सकते हैं, परन्तु हम सामान्य तक कैसे पहुंचे ? विशेष से सामान्य तक पहुँचने अर्थात् व्याप्ति का पता लगाने के नियम क्या हैं ? वर्त्तमान युग के बढ़ते हुए विज्ञान की सब से बड़ी आवश्यकता भी यही थी। कैमिस्ट्री, फ़िज़िक्स इन सब Empirical Sciences में विशेष अर्थात् Particular से सामान्य अर्थात् General तक पहुँचने का ही प्रयत्न हो रहा था अतः विज्ञान के युग ने पश्चिम में Inductive Logic का आभार मान कर उस का हृदय से स्वागत किया। युरुप के 'दर्शन के इतिहास' में कई सदियों तक Inductive logic का अभाव पाया जाता है। बेकन तथा मिल ने उसी अभाव को दूर किया।

Deductive Logic का मुख्य विषय Syllogism है। Syllogism द्वारा विचार को विरोधों से दूर करना ही Deductive logic का काम है। प्राचीन ग्रीक लोगों का विचार यदि दोष शून्य (अर्थात् Consistent) सिद्ध हो जाता तो वे सन्तुष्ट हो जाते थे। बेकन तथा मिल को इतने से सन्तुष्टि नहीं हुई। उन्होंने कहा कि दोष शून्य विचार (Consistent thought) में क्रियात्मिक जगत् में पायी जाने वाली घटनाओं से अनुकूलता (Conformity to facts) भी होनी चाहिये। इसी उद्देश्य से Inductive logic का प्रादुर्भाव हुआ। Inductive Logic के मुख्य विचार निम्नलिखित हैं:—

1. Observation and Experiment.
2. Generalization or Induction or Inference.
3. Analogy.
4. Testimony.

बेकन तथा मिल ने एरिस्टोटल की अपेक्षा क्या अधिक बताया ? केवल यही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि Observation तथा Experiment ही विचार में आधार हैं। Analogy तथा Testimony भी मनुष्य के ज्ञान में बड़े साधन हैं। यद्यपि एरिस्टोटल का Syllogism बिना Observation, experiment, analogy तथा testimony के हो ही नहीं सकता, तथापि उसने इनकी अपने दर्शन में पृथक् गणना नहीं की। मिल तथा बेकन Observation आदि पर अधिक बल डालना चाहते थे अतः उन्होंने अपने दर्शन में इनकी पृथक् गणना कर दी है। Deductive Logic में Observation, Experiment, Analogy और Testimony को उनका पर्याप्त गौरव नहीं दिया गया; Inductive Logic में उन्हें गौरव काफ़ी दे दिया गया है।

भारतीय दर्शन को कई लोग भूल से Formal या Deductive Logic कह बैठते हैं। हम पहले दिखा चुके हैं कि भारतीय दर्शन के अनुमान के पञ्चावयव में Inductive तथा Deductive दोनों मौजूद हैं अतः इसे Deductive Logic कहना भूल है। इस कथन का यह अभिप्राय नहीं कि भारतीय दर्शन में एरिस्टोटल का Syllogism या Deductive Method नहीं। वह तो है ही। हां, उस के साथ Inductive method भी शामिल है। इसी लिए तो १६वीं तथा १९ वीं सदी में आविष्कृत किये गए तरीके भारतीय दर्शन में एरिस्टोटल से भी पहले के चले हुए हैं। उन्हीं को प्रमाण चतुष्टय कहते हैं जो कि निम्न लिखित हैं—

१. प्रत्यक्ष।
२. अनुमान।
३. उपमान।
४. शब्द।

न्याय का प्रत्यक्ष ही बेकन तथा मिल का Observation और Experiment है। न्याय का अनुमान ही पाश्चात्य दर्शन का Generalization या Inference है। न्याय का उपमान ही Analogy तथा शब्द ही Testimony है। पश्चिमीय दर्शन के विषय में कहा जा सकता है कि वहां पहले Deductive और तदन्तर Inductive Logic चली। भारतीय दर्शन तो Inductive Logic ही है, Deductive उस के भीतर समाई हुई है। भारतीय दर्शन में इन दोनों के साहचर्य्य को प्रारम्भ से ही समझा गया है। प्रत्यक्षादि प्रमाणों का पृथक् परिगणन यदि भारतीय दर्शन को Inductive सिद्ध करता है तो शंका हो सकती है कि क्या भारतीयों ने पाश्चात्यों की तरह Inductive Logic से कोई उपयोग लिया या नहीं? पश्चिम में Inductive Logic का उदय विज्ञान के विकास के साथ हुआ। Observation तथा Experiment से Science बढ़ी। भारत में भी क्या Inductive Logic से कोई लाभ उठाया गया? इस प्रश्न का उत्तर बड़ी अच्छी तरह "हाँ" में दिया जा सकता है। ज्योतिषशास्त्र तथा वैद्यक-शास्त्र की जो उन्नति भारत ने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की थी वह अब तक पश्चिम में नहीं हुई। क्या यह सब कुछ बिना प्रमाणों का प्रयोग किये हो गया था? नहीं, कदापि नहीं। ज्योतिष-शास्त्र तथा वैद्यक-शास्त्र स्वयं प्रमाणों का प्रतिपादन करते हैं। उनकी आन्तरिक साक्षी सिद्ध करती है कि भारतीय दार्शनिक Inductive Logic का पूरा पूरा उपयोग करते थे।

सारांशतः जैसे पाश्चात्य Logic के उद्देश्य को अपना भी उद्देश्य मान कर मोक्ष का प्रतिपादन करते हुये भारतीय विचारक पाश्चात्य दार्शनिकों से एक कदम आगे बढ़ जाते हैं, वैसे Inductive तथा Deductive के भेद को समझते हुए कहीं २ उन्हें पृथक् रख कर वे जब न्याय दर्शन में दोनों को परार्थानुमान में मिला देते हैं तब भी पाश्चात्य दार्शनिकों से एक कदम और आगे निकल जाते हैं। इस के अतिरिक्त प्रमाण चतुष्टय का मानना सिद्ध करता है कि वे लोग Inductive Logic से भली भांति परिचित ही नहीं परन्तु अपने दर्शन का यही रूप देते थे-उनके दर्शन को Inductive Logic कहा जा सकता है, परन्तु यह कहते हुये ध्यान में रखना चाहिये कि Inductive-Deductive के कृत्रिम भेद को वे स्वीकार नहीं करते थे।

(ख) इन दोनों भेदों के अनन्तर अब हम दूसरे भेद पर विचार करते हैं। व्याप्ति ज्ञान यदि ठीक हो तो आगे अनुमान कर लेना सहज बात है इसी लिए deductive के ऊपर झगड़े हैं ही नहीं। यदि Induction ठीक है तो Deduction ठीक होगा ही अतः दार्शनिक विचार का युद्ध सदा से व्याप्ति के साथ रहा है। "यत्र २ धूमस्तत्र २ वन्हिः" यह एक व्याप्ति है, इसकी सत्यता का निर्णय कैसे किया जाय? हेतु ठीक है या नहीं? यह न्याय-दर्शन तथा Inductive Logic (जो कि व्याप्ति तक पहुंचाने का तरीका है) दोनों के सामने बड़ा भारी प्रश्न है जिस का निर्णय करना आवश्यक है, इस के बिना अनुमान ही नहीं चल सकता इसका निर्णय कैसे किया जाय? J.S. Mill ने इस के लिये ५ तरीके बताए हैं जो कि निम्न लिखित हैं:—

[१] Method of agreement-Jevons ने इस तरीके का संक्षेप में रूप बताते हुए कहा कि "The sole invariable antecedant of a phenomenon is probably its cause."

उदाहरणार्थ—

यदि अ ब स ण क ख का कारण है।

यदि अ र च ण ल य का कारण है।

यदि अ ग घ ण ठ ठ का कारण है।

तो हम अनुमान करेंगे कि 'अ' सदा 'ण' को पैदा करता है क्योंकि 'अ' जब २ भी आता है, ण अवश्य पैदा होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या इसी को संस्कृत भाषा में "यत् सत्वे यत् सत्वं" नहीं कह सकते? यदि कह सकते हैं तो क्योंकि "यत्सत्वे यत्सत्वम्" केवलान्वयी अथवा पूर्ववत् अनुमान है; अतः मिल का "Method of Agreement" केवलान्वयी अनुमान से मिलता जुलता ही है। व्याप्ति के परिष्कार में मिल का दूसरा तरीका:—

[२] Method of difference कहाता है। इस नियम की व्याख्या करते हुए Jevons का कथन है कि "The antecedent which is invariably present when the phenomenon follows, and invariably absent when it is absent, other circumstances remaining the same, is the cause of the phenomenon in those circumstances."

क्या यह वर्णन "यदसत्वे यदसत्वम्" इस पंक्ति का ही भावानुवाद नहीं? न्यायदर्शन में इसी को शेषवत् अनुमान कहा है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार को केवल-व्यतिरेकी अनुमान से मिलता जुलता नियम कह सकते हैं।

[३] मिल का तीसरा नियम Joint Method of Agreement and Difference के नाम से प्रसिद्ध है। यह "यत्सत्वे यत्सत्वं, यदसत्वे यदसत्वं" सामान्यतो दृष्ट-अथवा अन्वय-व्यतिरेकी अनुमान से मिलता जुलता नियम है। कहीं पर केवलान्वयी; कहीं पर केवल-व्यतिरेकी तथा कहीं पर दोनों अर्थात् अन्वयी तथा व्यतिरेकी अनुमान लगाते हैं, यह सिद्धान्त न्याय शास्त्र का तथा मिल का बहुत-कुछ समान है। मिल के नियमों में Method of Concomitant Variations तथा Method of Residue ये दो और भी नियम हैं जो कि कुल पाँच नियमों की सँख्या को पूरा करते हैं। मुझे यहाँ अधिक गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं। इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि कई पाश्चात्य दार्शनिक भी मिल के पिछले दोनों नियमों को Method of difference के अन्तर्गत ही मानते हैं, हमारे यहां तो उन का पृथक् परिगणन न होने के कारण वे केवल व्यतिरेकी के ही अन्तर्गत समझने चाहिये।

मिल के पाँचों Methods तथा न्याय के त्रिविध अनुमान में एक भेद है। मिल ने Methods को कार्य कारण का पारस्परिक सम्बन्ध ढूँढने के लिये प्रयुक्त किया है। न्याय ने अनुमान के ही तीन भेद कर दिये हैं जिन में ये Methods घट जाते हैं। केवलान्वयी अनुमान Method of agreement [यत्सत्वे यत्सत्वं] के बिन नहीं बन सकता। केवल व्यतिरेकी अनुमान Method of difference

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[यदभावे यदभावः] के बिना नहीं बन सकता। नाही अन्वय व्यतिरेकी अनुमान Joint method of agreement and difference [यत्सत्वे यत्सत्वं यदभावे यदभावः] के बिना बन सकता है। परन्तु फिर भी मिल के Methods तथा न्याय के त्रिविध अनुमान में भेद है और वह वही है जो अभी उपर कहा गया है। मिल ने कार्य कारण सम्बन्ध जानने के लिये तीन Methods निकाल लिये हैं, न्याय के त्रिविध अनुमान में ही तीनों Methods स्वयं आजाते हैं। मिल का अनुमान अलग है, तीन 'मैथोड' अलग हैं; न्याय ने Methods को अलग नहीं रक्खा, उन्हें अनुमान का ही अङ्ग बना दिया है। नैय्यायिक अनुमान करता है, उस के अनुमान में मिल के Methods स्वयं लग जाते हैं; मिल अनुमान करता है परन्तु उसे अनुमान कर के देखना पड़ता है कि उस के अनुमान पर कौन सा Method लगता है। नैय्यायिक को एक ही क्रिया करनी पड़ती है, मिल को दो क्रियाएँ करनी पड़ता हैं, उद्देश्य दोनों का समान है।

(ग) भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क में तीसरा भेद व्याप्ति विषयक है। पश्चिम का तार्किक कहाता है- "All men are mortal" भारत का तार्किक कहता है, "यत्र २ मनुष्यत्वं तत्र तत्र मर्त्यत्वम्"। पहला दार्शनिक मनुष्य को देखता है, फिर मनुष्यों को देखता है। अनेक मनुष्यों को देख कर वह सब मनुष्यों के विषय में अपनी व्याप्ति को-"सब मनुष्य मरण धर्मा हैं"-इस प्रकार का शाब्दिक रूप देता है। दूसरा दार्शनिक भी मनुष्य को देखता है और फिर मनुष्यों को देखता है। अनेक मनुष्यों को देख कर वह अपनी व्याप्ति को शब्दों का रूप देता है और कहता है—"मनुष्यत्व और मर्त्यत्व एक ही अधिकरण में रहते हैं"। भारतीय दार्शनिक 'सब मनुष्य' इस शब्द का प्रयोग नहीं करता; वह 'मनुष्यत्व" इस शब्द का प्रयोग करता है। इस बात को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं कि "सब मनुष्य" तथा "मनुष्यत्व" इन दोनों भावों में से "मनुष्यत्व" रूप में प्रकट किया हुआ भाव ही दार्शनिक दृष्टि से अधिक महत्व का भाव है। Deduction तो सामान्य से विशेष की तरफ जाना है। "सब मनुष्य" इस शब्द का प्रयोग Deduction के भाव के विरुद्ध है, इस में "विशेष" की गन्ध पाई जाती। "मनुष्यत्व" इस शब्द का प्रयोग ही Deduction के भाव के अनुकूल है, क्योंकि इस में "विशेष" की नहीं परन्तु "सामान्य" की गन्ध है।

अनुमान खंड को जिस तरह से Inductive Logic में बढ़ाया है उस से कम से कम सौ गुणा अधिक रूप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उपाधि आदि भिन्न २ रूपों से न्याय तथा नवीन न्याय में उसे बढ़ाया गया है। नवीन न्याय ने अपने को इतना बोझल बना लिया है कि न्याय दर्शन का उद्देश्य ही उस से ओझल हो गया है। मेरा दृढ़ सिद्धान्त है कि अवच्छेदक वाद के विद्यार्थियों को मुक्ति कभी नहीं मिलेगी, क्यों कि उन्हें न्यायउद्दर्शन का उद्देश्य ही स्मरण नहीं रह सकता।

अनुमान के अनन्तर उपमान को प्रमाण माना जाता है। इस पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि हमारे यहाँ उपमान को उतना ही प्रामाणिक समझा जाता है जितना Logic में Analogy को।

——:*:——

दीर्घ जीवन के उपाय

"जीवेम शरदः शतम्"

(ले०—कविराज सत्यदेव जी विद्यालंकार वैद्यभूषण)

आज हम अपने पाठकों के सामने दीर्घ जीवन के उपायों के विषय में कुछ विचार करना चाहते हैं। परन्तु आयु किन कारणों से घटती है वा बढ़ती है यह बतलाने से पूर्व विज्ञान की दृष्टि से जीवन और मृत्यु के स्वरूप पर कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है। अतः पहिले उसी को स्पष्ट करने का यत्न करते हैं—

मनुष्य का शरीर छोटे २ Cells वा कोष्ठों से बना हुआ है, जोकि विज्ञान की दृष्टि में जीवित हैं। क्यों कि चेतनता के (१) उत्तेजना, प्रतिक्रिया, वा Response, (२) आत्मीकरण वा Assimilation, (३) वृद्धि वा Growth (४) उत्पादन शक्ति वा Reproduction, और (५) मल त्याग वा Excretion, ये पाँच लक्षण हैं। प्रत्येक Cell वा कोष्ठ इन ५ शर्तों को पूरा करता है। उदाहरण के लिये हम एक-कोष्ठ-धारी अमीवा को लेते हैं। इस प्राणी का शरीर एक ही कोष्ठ से बना होता है किन्तु यह सभी काम करता है। जब Cell इन कामों को नहीं करता तभी वह मृत कहा जाता है। हर्बर्ट स्पैन्सर ने गीता के—

"देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः,
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ"

इस वचन के अनुसार जीवन का लक्षण "अध्यात्म और अधिभूत में समता, एकता, अर्थात् अध्यात्म में अधिभूत को Respond करने की शक्ति होना" किया है, जो कि उपरि वर्णित ५ शर्तों में से केवल एक को ही व्याप्त करता है। अन्य वैज्ञानिक लोगों का कथन है कि ये कोष्ठ Cells

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्षण नष्ट होते रहते हैं और इनका स्थान भोजन से बने हुए नए कोष्ठ लेते रहते हैं और नष्ट कोष्ठ मल के रूप में शरीर से निकलते रहते हैं। इन में से पहिली क्रिया को वे 'आत्मीकरण' और दूसरी को 'मलत्याग' कहते हैं। जब तक ये दोनों क्रियाएँ ठीक रहती हैं तब तक ही जीवन है, अन्यथा मृत्यु हो जाती है। अर्थात् जिस प्रकार एक तालाब में शुद्ध पानी का आना और गन्दे पानी का निकलना तालाब को खराब नहीं होने देता, उसी प्रकार शुद्ध आहार और मल तथा विषों का त्याग भी इस शरीर को नष्ट होने से बचाते हैं। यह लक्षण २य, ३य शर्तों को पूरा करता है। आयुर्वेद के विद्यार्थी जानते हैं कि व्यापक दृष्टि से आहार की प्राप्ति वा Assimilation प्राण और मलों का त्याग अपान की ही क्रिया से होते हैं। जब तक इस प्राण और अपान की क्रियाओं में समता वा सहयोग बना रहता है तब तक ही जीवन भी सुरक्षित रहता है। यही कारण है कि अन्य वायुओं की समता पर इतना बल न देकर, संस्कृत साहित्य में इन की समता पर ही विशेष बल दिया गया है। जैसा कि कृष्ण भगवान् ने भी कहा है कि—

"प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तर चारिणौ"

अथर्ववेद में भी प्राण अपान का मृत्यु के साथ सम्बन्ध दर्शाने वाला एक मंत्र पाया जाता है। उस में प्राण अपान को संम्बोधित कर मृत्यु से रक्षा करने के लिये प्रार्थना की गई है। वह मंत्र इस प्रकार है—

"प्राणपानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा"

उत्पादन वा Reproduction जाति की वृद्धि के लिए आवश्यक है किन्तु वह भी चेतनता में प्रमाण अवश्य है।

इस विवेचना से, विज्ञान की दृष्टि में जीवन और मृत्यु क्या है, इस प्रश्न पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। एक शब्द में, जब ये कोष्ठ सम्मिलित रूप से इन सब कामों को छोड़ देते हैं तब पूर्ण, और जब स्थानिक कोष्ठ ही ऐसा करते हैं तब स्थानिक मृत्यु हो जाती है।

जिन महानुभावों की यह स्थापना है कि "जिस प्रकार Ether में भिन्न २ संख्याओं में वेपन होने से ताप, प्रकाश, वा शब्द उत्पन्न होते हैं, और निश्चित संख्या से कम वेपन होने पर हमको इनका अनुभव नहीं होता; इसी प्रकार जीवन भी इन Vibrations की निश्चित संख्या से व्यक्त होता है, और उस से कम होने पर जीवन अव्यक्त होजाता है;" उन से भी किसी प्रकार की हमारी विमति नहीं है क्योंकि वेपन भी गति का ही एक प्रकार है।

जिस प्रकार पुराणों में एक ही प्रजापति परमेश्वर के कार्य भेद से ब्रह्मा, विष्णु और महेश, ये तीन देव बतलाए गए हैं; उसी प्रकार आयु-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद में वात प्रजापति के भी ये ही तीन स्वरूप हैं। अर्थात् जिस प्रकार परमात्मा ब्रह्मा रूप से प्रकृति से जगत् को को बनाता है, विष्णु रूप से इसका धारण करता है, और महेश वा रुद्र रूप से इसका संहार करता है, उस ही प्रकार बाल्यकाल में वात, श्लेष्म-रूपी प्रकृति से शरीर को बनाता, विष्णु रूप से इसका धारण और वृद्धावस्था में रुद्ररूप से नाश करता है।

यह वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि रज और वीर्य के संयोग के सम-क्षण क्रिया और जीवन शक्ति सब से अधिक होती हैं और वह उत्तरोत्तर कम होती जाती हैं। मनुष्य की वृद्धि भी उत्तरोत्तर कम होती जाती है। यही कारण है कि आयुर्वेद में बाल्यकाल को श्लेष्म काल और वृद्धावस्था को वात का काल कहा गया है। दोनों में अन्तर केवल इतना है कि बालक में वृद्धि normal तथा यथार्थ होती है और वृद्ध में वात रुद्र रूप धारण करके श्लेष्मा से विषाक्त पदार्थ उत्पन्न करता है जो कि शरीर के भाग बनने के स्थान में उस को नुकसान पहुँचाते हैं। यही कारण है कि कई महानुभाव विशेष २ रासायनिक पदार्थों की उत्पत्ति को ही मृत्यु का कारण बतलाते हैं। इस के विशेष विवरण को मैं आगे के लिये छोड़ता हुआ यहां पर केवल इतना ही बतलाना चाहता हूं कि इस त्रिदोष की ठीक प्रकृति रहना ही स्वास्थ्य तथा जीवन, और विकृति ही रोग एवं मृत्यु है।

इस संक्षिप्त विवेचना से बुढ़ापे और मौत की पारस्परिक समता पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है। बुढ़ापे के अतिरिक्त नींद की भी घटना मृत्यु से बहुत मिलती जुलती है। मौत नींद की बड़ी बहिन कही जा सकती है। लोक में भी "वह मर गया" आदि मुहाविरे बोले जाते हैं। फलतः मृत्यु की घटना के कारणों को स्पष्ट करने के लिये हम इन पर भी थोड़ा सा विचार करना चाहते हैं।

हमने आपको बतलाया कि भ्रूण की अवस्था में क्रिया और जीवन शक्ति सब से अधिक होती हैं, और यह उत्तरोत्तर कम होती जाती हैं; फलतः जब यह शक्ति इन में बहुत ही कम हो जाती है तब बुढ़ापा आ घेरता है। यह क्रिया शक्ति क्या है? यह क्रिया वही है जिसे कि हम Assimilation वा (आहार) आत्मीकरण और Excretion वा मलत्याग की अथवा दूसरे शब्दों में प्राण और अपान की क्रिया कह आए हैं। अर्थात् कोष्ठ Cell के अन्दर जन्म के समय यह शक्ति एक निश्चित मात्रा में होती है और जब उन में यह शक्ति कम हो जाती है तब मनुष्य की वृद्धावस्था का आरंभ होता है। यह क्रिया क्यों कि २५ साल तक ही अधिक होती है और फिर ४०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद सर्वथा ही नहीं होती, इस लिये बनने का समय भी यही है। बूढ़े लोगों के विचार रुक जाते हैं। उनको बदला नहीं जा सकता। इनकी भी व्याख्या इसी सिद्धान्त से होती है। व्रण भी इस उमर में इसी लिये देर से भरते हैं।

परन्तु प्रश्न होता है कि Cell कोष्ठ की शक्ति को निश्चित करने में कौन २ कारण हैं। एक आस्तिक संभवतः इसका उत्तर अपनी कर्म फल की कल्पना से, और एक नास्तिक शायद आकस्मिकता से इस का उत्तर देगा, परन्तु एक वैज्ञानिक की दृष्टि में यह काम वंशानुक्रमिता से होता है। मैथुन के समय शुक्र और रज में जो बीज वा कीटाणु सब से प्रबल होते हैं वे ही मिल कर संतान का निर्माण करते हैं। इन के शक्तिशाली होने पर संतान के Cells भी बलवान् होते हैं। परन्तु इस से यह न समझना चाहिये कि निर्बल पिता की संतान सर्वदा निर्बल ही होगी; क्योंकि संतान का बल गर्भाधान के समय निकले हुए वीर्याणु पर निर्भर है और उस समय प्रयत्न से सबल कीटाणु भी आ सकता है।

हमारे शरीर में एक विशेष प्रकार की कुछ ग्रन्थियां वा (Glands) भी पाई जाती हैं जो कि शरीर के पोषण को नियमित करती हैं। उदाहरण के लिये Thymus gland, Fat metabolism और Thyroid gland, Nitrogen metabolism को नियममित करता है। इन में विकार उत्पन्न होने से शरीर का ठीक पोषण नहीं होता, Puberty जल्दी आने लगती है और यह शरीर रूपी फल समय से पहिले ही पक कर गिर पड़ता है।

इन्हीं के समान एक और ग्रन्थि है जिसे अण्ड व testes कहते हैं। इन अण्ड कोशों से एक शुक्र के अतिरिक्त अन्तः स्राव बनता है जिसे कि वीर्य, ओज वा Internal secretion कहते हैं। यह स्थानिक शिराओं के द्वारा हृदय में जाता है और फिर सारे शरीर की शक्ति Vitality को बढ़ाता है। इस के विषय में वाग्भट्ट में लिखा है कि

ओजस्तु तेजो धातूनां शुक्रान्तानां परं स्मृतम्
हृदयस्थमपि व्यापि देहस्थिति निबन्धनम्।
स्निग्धं सोमात्मकं शुद्धमीषल्लोहित पीतकम्
यन्नाशे नियतं नाशो यस्मिं स्तिष्ठति तिष्ठति।
निष्पद्यन्तेयतोभावाःकोपक्षुद्व्यान शोक श्रमादिभिः

डाक्टरों का कहना है कि कम से कम २५ वर्ष तक इन अण्डकोशों से ओज बनाने का ही काम लेना चाहिए, शुक्र का नहीं। अथर्ववेद के शब्दों में इस ओज की रक्षा करते हुए ही ब्रह्मचर्य्य के बल से मृत्यु को जीता जा सकता है।

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत"
ब्रह्मचर्य्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम दूसरी घटना नींद की ओर आते हैं। नींद के विषय में आयुर्वेदाचार्यों का मत है कि "जब संज्ञावाही स्रोतसों में तमोगुणी श्लेष्मा अधिक हो जाता है तब नींद का आगमन होता है। तमोगुणी लोगों को (जिन में कि श्लेष्मा से विजातीय द्रव्यों की वृद्धि होती है) दिन रात नींद आती है। रजो गुणी कभी भी सो सकते हैं और सात्विक पुरुषों में (जिन में कि श्लेष्मा से सूक्ष्म तत्वों की वृद्धि होती है) आधी-रात में निद्रा आती है। अर्थात् तामसी पुरुष हमेशा सोते रहते हैं और सात्विक पुरुषों को नींद की बहुत ही कम आवश्यकता होती है। यहाँ पूछा जा सकता है कि यह तमोगुणी श्लेष्मा क्या है? और तमो गुणी अधिक क्यों सोते हैं? आइये, देखें डाक्टर लोग इन प्रश्नों का क्या उत्तर देते हैं।

ऐसा विचार है कि वनस्पतियों की Reproduction के द्वारा स्वाभाविक मृत्यु के समय अन्दर ही एक प्रकार का विष पैदा हो जाता है जिस से कि वनस्पति की मृत्यु हो जाती है। इस क्रिया को Auto-intoxication कहते हैं। इस क्रिया से एक प्रकार के पदार्थ उत्पन्न हो जाते हैं जिन्हें कि Ponogenes कहते हैं। इन ही पदार्थों से हमें थकावट का अनुभव होता है। नींद के समय ओषजन की क्रिया Oxidation से ये पदार्थ नष्ट हो जाते हैं। इन पदार्थों में Lactic acid प्रधान होता है और इस का प्रभाव विषाक्त होता है।

इन पदार्थों के अतिरिक्त क्षारीय पदार्थ (Leucomains) वात चक्रों (Nervous centres) पर जम जाते हैं जिनसे कि नींद तथा थकावट का अनुभव होता है। इन में से Supra-renal gland में बनने वाली Adernaline मुख्यतम है। क्यों कि अधिक मात्रा में यह विष काम करती है, किंच कुत्तों में इसका Injection करने से नींद आती देखी गई है। नींद के समय ये पदार्थ भी नष्ट हो जाते हैं। जिन लोगों में ये पदार्थ उत्पन्न होते हैं वे ही तमोगुणी हैं और उनको ही नींद अधिक आती है। इस विवेचना से हम इस परिणाम पर पहुंचे कि जीवन के लिए नींद अनिवार्य है तथा च मृत्यु इन विषयों का ही परिणाम स्वरूप है।

इसी प्रकार इस घटना के अन्यान्य भी कारण हैं परन्तु हम केवल एक का ही वर्णन करके इस प्रसंग को समाप्त करेंगे। उस का वर्णन यद्यपि हम मलत्याग वा Excretion के रूप में कर चुके हैं परन्तु फिर भी कुछ व्याख्या की अपेक्षा है। प्राणिशास्त्र के वेत्ता हमें बतलाते हैं कि Mammals, पक्षियों तथा Lower Vertebrates की अपेक्षा मनुष्य की आयु कम होती है और उस की आँत बड़ी होती है। इस से वे कल्पना करते हैं कि बृहदंत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आयुष्य के साथ अवश्य कोई संबन्ध है। वे कहते हैं कि आँत के अधिक लंबा होने से उस में मल अधिक देर तक जमा रहता है। फलतः इस में microbes पैदा हो जाते हैं जिन से कि Fermentation तथा Putrefaction के द्वारा शरीर को हानि होती है। मलबन्ध से Malnutrition होता है, आदमी कमज़ोर तथा रोगी हो जाता है, शरीर में नानाविध विष हो जाती हैं, जिह्वा मलिन, शुष्क तथा बेस्वाद हो जाती है। इस बिष का प्रभाव वात संस्थान पर भी मालूम होता है, जिस के कि शिरोवेदनादि लक्षण सूचक हैं। ओज वा ब्रह्मचर्य की रक्षा नितान्त असंभव हो जाती है। परिणामतः मनुष्य सब रोगों का घर बन कर अकाल मौत का शिकार बनता है।

प्रिय पाठको! नींद, बुढ़ापे और मौत के कारणों पर विचार करते हुए हमने अर्थापत्ति से दीर्घ आयुष्य के उपाय भी बतला दिए। हमने आप को बतलाया कि प्राण और अपान, आहार और मलत्याग, Assimilation और Excretion, ओज और ब्रह्मचर्य्य की रक्षा और उचित निद्रा, दीर्घ आयुष्य के सीधे कारण हैं। चरक भगवान् कहते हैं कि—

"त्रय उपष्टम्भा इत्याहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति"

अर्थात् आहार, निद्रा तथा ब्रह्मचर्य ये तीन उपष्टंभ हैं। इनके सदुपयोग से मनुष्य स्वस्थ रहता हुआ देर तक जी सकता है।

विक्रमशिला का विश्वविद्यालय

(ले०—श्री अवीनन्द्र)

भारत के प्राचीन गौरव को स्मरण दिलाने वाले प्राचीन काल के विश्वविद्यालयों में से विक्रमशिला का विश्वविद्यालय अन्यतम था। 'नालन्दा' विश्वविद्यालय की विश्वविख्यात कीर्ति-प्रभा को अपनी प्रखर-प्रभा से मन्द करने वाला विक्रमशिला का राजकीय विश्वविद्यालय ही है। पालवंशी राजाओं के विद्यानुराग-धर्म प्रेम और उनकी कीर्ति की गौरव कथा सुनाने वाला 'विक्रमशिला' का ही राजकीय विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय को प्रारम्भ से ही राजकीय संरक्षण प्राप्त रहा। दूसरा यह कि इस में तन्त्रों का अध्ययन विशेष तौर पर किया जाता था। इस विश्वविद्यालय के विषय में ह्युनसांग और इत्सिंग सदृश चीनी यात्रियों के यात्रा वृत्तान्त के सदृश सहायता देने वाले यात्रा-वृत्तान्त हमें उपलब्ध नहीं। 'तारानाथ' द्वारा लिखित वृत्त ही इस विश्वविद्यालय के इतिहास लिखने में हमारा सहायक और एक मात्र आधार है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान— विक्रम शिला विश्वविद्यालय का स्थान अभीतक ऐतिहासिक लोग निश्चित नहीं कर सके हैं। कनिंगम ने बड़गांव के समीप ही इसका भी स्थान बताया है, पर यह युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता। प्रो० नन्दलाल दे और प्रो० समाहार के मत से भागलपुर से १४ मील पूर्व और अङ्ग की राजधानी चम्पा से २८ मील पूर्व 'पाथरघाट' के नाम से मशहूर सीधे टीलों से युक्त पहाड़ी आती है। यही स्थान विक्रम शिला विश्वविद्यालय का बताया जाता है। यह स्थान सुल्तान गञ्ज से जल द्वारा एक दिन का मार्ग है। यह स्थान एक विशाल विश्व विद्यालय के लिए उपयुक्त है। यह स्थान बौद्ध विहारों के लिए भी उत्तम है। दृश्य रमणीक हैं। खुला मैदान है। आराम के साथ ८००० आदमी बस सकते हैं। गंगा टीलों के पास होकर ही बह रही है। पहाड़ियां बहुत ऊंची नहीं। सब प्रकार से एक विश्वविद्यालय और बौद्ध विहारों के लिये यह स्थान उपयुक्त है।

इतिहास— विक्रम शिला विश्वविद्यालय का आरम्भ पाल वंशी राजाओं के द्वारा हुआ। प्रसिद्ध जन श्रुति तथा तिब्बती ऐतिहासिक लेखकों के अनुसार 'परमसौगत परमेश्वर परम भट्टारक धर्मपाल' ने नवम शताब्दी के आरम्भ में १०८ प्रोफेसरों के साथ राज्यसंरक्षण में इसे स्थापित किया। इस विश्वविद्यालय के नाम के बारे में कहा जाता है कि यहां पर कभी विक्रम नाम का यक्ष मारा गया था। पर तिब्बती लेखक कहते हैं कि बौद्ध ग्रन्थों के एक प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य काम्पिल्य, हुये हैं। आचार्य काम्पिल्य ने तान्त्रिक सिद्धियां प्राप्त की थीं। इन को महामुद्रा भी प्राप्त थी। एक बार आचार्य ने बड़ी भारी शिला को जल में तैरते हुए देखा। आचार्य ने इस शिला को विश्वविद्यल के उपयुक्त समझ कर यहां पर विश्व विद्यालय बनाने का संकल्प किया, पर इस को अपने जन्म काल में पूरा न कर सके। जन्मान्तर में आचार्य धर्म पाल नाम से राजा हुए और विक्रम शिला के विश्वविद्यालय को स्थापित कर अपने पूर्व जन्म के मनोरथ को सिद्ध किया।

प्रारम्भ में १०८ प्रोफेसरों के सिवाय अनेक आचार्य और तीन अध्यक्ष [Superintendents] थे। राज्य संरक्षा में सफलता के साथ ४०० साल तक यह चलता रहा। यहां के शिक्षा समाप्त स्नातकों को राजा की ओर से 'पण्डित' की उपाधि से सम्मानित किया जाता था। इन स्नातकों में से कुछ प्रसिद्ध स्नातकों-पण्डितों-के नाम हमें ज्ञात हैं—

१. रत्न ब्रज— यह काश्मीर का निवासी था। विश्वविद्यालय में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'द्वार पंडित' के सम्मानित पद पर नियुक्त हुआ।

२. आचार्य जेतारि— इसने भी इस विश्वविद्यालय से 'पण्डित' की उपाधि राजा महिपाल से प्राप्त की थी। यह प्रसिद्ध विद्वान् 'दूपीपङ्कर' का गुरु था।

३. रत्नकीर्ति— यह उपाधि प्राप्त कर इसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुआ। यह विश्वविद्यालय के 'स्तम्भ' पद पर था।

४. ज्ञान श्री मित्र—यह भी स्नातक होकर इसी विश्व विद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुआ। यह विश्व विद्यालय के 'स्तम्भ' पद पर था। यह 'द्वार-पण्डित' के पद पर भी रहा। 'अतिष्य' के तिब्बत चले जाने पर यह विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया।

५. रत्नाकर शान्ति— इस ने आचार्य जेतारि से 'अवस्तिवाद' का विशेषतः अध्ययन किया था। यह 'द्वार पण्डित' रहा। यह बाद में निमन्त्रित होकर सीलोन गया। वहां बौद्ध धर्म के प्रसार में उत्तेजना दी।

६. रत्नाकर कीर्ति— यह भी यहां का स्नातक था।

संचालन— यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस विश्व विद्यालय का संचालन पालवंशी मगध सम्राटों द्वारा होता था। इस विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए निःशुल्क सत्र खुले हुए थे। ये सत्र इनकी अन्य ज़रूरियात को भी पूरा करते थे। अन्य राजाओं तथा देश के अन्य भद्र पुरुषों के दान प्रचुर मात्रा में प्रारम्भ से ही इस विश्व विद्यालय को मिलने लगे थे। वारेन्द्र के राजा सनातन के नाम से विश्वविद्यालय में सत्र खुला हुआ था। पालवंशी राजाओं की संरक्षा प्राप्त करने के कारण इसने अन्य राजाओं और धनाढ्यों की अनायास ही क्रियात्मक सहानुभूति प्राप्त कर ली थी।

निवास स्थान— विद्यालय के संगठन के सम्बन्ध में विक्रम शिला का स्टैण्डर्ड 'नालन्दा' विश्वविद्यालय की अपेक्षा अधिक उच्च था। परन्तु इसने नालन्दा के समान विस्तृत प्रभाव उत्पन्न नहीं किया। क्योंकि देश में उस समय हल चल थी, अशान्ति थी और अव्यवस्था थी। मगध सम्राटों के शक्ति सूर्य पर ग्रहण लगा हुआ था। गौड़ नरेश प्रबल हो रहे थे और मगध को धीरे धीरे अपने झण्डे के तले ला रहे थे। इन सब बातों के बावजूद भी सम्राट् धर्मपाल ने इसका उद्घाटन बड़े समारोह से किया था। प्रारम्भ में ही चार निवास स्थानों-आश्रमों-की स्थापना की। प्रत्येक में २७ भिक्षुओं को नियुक्त किया। ये चार बौद्ध सम्प्रदायों के थे। विद्यार्थियों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पुरोहितों के निर्वाह के लिए उस ने प्रभूत राशि में दान दिया, उनके लिए भत्ता निश्चित किया। इसके अतिरिक्त वहां अस्थायी निवासस्थान थे। यह विश्वविद्यालय चारों ओर से परकोटे से घिरा हुआ था। इस परकोटे में ६ द्वार थे, जिन में से प्रत्येक के साथ एक एक कालेज था। इस विश्वविद्यालय के मध्य में एक विशाल भवन था जो विज्ञान गृह (House of Science) के नाम से विख्यात था। इस के अलावा खुली जगह थी जहां एक साथ ८००० आदमी बैठ सकते थे। विश्वविद्यालय में मुख्य द्वार के दोनों ओर दो प्रतिमायें थीं। द्वार के दाहिनी ओर नालन्दा विश्वविद्यालय के आचार्य नागार्जुन की मूर्ति प्रतिष्ठित थी और बांई ओर आचार्य अतिष्य की प्रतिमा स्थापित थी। विश्वविद्यालय के बाहर अतिथियों के लिए धर्मशालायें बनी हुई थी।

शिक्षा-क्रम— नालन्दा विश्वविद्यालय के समान इस विश्व विद्यालय में भी उच्च विषयों की शिक्षा दी जाती थी। उच्च शिक्षा को प्राप्त करने की इच्छा वालों को इस विश्वविद्यालय की 'प्रवेश परीक्षा' का पास करना आवश्यक था। इस विश्वविद्यालय में अन्यान्य विषयों के साथ साथ तन्त्रों का अध्ययन मुख्यता के साथ कराया जाता था। बौद्ध धर्म में ५ वीं सदी से तान्त्रिक धर्म ने प्रवेश करना आरम्भ कर दिया था। अन्य शास्त्रों के समान 'तन्त्र शास्त्र' भी बन चुके थे और बौद्ध धर्म के विशेषतः महायान सम्प्रदाय के धर्मग्रन्थ बन चुके थे। इस कारण तन्त्रशास्त्र की शिक्षा का प्रबन्ध समयोचित था। इस के अतिरिक्त व्याकरण, न्याय, अभिधर्म कोष [Metaphysics] और अध्यात्म शास्त्र का अध्ययन विशेषतः कराया जाता था। 'न्याय' का बड़ा आदर था क्यों कि 'द्वार पण्डित' उच्च कोटि के तार्किक होते थे।

शिक्षा-प्रबन्ध—इस विश्व विद्यालय का प्रबन्ध बहुत संगठित था। पालवंशी मगध सम्राट् इसके चांसलर होते थे। मगध सम्राट् ही स्नातकों को विश्वविद्यालय की 'पण्डित' उपाधि से सम्मानित करते थे। चांसलर के निरीक्षण में ६ आदमियों का एक शिक्षा पटल (Educational board) होता था। इस पटल का सभापति प्रधान पुरोहित होता था इस विश्वविद्यालय में छ कालेज थे। प्रत्येक कालेज का एक अध्यक्ष होता था जिसे 'द्वारपण्डित' कहते थे। तारानाथ अपने समय के द्वारपण्डितों के नाम इस प्रकार बताता है

१ प्रज्ञानकार मति—
दक्षिण द्वार का अध्यक्ष

२ रत्नकारशान्ति—
पूर्वीय द्वार का अध्यक्ष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ वागीश्वरकीर्ति—
पश्चिमीय द्वार का अध्यक्ष

४ नरो पन्त—
उत्तरीय द्वार का अयध्क्ष

५ रत्न वज्र—
प्रथम मुख्य द्वार का अध्यक्ष

६ ज्ञान श्री मित्र—
द्वितीय मुख्य द्वार का अध्यक्ष

प्रत्येक कालेज में १०८ प्रोफेसर पढ़ाने के काम पर नियुक्त थे। शिक्षक और विद्यार्थियों का सम्बन्ध आदर्श सम्बन्ध था। शिष्य अपने गुरु को पिता समझता था। गुरु शिष्य को अपने पुत्र के समान देखता था। इस प्रकार गुरु शिष्य दृढ़ स्नेह सूत्र से परस्पर सम्बद्ध थे।

दीक्षान्त संस्कार—तिब्बत नरेश द्वारा भेजे गए तिब्बती दूत ने जो आचार्य तिष्य को लेने आया था विश्वविद्यालय की एक धार्मिक सभा का वर्णन किया है जो वर्तमान काल के दीक्षान्त संस्कार (Convocation) से मिलता जुलता है। वह लिखता है "८ बजे प्रातः काल भिक्षु लोग सभा भवन में जमा होने लगे और 'स्थविर' द्वारा बताये गए स्थानों पर चुप चाप शान्ति के साथ बैठते गए। मुझे विद्वानों की श्रेणी में स्थान दिया गया। सब से प्रथम पूज्य 'विद्या कोकिल' ने प्रवेश किया और सभापति का आसन ग्रहण किया। उस की मुखाकृति आकर्षक और भद्र थी। वह सुमेरु पहाड़ के समान उन्नत आसन पर आसीन था। मैंने अपने पास वालों से पूछा क्या यह आचार्य अतिष्य हैं! उस ने जवाब दिया आयुष्मन्! तुम क्या कहते हो? यह विद्याकोकिल नाम का बहुत पूज्य भिक्षुक है। आचार्य चन्द्रकीर्ति का शिष्य था अब उस के ही पद पर वर्तमान है। आचार्य अतिष्य का गुरु रह चुका है। एक और आचार्य की ओर इशारा करके पूछा क्या यह आचार्य अतिष्य है? मुझे बताया गया कि यह पूज्य नरोपन्त है। अपनी धार्मिक पुस्तकों की विद्वत्ता के लिए यह सारे बौद्ध संघ में प्रसिद्ध है। इस की बराबरी का इस विषय में संघ में कोई नहीं है। यह भी आचार्य अतिष्य का शिक्षक रह चुका है। इस समय जब मेरी आँखे आचार्य अतिष्य को ढूंढ रही थी सहसा विक्रमशिला के नरेश का सभा में पदार्पण हुआ, और एक उच्च आसन पर आसीन हो गया। परन्तु कोई भी भिक्षु, बूढ़ा या जवान अपने स्थान से न उठा। एक और पण्डित ने धीरे धीरे शान से चलते हुए गम्भीरता के साथ प्रवेश किया। नौ-जवान आयुष्मन् अपने स्थान से उसके स्वागत के लिए उठे। उन्होंने उसकी अपनी भेंटों से यथाविधि पूजा की। राजा भी उसके सन्मान में उठ खड़ा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। राजा के खड़े होते ही और पण्डित भी क्रमशः उठ खड़े हुए। यह पण्डित अपने निश्चित आसन पर बैठ गया। यह सोच कर कि इस को इतना सन्मान दिया गया है मैंने सोचा शायद यह कोई राजकीय भिक्षु होगा या कोई पूज्य स्थविर होगा अथवा स्वयं आचार्य अतिष्य होगा। मैंने जानना चाहा कि यह कौन है। मुझे बताया गया कि यह 'धीर-वज्र' है। बताने वाला इस से परिचित नहीं था। इसकी कितनी विद्वत्ता है इस से भी वे लोग परिचित नहीं थे।

"जब सब आसन भर गए, सब पंक्तियां पूरी होगई, तब पूज्यों के पूज्य यशस्वी आचार्य अतिष्य का आगमन हुआ। एक बार नजर डालने पर हटाने को दिल नहीं करता था। बार बार देख कर भी आंखें तृप्त नहीं होती थीं। उसका उदार और स्मित हास्ययुक्त मुख-मण्डल सभा के प्रत्येक सभ्य को अपनी ओर खींच रहा था। उस की कमर से एक तालियों का गुच्छा लटक रहा था। भारतवासी, नैपाली और तिब्बती सब उसको अपना देश वासी समझते थे। उस के चेहरे का तेज सरलता के साथ मिल कर दर्शक के ऊपर जादू का असर डालता था।"

अतिष्य— आचार्य अतिष्य का जन्म गौड़ प्रदेश के राजकीय घराने में हुआ था। इस का पहिला नाम 'चन्द्रगर्भ' था। आचार्य 'जेतारि' के चरणों में बैठ कर पांच प्रकार के विज्ञानों के अध्ययन के लिए अपने आपको उपयुक्त बनाया। महायान सम्प्रदाय के तीनों फिरकों, माध्यमिक सम्प्रदाय और योगाचार्य सम्प्रदाय के अध्यात्म शास्त्र और अभिधर्म कोष में, और चारों प्रकार के तन्त्र शास्त्रों में पूर्ण पाण्डित्य सम्पादित किया। सब शास्त्रों में व्युत्पन्न हो कर, संसार त्याग दिया और बौद्ध दर्शन के मनन में अपना चित्त लगाया। 'गुह्य ज्ञान वज्र' नामक जगह पर समाधि लगाई और बौद्ध धर्म के गूढ़ रहस्यों से परिचित हो गया। १९ वर्ष की अवस्था में 'उदन्तापुर विश्वविद्यालय के आचार्य 'शील रक्षित' से दीक्षा ली। इस का नाम इस समय 'द्वीपंकर श्री ज्ञान' रक्खा गया।

दीक्षा लेने के अनन्तर सुवर्ण द्वीप चला गया। उस समय यह पूर्व में बौद्धों का केन्द्र था। बारह साल वहां रह कर मगध वापिस आगया। 'जयपाल के राज्य काल में सर्वोच्च पुरोहित के पद को स्वीकार किया। धर्म के विषय में पूर्व की की तरह मगध के गौरव को स्थिर रक्खा। तिब्बत में दो मिशनों की असफलता के बाद इस को तिब्बत में भेजा गया। महायान धर्म का फिर से संशोधन किया। तिब्बत के बौद्ध धर्म को संस्कृत किया और उसे विदेशी प्रभावों से मुक्त किया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस के निरीक्षण में सत्य, पवित्र और श्रेष्ठ पथ का लामा ने ज्ञान प्राप्त किया। तेरह साल तक निरन्तर तिब्बत में घूम घूम कर सत्य धर्म का प्रचार किया। तिब्बती लोगों की श्रद्धा और भक्ति तथा प्रेम को प्राप्त किया। ७३ साल की अवस्था में तिब्बत में ही मर गया। आज भी तिब्बती लोग उस के नाम को आदर और सन्मान तथा श्रद्धा और भक्ति के साथ स्मरण करते हैं।

नालन्दा और विक्रमशिला के विश्वविद्यालयों का एक समय ही अस्तित्व में होना देख कर स्वभावतः प्रश्न उठता है कि क्या उन दोनों विद्यालयों में परस्पर कोई सम्बन्ध था। इस विषय में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। प्रसिद्ध तिब्बती ऐतिहासिक तारानाथ ने लिखा है कि विक्रमशिला का एक प्रोफेसर नालन्दा विश्वविद्यालय के मामलों को देखता था। अतिथ्य को लेने के लिए आया हुआ दूत नालन्दा में ठहरा था। ये दोनों ऐसे पुष्ट प्रमाण नहीं जिन से हम इन विश्वविद्यालयों के किसी आन्तरिक सम्बन्ध को जान सकें। यह बात ख्याल रखने की है कि नालन्दा के पतन के साथ साथ विक्रम शिला का उदय होता है।

इस का अन्त भी नालन्दा विश्वविद्यालय के समान मुसलमानों के आक्रमण के कारण हुआ।

कृतज्ञता

(ले० श्री० पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार)

इस वार मैं अपने मित्र के निमन्त्रण को टाल नहीं सका। मेरे मित्र का नाम अजित था, वह जात के काश्मीरी ब्राह्मण थे। काश्मीर की स्वर्गोपम घाटी के उत्तरीय भाग में वैरीनाग के जगत्प्रसिद्ध चश्मे से ८,१० मील दूर उनकी एक बड़ी भारी ज़मीन्दारी थी। मैं अलाहाबाद का निवासी हूं; अजित से मेरी परिचिति यहीं अलाहाबाद में ही हुई है। वह प्रतिवर्ष सरदियों के दिनों में कुछ मास के लिए अलाहाबाद आया करते थे। उन जैसे साधु स्वभाव नवयुवक संसार में बहुत कम होंगे। मुझे उन की मित्रता पर अभिमान है। अजित से से मेरा किसी प्रकार की रिश्तेदारी का सम्बन्ध नहीं है, मैं उनके घर आज तक कभी गया भी नहीं था; तथापि मेरी उन से अत्यन्त घनिष्टता है। वह अलाहाबाद आकर प्रतिवर्ष मुझे काश्मीर आने का निमन्त्रण देते थे, उस समय मैं उन्हें इस बात का वचन भी दे देता था, परन्तु मौका आने पर मुझे सदैव अपना वायदा तोड़ने के लिए बाधित होना पड़ता था। इस वार सम्पूर्ण बाधाओं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के एक साथ परे ठेल कर मैं काश्मीर की ओर प्रस्थान कर गया।

काश्मीर पहुंच कर मानो मेरी आंखों से परदा उठ गया। यह संसार कहीं इतना अधिक सुन्दर होगा इस की मुझे कल्पना भी न थी। देवदार, चीड़ और अखरोटों के बड़े २ वृक्षों के कारण सघन श्याम वर्ण वाली सुनसान घाटियों में बादलों के छोटे २ टुकड़े, माता की गोद में छोटे बच्चे के समान, लुड़का करते थे। स्थान २ पर शुद्ध जल वाले बड़े २ झरने हृदय में कौतुहल का भाव कर देते थे। मेरे मित्र का निवास स्थान फलों के एक बड़े बाग में था। मुझे तो ऐसा अनुभव होता था कि मानो मुझे भूलोक से स्वर्ग लोक में ले आया गया है। प्रकृति भी इस नीरव शोभा में हम दोनों मित्र प्रतिदिन किसी न किसी बात पर ज़ोर ज़ोर से बहस किया करते थे। मेरा स्वभाव वादविवाद करते हुए जोश में आजाने का है। मैं कोई भी विवाद शुरु होने पर खूब जोश में वक्तृता प्रारम्भ कर देता था। मेरे मित्र भी इस बात में मुझ से पीछे नहीं रहते थे। हमारे वादविवाद का विषय प्रायः हिन्दुमुस्लिम समस्या होता था। मैं हिन्दू संगठन आदि हिन्दू अन्दोलनों का कट्टर पक्षपाती हूं। मैं कहा करता था कि मुसलमान स्वभाव से ही मूर्ख और असहिष्णु हैं-ये लोग भारत वर्ष को अपना देश नहीं समझते। भारतवर्ष की स्वाधीनता के लिए सब से प्रथम यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण मुसलमानों को शुद्ध करके हिन्दू बना लिया जाय। मेरे मित्र का विश्वास था कि मुसलमान लोग स्वभाव से बुरे नहीं हैं, वे धारण अवस्था में हिन्दुओं की तरह ही ईमान्दार और सच्चे होते हैं। मुसलमानों को पापी कहना भारी अपराध है। हां, इस में संदेह नहीं कि बहुत से मुसलमान नेता वैयक्तिक स्वार्थ वश मुसलमानों को गुमराह करने का यत्न कर रहे हैं, परन्तु हिन्दुओं में भी आजकल इस प्रकार के नेताओं की कमी नहीं है।' इस कारण मैं अपने मित्र को कभी २ 'आधा मुसलमान' कहा करता था। अजित इस बात को बुरा नहीं मानते थे। उन्हें सचमुच मुसलमानों से प्रेम था।

प्रातःकाल जल्दी उठना मेरे स्वभाव में शामिल नहीं। प्रतिदिन जब प्रातः मैं अपने शयनागार से बाहर आता था तब अजित मुझे समीपस्थ पहाड़ी के एक सुनसान भाग की ओर से आता हुआ दिखाई देता था। उस समय अजित के मुंह पर भारी गम्भीरता छाई होती थी। मैंने अजित से कई बार यह पूछने का यत्न किया कि वह प्रतिदिन इतनी सवेरे कहां जाता है, परन्तु उसने कभी मुझे इस बात का ठीक उत्तर नहीं दिया। मैंने अपने मित्र के नौकरों से भी यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात जानने का यत्न किया, परन्तु मुझे सफलता प्राप्त नहीं हुई। धीरे धीरे मेरी उत्सुकता बढ़ने लगी। एक दिन मैंने अजित को तंग करने करने के लिये छिपे तौर से उसका पीछा करने का निश्चय किया।

(२)

मैंने अत्यन्त आश्चर्य के साथ देखा कि समीपस्थ जंगल के एक बहुत ही घने भाग में एक छोटे से पहाड़ी झरने के किनारे पत्थर की बनी हुई एक कबर के पास मेरा अनन्य मित्र अजित घुटने टेक कर बैठा है। वह हाथ जोड़ कर अलक्षित भाव से नीले आस्मान की ओर ताक रहा है, उस की आंखों में आंसू भरे हैं। सामने कबर पर कुछ ताज़े फूल बिखरे हुए पड़े हैं। मैं यह दृश्य देख कर स्तम्भित रह गया। मुझे यह समझ नहीं आया कि अजित जैसा विद्वान् और विवेकी पुरुष क्योंकर एक कबर के सन्मुख हाथ जोड़ कर बैठा है। यह सोच कर मुझे और भी अधिक आश्चर्य हुआ कि अजित प्रतिदिन प्रातःकाल उठते ही सब से पूर्व यही कार्य करता है। पहले पहल तो मेरी यह इच्छा हुई कि सहसा अजित को चौंका कर उसे खूब हैरान करूं; परन्तु अपने मित्र का वह गम्भीर चेहरा देख कर मुझे इस बात का साहस नहीं हुआ। मैं सन्नटा खींच कर चुपचाप उस के पीछे खड़ा रहा। थोड़ी देर के बाद अजित ने एक बार कबर की ओर सिर झुका कर अपनी शान्त समाधि भंग की। मुंह फेरते ही उसकी नज़र मुझ पर पड़ी। मुझे देख कर पहले तो वह कुछ झेंप सा गया परन्तु अगले ही क्षण उसने मुस्करा कर कहा-"विनय, आज इतनी शीघ्र कैसे जाग गये ?" अब मेरे झेंपने की बारी थी। अगर मैं चाहता तो इस समय अजित से कोई बहुत बढ़िया मखौल कर सकता था परन्तु उस की वह भाव मुद्रा मखौल करने लायक न थी। मुझे अधिक देर तक असमञ्जस में न डाल कर अजित ने स्वयं ही कहा-"विनय, आज अपने जीवन का रहस्य मुझे तुम्हें सुनाना ही होगा। मुसलमानों के प्रति तुम्हारा विशेष विद्वेश भाव देख कर जो बात मैं तुम से आज तक नहीं कह सका था वह अब सुनानी होगी।" मुझे इस पर भी कुछ कहने योग्य बात नहीं सूझी। यह घटना मुझे एक भारी अचम्भा सी प्रतीत हो रही थी। अजित मेरा हाथ पकड़ कर मुझे झरने के किनारे की एक जंगली गुलाब की बेल के नीचे लेगया। वहां एक बड़ी शिला हम दोनों मित्र गम्भीर भाव से बैठ गये।

(३)

अजित ने अपनी निगाह झरने के अस्थिर पानी में गढ़ा कर कहना प्रारम्भ किया-"विनय, आज मैं तुम्हें अपने जीनन की एक अत्यधिक महत्व-पूर्ण घटना सुनाता हूं। यह सामने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली कबर एक सचमुच के फरिश्ते की हैं, जिसका मज़हब इस्लाम था। मैं बचपन में इस व्यक्ति को "उस्मान काका" कह कर बुलाया करता था। उस्मान काका का जर्जरित शरीर इस कबर के नीचे दबा दिया गया था। परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि यदि स्वर्ग वास्तव में कोई चीज़ है तो उस्मान की पुण्य आत्मा वहां आराम से विराजमान होगी। उस्मान काका मेरी निगाह में मेरे पिता के समान पूज्य हैं। जब तक उस्मान काका का पवित्र नाम मेरे हृदय में विद्यमान है तब तक मैं कभी यह कहने को तैयार नहीं हो सकता कि मुसलमान स्वभाव से धोखेबाज होते हैं। उस्मान की पुण्य स्मृति मेरे हृदय से कभी मिट नहीं सकती। आज लगातार बीस बरस से मैं प्रायः प्रतिदिन इस स्थान पर अपनी श्रद्धाञ्जली समर्पित करने आया करता हूँ।

मेरा जन्म श्रीनगर के निकट एक छोटे से गाँव में हुवा था। अपने बचपन का विस्तृत इतिहास सुनाना मैं व्यर्थ समझता हूँ। संक्षेप में इतना ही पर्याप्त है कि मेरा बचपन बहुत लाड़ प्यार में कटा है। मैं अपने पिता की एक मात्र सन्तान था। वह उस सम्पूर्ण गांव के मालिक थे। उन्हें किसी बात की चिन्ता नहीं थी। उन का अपना सगा भाई तक भी न था। जिस समय मेरा जन्म हुआ उस समय उन की आयु ४२ वर्ष की थी। वह एक तरह से सन्तान प्राप्ति से सर्वथा निराश हो चुके थे। उस्मान काका मेरे पिता का बचपन से सहायक था। वह हमारे घर का एक स्थिर सदस्य था। मेरे पिता उस पर पूर्ण विश्वास करते थे। उस्मान काका उस समय यद्यपि वास्तव में हमारे घर के नौकर थे, तथापि मेरे पिता उन की बड़ी इज्जत करते थे। उस्मान जैसे पाक दिल व्यक्ति आजकल की दुनियाँ में ढूंढे न मिलेंगे। वह अपनी सम्पूर्ण कामनाओं को मेरे पिता के लिये समर्पित कर चुके थे। मेरा जन्म होने पर उन्हें मेरे पिता की अपेक्षा भी अधिक सुख अनुभव हुवा था। मैंने अपना बचपन का अधिकांश भाग उस्मान काका की गोद में ही काटा है। माता की गोद की अपेक्षा भी उस्मान की गोद में जाना मुझे अधिक प्रिय अनुभव करता था। मेरा बचपन इसी प्रकार आनन्द से व्यतीत होने लगा।

हमारे गांव के निकट ही एक दूसरे गांव में मेरा मामा रहता था। मेरे मामा का स्वभाव बहुत ही क्रूर था। वह धन का अत्यन्त लोभी था। मेरे पिता की वह बहुत चापलूसी किया करता था। मेरे उत्पन्न होने से पूर्व उसे यही आशा थी कि मेरे पिता आजन्म निस्सन्तान ही रहेंगे; उसे विश्वास था कि मेरे पिता की मृत्यु के बाद उस की सन्तान ही हमारी सम्पत्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मालिक बनेगी परन्तु मेरे जन्म के बाद उसकी सम्पूर्ण आशाओं पर तुषारपात होगया।

धीरे धीरे मेरे मामू को यह पाप-चिन्ता मेरे प्रति विद्वेष भाव के रूप में परिपक्व होने लगी। मैं उस के मार्ग का एक मात्र कण्टक था। मुझे मार कर वह निष्कण्टक होकर मेरे पिता का वैभव अपने वंशजों के अर्पित कर सकता सकता था। उसने एक बार उस्मान काका को अपने यहां बुला कर उसे धन का प्रलोभन देकर मुझे विष दे देने के लिए फुसलाने का यत्न किया। उस्मान ने मेरे पिता से यह बात सच्चे रूप में कहदी। मेरे पिता चिन्तित हो उठे। उन्होंने मेरे मामू पर इस सम्बन्ध का अभियोग भी चलाया, परन्तु मामू की कार्रवाइयों से वह इस अभियोग में सफल न होसके। बस इसी घटना द्वारा दोनों घरानों में जो विद्वेषाग्नि अन्दर अन्दर ही सुलग रही थी वह भभक कर जल उठी।

इस का पहला परिणाम उस्मान काका पर ही आफ़त लाया। एक दिन मेरे मामू के आदमियों ने उस्मान को खूब पीटा; खुश किस्मती से उस की जान तो बच गई परन्तु उन चोटों की बदौलत वह पहले जैसा बलिष्ट न रह सका। घावों के ठीक होते ही उस्मान काका मेरे प्रति और भी अधिक आकुल हो उठा, अब वह रात दिन मेरी ही फ़िकर में रहता, हर समय मुझे अपनी आंखों के सामने रखता।

(४)

इन्हीं दिनों काश्मीर की रियासत में एक भारी उथल-पुथल मचनी प्रारम्भ हुई। रियासत के महाराज उदयसिंह के विरुद्ध उन के छोटे भाई सरदार वीरसिंह ने एक षड्यन्त्र तैयार किया। महाराज पर बहुत से राजनीतिक अभियोग स्थापित किये गये। वीरसिंह ने बहुत से अमीर और ज़मीन्दारों को प्रलोभन देकर अपने साथ मिला लिया। मेरा मामू भी इन षड्यन्त्र कारियों में एक था। मेरे पिता परम राजभक्त थे, वह बड़ी दृढ़ता से महाराज के पक्ष में थे। धीरे धीरे महाराज का पक्ष कमज़ोर पड़ने लगा, परन्तु मेरे पिता ने कभी उनका साथ छोड़ने का विचार तक भी नहीं किया। महाराज पर दो अभियोग थे। पहला तो यह कि वह छिपे तौर से तिब्बत के साथ कुछ अनुचित सन्धी कर रहे हैं, दूसरा अभियोग यह था कि उन्होंने सरदार वीरसिंह को सपरिवार मार डालने का यत्न किया है।

मामला बहुत तूल पकड़ गया। श्रीनगर के आस पास के गांवों में दोनों पक्षों के लोगों की आपस में लट्ठम लट्ठा होने की नौबत भी आगई। दुर्भाग्य से हमारे आस पास के अनेक गावों के ज़मीन्दारों में केवल मेरे पिता ही महा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज के पक्ष में थे। आस पास के अन्य ज़मीन्दार प्रायः वीरसिंह की अभिसन्धि में शामिल थे। हम लोग बड़ी आफत में पड़ गये। एक रात हमारे घर डाका डालने का यत्न किया गया। इस के कुछ दिन बाद ही हमारे खेतों के खलिहान में आग लगा दी गई। हम लोग रात दिन बड़े खतरे में रहते थे। इन दिनों उस्मान मेरे लिए बहुत अधिक चिन्तित दिखाई दिया करता था।

अन्त में मेरे पिता ने यही निश्चय किया कि वह मुझे उस्मान की संरक्षकता में किसी सुरक्षित स्थान पर भेज दें। तदनुसार मुझे छिपे तौर पर उस्मान काका के साथ २०,३० मील दूर के एक गांव में भेज दिया गया। मैं उस समय ८ बरस का बच्चा था, अतः मुझे तब की पूरी घटनाएँ तो याद नहीं हैं परन्तु इतना भली प्रकार स्मरण है कि उस्मान उन दिनों मेरे लिए अत्यधिक चिन्तित रहा करता था। वह प्रायः मेरी भलाई के लिये खुदा से दुआ मांगा करता था।

एक दिन रात के समय जब हम लोग एक कमरे में सोए हुए थे, हमारे मकान में आग लगी। यह आग मेरे मामू के आदमियों की ही लगाई हुई थी। वह दिन मैं अपनी इस ज़िन्दगी में एक दिन के लिए नहीं भूल सकता। मुझे भली प्रकार याद है-मैं और उस्मान का छोटा लड़का लतीफ़, दोनों जमीन पर ही एक गलीचे के ऊपर सो रहे थे। इतने में उस्मान काका ने हमारे पास आकर घबराई हुई स्वर में आवाज़ दी-"अजित!" मैं जाग उठा। मेरे साथ ही लतीफ भी जाग उठा। उस्मान ने हाथ बढ़ा कर हम दोनों को एक साथ गोद में उठाने का यत्न किया। वह बेचारा बूढ़ा और कमज़ोर आदमी था। उसकी शक्ति ने जबाव दे दिया। उस्मान चिन्तित होकर कुछ क्षण तक बड़ा असमञ्जस में पड़ा रहा। इतने में आग फैल कर उस कमरे की छत पर भी आने लगी। कमरे में धुंधला २ उजेला होगया। मैंने उस समय देखा कि उस्मान काका की आंखों से आंसू टपक रहे हैं। उस्मान काका ने एक ठण्डा श्वास लेकर अपनी गोद से लतीफ़ को नीचे उतार दिया। लतीफ़ और मैं दोनों चारों ओर आग देख कर हतबुद्धि हो चुके थे। उस्मान ने जब लतीफ़ को ज़ोर से उतारा तब वह घबरा कर रो उठा। उस्मान ने एक बार लतीफ़ का मुंह चूंमा। समय अधिक नहीं था, अतः वह दायें हाथ की सहायता से मुझे अपनी छाती से चिपका कर और बांये हाथ में लतीफ़ का हाथ पकड़ कर दरवाज़े की ओर भागा। कमरे से बाहर जाते हुए बरामदे की जलती हुई छत के नीचे से गुज़रना ज़रूरी था; छत से आग के बड़े २ अंगारे बरस रहे थे। अचानक इस स्थान पर लतीफ़ का हाथ उस्मान के हाथ से छूट गया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग की लपटों की तेज़ भों भों ध्वनि में एक बार लतीफ़ का करुण क्षीण कण्ठ स्वर सुनाई दिया-"काका!" इस के बाद मुझे ज्ञात नहीं क्या हुआ।

इतना कह कर अजित थोड़ी देर के लिए चुप हो रहा, उसका गला भर आया था।

(५)

थोड़ी देर बाद अपना गला साफ करके अजित ने फिर कहना शुरू किया—उस्मान काका बूढ़ा था, बीमार था। आग की तेज़ गर्मी से उस का शरीर भी झुलस गया था, उस पर तीव्र पुत्र वियोग उस का हृदय चीर रहा था। यह सब होते हुए भी वह प्रतिदिन किसी न किसी गांव में जाकर अपने अधजले शरीर के साथ भीख माँग कर मेरा पेट भरता था। दो एक दिन किसी गांव में ठहर कर वह अगले गांवों में चल देता था। उस्मान काका मुझे साथ लेकर जिस गांव में पहुंचता था, वहां के लड़कों और अवारागर्दों को एक तमाशा मिल जाता था। उस्मान के जले हुए बालों तथा झुलसी हुई चमड़ी को देख कर ये लोग अपनी हंसी के लोभ का संवरण नहीं कर सकते थे। मुझे उसके साथ पाकर लोगों का कौतूहल और भी बढ़ जाता था। लड़के उसके पीछे २ गोला बांध कर तालियां बजाते हुए चलते थे, लोग ताने कसते थे। परन्तु काका ने कभी इन कठिनाइयों की ओर ध्यान नहीं दिया। स्वयं हंसी और दया का पात्र बन कर वह जो कुछ पाता था, मुझे समर्पित कर देता था।

वह मुझे मेरे पिता के गांव की ओर नहीं लेगया। मेरे माता पिता की हत्या कर दी गई है, यह बात उसे ज्ञात होगई थी। वह मुझे इसी दशा में, वैरी नाग की ओर, लाने लगा। इन दिनों वह मुझ से अनन्त प्रेम करता था। रात दिन वह मुझे अपनी छाती से चिपटाए रहने का प्रयत्न करता था। मेरे लिये भी उस वृद्ध गरीब की छाती ही एक सुरक्षित स्थान था।

धीरे २ हम लोग इसी स्थान पर आ पहुँचे। हम लोग यहाँ पूर्व दिशा की ओर से आए थे। दुर्भाग्य से या सौभाग्य से उस्मान काका उस दिन मार्ग में भटक कर ही यहाँ पहुंचे थे। सौभाग्य से इस लिये कि यहाँ पहुंच कर मुझे सदा के लिये एक स्थिर आश्रय मिल गया। उस्मान काका उस दिन बहुत थक गए थे, उन्हें अब चारों ओर निराशा ही निराशा दीखने लगी थी। इस झरने के निकट काका बेदम हो कर लेट गये। मैं छोटा बालक था, इस सुनसान जंगल में मुझे भय प्रतीत होने लगा। मैं हट कर मूर्छित उस्मान की छाती से लिपट गया। मुझे याद है उस दशा में भी उस्मान काका का दांयां हाथ स्वयं मेरे माथे पर आगया था। विनय! जिस शिलापर बैठकर मैं तुम्हें उस्मान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काका की कठिन कथा सुना रहा हूं, वही शिला उनकी मृत्यु शय्या है।

इतना कह कर अजित ने भक्तिभाव से थोड़ी देर के लिये आँखें मून्द लीं, इस के बाद धीरे २ कहना शुरु किया- "थोड़ी देर तक यहीं शिला पर बेदम पड़े रहने के बाद उस्मान ने धीरे से कहा 'पानी'। मैं उनकी गोद से निकल कर अपनी अञ्जलियों में इसी झरने का पानी भर कर उन के मुँह में डालने लगा। इसी समय एक बहुत ही सम्भ्रान्त वृद्ध पुरुष का यहाँ आगमन हुआ। वह बिल्कुल अकेले थे। मैंने जब पहले पहल उन्हें देखा तभी मेरे हृदय में उन के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न हुआ। पानी पीकर उस्मान भी कुछ स्वस्थ हो गये थे। यह नया आगन्तुक उन्हें ईश्वर का भेजा हुआ दूत जान पड़ा! विनय! यह वृद्ध महानुभाव मेरे धर्मपिता कल्याण सिंह ही थे। उन्होंने आते ही उस्मान काका के मृतप्राय शरीर की जांच आरम्भ की। उस्मान ने अपने सम्बन्ध में कोई चिन्ता प्रकट न करके मेरा हाथ उन के हाथ में सौंप दिया।

वृद्ध कल्याणसिंह के लिये यह घटना बिल्कुल अज्ञेय थी। वे आश्चर्य चकित थे कि यह माजरा क्या है। एक दीन वृद्ध और मृतप्राय मुसल्मान इस सुन्दर बालक को अपने साथ कहाँ से लाया है। बालक की चोटी है, वह किसी अच्छे हिन्दू घराने का प्रतीत होता है। कुछ देर तक किं-कर्तव्य विमूढ़ से खड़े रह कर अपने आदमियों की मदद लेने के लिए वह अपने निवास स्थान की ओर चले गये। इस सुनसान स्थान में फिर से केवल हम दोनों प्राणी ही बचे रह गए।

प्यारे मित्र विनय! वह दिन आज भी मेरी आँखों के सामने प्रत्यक्ष सा घूम रहा है। तब भी यह छोटा सा झरना इसी प्रकार मर्मर ध्वनि करता हुआ बह रहा था, आकाश में बादल छाये हुए थे, सब ओर तीव्र सन्नाटा था। इस समीप के जंगल में कभी कभी मोर कूक उठते थे। काका उस्मान इसी शिला पर लेटा हुआ था। मैं उस समय बिल्कुल हत बुद्धि सा हो रहा था, अपार दुख और भय अनुभव होते हुए भी मैं रो नहीं सका। रुलाई आती ही न थी। दिल पर एक भारी पत्थर रखा हुआ सा प्रतीत होता था। पाँच सात मिनट तक मैं इसी प्रकार पड़ा रहा। इस के बाद उस्मान मूर्छित अवस्था में ही बोल उठा "बेटा लतीफ़"! हाय! पिता की उस भग्न स्वर में अपने पुत्र के लिए कितना असीम दुःख भरा हुआ था। लतीफ़ का नाम सुनते ही मेरी रुलाई फूट उठी। काका उस्मान का पुत्र लतीफ़ मेरा भी तो भाई ही था। मैं उस्मान की छाती पर मुँह रखे हुए ही सिसक सिसक कर रोने लगा। मेरी रुलाई सुनकर उस्मान फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनावस्था में आ गया। मुझे रोता देख कर उस्मानने मुझे कस कर अपनी छाती से चिपटा लिया। मुझे अपनी छाती पर जिरह बख़्तर के रूप में पहिन कर उस्मान बहुत ही प्रेम पूर्ण शब्दों में बोल उठा— "बेटा अजित, तुम्हीं मेरे ख़लीफ़ हो।" इस के बाद अपने रहम दिल खुदा से मेरे लिए दुआ माँग कर काका उस्मान बहिश्त की ओर चले गए। ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे किसी ठिकाने लगाने के लिए ही वह अब तक प्राण धारण किये हुए थे।

इसी समय सरदार कल्याणसिंह अपने कुछ आदमियों के साथ उस स्थान पर आ पहुंचे। मुझे बड़ी कठिनता से उस्मान की मृतदेह से जुदा किया गया। सचमुच मैं उस दिन पितृहीन हुआ। सरदार साहब ने उसी समय अपने आदमियों की सहायता से काका का पवित्र शरीर इस समीपस्थ स्थान पर दफना दिया और तभी यह टेढ़ी मेढ़ी पत्थरों की कबर इस स्थान पर निर्माण की गई है।

सरदार कल्याणसिंह बिना सन्तान के थे। उन्होंने मुझे अपना धर्मपुत्र बना लिया। वह बहुत यत्न करने पर भी यह न जान सके कि काका उस्मान के साथ मेरा क्या सम्बन्ध था। मैंने कभी उसके सम्बन्ध में उन से कुछ भी नहीं कहा। वह स्वयं भी लोकापवाद के भय से इस बात को प्रसिद्ध नहीं करना चाहते थे कि मैं एक मुसलमान द्वारा यहाँ लाया गया था। उस दिन से मैं मौका पाकर सदैव अपनी हार्दिक श्रद्धा के फूल चढ़ाने इस स्थान पर आता रहा हूँ। इस घटना के आठ दस बरस बाद मेरे धर्मपिता सर्दार कल्याणसिंह भी बीमारी से यह लोक छोड़ कर चल बसे। उस दिन के बाद से तो यहाँ आना मेरा प्रतिदिन का प्रथम कर्तव्य हो गया है। भाई विनय! मेरे जीवन का यह गूढ़ रहस्य सुन कर तुम जान गये होगे कि मैं सचमुच ही आधा मुसल्मान हूँ।

इतना कहकर अजित चुप हो रहा। उस ने आँसू भरी आँखों से अपनी नज़र उठा कर उस पवित्र कबर की ओर देखा। अपने मित्रके साथ मैंने भी उस ओर अपनी निगाह उठाई। मुझे यथार्थ में ऐसा प्रतीत हुवा कि कबर पर रखे हुए उन फूलों पर वृद्ध और रहम दिल काका उस्मान की छाया-मूर्ति खड़े होकर मेरे मित्र को सैकड़ों आशीर्वाद दे रही है।

विज्ञापन

बच्चों कोसर्दी खांसीसे बचाने और मोटा तन्दुरुस्त बनाने के लिये सुख संचार कंपनी मथुरा का मीठा 'बालसुधा' सब से अच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

हिन्दु मुस्लिम समस्या

भारत का आजकल का वायुमण्डल जाति-गत विद्वेष से भरा हुआ है। इस विद्वेष का आधार धर्म बताया जाता है। धर्मों में भी हिन्दु तथा मुसलमानी धर्मों का तनाव शिखर पर पहुँचा हुआ है। न हिन्दु अपने त्यौहारों को शान्ति पूर्वक मना सकते हैं, न मुसलमान। दोनों धर्मों के अनुयायी धर्म के नाम पर एक दूसरे से अलग और सहधर्मियों से मिले हुए हैं। उन के लिए एकता का आधार धर्म है, विद्वेष का कारण धर्म-भेद है। देश का प्रत्येक हित-चिन्तक सोच रहा है कि इस ईर्षाग्नि को किस प्रकार शान्त किया जाय। हमें इस समस्या के दो ही हल नज़र आते हैं: या तो भारत के सब हिन्दु मुसलमान हो जायँ, या सब मुसलमान हिन्दू हो जायँ; अथवा धर्म को वैय्यक्तिक वस्तु समझ कर एकता का आधार 'देश' को समझा जाय।

मुसलमानों के लिए यह सोचना कि किसी समय भारत में एक भी हिन्दू नहीं रहेगा पागलपन है। ना ही हिन्दू यह सोच सकते हैं कि वे मुसलमानों का नामोनिशान मिटा देंगे। रहना दोनों को है, इस लिए एकता का आधार बदलने की आवश्यकता है। इस समय 'धर्म' एकता का आधार बना हुआ है, इस का परिणाम यह है कि वह वस्तु जिसका सीधा आत्मा से सम्बन्ध है, एक दिखावट की चीज़ बन रही है। नमाज़ पढ़ने का फ़िक्र थोड़ों को है पर मस्जिद के सामने बाजा न बजने देने की ज़िद्द हरेक मुसलमान बच्चे को है। धर्म से जो आत्मिक शान्ति मिलनी चाहिये उस की तरफ़ किसी का ध्यान नहीं। यह सर्वथा भुलाया जा रहा है कि धर्म का व्यक्ति से सम्बन्ध है और जितना धर्म को सामाजिक रूप दिया जा रहा है, जितना उसे बाज़ारू बनाया जा रहा है, उतना ही धर्म, धर्म न रह कर झगड़े की जड़ बनता चला जा रहा है। इस में अणुमात्र भी सन्देह नहीं कि लोग जितने ही धार्मिक होंगे उतने ही वैय्यक्तिक विचारों की स्वतन्त्रता के पक्षपाती होंगे। परन्तु आज 'धर्म' और 'वैय्यक्तिक विचार स्वातन्त्र्य' परस्पर विरोधी बने हुए हैं।

भारत के मुसलमान भाई इस बात को नहीं समझते कि धर्म का प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा से सम्बन्ध है। मुसलमानों को देखा देखी हिन्दुओं में भी यह प्रवृति जाग रही है। वे मुसलमानों को मुंहतोड़ जबाब देना चाहते हैं परन्तु यदि कुछ हिन्दु यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसूर करते हैं तो इस की ज़िम्मेवारी भी मुसलमानों के कन्धों पर है। इस समय हिन्दु तथा मुसलमान दोनों को समझने की ज़रूरत है कि उन की एकता का आधार 'देश' हो सकता है, 'धर्म' नहीं।

भारत के मुसलमानों को छोड़ कर दुनियां भर के मुसलमान इस बात को समझ रहे हैं। केवल भारतीय मुसलमान ही दुनियाँ भर को मुसलमान बनाने का दावा रखते हैं। टर्की ने जो कुफ़र की बातें कीं उन से टर्की के मुसलमानों का रुख़ क्या नहीं पहचाना जाता ? जिन बातों को भारत के मुसलमान अपनी धार्मिक एकता का आधार समझ रहे हैं उन्हें टर्की ने जड़ से उखेड़ फेंका है। अरब के लोग खुदा के निजू लोग थे और उन्हीं ने १९१६ में तुर्कों से विद्रोह करते हुए ख़िलाफ़त को धक्का पहुँचाया। यह समझना भूल है कि भारत के मुसलमानों को छोड़ कर दूसरे मुसलमान पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगे जा रहे हैं। उन देशों में जातीय भाव पैदा हो रहा है जो कि किसी देश की सफलता का एकमात्र आधार हो सकता है। १९०६ में अरब की 'अरेबियन नैशनल कमिटि' ने उद्घोषित किया कि, 'हम लोगों पर अब तक तुर्कों ने भिन्न २ पन्थों तथा सम्प्रदायों के कारण अत्याचार किये हैं, अब हम में जातीय भावना उत्पन्न हो गई है अतः हम अपना राज्य कायम करना चाहते हैं।' कर्नल लोरन्स का कथन है कि लड़ाई के दिनों में अरब के लोगों ने तुर्कों से इसलिए विद्रोह नहीं किया क्योंकि वे तुर्कों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। परन्तु इस लिए क्योंकि वे अपने देश की स्वन्त्रता चाहते थे। १९०८ में पर्शिया में विद्रोह हुआ जिस का मुख्य कारण भी स्वतन्त्रता थी। उन्हें ईसाई, मुसलमान किसी की पराधीनता न चाहिए थी, उन्हें अपने देश की स्वतन्त्रता अभीष्ट थी। ईजिप्ट ने भी टर्की को कभी नहीं चाहा। शेखसैनूसी जैसे लोगों का कहना था कि, 'तुर्की या ईसाई, मैं एक ही पत्थर से दोनों का सिर फोड़ दूँगा क्योंकि मेरे देश के लिए दोनों विदेशी हैं।' ईजिप्ट के ईसाई तथा मुसलमानों की पारस्परिक सन्धि इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि 'देश' ही उन के लिए सब कुछ है। उनकी सन्धि हिन्दु मुसलमानों की क्षणिक सन्धि के समान नहीं क्योंकि हिन्दु-मुसलमान दोनों अपने देश के लिए उतना अनुभव नहीं करते जितना ईजिप्ट के ईसाई तथा मुसलमान। ईजिप्ट में रहने वाली एक फ्रेञ्च महिला का कथन है कि 'इस देश में हमने विचित्र बातें देखीं। पादरी लोग मस्जिदों में प्रचार करते हैं और उलेमा लोग गिर्जों में बोल आते हैं।' एक इटैलियन का कथन है कि संसार के इतिहास में सब से पहले ईजिप्ट के झण्डे पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों के चाँद और ईसाइयों के क्रौस के चिन्ह इकट्ठे दिखाई दिए। आज ईजिप्ट में धार्मिक झगड़े दिखाई ही नहीं देते। सब मिसर के निवासी मिसरी ही हैं और उस देश को ही अपना समझते हैं—यद्यपि धर्म सब का भिन्न २ है। चीन के मुसलमानों ने भी अपने को उस देश के निवासियों के साथ एक कर लिया है। १९११-१२ के चीनी विद्रोह में वहाँ के मुसलमानों ने चीनी लोगों की जो सहायता की उस पर सन-यात-सेन ने कहा कि चीनी लोग अपने देशबन्धु मुसलमानों की स्वतन्त्रता के लिए की हुई सहायता को कभी न भूलेंगे।

संसार के मुसलमानों की प्रगति की दिशा भारत के मुसलमानों से भिन्न है। भारतीय मुसलमान, धर्म से धर्म का काम न लेकर उसे झगड़े का कारण बनाना चाहते हैं। जिस देश में रहते हैं उस देश के निवासियों के साथ अपने स्वार्थों को एक कर देने के लिए तय्यार नहीं, इसी लिए यह समस्या दिनों दिन विकट होती जा रही है। जिस दिन हिन्दू और मुसलमान दोनों-'धर्म' को वैय्यक्तिक रूप देदेंगे और 'देश' को एकता का आधार समझने लगेंगे उसी दिन वे आज की अपेक्षा अधिक धार्मिक हो जायँगे और देश में आये-दिन होने वाले जाति-गत झगड़े बन्द हो जायँगे।

——*——

गुरुकुल-समाचार

ऋतु— गुरुकुल में आजकल पावस का राज्य है। वर्षा के कारण कुल भूमि के दृश्य बहुत रमणीय और नयनाभिराम हो गये हैं। वन, पर्वत और मैदान हरे भरे दृष्टिगोचर होते हैं। ग्रीष्म के आतप से झुलसे हुए वृक्ष, लता, पल्लव सब प्रफुल्लित हो गये हैं। आकाश प्रायः बादलों से घिरा रहा है दिवस ठण्डे और सुहावने हैं। इस महीने गुरुकुल के सामने की पर्वतमाला और वन में जामुनों की खूब बहार रही। ब्रह्मचारी प्रायः प्रतिदिन भ्रमणार्थ वनों में जाते हैं। मयूरों और कोयल की मधुर ध्वनि से कुल भूमि गूँजती रहती है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। चिकित्सालय में कोई रोगी नहीं है।

गंगा— गङ्गा में भरपूर पानी आ रहा है। प्रातः सायं दोनों समय ब्रह्मचारी उस में खूब तैरते हैं। कभी कभी दूर से बेड़े बना कर भी लाते हैं। आवागमन के लिए तमेड़ें नियम पूर्वक चलतीं हैं। सायंकाल को गङ्गा-तीर पर बैठने से अपूर्व शान्ति का अनुभव होता है।

सभाएँ— इस महीने गुरुकुलीय सभाओं के विशेष अधिवेशनों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब धूम रही। अनेक विद्वानों ने भिन्न भिन्न विषयों पर उत्तमोत्तम व्याख्यान तथा निबन्ध पढ़े। उपाध्याय श्री नन्दलाल जी खन्ना ने विज्ञान परिषद् में 'विश्वास का मनोवैज्ञानिक आधार' इस विषय पर एक बहुत सारगर्भित एवं मनोहर निबन्ध पढ़ा। प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने "इस्लाम का प्रारम्भिक विस्तार" विषय पर एक ऐतिहासिक गवेषणा से पूर्ण व्याख्यान दिया। पिछले दिनों कुलवासियों के चिर परिचित श्री डाक्टर सुखदेव जी गुरुकुल में पधारे हुए थे आपने वाग्वर्धिनी सभा में "शुद्धि के क्रियात्मक अनुभव" इस विषय पर मनोहर एवं उपयोगी व्याख्यान दिया। आपने आयुर्वेद परिषद् में भी "स्वास्थ्यविज्ञान" पर एक व्यावहारिक भाषण दिया।

वाग्वर्धिनी तथा संस्कृतोत्साहिनी के अधिवेशन भी नियम पूर्वक होते हैं। अभी हाल में ही वाग्वर्धिनी सभा में श्री पं० सत्यव्रत जी के सभापतित्व में "ईसाईयत और इस्लाम में से जगत् को किसने अधिक लाभ पहुँचाया है?" इस विषय पर एक मनोहर वाद विवाद हुवा था। संस्कृतोत्साहिनी सभा का जन्मोत्सव श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यालंकार के सभापतित्व में बड़े आनन्द और सफलता से हो गया है।

देशबन्धु स्मृति दिवस— महाविद्यालय वाग्वर्धिनी सभा की ओर स्वर्गीय देशबन्धु चितरंजन दास की स्मृति में कुलवासियों की एक बड़ी सभा हुई। जिस में वक्ताओं ने देशबन्धु के जीवन पर विचार करते हुए उनका गुण कीर्तन किया। श्री आचार्य जी ने बतलाया कि बंग देश ने भारत को अनेक विभूतियाँ दी हैं उन में से भारतीय देशबन्धु का स्थान बहुत ऊँचा है। वे स्वराज्य संग्राम के कमान्डर इन चीफ़ [मुख सेनापति] थे। उनका हृदय विशाल था। वे देशबन्धु ही नहीं साथ ही दीनबन्धु भी थे।

साहित्यपरिषद्— साहित्य परिषद् गुरुकुल की सर्वश्रेष्ठ और सब से पुरानी सभा है। इस के अधिवेशन नियमपूर्वक हो रहे हैं। इस महीने इस सभा में अनेक उत्तमोत्तम निबन्ध पढ़े गये। श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धालंकार ने "वर्णव्यवस्था और हिन्दु जाति" इस विषय पर एक मननीय निबन्ध पढ़ा। इसी प्रकार श्री प्रो० देवमित्र जी तथा श्री पं० देवराज जी विद्यावाचस्पति के क्रमशः "वर्तमान वैज्ञानिक तत्व और पञ्चभूतों का सिद्धान्त" तथा "सृष्टि का कारण तथा प्राकृतिक विकास"।

इन विषयों पर उत्तमोत्तम निबन्ध हुए।

इस मास श्रीआचार्य जी के सभापतित्व में साहित्य-परिषद् का जन्मोत्सव बड़ी सफलता के साथ संपन्न हुवा। उत्सवमें हिन्दी के प्रख्यात

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यासलेखक श्री प्रेमचन्द जी तथा सुप्रसिद्ध साहित्य-विमर्शक श्री पं० पद्मसिंह शर्मा उपस्थित थे। पं० पद्मसिंह जी शर्मा के सभापतित्वमें एक कविता सम्मेलन भी किया गया। श्री प्रेमचन्द जी ने "साहित्य में उपन्यास" तथा "हिन्दु-मुसलिम एकता" इन दो विषयों पर बहुत रोचक एवं उत्तम व्याख्यान दिए। श्री प्रेमचन्द्र जी गुरुकुल को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

आगामी १४ अगस्त को साहित्य परिषद् की ओरसे गुरुकुलीय पार्लियामेंट का अधिवेशन भी बड़े समारोह से होने वाला है। इस अवसर प्रसिद्ध विद्वान् श्री एन. एम. जोशी, प्रताप संपादक श्री पं०गणेश शङ्कर विद्यार्थी तथा श्री प्रेमचन्द्र जी श्री डा० केशवदेव शास्त्री, श्री मन जीतसिंह जी राठौर आदि महानुभाव गुरुकुल में पधारने वाले हैं। राष्ट्र-प्रतिनिधि सभा [पार्लियामेंट] में भारतीय कारखाना विधान [Indian acory Bill] प्रस्तुत होगा।

विश्वविद्यालय व्याख्यान — इस मास कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शन के प्रोफेसर श्री० महेन्द्रनाथ जी सरकार महोदय गुरुकुल में पधारे थे। आपने गुरुकुलीय विश्वविद्यालय व्याख्यानमाला में "ब्रह्मचर्य" और "अद्वैतवाद" इन दो विषयों पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिए। आप गुरुकुल में तीन दिवस तक रहे। इसके अतिरिक्त श्री डा० राधाकृष्ण जी M. B. B. S. का भी इसी व्याख्यानमाला में "घरेलू मक्खी" विषय पर एक अत्युत्तम व्याख्यान हुवा और गुरुकुल के वेदोपाध्याय श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार ने "ब्राह्मण ग्रन्थों" पर एक विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया। आजकल कुल में लाहौर के प्रसिद्ध डाक्टर श्री रोशनलाल जी M. S., F. R. C. S. पधारे हुए हैं। आप गुरुकुलीय आयुर्वैदिक कालेज़ में व्याख्यान दे रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थियो ! बहुत से व्यय, चिन्ता और दुःख से बचो !

बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष

सब को प्रायः सर्व रोगों में **"कामधेनु"** सेवन कराइये

मलेरिया, हैज़ा, इन्फ़िल्यूञ्ज़ा प्रभृति रोगों के अचानक आक्रमण के लिये तो अमोघ अस्त्र है। जिसने एक बार प्रयोग किया वह यथा नाम तथा गुण पर मुग्ध हो सदैव पास रखता है। बड़ी शीशी २॥) छोटी १।) नमूना आठ आना में लीजिये। वी. पी. ख़र्च कारख़ाना देता है। विवरण पुस्तक बिना मूल्य मंगाइये।

पता—भद्रसेन गुप्ता, सुरजावली

पोस्ट—अरनियां (बुलन्दशहर) यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा

जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

सुधासिन्धु यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खासी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

(दाद की दवा)

दद्रुगजकेशरी बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।॥), डाक खर्च ॥) पूरा हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए, मुफ्त मिलेगा। यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. N0. A. 1340.

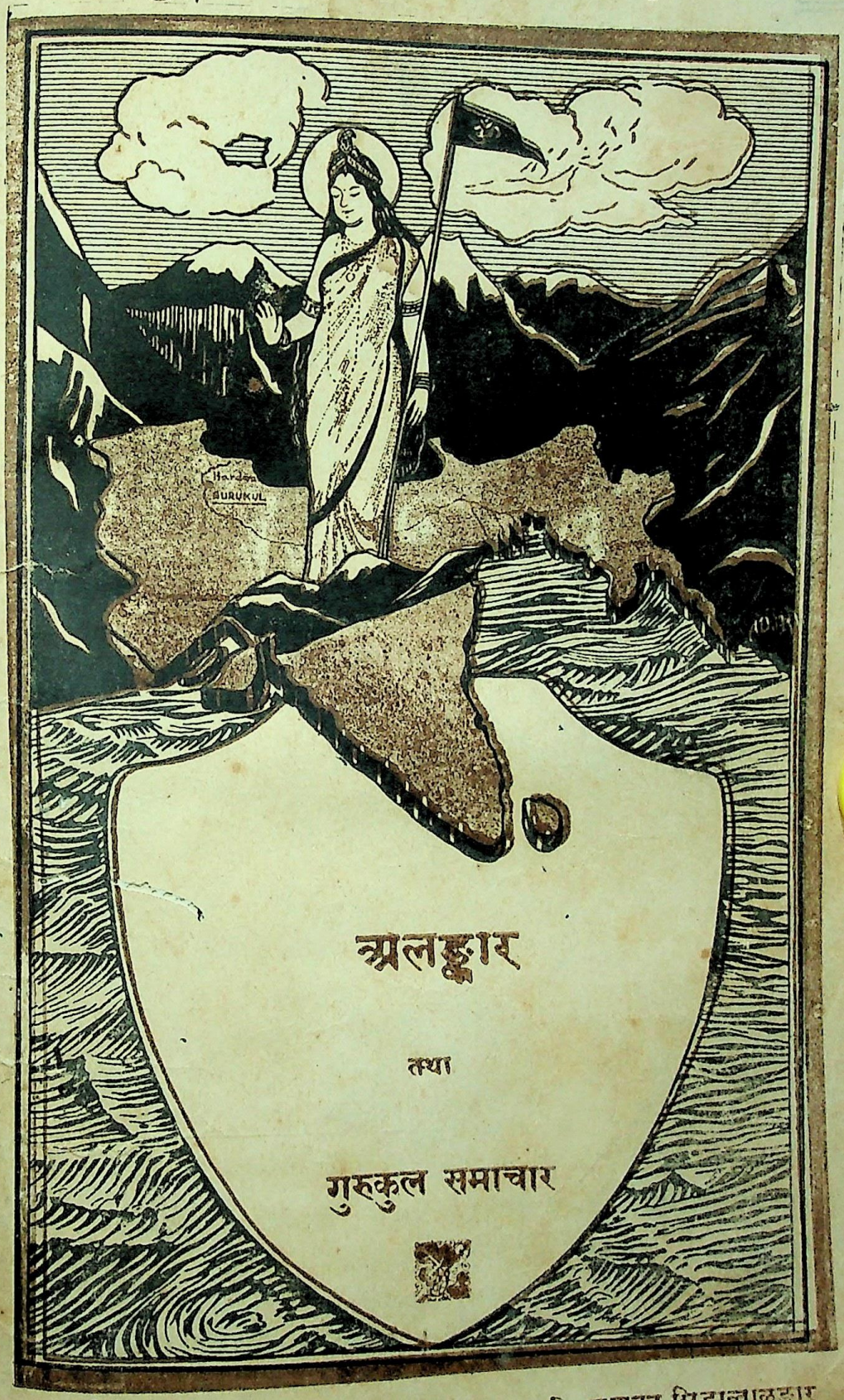

अलङ्कार

तथा

गुरुकुल समाचार

सम्पादक— प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विषय सूचि *

विषय	पृष्ठ स०
१. रे मन ! (कविता)— पं० धर्मदत्त जी विद्यालंकार	६७
२. मुरली और सुदर्शन चक्र— एक कृष्ण भक्त	६८
३. भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क और विचार प्रणाली में भेद— श्री प्रो० सत्यव्रत जी	७०
४. स्पार्टा की शिक्षण प्रणाली— ले० ब्र० शंकर देव	७५
५. जिन्दावस्था और "वेद" की भाषाओं की समानता— ले० एक वैदिक विद्वान्	८२
६. मुन्नी (गल्प)— ले० पं० चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार	९०
७. सम्पादकीय	९५
८. गुरुकुल समाचार	९७

प्रो० सत्यव्रत प्रिंटर और पब्लिशर के लिये गुरुकुल-यन्त्रालय काँगड़ी में छपा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ४ अङ्क ३] भाद्रपद [पूर्ण संख्या ३९

अलंकार

तथा

गुरुकुल समाचार

* स्नातक-मण्डल गुरुकुल-काँगड़ी का मुख-पत्र *

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अलंकृतः॥ ऋ० १. १४. ५।

रे मन !

(श्री पं० धर्मदत्त जी विद्यालंकार)

रे मन ! तोहे कछु समझ न आवे।
जित जित तोहे निस दिन रोकूँ तित ही तित तू धावे॥
चूस चूस कर देख लियो रस इस में ना कछु आवे।
रे मन कुक्कर ! सूखी अस्थी पर फिर भी ललचावे॥
टुकड़ों के बदले में खाकर मार जिधर से आवे।
श्वान समान उन्हीं दरवाजों पर फिर फिर तू धावे॥
जाकर देख लियो जिस थल पर जल की बून्द न पावे।
रे मन मृग ! लखि लखि कै तिहि दिसि पुनि पुनि क्यों तरसावे॥
जल की बूँद विना जो तुझ को योंही नाच नचावे।
रे मन मोर ! उसी बादल पै फिर क्यों आस लगावे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरली और सुदर्शन चक्र

(लेखक—एक कृष्णभक्त)

हज़ारों साल बीत गये, मथुरा और वृन्दावन में वंशी बजी थी और उसे सुन कर गडरिये, ग़रीब और अनाथ दूर दूर से इकट्ठे हो गये थे। वंशी बजाने वाला ऊँचे घराने का था पर उसे अपने बड़प्पन का घमण्ड न था। वह ग्वालों और ग्वालिनों के साथ, हाथ में मुरली लिये, काँटेदार झाड़ियों में उलझता फिरता था; गडरियों के साथ गौओं को चराता हुआ सुबह से शाम निकाल देता था। उसकी मुरली में एक सन्देस था, और वह सन्देस था एकता, समानता और भ्रातृभाव का। उसकी मुरली की तान के सुनते ही, ऊँच-नीच का भेद मिट जाता था और छोटे-बड़े सब एक हो जाते थे। वह बड़ा था परन्तु बड़ा होता हुआ भी छोटों में मिल गया था और अपने 'अहंकार' को मसल चुका था। दूसरे शब्दों में, वह इतना बड़ा था कि उसे अपने बड़प्पन का ख़याल ही न था। वह चिन्ताओं से मुक्त हुआ हुआ सांसारिक विषमताओं को अपनी मुरली की मधुर तान से उड़ा देता था और इन्सान के, इन्सान के बीच में पैदा किए हुए भेद को मिटा देता था। वह शान्ति और प्रेम का पैग़ाम लेकर आया था परन्तु यदि शान्ति के लिये ख़ून का दरिया बहाना पड़ता तो वह उससे भी झिझकता न था। एक हाथ में मुरली लिये प्रेमियों के मनों को हरने वाला मोहन दूसरे हाथ से तलवार के वार करता हुआ अपने रिश्तेदारों तक के गलों को धड़ से उड़ा सकता था। उसे शान्ति चाहिये थी, फिर परवाह नहीं उसके लिये कितनी ही अशान्ति में से क्यों न गुज़रना पड़े। संसार में फैले हुए गन्द को, अनर्थ को, देख कर वह चुप नहीं बैठ सकता था। प्रेमोद्गारों को बरसाने वाली मुरली ही आग के शोले उगलने लगती थी। अन्याय और अधर्म को देखकर कृष्ण चुप नहीं रह सकता था। इस अवस्था को वह अकर्मण्यता, निकम्मापन और अपाहिजपन समझता था। अन्याय, अधर्म, बलात्कार और अत्याचार को देखते ही मुरली छुट जाती और सुदर्शन चक्र घूमने लगता था। फिर कम और ज़्यादह की परवाह नहीं। अधर्म और अन्याय करने वाले कितने भी क्यों न मिल जाँय, श्रीकृष्ण का सुदर्शन-चक्र सब के लिये काफ़ी था। मुरलीधर की मनोहर मुरली पर मरने वाले हिन्दवासी क्यों भूल जाते हैं कि उसके दूसरे हाथ में हर समय सुदर्शन-चक्र घूमा करता था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मुरली' और 'सुदर्शन-चक्र' भगवान् कृष्ण के दो अमिट सन्देस हैं जिन्हें भुला कर आर्य-जाति सुख की नींद नहीं सो सकती। ये दो मिलकर ही उसके सन्देश को पूर्ण बनाते हैं। आज हिन्दु-जाति 'मुरली' और 'सुदर्शन-चक्र' दोनों को भुला चुकी है। समय था जब मुरली की आवाज़ सुन कर ऊँच-नीच का भेद मिट गया था। उस की तान में कृष्ण, गोपी, गोप और गौ तक—सब एक हो गये थे—उस में से तो प्राणी-जगत् की एकता का राग फूट-फूट कर निकल रहा था। समता का वह राग आज भारत में सुनाई नहीं देता। घर २ में फूट का राज्य है। हमारी सामाजिक व्यवस्था, हमारी जात-पाँत, हमारी एकता की जड़ में घुन बन कर लगी हुई है। हिन्दु हिन्दु में प्रेम नहीं, हिन्दु-मुसलमान में प्रेम नहीं। सब अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा गिन रहे हैं। मानसिक तुच्छता और स्वार्थ के इस राज्य में मुरली-मनोहर की बाँसुरी के आलापों को सुनने वाला कोई नहीं दिखाई देता। आज सभ्य जगत् में भारतवर्ष का नाम लेते ही उस का जो चित्र आँखों के सामने उपस्थित होता है वह बड़ा भयंकर है। भारतवर्ष वह देश है जहाँ ब्राह्मण लोग अपने बड़प्पन के मद में ब्राह्मणेतरों पर अमानुषिक अत्याचार करते हैं; ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेतर दोनों मिल कर पञ्चम जाति के लोगों पर पाशविक अत्याचार करते हैं। एक २ जाति के अन्तर्गत सैंकड़ों 'उप-जातियाँ बनी हुई हैं जिन में से एक-एक, दूसरे पर अत्याचार करने का मौका हर वक़्त ताकती रहती है। इस देश में मुसलमान हिन्दुओं के जानी दुश्मन से बने हुए हैं और उनकी किसी प्रकार की आज़ादी को सहन नहीं कर सकते। मनुष्यों के साथ जब ऐसा बर्ताव हो रहा है तो पशुओं का तो कहना ही क्या है? यह अवस्था उस देश की है जो कृष्ण को अवतार मानता है और कहता है कि कृष्ण भगवान् मुरली की तान देते जाते थे और बड़े-छोटे के भेद-भाव को भूल गडरियों और किसानों के साथ गौओं को बनों में चराते फिरते थे! कहाँ मुरली का राग और कहाँ तू-तू, मैं-मैं का बेसुरा आलाप!

भारतवासी जहाँ मुरली के सन्देस को भुला चुके वहाँ सुदर्शन चक्र को भी भूल गये! आज वे सब के ग्रास बने जा रहे हैं। अंग्रेज़ उन्हें नहीं छोड़ते। नये २ तरीके निकाल कर उन के बचे-खुचे भोजन को झपटते जा रहे हैं; मुसलमान उन्हें नहीं छोड़ते, उन के देखते देखते, दिन-दहाड़े, उन की जाति रूपी नैय्या के कर्णधारों को गोली का शिकार बनाते हैं और कानून के शिकञ्जों से बाल २ बच जाते हैं। पर अभी तक हिन्दू मुलायम बने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे हैं। अरे मक्खन के दिल वाले हिन्दुओ! यह धर्म नहीं, अधर्म है। तुम अपनी इस ठण्डी तबीयत के कारण इन्सान तथा खुदा के सामने इन गुनाहों के जवाबदेह होगे। अपना घर-बार लुटा देना इन्सानियत नहीं है। तबीयत में ज़रा जोश पैदा करो, इतना ठण्डा आदमी दुनियाँ की जद्दोजहद में जी नहीं सकता। कृष्ण भगवान् के सुदर्शन-चक्र के सन्देस को सुनो! खन का एक कतरा बहाना भी पाप है परन्तु दब्बू बन कर अपनी औरतों और लड़कियों की बेइज़्ज़ती देखना उस से बढ़ कर पाप है। हुङ्कार भरना सीखो, पापी और अत्याचारी को आँखे दिखाना सीखो। सिर नीचा कर सब की जूती ही न खाते जाओ। यही कृष्ण भगवान् के सुदर्शन-चक्र का सन्देस है। जब हिन्दू जाति मुरली और सुदर्शन-चक्र के सन्देस को सुनेगी तभी से इस के दिन पलटने लगेंगे।

भारतीय तथा पाश्चात्य तर्क और विचार प्रणाली में भेद।

(ले० श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

शब्द प्रमाण

शब्द प्रमाण का विषय एक अत्यन्त आवश्यक विषय है। Testimony या Authority की पाश्चात्य विद्वानों के यहां वह कदर नहीं जो कि शब्द-प्रमाण की हमारे यहाँ है। भारतीय दर्शन की दृष्टि से शब्द प्रमाण का अभिप्राय आप्तोपदेश है। प्रश्न हो सकता है कि "आप्त कौन है?" वात्स्यायन का कथन है कि—'आप्तः खलु साक्षात्कृतधर्मा यथा दृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयोक्ता उपदेष्टा'। आप्त वही है जिस ने किसी अर्थ का साक्षात्कार किया हो, उसे देखा हो—उस में उसे कुछ भी संदेह न हो। शब्द प्रमाण में आप्तता आवश्यक है। आप्तोपदेश दो प्रकार का है:—

१. परमेश्वर का उपदेश—' वेद अथवा श्रौत-धर्म।

२. मनुष्य का साक्षात्कार पूर्वक उपदेश—शास्त्र अथवा स्मार्त्त-धर्म।

पहले पहल वेद की प्रामाणिकता को लीजिये। न्यायदर्शन में वेद की प्रामाणिकता को बड़े ज़ोर दार शब्दों में माना गया है। द्वितीय अध्याय के प्रथमान्हिक में शंका उठाई गई है- 'तदप्रामाण्यं अनृत व्याघात पुनरुक्तदोषेभ्यः'।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका उत्तर 'न कर्मकर्तृ साधन वैगुण्यात्'— 'अभ्युपेत्य कालभेदे दोष-वचनात्'- 'अनुवादोपपत्तिश्च'-'वाक्य-विभागस्य चार्थ ग्रहणात्'— 'विध्यर्थ वादानुवादवचन विनियोगात्'-'मन्त्रा-युर्वेदप्रामाण्य वच्च तत् प्रामाण्यं आप्त प्रामाण्यात्' इन सूत्रों में दिया गया है। वैशेषिक में 'तद्वच-नादाम्नायस्य प्रामाण्यम्'- 'तस्मादा-गमिकः'— 'वेदलिंगाच्च'— इत्यादि सूत्रों में वेद की प्रामाणिकता को स्वतः सिद्ध ठहराया गया है। पर-मात्मा के गुण का ज्ञान किस प्रकार किया जाय इसका उत्तर योगदर्शन ने यही दिया है कि 'तस्य संज्ञादि विशेष प्रतिपत्तिरागमतः पर्यन्वेष्या'। वेदान्त के अधिक दृष्टान्त देने की आवश्यकता नहीं। वह तो 'न वा तत्सहमावाश्रुते'—'न वियदश्रुतेः'— 'नाणुरतच्छ्रुतेरिति'— 'नात्मा श्रुते-र्नित्यत्वाच्च'—'श्रुतेश्च'— 'शब्दाच्च'- इत्यादि सूत्रों से भरा पड़ा है। हमारे दर्शनों की दृष्टि से वेद की सर्वोपरि प्रामाणिकता सर्व सम्मति से मानी गई है।

परन्तु यह बात पाश्चात्य-दर्शन में नहीं। जिस युग में ईसाइयत के सिद्ध करने पर ही सारे दर्शन-शास्त्र का बल लगा हुआ था—उस समय निस्सन्देह बाइबल को आधार मानकर तत्प्रतिद्वन्दी अन्य सब प्रमाणों को निर्बल माना गया है—परन्तु अब ऐसी अवस्था नहीं। युक्ति रूपी घोड़ा बिना लगाम लगाये खुला छोड़ दिया गया है-वह जिधर जाय उधर जाने के लिये पाश्चात्य विचारक उद्यत हैं। युक्ति की भी कोई सीमा है—कोई ऐसा भी स्थल है जहाँ युक्ति नहीं चल सकती, इस सचाई को अत्यन्त थोड़े रूप में अनुभव किया गया है। न्याय के हेतु परिष्कारक पाँच प्रकारों में 'अबाधितत्व' भी गिना गया है। 'अबाधितत्व' का अभिप्राय यह है कि वही युक्ति ठीक है जिसके समान बलवती दूसरी युक्ति हमें न मिले। यदि एक युक्ति से परमात्मा की सिद्धि हो जाय-दूसरी उतनी ही प्रबल युक्ति से उसका खण्डन हो जाय तो ऐसी अवस्था को बाधित कहेंगे। 'बाधित अवस्था' को क्यों माना गया है? इस लिए कि युक्ति को सीमित समझ लिया गया है। यदि अनुमान असीमित है तो कोई न कोई अनुमान अवश्य प्रबल रहेगा। परन्तु ऐसा नहीं। अनुमान की ऐसी अवस्था भी आती है, जहाँ यह चुप खड़ा हो जाता है, जहाँ एक पक्ष को साधन करने वाली जितनी प्रबल युक्तियाँ मिलती हैं उतनी ही प्रबल युक्तियाँ उस पक्ष का खण्डन करने वाली भी मिल जाती हैं। ऐसी अवस्था का अनुभव सब दार्श-निकों ने किया है। हर्बर्ट स्पेन्सर की अज्ञेय-मीमांसा में ऐसे अनुमान भरे पड़े हैं। इसका प्रतीकार क्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाय ? भारतीय विचारक कहता है कि मनुष्यों की ऐसी अवस्था निरन्तर नहीं रह सकती, यह अवस्था सृष्टि के सारे उपक्रम के विरुद्ध है। मानना पड़ता है कि इस सृष्टि के रचयिता ने स्वयं ज्ञान दिया होगा जो मनुष्य को इस अवस्था से निकालता होगा। ऋषियों का असन्दिग्ध शब्दों में कथन है कि ऐसा ज्ञान मिला है, उन्होंने उसका अनुमान नहीं, साक्षात्कार किया है-वह ज्ञान 'वेद' है। बस इतने से सन्देह की अवस्था निश्चय में परिणत हो जाती है, जिन बातों पर युक्ति ठहर जाती है उन पर श्रुति का प्रमाण ढूँढा जाता है। इसी लिये ज्यों २ भारतीय दर्शन ऊपर चढ़ता जाता है, त्यों २ अनुमानादि प्रमाण को छोड़ कर श्रुति प्रामाण्य बढ़ता जाता है। उत्तर मीमांसा में तो श्रुति ही श्रुति रह जाती है और कुछ रहता ही नहीं।

पाश्चात्य विचारकों की यह अवस्था नहीं। उन्हें युक्ति पर बहुत विश्वास है। परन्तु क्योंकि एक समय ऐसा आता है जब युक्ति चुप हो खड़ी हो जाती है, तब क्या किया जाय ? पाश्चात्य विचारक का उत्तर है—'कुछ नहीं'। युक्ति चुप हो गई इसी लिए हमें भी चुप हो जाना चाहिये। यही अवस्था सन्देहवाद की अवस्था है। इसीलिये पाश्चत्य विचारकों का किसी बात पर भी विश्वास नहीं। उनके लिये प्रत्येक बात अनिश्चित है। परन्तु मनुष्य की आकांक्षा सन्देहवाद के परिमित वायुमण्डल में रहने की नहीं। इस में मनुष्य का दम घुटता है और वह इस से बाहर निकलना चाहता है। क्या किया जाय ? 'सन्देह' से निकलने का एक ही उपाय हो सकता है और वह उपाय 'निश्चय' की भूमि पर आने के अतिरिक्त और कोई नहीं। 'निश्चय' पर पहुँचने के लिये तीन ही उपायों का अवलम्बन किया जा सकता है:—

१. या तो अपना कोई एक विश्वास निश्चित कर लिया जाय।
२. या अपने से अधिक किसी विद्वान् के कथन को ठीक मान लिया जाय।
३. और या ईश्वरीय ज्ञान का आधार लिया जाय।

क्योंकि मनुष्य सन्देह की अवस्था में नहीं रह सकता अतः भारतीय विचारकों ने पिछले दो को स्वीकार कर लिया है और पाश्चात्य विचारकों ने पहले दो को स्वीकार कर लिया है। युक्ति के क्षेत्र से दोनों निकल कर श्रद्धा के क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाते हैं। कहने के लिये दोनों को अन्धविश्वासी कहा जा सकता है परन्तु यदि ईश्वरीय ज्ञान होता हो तो ऐसी अवस्था में पाश्चात्य विचारकों को ही अन्धविश्वासी कहा जायगा। भारतीय विचारकों का कथन है कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली दो बातों में विश्वास करना परतःप्रमाण बात पर विश्वास करना है तथा पिछली बात पर विश्वास करना स्वतः प्रमाण बात पर विश्वास करना है।

प्रश्न हो सकता है कि ईश्वरीय ज्ञान कौन है—इसका निर्णय कैसे किया जाय। जब ईश्वरीय ज्ञान में वर्णित बातों का यथार्थ रूप से अनुभव अर्थात् प्रत्यक्ष नहीं हो सकता, तब ईश्वरीय ज्ञान की प्रामाणिकता कैसे मानें ?

इस का उत्तर बहुत विचित्र है जो कि आप ने कई बार भिन्न २ रूपों में सुन रक्खा होगा। भारतीय विचारक कहते हैं कि वेद की 'वेदत्वेन' प्रामाणिकता उसी के लिये कही जाती है जो कि स्वयं उसका प्रत्यक्ष नहीं कर सकता, उनका कथन है कि चाक्षुष प्रत्यक्ष ही प्रत्यक्ष नहीं—इन्द्रियों की सहायता से प्रत्येक पदार्थ तक पहुँचने की इच्छा करना मूर्खता है। इन्द्रियाँ ज्ञान को प्रकट करने की अपेक्षा छिपाती अधिक हैं। वास्तविक ज्ञान अनैन्द्रियक ज्ञान ही है। इस प्रत्यक्ष का नाम 'आर्ष प्रत्यक्ष' है। इसी प्रत्यक्ष से वेदों के रहस्यों का प्रत्यक्ष किया जा सकता है। यह बात देखने की है, बहस करने की नहीं।

आप्तोपदेश के दो भेदों को करते हुए मैंने कहा था कि एक तो ईश्वरदत्त ज्ञान है और दूसरा मनुष्यदत्त। ईश्वरदत्त ज्ञान के प्रामाण्य के विषय में हम विचार कर चुके। मनुष्यदत्त ज्ञान के भारतीय दार्शनिकों ने दो भेद किये हैं।

१. जिस उपदेश का 'इन्द्रिय-प्रत्यक्ष' पर आश्रय हो।

२. जिस उपदेश का 'आर्ष-प्रत्यक्ष' पर आश्रय हो।

इन्द्रिय प्रत्यक्ष पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, इसे पाश्चात्य विद्वान् मानते हैं—और शायद् आवश्यकता से अधिक मानते हैं। पाश्चात्य दार्शनिकों की अपेक्षा भारतीय दार्शनिक आर्ष प्रत्यक्ष को अधिक प्रबल मानते हैं। आर्ष प्रत्यक्ष का वर्णन प्रत्यक्ष प्रकरण में इस लिये नहीं किया गया, क्योंकि इस का ज्ञान हमें बहुत कुछ शब्द प्रमाण द्वारा ही होता है। आर्ष प्रत्यक्ष के विषय में लिखते हुए वैशेषिक की टीका में लिखा है:—

"यत्प्रातिभं ज्ञानं यथात्म निवेदन मुत्पद्यते तदार्षमित्याचक्षते। तत्तु प्रस्तावेनदेवर्षिणां कदाचिदेव लौकिकानाम्। यथा कन्यका ब्रवीति श्वो मे भ्राताऽऽगन्तेति। हृदयं मे कथयतीति"। बहिन कहती है कि कल मेरा भाई आयगा, मेरा हृदय कहता है कि वह कल आजायगा। अगला दिन होते ही उसका भाई दरवाज़े पर आ खड़ा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। यह ज्ञान किसी बाह्य इन्द्रिय द्वारा नहीं हुआ—परन्तु यह भी ज्ञान है-इसी को आर्ष-प्रत्यक्ष कहते हैं।

योगदर्शन में 'श्रुतानुमान प्रज्ञाभ्यां अन्य विषयाविशेषार्थत्वात्' इस सूत्र की व्याख्या करते हुये भाष्यकार लिखते हैं 'न चास्य विशेषस्य अप्रामाणिकस्य अभावोऽस्तीति समाधि प्रज्ञा निग्राह्य एव स विशेषो भवति'। इस उद्धरण में समाधि-प्रज्ञा-प्रत्यक्ष अर्थात् योगप्रत्यक्ष एक विलक्षण प्रत्यक्ष माना गया है।

जो भारतीय विचारों से परिचित हैं वे इस बात से भी परिचित होंगे कि हमारे यहाँ इन्द्रियों को पदार्थज्ञान में बहुत अधिक साधन नहीं माना गया, कम से कम आत्मप्रत्यक्ष एक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष माना गया है, जिसका इन्द्रियों पर आधार बिल्कुल नहीं। इन्द्रियों के बिना कार्य होता है। कहते हैं:—

'अन्धो मणिमविध्यत् तमनङ्गुलिरावयत्।
अग्रीवस्तं प्रत्यमुञ्चत् तमजिह्वोभ्यपूजयत्॥'

इस आशय के मन्त्र वेद में, उपनिषद् में यत्र तत्र सर्वत्र आते हैं। 'अपाणिपादोजवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः' इत्यादि मन्त्र इसी भाव के अभिव्यञ्जक हैं।

यौगिक प्रत्यक्ष कोई नई बात नहीं। इन्द्रियों के बिना ज्ञान प्राप्त करना भारतवासियों की ही कल्पना नहीं। चीन के प्राचीन धर्म Taoism की पुस्तकों में एक कथा आती है जिस में लीन शू को कीन बू कहता है 'मैंने एक आदमी को बड़ी ऊटपटांग बातें करते हुए सुना है। वह एक विचित्र व्यक्ति का वर्णन सुना रहा था। वह कहता था कि एक आदमी मौजूद है जो अन्न नहीं खाता, बादलों पर चढ़ जाता है, समुद्रों के पार उड़ जाता है-क्या ये बातें अनाप शनाप नहीं हैं?' यह सुन कर लीन शू कहता है कि ये सब बातें सत्य हैं, तू जानता नहीं-लेकिन यह सब कुछ हो सकता है।

आर्ष तथा योग प्रत्यक्ष को पाश्चात्य दर्शन दबदबे तौर से मानता हैं, खुले तौर से नहीं। Locke का कथन है कि पाँच बाह्य इन्द्रियों के अतिरिक्त एक आन्तरिक इन्द्रिय भी है। 'Intuition' केवल आर्ष प्रत्यक्ष का ही नामान्तर है। 'Telepathy' की घटनाएँ भी इन्द्रिय व्यतिरिक्त प्रत्यक्ष को ही सिद्ध करती हैं।

Psychology के वर्त्तमान अन्वेषण इसी तरफ इशारा कर रहे हैं। परन्तु अभी तक वर्त्तमान विचार भारतीय विचार से बहुत दूर है। भारतीय विचारकों ने आर्षप्रत्यक्ष को बड़ी प्रबलता से माना ही नहीं परन्तु उसी को वास्तविक निर्भ्रान्त प्रत्यक्ष माना है। उनका यह भी कथन है कि मनुष्य योग शक्तियों को अपने भीतर उत्पन्न कर सकता है। इसके मार्ग आदि सब विशद रूप से उन्होंने एक विशेष दर्शन की पुस्तक में लिख दिये हैं जिस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नाम 'योगदर्शन' है। पाश्चात्य तथा भारतीय दर्शन में यह बड़ा भारी भेद है। इस भेद को मैं सब भेदों से मुख्य भेद समझता हूँ। हमारे दार्शनिकों ने सब तत्वों का दर्शन किया था। केवल बुद्धि से ही उन तक नहीं पहुंचे थे। यही कारण है कि भारतीय फ़िलासफ़ी का नाम 'दर्शन' है। इस शब्द में बड़ी भारी गहराई और सचाई है। 'दर्शन' का अर्थ है—देखना। न्याय भी दर्शन है-वैशेषिक भी दर्शन है-वेदान्त भी दर्शन है। सब कुछ उन का देखा हुआ है—अटकलपच्चू बात कोई नहीं। क्या इतना बड़ा दावा पाश्चात्य फ़िलासफ़ी कर सकती है। जहाँ तक मुझे मालूम है, अभी तक इस दावे को पाश्चात्य फ़िलासफ़ी ने नहीं किया। (अपूर्ण)

स्पार्टा की शिक्षण-प्रणाली

(ले०—ब्र० शंकरदेव)

यूरोप के इतिहास में स्पार्टा का बहुत महत्व है। स्पार्टा ग्रीस प्रदेश के लेकोनिया प्रान्त का मुख्य नगर था। यहां के निवासियों को इस नगर के नाम पर स्पार्टन कहते थे। ये स्पार्टन लोग यूरोटस नदी की तराई में रहने वाले डोरियन लोगों के वंशज थे। इन स्पार्टनों के अतिरिक्त स्पार्टा नगर में अन्य जातियों के लोग भी निवास करते थे। इन लोगों में पेरीकोई तथा हेलट नाम की दो श्रेणियाँ थी। सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से हेलट लोग सब से नीचे की श्रेणी के लोग थे। इन लोगों की संख्या अधिक होने पर भी इनकी सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयाजनक थी। इनको किसी प्रकार के भी सामाजिक किंवा राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। ये लोग खेती तथा गुलामी का धंधा करते थे। थोड़े में कहें तो यों कह सकते हैं कि ये लोग स्पार्टा के शूद्र थे। पेरीकोई लोगों की अवस्था बहुत अच्छी थी। स्पार्टा की व्यापार आदि की शक्तियाँ इन्हीं लोगों के हाथ में थी। यद्यपि राजनैतिक दृष्टि से उनको किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त न थे तथापि नागरिक होने के अधिकार से उनको सब प्रकार की स्वाधीनता थी। इन सब के ऊपर स्पार्टन लोग अपने अधिकारों का भोग करते थे। संख्या में अल्प होते हुए भी इन स्पार्टन लोगों की अन्य लोगों पर बहुत धाक थी। स्पार्टन लोगों को व्यापार करने की सख्त मनाही थी। हेलट लोगों की खेती की उपज से ये लोग अपना जीवन-निर्वाह करते थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन जातियों पर अपना एकाधिकार बनाये रखने के लिये स्पार्टन लोग सदा यत्नशील रहते थे। पेरीकोई तथा हेलट लोगों को सदा के लिए अपने अंकुश के नीचे रखने के लिए ये अहर्निश सचेत रहते थे। हेलट लोगों की संख्या के अधिक होने के कारण इन लोगों को इस बात का सदा भय बना रहता था कि कहीं ये लोग संगठित होकर हम पर धावा न करदें, अतः स्पार्टन लोग उनको सदा दबाये रहते थे। हेलट लोगों के इस भय के कारण स्पार्टन लोगों में "क्रिप्टिया" नामक एक अत्यन्त क्रूर रिवाज चला हुवा था। इस रिवाज के अनुसार स्पार्टा के युवकों को हथियार तथा भोजन दे कर स्पार्टा के समीप इधर उधर छिपने को कहा गया था। ये युवक रात्रि के समय फिरते हुए हेलट लोगों का नाश करते थे और यदि उन्हें यह ज्ञात हो जाता था कि हेलट लोग प्रतिकार करना चाहते हैं तब तो वे उन को बीन बीन कर मारते थे। कितनी ही बार दिवस के समय में भी ये युवक लोग खेतों में जाकर हेलट लोगों का संहार करते थे।

एक समय स्पार्टनों तथा एथिनियन लोगों के बीच में युद्ध छिड़ा। एथिनियन लोगों ने ४२० स्पार्टनों को स्फेकटेरिया के टापू में घेर लिया। इस समय हेलट लोगों ने स्पार्टनों के छुटकारे के लिये जीजान से उद्योग किया और उन के लिये भोज्य सामग्री पहुँचाते रहे। हेलट लोगों की यह सेवा देख कर स्पार्टनों ने उनको स्वाधीनता के अधिकार दे दिये। परन्तु थ्युसिडाईटस् लिखता है कि स्वतन्त्रता देने के थोड़े समय के उपरान्त ही ये दो हज़ार से अधिक गुलाम [दास] कहाँ गये और उनका क्या हुआ इसका कुछ पता नहीं मिला। ऐसी गुप्त रीति से उन सब का एक वार में ही संहार कर दिया गया। जिस प्रकार मध्यकाल में भारत में शूद्रों को वेदादि शास्त्रों के पढ़ने का अधिकार नहीं था उसी प्रकार हेलट लोगों को भी गान करने तथा नृत्य करने की मनाही थी।

इन स्पार्टन लोगों के जीवन में से अनुभव तथा प्रेरणा प्राप्त करके प्लेटो जैसे महान् विचारक ने जगत् को "रिपब्लिक" नाम का अपूर्व ग्रन्थ दिया। उसने अपनी रिपब्लिक में आदर्श राज्य का तथा राज कर्त्ताओं का वर्णन किया है। प्लेटो द्वारा प्रतिपादित आदर्श राज्यकर्त्ताओं के गुणों में से केवल एक गुण ही ऐसा था जिस का स्पार्टन लोगों में अभाव था, और वह यह कि उनको केवल शारीरिक शिक्षण ही दिया जाता था, उनका आत्मा अशिक्षित ही रहा। परिणाम यह हुआ कि वे स्वार्थी, संकुचित दृष्टि वाले और जड़ हृदय वाले हो गए। इस अपूर्णता के कारण ही वे ग्रीस देश का एक राष्ट्रसंघ [Federation]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बना सके । स्पार्टनों की इस अपूर्णता को देख कर प्लेटो ने अपनी रिपब्लिक में इस बात को बलपूर्वक प्रतिपादित किया है कि राजकर्त्ताओं को दार्शनिक अवश्य होना चाहिए।

इन स्पार्टन लोगों ने अपने को एक बलवान् प्रजा बनाने के लिए जो जो प्रयत्न, जो जो कानून-कायदे बनाये और जो कठोर तपस्या और संयम किया उस का वर्णन बहुत आश्चर्य-कारक है। आज 'स्पार्टन नियन्त्रण' यह एक कहावत सी बन गई है । 'युद्ध चातुर्य्य' यह उनका ध्येय था। प्रत्येक स्पार्टन का स्वभाव मधुमक्षिका की तरह सर्वदा सामान्य लाभ (Common good) की ओर रहता था। वे अपने को स्वतन्त्र व्यक्ति न समझते थे अपितु सारे स्पार्टन संघ का मैं एक अङ्गमात्र हूँ यह अनुभूति उनके दिलों में बनी हुई थी। सारे ग्रीस में शायद ही कोई दूसरी ऐसी प्रजा होगी जिसने राष्ट्र के हित के लिए अपने व्यक्तियों के व्यक्तित्व का इतना अधिक बलिदान किया जितना स्पार्टनों ने किया । उनका संपूर्ण शिक्षण-क्रम उनको बलवान् योद्धा बनने के लिए ही बनाया गया था। उन का मूल ध्येय आज्ञापालन, सहनशीलता, और सैनिक विजय था, अन्य ध्येय गौण थे। एक ऐतिहासिक विद्वान् का कहना है कि सम्पूर्ण जगत् के इतिहास में किसी भी राष्ट्र ने अपना आदर्श इतनी स्पष्टता से रखकर उसको पूर्ण करने के निमित्त सतत प्रयत्न नहीं किए, जितने स्पार्टन लोगों ने किए हैं। स्पार्टा की महत्ता यही है कि उसने अपने आदर्श को पूर्ण करने का सतत उद्योग किया।

स्पार्टन लोगों में एकता स्थापित करके उन में राष्ट्रीय अहंभाव के तत्व को भरने के भगीरथ-प्रयत्न करने वालों में लाईकरगस का नाम प्रथम है । इस लाईकरगस के विषय में ऐतिहासिकों बहुत मतभेद हैं, जिस प्रकार भारत में मनु आदि स्मृतिकार अथवा कानून-निर्माता माने जाते हैं उसी प्रकार स्पार्टनों की यह मान्यता थी कि लाईकरगस ने ही सब कायदे कानून बनाये हैं । लाईकरगस का पहला सुधार भूमि विषयक था। उसने देखा कि बहुत सी ज़मीन कुछ एक धनिकों के पास ही सीमित है और स्पार्टन लोगों में निर्धनों की संख्या बहुत अधिक है। इस अतिसंपत्तिमत्ता और निर्धनता के कारण लोगों में बहुत असमानता, लोभ तथा ईर्षा थी। पूंजी-पतियों की विलासिता और उद्धतपने के कारण राष्ट्र की बहुत बुरी हालत थी। लाईकरगस ने प्रजा की संमति से भूमि के स्वामित्व के पहिले के सब नियमों को रद्द कर दिया और ऐसी नवीन व्यवस्था बनाई जिस से स्पार्टन नागरिकों की आर्थिक-स्थिति, रीतिरिवाज, आदि समान हो जाँय। [इन सुधारों के साथ वर्तमान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्यवाद की कुछ समता की जा सकती है]।

इन सुधारों का परिणाम यह हुआ कि सम्पत्ति के कारण उत्पन्न असमानता नष्ट हो गई। द्रव्य-लोभ तथा मौज-शौक को पूर्णतया रोकने के लिए तथा स्पार्टन लोगों की राष्ट्रीय अस्मिता के बनाये रखने के लिए एक और नियम बनाया गया था जिससे कोई भी स्पार्टन व्यक्ति अपने घर भोजन नहीं कर सकता था, सब स्पार्टन लोगों को प्रतिदिवस नियत समय पर एक निश्चित सार्वजनिक भोजनशाला में भोजन करना होता था। इस नियम द्वारा स्पार्टनों की आन्तरिक एकता बहुत दृढ़ हो गई। इसके द्वारा उन को अपना सैनिक-भ्रातृ-संघ (Military Brotherhood) बनाने में बहुत सहायता मिली।

इस के अतिरिक्त लाइकरगस ने एक और भी महत्व-पूर्ण सुधार किया और लोगों की लोभवृत्ति को रोका। उस ने सुवर्ण और चाँदी की मुद्रा को कानूनन बन्द कर दिया और उसके स्थान पर लोहे की मुद्राएँ चलाईं। इस का परिणाम यह हुआ कि स्पार्टा के बहुत से निरुपयोगी धन्धे तथा विलासता स्वयं बन्द होगईं। ग्रीस के अन्य प्रदेशों के साथ स्पार्टा का जो व्यापार चलता था वह भी बन्द हो गया। प्लुटार्क लिखता है कि इसके द्वारा विदेशी वस्तुओं को खरीदने का स्पार्टनों के पास कोई साधन न रहा। स्पार्टा के बन्दरगाहों पर व्यापारियों के जहाज़ आने बन्द हो गए। संपूर्ण प्रदेश में पैसा लेकर विद्या या कलाकौशल सिखाने वाला, फिरन्दर भविष्य बतलाने वाला, तथा आभूषण बेचने वाला फेरीवाला ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता था। अभियोग मुकद्दमे बन्द हो गए, अमीरी और गरीबी का अन्त हो गया। प्रत्येक व्यक्ति को जितने द्रव्य की जरूरत होती थी उतना ही मिलता था। विलासिता को उत्तेजना देने वाली कोई भी वस्तु स्पार्टा में नहीं रही। लोगों में कला, और सौन्दर्य के जो भाव विद्यमान थे वे उनके जीवन में प्रकट होने लगे। आज सम्पूर्ण संसार में अमीरी और गरीबी का जो महान् संघर्ष चल रहा है, असमानता के कारण मानवसमाज में जो बुराईयाँ फैल रही हैं वे सब स्पार्टन लोगों ने अपनी कार्यक्षमता, तपस्या, दृढ़ संयम तथा दृढ़ निश्चय के द्वारा अपने में से निकाल दीं थीं।

ग्रीस में अपना स्थान सब से उन्नत रखने के लिए उनको बलवान् प्रजा की आवश्यकता थी। इस के लिए लाइकरगस ने विवाह विषयक बहुत से नियम बनाये। कन्याओं को भी युवकों जैसी ही शिक्षा दी जाती थी। प्लुटार्क लिखता है कि—"लाइकरगस ने कुमारिकाओं के लिए दौड़ने, कुश्ती लड़ने, मुद्गर फेरने तथा भाला चलाने की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यायाम निश्चित की ताकि उनके शरीर दृढ़ और बलवान् बनें, वे प्रसव वेदना को सहन कर सकें। उन की सन्तान भी मज़बूत और सशक्त उत्पन्न हो। परदे में रहने से नारियों में जो अत्यन्त कोमलता, लज्जा और निर्बलता आती है उसको हटाने के लिए लाइकरगस ने कई ऐसे त्यौहार रक्खे जिन में कुमारियों का युवक पुरुषों के आगे गाना और नाचना नियत किया। इन उत्सवों तथा समाजों में सब प्रकार के लोग उपस्थित होते थे। उत्सवों में कुमार और कुमारियों के अनेक शारीरिक खेल होते थे। शारीरिक उन्नति में प्रथम आने वालों की बहुत प्रसंशा होती थी। इन उत्सवों में बहुत बार नग्न नृत्य भी होते थे।"

स्पार्टन लोगों की यह नग्न नाच की प्रथा हमें नैतिक दृष्टि से उचित न लगती होगी, परन्तु स्पार्टन लोगों को इस में कोई अनीति नहीं प्रतीत होती थी। उनका इतना ही लक्ष्य था कि हमने शारीरिक उन्नति करके सुदृढ़ और बलवान प्रजा पैदा करनी है। अविवाहित पुरुषों को निन्दा से देखा जाता था। कन्याओं के विवाह के लिए सख़्त नियम बना हुवा था। कुमारिकाओं का विवाह उनकी कोमल आयु में नहीं होता था। पूर्ण अवस्था आने पर ही उनका विवाह होता था। जब स्पार्टनों को बलवान सन्तान की आवश्यकता होती थी तब विवाहित स्त्रियों को अपने पति के बलवान न होने पर अपनी पसन्दगी के अनुसार किसी अन्य सशक्त पुरुष द्वारा सन्तति उत्पन्न करने की छूट दी जाती थी। इस कार्य के लिए स्त्रियों को उनके वास्तविक पति की ओर से भी पूर्ण स्वाधीनता होती थी। क्यों कि स्पार्टन लोग अपनी स्त्री से किसी प्रतिष्ठित सशक्त पुरुष के द्वारा उत्तम सन्तान पैदा करने में कोई बुराई नहीं समझते थे। वास्तविक लज्जा तो संतान न पैदा होने में अथवा निर्बल सन्तान पैदा होने में ही मानी जाती थी। वस्तुतः यह प्रथा स्पार्टनों के आत्मसमर्पण का अपूर्व नमूना है। आचार की दृष्टि से यह प्रथा ठीक थी या नहीं यह दूसरी बात है। जो बालक उत्पन्न होते हैं वे स्पार्टा के गौरव हैं, ये किसी व्यक्ति के नहीं हैं अपितु समष्टि के हैं, ऐसी उनकी मान्यता थी। और इस प्रकार देखने से यदि उनको यह प्रथा अनीति पूर्ण न लगती तो इस में आश्चर्य ही क्या है? इसी प्रकार की विचार श्रेणी से प्रेरित होकर प्लेटो अपनी 'रिपब्लिक' में गार्डियनों (राजकर्ताओं) के लिए विवाह की प्रथा होनी ही नहीं चाहिए इस प्रकार लिखता है। वस्तुतः-"यह बालक मेरा है" इस प्रकार न मान कर "मेरे राज्य का है, सौभाग्य से इस को पालन पोषण करने का मुझे अवसर मिला है, जिस से भविष्य में यह मेरे देश की रक्षा करेगा और उसे यशस्वी करेगा" इस प्रकार के विचार करने वाले पिता जिस देश में हों, उस देश की राष्ट्रीय अस्मिता को धन्य है!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथापि यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि नग्न नृत्य करने तथा पति के सिवाय अन्य पुरुष द्वारा सन्तान उत्पन्न करने की इस प्रथा के द्वारा स्पार्टा को अन्त में हानि ही हुई। इस प्रथा को प्रचलित करते समय यद्यपि उन के भाव शुद्ध थे लेकिन साधन विशुद्ध नहीं थे। आगे चल कर साध्य का रूप बिगड़ गया और साधन ही साध्य बन गये, और स्पार्टा में अनीति का प्रवेश होगया। साधारणतया यूरोपीय राजनीतिज्ञों तथा विचारकों का यह मत है कि साध्य शुद्ध रहना चाहिए चाहे साधन कैसा भी हो। तोभी वान-ट्राट्स्की जैसे विख्यात् राजनीतिज्ञ का कथन है कि स्पार्टा के अधःपतन का कारण उपरोक्त प्रथाएँ ही हैं।

स्पार्टन लोगों के सुधार यहीं तक सीमित नहीं रहे। उन्होंने देखा कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति अथवा अवनति का वास्तविक आधार उस देश के बालकों को मिलने वाली शिक्षा पर अवलम्बित है। इसलिए शिक्षा के लिए भी लाईकरगस ने बहुत से नियम बनाए। पिता को अपने बालकों के पालन का अधिकार नहीं था। बालक के पैदा होते ही उस के पिता को उस को स्पार्टा नगर के सार्वजनिक-सूचना-स्थान पर ले जाना पड़ता था, वहाँ पर उस बालक के गोत्र के वृद्ध पुरुष एकत्रित होकर नवजात बालक के शरीर का निरीक्षण करते थे। यदि बालक मज़बूत होता था तो उस के पालन का प्रबन्ध किया जाता। यदि बालक निर्बल और रोगी प्रतीत होता था तो उस को "जिस को प्रकृति ने ही बल नहीं दिया उस के जीने से राष्ट्र का क्या उपकार होगा?" यह कह कर को टेगीटस पर्वत के समीप वाली ऐपीथेटी नामक अन्धेरी गुफा में फैंक दिया जाता था। इस कारण स्पार्टन माताएँ बालक के उत्पन्न होते ही उस को पानी स्नान न करा कर शराब से स्नान कराती थीं, क्यों कि उन का ऐसा विचार था कि निर्बल या रोगी बालक ही मद्यस्नान से मर जाता है, जो तन्दुरुस्त होता है उसे उससे फ़ायदा ही होता है।

बालकों की शारीरिक उन्नति के लिए एक दूसरी परीक्षा भी होती थी। आठ वर्ष की उमर होने पर बालक को एक परीक्षा में से गुजरना होता था। इस के लिए स्पार्टन लोग देवी डायना के मंदिर में एक उत्सव करते थे। इस उत्सव में आठ वर्ष की आयु वाले बालक एकत्रित किए जाते थे और उन सब को वेदी पर चाबुक से मारा जाता था। जब तक उन के शरीर से रक्त न निकले तब तक उन को इसी प्रकार पीटा जाता था। चाबुक मारते समय तनिक भी आवाज अथवा शोर नहीं करना होता था। जिस समय अपने पुत्र को चाबुक से पीटा जा रहा हो उस समय यदि उस के माता पिता शोकित अथवा चिन्ताग्रस्त मालूम पड़ते थे तो अन्य लोग उन का उपहास करते थे। इस परीक्षा के समय कितने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही लोग इस दृश्य को देख कर मर जाते थे। जो बचते थे, वे स्पार्टा के नागरिक होने के अधिकारी समझे जाते थे।

बालकों की शिक्षा उन के माता पिता के हाथ में नहीं थी। जब बालक सात वर्ष की वय के हो जाते थे तब उन की श्रेणी (टोली) बनादी जाती थी। ये सब बालक साथ ही खाते पीते, खेलते कूदते, पढ़ते लिखते, कसरत करते तथा एक जैसा नियमित जीवन व्यतीत करते थे। श्रेणी में जो बालक विशेष उत्साही और दृढ़ होता था उसे उस श्रेणी का मुखिया [नायक] बनाया जाता था। अन्य बालक उस को अपना आदर्श समझते थे और उस का कहना मानते थे। बड़ी उमर वाले स्पार्टन लोग इन बालकों में परस्पर संघर्ष करवाते थे तथा उन के साहस, उत्साह दृढ़ता आदि गुणों का निरीक्षण करते थे।

आज कल जिस को शिक्षा कहा जाता है वह तो उन को बहुत थोड़ी ही दी जाती थी। उन की शिक्षा का मुख्य ध्येय उन को आज्ञापालक, परिश्रमी, सहनशील, लड़ाका, विजयी तथा संयमी बनाना था। ज्यों ज्यों उन की उमर बढ़ती उन का नियन्त्रण कठिन होता जाता था। उन को सादा और तपस्वी जीवन व्यतीत करना होता था। आराम पसन्द होने से उन को बहुत बचाया जाता था। चोरी किस प्रकार करनी चाहिए यह भी उन को सिखाया जाता था तथा चोरी करते हुए जो बालक पकड़ा जाता था उस को उस की इस गफलत के लिए दण्ड मिलता था। बालक चोरी करने में कितनी सावधानी रखते थे उस का एक सुन्दर उदाहरण प्लुटार्क ने दिया है:—

एक बार कोई लड़का एक सियार का बच्चा अपने कम्बल में छिपा कर लाया। इस बच्चे ने अपने दाँतों और नखों से लड़के का पेट चीर दिया और उस की अन्तड़ियाँ बाहर निकल आईं इतने पर भी बालक ने इस बात को प्रकट न किया और पकड़े जाने की अपेक्षा मृत्यु को अधिक उचित समझा।

सारांश यह कि स्पार्टन लोगों ने एक बलवान जाति बनने के लिए जो प्रयत्न करने चाहिएँ, उन के करने में कोई कसर न छोड़ी। परन्तु वे मानव जीवन के एक ही पार्श्व को पुष्ट कर सके जिस का परिणाम यह हुवा कि उन के सारे प्रयत्न विफल हुए। यह बात केवल स्पार्टा के इतिहास में ही लागू नहीं होती, परन्तु यूरोप के इतिहास में भी लागू होती है। यूरोप ने अपने जीवन में अपने देह को ही प्रधान पद दिया, आत्मा की ओर ध्यान नहीं दिया। और इसी लिए उसके सारे प्रयत्न वस्तुस्थिति तथा मनुष्य के बाह्य जीवन के सुधार की ओर ही झुकते हुए प्रतीत होते हैं। आज भी यूरोप बोल्शेविज्म आदि बाह्य साधनों द्वारा अपनी मुक्ति के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए प्रयत्न कर रहा है। परन्तु महात्मा गाँधी और श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में जब तक आन्तरिक सुधार अथवा हृदय ने पलटा नहीं खाया सब प्रयत्न निष्फल ही जायेंगे। स्पार्टन लोगों ने केवल देह की ही उपासना की, जीवन का वास्तविक मर्म नहीं समझा। यदि इस शरीर की उन्नति का आधार आध्यात्मिक होता तो आज यूरोप का इतिहास और ही होता। तथापि अपने ध्येय की साधना के लिए जो महान् प्रयत्न उन्होंने किए, देह की उपासना करते हुए भी उन्होंने जो तपश्चर्या की है वह मानवीय शक्ति का भव्य और ज्वलन्त उदाहरण है। आज भी संपूर्ण जगत् उस से प्रेरणा और शिक्षा ले सकता।

'ज़िन्दावस्था' और 'वेद' की भाषाओं की समानता

(ले०—एक वैदिक विद्वान्)

मुसलमानों के अत्याचरों से पीड़ित होकर पारसियों के गरोह-के-गरोह अपनी मातृभूमि—'पर्शिया'—को अंतिम नमस्कार कर, अखिल विश्व के धर्मों में दैवी सत्य स्वीकार करने वाली भारत-भूमि की ही शरण में आए थे। पश्चिमी भारत के तटों पर उन्होंने अपने जहाज़ लगाए, और इस पुण्यभूमि ने उन भयभीत प्राणियों को अपने अंचल में छिपाकर शत्रुओं के क्रूर आक्रमणों से बचा लिया। ये लोग इधर आते हुए अपनी धर्म-पुस्तकों को, मुसलमानों से छिपाकर, अपने साथ लेते आए थे, और इन्हीं में से एक विद्वान् पारसी पुरोहित ने—जिसका नाम नर्योसंघ धवल था—अपने धर्म के अनेक ग्रंथों का पहलवी-भाषा से संस्कृत में अनुवाद भी किया, जिससे भारतीयों को पारसियों के धर्म का कुछ परिचय हो जाय। इस प्रकार पारसी-धर्म ने पर्शिया से सताए तथा भगाए जाने पर पश्चिमी भारत की संरक्षा में अपने प्राणों को बचाया।

पाश्चात्य विद्वानों को पारसी-धर्म का परिचय तब मिला, जब योरप का भारत के पश्चिमी भाग से व्यापारिक सम्बन्ध उत्पन्न हुआ। वैसे तो १७ वीं शताब्दी में ही ज़िन्दावस्था की कुछ हस्त-लिखित प्रतियाँ योरप में पहुँच चुकी थीं; परन्तु उनका महत्व पुरानी भोजपत्रों पर लिखी दूसरी पुस्तकों से बढ़कर न था। इन्हीं हस्त-लिखित पुस्तकों के कुछ पृष्ठों की छपी हुई प्रतिलिपि, अजूबा चीज़ के तौर पर, हाथोंहाथ फिरती एक फ्राँसीसी सज्जन—एनक्विटिल डूपरान—ने भी देखी। उसके हृदय में यह प्रबल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिलाषा उत्पन्न हुई कि योरप में 'ज़िन्दावस्था' के अर्थ खोलकर विद्वानों के सम्मुख रखने के गौरव का सेहरा उसके मस्तक पर बँधे। बस, इसी अभिलाषा को हृदय में लेकर वह 'ज़िन्दावस्था' की पुरानी हस्त-लिखित प्रतियों को खोजने तथा ख़रीदने के लिये सन् १७५४ में, 'फ्रेंच-इण्डियन कम्पनी' के जहाज़ में, बम्बई को रवाना हुआ। बेचारा निर्धन था, इसलिये उसने जहाज़ में ख़लासी का काम किया, और बम्बई पहुँच कर अपने उद्योग में लग गया। उसके इस साहस-पूर्ण उद्योग को देखकर फ्रेंच-सरकार ने भी उसे सहायता दी। पारसी दस्तूर (पुरोहित) योरपियन लोगों को संदेह की दृष्टि से देखते थे, इसलिए डूपरान के हाथ अपनी पुस्तकें बेच देने को कोई तैयार न होता था। अंत में उसने सूरत के दस्तूर-दाराब को रिश्वत देकर बहुत-से प्राचीन ग्रन्थ ख़रीदे, और उसी से 'अवस्था' तथा 'पहलवी' भाषा का अध्ययन भी किया। पीछे से उन पुस्तकों को लाकर पेरिस की नेशनल लाइब्रेरी में रख दिया गया।

इस प्रकार योरप में 'ज़िंदावस्था' का अध्ययन आरंभ हुआ। परंतु अभी तक एनक्विटिल डूपरान का कार्य अत्यंत प्रारंभिक अवस्था का था। उसे 'अवस्था' तथा 'पहलवी'-भाषा पढ़ाने वाले पारसी दस्तूर स्वयं इन भाषाओं के विद्वान् नहीं थे। सदियों से इस भाषा का पठन-पाठन छूट चुका था। जिस प्रकार 'ज़िंदावस्था' की प्राचीन हस्त-लिखित प्रतिलिपियों को खोजा गया, उसी प्रकार इस भाषा का भी खोज निकालना आवश्यक था। एनक्विटिल के सराहनीय उद्योग के ५० साल बाद डेन्मार्क के विद्वान् रास्क ने—जो स्वयं बंबई आकर 'अवस्था' तथा 'पहलवी' की हस्त-लिखित पुस्तकें ख़रीद ले गया था—१८२६ ई० में एक पुस्तक प्रकाशित की, जिस में यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया कि 'ज़िन्दावस्था' की भाषा की संस्कृत से प्रगाढ़ समानता है। एनक्विटिल से कुछ लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया था कि पारसियों ने तुम्हें धोखा देकर मनगढ़न्त भाषा सिखा दी है; जो भाषा तुम सीख कर आए हो, उसका 'ज़िन्दावस्था' से कोई सम्बन्ध नहीं। परन्तु यदि रास्क का कथन ठीक था, तो एनक्विटिल को कुछ सहारा मिल जाता था। ऐसी अवस्था में ज़िन्दावस्था' की भाषा के व्याकरण का संस्कृत की सहायता से पता लगाने का प्रयत्न किया जा सकता था। संस्कृत का ज्ञान इँगलैंड से फ्रांस तथा जर्मनी तक पहुंच चुका था, और उसके ग्रीक तथा लैटिन से निकट संबन्ध का पता लगाया जा चुका था। संस्कृत का 'ज़िन्दावस्था' से भी घनिष्ट संबंध देख कर योरप के विद्वानों का ध्यान इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर एकदम आकृष्ट हुआ। योरप में संस्कृत तथा 'ज़िन्दावस्था' के पारस्परिक संबन्ध की तरफ़ सबसे पहले ध्यान आकर्षित करने वाले मि० रास्क ही थे; परन्तु वह इस विषय पर निर्देश-मात्र देकर चुप हो गए। इस संबध पर प्रकाश डालने का श्रेय एक दूसरे फ्रेंच विद्वान् को मिला। आपका नाम यूजोन बर्नफ़ था। मि० बर्नफ़ पैरिस में संस्कृत के अध्यापक थे। आपने नर्योसंघकृत पारसी-ग्रन्थों के संस्कृत-अनुवादों से बहुत सहायता ली और अपने संस्कृत-भाषा ज्ञान के आधार पर 'ज़िंदावस्था' के शब्द-शास्त्र की आधार-शिला रक्खी। बर्नफ़ लौकिक संस्कृत के पण्डित थे; परन्तु वैदिक संस्कृत से आपका परिचय अत्यन्त साधारण था। 'जिंदावस्था' का लौकिक संस्कृत से इतना सादृश्य नहीं, जितना वैदिक संस्कृत से; इसलिये इनका परिश्रम शब्दों के धात्वर्थ खोजने में, उतना सफल नहीं हुआ, जितना 'अवस्था' तथा 'संस्कृत' के विभक्ति-प्रत्यय आदि की समानता का पता लगाने में। इनके किए अनुवादों में दोष रहने पर भी वे अपने ढंग के पहले ही अनुवाद हैं। इन्होंने सबसे प्रथम 'यस्न' के दो अध्यायों का अनुवाद प्रकाशित किया, जिससे 'अवस्था-शब्द-शास्त्र' के निर्माण में पर्याप्त सहायता मिली। बर्नफ़ के समय तक 'ज़िंदावस्था' के सम्बन्ध में यथेष्ट खोज नहीं हुई थी। उन्हें इतना तक ज्ञात न था कि 'ज़िंदावस्था' के 'गाथा'-भाग की वेदों की भाषा तथा उनके छन्दों के साथ असाधारण समानता है; फिर भी रास्क-प्रदर्शित मार्ग पर चलकर, संस्कृत की सहायता से, 'अवस्था' की भाषा का पता लगाने में बर्नफ़ ने पूर्ण परिश्रम किया, जिसके कारण 'प्राचीन-तत्त्व-ज्ञान' पर आपका ऋण सदा बना रहेगा।

इसी बीच में, योरप में, अन्य अनेक विद्वानों ने 'ज़िंदावस्था' के शब्द-शास्त्र के निर्माण में हाथ बटाने का प्रयत्न किया। इनमें से अध्यापक स्पीगल का कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। स्पीगल ने 'ज़िंदावस्था' के संस्कृत से सम्बन्ध को कुछ और अधिक समझने का प्रयत्न किया। उसके ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि उसने 'गाथाओं' का वेदों की तरह छन्दोबद्ध होना समझ लिया था। परंतु उसने अपनी गवेषणाओं का आधार अधिकतर पहलवी अनुवादों तथा एनक्विटिल के ग्रन्थों को ही रक्खा। हैनोवर के संस्कृत के अध्यापक थियोडोर बेनफ़ी ने स्पीगल की पुस्तकों की समालोचना करते हुए फिर से संकेत किया कि यदि 'ज़िंदावस्था' के अनुवादक इधर-उधर न भटक कर संस्कृत की सहायता से ही चलने का प्रयत्न करेंगे, तभी उन्हें इस विषम कार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सफलता की आशा हो सकती है। संस्कृत तथा अवस्था-भाषाओं का अत्यन्त गहन सादृश्य है, इसलिये इसी दृष्टिकोण से इस गहन मार्ग में प्रवेश करना चाहिए। 'ज़िंदावस्था' की भाषा, उसका व्याकरण, शब्द-कोष, सबको शब्द-शास्त्र के मौलिक सिद्धांतों के आधार पर फिर से खोज निकालना एक नवीन भाषा के प्रथम बार निर्माण से भी अधिक कठिन कार्य था। परंतु धन्य है पाश्चात्य विद्वानों की लगन, जो दिन-रात एक-एक करके ऐसे-ऐसे कार्यों के लिये जीवन तक अर्पण करने को तैयार हो जाते हैं। अन्तको उन्होंने अपने परिश्रम के सहारे इस भाषा को, इसके व्याकरण तथा शब्द-कोष को खोज ही निकाला!

१८५२ में डॉ० मार्टिन हॉग ने 'ज़िंदावस्था' के पन्नों को अज्ञात क्षेत्र से ज्ञात क्षेत्र में लाने का संकल्प किया। रास्क तथा बर्नफ़ की तरह इन्हें भी विश्वास था कि आर्यन भाषाओं में 'ज़िंदावस्था' तथा वेदों की भाषाएँ ही सबसे अधिक पारस्परिक सामीप्य के सूत्र में बँधी हुई हैं। इसलिए आपने वेदों का—उनमें भी विशेष रूप से ऋग्वेद का—स्वाध्याय आरम्भ किया। उस समय तक ऋग्वेद का केवल आठवाँ हिस्सा प्रकाशित हुआ था। आपने बाकी सात हिस्से प्रो० बेनफ़ी की हस्त-लिखित प्रति से नक़ल किए। फिर वर्णक्रमानुसार वेद-मन्त्रों की सूची तैयार की गई। इसके अनन्तर अवस्था-भाषा के एक-एक शब्द को लेकर 'ज़िंदावस्था' तथा वेद में जहाँ-जहाँ वह शब्द पाया जाता था, उन स्थलों का संग्रह किया गया। 'ज़िंदावस्था' में सब जगह उस शब्द का जो अर्थ प्रतीत हुआ, उसे वेद-मन्त्रों से परखा गया। जब 'ज़िंदावस्था' तथा वेद, दोनों में उस शब्द का एक ही अर्थ प्रतीत हुआ, तब उसका अर्थ निर्द्धारित कर दिया गया। डॉ० हॉग का कथन है कि 'ज़िंदावस्था' के शब्दों के अर्थ का पता लगाने के लिये वर्तमान पर्शियन की अपेक्षा—यद्यपि वर्तमान पर्शियन अवस्था-भाषा का ही परिणत स्वरूप है—वैदिक संस्कृत ही अधिक सहायक है। अवस्था के 'ज़रदय'-शब्द का वर्तमान पर्शियन में 'दिल' बन गया है, जो संस्कृत में 'हृदय' है; अवस्था के 'सरद' का पर्शियन में 'साल' बन गया है, जो संस्कृत में 'शरद' है; अवस्था के 'करेनोति' का पर्शियन में 'कुनद' बन गया है, जो वैदिक संस्कृत में 'कृणोति' है; अवस्था के 'आतर्श' का पर्शियन में 'आतश' (अग्नि) बन गया है, जो वैदिक संस्कृत में 'आथर्' है, जिससे 'आथर्वन्' शब्द बना है। कारक, लकार तथा उनके प्रत्यय आदि का वर्तमान पर्शियन में नाम-निशान तक मिट चुका है; परन्तु 'ज़िंदावस्था'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा वेद की भाषाओं में दोनों वैसे-के-वैसे मौजूद हैं। विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि 'ज़िंदावस्था' के अध्ययन में वर्तमान पर्शियन उतनी सहायता नहीं दे सकती, जितनी संस्कृत, और उसमें भी लौकिक संस्कृत उतनी सहायक नहीं, जितनी वैदिक संस्कृत। डॉ० हॉग ने संस्कृत की सहायता से जो परिणाम निकाले हैं, उनसे सिद्ध है कि 'ज़िंदावस्था' तथा वेद की भाषाओं में जितनी समानता है, उतनी शायद ही अन्य किन्हीं दो भाषाओं में हो। हम डॉ० हॉग के निकाले कुछ परिणामों को पाठकों के सम्मुख रखते हैं, और उनसे अनुरोध करते हैं कि वे इन समानताओं पर विचार करते हुए सोचें कि संस्कृत का कितना भारी गौरव है।

अवस्था-भाषा के मुख्यतया दो विभाग किए जा सकते हैं। एक भाषा वह है, जो पारसियों की प्राचीनतम धर्म-पुस्तकों—गाथाओं—में पाई जाती है, और बहुत पुरानी है; दूसरी भाषा वह है, जो गाथाओं से पीछे की पुरानी पुस्तकों में पाई जाती है, यह भाषा 'विस्पराद', 'वेंदीदाद' आदि पारसी धर्म-पुस्तकों में पाई जाती है। सुविधा के लिये हम यहाँ पर पहली को गाथा-भाषा तथा दूसरी को अवस्था-भाषा कहेंगे। वास्तव में दोनों ही अवस्था-भाषाएँ हैं; क्योंकि गाथाएँ, वेंदीदाद, विस्पराद आदि सभी ज़िंदावस्था के भिन्न-भिन्न हिस्से हैं। अस्तु। गाथाओं की भाषा वेदों की भाषा के अत्यन्त निकट है। संज्ञाओं के तीन वचन तथा आठ विभक्तियाँ दोनों भाषाओं में एक-समान पाई जाती हैं। वैदिक संस्कृत के वैदिक लकारों को निकाल कर लौकिक संस्कृत में क्रियाओं के लकार निश्चित किए गए हैं; परन्तु वैदिक संस्कृत तथा गाथाओं की भाषाओं में लकार भी एक-समान हैं। ज्यों-ज्यों हम गाथाओं से विस्पराद, वेंदीदाद आदि की तरफ़ आते हैं, त्यों-त्यों उस भाषा की वैदिक संस्कृत से समानता कम होती जाती है। 'ज़िंदावस्था' के पिछले साहित्य में व्याकरण का लोप-सा होता दिखाई देता है—विभक्तियों को भुलाकर प्रकृति-मात्र का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। जहाँ तृतीया विभक्ति सूचित करने के लिये 'देवेन' इस सविभक्तिक पद का प्रयोग होना चाहिए था, वहाँ 'देव' इस निर्विभक्तिक पद का ही प्रयोग किया गया है। संस्कृत में जहाँ दीर्घ आकारान्त तथा ईकारान्त शब्दों को देखकर उनके स्त्री-लिंग होने का सहज ज्ञान किया जा सकता था, वहाँ इस साहित्य में दीर्घ करने का प्रयोग छोड़ दिया गया है। तृतीया तथा चतुर्थी के बहुवचन का समान प्रयोग पाया जाया है। इस प्रकार की गड़बड़ अवस्था-भाषा में तो पाई जाती है, पर गाथा-भाषा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नहीं। जिस प्रकार वैदिक संस्कृत को सरल बनाने के लिये लकारों में कुछ संक्षेप करके लौकिक संस्कृत का विकास हुआ, उसी प्रकार शायद गाथाओं की भाषा को सरल बनाने के उद्देश्य से, पीछे से, विभक्ति आदि का लोप किया जाने लगा। भेद इतना ही है कि लौकिक संस्कृत तो सरल हो जाने पर भी व्याकरण के नियमों से बँधी रही, परन्तु अवस्था-भाषा में व्याकरण को शिथिल करके ही सरलता उत्पन्न की गई। फिर भी गाथाओं तथा अवस्था की अन्य पुस्तकों की भाषा का लौकिक संस्कृत से उतना अधिक सादृश्य नहीं, जितना वैदिक संस्कृत से है। उदाहरणार्थ, 'मैं करता हूँ' के लिये वेद में 'कृणोमि' पाया जाता है, और 'ज़िंदावस्था' में 'करेणोमि'; परन्तु लौकिक संस्कृत में 'करोमि' प्रयुक्त होता है। वेद में 'वह जाता है' के लिये 'गमति' पाया जाता है, और 'ज़िंदावस्था' में 'जमति'; परन्तु लौकिक संस्कृत में 'गच्छति'। वेद में 'ग्रहण करता हूँ' के लिये गृभ्णामि' आता है, और 'ज़िंदावस्था' में 'गरिवनामि'; परन्तु लौकिक संस्कृत में 'गृह्णामि' पाया जाता है। क्या ये दृष्टान्त 'ज़िंदावस्था' की भाषा को वेदों के निकट की सिद्ध नहीं कर देते? अवस्था-भाषा की अपेक्षा गाथाएँ पुरानी हैं, इसलिए गाथाओं की भाषा, अवस्था-भाषा की अपेक्षा भी, वेदों के अधिक निकट है। वैदिक तथा गाथा-भाषा में 'करवै' का प्रयोग मिलता है, जिसके लिये अवस्था-तथा लौकिक संस्कृत में 'करवाणि' पाया जाता है। इसी प्रकार वेद तथा गाथा में 'मह्या' पाया जाता है, तथा लौकिक संस्कृत में 'मम'। वेद तथा गाथा में ई—ईम्—हिम का प्रयोग प्राचुर्य से मिलता है; परन्तु ये शब्द अवस्था-भाषा तथा लौकिक संस्कृत में पाए ही नहीं जाते। वेद तथा गाथा में उपसर्ग तथा क्रिया का पृथक्-पृथक् प्रयोग मिलता है; पर अवस्था-भाषा तथा लौकिक संस्कृत में ऐसा नहीं होता। वेद तथा गाथा के छंदों का पाठ करते हुए ह्रस्व अकार और इकार को स्तोता दीर्घ पढ़ देता है, और कहीं-कहीं संयुक्ताक्षरों को अलग २ करके पढ़ता है; पर लौकिक संस्कृत तथा अवस्था-भाषा में ऐसा नहीं होता। वेदों की भाषा की गाथाओं की भाषा से इतनी समानता और वैदिक भाषा का व्याकरण से नियमित होना तथा गाथा-भाषा का अनियमित होना देखकर हमारी तो यह सम्मति है कि वैदिक संस्कृत से ही गाथाओं की भाषा उत्पन्न हुई है। तदन्तर पर्शिया में गाथाओं की भाषा बिगड़ कर अवस्था-भाषा बन गई, और इधर भारत में वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत का विकास हुआ। भाषाओं के क्रमिक विकास का अध्ययन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने से यही प्रतीत होता है कि अवस्था-भाषा से गाथा-भाषा पुरानी है, और गाथा-भाषा से वेदों की भाषा। अन्य सब भाषाओं में विकास के चिह्न पाये जाते हैं; परन्तु वेदों की भाषा विकास की छाप से ऊपर उठी हुई है। वह हमें विकसित रूप में दिखाई देती है, विकास में से गुज़रती हुई नहीं, इस लिए उसे गाथा-भाषा तथा उसके द्वारा अवस्था-भाषा की जननी कहा जा सकता है।

डॉ० हॉग ने कुछ ऐसे नियमों का उल्लेख किया है, जिन के आधार पर संस्कृत के शब्दों को 'ज़िन्दावस्था' का और 'ज़िन्दावस्था' के शब्दों को संस्कृत का बनाया जा सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि उच्चारण-भेद के कारण एक ही शब्द का दोनों जातियों में भिन्न भिन्न रूप बन गया। पर वास्तव में वह शब्द एक ही था। वे नियम निम्न प्रकार हैं—

(क) शब्द के प्रारम्भ में संस्कृत का 'स' अवस्था में 'ह' हो जाता है। सोम=होम (सोमरस); स=ह (वह); सम=हम (इकट्ठा); सप्त=हप्त (सात); मास=माह (महीना); सेना=हेना (फ़ौज); सन्ति=हन्ति (वे हैं)। शब्द के बीच में 'स' आ जाय, तो उस का भी अवस्था में 'ह' हो जाता है। अस्मि=अह्मि (मैं हूं); विवस्वत्=विवंहवत् (सूर्य); असु=अंहु (जीवन)। अवस्था में कभी-कभी शब्द के अन्त के 'स' का 'ह' नहीं होता। यजेः=यजेश (तू पूजा करेगा)।

(ख) संस्कृत के 'ह' का अवस्था में 'ज़' हो जाता है। हि=ज़ि (निश्चय); हिम=ज़िम (बर्फ़); ह्वे=ज़्वे (पुकारना); आहुति=आज़ुति; हृदय=ज़रदय (दिल); हस्त=ज़स्त (हाथ); वराह=वराज़ (सुअर); होता=ज़ोता (आहुति डालनेवाला); बाहु=बाज़ु; अहि=अज़ि (साँप); मेधा=मज़्दा (बुद्धि, सर्वज्ञ ईश्वर)। कभी २ संस्कृत का 'ज' अवस्था में 'ज़' बन जाता है। जन=ज़न (उत्पन्न करना); जिह्वा=हिज़्वा (जीभ); वज्र=वज़्र (बिजली); अजा=अज़ा (बकरी); जानु=ज़ानू (घुटना); यज्ञ=यस्न (पूजा); यजत=यज़त (देवदूत)।

(ग) संस्कृत के 'श्व' का अवस्था में 'स्प' हो जाता है। अश्व=अस्प (घोड़ा); विश्व=विस्प (संसार)। श्वा=स्पा (कुत्ता)। कभी २ 'श्व' तथा 'स्व' के लिये ज़ंद में 'क़' हो जाता है। श्वसुर=क़सुर (ससुर); स्वप्न=कफ़्न (ख़्वाब); स्वाप=ख़्वाब।

(घ) संस्कृत में 'ऋत' का 'अर्त' बन जाया करता है, और इसी लिये 'मृत्' से 'मर्त्य=बनता है; परन्तु अवस्था में 'थ' हो जाता है। मित्र=मिथ्र; त्रित=थ्रित; त्रैतान=थ्रैतान (फ़रीदून); मन्त्र=मन्थ्र।

डॉ० हॉग लिखते हैं—अवस्था

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा संस्कृत के व्याकरण संबन्धी रूपों में इतनी समानता है कि संस्कृत से थोड़ा-सा परिचय रखने वाला व्यक्ति भी उसे पहचान सकता है। संस्कृत तथा अवस्था के व्याकरण-संबन्धी रूपों की समानता का सुदृढ़ प्रमाण यह है कि दोनों भाषाओं में अपवादों में भी समानता है। जहाँ संस्कृत के 'कस्मै' के लिए अवस्था में 'कहमै', 'अस्मै' के लिये 'अहमै', 'येषाम्' के लिए 'यैषाम्' है, वहाँ संज्ञा-वाचक रूपों की समानता भी असाधारण है। नीचे 'श्वा' तथा 'पथिन्' शब्दों के संस्कृत तथा अवस्था में रूप दिए जाते हैं, जो हमारे कथन की पुष्टि करते हैं—

'श्व'-शब्द के रूप

विभक्ति	संस्कृत	अवस्था
प्र०—एकवचन	श्वा	स्पा
द्वि०— "	श्वानम्	स्पानम्
च०— "	शुने	सुने
ष०— "	शुनः	सुनो
प्र०—बहुवचन	शुनः	सुनो
ष०— "	शुनाम्	सुनाम्

'पथिन्'-शब्द के रूप

प्र०—एकवचन	पंथाः	पन्ता
तृ०— "	पथा	पथा
प्र०—बहुवचन	पंथानः	पन्तानो
द्वि०—	पथः	पथो
ष०— "	पथाम्	पथाम्

अवस्था-भाषा की वैदिक भाषा के साथ इस गहरी समानता को देखते हुए एक हिंदू का मस्तक आत्म-गौरव से उन्नत हो जाता है। इस समानता को देख कर क्या इस कथन में अणु-मात्र भी अत्युक्ति समझी जा सकती है कि भारतवर्ष संसार-भर के धर्मों का ही नहीं, अपितु अखिल विश्व में ज्ञान प्रसार का केन्द्र-स्थान है? यहाँ की भाषा सर्वत्र फैली, यहाँ के धर्म ने इस देश की परिधि को पार किया, यहाँ की फ़िलासफ़ी ने सब देशों की विचार तथा तर्क-शक्ति को उत्तेजना दी। पर इतने गौरव को प्राप्त कर भी हमने उसे अपने ही हाथों खो दिया! अवस्था-भाषा के शब्द भारतीय विजयों के भग्नावशेष हैं। क्या इन शब्द-रूप खंड-हरों में अपने पूर्वजों के विशाल गौरव की झलक देख कर हम फिर से उसे प्राप्त करने का प्रयत्न न करेंगे? अवश्य करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्नी

(ले०—श्री पं० चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार)

मुन्नी बचपन से ही अत्यधिक चञ्चल स्वभाव की थी। यद्यपि एक बहुत छोटे घराने में उस का जन्म हुआ था, परन्तु अपने बालकोचित मनोहारी चपल स्वभाव के कारण वह गांव भर के लोगों की प्रिय होगई थी। मुन्नी के माता पिता किसी ऐसी जाति के थे जिन के साथ द्विज लोगों का हुक्का पानी नहीं हो सकता। जब वह चार साल की ही थी तभी उस के पिता का देहान्त हो गया था। मुन्नी के पिता की मृत्यु के बाद उसकी माता अपनी परम्परागत कुम्भकार की आजीविका को छोड़कर कागज़ के खिलौने बनाने का काम करने लगी थी। उस छोटे से घर में मुन्नी और उसकी अभागिनी माता को छोड़ कर और कोई प्राणी न रहता था। मुन्नी अपनी मां की लाड़ली बेटी थी, उस अभागिनी विधवा की एकमात्र सहायका थी।

मुन्नी अब ९ साल की लड़की हो चुकी है। वह गांव भर के प्रत्येक निवासी से परिचित है। इस का स्वभाव दिनभर ऊधम करने का है; अपने से छोटी उमर के लड़कों पर शासन करने में उसे अपूर्व आनन्द अनुभव होता है, वह बालकों की नेतृ बन कर किसी को पीटती है, किसी को प्यार करती है, किसी को तंग करती है। इस उमर में भी उसने अपनी माता की आजीविका में किसी प्रकार की सहायता देना प्रारम्भ नहीं किया है, अपितु वह सदैव माता के कामों में बाधा हो पहुंचाया करती है, कभी वह मौज में आकर खिलौने बनाने के लिये रंग कर रखे हुए कागज़ों पर काली या लाल स्याही के छींटे डाल देती है, कभी बने बनाये खिलौनों को उठा कर अपने साथियों में बांट देती है, परन्तु यह सब करने पर भी उसे अपनी माता से कभी डांट नहीं सुननी पड़ती। लोग कहते हैं कि मुन्नी की माता उसे राजकुमारी की तरह पालती है। मुन्नी देखने सुनने में अच्छी है, इस कारण उसे किसी भी घर में जाने की रोक टोक नहीं है; वह गांव भर के लड़कों की मुखिया बनी हुई हैं। उसका स्वभाव अत्यन्त कौतूहलपूर्ण और निर्भय है, जहां पांच सात लोगों को इकट्ठा जमा देखती है, चट से वहां जा पहुंचती है। गांव के बूढ़ों की पञ्चायत में, तहसीलदार की अदालत में, पटवारी की महफिल में—सब कहीं बालिका मुन्नी का अप्रतिहत प्रवेश है। वह किसी से डरना नहीं जानती।

नीच कुल की अनाथ बालिका मुन्नी के दिन इसी प्रकार आनन्द पूर्वक कटने लगे।

(२)

पञ्चतन्त्रकार पण्डित विष्णु शर्मा अगर भविष्य द्रष्टा होते तो वह यह कभी न लिखते कि युवावस्था एक मद है जिसे पीकर मनुष्य सब कुछ भूल जाता है। आज कल हिन्दुओं के अधिकांश गरीब घरों में जब लड़की की युवावस्था आजाती है तब उसके घर वाले घोर चिन्ता में मग्न हो जाते हैं। स्वयं वह लड़की भी एक विचित्र दशा में डाल दी जाती है। युवावस्था उसे कोई मद तो नहीं पिलाती, अपितु उसे चेतनावस्था का एक ठोस रूप प्रत्यक्ष करा देती है। घर के लोगों को नींद लेना हराम हो जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्नी अब १४ बरस की हो चुकी है, उस का रूप अब ऐसा नहीं रहा जिसे लेकर वह घर घर घूमे फिरे। जिस प्रकार कच्ची अम्बियां वायु के छोटे २ झोंकों द्वारा भी खूब हिलती डुलती हैं, परन्तु वही अम्बियां पक्के आम बन कर आंधी के प्रबल वेग के साथ भी हिण्डोले में बैठ कर झूमने से इन्कार कर देते हैं, उसी प्रकार मुन्नी भी अब प्रायः सारा दिन अपने घर में अपनी माता के निकट ही व्यतीत करती है, उस के स्वभाव की चञ्चलता अब भी कम नहीं हुई परन्तु वह चञ्चलता अब शिल्प कुशलता के रूप में परिणत हो चुकी है, उस के बनाये हुए खिलौने बहुत ही सुन्दर होते हैं।

मुन्नी आजकल पहले की तरह असंयत स्वच्छजल के पहाड़ी झरने के समान यथेष्ट इधर उधर नहीं घूमती, इसका एक और कारण भी है। अब जब कभी वह बाहर निकलती है तब लोग, विशेष कर गांव की औरतें, उसे अभी तक कुमारी रहने के कारण ताने देते हैं। शुरु शुरु में तो वह इन तानों का बड़े क्रोधके साथ उत्तर दिया करती थी, परन्तु कुछ दिनों से उस ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली है, अर्थात् बाहर अधिक घूमना फिरना ही छोड़ दिया है। वह सोचती है, ये लोग कितने मूर्ख हैं, मानो मेरे ब्याह किये बिना संसार में प्रलय हो जायगा। मुन्नी की माता भी आज कल इसी चिन्ता में निमग्न रहती है।

इसी गाँव में करतार नाम का एक नवयुवक रहता था। करतार के मां बाप गांव की दृष्टि में गरीब नहीं थे। गांव में उनका यथेष्ट मान था, परन्तु करतार अपने मां बाप का कुपूत वंशधर था। उस ने शराब जूआ आदि में मां बाप की सम्पूर्ण जायदाद समाप्त कर डाली। वह जात का जुलाहा था। उस के बुरे स्वभाव के कारण ही, २६ बरस की उमर हो जाने पर भी, कोई व्यक्ति उसके साथ अपनी लड़की की शादी करने का साहस न करता था।

मां बाप की जायदाद पर हाथ साफ कर के आज कल उस ने एक नया पेशा अख्तियार किया था। महीने में पांच सात दिन गांव से बाहर रह कर वह भिन्न २ प्रकार का सामान गांव में बेचने के लिये लाया करता था, एक सप्ताह में यह सामान बेच कर वह इतना धन प्राप्त कर लेता था कि उस से वह महीना भर आराम से रह सके। करतार का लाया हुआ माल देख कर लोग आश्चर्य चकित होते थे। वह कपड़े, बरतन, कोट, कमीज़ आदि सभी प्रकार की वस्तुएं लाया करता था, गांव के अन्य दूकानदारों की अपेक्षा उस का माल कम कीमत में मिलता था। यह देख कर लोग हैरान हो रहे थे। कुछ लोग तो उस की व्यापारिक बुद्धि पर श्रद्धा भी करने लगे थे।

इसी करतार ने मुन्नी की अनाथिता दुखिया माता का उद्धार कर दिया; उसे और उसकी मुन्नी को नरक से बचा लिया। उसने बिना कोई दहेज लिये ही गरीब मुन्नी से विवाह कर लिया।

(३)

मुन्नी नये घर में गई तो थी, परन्तु उस के कर्म तीन मास बाद ही उसे फिर से अपनी माता के घर घसीट लाए। विवाह के तीन मास बाद ही अचानक उसके पतिदेव न जाने कहां गुम होगये। एक दिन वह किसीको सूचना दिये बिनाही घरसे गायबहोगये थे, उस के बाद उनका पता मालूम नहीं होसका। पुलिस ने करतार के नाम वरण्ट जारी किया हुवा है, परन्तु बहादुर करतार पुलीस को भी चकमा दे गये हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यह हुवी थी कि एक दिन करतार अपने पेशे के लिए ही कहीं गांव से बाहर गया हुआ था; उस के जाने के दो दिन बाद ही दोपहर के समय थानेदार दो सिपाहियों को लेकर उस के घर आया। करतार को आवाज़ दी गई, परन्तु वह तो बाहर गया हुआ था। मुन्नी परदा करके दरवाजे पर आ खड़ी हुई। थानेदार ने मुन्नी से पूछा कि करतार कहां गया हुवा है? करतार कहां जाता है, इस बात को उसे छोड़ कर और कोई नहीं जानता था, इसलिये मुन्नी इस प्रश्न का जवाब न दे सकी। थानेदार करतार के घर की तालाशी लेकर उस में से बहुत सा माल बरामद कर के सिपाहियों के साथ वापिस चला गया। मुन्नी को अब रहस्य समझने में देर न लगी। वह समझ गई कि उस के पतिदेव गांव में जिस माल का सफलता पूर्वक व्यापार करते हैं, उस के लाने में उन्हें एक पाई भी व्यय नहीं करना पड़ता; वह सब सामान वे विनिमय मुद्रा द्वारा नहीं अपितु बल की मुद्रा द्वारा ही लाते हैं। करतार जो कपड़े बेचा करता था, उन में से किसी पर धोबी द्वारा बनाये गए निशान द्वारा ही उसकी चोरी पकड़ी गई थी।

पुलीस को मालूम था कि करतार जब बाहर जाता है तब ५, ६ दिन से पहले कभी वापिस नहीं आता। इस लिये वे लोग उस की ओर से निश्चिन्त थे। परन्तु सौभाग्य वश करतार इस बार उसी दिन रात के समय घर आपहुंचा। करतार के लिए दरवाजा खोलने जाकर मुन्नी ने देखा कि आज उसका चेहरा बहुत प्रसन्न है; आज वह कोई भारी गठरी उठा कर भी नहीं लाया है। उसके हाथ में एक मज़बूत डण्डे के सिवाय और कोई चीज़ नहीं है। मुन्नी उस के चेहरे की ओर देख कर और भी अधिक भयभीत हो उठी।

चांदनी रात थी। आंगन में आकर करतार ने अपने कोट के अन्दर की दोनों जेबों में से दो छोटी २ पोटलियां निकालीं। इन पोटलियों को उसने मुसकराते हुए खोला। पोटली के खुलते ही मुन्नी और भी अधिक डर गई। उसने चांदनी के उजेले में देखा कि उसके सामने सोने के बहुत से आभूषण चमक रहे हैं। मुन्नी को इस की कल्पना भी न थी। आभूषण देख कर वह सहसा सिसक २ कर रोने लगी। करतार भौंचक सा रह गया, उस ने सोचा—यह क्या मामला है। करतार को बहुत अधिक देर तक सोच विचार में डूबे रहने का अवसर न मिला। मुन्नी ने धीरे-धीरे आज की सम्पूर्ण घटना सुनादी। इस के बाद कोई कुछ नहीं बोला। दोनों अपने २ स्थान पर सोने के लिए चले गये। प्रातः काल उठ कर मुन्नी ने देखा कि करतार कहीं गायब होगया है। सोने के वे आभुषण भी घर में नहीं रहे हैं। मुन्नी समझ गई है कि अब पतिदेव के दर्शन इस जन्म में होने दुर्लभ हैं।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही मुन्नी अपने घर चली आई। पुलीस अब भी उस से करतार के सम्बन्ध में पूछ ताछ करने का बहुत यत्न करती है, परन्तु वह उस के सम्बन्ध में कुछ जानती ही नहीं, बताये सो क्या बताये।

मुन्नी माता के घर रहती है। परन्तु इस मुन्नी और कुमारी मुन्नी में बड़ा भारी अन्तर है। मानो मुन्नी का नया जन्म हुआ है। उस का यह जन्म यन्त्रणा के गर्भ से हुवा है, इसी कारण तो यह मुन्नी इतनी अधिक सहन शीला है। मां और बेटी दोनों दुखिया हैं, पहले अगर बुढ़िया अन्धी थी तो मुन्नी उस की जीवित जागृत लाठी थी, परन्तु अब तो वह लाठी भी एक भारी लोह दण्ड का रूप धारण कर चुकी है। मां और बेटी दोनों लोगों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ताने सुनती हैं, परन्तु किसी का जवाब नहीं देतीं।

हत भागिनी मुन्नी की मानसिक दशा आज कल क्या है, इसे समझना कठिन है। वह स्त्री है और शायद अबला है। परन्तु अबला होने से क्या; उसके पास एक ऐसा प्रेममय दिल है, जो बलवान पुरुषों के पास भी नहीं होता। समाज के अत्याचारी कानून के अनुसार वह अपना दिल एक अनाचारी चोर को देचुकी है; वही चोर उस का हृदय देव है। संसार की आंखों में करतार चोर है परन्तु मुन्नी के हृदय पर वह एक देवता के समान अंकित है। वह हिन्दू नारी है। पति ही उसका एक मात्र आराध्य देव है।

इसी प्रकार अभागिनी अनाश्रिता मुन्नी अपने दिन काटने लगी। बरस पर बरस बीतने लगे।

(४)

करतार जब घर से भाग कर बिना किसी लक्ष्य के चला, तब वह अत्यन्त उदास था। गहनों की पोटली उसकी छाती पर बँधी हुई थी। वह बड़ी तेज़ी में भागा जारहा था, परन्तु उसके हृदय में ज़रा भी उत्साह न था, उसके दिल पर मानो एक भारी बोझ रक्खा हुआ था। उसे इस बात का दुख नहीं था कि उसके पेशे की सूचना पुलीस को मिल गई है। क्रान्तिकारी लोग जिस प्रकार क्राँतिवादी दल में सम्मिलित होकर अपने प्राणों की ममता त्याग देते हैं, चोर लोग भी उसी प्रकार चोरी का पेशा स्वीकार करके जेलखाने को अपना मुख्य-निवास (Head Quarter) समझ लेते हैं। करतार बहुत अधिक दुखित इस लिए था कि आज उसे अपनी भारी भूल मालूम होगई थी। आज उसने अनुभव किया कि उसने मुन्नी का स्वभाव समझने में ज़रा भी सफलता प्राप्त नहीं की थी।

करतार जब मुन्नी को व्याह करके उसे अपने घर लाया था, तब वह समझता था कि मुन्नी को प्रसन्न रखने के लिए उसे अपनी आर्थिक दशा को खूब सुधारना होगा। जब वह देखता था कि मुन्नी रात-दिन उदास रहती है तब वह समझता था कि मैंने उसे यथेष्ट आभूषण नहीं दिये इसी से वह मुझसे पराँमुख है; मेरे यहाँ वह हँसती नहीं, मुस्कराती नहीं, खुल कर बातचीत नहीं करती। अपनी पत्नी की यही मूक-माँग पूरा करने के लिये वह ये गहने चुरा कर लाया था; इन आभूषणों को चुराकर वह समझा था कि मानो मैंने मुन्नी का दिल चुरा लिया है; परन्तु कल रात उसे सहसा अपनी भयंकर भूल मालूम हुई। मुन्नी तो इन गहनों से घृणा करती है! इस समय उसने मुन्नी को पहिचाना। अपने बिस्तरे पर जाकर वह अश्रुपूर्ण नेत्रों से इस बात पर पश्चात्ताप करता रहा कि वह मुन्नी को पहले ही क्यों नहीं पहचान पाया– यह मुन्नी गहनों को प्यार नहीं करती, यह तो मुझे प्यार करती है। कुछ देर इन्हीं भावों में मग्न रहकर उसे पुलिस की याद आई, उसने सोचा— वह घड़ी कितनी असह्य होगी, जब मुन्नी के सामने मेरे हाथों में हथकड़ी डाली जायगी। वह उस दृश्य की कल्पना ही न कर सका इसी से वह रातों-रात भाग खड़ा हुवा।

करतार जिस ओर से बचना चाहता था वही दिशा उसे चुम्बक की तरह खींच रही थी। वह चाहता था कि अब चोरी न की जाय। परन्तु इसके अतिरिक्त वह भी करे तो क्या। वह जादूगर की पुतली की तरह अपने सहायक चोरों के पास पहुंचा। अब से वह भी उनके समूह का स्थिर सदस्य बन गया। करतार का शरीर अच्छा था चोरी करने का हुनर भी उस में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूट-कूट कर भरा हुआ था, अतः शीघ्र ही चोरों में उसकी स्थिति बहुत उच्च होगई।

करतार चोर था, चोरों का सरदार था। वह अपनी दृष्टि में आप ही गिरा हुआ था। उसने स्वयं अपनी आत्मा का घात किया था। धीरे-धीरे इस समूह में रहकर क्रूरता, नृशंसता आदि प्रवृत्तियाँ उसके स्वभाव के रूप में परिणत होने लगीं। परन्तु इस अवस्था में भी उसके हृदय के एक कोने में प्रकाश की एक रेखा दिखाई देती थी। यह प्रकाश की रेखा, उसकी मुन्नी की पुण्य-स्मृति थी। कभी वह सोचता था कि मुन्नी को भी किसी तरह यहाँ बुला लिया जाय परन्तु मुन्नी का वह अन्तिम दिन का स्वरूप उसकी आँखों के सामने बिल्कुल ताज़ा हो उठता था। इस स्वरूप को देखकर उसे मुन्नी एक अगम्य देवी-सी जान पड़ती थी।

धीरे धीरे करतार अपनी हृदय-देवी की प्रकाश-पूर्ण मूर्त्ति को भुलाने लगा। आख़िर चोरों की संगत में रहकर वह कहाँ तक पवित्र रह सकता था। पहले पहल वह अपने दल पर स्त्रियों के ऊपर अत्याचार न करने के लिए कड़ा निरीक्षण रखता था; वह जहाँ भी डाका डालता था, वहाँ किसी स्त्री पर किसी प्रकार का अत्याचार न होने देता था परन्तु धीरे-धीरे उसके स्वभाव में ढील आने लगी। इस मामले को लेकर बहुत बार उनके दल में झगड़ा होजाता था अतः वह इस ओर से तटस्थ होगया; वह दूसरों के प्रति उदासीन होकर भी स्वयं स्त्री-जाति की इज्ज़त करता था। इसके बाद धीरे-धीरे वह स्वयं भी मौक़ा पाकर दूसरों की तरह स्त्रियों को भी अपमानित करने का यत्न करने लगा। करतार का सम्पूर्ण अधः पतन होगया। मुन्नी की पवित्र स्मृति उसके दिल से मिट गई।

(५)

करतार को घर से भागे हुए लग-भग १३ बरस बीत गए। सायंकाल का समय था। गरमियों के दिन थे, दिन भर गरमी के कारण सम्पूर्ण बन में सन्नाटा छा रहा था। इस समय नई स्फूर्ति पाकर प्रत्येक वृक्ष नाना प्रकार के पक्षियों के कलरव से गूंज उठा। सूर्य्य अस्त हो रहा था, सूर्य्य देव का पराजय देख कर मानो सम्पूर्ण बन के असंख्य पक्षी चिल्ला-चिल्ला कर उन्हें चिढ़ा रहे थे। अँधेरा नहीं हुवा था। अन्धकार होने में अभी पर्याप्त समय शेष था, इसी समय एक संन्यासिनी खड़े उस निर्जन जंगल में एक शोक-गीत गाने लगी। वह संन्यासिनी बिल्कुल अकेली थी; शायद मार्ग भटक कर इस जंगल में चली आई थी। संन्यासिनी की आयु लगभग २६ बरस की होगी। उसके प्रत्येक अंग से सुंदरता फूट रही थी।

सन्यासिनी का गीत अभी समाप्त नहीं हुवा था कि ५, ७ लाठी-बन्द डाकुओं ने उसे घेर लिया। संन्यासिनी अत्यन्त भयभीत होगई। परन्तु अगले ही क्षण उसने सँभल कर कहा— "मेरे पास तो कुछ नहीं है मैं संन्यासिनी हूं।" एक डाकू ने हँसकर संन्यासिनी की इस बात पर बड़ी अश्लील टिप्पणी की। इसी समय एक डाकू ने हाथ बढ़ाकर उस संन्यासिनी को पकड़ना चाहा; वह बेचारी चिल्ला कर एक ओर भागी। सब डाकुओं ने उस निस्सहाया को पकड़ लिया; वह अबला यथा शक्ति अपना बचाव करने का यत्न करने लगी। संन्यासिनी अपूर्व सुन्दरी थी अतः उसके लिये डाकुओं में परस्पर झगड़ा खड़ा होगया। वह बेचारी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। इसी समय एक और व्यक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ आया। उसके आते ही तीन डाकू उस अबला को छोड़कर अलग खड़े होगये। दो व्यक्ति अभी तक आपस में छीना झपटी कर रहे थे। नवागन्तुक डाकुओं का सरदार था, परन्तु संन्यासिनी ने उसे अपनी तरह कोई यात्री ही समझा, उस की ओर देखकर वह "बचाओ! बचाओ!!" चिल्लाने लगी। सरदार सहसा ठिठक कर खड़ा होगया। उसे कुछ प्राचीन अतीत स्मरण हो आया। इसके अगले ही क्षण वह चीखती हुई आवाज़ में चिल्ला उठा— "मुन्नी!" संन्यासिनी की आँखों के सामने से मानो परदा हट गया; उसने पुकारा— "प्राणनाथ!"

बिजली के समान वेग से करतार ने तलवार म्यान से निकाल कर एक दम दोनों आक्रमणकारियों का सिर काट गिराया। शेष तीनों डाकू अचानक अपने सरदार का यह भयंकर स्वरूप देख कर समझे कि वह पागल होगया है। उन्होंने करतार पर हमला किया, परन्तु करतार में उस समय न जाने कहाँ से अनन्त स्फूर्ति आगई थी; तीनों डाकू चोट खा भागे।

इसके बाद किसी को मालूम नहीं हुवा कि वे दोनों कहाँ गये।

सम्पादकीय

शुद्धि

शुद्धि के सम्बन्ध में भारतवर्ष के इतिहास में भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ दिखलाई देती हैं। कभी तो बड़ी उत्सुकता से शुद्धि की जाती थी और कभी बड़े-बड़े मौकों को हाथ से गवाँ दिया जाता था। शुद्धि के सम्बन्ध में १६ जुलाई के 'कर्मवीर' में एक इतिहास-प्रेमी लिखते हैं—

"अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डीदल आदि अनेक कारणों से काठियावाड़ में आज तक कई 'अकाल' पड़ चुके हैं। इन 'अकालों' की भयंकरता इतनी अधिक थी कि आज भी कई अकालों का स्मरण वहाँ के बूढ़े लोगों को है। सम्वत् १७८७ में—आज से लग-भग २०० वर्ष पहिले—काठियावाड़ में भयंकर अकाल उपस्थित हुआ था। मनुष्य-मनुष्य का भोजन करने पर तुल पड़ा था। अनेक मृत्युएँ हुईं, अनेक बीमारियों ने आक्रमण किया। मनुष्यों के इष्ट-मित्रों के बन्धन टूट गये। भोजन ही एक मात्र बन्धन रह गया। जिसने दो टुकड़े दिये, वही माता, वही भाई, वही स्नेही समझा जाने लगा। स्त्रियों-पुरुषों के लिये धर्म नाम की कोई चीज़ ही नहीं रह गई। प्राण-रक्षा ही उस समय का धर्म था और इसीलिए जिसने रोटी के दो टुकड़े दे दिये, वही धर्मात्मा समझा जाता था।

* * *

'तारीख़-इ-सोरठ' का मुसलमान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक इस भयंकर अकाल का वर्णन करते हुए कहता है—"उस समय मारवाड़ के कई पुरुषों ने मुसलमान स्त्रियों को अपने घर में आश्रय दिया। सिर पर जौ जलाकर तथा गौ-मूत्र पिला कर उनकी शुद्धि की। इस तरह वे स्त्रियाँ हिन्दू बनाई गईं। उस समय मारवाड़ी लोग कहते थे कि औरङ्गज़ेब बादशाह ने जोधपुर को फ़तह किया। फ़तह के बाद बादशाह ने जोधपुर के अनेकों हिन्दुओं को तलवार का भय दिखाकर मुसलमान धर्म की दीक्षा दी थी। मुसलमान स्त्रियों को शुद्ध करने वाले मारवाड़ी कहते थे कि हम उसी औरङ्गज़ेबी करतब का बदला चुका रहे हैं।"

* * *

'तारीख़-इ-सोरठ' का लेखक कहता है—"अनेक मुसलमान स्त्रियाँ इस तरह शुद्ध की गईं। इसके पहले भी, जब महमूद ग़ज़नवी हिन्दुस्तान में आया था, तब अनहिलवाड़ा के राजा भीमदेव ने उसकी फ़ौज के कई मुसलमानों को गिरफ़्तार किया था। उन मुसलमानों की शुद्धि की गई! उस समय हिन्दुओं को तुर्की, अफ़ग़ानी, मुग़ल आदि अनेक अविवाहित मुसलमान स्त्रियाँ प्राप्त हुईं—उन्होंने उन सबों से विवाह किये! अन्य स्त्रियों को वमन और जुलाब की औषधि देकर शुद्ध किया और हिन्दू राजपूतों ने उन्हें अपने यहाँ आश्रय दिया!"

* * *

और इन 'शुद्धों' की जाति का क्या हुआ? शुद्धि इतनी कठिन नहीं। असली कठिनाई शुद्ध किये हुओं को जाति में मिलाने की है। उक्त 'तारीख़-इ-सोरठ' के लेखक का कहना है—"बुरी स्त्रियाँ बुरे आदमियों को गईं और सौंदर्यवान् स्त्रियों को बड़े घरों में प्रवेश मिला और दास-दासियों को हिन्दू सेवकों के घरों में। जिन लोगों की सुन्नत हो चुकी थी वे वाढेल राजपूतों में शामिल कर दिये और जिनकी सुन्नत नहीं हुई थी वे शेखावतों में सम्मिलित किये गये! इनसे भी नीची श्रेणी के मुसलमानों को कोली, खाँट, मेर, बारबारिया आदि हिन्दू जातियों में मिला लिया गया।"

जहाँ शुद्धि के विषय में इस प्रकार के उदार विचार पाये जाते हैं वहाँ अनुदार विचारों की कमी भी नहीं दिखलाई देती। प्रसिद्ध है कि अकबर हिन्दु-धर्म ग्रहण करना चाहता था परन्तु बीरबल ने यह दृष्टान्त देकर कि गदहा घोड़ा नहीं बन सकता उसे शुद्ध नहीं होने दिया। इसी प्रकार की एक घटना का उल्लेख म० सन्तराम ने जुलाई की 'माधुरी' में निम्न प्रकार से किया है—

"काश्मीर-राज्य में इस समय सैंकड़े पीछे ८० से भी अधिक मुसलमान हैं। परन्तु जिस समय की बात हम करते हैं, उस समय वहाँ हिन्दुओं की ही प्रधानता थी। मुसलमान आटे में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमक के बराबर भी न थे। उस समय सिकन्दर नाम के एक सिदियन राजा ने काश्मीर पर अधिकार कर रक्खा था। सिकन्दर न हिंदू था और न मुसलमान। पर वह चाहता था कि हिंदू मुझे अपने धर्म में मिला लें। उसे इस धर्म पर हार्दिक श्रद्धा थी। वह नित्य गीता की कथा सुना करता था। पर ब्राह्मण लोग उसे हिंदू-धर्म की दीक्षा देने से इन्कार करते थे। एक दिन गीत में यह श्लोक आया—

"श्रेयान् स्वधर्म्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्;
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।"

कथावाचक ब्राह्मण ने इसका अर्थ करते हुए कहा—"दूसरे के उत्तम धर्म से अपना गुण-हीन धर्म भी कल्याणप्रद है। अपने धर्म में ही मरना श्रेष्ठ है और दूसरे का धर्म भयावह है।"

सिकन्दर यह सुनकर चौंक उठा। उसने ब्राह्मण से श्लोक का अर्थ दुबारा करने को कहा। ब्राह्मण ने फिर वही शब्द दुहरा दिए। तब सिकन्दर ने पूछा—क्या आप का अभिप्राय यह है कि मैं आपके धर्म को ग्रहण नहीं कर सकता? ब्राह्मण ने उत्तर दिया—जी हाँ। अपने-अपने धर्म में रहना ही अच्छा है, क्योंकि भगवान् ने कहा है—

'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः'।

यह सुनते ही सिकन्दर की विचार-धारा का पथ एकदम परिवर्तित हो गया। वह हिंदू-धर्म से निपट निराश हो गया। हताश होकर उसने निश्चय किया कि कल सवेरे जो मनुष्य मुझे सबसे पहले दृष्टिगोचर होगा, मैं उसी का धर्म ग्रहण करूँगा। दूसरे दिन सवेरे उठकर वह अपने राजमहल की खिड़की में बैठ गया। दैवयोग से सबसे पहले उसकी दृष्टि एक बुड्ढे पर पड़ी। वह मिट्टी का लोटा लिए जा रहा था। उसने उस बुड्ढे को अपने पास बुलाया और पूछा—

"तुम्हारा क्या नाम है?"

"बुलबुल शाह।"

"तुम कौन हो?"

"मुसलमान।"

"क्या तुम मुझे अपने धर्म की दीक्षा दे सकते हो?"

"मेरे लिये इससे बढ़कर प्रसन्नता का विषय और क्या हो सकता है कि काश्मीर-नरेश मेरा धर्म-भाई बने। इस्लाम का दरवाज़ा मनुष्य-मात्र के लिये खुला है।"

बस, फिर क्या था, सिकन्दर मुसलमान बन गया और इस्लाम के प्रचार में यत्नवान् हुआ। सबसे पहला काम उसने यह यह किया कि काश्मीरी ब्राह्मणों को बोरियों में बन्द करके झेलम नदी में डुबा दिया। उसके प्रयत्न से अल्प ही काल में समस्त देश मुसलमान हो गया। यह कोई कल्पित कथा नहीं, एक ऐतिहासिक सचाई है। बुलबुल शाह की कब्र अब तक श्रीनगर में मौजूद है।"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-समाचार

ऋतु—कुल में आजकल ऋतु बहुत रमणीय है। आकाश-मण्डल मेघों से आच्छादित रहता है; प्रायः प्रतिदिन वृष्टि हो जाती है। हरी-भरी द्रुमावली और मैदान लोचनों को बहुत आनन्द देते हैं। कुल की वाटिका के कुसुमों की सुगंधि से वायु-मण्डल सुवासित रहता है। कुलभूमि प्रकृति का क्रीड़ा-स्थल बनी हुई है। कविता और सुषमा ने सदेह होकर कुलभूमि को अपनी वासभूमि बनाया हुवा है।

गंगा—गंगा में आजकल पुष्कल पानी आ रहा है। इसलिए तैरने की ख़ूब मौज है। ब्रह्मचारीगण प्रतिदिन दूर-दूर से तैर कर आते हैं। आवागमन के लिए तमेड़ें नियम पूर्वक चलती हैं।

पढ़ाईयाँ— पढ़ाईयाँ नियम पूर्वक चल रही हैं। पिछले सप्ताह श्री प्रो. विधुभूषण दत्त जी का 'कालविज्ञान' विषय पर एक सारगर्भित खोज पूर्ण तथा मौलिक व्याख्यान विश्वविद्यालय व्याख्यान माला में हुवा।

लोकमान्य दिवस— गत प्रथम अगस्त को लोकमान्य तिलक जी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में कुल वासियों की एक सभा हुई। जिस में वक्ताओं ने लोकमान्य के जीवन, उनके कार्यों और सेवाओं पर विचार किया और उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित कीं। वक्ताओं ने कहा कि लोकमान्य भारत की राष्ट्रीय जागृति के पिता थे। सामान्य लोगों में राष्ट्रीय भावों का प्रचार सब से पहले लोकमान्य ने ही आरम्भ किया। वे सच्चे कर्मयोगी थे। उन्होंने वर्तमान भारत को फिर से गीता का संदेश सुनाया है। उनका जीवन भारत के लिए था। वे प्रत्येक भारतीय के लिए आदर्श थे।

पार्लियामेन्ट— गुरुकुलीय साहित्य परिषद् की ओर से १४ अगस्त को गुरुकुलीय राष्ट्रप्रतिनिधि सभा का अधिवेशन शुरू हुआ। प्रधान मन्त्री श्री ब्र. अवनीन्द्र जी ने भारतीय कारखाना विधान (Indian Factory Bill) पेश किया। विरोधी दल के नेता श्री ब्र. शंकरदेव थे। राष्ट्र प्रतिनिधि सभा में सम्मिलित होने के लिए श्रीयुक्त नारायण मल्हार राव जोशी तथा श्रीमान् नारायण स्वामी जी, पधारे। बिल संशोधनों सहित स्वीकृत हो गया। इसी अवसर पर कुल के पुस्तकालयमें श्रद्धेय श्रीस्वामी श्रद्धानन्द जी के एक तैलचित्रका उद्घाटन श्रीयुक्त नारायण स्वामी जी द्वारा किया गया।

दीर्घावकाश—इस वार दो मास का दीर्घावकाश १८ अगस्त से प्रारम्भ होगा। इस वर्ष ब्रह्मचारियों की एक मण्डली कुछ उपाध्यायों के साथ सरस्वती-यात्रा के लिए काश्मीर के पर्वतों पर जाने वाली है। कुछ ब्रह्मचारी अपने घरों पर जायेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

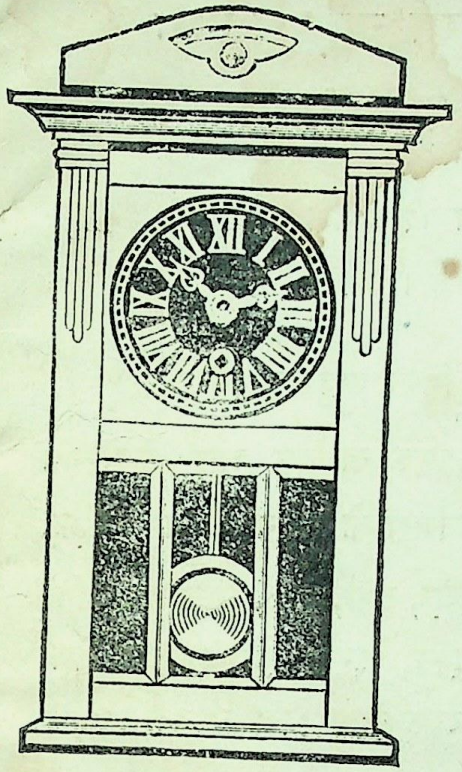

डे-लक्स क्वालिटी का क्लाक

नया आविष्कार

यह क्लाक दीवार पर लटकाने के योग्य एक सुन्दर बक्स के अन्दर बना हुआ है। और इस क्लाक की गारण्टी पांच वर्ष की है। और यह शुद्ध समय को देने वाला है। हमारे इस क्लाक को प्रसिद्ध सभा सोसायटियों और आम जनता ने बहुत अधिक अपनाया है।

एक बार इस उत्तम क्लाक की परीक्षा अवश्य कीजिए। कीमत केवल ३) रुपया

V. S. Watch Co.,
P. B. 105, Madras.

पुस्तकालय
०२१५२५

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

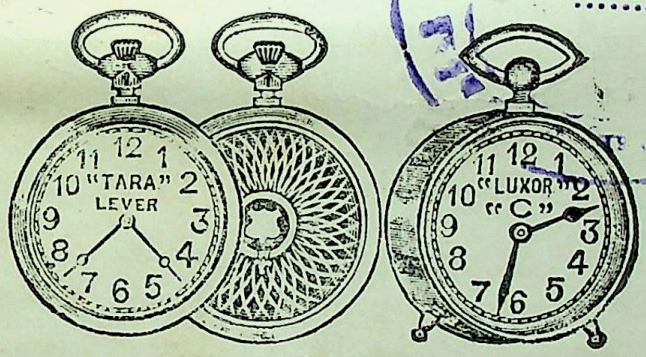

टाइम्पीस, रजिस्टर्ड

हर किसी को मुफ्त

हमारी "तारा, लिव्हर १८ करेंट रोल्ड गोल्ड पाकेट वाच" जिसके पीछे उत्तम नक्काशी की गयी है, गारण्टी ५ वर्ष, मूल्य ५) रु०, मंगाने वाले को ऊपर की टाइम्पीस मुफ़्त दी जायगी।

CAPTAIN WATCH Co.,
P. B. 265, MADRAS.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा

जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

सुधासिन्धु यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खासी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार, पट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को तुरंत फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

(दाद की दवा)

दद्रुगजकेशरी बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घन्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यह एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।), डाक खर्च ॥) पता हाल जानने के लिए सूचीपत्र मंगाकर देखिए, मुफ्त मिलेगा। यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri